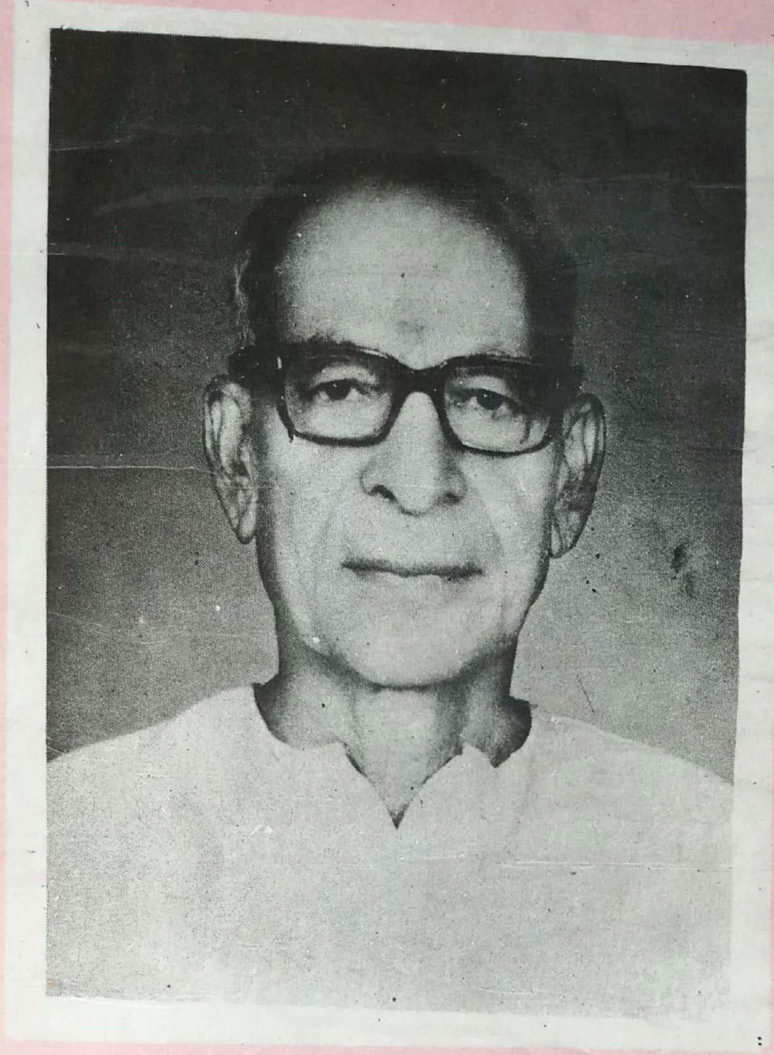


श्रीसुमन साहित्य सौरभ

आचार्य श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन'जीक एक प्रसिद्ध कविता छनि 'तरु' जाहिमे गाछकें एक तपस्वीक रूपमे चित्रित कयने छथि। ठीके तँ, माटि फोड़ि कऽ गाछ उगैत अछि आ ओ मुक्त आकाशक नीचाँमे, जतय कनियों किछु गोपन नहि, नित परिवर्त्तित प्रकृतिक डाँट-दुलार सहैत, शीत-ताप भोगैत, राति-दिन गनैत, बढ़ैत-चतरैत अछि आ अनगिन पथिकक 'पंथक पाकड़ि' बनैत अछि। ओकर छाहरि तर अयनिहार के - की अछि, समाजक हितू अछि कि छिनमतू तकर मीमांसा नहि करैछ।

श्रीसुमनजी अपनहुँ एकटा गाछे थिकाह—साहित्य, पांडित्य, आ राजनीति सौजन्यक चौबट्टी पर ठाढ़ शाखा-प्रशाखाकें पसारने, सुकोमल सघन पल्लवसँ आच्छादित विशाल मण्डपाकार।

श्रीसुमन साहित्य सौरभ

(आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' अभिनन्दनग्रन्थ)

सम्पादक

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

डॉ॰ श्रीभीमनाथझा

प्रकाशक

आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

दरभंगा

समर्पण समारोह
9-10-1994

१९९४

Acharya Surendra Jha Suman Abhinandan Granth

(Falicitation Volume)—1994, Price. 400/—

प्रकाशक :

आचार्य श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन' अभिनन्दन ग्रन्थ समिति,

दरभंगा

प्रकाशनवर्ष : १९९४

प्रति : पाँच सय

मूल्य : चारि सय टाका

प्राप्तिस्थान : श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

आदित्यसदन, मिश्रटोला, दरभंगा—८४६००४

मुद्रक : कुमार प्रिंटिंग प्रेस

दरभंगा।

न

नन्दी निकटे नागेश नटेश्वर
नाथ नित्य नाचथि नङटे
नयनानल नियमित निशानाथ
नटवर नकारमय नमस्कार

मः

मदनान्तक मृत्युञ्जय महेश
मानी मसान–निलयन मठेश
महिमामय माटिक महादेव
मनसा मकारमय नमस्कार

शि

शिर शोभित शिशु शशि शीत-शीत
सुरसरिक शीकरें शिशिर शीश
शीलित शेषें शिव शुचि शरीर
शंकर शकारमय नमस्कार

वा

विषपायी विषधर व्यापित वपु
वृषवाहन वसन–विहीन विदित
वर वरद बड़दवाहन विभूति
वं वं वकारमय नमस्कार

य

यतिवर यज्ञान्तक यज्ञजनक
युगजीवी याज्ञिक योगयुक्त
योगी यक्षेशक सहयोगी
जय जय यकारमय नमस्कार

श्रीसुमनजी-रचित शिवपंचाक्षर स्तुति

अध्यक्षक वक्तव्य

'श्रेयांसि बहु विघ्नानि'– नीक काजमे विघ्नेविघ्न। किन्तु, श्रेयस्कर काज तँ विघ्नोक बीचसँ अपन बाट बनाइए लैत अछि। बाधा जे होउक, समय जे लगौक !

हमरालोकनि जे काज १९८५ मे सम्पन्न करबाक योजना बनौने रही, से आइ १९९४ मे जाकऽ कहुना पार लागल अछि। जेहन चाहैत रही, तेहन तँ नहि भेल। मुदा किछु नहिसँ किछु तँ भेल !

सन् १९८४ मे डॉ० भीमनाथझाक तत्कालीन मिश्रीगंज निवासपर आचार्य सुमनजीक चौहत्तरिम जयन्तीमे ई निर्णय लेल गेल जे हुनक पचहत्तरिम जयन्तीक अवसरपर एक विशिष्ट अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रकाशित कयल जाय। १० अक्टूबर १९८४ केँ 'आचार्य श्री सुरेन्द्र झा सुमन अभिनन्दन-ग्रन्थ समिति'क गठन भेल, जाहिमे हमरा अध्यक्ष आ डॉ० भीमनाथझाकेँ सचिव मनोनीत कयल गेलनि। सर्वश्री शैलेन्द्र मोहन झा, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', सुदिष्ट मिश्र, रमेन्द्र नारायण चौधरी, देवनारायण झा, योगेश्वर पासवान तथा रामेश्वर शर्मा सदस्य बनाओल गेलाह। हमरालोकनि किछु कालेजे-कालेजे घुमि करीब आठ हजार राशि एकट्ठा कयलहुँ। दि० २५ मइ १९८६ केँ पटनाक एक प्रेसकेँ छौ हजार एक टाका नगद तथा समस्त पाण्डुलिपि प्रकाशनार्थ दऽ देल गेलैक। दुर्योग ई भेल जे टाका तँ डुबिए गेल, किछु महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियो डुबि गेल। लाख चेष्टा कयलोपर फल किछु नहि बहरायल। उत्साह ठंढा पड़ि गेल।

उत्साह फेरसँ संचित कयल गेल आ २८ अगस्त १९९३ क बैसकमे ई निश्चय दृढ़ कयल गेल जे ग्रन्थ छपबे करय, दरभंगेमे छपय, व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा राशि जमा कयल जाय। एहि बीच आचार्य डॉ० जयमन्त मिश्र आ डॉ० सुरेश्वर झाक सहयोग हमरालोकनिके उपलब्ध भेल आ ईलोकनि सेहो बादमे समितिक सदस्य मनोनीत भेलाह। काज आगाँ बढ़ऽ लागल।

ईहो निर्णय लेल गेल जे ग्रन्थक दोसर भागमे श्री सुमनजीक मौलिक काव्य-कृतिकेँ एक ठाम सुरक्षित कऽ देल जाय तथा पाठकलोकनिकेँ अभिनन्दनीय महाकविक काव्यामृतक साक्षात् पान करबाक सुअवसर प्रदान कयल जाय।

आइ ई महान् यज्ञ सम्पन्न भेल अछि तँ तकर सर्वाधिक श्रेय छनि सहयोगी रचनाकार महानुभावलोकनिकेँ, जे सुमनजीक प्रति अगाध आदरक कारणेँ हमरालोकनिक अनुरोधपर विशिष्ट रचनाक योगदान कयलनि। तदर्थ, हमरालोकनि अनुगृहीत छियनि। पटनाक प्रेसमे किछु महत्त्वपूर्ण रचना नष्ट भऽ गेल, ताहि लेल ओहि उदार लेखकलोकनिक समक्ष क्षमाप्रार्थी छी।

हमरालोकनि विशेष अनुगृहीत छी ओहि समस्त अर्थसहयोगीलोकनिक,जनिक उदारताक अभावमे ई कार्य नहि भऽ सकैत। वस्तुतः एकर असली प्रकाशक येह लोकनि थिकाह। से चाहबो करी। समाजक ई काज समाजे द्वारा होयबाक चाही। सैह भेल अछि।

समितिक सदस्यलोकनि आ सम्पादकगण तँ सभ टा भारे उठौने छथि। हुनकालोकनिक निष्ठाक प्रशंसा करैत छियनि।

अन्तमे, ऋषिकल्प आचार्य सुमनजीक अभिनन्दनमे एतबे निवेदन जे —

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पितम्

मदनेश्वर मिश्र
पूर्व कुलपति,
ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा।

सम्पादकीय

दार्शनिक भूमि एहि मिथिलामे कर्मकाण्डहुक प्रधानता सदासँ रहल अछि तेँ ने एक कालमे चौदह-चौदह सय मीमांसकक अस्तित्वक इतिहास भेटैत अछि। अपना पिताक मुँहे सुनल कथा थिक जे सन्ध्यावन्दन कयने कोनो पुण्यक प्राप्ति नहि होइत छैक, परन्तु जेँ ई द्विजक कर्त्तव्य थिकैक तेँ नहि कयने कर्त्तव्य-च्युतिजन्य पापक भागी लोक होइत अछि।

जहिना व्यक्तिक कर्त्तव्य निर्धारित छैक तहिना समाजोक किछु कर्त्तव्य छैक। समाजमे यदि क्यो एहन व्यक्ति उत्पन्न होइत छथि जे अपन जीवन समाजेक हेतु उत्सर्ग कयने रहथि तँ समाजक कर्त्तव्य होइत छैक जे ताहि हेतु ओहि व्यक्तिक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करय। से नहि कयलासँ समाज कर्त्तव्य-च्युतिजन्य दोषक भागी बुझल जायत।

'आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' अभिनन्दन ग्रन्थ समिति' एही तथ्यकेँ दृष्टिमे राखि मिथिला मैथिलीक अनन्य सेवक, मातृभाषा मैथिली मन्दिरक शृंगार, साहित्यक मुखर साधक ओ राष्ट्रक एकान्त हितचिन्तक आचार्य श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन' केँ एक अभिनन्दन-ग्रन्थ समर्पित करबाक संकल्प कयलक। आइ एहि संकल्पक पूर्त्ति भऽ रहल अछि तँ हमर मान्यता अछि जे मैथिलीभाषी समाज कर्त्तव्यच्युतिजन्य दोषक भागी होयबासँ बाँचि रहल अछि। अदृष्ट शक्तिपर अखण्ड विश्वास रखनिहार हमरालोकनि मानैत अयलहुँ अछि जे जे किछु होइत छैक से ओही अदृष्ट शक्तिक इंगितपर, मध्यमे कर्त्ता निमित्त मात्र होइत अछि, तेँ गीतामे भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुनकेँ कहने छथिन—'निमित्त मात्र भव सव्यसाचिन्!' अतः एहि अभिनन्दन ग्रन्थक प्रस्तुतिमे समिति निमित्त मात्र रहल अछि।

एहि प्रकारक अनुष्ठानक पूर्तिमे सबसँ प्रमुख तत्त्व होइत छैक अभिनन्द-नीय व्यक्तिक व्यक्तित्व, ताहि प्रसंग किछु कहब पिष्टपेषण मात्र होयत। मिथिला मैथिली ओ देशक प्रति हिनक समर्पण भाव ककरासँ अज्ञात अछि ? प्रकाशन संस्था स्थापित कयलनि तँ तकर नाम मैथिली मन्दिर, प्रेस स्थापित कयलनि तँ तकर नाम मिथिला प्रेस आ पत्रिका प्रकाशित करय लगलाह तँ तकर नाम स्वदेश। मिथिलामे ई भारतक दर्शन कयलनि आ हिनकर लेखनीसँ निःसृत भेल —

'लघु प्रतिमा भारतक ई विधि शिल्पी कर कौशलें

दर्शनीय रूपें रचल जनक जनपदक छबि छलें।'

अभिनन्दनीय व्यक्तिक व्यक्तित्वक अतिरिक्त जे तत्त्व सब सहायक होइछ से थिक शब्द, तदुत्तर अर्थ आ तकर बाद सबकेँ समन्वित कऽ आकार देबाक संलग्नता। ताहि प्रसंग एतबे कहब पर्याप्त होयत जे शब्द अर्थात् रचनासँ जाहि विद्वान लोकनिकेँ सहयोग करबाक अनुरोध कयल गेलनि से सब गंभीर-तासँ एकरा लेलनि आ सहर्ष सोत्साह समुद्यत भेलाह, किन्तु सम्माननीय श्री सुमनजीक कृति ततेक विस्तृत छनि जे सबकेँ समेटि एक ठाम कऽ देलापर ओहि भारकेँ उठयबाक ने समितिकेँ क्षमता छलैक ने ततेक पंघ पात्रे। फलतः एहिमे श्रीसुमनजीक कवि–व्यक्तित्व मात्रक विवेचन–विश्लेषण भऽ सकलनि अछि। गद्यकार सुमनजीक प्रसंग एक दोसर बृहद्ग्रन्थक आवश्यकता अछि। एहिमे तकर संकेत मात्र भऽ सकल अछि। कारण जे शताधिक पुस्तकक भूमिके–लेखनमे जे हिनक मौलिक उद्भावना छनि से सब मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक। एक सम्पादकक रूपमे ई कर्मक्षेत्रमे प्रवेश कयलनि। मिथिला-मिहिरमे बीस वर्ष रहलाह। तदतिरिक्त पहिने मासिक, पश्चाति दैनिक स्वदेशक सम्पादन कयलनि, तदतिरिक्त अनेक सम्पादक मण्डलमे रहलाह जाहि क्रममे सम्पादकीयमे अपन मूल्यवान विचार व्यक्त करैत रहलाह से मातृभाषाक अति-रिक्त राष्ट्रभाषा हिन्दीमे सेहो। ताहि सभ अंशकेँ एहि ग्रन्थमे स्पर्शों नहि कयल जा सकल अछि। व्याख्यात्मक भाषाक प्रयोगक एहि युगमे श्रीसुमनजी सूत्रात्मक भाषाक प्रयोगक अभ्यासी रहलाह अछि। निबन्धकार तँ छथिहे,

समय-समयपर कथासाहित्यकें सेहो समृद्ध करैत रहलाह अछि। ताहि सबकें संकलित रूप देब आवश्यक अछि। वचन देब तँ कठिन, किन्तु अभिलाषा व्यक्त करबामे तँ कोनो क्षति नहि। समिति मनोरथ रखने अछि जे एहि ग्रन्थक विक्रयसँ जे आय भविष्यमे भऽ सकत तँ ताहिसँ हिनक बहुमूल्य गद्य साहित्यकें संकलित कऽ समाजक समक्ष उपस्थित करबाक प्रयास करत जे मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि करबामे परम उपादेय होयत।

अर्थक प्रसंग एतबे कहब जे अर्थकें जीवनक साध्य माननिहार लोकनिक कथा नहि हो, किन्तु अर्थकें साधन मात्र बुझनिहार व्यक्तिक समक्ष समिति जहिना अपन योजना उपस्थित कयलक श्रद्धा ओ सामर्थ्यक अनुसार ओलोकनि अर्थ-साहाय्य द्वारा समितिकें ततेक समुत्साहित करैत गेलाह जे एहि ग्रन्थक आकार पूर्व निर्धारित आकारसँ द्विगुण तँ अवश्य भऽ गेल जाहिमे श्रीसुमनजीक प्रकाशित समस्त मौलिक मुक्तक काव्य संग्रह सहित अप्रकाशित एक प्रबन्ध-काव्य 'कृष्णावतरण'क अधिकांशकें समाहित कऽ लेल गेल।

दरभंगा नगरमे पूर्ण सुसज्ज प्रेसक अभावक कारणें अभिनन्दनग्रन्थक आकार जे चाही से नहि कयल जा सकल किन्तु प्रकारमे कोनो न्यूनता नहि हो तदर्थ समिति सचेष्ट रहल अछि। तथापि पूर्वहि कहल जा चुकल अछि जे समितिकें पात्रे छोट छलैक।

सभक संयोजनक हेतु जे सभ अपेक्षित छल तकर पूर्ति डॉ० श्रीभीमनाथ झा कयलनि। अथक रूपें जे एहि कार्यमे भिड़लाह से अकथनीय अछि।

एहि ग्रन्थकें अनेक उपशीर्षकमे विभाजित कयल गेल अछि। **साधक तरु** मे श्रीसुमनजीक जीवनवृत्त आ **काव्य-कुसुम**मे कविलोकनि द्वारा काव्यात्मक भावोद्गार व्यक्त भेल अछि। **जीवन उपवन** मे विभिन्न व्यक्ति द्वारा व्यक्त संस्मरण संकलित भेल अछि। **रचना रस** उपशीर्षकमे विभिन्न विद्वान द्वारा समग्र व्यक्तित्व ओ कृतित्वक संगहि भिन्न-भिन्न पुस्तकक विश्लेषण—विवेचन कयल गेल अछि। **प्रसंगात्** उपशीर्षकमे विभिन्न विद्वानक दृष्टिमे हिनक व्यक्तित्वक प्रसंग जे तत्रतत्र उल्लिखित अंश छनि से संकलित भेल अछि।

हमरा सभक बीच ई एक एहन साहित्यकार छथि जे दरभंगा क्षेत्रसँ एक बेर विधानसभा तथा एक बेर लोकसभाक प्रतिनिधित्व कऽ चुकल छथि। किछु अज्ञ लोक सभा-समितिमे बाजि देल करैछ जे लोकसभामे कहिओ किछु नहि बजलाह। तेहन लोकक अज्ञता दूर करबाक उद्देश्यसँ २७-२-७६ केँ लोकसभामे देल हिनक वक्तृताकेँ जकर माध्यम हिन्दी अछि आ पुस्तिकाक रूपमे पूर्वहु प्रकाशित भऽ वितरित भऽ चुकल अछि, तकरो समाहित कऽ लेल अछि।

दोसर भागमे हिनक प्रकाशित समस्त मौलिक मुक्तक सभक संग्रहकेँ संकलित एहि हेतु कयल गेल जे जाहि पुस्तक सभक विवेचन एहि ग्रन्थमे भेल अछि से पुस्तको विज्ञपाठककेँ संगहि उपलब्ध भऽ जाइनि।

कहल गेल छैक—'गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः'—एक तँ काँटाक दोष दोसर दृष्टिदोषसँ वाँचब बड़ कठिन होइछ। तज्जन्य त्रुटिक हेतु 'क्षमासारा हि साधवः' सैह शरण।

हँऽ, एकर प्रकाशनमे विलम्बक कारणेँ एकटा खेदक विषय जे उत्पन्न भऽ गेल तदर्थ ईश्वरेच्छा बलीयसी सैह मानय पड़त। समितिक आकांक्षा छलैक जे सम्माननीय श्रीसुमनजीकेँ सपत्नीक सिंहासन पर बैसाय सादर समर्पित करितिऐन्हि, किन्तु खेद जे हिनक अर्द्धांगिनी परम सौभाग्यवती गंगादेवी २४-४-६४ केँ अपन पाञ्चभौतिक शरीरकेँ त्यागि देलनि। प्रायः जगदम्बा जानकीकेँ सैह स्वीकार्य छलनि।

अन्तमे समस्त सहयोगीक प्रति आभार व्यक्त करैत समिति सम्पूर्ण मैथिली भाषी समाजक दिससँ अपन अमूल्य सेवा ओ त्यागक हेतु अभिनन्दनीय आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमनक' प्रति कृतज्ञताज्ञापनक स्वरूप ई **श्रीसुमन साहित्य सौरभ** हुनक कर कञ्जमे सादर समर्पित करैत अछि।

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

विषयानुक्रमणिका

प्रथम भाग

साधक तरु

काव्य-कुसुम

जीवन-उपवन

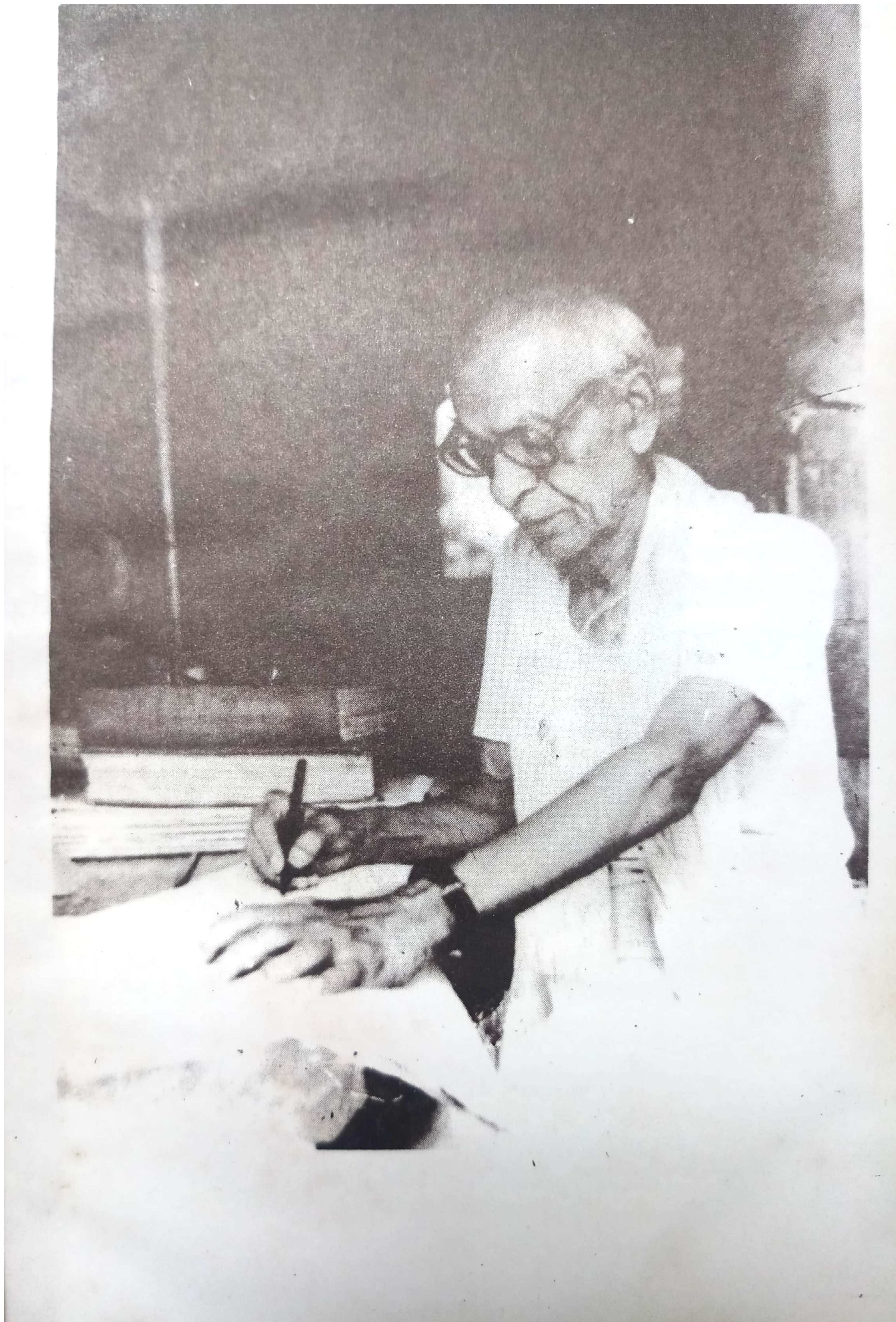
रचना-रस

प्रसंगात्

द्वितीय भाग

प्रथम भाग

जीवनी, काव्याञ्जलि
संस्मरण, समीक्षा



साधक तरु

चिर साधक तरु

डॉ० श्रीभीमनाथझा

आचार्य श्री सुरेन्द्रझा **'सुमन'** जीक एक प्रसिद्ध कविता छनि—'तरुसँ', जाहिमे ओ गाछके एक तपस्वीक रूपमे चित्रित कयने छथि। ठीके तँ, माटि फोड़िकऽ गाछ उगैत अछि आ ओ मुक्त आकाशक नीचाँमे, जतय कनियों किछु गोपन नहि, नित परिवर्तित प्रकृतिक डाँट-दुलार सहैत, शीत-ताप भोगैत, राति-दिन गनैत, बढ़ैत-चतरैत अछि आ अनगिन पथिकक 'पन्थक पाकड़ि' बनैत अछि। ओकर छाहरि तर अयनिहार के-की अछि, यात्राक अथ-इति कतऽ छै, समाजक हितू अछि कि छिनमतू—तकर मीमांसा गाछ नहि करैछ। ओ ककरोसँ 'परिचय' नहि पुछैछ, आ ताहि हिसाबे स्वागतक श्रेणी-विभाजनो नहि करैछ। जेठक आतपमे तापित कोनो जीव ओतऽ जाकऽ, सुस्ताकऽ, अमृतमय शीतल बसातक पान ओ स्नान भरि छाक कऽ लेअय—कोनो रोक नहि टोक नहि। गाछ तँ प्रसन्नमन अपन पात-हाथ हिला-हिला प्रत्येक आगतके 'स्वागतम्' कहैछ तँ गोट-गोट प्रस्थागतके 'पुनरागमनाय शुभम्' कहि सप्रेम विदा करैछ। भनहि क्यो सुनओ कि अनसुन कऽ देअओ ! किन्तु, गाछ तँ अपन धुनिमे रमल रहत—अनवरत !

श्री सुमनजी अपनहु एक टा गाछे थिका। गाछ तँ सभ थिकहु—क्यो फुलबारीक, क्यो क्यारीक तँ क्यो अपन डीह-वासक, क्यो गरमजरुआ खासक। सुमनजी गरमजरुआ आम छथि—साहित्य-पाण्डित्य-राजनीति-सौजन्यक चौबट्टी-पर ठाढ़, शाखा-प्रशाखाके पसारने, सुकोमल सघन पल्लवसँ अच्छादित, विशाल मण्डपाकार ! अपन अन्तस्मे भनहि ऋतु-परिवर्तनक चाक चलैत छनि, चलिते छनि—कखनहु ठिठुरन-सिकुड़न तँ कखनहु जलन-ज्वलन—मुदा बाहरसँ सभ दिन वसन्ते, अनका ले' अनुखन ऋतुराजे।

एहि तरुक परिसर किछु अद्भुत, सुरभि अलौकिक
सभ ऋतु एतय बनय ऋतुराजे, नित कुहकय पिक

कुल-परिवार

ई सुमन पाँकक कमल नहि थिका, अपितु पुरातन उपवनक चिर पोषित-संरक्षित अधुनातन 'वयोरा' थिका. जकर गाछो सुवासित, पातो सुवासित। सीरो सुवासित···

सीर हिनक कुलक बड़ प्रशस्त रहल अछि, विद्याधन लऽकऽ आ व्यापक सेहो। हिनक वृद्धप्रपितामह पं० ललितझा काश्यप गोत्रीय सकरिबार छामू मूलक सद्ब्राह्मण, मधुबनी जिलाक मोहना (झंझारपुर) गामक वासी छलथिन। ओ निष्णात पण्डित रहथि। मरौसी जथाक अतिरिक्त अपन पाण्डित्यक बलपर ब्रह्मोत्तर रूपमे प्रचुर भू-सम्पत्तिक अर्जन कयलनि। से कन्होली आ मोहना दुनू गाममे छलनि। ललितझाकें दू बालक भेलथिन—विघ्नेश्वर प्रसिद्ध तूफानीझा तथा गोविन्दलालझा। पं० गोविन्दलालझा धर्मशास्त्र आ ज्योतिषक प्रसिद्ध विद्वान् भेलथिन। निबन्धकार पं० तूफानी झा 'कृत्यशिरोमणि' तथा 'कृत्यचिन्तामणि' प्रभृति किछु ग्रन्थक रचना कऽ अपन पाण्डित्यकें प्रकाशित करैत समाजमे विशेष आदरक भाजन भेलाह।

पं० गोविन्दलालझाक बालक भेलथिन पं० जयानन्द झा, जे अपनहुँ ज्योतिषक नीक पण्डित छलाह। ओ जन्मजात वैष्णव रहथि आ हुनक परवर्ती समस्त परिवार अद्यावधि वैष्णवे अछि। जयानन्दझाक विवाह बल्लीपुर (समस्तीपुर)क कारी चौधरीक कन्यासँ भेलनि। कारी चौधरी सम्पत्तिशाली लोक रहथि, किन्तु हुनका बालक नहि। तें, हुनक सम्पत्ति हुनक कन्याकें भेलनि आ ओकर उत्तराधिकार भेटलनि दौहित्र लोकनिकें। पण्डित जयानन्दझाकें तीन बालक—पं० रामेश्वर झा, पं० भुवनेश्वर झा 'भुवनेश' तथा पं० तेजनारायणझा। ओ लोकनि भगिनमान बनि बल्लीपुर अपन मातृकेमे बसि जाइत गेलाह। तीनू भाइ संस्कृतक निविष्ट पण्डित रहथि। पं० तेजनारायण झा बड़ व्युत्पन्न प्रतिभासम्पन्न रहथि। ओ अल्पायु भेलाह, मुदा कमे समयमे हुनक विद्वत्ताक ख्याति पसरि गेल छलनि। हुनक प्रसिद्ध उक्ति छनि—

'तृतीयोऽहमधीयानः प्राणिनस्त्रातुमर्थये'। 'पशुबलिनिषेध - वधिकविध्वंसक' ग्रन्थ-रचनाक अतिरिक्त तुलसी सतसईक संस्कृत-अनुवाद एवं 'जानकीपरिणय' मैथिली नाटकक रचना कयने रहथि।

पं०भुवनेश्वरझा, जे 'भुवनेश'क उपनामसँ साहित्य-रचना कयलनि, अनेक शास्त्र-पुराणक ज्ञाता आ लौकिक व्यवहारमे निपुण रहथि। ओ अपन कौलिक विद्या ज्योतिषक नीक ज्ञाता तँ छलाहे जे साहित्य आ आयुर्वेदक गहन अध्येता सेहो छला। संगीतशास्त्रक अनुशीलन कऽ ओकर सैद्धान्तिक आ व्यावहारिक पक्षमे दक्ष भेला। वृत्ति ओ चिकित्साकेँ अपनौलनि। ताहि दिनक सामाजिक व्यवस्थामे चिकित्सावृत्तिकेँ सुवृत्ति नहि मानल जाइत छलैक। समाजक एहि त्याज्य मुदा अनिवार्य वृत्तिकेँ अंगीकार करब आ ओकरा सामाजिक मर्यादा दिआयब बड़ कठिन छलै ताहि दिन। से ओ कयलनि आ ताहि ले' हुनका संघर्ष करऽ पड़लनि। काव्य-प्रतिभा जन्मजात छलनि हुनकामे। सैकड़ो गीतक रचना ओ कयने छलाह। एम्हर धरि, सौंसे मिथिलामे, नटुआ द्वारा वा ओहुना, एकटा गीत रहरहाँ गाओल जाइत अछि—'परम प्रिय पावन तिरहुति देश'। बहुतो जनकेँ ई भ्रम छलनि वा छनि जे ई विद्यापतिक पद थिकनि। किन्तु एकर रचयिता 'भुवनेश' थिका। हुनक गीत-पुस्तिकाक नाम थिक—शिवविवाह, विनयपदावली, भुवनेश-पदावली, कीर्तनचन्द्रिका, जानकी-विवाहमंगल आदि। एकर अतिरिक्त, 'रागतालिका' नामक हुनक पोथी प्रकाशित छनि, जाहिमे शास्त्रीय संगीतक विभिन्न रागतालक विवेचन अछि। 'सुलभयोगमालिका' नामक चिकित्साग्रन्थ छनि। तत्कालीन हिन्दी पत्र-पत्रिकामे आध्यात्मिक आ स्वास्थ्य सम्बन्धी रचना प्रकाशित होइत छलनि। अपन क्षेत्रमे अनेक समाजिक-आध्यात्मिक संस्थाक संगठन कयने रहथि आ ओकर संरक्षक-संचालक रहथि।

पं० भुवनेश्वरझाक विवाह समस्तीपुर जिलाक करियन गामक पं० परमेश्वरीदत्तझाक कन्या गोसाउनि देवीसँ रहनि। श्री सुमनजी एही माता-पिताक सन्तान थिका।

जन्म

पं० भुवनेश्वरझाके चारि सन्तान भेलथिन—एक कन्या आ तीन बालक। जेठि कन्या छलथिन चम्पिका देवी, जनिक विवाह मुजफ्फरपुर जिलाक जाँता-काँटा गाममे पं० श्रीकृष्णमिश्रसँ भेल छलनि। ओ धर्मप्राण व्युत्पन्न आदर्श महिला छली। हुनक एक गीत-संग्रह 'मिथिला गीतमाला' नामसँ प्रकाशित छनि। ओ चित्रकलामे तेहने निष्णात छली जे श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय द्वारा पुरस्कृत भेली। ओ निःसन्तान छली। हुनक निधन १९९० ई० मे भेलनि।

श्री सुरेन्द्रझाक जन्म विक्रम संवत १९६७ मे आश्विन शुक्ल पंचमी तिथि, तदनुसार नौ अक्टूबर १९१० ई० के बल्लीपुरमे भेलनि। हिनक दू अनुज भेलथिन—देवेन्द्रझा आ भूपेन्द्रझा। देवेन्द्रझा दीर्घजीवी नहि भेलथिन आ हुनक निधन १९८१ मे भऽ गेलनि। श्री भूपेन्द्रझा प्रेस-तकनीकक नीक ज्ञाता ओ विविध व्यावहारिक ज्ञानक अधिकारी व्यक्ति छथि। ओ दरभंगामे संगहि रहैत छथिन।

बाल्यकाल

बल्लीपुर सम्भ्रान्त ओ साधनसम्पन्न जमीन्दारक गाम थिक। ताहि दिन जमीन्दारीक शान शिखरपर छलैक। देहात रहितो नगरक बसात पहुँचि गेल छलै ओतऽ! पत्र-पत्रिका अबैक, गुर्नी-गवैया आबथि, कीर्तन-नाटक मडली जुटैक। सभ दिन किछु-ने-किछु चहल-पहल होइते रहैक। एहने उल्लसित वातावरणमे बालक सुरेन्द्रक शैशव शुरू भेलनि। नेनेसँ मेधावी रहथि। तें जमीन्दार लोकनिक लगले स्नेह-भाजन भऽ गेला। स्वर नीक रहनि। गीत-संगीत, वाद्य- अभिनयमे रुचि देखौलनि। सभक दुलरुआ बनि गेला। पिता नेनेमे सैकड़ो श्लोक कंठस्थ करा देलथिन। खड़ी भेलनि। प्राथमिक शिक्षाक क्रममे फारसीक ज्ञान सेहो कराओल गेलनि। पढ़ाइ आ खेलेनाइ दुनू संगहि चलनि। कोनोमे कमजोर नहि रहथि।

हिनक उपनयनमे कोइलख (मधुबनी)क पं० अनिरुद्ध झा नोत पुरय आयल छलथिन। ओ हिनक पितियौत बहिन (पं० रामेश्वरझाक कन्या)क भैंसुर,

अर्थात् हिनक बहिनोइक जेठ भाइ रहथिन । अनिरुद्ध बाबू हिनक संस्कार देखि आकृष्ट भेला आ हिनक पितासँ हिनका कोइलखमे संस्कृत पढ़यबाक निवेदन कयलथिन । ताहि दिन मिथिलामे कोइलखक किछु विशेष प्रतिष्ठा रहैक । अत: ओहिठामक सहजहिं प्राप्त आमन्त्रणकें हिनक पिता सहर्ष स्वीकार कऽ लेलथिन आ हिनका संग लऽ जयबाक स्वस्ति दऽ देलथिन । फलतः ई बटुक पढ़बाक लेल अपन गामसँ सुदूर उत्तर, यात्रादुस्तर, बहिन-बहनोइक अभिभावकत्वमे, कोइलख चल गेलाह ।

अध्ययन

कोइलखमे भद्रकाली पाठशालामे प्रथमामे हिनक नाम लिखाओल गेलनि । अध्यापक रहथिन पं० जयसिंह ठाकुर । ओही समयमे, कोइलखक काशीकान्त मिश्र सेहो, जे पढ़बा लेल मातृक कोथुसँ पहिले-पहिल गाम अयले रहथि, ओही विद्यालयक छात्र छला । काशीकान्त वयसें हिनकासँ जेठ, किन्तु समान रुचिक कारणें ओतहि दुनूमे मित्रता भऽ गेलनि । मित्रता आत्मीयतामे बदलि गेलनि । एहन संयोग कदाचिते देखल जाइछ जे एक समयक दू महाकवि–मधुप आ सुमन—दू गामक होइतो, औपचारिक शिक्षाक श्रीगणेश, एके ठामसँ, एके समयमे, कयलनि । मधुपजी तँ हिनक वर्गसंगिए छलथिन, जयदेवमिश्र आ कांचीनाथझा 'किरण' सेहो ओही कोइलख-प्रवासमे हिनक आत्मीय भऽ गेलथिन । एक तँ हिनक लहलहाइत प्रतिभा, ताहिपर कोइलखक माटि आ सुयोग्य गुरुक अजस्र आशीष—फल जैह होयबाक सैह भेलैक । प्रथमामे ई प्रथम कयलनि आ सरकारी छात्रवृत्तिक भागीदार भेलाह ।

प्रथमाक बाद म० म० हरिहर कृपालु द्विवेदीक संरक्षणमे किछु दिन ई पटनामे पढ़लनि, किन्तु हिनक किशोर वय नागरिक जीवनक अनुकूल नहि भेलनि, तें पिता हिनका राजनगर पठा देलथिन । ई रमेश्वरी विद्यालयमे पं० सहदेवझासँ व्याकरण-साहित्यक पाठ पढ़लनि । राजनगरेमे हिनका स्वाध्यायक प्रवृत्ति आ ज्ञानार्जनक पिपासा जगलनि । मध्यमोमे परीक्षाफल, आशानुरूपे, प्रथमे, भेलनि आ ई पुनः स्कॉलरशिप प्राप्त कयलनि । मध्यमाक

बाद, १९२८ मे ई धर्मसमाज संस्कृत कालेज मुजफ्फरपुर चल गेलाह जतऽ कविशेखर पं० बदरीनाथझाक शिष्य बनि, हुनकासँ साहित्य पढ़ि शास्त्री आ पछाति आचार्य परीक्षामे १९३२ मे प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि। एहिसँ पहिने १९२९ मे बंगालसँ काव्यतीर्थक परीक्षामे सेहो सर्वप्रथम भेल छलाह।

विधिवत् शिक्षा एतहि विराम लऽ लेलकनि, किन्तु स्वाध्याय आ जिज्ञासावृत्ति तँ एहन छनि जे ई आइयो, चौरासी वर्षक अवस्थहुमे, किछु नव सिखबाक ललक रखनहिँ छथि।

विवाह ओ सन्तति

हिनक विवाह बेगूसराय जिलाक एहु गाममे पं० दिवाकर ठाकुरक कन्या गंगादेवीसँ १९३० ई० मे भेलनि, जाहिमे तीन सन्तति भेलथिन। जेठ बालक डॉ० श्री ब्रजेन्द्र झा ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालयमे अंगरेजीक प्रोफेसर ओ स्नातकोत्तर विभागक अध्यक्ष छथिन। दू कन्यामे जेठि महालक्ष्मीक विवाह मधुबनी जिलाक नाजिरपुर गामक श्री जयबिन्द चौधरीसँ तथा छोटि कन्या मैथिलीक विवाह रोसड़ा निवासी श्री कर्मकान्त ठाकुरसँ छनि।

पत्नी धर्मप्राण आदर्श नारी छलथिन, गृहकार्यमे दक्ष तथा हिनक सर्वांगीण उन्नतिक धूरी रहथिन। हुनक देहान्त २४ अप्रैल १९९४केँ भऽ गेलनि।

रुचि-प्रवृत्ति

पत्रकारितामे हिनक रुचि किशोरावस्थेसँ देखार होबऽ लगलनि। गाममे पत्र-पत्रिका पहुँचिते ओकरा लपकि कऽ देखथि, पढ़थि आ किछु ओहने करबाक मन बनबथि। केवल मने नहि बनबथि, ओकरा आकारो देथि। कने छेटगर भेलापर अपन तुरियाक संगीकेँ लय हस्तलिखित बाल-पत्रिका आरम्भो कऽ देने रहथि। ओकरा कहियो मासिक बनबथि, कहियो साप्ताहिक तँ कहियो दैनिको बना देथि। राजनगरमे जहिया पढ़ैत रहथि, ताहि बीचमे छुट्टीमे गाम अयलापर हिनक ई प्रवृत्ति विशेष जाग्रत भऽ उठनि आ हस्तलिखित 'त्रिवेणी'क किछु अंक बहार भऽ जाइनि। धर्मसमाज संस्कृत कालेज गेलापर अपन मित्र पं० रामचन्द्र मिश्र आ पं० जयकिशोर नारायण सिंहक संग संस्कृत मासिक 'जागृति' शुरू कयलनि, जकर एक अंक मुद्रितो भेल छलैक।

संस्कृत-हिन्दी-मैथिली,तीनू भाषापर समान अधिकार छनि। छात्रावस्थेमे काव्यदीपिकाक स्नेहवर्षिणी टीका ई लिखलनि, जकरा तत्कालीन सर्वप्रतिष्ठित संस्कृत-प्रकाशक काशीक 'मास्टर खेलाड़ीलाल एण्ड सन्स' प्रकाशित कयलक।

पत्रकारिता

किशोरावस्थेमे अपन रुचि पत्रकारिता दिस प्रदर्शित कऽ भविष्यक संकेत ई दऽ देने छला। बादोमे, मगन आश्रम मझौलियासँ प्रकाशित 'क्रान्ति'क सम्पादन कयलनि। सम्पादनक प्रति हिनक रुझान छलनिहे, संयोग एहन जे एकर अवसरो लगले उपस्थित भऽ गेलनि। पढ़ाइ खतम करिते, जीविकाक ब्योंतमे रहबे करथि कि मिथिला मिहिरक सम्पादकक प्रतिष्ठित पद हिनका अनायासे भेटि गेलनि। भेलैं ई जे १९३४ मे रोसड़ामे मैथिल महासभाक अधिवेशन आहूत भेल रहैक, जाहिमे स्वागत-अभिनन्दन करबाक हिनका सुयोग लगलनि। हिनक भाषा-शैली, हिनक पाण्डित्य, हिनक शालीनता-कार्यदक्षता, ओतबे अवस्थामे एहन प्रौढ़ता-परिपक्वता देखि तत्रस्थ पण्डितमण्डली, विशेषतः म० म० डॉ० सर गंगानाथझा, कुमार गंगानन्द सिंह तथा राजपण्डित बलदेवमिश्रक ध्यान हिनकापर आकृष्ट भेलनि आ हुनकेलोकनिक अनुशंसापर राजक सेवामे १९३५ मे ई आबि गेलाह। हिनकासँ पूर्व यद्यपि 'मिहिर'क पाँच गोट सम्पादक भऽ चुकल छला, किन्तु पत्र अपेक्षित स्तरीयताकेँ नहि प्राप्त कऽ सकल छल। पत्र हिन्दी-प्रधान छल। श्री सुमनजी वर्षाभ्यन्तरे,१९३६ मे, 'मिथिलांक' सन वृहदाकार विशेषांक प्रकाशित कऽ साहित्य-संसारमे अपन उपस्थितिक आभासे टा नहि करौलनि, अपितु तेहन मीलक पाथर गाड़ि देलनि जे ओ अपन जगहपर आइयो ओहिना गड़ल सर्वोत्कर्षक पताका फहरा रहल अछि। १९३५ सँ ५४ धरि ई मिथिला मिहिरक यशस्वी सम्पादक रहलाह आ समकालीनमे सुमनजीक बदला सम्पादकजीक नामे प्रसिद्ध भऽ गेलाह। केवल कविवरे भेलासँ सफल सम्पादक नहि भेल जा सकैछ। ओकरा तँ गद्यो तहिना मजल रहक चाही, इतिहास-ज्ञानक सगहि समकालीनपर पकड़ चाही, कथा निबन्ध हास्य-व्यंग्य रपट-लेखनमे दक्षता चाही, उल्लास-शोकक आकस्मिक अवसर अयलापर लगले सामग्री-प्रस्तुतिक क्षमता चाही। सभ पीढ़ीक लेखकसँ

अत्मीयता चाही। अग्रजक स्नेह चाही आ नवीन पीढ़ीकेँ प्रोत्साहित कऽ उचित दिशा देखयबाक प्रवीणता चाही। सम्पादकक यावन्तो गुणक हिनकामे प्रचुरता छनि तेँ पत्रकारिते हिनका सभसँ प्रिय रहलनि अछि।

मिथिला मिहिरक सम्पादनक अवधिएमे, १९४८ मे देशक स्वतंत्रताक सद्यः बादे स्वय 'स्वदेश' मासिकक प्रकाशन-संपादन कयलनि। ओकर छौबे गोट अक बहरा सकल, मुदा ओतबे अंक हिनक संपादन-कलाक पुष्ट प्रमाण लेल पर्याप्त अछि। १९५४ मे दरभंगासँ मिथिला मिहिर बन्द भऽ गेलाक बादो, सी० एम० कालेजमे मैथिली-प्राध्यापक नियुक्त भऽ गेलाक बादो, पत्रकारिताक प्रति विशेष अनुरागक कारणेँ तथा मैथिली सेवाक एकान्त भावसँ प्रेरित भऽ 'स्वदेश'क गाड़ीकेँ १९५५ मे फेरसँ गुड़कौलनि। तारीफ ई जे एहि बेर 'स्वदेश' मासिक नहि, 'दैनिक' छल, जे एकमात्र हिनके बलपर चलल। दैनिक 'स्वदेश' दू बेर बहरायल। दोसर बेर १९८१-८३ क बीच। ई १९५४ सँ ६४ धरि 'वैदेही'क सम्पादक मण्डलक वरिष्ठ सदस्य रहलाह। इजोत, पल्लव आ मैथिली अकादमी पत्रिकाक सम्पादकमण्डलकेँ सेहो गौरवान्वित कयलनि। एखनहुँ, एहू वयसमे, हिनक मन मैथिली पत्र बहार करबाक लेल कखनहुँ कऽ बेचैन भऽ उठैत छथि।

मैथिली मन्दिर आ मिथिला प्रेस

पत्रकारिताक प्रति आत्यन्तिक अनुरागेक कारण ई प्रेस सेहो बैसौलनि। १९४८ मे अपन आवासकेँ 'मैथिली मन्दिर'बनौलनि आ मिथिला प्रेसक स्थापना कयलनि। ओही प्रेससँ 'स्वदेश' छपल, मासिक आ दैनिक दुनू। ओही प्रेससँ मैथिलीक सैकड़ो पोथी छपल, हिनक अपन तँ सहजहिँ, आनो मैथिली महारथी लोकनिक राशि-राशिक पोथी। आन्दोलनक पर्चा-पुर्जी कतेक छपल, तकर लेखा नहि।

अध्यापन

जहिना पत्रकारिता हिनक सर्वप्रिय विषय रहलनि अछि, तहिना अध्यापनोक प्रति लगाव मोटामोटी सभ दिन रहबे कयलनि। जहिया पढ़ैत रहथि, छुट्टीमे गाम आवथि तँ गामक प्राथमिक पाठशालामे जा अपन सेवा समर्पित

करथि। पछाति, हिनक पिता द्वारा स्थापित राधाकान्त मिडिल इंगलिश स्कूलमे किछु दिन अध्यापकी कयलनि। आचार्य कयलाक बाद मुजफ्फरपुर जिलाक मनियारी स्थित महन्थ दर्शनदास हाइ इंगलिश स्कूलमे १९३४ मे छौ मास धरि हेड पण्डित रहलाह।

१९५३ मे चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय दरभंगामे मैथिलीक प्राध्यापक नियुक्त भेलाह। विशेष ध्यातव्य ई जे प्राध्यापकक हेतु ताहि विषयमे एम.ए. उत्तीर्ण होयबाक अर्हताकेँ शिथिल कऽ विशेष विद्वानक रूपमे हिनक नियुक्ति ओहि पदपर कयल गेलनि। १९६५ सँ, प्रो० ईशनाथझाक देहान्तक बाद, ई विभागाध्यक्ष भेलाह, जाहि पदपर १९७१ धरि रहलाह। १९७२ मे रीडर पदपर प्रोन्नत भऽ मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर विभागक अध्यक्ष पदकेँ सुशोभित कयलनि, जतऽ ओ १९७५ मे अवकाश ग्रहण कयलनि। अपन सम्पूर्ण अध्यापन-अवधिमे हिनक पाण्डित्यक धाख सदा बनल रहलनि।

सम्मान-पुरस्कार

छात्रजीवनेसँ पुरस्कारक सिलसिला जे हिनका शुरू भेलनि, से क्रमशः उत्कर्षोन्मुखे होइत गेलनि। पुरस्कारक संख्या तथा विभिन्न संस्था-संस्थान द्वारा सम्मानक गणना करब कठिन अछि, तथापि किछु प्रमुख पुरस्कार ओ सम्मानक उल्लेख कयल जा रहल अछि।

(१) १९२८ मे मुजफ्फरपुर छात्रसमिति द्वारा निबन्ध-प्रतियोगितामे हिन्दीसाहित्यालंकारक उपाधि एवं पदक।

(२) १९३४ मे विद्यापति विषयक निबन्ध-लेखनमे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद द्वारा विद्यापति पुरस्कार।

(३) १९५६ मे मिथिलेश द्वारा आहूत डॉ० राजेन्द्र प्रसादक अभिनन्दन-लेखनमे पाँच सय टाकाक पुरस्कार।

(४) १९७१ मे पयस्विनी काव्यसंग्रहपर साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

(५) १९७९ मे बिहार सरकार द्वारा राष्ट्रभाषा-सेवार्थ सम्मान।

(६) १९८२ मे मैथिली अकादमी पटना द्वारा 'उत्तरा' खण्डकाव्यपर विद्यापति पुरस्कार।

एकर अतिरिक्त, हिनका देशक अनेकानेक संस्था द्वारा सम्मानित कयल गेलनि। विशिष्ट व्याख्यानक हेतु अनेक ठामसँ आहूत भेलाह, जाहिमे, १९८४ मे, उड़िया लेखकसम्मेलन कटकमे दीक्षान्त भाषण मुख्य थिक।

अनेक अखिल भारतीय साहित्य एवं शिक्षा-संस्थाक अध्यक्ष अथवा सदस्य रहल छथि, जाहिमे किछ मुख्य थिक—

(क) साहित्य अकादेमी दिल्लीमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधि तथा ओकर कार्यकारिणीक सदस्य—१९८३-९२।

(ख) अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद दरभंगाक अध्यक्ष—१९७३-८८।

(ग) सीनेटक सदस्य—कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयमे—१९७५-८२ धरि तथा मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगामे—१९७८-८०।

(घ) उच्चस्तरीय साहित्यकार कलाकार कल्याणनिधि (बिहार सरकार)क सदस्य—१९७२-७५।

(ङ) अकाशवाणी सलाहकार समितिक सदस्य पटना—१९७६, दरभंगा—१९९३-९४।

राजनीति

साहित्यमे आधुनिक युगक शीर्ष व्यक्तित्व तँ छथिहे, राजनीति-रसक सेहो गम्भीर रसिक छथि। आरम्भमे ई पं० रामनन्दन मिश्रक निकट सम्पर्कमे अयलाह आ खादी धारण कऽ महात्मा गान्धीक अनुयायी बनि गेलाह। सार्वजनिक जीवनमे विशेष रुचि लेबाक कारणे आ नगरक प्रतिष्ठित नागरिक होयवाक कारणे १९४० सँ ५० धरि ई दरभंगा नगरपालिकाक मनोनीत सदस्य छलाह।

स्वतंत्रताक बाद, कांग्रेसी राजनीतिसँ हिनक मन टुटि गेलनि आ ई हिन्दू महासभा, रामराज्य परिषद तथा राष्ट्रिये स्वयंसेवक संघर्स सम्बद्ध रहलाह।

संघक ई जिलासंघचालक'क पद धरि गेलाह एवं ओकर शीर्ष नेतृत्वसँ निरन्तर निकट सम्पर्क बनौने रहलाह। हिनक मेधा, चिन्तन, पाण्डित्य ओ समर्पण-भावसँ संघक नेतृत्व प्रभावित रहल एवं हिनक परामर्शसँ लाभान्वित होइत रहल। जनसंघक स्थापनाक बाद ई ओहिमे शामिल भऽ गेलाह। जनसंघक जनता पार्टीमे विलय भऽ गेलापर जनता पार्टीमे गेलाह आ फेर जनता पार्टीमे टूटक बाद भारतीय जनता पार्टीक कर्मठ सदस्य बनि गेलाह। आपातकालमे हिनका जहलो भेलनि। ई अपन दलक टिकटपर १९६२, ६७ तथा ७२ मे बिहार विधानसभाक सदस्यता लेल दरभंगा चुनावक्षेत्रसँ लड़लाह, जाहिमे १९७२ मे सफलता भेटलनि। तहिना, लोकसभाक सदस्यता हेतु सेहो दरभंगा संसदीय निर्वाचन-क्षेत्रसँ तीन बेर १९६९, ७७ तथा ८० मे चुनाव-युद्धमे कुदलाह, जाहिमे १९७७ मे सफलता हाथ लगलनि। ओहि बेर सम्पूर्ण देशमे अधिकतम मतसँ विजयी प्रत्याशीमे हिनक स्थान तेरहम छलनि। विधायक आ सांसदक हैसियतसँ अनेको समितिक सदस्य बनलाह, जाहिमे मुख्य थिक—संसदीय राजभाषा परिषदक सदस्यता एवं संसदीय केन्द्रीय शिक्षा संस्कृति एवं समाजकल्याण परामर्श समितिक सदस्यता।

आशावादी

राजनीतिमे व्याप्त भ्रष्टाचारसँ जहिना ई खिन्न रहैत छथि, तहिना साहित्यिक कटुता हिनका विखिन्न बनौने रहैत छनि। किन्तु, एहू स्थितिमे निराश ने राजनीतिसँ छथि ने साहित्यसँ! आसक्ति कोनोमे ने रखने छथि, मुदा संन्यास कोनोसँ ने लेलनि अछि। एक-ने-एक दिन राजनीतिमे सुधार अयबे करतै, देशाभिमान जगबे करतै, त्यागभाव उभरबे करतै, भ्रष्टाचार दबबे करतै—एकर हिनका पूरा विश्वास छनि। तहिना, साहित्योमे झाड़-झंखाड़

झड़तै आ सत्साहित्यक सुरभि पसरतै—ताही आस्थासँ एखनो सक्रिय छथि। अपनहुँ सक्रिय रहै छथि, सम्पर्कमे अयनिहारोकेँ सक्रिय रखै छथि।

बटवृक्ष

सुजनता-सौम्यता-विनम्रताक प्रतीक थिका सुमनजी, मानवताक मंजुल मूर्ति थिका ई। प्रो० हरिमोहनझाक ई उक्ति अक्षरशः सत्य अछि जे—'हिनकामे सुकुमारता, मधुरता ओ नवीनता एहि तीनूक अद्भुत समावेश रहलनि अछि। हमरा तँ बुझना जाइछ जे सुकुमारताक 'सु' मधुरताक 'म' आ नवीनताक न' अक्षर लऽ कऽ हिनक नाम सुमनक रचना भेल अछि।'

वास्तवमे, आधुनिक मैथिली साहित्यक विशाल बटवृक्ष थिका ई, जे आइ चौरासी वर्षसँ ओहिना अटल छथि, झंझावातहुमे मुस्कुराइत डटल छथि—पथिकक पाथेय बनल, मैथिलीक प्रेय-श्रेय बनल! व्यक्तित्व एहन जे—

स्तुति-निन्दामे भेद न मानल, रिपु-हित बुझल समाने
पटबथि वा काटथि दूहूकेँ छायासँ सम्माने

□
■
□



सपत्नीक श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन'

काव्य-कुसुम

श्रद्धाप्रसूनाञ्जलिः

आचार्य डॉ० श्रीजयमन्तमिश्र

सुमन इह जगत्यां विद्यते को मनीषी
विविध - गुण - गणं ते बोधयेद् विज्ञ-वृन्दम् ?
नभसि निखिल तारामण्डलं नो कदाचिद्
गणयितुमिह दक्षः कोऽपि दृष्टः श्रुतो वा ।।

विबुध ! विविध - सेवा-कार्य - जातं विलोक्य
मनुज-मनसि चैकं भावनं जायते हि ।
जननमिह जगत्यां सार्थकं त्वादृशानाम्
अपर - पर - विभेद - त्याग - सत्य - व्रतानाम् ।।

राजनीति कालिन्दी गङ्गा सेवा समग्रजनतायाः ।
सुभगा सरस्वती च प्रवहति हृदये निरन्तरं भवतः ।।

हृदयस्थलं त्वदीयं तीर्थस्थानं नचात्र सन्देहः ।
सम्पर्की ना नित्यं कुरुतेऽनुभवं मनोहरं भवतः ।।

शास्त्राम्बुध्यवगाहन - पारङ्गतमानसं भवताम् ।
तज्जन्यं कृतिमत्वं कुरुते हृदयं न कस्य साश्चर्यम् ।।

शक्ति-निपुणताभ्यासा इति त्रिवेणी सदा प्रवहमाना ।
निर्मल चित्ते भवतां कुरुते काव्यं च तोषाय ।।

संस्कृत - हिन्दी - मैथिली - भाषाचय चतुरेण ।
सरसं काव्यं बहुविधं रचितं विज्ञवरेण ।।

कस्य न परनिर्वृतये काव्यं भवति प्रकृष्टमिह भवताम् ।
सहृदय - हृदयं कुरुते सद्यश्चमत्कृतं नूनम् ।।

अभिनन्दन

कविचूड़ामणि काशीकान्तमिश्र 'मधुप'

जनक जनिक भुवनेश, स्वयं बुधजनक चित्तहर ख्यात हे
प्रतिभामे आश्चर्यजनक मैथिलीजनक विख्यात हे

बल्लीपुर वल्लीक सुमन
आरसीक ग्रामक गर्व से
आचार्यक चौपाड़िक लग
महमह रखैत सब पर्व से

अमरवृन्द तोषक चिरजीबथु सहस बरस शुचि गात हे

जीर्ण-शीर्ण मैथिली नहरिके
गाङ-लहरि छवि देल जे
रहितो ललना लहरि छबो रिपु
शैल हेतु पवि भेल से

किरण-सहास सुहृद् चिरजीबथु मधुमय जनिकर बात हे

जनिक उत्तरो खण्डकाव्यमे
कवितो पूज्य पयस्विनी
सावन-भादव नव रसदायक
मूर्त्ति जकर मधुवर्षिणी

सहस बरस से सकुशल जीबथु सारस्वत जलजात हे

जे न महाकविए कवि-लेखक
स्रष्टा बड़का यन्त्र छै
जनिक प्रतिपदो साधक ठोरक
साधनाक मृदु मन्त्र छै

ताहि सुमन-अभिनन्दन-छनमे 'मधुप' प्रफुल्लित गात हे

सुमनांजलि

श्रीआरसीप्रसादसिंह

सुमन बहुतो छथि अमरपुर वा धरातल पर
भेटि जायत फुलल बहुतो सुमन अति सुन्दर
किन्तु, ई जे 'सुमन' हमरा सभक इन्दीवर
पैघ सबसँ, कऽ सकै अछि के एकर परतर ?

सुरभि कोनोमे तँ कोनो सुमनमे परिमल
सुमन कोनो रूप सँ कऽ दैत अछि विह्वल
किन्तु, ई जे 'सुमन' सब तरहेँ हमर अनुपम
जगतमे देखल कतहु ने हम एकर तत्सम

'मैथिली मन्दिर' बना साहित्य-सर्जनसँ
कैल वाग्देवीक पूजन प्राण-धन-पणसँ
सरसता, सुकुमारता, माधुर्य सद्‌भावन
काव्य आ व्यक्तित्व दूहूमे परम पावन

कमल-सन कोमल, विमलतामे त्रिपथगा-जल
सौम्य, संस्कृति–शीलतामे सुमन तुलसीदल
भक्ति-भावुक, भावना-सद्‌भाव-भावोज्ज्वल
सर्वगुण समवेत एके ठाम सुरतरुफल

चिर पुराणक नित्य नूतन संग आकर्षण
प्रौढ़ता, पाण्डित्य, प्रतिभा, शिव-कला-दर्शन
की त्रिवेणी, की सुमन-सौजन्य, जितमत्सर
बन्धुवर जीबथि शताधिक स्वस्थ संवत्सर

श्री'सुमन'-अभिनन्दन

श्रीबबुआजीझा 'अज्ञात'

सुमनक नाम सुनैत ककर मन नहि प्रसन्न अछि ह्वैत ?
सौम्य हिनक आनन नहि ककरा उर अछि उभरि अबैत ?
सरल बिमल व्यक्तित्व योग्यता हिनक उजागर ज्ञान
नाम सुनैत अबैत हृदयमे अछि चलचित्र समान

मिथिला मिहिरक सम्पादनसँ विकसित हिनक कृतित्व
चान जकाँ चमकौलक हिनका अध्यापन वृत्तित्व
शिष्य-प्रशिष्यक विपुल मण्डली अछि व्यापल सभ ठाम
फहरबैत अछि कतय हिनक नहि यशक ध्वजा अभिराम ?

कोन विषय अछि जतय लेखनी हिनक दौड़ि नहि गेल ?
पूर्ण समर्पित रहला सभदिन माइक भाषा लेल
'प्रतिपदा'दि कविताक सर्जना, तकरा दैत प्रसार
रहला नित्य भरैत मैथिली-साहित्यक भण्डार

रहितहुँ आर्थिक भार मैथिलिक छल अदम्य आवेश
पत्र प्रकाशित करितहिँ रहला बहुतो काल 'स्वदेश'
सार्थक निज उपनाम बनौने रहला सुमन हँसैत
कृत्य कलापक परिमल सभकेँ तिरपित रहल करैत

त्याग-तपक आदर्श-भूमि पर तरुकेँ सुमन रखैत
जीवनचर्या अपन जेना छथि व्याजेँ व्यक्त करैत
झुकि-झुकि वृद्ध तकैत हिनक छथि अपन हेरायल रत्न
चकित-चमत्कृत होथु कोना नहि हमरा सन-सन प्रत्न

भारतवर्षक प्रान्त-प्रान्त मे घुरि-घुरि विम्ब चुनैत
दत्तवती नव महाकाव्य अछि हिनकर अचिर अबैत
साओन-भादव रसक वृष्टि तँ किछुए काल करैछ
सामाजिक केँ साओन-भादव हिनक सदा रस दैछ

सभठाँ सभदिन बनल लोकप्रिय झा सुरेन्द्र रहलाह
हेतु अछैतहुँ पड़ल न कहियो क्रोधक मुँहपर छाह
कते सभा - संस्था सँ भेटल छनि आदर सम्मान
किन्तु तकर कोनो नहि हिनका मनमे गर्व-गुमान

रहला सांसद तीन वर्ष धरि भा - ज - पा क बनि अंग
कर्मठ हिनक योग्यता हिनका कतय न देलक संग ?
एखनहुँ दै छथि आन्दोलन मे देशक हित सहयोग
दौड़ि चलै छथि नव दिल्ली मे यद्यपि हृदयक रोग

नृप-नीतिक नेता नहि, केवल नेता काव्य-कृतीक
मिथिला - मैथिल - मैथिलीक शुभ-शोभा-शक्ति-प्रतीक
कार्य-वृद्ध छथि, प्रिय प्रसिद्ध छथि चरित चारु अवदात
करथु कोना नहि तनिक स्नेह सँ अभिनन्दन 'अज्ञात'

सुमन सुवासक केन्द्र

काशीनाथठाकुर 'कलेश'

श्रीमन् सुकवि सुरेन्द्र !

मिथिला-मानस उपवन-'बल्ली'-विकसित सुमन सुवासक केन्द्र
अतुल तपोधन 'भुवन' भवन मणि दीपक दीपित दिशा दिगन्त
धन्य-जननि जनिभू-गर्भोद्भव अर्भक अद्‌भुत प्रकृति-बसन्त
सुप्रशंस सद्‌वंश - वशंवद विद्या - बुद्धि - विवेक-निधान
सद्‌गुण सुरसम्पति-परिपूरित हृत्प्रदेश सन्देश प्रधान
कत कमनीय कल्पना कल्पित-कविता-कामिनि-कुतुकागार
भरल विभाव-विभव अनुभावक सहचर रस निष्पत्ति-प्रकार
प्रतिभा तव 'प्रतिपदा'-तमोहर भाषा पद पद्माकर-भानु
गुणिगण-तारक-सभा-सभापति वसुधा बीच सुधाकर-भानु
विविध-विधानक काव्योद्यानक विकसित कुसुमस्तवछविकार
नर-वर-भ्रमर भरमि मकरन्दानन्द मुग्ध कर गुन-गुन्जार
मैथिलीक पद-वन्दन-सेवन सत्साहित्य - सृजन दिन - राति
कैलहुँ, पौलहुँ सुजन-मनोहर चारुचन्द्रिकासन-सुख्याति
स्मृति-सरस्वती, कृति-कालिन्दी, मैथिलि-मन्दाकिनी त्रिवेणि
संगम, सुकृत सलिल शुचिधारा काव्य-तीर्थराज श्री श्रेणि
पूर्ण प्रतिष्ठाभू 'पयस्विनी' पतिओ पायस पारावार
नित्य नृत्यकर कृत्य-तरंगे यत्न-रत्न राशिक उपहार
मेधा-साध्य साधना सम्भव 'दत्तवती' नन्दन द्युतिहारी
सर्ग, विसर्ग, निसर्ग, विचित्र चरित्रक चित्रण चिन्तन-कारी
अपने सन सत्पुत्र पाबिकय मिथिला आइ इलामे धन्य
मैथिलमण्डल मानोन्नत अछि हे स्वदेश कविवर-मूर्धन्य
मिथिलांचल मलयाचल मानव-मंगलमूल मूर्त्त हरिचन्दन
सदामोदसन्दोह-समर्पक-कर-सरोज सादर अभिनन्दन

प्रेमोपहार

बुद्धिधारीसिंह 'रमाकर'

'मिथिला मिहिर'क किरण सहस्रक पाओल जग आलोक
कीर्त्ति-रश्मिसँ होइछ मानव जगमे पुण्य - श्लोक
'प्रतिपद' बरिसल 'साओन-भादब' तदपि न मन सन्तोष
'पयस्विनी' - पीयूष प्रभावित बुध मन हियमे तोष
लय संगीतक श्रवण-माधुरी प्रथित 'उत्तरा' राग
काव्यक वीणा झंकृत कयलक सरस्वती - अनुराग
माइक भाषा-मन्दिर चकमक बारल अमर इजोत
जत प्रकाश अनुपम ओ आनल देखि न कतहु इरोत
सुमन - सुमनसँ शोभित देखी कयल पुरस्कृत 'देश'
मुदित लगनमे अर्पित करइछ रमाकरक 'आवेश'

मैथिलीक कीर्त्ति

श्रीशोभाकान्तमिश्र

गंगा जकाँ सरस, निर्मल, शुचि, शीतल जनिकर जीवन
तपःपूत हिमनग सन सुस्थिर, बुद्ध-शुद्ध आजीवन
ममतामयी मातृभाषा, मृदु मैथिलीक जे कीर्त्ति
ख्याति-विरति, विख्यात परम ओ साधुताक प्रतिमूर्त्ति
कल्पवृक्ष सन जनिक लेखनी, कारणरहित दयालु
आशुतोष सन प्रतिपक्षी वर्गहुँ पर परम कृपालु
मैथिलीक उन्नायक, नायक संघक, प्रबल इजोत
चिरजीवथु ओ नवदधीचि, अभिनव साहित्यस्रोत

Scanned by CamScanner

काव्याञ्जलि

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

कीनि लेल तकरे सद्‌गुणसँ आयल जेह समीप
प्रज्वालित कय ज्ञान-वर्त्तिका बारल शत-शत दीप
कर्म - कठोर बनल कर्त्तव्यक पथपर लय निर्भयता
जीतल अन्तःशत्रु क्रोधकेँ अपनौलहुँ सहृदयता
नलिनी-दलगत जलवत् जीवन, कर्मक मात्र महत्त्व
बुझि, जागल रहलहुँ, कयलहुँ पुनि अधिगत जीवन-तत्त्व
की सारस्वत साधनाक नहि छी अपने प्रतिरूप ?
प्रमुदित रहथि सदा अपने लग रंक रहथु वा भूप
ऐकान्तिक साधना-प्रसादेँ अछि अगजग उद्‌भासित
विनयमूर्त्ति ! अपनेक विनय के कय सकते परिभाषित ?
सिंचित राखि सिनेह सदा सहचरकेँ राखल मुग्ध
मैथिलीक सेवामे अर्पित कयलहुँ कविता-दुग्ध
सुमनक झरल पराग गद्य-उपवन मँहमँह भय गेल
जननी-मुख-श्रुत भाषाकेँ अपनैं जीवन दय देल
सौजन्यक प्रतिमूर्त्ति ! वरनि के सकत अहाँक मृदुलता ?
मलयज सन मिश्रित स्वभावमे सौरभ ओ शीतलता
ललित राग अनुरागेँ पुलकित रहय अहँक अन्तर्मन
मेटि परक दुख-दर्द, प्रफुल्लित करइत रहलहुँ जीवन
राजनीति बीथीमे पौलहुँ हँसइत सहज प्रवेश
बसल रहल अनुखन चिन्तनमे रहओ समृद्ध स्वदेश
कहब कतेक, कोना कय सकबे हम अनन्त गुण वर्णन
रहलहुँ तकइत, भेटि सकल उपयुक्त ताहि लै वर्ण न
साधक हेतु सुरेन्द्रक उपवन पारिजात तरु चतरल
अमरवेलि बनि अहँक यशोलतिका दिगन्त धरि लतरल

सुमनोऽञ्जलि

डॉ० श्रीरमाकान्तपाठक

कलशाधिष्ठित, आम्रपल्लवासन, गण-नायक
कोटि प्रणति, हे रस-रूपोज्ज्वल दीप-विनायक
भोजपत्र-सन अजर, मनोहर मिथिलाक्षर-सन
धीर मैथिली-सन, हो राजभवन, वा हो वन

छप्पय-वल्लभ प्रतिपदें, पद-पद अरिपन कयल पद
जा धरि छी, ता धरि रहत, सङ लागल मिथिला-अवध

२

अहाँ अहीँ सन, सोझ, सौंस, साँठल, सरिआयल
माँजल पंचपात्र मे गंगाजल ओरिआयल
सम अपमान-मान, सम शत्रु-मित्र, सम जल-थल
जहिना विल्वपत्र, ओड़हुल, तहिना तुलसी-दल

स्वादु, शुद्ध, सीझल, सुपच, विदुर-अयाचिक साग-सन
सीताहाथक सूतकेर, रामक कोकटी पाग-सन

३

भेलि जतय मिलि एक भारतक काव्य-त्रिधारा
गंगा - यमुना - सरस्वती - सम एकाकारा
कालिदास - विद्यापति - तुलसीदासक वाणी
से प्रयाग नागार्जुन-सुमनक भरनी-तानी

कुम्भोत्सव एहि संगमक, जंगम भय युग-युग रहथु
सौति कहल जे-जे कथा, से-से, नव-नव कय, कहथु

कमल-फूल यदि गोल, मखानक पातो चाकर
माघक सजबी दही, तँ जेठक चुड़ो ने जाकर
रस अद्वैतक स्वाद, भेद जीभक आँखिक भ्रम
माटि-पानि थिक अपन. तखन, किनका सौँ के कम ?
यात्री, मधुप, किरण, अमर, वा मणिपद्म, कि आरसी
समक-यमक केर जेरमे, चीनी के, के फारसी ?

५

जीबछ-सन खनहन, माघक कमला-सन पातर
बागमती पड़ि, गँची भेला' करेहक कातर
राजासनपर चढ़ि चिल्होरि कोकिलकेँ बान्हय
नियति चुड़ैनिक चूल्हि परोर, ओल कय, रान्हय
मालवीय, गाँधी, तिलक सावरकर गेल घाट छथि
सान-माठ नट-नटिक सुनि, भारत लाजेँ काठ छथि

६

खह-खह बिढ़निक खोह, अबाह अन्हरिया गाछी
सह-सह गोजर जोँक, छहाछहि मच्छड़-माछी
तहुठाँ धर्म-वृषभ अहँ, तञ्‍ा किछु बाछो-बाछी
वैष्णव भय-भय साँप सोन्हाबथि डाबा-छाछी
राज करथु गय शिवक गण, छथि अगबे, आ'रो रहथु
काँट-झाँट लतरथु, फरथु, सिङरहार ठाढ़ो रहथु

सुमनक शत-शत अभिनन्दन

श्रीचन्द्रभानुसिंह

सरस्वतीमे समाधिस्थ सुकुमार सुमन सन जकर सुमन
तँ आँजुर भरि सुमन-संचयै सुमनक शत-शत अभिनन्दन

माँटि-बसाते आगि-पानिसँ अँकुरल जे साँसक भाषा
प्रत्याशी मृत्तिका-घोष भाषाभाषिक जे परिभाषा
ओहन समर्पित्त चरितक पूजनमे अर्पित हो तन-मन-धन

गणपति-सन ढुलढुल, भुटकुन तन, खंती सोझ कलम अनमन
उठा लेल जे कनगुरियापर माटिक भाषा गोवर्द्धन
तँ सुमनक शिरपर गोरोचन दधि-दूर्वासँ अभिवादन

व्यास-समास सहज शैलीमे उतरय भावक जे गंगाजल
लेखनीक गोमुखसँ फूटय अमृत अँछिजल तरल-सरल
'गंगा-लहरी' नागफेन चढ़ि कयलक जे मुरली-वादन

जटाजूट गद्यांश जटायल पद्मनाभ-छवि पद्मांजलि
प्राणवती प्रांजल भाषा सन आकृति विधिप्रद नियमावलि
सम्मुख पड़िते सकुचि जाइ छथि माँटिक भाषाभाषी जन

सज्जन राम-रूप सन सज्जन मन माधवी-लता मधुवन
पाठक वृन्दक मन -मिलिन्द जकरापर मरड़ाइछ अनुखन
तँ सुमनक व्यक्तित्व-निरूपण आखर हमर अकिंचन-सन

नमन मनन निधि हृदयासन पर चिर चिन्तन सुमनक चाही
सरस शीर्ष सुमनक शब्दावलि चन्द्रमणिक द्रव सन धाही
शब्द अभेद अर्थ भेदक रस स-मन नहाइछ दुग्ध सुमन

मुक्तक-खण्ड - प्रबन्धक रचने गढ़ल भूमिका शुभ अक्षय
कलित कदम्ब ललित गद्यांजलि पढ़ि-पढ़ि करथि सुधी जय-जय
बल्लीपुर वल्लीक बल्लरी बिहुँसल सुमनक अछि वन्दन
बाजी नहि बाजी की बाजी जे बाजी से आर्ष वचन
विमल धारणा माँजल मेधा प्रकट वाङ्मय माँटिक तन
जते जन्मर्स दिवस आइ धरि ओतबे सुमनक अभिनन्दन
व्यास जकाँ व्याख्याता वरणक स्वयं वृहस्पति सन दुर्धर
चन्द्रचूड़ शिर सुरसरि-चुम्बित चुअल सुमनकेर स्वर्णाक्षर
सिङरहार कवि आरसीक पद शरत डोला चुनि लिअऽ सुमन

सदा सुमन

डॉ० श्रीबदरीनारायणझा

चिन्तित मन कखनहुँ नहि
कखनहुँ नहि उन्मन, सदा सुमन
राग पराग काव्य सौरभ भरि
मलयानिल हिमधवल शिखर धरि
प्रेरण निजगुण मानस सज्जन, सदा सुमन
प्राण प्रमाण राष्ट्र बनि सेवक
स्वयं समर्पित तन जीवन
सरसाओल संसद जन देहलि
अरुण अधर धर कुंद रदन, सदा सुमन
किन्तु सुरेन्द्र कराल कामि–
समर - स्मर - शर खरतर
करइत सुकेशिनी उर छेदन
सुन्दर तनु तन, सदा सुमन
गुण विशेष बरनथि बदरी की ?
हुनका ले' बस स्नेह-सदन, सदा सुमन

हे विद्या-गरिमाक हिमालय

डॉ० श्रीरामदेवझा

हे विद्या - गरिमा हिमालय !
चेतनताक पुरातन भू पर
नूतनता - सर्जन नव गिरिवर
नित नव नव गंगा ओ यमुना
कोशी कमलाऽमृत जनि छिलकय
कृतिएँ द्रवण प्रकृतिएँ निश्छल
भावें गहन स्वभावें शीतल
शान्त मनस्वी आभा - मंडित
शीलवान् सुकुमार कलामय
राष्ट्र-अर्चना केर फूल हे !
अनासक्त साधना मूल हे !
व्यक्तित्वें सब जन-मन जीतल
स्नेहक साओन-भादव बरिसय
पयस्विनी लेखनी - समर्पल
दत्तवती मेधाक प्रस्फुरण
राष्ट्रक अन्तर्नाद व्यंजना
भारत - वन्दन ऋचालोकमय
मिथिला भारत केर लघु प्रतिमा
अन्योन्याश्रित जनिकर महिमा
अर्चनाक हित अर्पित प्रतिपद
सुमन सुभाषित गमगम गमकय
तन-मन - जीवन सँ उपकारी !
आँजुर भरि श्रद्धा स्वीकारी
श्रीमानक मानस आशिष सँ
संकल्पक पथ हो ज्योतिर्मय
हे विद्या - गरिमाक हिमालय !

पद्याञ्जलि

श्रीरवीन्द्रनाथठाकुर

करी पुष्प-वर्षा धरापर गगनसँ
नमन हम करैछी सुमनकेँ सु-मनसँ

सदयताक सागर, थिका विन्दु सन्धिक
जतय भेँट होइछ विरहकेँ मिलनसँ

भुवन-भावनामे सतत साधना - रत
जीवन जनिक युक्त चारू चरणसँ

प्रवहमान चिंतन भाषित सुवासित
अमरता निहारैत कविता नयनसँ

भाषाक गौरव-गिरि प्रतिभाक मस्तक
मैथिलीक वैभव, नहि तुलना रतनसँ

मिथिलासँ हिनकर सम्बन्ध अछि से
जे सम्बन्ध आगिक होइछ पवनसँ

संघर्षक गवाही स्वदेशक सिपाही
झुकला नहि, रुकला नहि, चलला जखनसँ

एहि महामानवक अभिनन्दन, अभिनन्दन
हम तँ करय चाहै छी अपना हवनसँ

सदा शक्तिदाता हिनक कीर्त्तिगाथा
किछु तँ सुनाओल अपना वचनसँ

सुमन-वन्दना

श्री मार्कण्डेय प्रवासी

हे मैथिलीक कविता-कैलासक रचनाधर्मी शिव महान
हे पत्रकारिता-पार्वतीश ! शिल्पी कलमध्वज कवि ! प्रणाम

आपादशिरानम्रतानेह ! हे साहित्यिक-सुरभित विदेह !
श्रीयुत सुरेन्द्र झा सुमन ! निवेदित अछि मार्कण्डेयक प्रणाम

हे अक्षरशः शब्दार्थ-सिन्धु ! हे अतिविराट्‌विग्रही विन्दु !
तेजोज्ज्वल, स्फटिकधवल व्यक्तित्वक अद्वितीय कविवर ! प्रणाम

हे मैथिल भारतीय नवऋषि ! अछि अहँक मंत्र-नादित दिशि-दिशि
हे साम - गान - चैतन्य - पुरस्सर ज्ञानोन्नत सत्कवि ! प्रणाम

हे काव्य-दार्शनिक कर्म-पथी ! ज्योतिष-मीमांसा-वेद-रथी !
हे शुद्ध, सुसंस्कृत शाक्त बुद्ध ! अनिरुद्ध काव्ययोगी ! प्रणाम

कोमल भावक सम सुर-संगम ! सारस्वत सुधिसं-यत सरगम !
हे प्रणय-पयस्वी, महामनस्वी सिद्ध तपस्वी कवि ! प्रणाम

अनुराग-पथी अग्रज मंत्रक ! हे भूतपूर्व सांसदसंज्ञक !
हे राष्ट्रधर्म-व्यंजना-विधायक ! गणनायक कविवर ! प्रणाम

सुमन-अभिनन्दन

श्रीजगदीशप्रसादकर्ण

स्वयं सुरेन्द्र सुमन भय अयला धय शुचि मनुज शरीर
कलियुग कला विकल, तत कल-कल विमल बहाओल नीर

मातृभूमि - भाषा - अनुरागी पकड़ि संस्कृतिक मूल
चढ़लहुँ मैथिलोक पद - पङ्कज बनि साहित्यक फूल

पुरस्कार गौरव नहि देलक अपने कें साहित्य
स्वयं पाबि गौरव, मधु-सौरभ भेल किओ कृत-कृत्य

प्राप्त कयल माटिक कण - कणसँ जे रस - सुरभि - मरन्द
रहल बिखेरि ज्योत्स्ना ज्योतिक बनि निर्झर-मकरन्द

अलंकार, रस, ध्वनि, वर्णक जे अहँक व्यञ्जना मर्म
अनुस्यूत भय जीवन-मनसँ बनल जगत् - युग - धर्म

रहलहुँ जतहि बनल तप-कानन क्षण - क्षण साधल पुण्य
कण-कण कय मणि-मुक्ता गाँथल बाँटल जन - जन धन्य

जतहि फिराओल दृष्टि, दृश्य-नव देखि कयल रस-वृष्टि
मिथिलेमे नहि, जग भरि पसरल तव हरीतिमा-सृष्टि

साजि कल्पना विरल अकल्पित सुरधनुषी कमनीय
रचल सरणि सोपान धरणिसँ नभ धरि अति स्पृहणीय

कुशल कर्मयोद्धा, युद्धक नहि सपनहुँ श्रम-उद्योग
स्वयं अजातशत्रु कोमल दल— असियें शत्रु-वियोग

निर्मल मन तें अहिंक हेतु प्रति जन मन प्रेम-निकुञ्ज
अर्पित प्रत्यर्पित भय बढ़बय अहँक श्रेय केर पुञ्ज

चिर सौम्यता-मूर्त्ति, देवत्वक सोध सरल जनु दिव्य
व्यास आदिकवि केर प्रज्ञामे एखनहुँ जनु सान्निध्य

भाषा - संस्कारें प्राची केर ऊषा - कुंकुम - राग
विषय उपस्थापनें युगक प्रति स्थिति – विश्लेषण - भाग

भाव भूमि नवनीत चिन्तनक मंथन जनु उद्भूत
कोटि गणक सम जटिल कार्यरत से चेतना स्वरूप

गंगा-भक्ति-धौत-धवलित उर शब्द-शब्द अछि यज्ञ
पद-पद अनल-शिखा दीपित जनु काव्य सुमंडप भव्य

स्वयं साधना चर्चित, अर्जित चिर ऊर्जस्वित मूल्य
पड़त छोट कय देश-काल-कृति-कीर्त्ति-मूल्य किछु तुल्य

पीबि सुधा मानस-मरालिनी सुनि नक्षत्रक गीत
करइछ मुक्तिक पयस्विनी जे जगतीमे उपनीत

उठइछ जे गौरवमे गिरिसम झुकि जनु तृण-तरुपात
विगलित जे कण-कण भऽ सिरजल सींचय मरु-पथ-गात

आलोचक प्रहरी दिग्दर्शक विषम प्रलय केर काल
अविचल आराधक आदर्शक राष्ट्र चितिक घन ज्वाल

अंतरमे झंझा, झंझामे दीप - शिखा अक्लान्त
दिशा-दिशा संचरित, लक्ष्यपथ एक पथिक निर्भ्रान्त

की सम्मान तनिक जे स्वयमपि मान-दण्ड निर्धारण
करब अहँक मूल्यांकन; निज केर साहित्यक मूल्यांकन

पाबओ युग अन्तदर्शन कय दर्शन अहँक सुचिंचित
जोड़य जीवन-सूत्र सूत्रकें जीवन अहँक सुनिश्चित

कवि - कुल - शील-मुकुट-मणि-विद्युत धृत-धी-प्रतिभा-हंस
हिय-शतदल प्रति दल छथि राजित स्वयं शारदा-अंश

जनिक ध्यान मे मैथिली
अंग - अंग - रुचि प्रकटिता
प्राण - प्राणमे भरथु से
बल गरिमा चिर रुचिरता

Scanned by CamScanner

श्रद्धासुमन

श्रीमैथिलीपुत्र 'प्रदीप'

जम्बूद्वीपक सस्य - श्यामला भारतमाताकेर हृदय-ध्वनि
संस्कृत-वाणी देव-पितर, मानव - दानव, ज्ञानी-विज्ञानी
सबहक नानी

हुनके सन्तति सकल लोककंठक जनभाषा
सभ चाहय, हम चढ़ी शृङ्ग, उत्कट अभिलाषा
छोटकी मौसी बनली अछि एहि देशक रानी
जनिक अग्रजा आइ उपेक्षित मिथिला - वाणी

याज्ञवल्क्य, मण्डन, शंकर अथवा वाचस्पति
ज्योतिरीश्वरे विद्यापति जनु अयला सम्प्रति
बना स्वयंके सुमन करथि जननिक अभिनन्दन
विकटोसँ अति विकट समयमे शान्त सुखद मन

जनसेवामे निरत, विरत सदिखन दुर्जनसँ
देश-समाज समुन्नति-हित संगति सज्जनसँ
शत्रु-मित्र सभ जनिक दृष्टिमे एक रंग छथि
होथि विरोधी, सहयोगी, सभ एक संग छथि

अति अनुरागी, किन्तु विरागी-सन लगैत छथि
स्थितप्रज्ञ जनु राग द्वेष सभटा सहैत छथि

पितृतुल्य छथि, नतमस्तक, परबोधि रहल छी अपन कुमनके
अर्पित चरण-कमलमे श्रद्धासुमन मैथिलीपुत्र सुमनके

अभिनन्दन-सुमन

डॉ० श्रीभीमनाथझा

१

भुवनेशक तप-बल सुरपति अपनहिँ अयला जनि
रवि शशि बुध गुरु शुक्र तेज निज अर्पित कयलनि
शनि स्वदेश-भाषा-द्रोही लग, हित लग मंगल
माय मैथिलिक मंजुल संतति अपन सुमन भल
जत सुरेन्द्र तत स्वर्ग पुनि, ततहि पारिजातो सुमन
सेह थिकथि ई, जे करथि अति सुरभित उपवन अपन

२

यदपि मैथिली-उपवनमे अछि सुमन अनगिनत
सुरभित कते, सुदर्शन कत, कत धवल, रङल कत
तदपि एहि सुमनक किछु भिन्ने सुरभि अलौकिक
सभ ऋतु एतय बनय ऋतुराजे, नित कुहकय पिक
मुख्यतया कविता कथा उपन्यास आलोचना
सम्पादन अनुवाद—ई षटऋतु ऋतुपति-योजना

३

राजनीति-साहित्य-धार विपरीत प्रवाहित
राष्ट्रपुरुष! अपनहिँमे सहजहिँ भेल समाहित
तीर्थराज छी अहाँ, त्रिवेणी 'दत्त-वती' थिक
सभक प्रचुर पाथेय ततय, हो जतक जे पथिक
प्रतिपद कयलहुँ अर्चना राष्ट्रभारतिक नीतिमत
पयस्विनी भय जे रहथि सन्तानक रक्षा-निरत

४

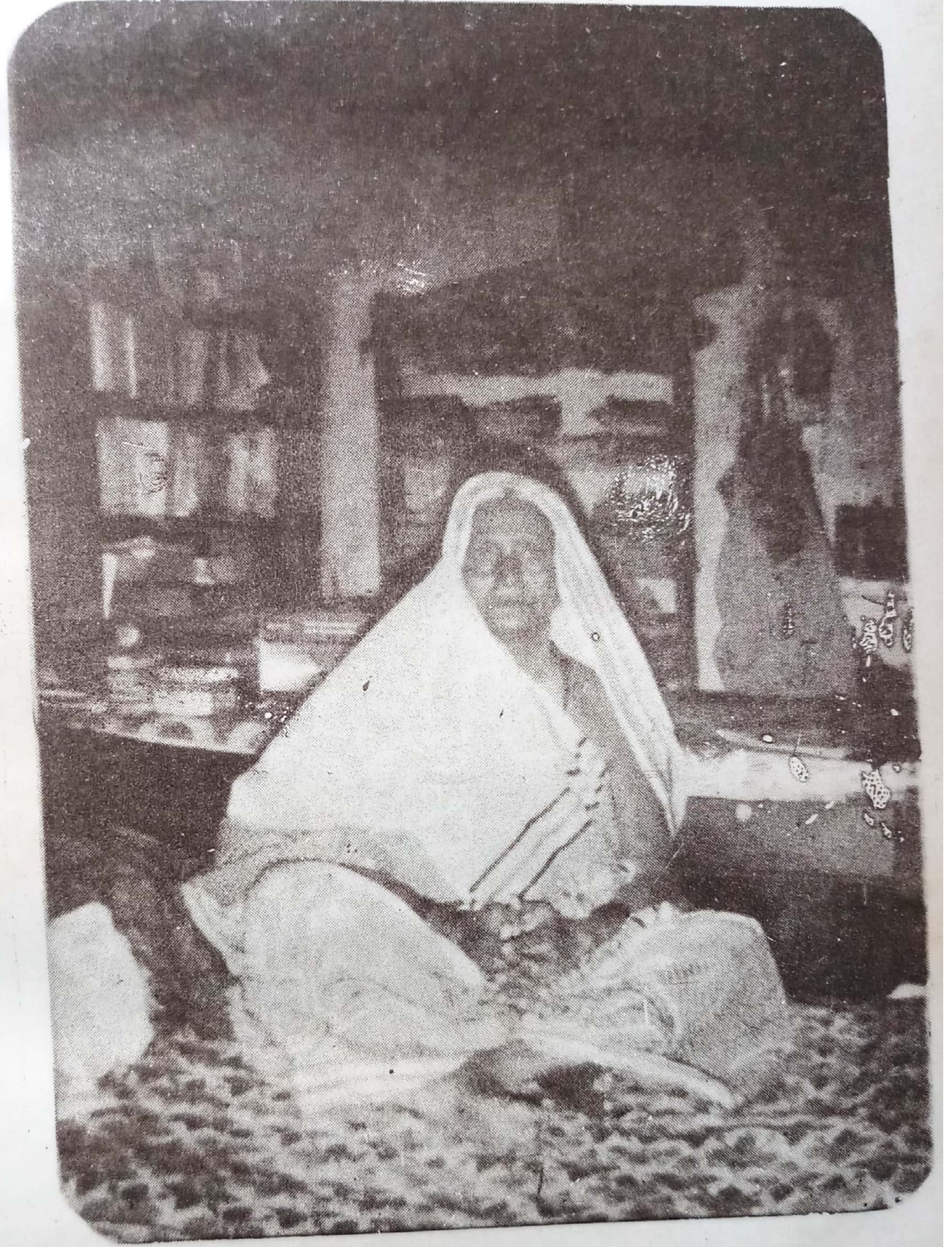
हे पारसमणि ! सम्पादकवर ! विद्वद्भूषण !
लौहखण्डकें बना देल अहँ स्वर्णभूषण
साहित्ये नहि रचलहुं केवल अपने अनुपम
अपितु रचल साहित्यकारगण सेहो नहि कम
स्वयं कविक कवि थिकहुं अहँ, छथि सरस्वती अहँक वश
संस्कृत हिन्दी मैथिली बहय त्रिवेणी एकरस

५

हे हिमनगपति-महाकवे ! उर-द्रवित निरन्तर
नित हिमभाव सजल गंगाजल - कविता सुन्दर
ध्वनि-गति रससँ एक-एककें करइत शीतल
कलकल-छलछल उज्ज्वल निर्मल बहइछ अविरल
के नहि भेल कृतार्थ अछि दर्शन-मज्जन-पान कय
आतप-तापित व्यथित जन जाइछ अनगिन स्नान कय

६

हे मिथिलाक मिहिर ! राकापति अही स्वदेशक
मैथिलीक हित तन-मन-धन अरपल बिनु क्लेशक
अही देव मैथिली - मन्दिरक, चढ़वी चन्दन
मिथिला-मैथिल-मुकुट ! करी सादर अभिनन्दन
कत अहाँक गुण महत्तम, कत मति लघुतम हमर अछि
बस, एतबे जानी, कही—अपन सुमन ई अमर अछि



श्रीसुरेन्द्र झा सुमनक पत्नी

जीवन-उपवन

संस्मरण-सुमनांजलि

नरेन्द्रनाथदास 'विद्यालंकार'

सुहृद् श्रीसुरेन्द्रझाजी 'सुमन' मसृणमातृभाषा मैथिली साहित्यक सुन्दर सुमनोद्यानक परिमल परिपूरित प्रस्फुट पारिजात सन आह्लादकारी आकर्षक व्यक्तित्वसँ विभूषित साहित्यकार छथि। प्रकृतिक वरदान सुमनक सुवास सहजहि सभकेँ स्वतः आकृष्ट करितहिँ अछि। श्रीसुमनोजी अपन विहुँसित मुख-मुद्रासँ, अपन पाण्डित्यक परिपूर्ण परागसँ पुरजन-परिजन विद्याव्यसनी विद्यार्थी-गणकेँ स्वतः आकृष्ट करितहिँ छथि। दरभंगा शहरमे जहियासँ ई 'मिथिला मिहिर'क सम्पादनमे संलग्न भेलाह, मातृभाषा मैथिलीक प्रति अधिकाधिक लोक, प्रधानतः नवयुवक वर्ग, मातृभाषाक महत्त्वकेँ अनुभव करैत, तकर सम्बर्धनमे ममतापूर्वक समर्पित होइत गेलाह अछि। हिनकासँ पूर्वक 'मिथिला-मिहिर' खासकऽ निलामी इस्तिहार—राज दरभंगाक—छपैत छल और ओकर वार्षिक चन्दा राजक शतशः पटवारी, गुमास्ता आदिसँ वसूल कयल जाइत छल। वास्तवमे विद्वत्वर्ग ओहि 'मिथिला-मिहिरकेँ' नहि पढ़ैत छल। परन्तु सुरेन्द्र झाकेँ 'मिहिर' आफिसमे आयलासँ किछु-किछु पठनीय सामग्रीक संकलन होमऽ लागल आओर किछु-किछु पढ़ल-लिखल लोक कनडेरिए 'मिहिरो' दिस देखय लगलाह। हुनक सम्पादनमे 'मिथिलांक' एक संग्रहणीय वस्तु भऽ गेल जे हुनक सम्पादनकलाक परिचायक अछि।

श्रीसुमनजीकेँ हम करीब चारि दशकसँ जनैत छियनि। हुनकासँ सम्पर्क भेल शुद्ध साहित्यकारक रूपमे। 'मिथिला मिहिर'मे हुनके आग्रहसँ किछु हमहुँ कागत कारी कऽकऽ पठौने छलियनि। हमर पूज्यपाद पिता साहित्यरत्नाकर मुन्शी रघुनन्दनदासक मैथिलीक प्रथम महाकाव्य 'सुभद्राहरण' केँ धारावाही रूपे प्रकाशित कयलनि श्रीयुत 'सुमन'जी, जाहि प्रकाशनसँ प्रसन्न भऽ महानहो-

पाध्याय उमेशमिश्र पिताजीके धन्यवादक पत्र लिखलथिन। पुनः मिथिला मिहिरमे 'वीर बालक' (पिताजीक खण्डकाव्य) प्रकाशित भेल छल। ओ ग्रन्थ अमुद्रिते पड़ल अछि। श्रीसुमनजी अपन सम्पादनकालमे हमर ग्रन्थ 'विद्यापति–काव्यालोक' गिरीन्द्रमोहनमिश्र, मैनेजर राज-दरभंगाक कृपासँ राजप्रेसमे छपबाक जोगाड़ लगा देलनि। तेँ राजप्रेस बरोबरि जाय पड़ितहिँ छल। हमर 'काव्या-लोक'मे संस्कृतक महाकविसँ जे विद्यापतिक तुलना अछि, ताहिमे 'सुमन'जीक यत्किंचित योगदान अवश्य भेटल छल। यदाकदा प्रूफो सुधारि दैत छलाह। 'काव्यालोक'क जे समादर भेल—अमरनाथझाजी, इलाहाबाद विश्वविद्यालयक भाइसचान्सलर, पर्यन्त ओहि ग्रन्थक प्रशंसाक पत्र हमरा लिखलनि। तत्कालीन शिक्षामंत्रीक कृपासँ पुनः बिहार हिन्दी ग्रन्थ-अकादमी ओकरा प्रकाशित कयलक अछि।

श्रीसुमनजीसँ सर्वप्रथम दर्शन भेल प्रायः रोसड़ाक मैथिल महासभाक अधि-वेशनमे। ताहिमे ओ अपन एक सुन्दर रचना अपन सुन्दर स्वर सम्पदा सम्ब-लित कऽ पाठ कयल जाहिसँ समुपस्थित सभासद प्रभावित भेलाह और पूर्ण प्रभा-वित भेलाह महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह। ओही ठाम महाराजाधिराज हुनका 'मिहिर'क सम्पादकक पदपर प्रतिष्ठित करबाक हेतु चूनि लेलनि।

जखन हम सर्चलाइटमे उपसम्पादक रही, पटनाक राममोहनरायसेमिनरीमे प्रथम-प्रथम 'विद्यापति-जयन्ती' मनौलहुँ। प्रायः तकर तेसर वर्षक समारोह लहेरियासरायमे महाराजाधिराजक सभापतित्वमे मनाओल गेल। ओहीठाम महाराजक दिससँ उद्घोष भेल जे पाँच वर्ष धरि विद्यापति पर नीक लेखकके एक सय रुपैयाक पुरस्कार राजसँ भेटतनि। प्रथमतः हमरे छोट लेखपर भेटल। दोसर बेर महामहोपाध्याय उमेशमिश्रके भेटलनि आओर तेसर बेर ओहिसँ सम्मानित कयल गेलाह श्रीयुत सुमनजी। विद्यापति-जयन्ती, जकरा आब विद्यापतिपर्व कहल जाइछ, से पहिने दरभंगामे बहुत ठाम मनाओल जाइत छल। ओहि अवसरपर श्री 'सुमनजीसँ भेँट होइते छल। हुनक सुस्वर सुन्दर रचना सुनबाक सभ्य समुदायक उत्कण्ठा अत्यधिक रहैत छल।

अंग्रेजी साहित्यमे कारलाइलक एक प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि 'Hero and

Hero Worship' अर्थात् 'वीर ओ वीरपूजा'। ओहिमे कारलाइ कोनो वीर बंका योद्धाक प्रथम चर्चा नहि कऽ सर्वप्रथम स्थान देने छथि अंग्रेजीक विश्ववन्द्य नाटककार शेक्सपीयरकें। साहित्य-सृजनकारकें समाजमे सबसँ पहिल समादर कर्त्तव्ये थीक ताहि दिस हुनक प्रायः लक्ष्य छलनि। गरीबसँ गरीब साहित्य-सृजनकारक टूटलो-फाटल कलमक नोकसँ उगलैत कारी जन-प्रवाह इन्कलाब कऽ देबाक क्षमता रखैत छैक। जहलमे बन्द कार्ल मार्क्सक कलमक करामाते सँ निसृत कारीं विषरूप रोसनाइ संसारमे एक उथल-पुथल मचा देलक, जीवन-दर्शनकें आमूल झकझोरि देलक। फ्रांसक राज्यक्रांति साहित्यिक कलमेक करामातसँ सम्भव भेल। मिथिलामे साहित्य–सर्जककें जे समादर होयबाक चाही, नहि भेटि रहल अछि। श्री'सुमन'जीक अभिनन्दनक उपक्रम कऽ एहि परिपाटीकें प्रश्रय देबाक प्रयत्न सर्वथा स्तुत्य।

श्रीसुमनजीसँ साहित्यक माध्यमेसँ प्रगाढ़ता बढ़ल गेल। ओ अपन सुपुत्रक उपनयनमे हमरा निमन्त्रण पठा देलनि। ओहि समयमे हम विधानसभाक सदस्य रही। दरभंगासँ एक मोटरसँ विदा भेलहुँ। श्री भूपेन्द्रजीक समाङ संग छलाह। एक बजे हरसँ खूजल बड़द दौड़िकऽ मोटर तर पिचा गेलैक। गामबला घेड़ि मोटर रोकि देलनि। आब हम फेरीमे पड़ि गेलहुँ—ने घरक ने घाटक। ओम्हर, उपनयन छुटैत छल एम्हर नहि छुटै छल गामवलाक जिद्द मोटर नहि जाय देबाक। फरोफममे पड़ि किंकर्त्तव्यविमूढ़ रही। ताबतमे ओहि प्रांतक एक नवयुवक जमिन्दार मोटरसँ अबैत छलाह। हमरा चिन्हलनि–विधान-सभाक सदस्यक रूपमे। ग्रामीणकें बुझा जे मोकदमा करू, रोकिऔनि नहि। तखन उगरास भेल। बल्लीपुर पहुँचि श्री'सुमन'जीक पूज्य पिताकें प्रणाम कऽ बड़ प्रसन्नता भेल छल। भरिपोख भोज खा प्रत्यागमन कयने छलहुँ।

श्रीसुमनजी हमरोपर कृपा कयने छलाह। पूज्य पिताजीक श्राद्धक अव-सरपर पं० त्रिलोकनाथमिश्र ओ सुमनजी श्राद्धसमयमे निमन्त्रण पुरबाक हेतु अयलाह और पूर्वहि अयलाह श्रीयुत यात्रीजी मुण्डन करौने। जिज्ञासा कयला-पर कहलनि जे की महाकाव्यकार अहीं टाक पिता छलाह, हमरा लोकनिक नहि? ई सुनि हम हुनक आकाश सन आत्मीयतासँ दंग रहि गेलहुँ।

एक विशिष्ट विषय सुमनजीक रचनामे हम बरोबरि देखलहुँ जे ओ trash (अलूल–फजूल) नहि लिखैत छथि। अंग्रेजीक विद्वान लेखक बेकन (Becon)क कथन अछि जे "Writing maketh a man perfect'. रचने परिपक्वता मनुष्यकेँ दैत अछि, कारण छपल रचनाकेँ पूर्णविराम, अर्ध-विराम तथा शब्दोक हेर-फेर नहि कऽ सकैत छी। एहि मापदण्डपर सुमनजीक रचना टकसाल उतरैत हमरा बूझि पड़ैछ।

सुमनजीक साहित्यिक व्यक्तित्व-विवेचनसँ पूर्व हुनक मानवीय व्यक्तित्व अधिक आकर्षक। मिथिलामे धनी-मानीक कमी नहि, परन्तु दैनिक मातृभाषा मैथिली पत्रिकाक प्रारम्भकर्त्ता युग-युग धरि बैह कहौताह। एहि विषयक हुनक पुरुषार्थक प्रशंसा अवश्य करबनि। विद्यापतिक शब्देँ 'पुरुषुत्तमेन पुरुषो नहि पुरुषो जन्ममत्तेन'। स्वतंत्र छोटछीन प्रेस चलाकऽ जे मैथिलीक सेवा ओ कयलनि अछि, तकर दाद के नहि देत ? हुनके प्रयासक फलस्वरूप मैथिलीओ आब एक स्वतंत्र भाषा बनि मान्य भऽ रहल अछि। नहि तँ मैथिलीकेँ के पूछैत छल बीस वर्ष पूर्व ? कुत्र गण्योगणेशः।

सुमनजीक साहित्यिक रचनासँ अधिक आकृष्ट करैत अछि हमरा हुनक विहुसैत मुख-मुद्रा। हास्य हृदयक गंगा थीक, रचना हृदयक उत्स थीक। हृदयक प्रतिबिम्ब रचनापर पड़ब अनिवार्य। हृदय जतबा भाव-प्रवण-पवित्र और उदार, रचना ततबे समुत्कृष्ट। हुनक समुत्कृष्ट रचना मैथिलीक अभ्युदयमे, प्रचार-प्रसारमे जे योगदान देलक अछि—कहब व्यर्थ। हम हुनका मैथिलीक अग्रणी साहित्यकार मानैत छिऐनि।

हमर शुभकामना हुनक संग अछि।

सुमनजीक नजरिमे महाकवि ओ कविता

डॉ० काञ्चीनाथझा 'किरण'

श्री सुमनजीक संग परिचय ओ आत्मीयता कहिया भेल से बिसरि गेल अछि। दुनू गोटे लघुकौमुदी पढ़ैत रही।

जखन हम जेना-तेना छात्र-जीवन समाप्त कऽ काशीमे स्थिर भऽ 'मोद' द्वारा मैथिलीक काज करऽ लगलहुँ तावत् श्रीसुमनजी 'मिथिला मिहिर'क सम्मानित सम्पादक भऽ चुकल छलाह। रमानाथ बाबू ओ तंत्रनाथ बाबू दरभंगामे स्थिर भऽ चुकल छलाह। परंच 'मिहिर'मे मैथिलीक स्थितिमे कोनो प्रकारक परिवर्त्तन नहि आयल। गाम अयलापर रमानाथ बाबूकें कहलियनि —'मिहिरकें सुधारि जोरगर बनाउ। लेख दिअनु।' रमानाथ बाबू उत्तर देलनि—'सुमनजी हमर लेख छपताह?' हमर बात मानि पहिल लेख 'मिहिर'मे रमानाथ बाबू देने छलथिन।

दरभंगामे श्री सुमनजीक भेंट करऽ गेलहुँ तँ देखल ईशनाथ बाबूकें श्री सुमनजीक डेरापर। श्रीसुमनजी विदा भऽ रहल छलाह। ईशनाथ बाबू तथा आनो व्यक्ति संग लागि गेल छलथिन। हम कुशल-क्षेम ठाढ़े-ठाढ़ कऽ तीन बजे आफिस पहुँचबाक गप्प कऽ दोसर रास्ता धयल।

बड़ भरिगर लोक छलाह श्रीसुमनजी '३८-३९ ई० मे। हुनक संस्कृत-हिन्दीक पाण्डित्यपर आकृष्ट भऽ महाराज कामेश्वरसिंह मिहिरक संपादक बनौने छलथिन। अपनाकें बिसरि देलासँ लोक सब शक्ति-गुण रहैत, वा शक्ति-गुणकें बढ़बैत रहितहुँ, कोना अबल बूझल जाय लगैत अछि, तकर जीवन्त उदाहरण हमरा श्रीसुमनजी भेटैत छथि। तदर्थ हमरा क्रोध होइत रहल हुनकापर।

हमर तूरक के मैथिलीक कवि-साहित्यकार श्रीसुमनजीक समान संस्कृत काव्यशास्त्र ओ काव्य पढ़ने छलाह वा छथि? बंगला-हिन्दीक हुनक अध्ययन

कात रहओ। अङ्गरेजी कात रहओ! हम श्रीसुमनजीक पाण्डित्यक, कवित्वक, सज्जनताक हार्दिक अभिनन्दन करैत छी।

आँखि पैघ लेख लिखबाक सामर्थ्य नहि रहऽ देलक अछि। तें महाकवि ओ कविताक प्रसंगमे हुनक मतक उपस्थापन कऽ व्यवहार पुरबैत छी।

× × ×

मैथिली भाषामे महाकाव्यक रचना खूब भेल अछि आ भऽ रहल अछि। लोकके काजक भार बढ़ि गेल छैक। बैठकापर बैसल घंटाक घंटा मालिस करबैत, अग्गहसँ बिग्गह धरि सराइ पसारने पूजा करैत सिताहल बाजीं सतरज लाधने, फहुँआत गप्पमे समय बितबैत लोकक दृश्य आब प्रायः नहि भेटत। काजक फाँस लोकक जीवनपद्धतिके बदलने जा रहल छैक। मुदा मनुष्य मसीन तँ नहि बनि सकत। नहि बनत। कोनो-ना पलखति बनाकऽ मन बहटारबे करत। काव्य-साहित्य पढ़बे करत। नाटक देखबे करत। नहि तँ मनुष्य कोना रहि सकत? समाजक जीवनक संग स्नेह रखनिहार साहित्यकार उपन्यासक बदलामे छोट-छोट कथा, तिनघड़िया नाटकक स्थानमे एकांकी लिखय लगलाह आ' कामकाजी लोकके काव्य-साहित्यक संग सम्बन्ध टूटय नहि देलथिन।

लोकभाषेक काव्य ओ नाटक लोकक संग सम्बन्ध स्थापित कऽ सकैत अछि। मैथिल समाजके अपन भाषाक साहित्य भेटलैक नहि। परिणाम भेलैक जे समाजसँ पढ़बाक रुचिए खतम भऽ गेलैक। कोर्सक पोथी पढ़लक। परीक्षा पास कयलक। बस, भऽ गेलैक!

केहनो नीक मैथिली भाषाक पोथीक दस-पाँच संस्करण आ दस-पाँच हजारक संस्करण कल्पनाक बाहरेक बात अछि।

परंच, महाकाव्यक रचनाक बेरमे कवि लोकनि अद्भुत साहस ओ धैर्य देखा रहल छथि। केओ पढ़त की नहि, तकर चिन्ता नहि, छपाइक खर्चो ऊपर होयत की नहि तकर परबाहि नहि, मैथिलीक मान बढ़त महाकाव्यक

संख्यासँ, एक येह टा भावना। हम एहि भावनाक अभिनन्दन करैत छी।

आचार्य श्रीसुमनजी वर्तमान कालक एक महाकवि थिकाह। अनेक कविक निर्माता थिकाह। अनेक काव्यक रचयिता थिकाह। तेँ, हार्दिक अभिनन्दन करैत—हुनक नजरिमे महाकवि के थिकाह, कविता केहन होबक चाही, से उपस्थित करैत छी, जे नवीन कविक लेल अवश्य उपयोगी सिद्ध होयत। ओ महाकविक परिभाषा नहि लिखने छथि, मुदा गंगास्तुति नामक कवितामे गंगाकेँ कहैत छथिन—

"अहँ हिमनगपति महाकविक उर द्रवित निरन्तर
नित नव-नव हिम भाव सजल कविता चिर सुन्दर
ध्वनि रस गतिमय एक-एक पदकणसँ सुरसरि
युग-युगसँ छी दैत अमृत सन्देश विश्व भरि

हिमनगपति महाकविमे रूपक अलंकार अछि। अतः दुनूमे समान धर्म रहब आवश्यक।

हिमक स्वभाव थिकैक पघिलब। अतः महाकवि ओएह थिक अथवा भऽ सकैत अछि जकर हृदय हिमे जकाँ स्वयं द्रवणशील बनल रहैक।

समाज ओ प्रकृतिक प्रति संवेदनशीले लोक महाकवि भऽ सकैत अछि।

हिमनगपतिमे हिम अक्षय-अनन्त छैक। तेँ नित नव हिमखण्ड पघिलि-पघिलि गंगाकेँ प्रवाहित कयने अछि। नवीनता रोचकताक मूल वस्तु थिक। जे वस्तु प्रतिक्षण नवे बुझि पड़ैछ सैह रमणीय। अतः रमणीयताक मूल नवीनताकेँ मानव हमर विचारेँ संगत थिक। महाकविओक उर-हृदय अनु-भूति-अध्ययन-चिन्तनात्मक ज्ञानक अनन्त भंडार रहब आवश्यक, जाहिसँ ओ नित नवे-नवे भाव कवितामे दैत रहथि। कविता ध्वनि रस गतिमय रहय तथा मानव-जगतकेँ अमृत-सन्देश प्रदान करय।

काव्यमे ध्वनि, रस, अलंकार, रीति ओ गुणक उल्लेख प्राचीन काव्य-शास्त्री कयने छथि। श्रीसुमनजी 'गति'क नव धर्मक उल्लेख कऽ एक अपूर्व दृष्टि देलनि अछि।

स्थान-परिवर्तन गति थिक। कवितामे गतिक अर्थ थिक देश-काल-पात्रक अनुकूल कविताक प्रत्येक अवयवमे परिवर्तनक संकेत, जकरा श्रीसुमनजीक दृष्टिक सामयिकताक परिचायक मानब उचित।

हुनकासँ भेट भेल छल

मणिपद्म

केहन मोहक समय छल ! उजरे उज्जर बन चमेली आ भाँटिक फूल क्षितिज तक उजरा ओलैब ओछौने। कौसर चौरमे फुलायल शत-सहस्र लाल कमलक सुरभि आ बाबा गाछीक मज्जरक मधु-गन्ध लऽ कऽ पछबा बसात प्रमत्त भऽ हू-हू करैत छल। सहसा सुनि पड़ल कतौ दूर पारसँ सहनाइक मधुर-मधुर ध्वनि। विभोर भऽ गेलहु आ विमन भऽ उठलहु। मने ककरो चतुर्थी प्रणय-उत्सवक मंगल अवसरपर ई बाजि रहल छलैक।

हमरा मोन पड़ि गेली स्वर्गीया पत्नी, आँखि सजल भऽ उठल। कने हँटि कऽ हुनक देल हुनक सजीव स्मृति नान्हिये टा 'मृदुला'। किछु गुन-गुन करैत छलि। ओकर गुनगुनयनाइ करुण स्वरमे गूँजि उठलैक—

"कोर बैसि सुनल हम प्रथमे गुनगुन स्वर्गिक गान।

माइक ममतामे कविता की करइत अछि आह्वान ?

हम वाणी-अवरुद्ध कंठ सँ पुछलिऐक—कोन किताब थिकै मृदुल !

"प्रतिपदा बाबूजी !"—ओ कहलक ?

किताब हमरा दऽ दे आ तों जो खेला।" हम कहलिऐक।

मृदुल किताब दऽ कऽ पड़ा गेलि, संगहि गुनगुनाइत जाइत छलि "अरुण किरण रेखासँ जागल।"

हम किताब पढ़य लगलहु आ संगहि कनितो जाइत छलहु। साँचे, "जनिक अन्नपूर्णा भासियेलै कौसिकीक मझधार, जीवन तट पर एक शब्द सुनइछ जे हाहाकार !"

से कोशी रिफ्यूजी तँ हमहि थिकहु। हे कवि ! हमर अन्तर्वेदना केँ तों अइ पंक्ति सबमे कोना ढारि देलहक ! लाल कमलक सौन्दर्य, मज्जर मधुगन्ध

आ दूर बजैत शहनाइ सब टा जेना एकेठाँ भेटि गेल प्रतिपदाक पंक्ति-पंक्तिमे।

'प्रतिपदा'क ज्योतिर्मय कविसँ पहिले-पहिल हमरा कागजपर भेट भेल छल, 'मिथिला मिहिर' सुप्रसिद्ध मिथिलांक सफल सम्पादकक रूपमे। ओइ एकटा अंकमे मिथिलाक संगीतमय कला, कलामय संस्कृति आ अपन संस्कृतिक वैभवसँ परिपूर्ण साहित्य साजि कऽ राखि देने छला ओ। मुदा पहिले-पहिल हुनकासँ साक्षात्कार भेल बहेड़ा स्कूल पर, 'शतदल साहित्य संघ' द्वारा आयोजित एक टा उत्सवमे—"दूबर-दानर देह। रेशमी रंग, रेशमी कुर्तापर उज्जर चद्दरि ओहिना बुझि पड़ैत जेना हरित क्षितिज दिस उजरा पातर मेघ भसिया आयल हो। पान-रंजित पातर ठोर तरसँ एकटा गम्भीर मुस्कान खेलाइत। हम गद्-गद् भऽ उठलहुँ। हमरा समक्ष मैथिली साहित्यक महावीर प्रसाद द्विवेदी आ जयशंकर प्रसाद एकाकार भेल ठाढ़ छलाह। मौन पड़ि गेल हुनकर कविता। 'दीप' शीर्षक "एकाकी तोँ के बरनिहार" से साँचे। ओ कविता अपनहिँ प्रति सम्बोधित कऽ तँ ने लिखने छलाह! समाजक स्नेहसँ हीन अपन बाती आ साधनाक ज्वालासँ दीप लेसि ओ कहियासँ ने एकाकी बरैत मैथिली साहित्यकेँ ज्योतिर्मय करैत चल अबैत छथि। कोकिलक स्वरक मिठास, कमलाक हिलोरक गुन-गुन आ धान-खेतक हरीतिमा सानिकऽ ओ काव्य-रचना करैत छथि। आइ तक हुनकर सावन-भादव सुनैत-सुनैत कहियो जी नहि अघायल।

"अहाँकेँ रचना करबाक प्रेरणा कतयसँ भेटैत अछि?" —हम पुछलियनि।

ओ मुस्कुरयला आ सहज भावसँ उत्तर देलनि—"अभावसँ आ अन्तर्वेदनासँ। जखन अपना पर सबसँ अधिक असन्तोष होइत अछि तखन 'रचना' करैत छी।

"मैथिली साहित्यकेँ पूर्ण रूपसँ विकसित होयबाक हेतु सबसँ अधिक आवश्यकता कथीक छैक?" हमर दोसर प्रश्न छल।

ओ उदास भऽ उठलाह—"पाठकक।" ओ कहलनि—"प्रतिभाक अभाव अइ भूमिकेँ कहियो ने रहलैक, मुदा प्रतिभाक आदर नहि भेलासँ 'प्रतिभा'' विकसित कोना हेतैक?

हम हुनका प्रति श्रद्धावनत होइत बाजि उठलहुँ—'गुन ना हेरानो गुन गाहक हेरानो है।'

शीलवन्त नारीक सम्बन्धमे तँ लोकोक्ति बुझल अछि, मुदा शीलवन्त पुरुषक सम्बन्धमे की कहल जाइत छैक से नहि बुझल। शील, संकोच, स्नेह, आ निश्छलताकेँ जँ मानवीय माधुर्यक रसमे घोरि देल जाय तँ ई भेल श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क व्यक्तित्व। आतिथ्य भावना जखन नगरवासीक व्यवहारसँ रूसि कऽ पड़ायल जाइत छल तँ सुमनजी ओकरा सादर बोँसि कऽ अपना ओहिठाम राखि लेल। हुनका ओहिठाँ जखन देखू दू-चारि टा अतिथि निश्चिन्ततापूर्वक गप्प-सप्पमे संलग्न भेटनहि !

सुमन जी अपना चारू कात साहित्यकार आ कलाकार लोकनिक विशाल समाज एकट्ठा कऽ लेने छथि। ओइमे बंगलाक अन्तरराष्ट्रिय ख्यातिक 'बनफूल' हिन्दीक 'आरसी' सँ लऽ कऽ मिथिलाक कतेको महामहोपाध्याय। साहित्यक डाकटर, कवि, कथालेखक, ज्योतिषी आ पंडित सब शामिल छथि। सबहक संग वैह सुमनजीं, गम्भीर भावमे मुस्कुराइत आ खने-खने पान खाइत। सबसँ बेसी डर होइत अछि कोनो सिन्धी केबिन लग सुमनजीसँ साक्षात भऽ जाइक। घिसिया–तिरिया कऽ केबिनमे लऽ जेताह। पुनः रसगुल्ला आ नाना 'चौप' सँ सोझाँमे तश्तरीक बजार लगबा देताह आ जा-जा अहाँ हाथ-मुँह धोइ, ताइसँ पहिनहि हिसाब चुकता कऽ पान लगबैक फरमाइश कऽ देथिन।

आश्चर्य लगैत अछि जे, जे बल्लीपुर जमीन्दारी दर्प, भाला, गड़ाँसा आ हँसेरीक लेल विख्यात छल तइ भूमिमे एहन सुरभित सुकोमल आ रंगीन 'सुमन' कोना प्रस्फुटित भेल ! मुदा, सुमनजीक आदरणीय पिताजी सुप्रसिद्ध वैद्य, संगीतकार आ कवि। सुमनजीक प्रथम कविता बहरायल अपना समयक विख्यात क्रान्तिकारी पंडित रामनन्दन मिश्रक पत्र 'क्रान्ति' मे। ओइ समयमे ओ एगारहे वर्षक छलाह।

श्रद्धेय बन्धु श्री हरिश्चन्द्र मिश्र कहलनि—स्वनाम धन्य डाक्टर अमरनाथ झाकेँ ई अभिनन्दन पत्र देल जेतनि। कहू तँ केहेन भलैक अछि ई ?"

ओ अभिनन्दन-पत्र पढ़िकऽ हम मुग्ध भऽ उठलहुँ। की शब्दयोजना आ की ध्वनि-आयोजन ! जेना मिथिलाक समस्त महान व्यक्तित्वक मणि-माणिक्यके अइ कविताक मखमलपर कलाक बेल-बूटा टाँकि देल गेल हो !

"एकवान सोझ हैं"—ओ कहलनि।

"बण्डा बुझ है"—हम उत्तर देलियनि।

"कात कतौ कात कतौ अइ कविताक कविके देखा दियऽ।"

"सुमनजी सुमनजी सुमनजी"—हम चिकरि उठलहुँ आ, संयुक्त ठहाका सँ वातावरण गूँजि उठल।

सुमनजीके देखितहिँ मोनमे भावना उठैत अछि—"हे युगस्रष्टा कलाकार ! अहाँ हमर आयु लऽ कऽ जीबैत रहू। अहाँ मैथिली साहित्यक हेतु वरदान भऽ कऽ अयलहुँ अछि।"

(मिथिला मिहिर दरभंगा, १७ अप्रैल १९५४ सँ साभार)

शुभकामना

श्रीहरिश्चन्द्रमिश्र

हमरा एहि धुथुर बुढ़ारीमे कहय पड़ैछ जे श्रीयुत सुमनजीकु नामगुण वैशिष्ट्य छनि रूप, रस, गन्ध, स्पर्श सभमे। हिनक नामकरण जे कयल गेल पारिजात पुष्पक प्राधान्यक, तकरो सुमधुर स्वभाव एवं कृतित्वकेँ बढ़बैत गेल छथि। संस्कृति ओ अध्यात्मक प्रतिरूप छथि। साधारणतया ई देखल गेलैक अछि जे अपन भावी पीढ़ीकेँ केहन देखऽ चाहैत छी तकर छाप अपन आचरणसँ शिक्षित करऽ पड़त। से, प्रातःस्मरणीय हिनक पूज्य पिता भुवनेश्वर बाबू सज्जनताक प्रतिमूर्ति, एक संतकवि छलाह। अपन निजी सुरचित भजनावलीसँ बल्लीपुर-स्थित राधाकृष्ण मन्दिरमे उपस्थित समूहकेँ भावविभोर कऽ देने छलाह। ओहि मन्दिरक अधिष्ठाता स्वनामधन्य लाल-बाबू आदरणीय भुवनेश्वर बाबूक भावपूर्ण भजनावलीसँ प्रभावित भऽ झाँझ ओ करताल आदिक बीच सहसा महात्मा चैतन्यमुद्रामे नाचऽ लगैत छलाह। हमरा ई सुमधुर दृश्य देखबाक अवसर भेटि गेल अछि। अपन सेवावृत्तिक क्रममे हम वेनीपुर (बहेड़ा)मे पाँच वर्ष रहि गेलिऐक। बल्लीपुरक कचहरी वेनीपुरमे। ओना तँ हमर बाबुओकेँ बल्लीपुर डेउढ़ीसँ पूर्ण अपेक्षा छलनि, परन्तु ई कचहरी रहने आदरणीय लालबाबू ओ धीरेन्द्रबाबूसँ बेशी अपेक्षा भऽ गेल। बहेड़ामे प्रख्यात कीर्त्तनाचार्य विन्दुजी प्रभृतिक जे ओतयक जनता अमृतमय रसास्वादन तीन दिन तक लऽ सकल, तकर श्रेय एहि दुनू भाइक आयोजनकेँ मुख्यतः, आ हमरो सन-सन साधारण व्यक्तिसभक सहयोग। बल्लीपुरक 'झूलन' ओहि परोपट्टाक दस कोसमे प्रसिद्ध। हमरहु ओतऽ जयबाक सुअवसर भेटल अछि आ ऊपर जे कहि चुकल छी तकर झाँकी हमरहु प्राप्त अछि, आजीवन एकर दिव्य स्मृति रहत।

मानणीय सुमनजीक मातृक देशविख्यात उदयनाचार्यक डीह लग करियौन, जतऽ आनो देशवासी सभ नतमस्तक होइत छथि, बल्लीपुरसँ एक-डेढ़ कोसक अन्दर अवस्थित अछि। स्वनामधन्य भुवनेश्वर बाबूक विकास-क्षेत्र जतऽ ओ अपन साहसिक आयोजनसँ अपन देशक स्वतन्त्रतासँ कतोक दशक पूर्व विकास कयल। मित्रवर श्रीसुमनजीक एवं अपन बालसंगी श्रीआरसीप्रसादसिंह आदिक सन हमरहु ओहि पावन स्थलमे नतमस्तक होयबाक सुअवसर भेटल अछि।

आब मित्रवर श्रीआरसीबाबूकेँ अपन वैशिष्ट्य प्राप्त भेलाक बाद हमरा सन साधारण लोकक स्मरण करैत लाज होइत छनि। परन्तु से अभाव आदरणीय सुमनजीकेँ कहाँ? पढ़ल अथवा निरक्षर भट्टाचार्यो लोकनि सुमनजीक स्वभावसँ आप्लावित। जहाँ तक हमरा अवगत अछि, श्रीसुमन जीक मुख्यतः शैक्षणिक उपलब्धि मिथिलाविभूति कविशेखर बदरीनाथ बाबूक छत्रच्छायामे भेल। स्वनामधन्य कविशेखरजी जेहने प्रकांड विद्वान, तेहने मृदुल स्वभावक आ स्नेहक प्रतिमूर्त्ति। हमरा कहबाक आशय जे श्रीसुमन जी स्वय मृदुल एवं सौरभपूर्ण, अपन पूजनीया माइक, पूज्य पिताजीक एवं वात्सल्यमय गुरुक पूर्ण स्नेहपात्र रहबाक गौरव रखने छथि। तेँ एतेक मृदुल, सुमधुर स्वभावक छथि।

मैथिल महासभाक वार्षिक अधिवेशन रोसड़ामे सन् १९३४ ई० मे भेल। गोलोकवासी महाराजाधिराज डा० कामेश्वर सिंहक उदारपूर्ण समाजवादी दूरदर्शिताक उदाहरण। मैथिल महासभाक आजीवन सभापति तँ छलाहे, ओकर वार्षिक अधिवेशनमे उपस्थित रहबाक कार्यक्रम हुनके सौविध्यपर निश्चित होइत छल। संयोगसँ, मिथिलामार्तण्ड डा० सर गंगानाथ बाबू एतहि दड़िभंगासे अपन ज्येष्ठ पुत्र कैप्टन भवनाथ बाबूक ओतय छलाह आ ओही दिन रातुक ट्रेनसँ समस्तीपुरसँ प्रयाग वापस होयबाक कार्यक्रमक निर्द्धारण कयने छलाह। महाराज साहेबक सहज स्नेहपूर्ण अनुरोध जे पहिल दिनक अधिवेशनक सर गंगानाथ बाबू सभापतित्व करथु तकरा ओ टारि नहि सकलाह। एहि पंक्तिक लिखनिहारक सौभाग्य छलैक जे सर गंगानाथ बाबूक संग ओहि अधिवेशनमे, हुनका समस्तीपुरमे ट्रेनमे स्थापित कऽ श्रीमान्

मिथिलेशक ओतय सभटा वर्णन देअय। यैह भेल आ लोकक उल्लास देखि श्रीमान् मिथिलेश दोसर दिनुक अधिवेशनमे गेलाह। वापसी डा० सर गंगानाथ बाबू गप्पक प्रसंग अपन स्वागत-समारोहमे श्रीसुमनजीक विशिष्ट कवित्वक एवं मृदुल स्वरलहरीक भूरि-भूरि प्रशंसा कयल। एहिसँ उच्चतर अभिनन्दन श्रीसुमनजीक भैए की सकैछ ?

मैथिलीक तीन उच्च साहित्यिक सेवक एवं निविष्ट पारखी प्रातः-स्मरणीय पं० गिरीन्द्रमोहन मिश्र, कुमार गंगानन्दसिंह एवं पं० बलदेवमिश्रक अनुशंसापर श्रीमान् मिथिलेश लब्धप्रतिष्ठ साहित्यिक श्रीसुमनजीकेँ पुनीत तिथि गंगादशहरा सन् १९३५ ई० केँ 'मिथिलामिहिर'क सम्पादकत्वक गुरुतर भार सौंपल। तहिएसँ मिहिरक कलेवर बदलल आ अपूर्व साहित्यिक पीयूषसँ प्लावित होमय लागल, जकर साक्षी अछि हिनक सम्पादनकालक पूरा फाइल।

हिनक ई कार्यभार सम्हारलाक एके वर्षक बाद अर्थात् १९३६ मे मिथिला मिहिरक लगभग तीन सय पृष्ठक विशिष्ट—अति विशिष्ट—विशेषांक श्रीसुमनजीक लगनशीलता एवं सत्प्रयासक विशेषता थिक। अपन देशक मैथिली एवं हिन्दीक विशिष्ट विद्वान लोकनिक लेख ओ चित्र सम्प्रति पुस्त-कालयक शोभा बढ़ा रहल अछि। स्वनामधन्य म० म० परमेश्वर झाक मिथिलातत्त्वविमर्श सेहो पूर्णरूपेण छापल। खेद जे कोनो सम्पदापूर्ण मनीषी एकर दोसर संस्करण नहि कराओल अछि। ई ग्रन्थ तँ प्रत्येकक पढ़ल-लिखल घरमे मिथिलाक विषयक, मिथिलाक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक धरोहर थिक।

अपन प्रकाण्ड विद्वत्ता एवं सुमधुर विशिष्टताक बलपर श्रीयुत सुमनजी कतोक वर्ष पर्यन्त मिथिला विश्वविद्यालयक अन्तर्गत प्राध्यापक आ पश्चात् मैथिली विभागक प्रधान रहबाक सौभाग्य अपन असंख्य छात्र समुदायकेँ देल। अनेकानेक मैथिलीक प्रसिद्ध विद्वान् जे देशक विभिन्न क्षेत्रकेँ आलो-कित कऽ रहल छथि से श्रीसुमनजीक शिक्षा-दीक्षासँ लाभान्वित। समस्त छात्रसमुदाय हिनक प्रति सदा हृदयसँ नतमस्तक। एकटा आओर विषय शिक्षण-संस्थाक विषयमे कहि देब आवश्यक बुझैत छी। छात्रमंडलीमे यदा-कदा अनुशासनहीनताक समाचार पबैत रहैत छी। हमर धारणा अछि जे

एहिमे लोहासँ बेशी लोहारक दोष। कहाँ श्रीसुमनजीक संग कोनो छात्र अनुशासनक उल्लंघन कयल ? कहाँ मित्रवर तन्त्रनाथबाबूक आदेशक उल्लंघन कयल ? अपन कर्त्तव्यक पालन, आदर पयबाक पात्र अपनाकेँ जे-जे व्याख्याता लोकनि बनौने छथि से छात्र समुदायसँ अवश्य आदरणीय बनल रहताह। आनक जे आदर करैत छथि से स्वय आदर अर्जित करैत छथि। एहि सम्बन्धमे एकटा विषय आओर मानस पटलपर आबि गेल अछि। डा० सर गंगानाथ बाबू हमर काशी काकाजी छलाह। सम्बन्धोसँ बेसी हमरा बाबूकेँ हुनकासँ अति अधिक स्नेह। पारिवारिक सम्बन्ध। सन् १९३५ ई० मे अपन दुनू परिवारक समस्याक समाधानक हेतु हुनका एक आक्रोशपूर्ण पत्र हम लिखल। पत्रोत्तर आयल—"आनक कर्त्तव्याकर्त्तव्यपर अपन कर्त्तव्याकर्त्तव्य आधारित करब कहियो श्रेयष्कर नहि।" की नाम गुण विशाल आत्मा ओहि प्रातःस्मरणीय मनीषीक छलनि ? हमरा सभक श्री सुमनजी ओहने ओहन विशाल आत्माक लगनशील अनुगामी थिकाह। हमरासभक श्री सुमनजी संसदक शोभा सेहो बढ़ा आयल छथि। ओहू समयमे 'आधुनिकता' सँ दूर। जनताक सेवक रहबाक गौरव रखने, नैतिकताक बलपर चमकैत। कतेक एहन निविष्ट नेता भेटताह जे अपन भत्ता आदि बचाय पत्रकारिताक पाछाँ अपनाकेँ दधीचि बनौने रहताह। 'स्वदेश' प्रकाशनक हेतु कोन-कोन कष्ट ई नहि उठाओल ? मैथिलीकेँ अष्टमसूचीमे नाम हो से विषय ई संसदमे उठाओल। परन्तु एकसर वृहस्पतियो झूठ'।

विडम्बना अछि जे मिथिलाभूमिक संसदसदस्य किम्बा विधायक स्वनामधन्य ललित बाबू केँ छोड़ि ओहि कक्षमे प्रवेश पबितहिँ अपन माय मैथिलीकेँ बिसरि जाइत छथि। मैथिलीकेँ अष्टम सूचीमे किएक नहि सम्मिलित कयल जाय तकर विरोधी लोकनि ईहो तर्क दैत छथि जे मैथिलीमे पत्र-पत्रिकाक अभाव अछि। 'स्वदेश'क प्रकाशनक जखन जहाज डूबय लागल तँ कर्मठ श्रीसुमनजी जोर-जोरसँ 'सायरन' फूकय लगलाह। अहि रे, कोनो भरल-पूरल मैथिलीपुत्र आगाँ नहि आबि सकलाह। हमरा सभक लगनशील नायक श्रीसुमनजीक कान तँ शोभायमान अछि, सोन सठि गेल अछि। आगू केओ सदय लक्ष्मीपात्र स्वदेशक अथवा माँ मिथिलाक उद्धारक हेतु अओताह, तकरे प्रतीक्षा अछि।

प्रार्थना जे हमरालोकनिक, अपना लोकनिक कीर्तिमान् श्रीसुमनजी कम-सँ-कम मंगलमय शतायु बनल रहथु।

हमर सुमनजी

आचार्य श्रीरामचंद्रमिश्र

जीवनक प्रवाहमे यौवनक पूर्वावस्था बाढ़ि जकाँ अबैत छैक, ओ बाढ़ि बहुतरास क्षेत्रकें आप्लावित करैत यथासमय उतरि जाइत छैक, परन्तु उफान कालमे सम्पर्कमे आयल कतोक वस्तुएँ प्रभावितो कऽ दैत छैक। एतदनुसारे हमरो जीवनमे सर्वगुणसम्पन्न नवानी विद्यालय छोड़िकऽ मुजफ्फरपुर संस्कृत कालेजमे प्रवेश लेब एक प्रकारसँ बाढ़िए छल। १९२८ ई० जुलाइ मासक प्रथम सप्ताहमे हम मुजफ्फरपुर संस्कृत कालेजमे नामांकन कराओल। नामांकनक विधि-व्यवहार सम्पन्न कऽ अपराह्नमे छात्रावासमे स्थान ग्रहण कयल। एही प्रक्रममे कलपर जल लेबऽ गेल रही, देखल जे एक हमरे सन नवागन्तुक छात्र जल लऽ रहल छथि। भवभूतिक उक्ति छनि—'अविज्ञातेऽपि बन्धौहि बलात्प्रह्लादते मनः।' अपन लोक अपरिचितो रहि आकर्षण करैत छथि, प्रायः एही मनोवैज्ञानिक नियमानुसार हमरो मन ओहि जलग्रहण-परायण छात्र दिस आकृष्ट भेल, लग जाकऽ हम स्वाभाविक प्रगल्भतामे प्रश्न कयल—'अहाँ कतयसँ अयलहुँ अछि, कोन कक्षा तथा शास्त्रमे नामांकन कराओल अछि ?'

सुमनजी अखनो किछु मितभाषी लजकोटर छथि, ओहू समयमें एहने अथवा अधिके मितभाषी छलाह। ओ प्रगल्भतासँ, किछु अकचकाइतो, स्वभाव-मधुर भाषामे अपेक्षित उत्तर दऽ अपना प्रकोष्ठ दिस गेलाह, हम सेहो अपना प्रकोष्ठ गेलहुँ।

तकरा प्रातसँ कखनो छात्रावासक असोरापर आओर कखनो कालेजक विशाल पुस्तकालयक परिसरमे भेँट होइत रहल, परिचयो बढ़ल, किछु घनिष्ठतो उपजल, परन्तु वास्तविक परिचय तीन मासक बाद भेल।

ओही वर्षक सितम्बर मासक अन्त भागमे संस्कृत कालेज, मुजफ्फरपुरक

वरिष्ठतम अध्यापक म० म० शशिनाथ झा वार्धक्यवश कालेज त्यागि कऽ जाइत रहथि, हुनक विदाइक आयोजन प्रधानाचार्यक कक्षमे भेल। अध्यापकमण्डल अपन भावानुप्राणित तथा स्नेहसिक्त भाषण दऽ गुणग्राहिताक परिचय देल। प्रधानाचार्य पं० ईश्वरीदत्तशास्त्री छात्रमण्डली दिस दृष्टिपात करैत मूकभाषामे इंगित कयलनि जे यदि छात्रवर्गसँ केओ अपन मनोभाव व्यक्त करऽ चाहथि तँ कऽ सकैत छथि। किछु वरीय छात्र किछु बजबो कयलाह, अकस्मात हमर दृष्टि सुमनजीपर पड़ल। ओ धोती सम्हारैत कुर्त्ताक जेबसँ एक लिखित अभिनन्दन बाहर करैत ठाढ़ भेलाह, हमरा लागल जे ई राजनगरक छात्र की लिखने हयताह, व्यर्थें छात्र समुदायक नाम हँसओताह, परन्तु जखन सुमनजी अपन रक्तकण्ठतामे संस्कृत श्लोकमय अभिनन्दन पढ़ि सुनाओल, तखन हमरा अभूतपूर्व आनन्दक संग अपनोपर किछु गर्व भेल जे हम कालेजमे आबि मित्रक रूपमे सुमनजी सन निरत्न पाओल अछि।

तकरा बाद हम सब स्वशास्त्रक अध्ययन करैत समान भावसँ आकर्षक काव्यशास्त्रक भिन्न-भिन्न कविगणक काव्यधारामे अवगाहनक सहकर्मी बनि गेलहुँ।

हम, सुमनजी तथा जयकिशोर बाबू ई त्रिमूर्त्ति माधुरी, सुधा, सरस्वती प्रभृति पत्रिकामे प्रकाशित काव्य सभक आलोचनामे जखन लागि जाइत छलहुँ तखन छात्रावासक अधिकांश सहपाठी हमरे सभक आलोचनामे निरत रहबाक कार्य करैत छलाह।

किछु दिनक बाद सुमनजीक जन्मजात सम्पादकभावना जोर मारलक। ओ संस्कृतमे पत्रिकाक प्रकाशनमे हाथ देबाक तैयारी करऽ लगलाह। निश्चय भेल 'जागृति' नामसँ पत्रिका प्रकाशित करी। उत्साहबाहुल्य प्रतिबन्धक दिशि ध्याने नहि दैत छैक। अपन मासिक व्ययसँ पैसा बचाकऽ पत्रिकाक एक अंक छापल गेल, सम्भवतः सुमनजीक संग्रहमे ओ प्रति हयबो करतनि, परन्तु संस्कृत भाषाक सेवक जनमे वर्तमान उदासीनतासँ दोसर अंकक मुद्रण बन्द कऽ देल गेल।

अध्ययनक्रममे साहित्याचार्य परीक्षामे उच्च श्रेणी प्राप्त कऽ छात्रावस्थहिमे जखन सुमनजी 'काव्यदीपिका' नामक संस्कृत रीतिशास्त्रक प्रौढ़ संस्कृत

व्याख्या लिखिकऽ काशीसँ प्रकाशित करा देलनि तखन तँ हमरासभक आनन्द आश्चर्यक सहोदर बनि गेल।

एहि तरहेँ अध्ययनक काल समाप्त कऽ सुमनजी गाम गेलाह, हम वृत्तिक लोभे अध्यापन करऽ गेलहुँ। संग छुटि गेल, किन्तु 'उड़ी जात कितहू गुडी तऊ उड़ायक हाथ' बाला बात रहबे कयल।

कालक्रमे ओ 'मिहिर'क सम्पादनमे लगलाह। हमरा गाम जयबा-अयबाक क्रममे जहिना दरभंगा स्टेशनक सम्पर्क अनिवार्य रहल, तहिना सुमनजीक डेरापर आबि एक दू दिन रहबो अनिवार्य बूझि पड़य लागल। ओहि डेरापर बाबू साहेब, मधुपजी, काशीबाबू प्रभृति मित्रमण्डलीक सहवासक स्मरणसँ आबो हृदयमे सात्त्विक सुखक सञ्चार भेल करैत अछि।

जनता-लहरिमे जखन सुमनजी एम० पी० निर्वाचित भेल रहथि, तखन हुनक सभाजन करबाक लेल बड़ पैघ जनसमुद्र हुनका आवासपर उमड़ल छल, हमहुँ गेलहुँ, हमरा देखितहिँ ओ भीड़सँ बाहर भऽ हमरा बाहुपाशमे लऽ लेलनि, तखनो हमरा लेल ओ १९२८क सुमने रहलाह, ई हुनक वास्तविक रूप छल।

जीवनयात्रा क्रममे वृत्तिभेद होयब स्वाभाविक होइत छैक, तदनुसार हम भिन्न-भिन्न शास्त्रक अध्यापनमे लागि गेलहुँ, राजकीय सेवामे रहबाक कारणेँ स्थान-परिवर्तन अपरिहार्य भऽ गेल। एहि सभसँ भेँट होयबामे किछु विलम्बो भऽ जाइत छल, परन्तु मित्रताक अन्तःसलिला सरस्वती सतत एकरसे रहलाह।

छात्रावस्थामे तथा जीविकार्जनक प्रथम चरणमे सुमनजीक संग जे स्वप्न सञ्चित कयल, देखल, से साहित्य-सेवाक स्वप्न छल, हम संस्कृतक पुरान ग्रन्थ अपनाओल, आ ओ संस्कृत, हिन्दी, बंगला सभ साहित्यक सेवाक पुण्यकेँ मातृ-भाषाक चरणमे अर्पित करबाक चेष्टा करऽ लगलाह। तकरे प्रसाद थिक—आइ ओ महाकवि छथि, स्तुत्य तथा अनुकरणीय छथि।

आबो जखन सुमनजी भेटैत छथि तँ हुनका हम ओही रूपमे देखैत छियनि जाहि रूपमे १९२८ ई० मे देखने रहियनि। ओ बूढ़ भऽ गेलाह, अत्यादृत भेलाह, ई भेलाह, ओ भेलाह, परन्तु हमर तँ बालसखा छथि। हुनको बालसखा वर्गमे कमे लोक भेंट होइत हयतनि। ई बालसखाक दर्शन-सुख हमर बनल रहओ।

सुमनजी

डा० श्रीकृष्णमिश्र

१९४२क जुलाइ मासमे जीविकोपार्जनक हेतुएँ हम सर्वप्रथम दरभंगा अयलहुँ एवं एतऽ जे किछु व्यक्तिसँ मित्रता भेल ताहिमे श्रीसुमनजी प्रधान छथि। प्रायः हिनक प्रथम भेंट हम कयल हरिमोहन बाबूक 'कन्यादान'क समीक्षाक मिथिला मिहिरमे प्रकाशनक हेतु। ओ परिचय दिनानुदिन गाढ़ मैत्रीक रूपमे परिवर्तित भेल। सभसँ प्रथम आकर्षण हिनका प्रति होयबाक कारण छल हिनक मधुर वाणी ओ सौजन्य। हिनक सम्पर्कें हमरा अभिलाषा जागल जे हमहूँ हिनके सन प्रिय बाजी। हिनक प्रियवादितासँ एतेक अभिभूत भऽ गेलहुँ जे एकमात्र हिनके कहलापर स्वतन्त्र भारतक पहिल चुनाव जे १९५२ मे भेलैक, ताहिमे बिहार विधानसभाक प्रत्याशी भऽ निर्वाचनमे भाग लेल। परिणाम जे होयबाक सैह भेल। निर्वाचनमे असफलता एवं आर्थिक विपन्नता। सुमनजी कहने रहथि मैथिलीक रक्षाक हेतु बजनिहार चाही, ताही हेतु अहाँ विधानसभाक हेतु प्रत्याशी होउ। हमर राजनीतिक जीवनक अथ एवं इति ओतहि भऽ गेल। ओकरा बाद जनसंघ दिससँ हमरा बड़ आग्रह भेल अग्रिम निर्वाचन लेल, किन्तु हम सुमनजीकेँ आगाँ बढ़ाय अपने पाछाँ हटि गेलहुँ। यैह थिकनि सुमनजीक राजनीतिमे प्रवेशक भूमिका।

सुमनजी स्वभावतः राजनीतिक लोक नहि छथि। ओ एक आदर्शवादी व्यक्ति थिकाह। अथच बहुधन्धी लोक छथि। बुद्धिक तीक्ष्ण छथि। बहुत काजमे हाथ बटबैत छथि। एहन लोककेँ एको काजमे पूर्ण सफल होयब असम्भव। नीक कवि छथि, तथापि बहुत नहि लिखलनि, जतेक हिनकासँ आशा छल। स्वदेश मासिक बड़ उत्कृष्ट छल। ओकरा छोड़ि स्वदेश दैनिक चलौलनि, जे अपना सामर्थ्यसँ बाहरक वस्तु छलनि। प्रेस चलौलनि, तथापि आर्थिक विपन्नता दूर नहि भेलनि। किन्तु हिनक हृदय धार्मिक छनि, अतः

सिद्धि-असिद्धिमे मुखाकृति समान रहलनि। हिनक मधुर स्वभावक एक टा दृष्टान्त मन पड़ैत अछि। हिनक सहकर्मी ईशनाथ बाबू हिनका प्रेसमे किछु छपौलथिन, से प्रूफ संशोधनक अभावमे अशुद्ध छपि गेलैक। दोष छलनि ईशनाथ बाबूक। किन्तु हुनका किछु नहि कहलथिन, दोहराकऽ मङनीमे पुनः छापि देलथिन।

प्रारम्भमे सुमनजीक प्रेसमे छपबय लोक अबनि एहि लेल जे भाषण, अभिनन्दन, रिपोर्ट, निमन्त्रणपत्र आदि लिखियो देताह, प्रूफो देखि देताह आ पाइ जखन इच्छा होयत तखन दऽ देबनि। कोनो सभा-सोसाइटीमे स्वागताध्यक्षक एवं अध्यक्षक भाषण हिनके लिखल—चाहे महाराजक हो चाहे कुमार गंगानन्दसिंहक हो, चाहे नगरपालिका अध्यक्षक हो। सभ ठाम सुमनजीक वाणी प्रसरित होइत छल। ई नाटकीय विविधता हिनक बहुमुखी प्रतिभाक सूचक थिक। जतेक विलक्षण हिनक बुद्धि छनि ततेक एकनिष्ठता नहि रहबाक कारणें हिनक जीवनकें पूर्ण सफल कहबामे तारतम्य होइत छैक। तथापि, हिनका जँ मैथिलीक महावीरप्रसादद्विवेदी कही तँ अत्युक्ति नहि होयत। मैथिली लेखकमे अधिकांश व्यक्तिक लेख हिनक दृष्टि-परिपूत भेल अछि। कतेको पुस्तकक ई भूमिका लिखलनि। स्व० रमानाथ बाबू कहथिन जे सुमनजीक प्रशंसाक कोनो मोल नहि, कारण ओ दोष देखिते नहि छथिन। ताहिमे हमर एतबे संशोधन जे सुमनजी दोषज्ञ तँ छथि, किन्तु जानिबोकऽ ओ लेखककें भने व्यक्तिगत उपदेश दऽ देथिन, किन्तु हुनक लेखक विरोधमे किछु नहि कहथिन। सुमनजीकें लोक नीक कविमे गणना करैत छनि। वास्तवमे हिनक साओन-भादव, गंगास्तुति, अर्चना अद्वितीय काव्य अछि। किन्तु हमरा जनैत पद्योसँ बढ़ियाँ हिनक गद्य होइत छनि।

'प्राचेतसराजशास्त्र' जे वाल्मीकि-रामायणक मथनसँ ई बाहर कयलनि अछि से ने केवल हिनक संस्कृतक पांडित्य देखबैछ, अपिच हिनक कुशाग्रबुद्धि सेहो व्यक्त करैछ। हिनक जीवनमे प्राचीनता ओ नवीनताक विचित्र सम्मिश्रण अछि। भीतरसँ निर्लिप्त भक्त, बाहरसँ अत्यन्त व्यग्र। नाना प्रकारक लोकक आकर्षण केन्द्र, अथच आडम्बरहीन। हिनका विषयमे ई कहब अत्युक्ति नहि होयत जे ई एक व्यक्ति नहि, एक संस्था छथि।

आचार्य श्रीसुमनजी

डॉ० श्रीमदनेश्वरमिश्र

सुमनजीक नाम हम तहिएसँ सुनैत छलियनि जहिया हम स्कूलमे पढ़ैत छलहुँ। हम ईहो जनैत छलहुँ जे सुमनजी मिथिला मिहिरक सम्पादक छथि आ मिथिला मिहिर दरभंगासँ छपैत अछि, जाहिमे हिन्दी आ मैथिली दुनू भाषामे लेख रहैत छैक। मुदा, पहिल बेर हुनक दर्शन भेल १९७२ ई०क अगस्त मासमे। अवसर छल मोहनपुर हाउसमे मिथिला विश्वविद्यालयक विधिवत् कार्यारम्भक अवसरपर आयोजित यज्ञ आ सभा। बिहार सरकारक तत्कालीन मंत्री डॉ० जगन्नाथ मिश्र सेहो ओहि अवसरपर उपस्थित रहथि। ओतऽ सुमनजी जे भाषण कयने छलाह से एखन धरि हमरा स्मरण अछि। मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना आ कार्यारम्भसँ ओ अत्यन्त आनन्दित छलाह। अनेक महानुभाव ओहि अवसरपर अपन उद्‌गार प्रकट कयने छलाह। सुमनजीक भाषणसँ हमरा लागल जेना ओ हमर आत्मीय रहथि आ हमर नेतृत्वमे मिथिला विश्वविद्यालय सर्वतोमुखी उन्नति करय, तकर आकांक्षी रहथि।

सामान्य वेश-भूषा, मुँहपर ओजस्विता, विचारमे प्रौढ़ता आ वातलापमे आत्मीयता—यैह प्रभाव पड़ल सुमनजीक प्रथम साक्षात्कारमे हमरापर। ओहि समयमे ओ एम० एल० ए० छलाह। मुदा, हम कखनहुँ ई नहि देखलियनि जे ओ विधानसभा श्रेष्ठताकेँ ककरहुपर थोपबाक प्रयास करैत छलथिन। ककरो यदि हुनक काज होइक तँ ओ सहर्ष मदति करबा लेल तैयार रहैत छलथिन। बादमे ओ एम० पी० सेहो भेलाह। तखनहुँ हुनक यैह स्थिति छलनि। एखनहुँ तहिना। परोपकारक हेतु सतत उद्यत रहैत छथि।

हम जहिया मिथिला विश्वविद्यालयमे कुलपतिक पदपर योगदान कयलहुँ,

तहिया सुमनजी सी० एम० कालेजमे मैथिलीक विभागाध्यक्ष छलाह । बादमे एहि विभागमे रीडर भेलाह आ तकर किछु समय पश्चात् अवकाश प्राप्त कयलनि । हम विश्वविद्यालयमे रहबे करी तखनहि ई सेवानिवृत्त भेल रहथि । हिनक छात्रगणके एकर गौरव छलनि आ एखनहु छनि जे सुमनजीसँ ओ पढ़ने छथि ।

हम हिनक कार्यावधिक एक दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक उल्लेख करऽ चाहैत छी । ओहि समयमे जे लोकनि पुरान स्केल लेने छलाह, तनिकालोकनिके बासठि वर्षमे अवकाश ग्रहण करबाक छलनि । किछु स्वार्थी तत्त्व ई हल्ला उड़ा देलक जे सुमनजी बासठि वर्ष पूरा कऽ चुकलाक बादो अवकाश-ग्रहण नहि करैत छथि । सुमनजी एहि सभसँ प्रायः अनभिज्ञ छलाह । जखने हुनका ज्ञात भेलनि कि ओ कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयसँ डूप्लिकेट सार्टिफिकेट आनि हमरा देलनि आ कहलनि जे हुनक मूल प्रमाणपत्र हेड़ा गेल छलनि, ताहि कारणे एतेक दुष्प्रचार भेल । एहि घटनाक चर्चा करबाक हमर अभिप्राय अछि जे सुमनजी सन विभूतिपर सेहो लांछन लगयबामे मिथिलांचल लोकके तारतम्य नहि भेलैक मुदा, सोनाके आगिपर तपौलासँ ओकर चमक बढ़ितहि छैक ।

सुमनजी मिथिलामे संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान छथि । हिनक संस्कृतक ज्ञान मैथिलीके समृद्ध बनयबामे बहुत काज कयने अछि । विद्यापतिक पुरुष-परीक्षाक जे ई मैथिलीमे अनुवाद कयने छथि ओ अत्यन्त प्रामाणिक अछि । अपन सभ रचना सुमनजी हमरा अत्यन्त स्नेहसँ देने छलाह आ हम १९७२ धरिक हिनक सम्पूर्ण कृतिके पढ़ि गेल रही आ हिनक अगाध पाण्डित्यसँ परिचित भेल रही ।

सुमनजीक अध्यापक आ अध्यापने पक्ष टा नहि छनि । ओ राजनीतिमे सेहो मनोयोगपूर्वक काज कयने छथि । सभ दिनसँ ई जनसंघ आ तदुपरान्त भारतीय जनता पार्टीक सदस्य रहल छथि आ ताहि दलक बिहार विधान सभा आ लोकसभामे सेहो प्रतिनिधित्व कयने छथि । अपन ढंगे एहि हैसियतसँ मिथिलांचल आ देशक सेवा कयने छथि ।

हिनक एक पक्ष छनि प्रकाशकक । ई अपन पुस्तक तथा आनो बहुत

पुस्तक दरभंगा स्थित अपना मुद्रणालयसँ प्रकाशित कयने छथि। हिनक मुद्रणालयक कारणे मैथिलीमे अनेको पोथी प्रकाशित भऽ सकल। किछु वर्ष पूर्व ई 'स्वदेश' दैनिकक मैथिलीमे प्रकाशन आरम्भ कयलनि। एतेक महान काज ई दरभंगा सन छोट स्थानसँ आ अपन लघु मुद्रणालयसँ सम्पादित करबाक बीड़ा उठौलनि। कैक वर्ष धरि ई अपन परिश्रमक बलपर 'स्वदेश'क प्रकाशन सुचारु रूपसँ करैत रहलाह, मुदा जखन 'मिथिला मिहिर' दैनिक भऽ गेलैक, तखन 'स्वदेश'क प्रकाशन ई बन्द कऽ देलनि। हम हिनक साहसक संवर्धना करैत छी। मैथिलीमे स्वयं पत्र प्रकाशित करी, से हिनक उद्देश्य नहि छलनि। हिनक अभीष्ट एतबे मात्र छलनि जे मिथिलामे एक मैथिली दैनिक प्रकाशित हो। जा धरि केओ एहि आवश्यकताकेँ पूर्ण नहि करैत छलाह तँ सुमनजी स्वयं मैदानमे उतरि गेलाह आ वयोवृद्ध होइतो कोनो युवकसँ अधिक उत्साहक संग काज कऽ मैथिलीक प्रथम दैनिक प्रारम्भ कयलनि। पत्रकारिताक इतिहासमे आ मिथिलाक इतिहासमे ई एक अभूतपूर्व घटना भेल। पत्र-प्रकाशनक कालमे जखन कखनहु सुमनजीसँ भेँट होअय, हुनका सर्वाधिक पत्रहिक चर्चा करैत आ ओकरे समस्यामे ओझरायल देखिअनि।

मैथिलीक सर्वोत्कृष्ट पोथीपर जे पुरस्कार मैथिली अकादमी द्वारा प्रदान कयल जाइत छल—विद्यापति पुरस्कार, ताहिमे पहिल सुमनेजीक पोथी 'उत्तरा' छल। सुमनजी हमरे अध्यक्षता-कालमे अलङ्कृत भेलाह, एहिसँ हम बहुत प्रसन्न छी। चेतना समिति, अथवा मैथिली अकादमी, अथवा मिथिलामे, अथवा मिथिलासँ बाहरक अनेकानेक संस्था हिनका समादृत कऽ स्वयं सम्मादृत भेल अछि।

साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा १९८३ ई० मे हम मैथिली परामर्शदात्री समितिक एक सदस्य नियुक्त भेलहुँ। सुमनजी तँ ओकर संयोजके छलाह। ओकर किछु अन्य सदस्यमे डॉ० जयकान्त मिश्र, प्रो० जयदेवमिश्र, अमरजी, डॉ० शैलेन्द्रमोहनझा, डॉ० भीमनाथझा आदि रहथि। साहित्य अकादमीक बैसकमे भाग लेबाक लेल हिनका संगे १९८४,८५ आ ८६ मे मुजफ्फरपुरसँ दिल्ली संगहि गेलहुँ। हम हुनकासँ वयसमे छोट छी, मुदा रेलगाड़ीमे वैह हमरालोकनिपर

विशेष ध्यान राखथि। हमरालोकनिक सेवाक हुनका कोनो आवश्यकता नहि, अपितु हमरेलोकनिकेँ सेवा देवाक लेल सदा तत्पर रहथि। ट्रेनक एक घटनाक उल्लेख कऽ रहल छी। रातिमे ट्रेनमे भोजनक काल जखन बेयरा भोजन लऽकऽ हमरालोकनिक लग आयल तँ सुमनजी मैथिलीएमे बेयराकेँ कहलथिन जे भोजनमे प्याजुक गन्ध बड़ तीब्र अछि। एकर कोनो उपाय नहि भऽ सकैत छैक ? सुमनजीकेँ मैथिलीमे बजैत सुनि बेयरा हुनका उत्तर देलकनि "श्रीमान्, हमहूँ मिथिलांचलेक छी। हम प्रसन्न छी जे अपनेक सेवाक हमरा अवसर भेटल।" ई कहि ओ थारी लेने गेल आ कनेक कालक बाद बिनु प्याजुबला तरकारी बनाकऽ अनलक आ बाजल जे किचेनमे जाकऽ ओ स्वयं तरकारी रन्हलक। सुमनजीक शब्दमे ततेक माधुर्य रहनि जे ओ तुरन्त सेवार्थ प्रस्तुत भऽ गेल।

१९७२ सँ सुमनजीसँ हमरा सतत भेट होइत रहल अछि आ हमरा एहन बुझि पड़ल अछि जे ओ हमरा ओही दिनसँ आशीर्वाद दैत रहलाह अछि। हमर एकटा कथा प्रकाशित भेल छल 'आतिथ्य'। सुमनजी ओकरा पढ़लनि आ डाकसँ चिट्ठी लिखलनि जे हमर कथा हुनका खूब पसिन्न पड़लनि आ एहन कथाक आवश्यकता सेहो छैक। हुनक पत्र पढ़ि हमरा अतिशय सन्तोष भेल, आओर कथा लिखबाक प्रेरणा जागल। बादमे, ओ कथा-संग्रह प्रकाशित करबाक उत्साह सेहो देलनि। 'प्रत्यक्ष' हुनके उत्साहक परिणाम थिक। हमर अनुरोधपर ओ ओकर एक गोट विलक्षण भूमिका सेहो लिखलनि, जे संग्रहक गौरव बढ़बैत अछि। 'एक छलीह महारानी' उपन्यास लिखबाक प्रेरणा देनिहार सेहो वैह थिकाह। हुनके उत्साहक परिणाम थिक जे हमरासँ मातृभाषाक यत्किंचित सेवा संभव भऽ सकल अछि।

मैथिली साहित्य आ मैथिल समाजक गौरव बढ़यबा लेल ई मनीषी आओर बहुत-बहुत वर्ष धरि हमरालोकनिकेँ प्रत्यक्ष दर्शन दैत रहथि, ईश्वरसँ सैह प्रार्थना अछि।

प्रिय मित्र सुमनजी

डा० श्रीलक्ष्मीकान्तमिश्र

किछु बन्धुलोकनि प्रियमित्र सुमनजीक अभिनन्दन ग्रन्थक प्रकाशनक सूचना देलनि आ हुनक प्रसंग संस्मरण लिखबाक हमरासँ अनुरोध कयलनि। सोचलहुँ जे लिखय तँ अबैत नहि अछि, मुदा तैयो बचब कोना ? हिनक प्रसंग लिखबा लेल तँ हमरा लग विषय अनेक अछि। एहि व्यक्तिसँ हम बरोबरि प्रभावित रहलहुँ अछि। आजुक युगमे सुमनजी सदृश परोपकारी, नम्र आ सहृदय लोक आङुरपर गनल होइत अछि।

जखन-कखनो लिखबाक भेलनि तँ किछु एहन नव बात अवश्य लिखलनि जे आन क्यो नहि लिखलक। जहिया-कहियो बजलाह तँ किछु एहन जरूर सुनलहुँ जे दोसर ठाम नहि सुनितहुँ। कलम उठौलनि कि मिनटमे पेज भरि गेल आ तारीफ ई जे कथी ले' कतहु कट-कुट भेटत—से मैथिली हो कि संस्कृत हो, कि हिन्दी हो। पढ़लापर लगैछ जे सिद्धहस्त कलाकारक साधनासँ अवतरित भेल अछि। भाषा आ भावनाक एहन संयोग दुर्लभ अछि।

मातृभाषा मैथिलीकेँ कार्यक्षेत्र बनाकऽ अपन सम्पूर्ण जीवनकेँ ई एहीमे अर्पित कऽ देलनि। कखनो काल मनमे आबय जे जँ हिन्दीमे साहित्य-सर्जन कयने रहितथि तँ आइ देशक शीर्षस्थ साहित्यकारमे हिनक गणना होइत। हिन्दीक अनेक सुप्रसिद्ध विद्वान-साहित्यकारक संग जखन हम मिलान करैत छी तँ लगैछ जे सुमनजी हुनका लोकनिसँ बहुत ऊँच छथि। अपन समाजमे अपन सदृश एक अद्भुत व्यक्ति छथि ई। हिनक प्रगाढ़ सम्बन्ध, बुझना जाइछ, सन्त समाजक अन्तरात्माक देन थिक। मन पड़ैछ ई शेर—

किसीमे रंगो बू ऐसा न पाया
चमनमे गुल बहुत गुजरे नजर से

हमर हिनकासँ पहिल परिचय १९४३ मे पण्डित जयदेव मिश्रक डेरापर भेल छल। हम विश्वविद्यालय परीक्षा पास कऽ चन्द्रधारी मिथिला कालेजमे रसायनशास्त्रक शिक्षक-पदपर रही। कनेके कालमे अपन साहित्यिकता, शालीनता, मधुरता आ अपनत्वसँ एतेक प्रभावित कयलनि जे हमर हृदयमे ई स्थायी रूपसँ प्रतिष्ठित भऽ गेलाह। तत्पश्चात्, दू-तीन वर्ष धरि यदा-कदा भेँट होइत रहैत छल। १९५७ मे जखन हम सी० एम० कालेजमे प्रधानाचार्य बनिकऽ अयलहुँ तखन हिनकासँ निकट सम्बन्ध स्थापित भेल। पछिला अनेक वर्षसँ कालेजमे ई प्राध्यापक छलाह, मुदा हिनक पदकेँ स्थायी नहि कयल जा रहल छल आ वार्षिक वेतन-वृद्धिसँ सेहो हिनका वंचित राखल जाइत छल। हमरासँ भेँट तँ बराबरि करैत छलाह आ दुनू गोटेमे धर्म-संस्कृति-साहित्य आदिपर चर्चो खूब होइत छल, मुदा कहियो ई अपन सम्बन्धमे हमरा किछु कहलनि नहि। एक बेर जखन हम हिनक दरमाहाक बिलपर हस्ताक्षर करैत रही तँ नजरि पड़ल जे हिनका तँ दू सय टाका मात्र भेटैत छनि। आफिससँ जिज्ञासा कयलापर ज्ञात भेल जे हिनक नियुक्तिपर भारी विरोध छनि, कारण ई एम० ए० नहि छथि। हम अपेक्षित कागज-पत्रकेँ देखि अपन निर्णय देलहुँ जे जा धरि हिनका हँटा नहि देल जाइत छनि, तावत काल धरि नियमानुकूल प्रत्येक वर्षक वेतन-वृद्धि हिनका भेटबाक चाहियनि। फलतः जहियासँ हिनक नियुक्ति भेल छलनि, ताहि दिनसँ, अन्ये व्यक्ति जकाँ, हिनको वेतन-वृद्धि दऽ देल गेलनि। ओहि मासमे ई दरमाहा लेबऽ अयलाह तँ प्रचुर पाइ भेटलनि। आश्चर्यचकित भेल ई हमरा लग आबि कहलनि जे अपने एहन कृपा कऽकऽ प्रायः अपन हानि तँ नहि कयलहुँ अछि! कतोक लोक एकरा पसिन्न नहि करताह। हम कहलियनि जे सही निर्णयसँ ककरो हानि नहि होइत छैक। यावत काल धरि हमरा संग रहलाह, कहियो अपना लेल किछु मङलनि नहि। हँ, यदाकदा अनका लेल किछु कहियो देथि, मुदा सेहो मर्यादिते ढंगसँ।

हिनक जीवनक लक्ष्य रहलनि—मैथिली भाषा एवं साहित्यक प्रचार-प्रसार आ उत्थान। एहि हेतु ई अपन स्वास्थ्य, परिवार आ आत्मोत्थान पर्यन्तक तिलांजलि दऽ देलनि। अत्यन्त गरीबीमे संकटपूर्ण जीवन बितबितो ई मैथिलीमे

पत्र-पत्रिका (मासिक-दैनिक)क प्रकाशन आ प्रचार लेल अद्वितीय प्रयास कयलनि। जहिया मैथिली शीर्ष समृद्ध भाषा बनत, तहिया एहि दधीचिक समर्पणक इतिहास स्वर्णाक्षरमे लिखल जायत।

मैथिलीभाषी समाज अपन अन्यमनस्कता तथा अकर्मण्यतावश हिनक अद्भुत सर्जनात्मक ऊर्जाक पूर्ण प्रयोग नहि कऽ सकल। मुदा, ऊर्जा तँ ओना बैसल रहि नहि सकैछ। वैह हिनका राजनीति दिस प्रेरित कयलक। राजनीतिमे प्रतिष्ठा आ सम्मान तँ अवश्य प्रचुर अर्जित कयलनि, मुदा ओ हिनका हेतु उपयुक्त स्थल नहि छलनि। सर्जनात्मक साहित्यक मानसरोवरमे अवगाहन कयनिहार हंसकेँ राजनीतिक पकिल चभच्चामे कतहु शांति भेटैक ! हिन्दुस्तानकेँ जँ अपन समस्याक समाधान तकबाक छैक तँ से ओकरा ओहन लोकसँ नहि भेटतैक जे प्रतिदिनक झंझटमे फँसल रहैछ। ओकरा तँ मनीषीक केबाड़ खटखटाबऽ पड़तैक जे पोथीक पन्ना आ टटका समाचारक हलचल धरि ओझरायल नहि रहैछ,अपितु अपन अन्तस्थलक संगीतमे समाधानक स्वर सुनैत अछि।

जखन कखनो गम्भीरतासँ विचारैत छी तँ लगैत अछि जे सुमनजीक गन्तव्य चलैत रहब छनि, कोनो ध्येयक प्राप्ति नहि। एतय बच्चनक ई पाँती मन पड़ैत अछि—

मंजिल मुमकिन है धोखा दे, लेकिन
यात्रा कभी धोखा नहीं देती
समझदारी हर कदम को मंजिल समझने में है
जीवन का अन्त मंजिल नहीं, यात्रा है दोस्तों !

सुमनजी यद्यपि यात्रीक बिल्ला नहि लगौने छथि, मुदा हिनक एखन धरिक समस्त जीवन यात्रीएक रहलनि अछि—चरैवेति, चरैवेति !

सुमनजीक चर्चा करैत काल मास्टर नाँकक एक पंक्ति मन पड़ि गेल अछि—'What has for centures raisedman above the beast is not the cudgellret an inward music'.

सुमनजीक अन्तर्मन संगीतमय छनि। अतः देखब जे हिनक समस्त व्यवहारमे संगीतक मधुरता व्याप्त रहैत अछि। व्यक्तिक भीतर दू पदार्थ अमूल्य होइछ—कारुणिकता एवं जिज्ञासा। हिनक भीतर ई दुनू गुण प्रचुर मात्रामे पाओल जाइछ।

अपने कहब जे सुमनजीमे तँ हम समस्त देवत्व देखा देलहुँ अछि। बुझि पड़ैछ जे भगवानसँ ई कम नहि छथि। एकर उत्तरमे हम अपनेक समक्ष ई शेर पेश करैत छी—

आदम खुदा नहीं लेकिन
खुदा के नूर आदम से जुदा नहीं

आ, ईहो बात सत्य जे व्यक्ति अपन प्रियकेँ तटस्थ रूपमे नहि देखि सकैछ। ओ जखन प्रेमक चश्मा आँखिपर चढ़ा लैछ तँ अपन प्रेमीमे कोनो कमी ओकर नजरिपर अबिते नहि छैक। केहन सटीक कहल गेलैक अछि—

निगाहे मुहब्बत दिखाती है सब कुछ
न तुम देखते हो न हम देखते हैं

ईश्वरसँ प्रार्थना जे श्री सुमनजी स्वस्थ आ चिरायु होथु जाहिसँ मैथिली साहित्य बहुत दिन धरि हिनका द्वारा समृद्ध होइत रहय।

दधीचि-व्रती श्रीसुमनजी

श्रीउपेन्द्रनाथझा 'व्यास'

मैथिली साहित्यक संवर्धनमे लग्न वर्त्तमान मूर्धन्य-त्रयी मानल जाइत छथि—डा० काञ्चीनाथझा 'किरण', कविचूड़ामणि पं० काशीकान्तमिश्र 'मधुप' एवं रस-सिद्ध कविवर पं० श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन'।

'किरण'जी मैथिली साहित्यक सेवा कयलनि उपन्यास, कथा, कविता एवं विशेषतः नाटक-एकांकी लिखिकऽ, अध्यापनसँ, किन्तु सर्वोपरि आन्दोलनात्मक प्रचार-प्रसार कार्यक्रमसँ, गोष्ठी, समिति-सम्मेलन सबहिक आयोजन कऽ कऽ। 'मधुप' जी स्वयं संस्कृतक निविष्ट विद्वान, विद्यालय सभमे अध्यापन कार्य करैत, मैथिलीक पद्य भंडारकेँ भरलनि सभ तरहक सर्वसाधारण बोधगम्य गेय शतशः गीतक रचना कऽ, हृदय-द्रावक करुणरस-प्रोत एवं विद्वत्-संवेद्य काव्य, महाकाव्य लिखिकऽ। एहि त्रयीमे अवस्थासे सभसँ किछु छोट, 'सुमन'जी एक तरहेँ अपन समस्त जीवन उत्सर्ग कयने छथि मैथिलीक सेवा लेल, प्रचार-प्रसार समिति-गोष्ठी, सम्मेलनक आयोजनसँ, ओहि सभमे योगदान दऽ, पत्रकारितासँ, अध्यापनसँ, गद्य-पद्य अनुवाद लेखनसँ एवं सभसँ बढ़ि सर्वसुलभ अनेकानेक पुस्तकक प्रकाशनसँ।

निविष्ट संस्कृत विद्वानलोकनि जे आदिमे बुझू तँ—बीसम शताब्दीक चारिम दशक धरि, गद्य-पद्य रचना एवं पत्रकारितासँ मैथिली साहित्यकेँ जीवित रखलनि, ओहि क्रममे एहि तीनू संस्कृतक विद्वान (ओना किरण जी पाछाँ एम० ए०, पी-एच० डी० सेहो भेलाह)केँ मैथिलीकेँ तीव्रगतिसँ प्रगति पथपर अनबाक विशेष श्रेय छनि।

'सुमन'जी असाधारण प्रतिभा-सम्पन्न विद्यार्थी, 'कविशेखर'जी (स्व० पं०

बदरीनाथझा) सन साहित्यमर्मज्ञ गुरुसँ गहन अध्ययन, पश्चात् युवावस्थामे दरभंगामे (एहि शताब्दीक ३०–४०क बीच) मैथिलीक तीव्र विकासक हेतु कटि-बद्ध कतेको विद्वानक आत्मीय सम्पर्क, हिनक सहज मातृभाषाक प्रति प्रेमकेँ आओर तीव्र कऽ देलक। 'सुमन'जी (प्रायः अप्रकाश्य रूपेँ) मैथिलीक हेतु जीवन उत्सर्ग करब निश्चय कयलनि। तत्कालीन दरभंगाराज द्वारा प्रकाशित सप्ताहिक 'मिथिला मिहिर'क सम्पादक होइत १९३५ मे हिनका द्वारा 'मिथि-लांक' नामक विशेषांकक प्रकाशन एखनो अद्वितीय मानल जाइछ। करीब २० वर्ष धरि सम्पादक रहि मैथिलीक विकास दिशि ई सतत तत्पर रहलाह। अपन लेखन विशेषतः पद्य तँ चलिते रहलनि, सम्पादकीय लेखनक संग आन-आन लेखक सभहिक रचना—कविता, लेख, गल्प, धारावाहिक उपन्यास आदि प्रका-शित कऽ प्रोत्साहन देब, नव लेखक वर्गक निर्माण करब सेहो हिनक उद्देश्य रहल। अनेको लेखकक पुस्तकमे भूमिका लिखि नव रचनाकारक उत्साह बढ़ाओल, संगहि आलोचनात्मक साहित्यक श्रीवृद्धि कयल। चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे अध्यापन-कार्य करैत पूर्ण यश अर्जन कयल। किन्तु अपन सीमित साधन एवं आर्थिक संकटक अछैत सभसँ साहसिक कार्य 'सुमन'जीक भेल 'स्वदेश' पत्रक प्रकाशन जे अर्द्धसाप्ताहिकसँ बढ़ि प्रथम मैथिली दैनिक पत्रक रूपमे कतेको मास धरि चलल। मैथिलीक दुर्भाग्य आ' मैथिल समाजक हेतु ई कलंक जे 'सुमन'जीक एहि सत्प्रयासकेँ ओतेक सफल नहि बना सकल।

उदारचेता 'सुमन'जी मातृभाषा मैथिलीक प्रति तँ समर्पित छथिहे, ओ राजनीतिमे सेहो सक्रिय रहलाह, बिहार विधानसभाक सदस्य एवं लोकसभाक सदस्य सेहो निर्वाचित भेलाह। वर्त्तमान युगक अशुद्धो वातावरणमे शुद्ध अन्तः-करणसँ यथासाध्य जन-सेवा करबे रहल हिनक राजनीतिक जीवनक ध्येय। ओहिमे जतबे सफलता भेटलनि, बहुत थीक।

परन्तु अध्ययन एवं लेखन इएह रहलनि अछि 'सुमन'जीक 'व्यसन' एवं मातृभाषा मैथिलीक प्रोन्नयनक हेतु मनसा-वाचा-कर्मणा, तन-मन–धनसँ सतत कार्यरत रहब इएह थिकनि हिनक जीवनक उद्देश्य। मैथिली साहित्यमे अनुपम योगदानक हेतु हिनका जे साहित्य अकादमी पुरस्कार (पयस्विनी काव्य–

संग्रहपर), मैथिली अकादमी द्वारा विद्यापति पुरस्कार (उत्तरा काव्यग्रन्थपर) वा अन्य मैथिली सेवी संस्थान द्वारा सम्मान देल गेल अछि, ओ सभ हिनका सम्मानित करबाक अपेक्षा स्वयं गौरवान्वित भेल अछि।

'सुमन'जी अपूर्व रस-सिद्ध कवि छथि। हिनक 'साओन-भादव', 'गंगा-तरङ्गिणी' आदि कतेको कविता मैथिलीएक किए, भारतीय साहित्यक अमूल्य निधि थीक। हिनक गद्यो पद्यक माधुर्य रखैछ, तहिना हिनक भाषणोसँ रस टपकैत रहैछ। जेना कविगुरु रवीन्द्रनाथ गद्य लिखथि, नाटक लिखथि सभमे हुनक कवि-हृदय-भावना अभिव्यक्त भऽ जाइनि, तहिना 'सुमन'जीक लेखन ओ भाषणमे ई गुण व्यक्त होइछ।

'सुमन'जी अपन भारतीय-मैथिल संस्कृति एवं मर्यादाक रक्षा करैत आधुनिकताकेँ ग्रहण करबामे पछुअयलाह नहि, किन्तु अपन रचनामे 'न्च्च-मत्कारिचेतः'क संग 'औचित्यं यत्नमुञ्चेत्' दिशि सतत ध्यान रखलनि।

'सुमन'जीक व्यक्तित्व एहने छनि जे हिनका 'अजातशत्रु' कहल जा सकैछ। अपने कतबो शारीरिक, मानसिक कष्टमे रहताह, भेंट भेलापर सहज मृदु मुस्कानसँ स्वागत करबे करताह, अपन हिनक दरभंगाक राजकुमारगंज स्थित निवास 'मैथिली मंदिर' कहबैछ। एहिमे आधुनिक निवासक साजसज्जा वा मंदिरक उपकरण तँ नहि, किन्तु साहित्य-साधनाक उपकरणसँ पूर मैथिली-प्रेमी लोकनिक हेतु ई 'मंदिरे' थीक।

आधुनिक युगमे आर्थिक विकासक दृष्टिसँ मिथिला सभसँ पछुआयल अछि, तथापि एतहु बहुतो धनवान छथि जे मातृभाषा मैथिलीक विकासमे बहुत-किछु योगदान कऽ सकैत छथि। परन्तु जेना कविक प्रसंगमे पूर्वक उक्ति 'कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः' तहिना मैथिलीक हेतु दधीचिवृती 'सुमन'जी टा एक छथि। मैथिलवृन्दक हेतु ई मार्गप्रदर्शक। माँ मैथिली हिनक "कुर्वन्नेवेहकर्माणि जिजीविषेच्छतंसमाः"क मनोरथ पूर्ण करथुन।

मैथिलीं मंदिरेध्यान् मातृभाषां हि देवताम् ।
धन्योऽसि धृतिमान् प्रायः सुमनाः 'सुमनो' महान् ॥१॥
मतृभाषाहितार्थाय दधीचिव्रत धारिणे ।
विद्वद्वराय कवये 'सुमनाय' नमोनमः ॥२॥
गद्य-पद्य-प्रसूनाञ्जलिना पूजयन् सदा ।
मैथिलीं, 'सुमनो' जीवेत् सुस्वस्थः शरदः शतम् ॥३॥

तन-मन-धनसँ सतत रहथि जे जन स्वदेश हित लग्न,
साहित्यिक साधन दधीचि, वाणीक अर्चना मग्न।
गद्य-पद्यकुसुमाञ्जलि लऽ जननिक पद-पद्म ललाम,
पूजथि, परहित सन्त 'सुमन'केँ 'व्यास'क कोटि प्रणाम ।

की लऽ करू हम अर्चना

प्रो० श्रीपुरुषोत्तमझा

लगभग आधा शताब्दी पूर्व विद्यापतिपर सर्वश्रेष्ठ आलेखक हेतु सम्मानित सुमनजीक सम्मान जनमानसमे बढ़िते गेल। सुमनजीक आकलन हमरा सन क्षीणबुद्धि की कऽ सकत ? हमर प्रयास भगजोगनीक सागर पार करब सन होयत। 'अधीतमध्यापिमर्जितं यशो' सुमनजीक लेल 'न सोचनीयं किमपीह भूतले'। मेधावी प्रखर पंडित किन्तु कोरा नहि; पूर्ण सामयिक; विशिष्ट सम्पादक किन्तु सिद्धान्तक हनन नहि, मैथिलीक अग्रणी लेखके नहि, किन्तु नेता सेहो, हिन्दीपर असाधारण अधिकार किन्तु मातृभाषाक उपेक्षापर नहि; विशुद्ध देशप्रेम किन्तु अपन माटिपानिक विस्मरण नहि; राज्य विधानसभासँ लोकसभा धरि यात्रा किन्तु अपन आ अपनत्वक रक्षा करैत—ई आ एहूसँ अधिक छथि सुमनजी ! हुनक अभिनन्दन, हुनका प्रति अभिवादन !

युगपुरुष सुमनजी कखनो मौलेबे ने कयलाह। सतत प्रफुल्लित, संयत, स्मित मुखाकृति, प्रतिभाक सौजन्यक प्रतिमूर्त्ति सुमनजीकेँ कखनहु कुमनमे नहि देखल। कविशेखरजी द्वारा प्रशंसित यदि संस्कृतमे अपन लेखनीक उपयोग करितथि तँ आइ देश-प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान आ लेखक रहितथि, किन्तु मातृभाषाक आह्वान तेहन प्रबल भेल जे आन दिस ताकक अवकाश कतऽ ?

मातृवाणीकेँ विविध विधासँ अलकृत करबाक जेना ई व्रत नेने होथि। मौलिक, अनूदित, हिनक रचना भाषाक रचनामे सहायक भेल। मैथिलीमे पत्र प्रकाशन सेहो एहि व्रतक एक अनुष्ठान छल। आर्थिक विपन्नताकेँ ललकारैत अपन दृष्टि आ सिद्धांतपर अटल, मातृभाषाक एक अंगकेँ सुमनजी क्षीण कोना देखि सकैत छलाह ? दू-दू बेर 'स्वदेश'क सनेस घर-घर पहुँचयबाक प्रयत्न कयलनि। सफलता संग नहि देलकनि किन्तु हुनक प्रचण्ड मातृभाषा

प्रेम, दुर्दम्य साहस आ अकथनीय परिश्रमक प्रशंसा तँ करहिक पड़त। दोसर, कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु।

सुमनजी संस्था छथि, व्यक्ति नहि, सैकड़ो हजारो लोक हिनकासँ प्रेरणा पाबि अपन जीवन धन्य बनओलक। मिथिलांचलमे आ बाहरो हिनक शिष्या-नुशिष्य हिनक मातृभाषा प्रेम, काव्यप्रेम, देशप्रेमसँ अनुप्राणित अछि। 'जीवित्कवेराशयो न वर्णनीयः' तथापि हिनकापर अनेकानेक शोधग्रन्थ बहरा चुकल अछि आ बहरा रहल अछि। दरभंगा वा एहितँ बाहरक कोनो संस्था सुमनजीक अभावमे स्पन्दनहीन बूझि पड़ैत अछि।

गद्य हो वा पद्य सुमनजीक हाथमे लेखनी पड़ितहि नाचऽ लगैत अछि। रससिद्ध शिल्पीकेँ पाबि शब्दोकेँ गति भेटैत छैक। शब्द प्राणवंत भऽ लय-ताल ताकि लैत अछि। शब्द-विन्यास 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' से नहि, 'सुलभं वचः' भऽ उठैत अछि। कलम पकड़बामे जे विलम्ब हो, पकड़ैत देरी नवगछुलीक कोमल किसलयक अक्षय स्रोत आबऽ लगैत अछि। तखन जड़ हृदय सेहो रसक वेगमे उपलाय लगैत अछि।

सुमनजीक पुस्तकक समीक्षा ने एहि पाँती सभक उद्देश्य ने अभीष्ट। हमरामे ओ क्षमतो नहि। परन्तु प्रतिपदा पूर्णिमा कोन जे दुतियो नहि देख-ओलक। हम तँ हुनका गुरुवत् मानैत आयल छी। सामीप्यक कारणे हमर दोषो भऽ सकैत अछि, किन्तु सुमनकेँ मधुप, दूहूकेँ किरण, तखने अमरो सार्थक। हमरा प्रति हुनक स्नेह, सद्भाव विषमो स्थितिमे अक्षुण्ण रहल। हुनका विषयमे लिखब सामीप्य दोषेँ वा अक्षमतेँ अत्यन्त कठिन। ओ वृद्धावस्थहुमे वृद्धो षोड़शवर्षवत् आ हम ओकर देहरिएपर 'हिम्मत हारि बिसारिए न हरि-नाम'पर आबि गेल छी। कालजयी होयबाक कारणेँ हुनका जराक चिन्ता नहि परन्तु हमरा सभक समय 'निद्रया व्यसनेन वा' बितैत अछि।

हुनक साहित्य-साधनासँ अनवरत हमसभ प्रेरणा पबैत रही से ईश्वरसँ प्रार्थना। ने वाणीक चातुर्य, ने भाषाक माधुर्य, ने भावक प्रवणता, तखन एहि महाकवि-महापुरुषक अर्चना कोना करू ?

हम अनुगृहीत छी

डॉ० श्रीजयकान्तमिश्र

हिन्दी आओर मैथिलीक सम्बन्ध की छैक से आब फड़िछयबाक आवश्यकता नहि बुझाइत अछि। एहि विषयमे जतेक विवाद छलैक से जखन भारत सरकार मैथिलीकें साहित्य अकादमीमे स्वतन्त्र साहित्यिक भाषाक रूपमे स्वीकार कऽ प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार देबऽ लागल तखन अन्त भऽ गेलैक। हँ, यत्र-तत्र अज्ञानी वा दुराग्रही वा राजनीतिज्ञ उनटा-पुनटा, नव-नव मैथिलीक विरोध करैत छथि तकर की कयल जा सकैछ? बुझनिहार मिथिलावासी जखन देखताह जे प्रत्येक हाइस्कूलसँ लऽ मिथिलाञ्चलक प्रत्येक कओलेज-यूनिर्वासिटीमे एकटा पृथक स्वतंत्र विषयक रूपमे मिथिला भाषा पढ़ाओल जाइछ तखन एहि प्रकारक द्रोहीसभकें समुचित उत्तार स्वतः भेटैत रहतनि। बिहार लोकसेवा आयोग ओ रेडियो विभागमे जँ-जँ आओरो घनिष्ठ मैथिलीक उपयोगिता बढ़ैत जयतैक तथा आब जखन वर्ग १ सँ वर्ग १० धरि मैथिली माध्यमसँ बच्चासभक पढ़ौनी जोर पकड़त, तखन एहि प्रकारक शंकासभक स्वतः समाधान भऽ जायत से हमरा विश्वास अछि। एखनुक स्थिति तँ तेहने छलैक—मिथिलाञ्चलमे समस्त प्राथमिक विद्यालय हिन्दी विद्यालय वा उर्दू विद्यालय छलैक। तखन लोक साधारणतः आर की विचार कऽ सकैत छल? तें मैथिलीकें लोक चिन्हओ नहि रहल छल।

प्रश्न उठैत्त अछि जे भविष्यमे हिन्दीक स्थान मिथिलामे की होयत? हम तँ एखन धरि इएह बुझैत छलहुँ जे मैथिली क्षेत्रमे मैथिली आबि जायत तँ जेना बंगालमे बंगला छैक, तामिलनाडुमे तामिल छैक, वा कर्नाटकमे कन्नड़ छैक तेना हमरोसभक स्थिति रहत। एहिना प्रायः भारतराष्ट्रक स्वप्न देखनिहार महामनालोकनिकें भावना छल होयतनि जे भारतकें स्वतंत्र होयबाक देरी छैक।

स्वतंत्र होइत देरी समस्त देशमे हिन्दी राष्ट्रभाषा धीरे-धीरे सभ लोक, सभ प्रान्त, सभ वर्ग स्वीकारत; अन्तर्राष्ट्रिय वा विशेष-विशेष प्रयोजन मात्रक भाषा अंग्रेजी रहत। किन्तु कतेको ज्ञात ओ अज्ञात कारणवश समयक गति एवं कालक प्रवाह अंग्रेजीकें स्थायीसँ स्थायी राष्ट्रभाषा बनयबाक दिस अग्रसर अछि। तहिना मिथिलामे हमसभ पूर्वसँ हिन्दीकें मात्र राष्ट्रभाषा बुझैत अयलहुँ आर मैथिलीकें मिथिलांचलक भाषा मानैत रहलहुँ। अबोहर अधिवेशनमे हिन्दी साहित्य सम्मेलनक अध्यक्षक पदाँ हमर गुरु डॉ० अमरनाथ झा गौरवपूर्ण उद्‌घोषणा कयने रहथि जे "हिन्दी हमर राष्ट्रभाषा थिक, मैथिली हमर मातृभाषा थिक।" हम स्वयं इएह बुझैत आयल छलहुँ एवं तद्‌वते संघर्ष करैत अयलहुँ अछि।

किन्तु इतिहासकें पलटा देब असम्भव छैक। हम यदि आइ उन्नैसम शताब्दीमे मैथिलीक आन्दोलन लड़ैत रहितहुँ तँ प्रायः दोसर अनुभव होइत। एहि बीच पुराना मिथिलांचलक जातिवादी कट्टरता एवं सीमित साक्षरताक जे वातावरण छल—मैथिलक अर्थ मैथिल ब्राह्मण ओ मैथिल कर्ण कायस्थ मात्र जे विशेष रूपें मैथिल महासभाक सदस्य होथि, आर मैथिल मुसलमान, मैथिल भूमिहार, मैथिल यादव, मैथिल हरिजन मैथिल महासभाक सदस्य नहि बूझल जाथि—एवं मिथिला राज्योपार्जक महाराज महेश ठक्कुरक सन्तान महामनीषी अपन न्यूनतापन्न मति (inferiority complex) सँ प्रेरित भऽ उर्दू, जे मिथिलाक प्राचीन लिपि तिर्हुताक बहिष्कार कराओल—सर जार्ज ग्रिअर्सन जे मिथिला-मैथिलीक अनन्य भक्त ओ उपासक छलाह, किन्तु मैथिलीक हेतु देवाक्षरक छापामे प्रयोग कराओल एवं 'बिहारी' नामक कपोलकल्पित भाषा गढ़ल जाहिमे जनसंख्याक दृष्टियें दू-तिहाइ भाग भोजपुरी-हिन्दीसँ भरल छल तथा मगहीकें मैथिलीसँ पृथक स्थान दऽ देल गेल—ई सभ इतिहास हम आइ बीसम शताब्दीक आठम दशकमे कोना उनटा देबैक, बैसा देबैक ?

दोसर, ई मात्र एतबे धरि नहि सीमित रहल। मैथिलीकें मिथिलाञ्चलमे क्रमश मातृभाषाक पदपर आसीन नहि करबेकें आधुनिकता मानल जा सकल—प्रत्युत ई भेलैक जे क्रमशः आधुनिक भाषाक प्रचण्ड विकासक युगमे हमसभ

मिथिलामे हिन्दी द्वारा आधुनिकता अनैत गेलहुँ—आधुनिकताक प्रवाहमे भीजि गेलहुँ, बहैत रहलहुँ, उड़ैत रहलहुँ——हमर सिनेमा, गीत, उपन्यास, कओमिक शिक्षा सभटा तँ हिन्दीए द्वारा होइत रहल——लोक हँसल हिन्दीमे, गीत गुनगुनायल हिन्दीमे, प्रेमालाप कयलक हिन्दीमे, गारि पढ़लक वा सुनलक हिन्दीमे, प्रशासनिक काज कयलक-करओलक हिन्दीमे——से सभटा की एके चोटमे बिला जयतैक ?

एहिठाम द्विभाषी वा त्रिभाषी कोनो समाज कोना होइत अछि तकर वैज्ञानिक प्रक्रिया बुझब आवश्यक अछि। वैज्ञानिक सत्य छैक जे कोनो भाषा कोनो आन भाषासँ कम क्षमता वा योग्यता नहि रखैछ। आइ जे विज्ञान वा तकनीकी क्षेत्रमे अंग्रेजी अथवा रूसी भाषाक क्षमता छैक से कहियो एक समय ओहिमे नहि छलैक। कालक्रममे ओ अबैत गेलैक जेना ओहि भाषासबहिक प्रयोग बढ़ैत गेलैक। तेँ भाषाविद् प्रतिपादित करैत छथि——

"Whether or not it is economically feasible for the language of a very small community to be used as a medium for all the purposes of the modern world is ofcourse an entirely different question, which each community has the right to decide for itself, It is worth pointing out that in the next generation machine translation will probably have become efficent enough, and cheap enough, to overcome the problem of translating all the material such a community would need to have translated from other languages. Whether considerations may affect the choice of a language for science or administration to a newly independent nation, this at least can be made clear : all languages are equally capable of being developed for all

purposes and no language is any less qualified to be the vehiole of modern science and technology than were English and Russian some centuries ago.[1]

तस्मात् ई मानि लेबऽ पड़त जे कोनो समाज अपन मातृभाषाक अतिरिक्तहु भाषाक उपयोग आर्थिक वा व्यावहारिकता मात्रक द्वारें करैत अछि, भाषाक क्षमता द्वारें नहि। अथ च भाषा बढ़ैत छैक शब्दादिकें उधार लऽ। से जतेक ओ जेना आवश्यक होइत छैक तेना कोनो समाज लऽ लैत छैक। एहि हेतु कोनो भाषाभाषी समाज स्वभाषाकें परिवर्तित-परिवाद्धत कऽ सकैछ। तें हुना जँ कोट, पेन्सिल, स्टेशन, फाउन्टेनपेन आदि शब्द उधार लऽ काज चला लैत छी वा एक्के शब्द वा विभक्ति अपना लैत छी तँ कोनो हानि नहि। हँ, ओकरा व्यवहार द्वारा, शिष्टजन प्रयोग द्वारा आत्मसात् करैत जाइ। इएह तँ भाषाक विकास भेल। तहिना एक भाषाक अछैत दोसर भाषाकें सेहो लोक अपना लैत अछि——द्वितीय भाषाक रूपमे आवश्यकता ओ इतिहास परम्पराक अनुसार। ई द्वैभाषिक स्थिति कोनो अनुचित वा हानिकारी नहि होइछ——

"It is quite normal for members of a language community which has a standard language to continue to use both the native and the learnt standard) dialect In different situations through out their lives.[2]

एतेक धरि कहल गेल अछि जे संसारक बहुतो देशक स्थिति एहि प्रकारें द्वितीय भाषाकें अपनायब आवश्यक बुझैत छैक···

---

1. The Linguistic Sciences & Language Teaching by MAK Holliday Mcnlosh and Peter Stevens, पृष्ठ 100.

२. ऐजन पृ० ८५।

"……In many parts of the world, it is necessary to learn a second language in order to be equipped with a full range of registers; and foreign language teaching has become one of the world's major industries. By the time when it is no longer necessary for anyone to learn a foreign language in order to be a full citizen of his own community it may well be recognized as desirable for everyone to do so in order to be a citizen of the world.[1]

एही क्रममे तृतीय भाषा वा विश्वभाषाक सेहो आवश्यकता होयब स्वाभाविक थिक। एही कारणेँ हम भारतवासी अंग्रेजीकेँ सेहो भारतक द्वितीय राष्ट्रभाषा ओ विश्वक बहुप्रचलित भाषाक रूपमे सिखैत छी ओ सिखैत रहब। विश्वभाषाक रूपमे संस्कृत कतेक धरि उचित छैक से एहि दृष्टिसँ देखल जा सकैछ। संस्कृत तँ मैथिली मातृभाषाक एकटा विशिष्ट अंगभूत भऽ प्राचीन सांस्कृतिक भाषाक रूपमे सिखल जाइछ अथवा आवश्यकतानुसार (यथा पौरोहित्य वा पाण्डित्यक हेतु) चतुर्थ भाषाक रूपमे सिखल जा सकैछ।

बात ई छैक जे भारतक एकताक परिप्रेक्ष्यमे अथवा हिन्दी सिनेमा ओ व्यापार-वाणिज्यक विनिमय-क्षेत्रमे हमरा मात्र मातृभाषा मैथिलीसँ सभटा कार्य नहि चलनिहार अछि, तेँ ई कोनो दोषावह वा हानिकारक नहि होयत जे हम हिन्दीअहु सिखी। एहि हेतु देवाक्षरक अपनायब मैथिलीभाषीक हेतु बुद्धिमत्ताक कार्य कहल जायत · यद्यपि एहिसँ मैथिलीक अस्तित्वपर धक्का पहुँचल अछि। किन्तु से मातृभाषाक स्थानपर सर्वत्र मैथिलीक मानक रूप (standard form) व्यवहृत होअय लगैक तखन कोनो ततेक हानिकर नहि होयत।

प्रश्न छैक · करबैक की ? जँ हिन्दीकेँ एहि प्रकारेँ नहि धरब तँ निर्वाह सेहो नहि होयत। हँ, ओकरा प्रथम नैसर्गिक मातृभाषा नहि बनाओल जा सकैछ।

---

१. ऐजन, पृ० ९४।

आइ आदरणीय पण्डित श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन'जीक अभिनन्दन करैत हमरा इएह स्मृति बारम्बार अबैछ जे ओ आरम्भेसँ हिन्दीक यमुना ओ मैथिलीक गंगा बहाय मिथिलामिहिरक त्रिवेणीमे स्नान करैत रहलाह। हम हुनका हिन्दीक ओतेक महान् प्रचारक, पोषक एवं श्रेष्ठ साहित्यकारक रूपें देखैत छिअनि जतेक मैथिलीक नहि। हमरा किछु वर्ष पूर्व पंजाब जयबाक अवसर भेल। ओतय देखल जे पंजाबीभाषी द्वितीय भाषाक रूपमे सहर्ष हिन्दीकें अपनाय काज चला रहल अछि। तखन ज्ञान भेल ओ श्रीसुमनजीक दूरदर्शिता बुझबामे आयल। श्रीसुमनजी हमरा जनसंघक नेताक रूपमे आओर अपन अनेक विचार-धारासँ बरोबरि हिन्दीसँ "एलर्जी" (alergy)—छुआ जयबा सन-अनुभवसँ बचयबाक उपदेश दैत रहलाह अछि। ताहि हेतु हम हुनक अनुगृहीत छी। आब हमरो आँखि खुजल—हुनका मार्गदर्शन काज आयल तथा एहि रूपमे मिथिलांचलकें हिन्दी अपनयबाक प्रभावशाली दृष्टान्त रखबाक हेतु हुनक आभार स्वीकार करैत छी।

हँ, एहना स्थितिमे ई भावना नहि होयबाक चाही जे मातृभाषा मैथिली छोड़ि दी ओ हिन्दीकें मातृभाषा बना ली। से कयने मिथिलावासीक प्रतिभा, हमर जीनियस, हमर वैयक्तिक विलक्षणता लुप्त भऽ जायत ! आ ने इएह कही जे मैथिली पृथक् भाषे नहि अछि, ओ मात्र हिन्दीए थिक वा हिन्दीक अंग थिक। मैथिली अपना जगहपर अछि आर रहय, हिन्दी हमर द्वितीय भाषा रहय, तृतीय विश्वभाषा अंग्रेजी रहय एवं/अथवा चतुर्थ भाषा सांस्कृतिक भाषाक रूपमे अथवा विशिष्ट योग्यताक भाषाक रूपमे संस्कृत रहय, ई स्वाभाविक होयत। तीन वा चारि भाषा सिखब, बाजब, लिखब वा जानब शिक्षित कहयबाक लक्षण सभ दिन बुझल जाइत रहल अछि। हँ, जकरा जतबे धरि शिक्षित बनबाक वा बुझय-बाक हो ततबे धरि सिखय वा जानय। मातृभाषा तँ जन्महिसँ रहत। ई नहि छुटत। ओहिमे अधिक शक्ति, सौन्दर्य ओ अपन व्यक्तित्व निखरत। तें ओकरा तँ मूर्ख मूर्ख रखनहिँ कुशल। आइ धरि इएह अन्याय होइत रहल अछि जे हमरासभक शासक, नेता आ कर्णधार मैथिली मातृभाषाकें अवहेलना करैत रहलाह, मेटयबाक चेष्टा करैत रहलाह अछि से अनुचित छल आ से जें

मैथिली एतबोपर जीवित अछि, तें निष्फल प्रयास रहलनि अछि। आइ जखन मातृभाषाक रूपमे मैथिली प्रतिष्ठित भऽ रहल अछि तखन ई निस्संकोच स्वीकारल जा सकैछ जे हिन्दी हमर द्वितीय भाषा (भने ओ विमाताक भाषा रहओ ···मातृभाषा तँ नहिए थिक) रूपमे मिथिलांचलके स्वीकार छैक। आर से केनहु छी, मएट्रिकमे एक पत्र मैथिली लिअऽ आर दोसर पत्र हिन्दी लिअऽ। हँ, सभ विषय सभ ज्ञान मातृभाषाक माध्यमसँ वच्चा सिखय से बनल रहबाक चाही। आगाँ जाय आवश्यकतानुसार हिन्दी, अंग्रेजी वा संस्कृत वा आने भाषा सीखय वा पढ़य।

तखन श्रीसुमनजी सम्पादक छलाह

आचार्य डा० श्रीजयमन्तमिश्र

महारानी लक्ष्मीवती साहिबाक काशी राममन्दिरमे ओहि दिन अभूतपूर्व भीड़ छल। काशीक समस्त मैथिल विद्वत्समाज ओ छात्र समुदाय ओतऽ एकत्र छल—पंडित सुरेन्द्रझा 'सुमन'क स्वागत करबाक हेतु आ हुनक भाषण सुनबाक हेतु। मैथिली छात्रसङ्घक ओ वार्षिकोत्सव छलैक। छात्रसङ्घक नियमानुसार कार्यक श्रीगणेश निम्नलिखित मङ्गलगानसँ भेलैक—

"जयति श्री विश्वेश माधव दृष्टि गणपति काशिका
जयति भैरव दण्डपाणि गुहा शिवा मणिकर्णिका।
जयति गङ्गा शिवतरङ्गा करथु रक्षा सब मिली
जयति श्री मिथिलेश मिथिलादेश मैथिल मैथिली।"

स्वागतभाषण तथा कतिपय विशिष्ट विद्वानक भाषण भेलाक बाद सुमन-जीक अध्यक्षीय भाषण भेल। उपस्थित समाज अत्यन्त सावधान भऽ हुनक गंभीर भाषणकेँ सुनलक। लगभग साठि वर्ष पूर्वक ई बात थीक। ओहिना स्मरण अछि। मैथिलीक तत्कालीन विभिन्न समस्यापर प्रकाश दैत सुमनजी कहने छलाह जे "मिथिलाञ्चलसँ बाहर सम्प्रति मैथिलसङ्घ, कलकत्ता तथा मैथिल छात्रसङ्घ, काशी मिथिला-मैथिल-मैथिलीक सर्वाङ्गीण विकासक हेतु सक्रिय अछि एवम् मिथिलाक सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतनाकेँ उद्बुद्ध करैत उल्ले-खनीय कार्य कयलक अछि।

सम्प्रति मुख्यतः संस्कृतक विद्वान लोकनि मैथिलीक सेवामे लागल छथि जाहिसँ धार्मिक, सांस्कृतिक, पौराणिक कथावस्तु मैथिली भाषामे प्रकाशित भऽ रहल अछि। ई प्रसन्नताक विषय थिक। संगहि नवीन शिक्षा-दीक्षा प्राप्त नवीन पीढ़ीक व्यक्ति लोकनि नवीन विधाक साहित्य-सर्जन करथि, ई आवश्यक।

आन-आन समृद्ध भाषामे जे नव-नव साहित्य आयल अछि आ आबि रहल अछि तदनुरूप मौलिक आ अनूदित विषय मैथिलीमे आयब अत्यन्त अपेक्षित अछि। मैथिली भाषामे सब विषयकें आत्मसात् करबाक अपूर्व क्षमता छैक। अतः भाषाकें विभिन्न रूपमे समृद्ध करब आवश्यक।

मैथिल समाजकें उद्‌बुद्ध करबाक हेतु मैथिलीमे पत्रिकाक प्रकाशन परमावश्यक अछि। सम्प्रति दरभंगासँ 'मिथिला मिहिर' ओ काशीसँ 'मिथिलामोद' पत्रिका प्रकाशित भऽ रहल अछि। ई पर्याप्त नहि अछि। मैथिलीमे एक दैनिक पत्रक नितान्त आवश्यकता अछि—आ अपेक्षित अछि ओहि पत्र-पत्रिकाकें कीनि बहुसंख्यक पढ़निहार लोकक। जाधरि पाठकक संख्यामे वृद्धि नहि होयत ताधरि सफलताक आशा करब व्यर्थ।

एक बात आओर विशेष ध्यान देबा योग्य अछि—मैथिल शब्दक एखन संकुचित अर्थ लेल जा रहल अछि। मिथिलाक ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थकें एखन मैथिल बुझल जा रहल अछि। ई धारणा अत्यन्त असंगत ओ अहितकर थिक। हिमालयसँ गङ्गा आ पूर्वक कोशीसँ गण्डकी पर्यन्त भूभाग मिथिला थिक आ एहिमे जन्म लेनिहार समस्त जन-समुदाय मैथिल थिकाह। एहि ठामक मैथिल जे मिथिलांचलसँ बाहर जाय बसि गेल छथि ओ सब मैथिल थिकाह। हुनका प्रति कोनो भेदभाव राखब मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हेतु अत्यन्त अहितकर। 'मिथिलायां भवः मैथिलः' यैह मिथिलाक व्युत्पत्ति शास्त्र-सम्मत थिक। देश-विशेषक अर्थमे 'मिथिला' अत्यन्त प्राचीन शब्द थिक। महर्षि पाणिनियोसँ बहुत पूर्व विश्रुत महर्षि शाकटायन उणादि प्रकरणमे 'मिथिलादयश्च' ई सूत्र लिखने छथि। 'मथ्यन्ते रिपवः अत्र' एहि अर्थमे मिथिला शब्दकें निष्पन्न मानैत छथि। अतः मिथिलाक एहि विशेषतापर अर्थात् विरोधीक मान-मर्दन करब एहि अर्थपर ध्यान राखब आवश्यक। 'जयति श्रीमिथिलेश मिथिलादेश मैथिल मैथिली' एहि मङ्गलगानमे निहित भावनाकें अक्षुण्ण राखब आवश्यक।

विश्वास अछि, मैथिल छात्रसङ्घ, काशीक उदीयमान कार्यकर्त्ता लोकनि

हमर भावनासँ पूर्ण सहमत भऽ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक सर्वाङ्गीण विकासक हेतु कटिबद्ध रहताह।"

ओहि दिन सुमनजी जाहि समस्या दिस ध्यान आकृष्ट कयने छलाह ओ बहुत अंशमे आइयो ओहिना विद्यमान अछि। नवीन पीढ़ीक बहुत लेखक आइ सामने आयल छथि। ई प्रसन्नताक बात। मैथिलीमे एकोटा नीक दैनिक पत्र आइ नहि अछि। ई खेदक विषय।

प्राथमिकसँ लऽ उच्चतम शिक्षाधरि मैथिलीक अध्ययन-अध्यापन होइतहुँ, साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीकेँ मान्यता प्राप्त भेनहुँ मैथिलीसाहित्यक पाठकमे अपेक्षित वृद्धि नहि भेल अछि। अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीकेँ एखनहुँ धरि स्थान नहि भेटल अछि। एहि प्रसंग प्रतिवर्ष ठास-ठाम संकल्प लेल जाइत अछि। एहि समस्या सभक समाधान लेल मानसिक बलक अभाव देखबामे अबैत अछि।

एक साँझ

श्रीदमनकान्तझा

श्री'सुमन'जीक ध्यान अबिते बीस वर्ष पाछाँक घटनासभ रील जकाँ भागऽ लागल। मिथिलाक संस्कृतिसँ सराबोर दरभंगा। आधुनिक पर्यावरण-प्रदूषणसँ दूर। भ्रातृत्वक उत्कृष्ट प्रदर्शन, अभावक बीच साहित्य-भंडार परिपूर्ण। भोजनक विन्यास, दाइ-माइ लोकनिक कंठक मधुर गीतनाद, साय-गोष्ठी, भाङक जलसा, मखान-पानमे घोसिआइत चाहक चुस्की की आबो ओहिना पूर्ववत् चलैत होयतैक ? अवश्य, कारण जे श्रीमदनेश्वरमिश्रजी पूर्णियाक वैभवकेँ त्यागि, श्री एल० के० मिश्र पटनाक अट्टालिकाकेँ छोड़ि दरभंगाक खटमिट्ठीसँ अपनाकेँ मुक्त नहि करा सकलाह। एहि सभक केन्द्रविन्दु बनि बैसल छथि हमर सुमनजी, अहाँक सुमनजी, सभक सुमनजी—एहि कराल कलिकालमे शान्त, धीर-गम्भीर, ऊर्जाक असीम भण्डार बटैत, तपस्यालीन। मुदा हम एहि सभ सुखसँ वंचित भऽ गेलहुँ। मन बौआइत रहल। एक-एक संस्मरण मानसपटलपर उभरऽ लागल।

एक सायं बल्लीपुर ड्योढ़ीमे, जतऽ सुमनजीक परिवारक घर-द्वार छनि आ हमर छोट बहिनिक विवाह छैक, अनाहूत एक भव्य गोष्ठी जमल छल। एक पाहुन श्री विश्वनाथ झा (कविवर सीतारामझाक सुपुत्र) सेहो अठन्नी पट्टी, अपन सासुरसँ टघरैत चटिसारपर पहुँचि गेलाह। गामक जमाय होयबाक कारणेँ हुनका श्रेणीक्रमसँ उपस्थित बबुआनलोकनि चौल करैत स्वागत कयलथिन। विश्वम्भर बाबू देबालमे ओठङि पलथी लगौलनि। ताही काल सुमनजीक प्रियपात्र नूनूबाबू बाटपर देखाइ पड़लाह। हृषीकेशबाबू, रणवीरबाबू, मोहनजी, सूर्या मास्टर, गंगेशबाबू हुनका बजौलथिन। हुनका हाथमे किछु

आवश्यक वस्तु छलनि, तथापि गोष्ठी जमल देखि नूनूबाबू आबि धमकलाह। बैसैत देरी भाङ-भुर्राक चर्चा चलौलनि। तुरन्त बाबूलोकनिक आदेश भेल। खबास लगलाह बदाम-मिश्री रगड़य। कौशलबाबूक आग्रहपर सभक प्रिय नूनूभाइ लगलाह सस्वर 'मधुशाला'क पाठ करय। सभ झूमि गेल हुनक एहि उक्तिपर—

नाम अगर पूछे कोई तो कहना बस पीनेवाला
काम ढालना और ढलाना सबको मदिराक प्याला
जात प्रिये, पूछे यदि कोई, कह देना—दीवानों की
धर्म बताना प्यालों की ले माला अपना मधुशाला

वार्तालापक क्रम बदलल आ चर्चाक विषय भऽ गेलाह सुमनजी।

रणवीरबाबू—सुमनजीक डेरा तँ आब साहित्यकार लोकनिक तीर्थ भऽ गेल।

कौशलबाबू—नूनूभाइ तँ अपन घर-परिवारकेँ छोड़ि आब पण्डितजीक पुरना डेरामे कल्पवासे करैत छथि।

हृषिकेशबाबू—सुमनजीक जीवन मिथिला-मैथिलीक हेतु समर्पित छनि।

जयवीरबाबू—परिवार-पोषक के एहन दोसर भेटत? अपन साधारण आवश्यकताकेँ रोकि सभ आश्रितक अभिलाषाक पूर्तिमे लागल रहब हुनक धर्म भऽ गेल छनि।

विश्वम्भरबाबू—सुमनजीकेँ तँ संस्कृत, मैथिली आ बंगला साहित्यपर समान अधिकार छनि। बड़का-बड़का पण्डितकेँ हम हुनका लग बैसल विभिन्न विषयपर गम्भीर चिन्तनमे निमग्न देखल। विनम्रता आ आतिथ्यसत्कारक तँ कथे कोन? अपनहि उठिकऽ चाह-पानक जोगार करब मामूली बात।

हम—सुमनजी तँ बल्लीपुर गामकेँ महाबल्लीपुर बना देलनि। 'मिथिला मिहिर'क विख्यात सम्पादक, सफल शिक्षक, आदर्श राजनेताक रूपमे लोकसभाक सदस्य, हिन्दी प्रगति समितिक प्रभावी सदस्य, साहित्य अकादेमीक कार्यसमितिक सदस्य-रूपमे मैथिली विभागक अध्यक्ष तथा ओकर प्रधान संचालक, भारतीय वैदिक संस्कृतिक प्रबल पक्षधर, संगहि आधुनिक विचारक समन्वय, मैथिली

गद्य–पद्य ओ स्वस्थ समीक्षाक अजस्र भंडार। की एहन जीवनक आन कोनो उपाय अछि ?

संघर्षशील, कर्मठ, धर्मात्मा, उदार, सादगीक संग उच्च विचार रखनिहार एहन महात्मा प्रायः कोनो समाजके उपलब्ध नहि भेल होयतैक। झंझारपुरक मोहनपुर गाममे सुमनजीक पैतृक वासडीह छनि। संयोगसँ हम ओतऽ पहुँचि गेलहुँ। ओहि घरक धीयापूता परिचय-पात लऽ भोजनक आग्रह कयलक। समयाभावसँ ई अभिलाषा नहि पूरल, परन्तु लगले एक वृद्ध दस टा जम्बीरी नेबोक उपहार प्रस्तुत कऽ देलनि। वातावरण जम्बीरीक सुगन्धिसँ भरि गेल।

वापसीमे गाड़ी आगू बढ़ि रहल छल आ हम स्मृतिकेँ झकझोड़ऽ लगलहुँ तँ मन पड़ल जे सर्वप्रथम अपन बहिनोइक संग राजप्रेसमे पण्डिजीसँ परिचय कोइलखनिवासीक रूपमे भेल। ओ अपनत्वक प्रतिमूर्ति बूझि पड़लाह। ओ कहलनि जे प्रारम्भिक पाठ ओ कोइलखेमे अपन कुटुम्बक ओतऽ रहि पं० जयसिंहठाकुरसँ प्राप्त कयने छलाह। पं० जयसिंह ठाकुर पत्रकारप्रवर श्रीकांत-ठाकुर विद्यालंकारक जेष्ठ भ्राता छलाह। हुनक घर हमरे घरक लगमे छनि। एकर पश्चात् सम्पर्क बढ़ैत गेल।

प्रारम्भिक जीवनमे हमहू हुनक राजनीतिक विचारधाराक समर्थक छलहुँ। बहुतो सभा-सम्मेलनमे हुनका संग जाय लगलहुँ। प्रधान कारण हुनक व्यक्तित्वक प्रति हमर आकर्षण छल। ओकालति शुरू कयलाक बाद हमर सम्बन्ध आरो प्रगाढ़ होइत गेल। पिताक श्राद्धमे निमंत्रण पठौलियनि तँ कोइलख पहुँचि अपन अटूट स्नेहक परिपालन कयलनि।

तहिया हमर एक कथाक नायक भेखाभाइ जीवित छलाह। बाट-बटोही आ टोलक उकाठी धीयापूताक खेलौनिया रहथिन भेखाभाइ। टोकिते देरी होलिआयब शुरू करथिन। जे गारि कहियो नहि ओ सुनने छलाह, से सद्यः आमने-सामने सुनऽ लगलाह। जाहि बरंडापर सुमनजीक विश्रामस्थल छलनि, ताहूपरक लोकसभ हुनका चौल कयने रहथिन। तेँ, हमर भेखाभाइ समूह-वाचक शब्द 'दरभंगियासभ' कहि भरिपोष सुमनजीलोकनिक 'स्वागत' कयने रहथिन। हम भेखाभाइके चुप करैत कहलियनि जे ई अहाँ की करैत छी ?

ई तँ पं० सुरेन्द्रझा 'सुमन', डॉ० श्रीकृष्णमिश्र ओ पं० शोभाकांत जयदेवझा थिकाह। सुमनजी विनोद-मुद्रामे हमरा प्रति आभार प्रकट करय लगगाह जे "ओकिल साहेब, अहाँ तँ बिना खर्चाक बाइसकोप दलानेपर देखा देलहु"। एहन सिनेमा दलानेपर बैसल आइ धरि नहि देखने रही।" तावत भेखाभाइ होरीचालीसाक आखरी पन्नाक पाठ समाप्त करैत बाजि उठलाह—"हमरा क्यो लाल पाग पहिराकऽ चुमाओनक ओरियान करताह से नहि, तँ कहैत छथि जे 'पैर फूलल अछि'। बड़ी-भात धीयापूताकें कहिया भोग होयतैक ? हम तँ सभक बड़ी-भात खाकऽ मरब।"

आइयो सुमनजीक विनोदपूर्ण मुद्रा आँखिक आगाँ नाचि रहल अछि।

आइयो जखन ओ पटना पदार्पण करैत छथि, हमर बासापर आबि आशीर्वाद देब नहि बिसरैत छथि। ईश्वर शतायु करथुन !

अजन्ता-एलोराक ओ यात्रा

श्रीरमेन्द्रनारायणचौधरी

ऋषितुल्य आचार्य श्री'सुमन'जीक सान्निध्य तथा हुनक आत्मीयता प्राप्त करब अपन जीवनक बड़का उपलब्धि मानैत छी। सुमनजीमे हमरा एक्केठाम दधीचिक त्याग, सूरक समर्पण, तुलसीक भक्ति, शंकराचार्यक संस्कार, विद्यापतिक काव्यसौरभ, विवेकानन्दक राष्ट्रप्रेम एवं गोलवल्करक उदात्त चरित्रक सम्मिश्रण भेटैत अछि। आइ तँ हम हुनक पारिवारिक सदस्यवत् छियनि, मुदा परिचयक सूत्रपात प्रकाशक-लेखकक सम्बन्धक रूपमे भेल छल।

सरकारी सेवासँ मुक्त भऽ १९५३मे दरभंगामे 'ग्रन्थालय प्रकाशन'क स्थापना कयलहुँ। एहि संस्थासँ लगभग सय गोट मैथिली पोथी छपल, जाहिमे बालवर्गसँ लय उच्चतम वर्ग पर्यन्तक छल। तिरहुता-लिपिक प्रचार लेल 'तिरहुतावर्णपरिचय' एवं प्रथम मैथिली डाइरी 'विद्यापति दैनन्दिनी' ग्रन्थालयक किछु महत्त्वपूर्ण उपलब्धिमेसँ थिक। सुमनजी १९५४ मे सी० एम० कालेजमे मैथिली विभागमे प्राध्यापक बनि गेलाह। मिथिला मिहिरक सम्पादकक रूपमे हुनक अत्यधिक प्रतिष्ठा पूर्वहिसँ छलनि। १९५९–६०मे हमर परिचय सम्पर्कमे बदलि गेल आ क्रमशः घनिष्ठतर होइत गेल। 'ज्यों ज्यों डूबे श्याम रंग त्यों त्यों उज्वल होय'—जतेक हुनकासँ निकटता बढ़ैत गेल ततेक हुनक व्यक्तित्वसँ अभिभूत होइत गेलहुँ।

मैथिली साहित्य क्षेत्रमे हुनक अप्रतिम व्यक्तित्व तँ जगजाहिर अछिए, समाजसेवाक क्षेत्रमे सेहो हुनक योगदान कम महत्त्वपूर्ण नहि अछि। पूर्वक जनसंघ एवं पश्चातक भारतीय जनता पार्टीक ओ सक्रिय सदस्य छथि। एकर टिकटपर विहार बिधानसभा एवं लोकसभामे दरभंगा क्षेत्रक प्रतिनिधित्व कयने छथि। हमरा राष्ट्रभावनाक बीजमंत्र हिनकेसँ प्राप्त भेल अछि।

१९६२ सँ ८० धरि हिनक राजनीतिक गतिविधिमे एक निकट सहयोगीक रूपमे सेवा करबाक सुअवसर हमरो प्राप्त भेल अछि, जकर अनेक संस्मरण हमर मानसमे जीवन्त अछि। एहि ठाम एकमात्र 'अजन्ता-एलोरा-यात्रा'क उल्लेख करैत छी।

१९७७ मे सुमनजी एम० पी० भेलाह आ संसदीय राजभाषा समितिक सदस्य मनोनीत कयल गेलाह। प्रख्यात राजनेता ओम मेहताक संयोजकत्वमे संगठित एहि समितिमे सुमनजीक अतिरिक्त एडवार्डो फेलेरियो, जगन्नाथ जोशी, कुँवर मोहम्मद अली (जे बादमे मध्यप्रदेशक राज्यपाल भेलाह), बालाजी, गार्गी शंकर मिश्र, आर० बी० गुप्त एवं अन्य रहथि। देशक विभिन्न भागमे एकर 'दौड़ा' बराबरि होइत रहैत छल। ओहि 'दौड़ा'मे यदाकदा हमहुँ रही।

१९७८क प्राय: अप्रैल मास छल। रतुका आठ बजेक गाड़ीसँ दरभंगासँ प्रस्थान करैत गेलहुँ। सुमनजी एकदम सादासादी, हम ठाट-बाठमे। दरभंगा स्टेशनपर रेल अधिकारी स्वागतमे तत्पर। गाड़ी किछु लेट रहैक तेँ फोनसँ समस्तीपुर सूचना दऽ देल गेलैक जे आसाममेलकेँ किछु काल रोकल जाय। हमरा लोकनि फर्स्ट क्लासक कूपेमे सुतल-सुतल समस्तीपुर पहुँचलहुँ। ओतहु रेल पदाधिकारी पहिनहिंसँ स्वागत लेल तत्पर। फाटक खुजबामे किछु विलम्ब भेलापर 'श्रीमान् सुमनजी, श्रीमान् सुमनजी' कहैत बाहरसँ धक्का पड़ल। फाटक लग हमहीँ सुतल रही। खोललहुँ फाटक। रेलपदाधिकारी हमरे सांसद सुमनजी बुझि अभिवादन करैत कहलनि जे आसाममेल बड़ी कालसँ हमरे हेतु रुकल अछि, तेँ शीघ्र कयल जाय। हमर बेडिंग, अटैची एक कर्मचारी उठा लेलनि। श्रीमानो अपन सामान (दरीमे लपेटल लूंगी, चादर आ एयर पिलो) हेंडबैग लऽकऽ उतरलाह। हम मिथ्या परिचयक कारणेँ बहुत घबड़ा गेल रही। हम सशंकित भावेँ श्रीमान दिस तकलहुँ तँ हुनक संकेत छल जे आब ई स्थिति यथावत रहय। आब किछु आत्मबल भेटल। हमहुँ पूर्णरूपेण सांसद सुमनजीक पार्टक अभिनय करय लगलहुँ। छोटी लाइनक प्लेटफार्मसँ बड़ी लाइनक प्लेटफार्म खूब दूर छैक। पदाधिकारी-कर्मचारीक संग आगाँ-आगाँ हम 'नकली सुमनजी' आ पाछाँ-पाछाँ उपेक्षित असली सुमनजी चललहुँ। रेलकर्मी

अपन-अपन माङ रखलनि, समस्या कहलनि, हम 'हँ नहि' मे जबाब दैत बढ़ितो रही आ पसेना-पसेना सेहो होइत रही। आराममेलक फर्स्ट क्लासक फाटक एक वरीय पदाधिकारी अपनहिसँ खोलि, एक कूपेकेँ झाड़ि-पोछि, हमर उचिती-विनती करैत कोनो ठंढा लेबाक आग्रह कयलनि। हमर घबड़ाहटि परा-काष्ठापर छल। कहुना हुनकालोकनिसँ पिण्ड छोड़ाय एहि स्थितिसँ मुक्ति पावऽ चाहैत रही। तेँ, किछु लेबासँ मना करैत, हुनक माङपर सहानुभूतिपूर्वक विचार करबाक आश्वासन दऽ, आतिथ्यक हेतु धन्यवाद एवं शुभकामनाक संग जल्दी बिदाकऽ कूपेक फाटक बन्द कऽ लेलहुँ।

गाड़ी खुजलापर थोड़े काल दुनू गोटे खूब हँसैत गेलहुँ। हम उचितीमे कहलियनि जे आइ पहिली अप्रैल तँ नहि थिकै, मुदा मास तँ अप्रैले छैक, तेँ एकरा ताही रूपमे लेल जाय। श्रीमान् तँ लगले घोर निद्रामे आबि गेलाह, मुदा हमरा भरि राति निन्न नहि भेल। हमरा लागल जे ई साधारण मनुष्यसँ ऊपर छथि।

दोसर दिन साउथ ब्लॉकमे विश्राम कयल। सांसद कुवर मोहम्मद अलीसँ परिचय भेल—सरल हृदय, मृदुभाषी। कहलनि जे हुनक पूर्वज हिन्दुए रहथिन। ओहो हिन्दू संस्कृतिसँ पूर्ण प्रभावित रहथि।

राजभाषा संसदीय समितिक कार्यक्रम 'एयर इण्डिया'क मुख्य कार्यालयक निरीक्षणसँ प्रारम्भ भेल। भोजन-विश्रामक विशिष्ट व्यवस्था। विदाकाल प्रत्येक सदस्यकेँ एक-एक कलात्मक ट्रे, कप आ ग्लास उपहार।

ओही साँझ ट्रेन द्वारा भोपाल प्रस्थान कयलहुँ। संगमे आइ० ए० एस० पदाधिकारी सचिव आ दू-तीन कर्मचारी। प्रत्येक सदस्यकेँ फराक कूपे। हम श्रीमानक कूपेमे रही। सुख-सुविधाक व्यवस्था सभक लेल समान छल। भोपाल रेलवे स्टेशनपर प्रत्येक सदस्य लेल फराक-फराक नव एम्बेसेडर कार लागल छल। स्थानीय पदाधिकारी स्वागतार्थ उपस्थित छलाह। भोपाल एच० ई० सी०क भव्य अतिथिनिवासमे सभक लेल अपन सूट। हम श्रीमानक संग रही। ओही दिन एच० ई० सी०क निरीक्षणक कार्यक्रम छलैक। कारखाना देखबाक हमरो उत्कंठा छल। तेँ हमहुँ गेलहुँ। एतेक विशाल

कारखाना देखबाक ई हमर पहिल अनुभव छल।

भोपालक दैनिक पत्रमे श्रीमानक नाम जखन प्रकाशित भेलनि तँ ओहि ठाम कार्यरत 'मैथिल संघ'क किछु प्रतिनिधि हुनकासँ भेँट करय अयलाह। मिथिला-मैथिलीपर जिज्ञासापूर्ण चर्चा होइत रहल। हमर परिचय पाबि, ग्रन्थालय-प्रकाशनक प्रसंग अनेक जिज्ञासा करैत गेलाह। पुनः चालू करबाक प्रेरणा देलनि, विद्यापति डाइरी फेर छपबाक आग्रह कयलनि। ओहि चर्चाक बाद ग्रन्थालयक प्रसिद्धिक अछैत ओकर वर्त्तमान स्थितिपर, हम बहुत उदास भऽ गेलहुँ। ओही साँझमे प्रसिद्ध भाजपा नेता कैलाश जोशीक ओतऽ 'टी' छल, जाहिमे मध्यप्रदेशक प्रायः सभ नामी राजनेता ओ पत्रकार जुटल छलाह।

दोसर दिन भोपालक दर्शनीय ऐतिहासिक स्थानक भ्रमणक कार्यक्रम छल। मध्य शहरमे स्थित झील, जकर विशाल प्रांगणमे अनेको देवताक भव्य मन्दिर अछि, राजभवन, सचिवालय, विधानसभा भवन एवं अन्य कतेको स्थल देखलहुँ। ट्रेनसँ ग्वालियर गेलहुँ। ओतय विशाल ऐतिहासिक किला, चम्बलघाटी, साबरमती आश्रमक निरीक्षण कयलहुँ। ओतयसँ भरिदिन-भरिरातिक यात्राक बाद महाराष्ट्रक जलगाँव स्टेशन पहुँचलहुँ। आब अजन्ता-एलोराक यात्रा आरम्भ भेल।

जलगाँवक जिला मुख्यालय औरंगाबाद थिकैक, जकर प्राचीन नाम देवगिरि छलैक, ओतहि ठहरबाक व्यवस्था छल। एहि नगरमे बौद्ध, जैन आ मुस्लिम कालक धरोहर विद्यमान छैक। झक्की मोहम्मद तुगलक अपन राजधानी दिल्लीसँ एतय अनलक, फेर एतयसँ दिल्ली लऽ गेल। उच्च पहाड़ीपर एक जीर्णशीर्ण किला अछि, जतय एक प्राचीन तोप राखल छैक। एकटा इनार छैक जाहिमे, कहल जाइछ, सजायाप्ता अपराधीकेँ जिबिते फेकि देल जाइत छल। मुगलसम्राट औरंगजेबक कब्र, हुनक धर्मगुरुक कब्र ओ अन्य महान् योद्धाक कब्र देखल। शहरक दोसर भागमे एकटा पोखरि अछि, जकर पानिसँ बिजलीक उत्पादन कयल जाइत अछि। ओतऽ एक खास प्रकारक रेशम आ सूत मिलल कपड़ाक उत्पादनकेन्द्र अछि जतऽ चद्दरि, साड़ी एवं जड़ी कयल स्त्रीगणक बैग तैयार होइत अछि।

प्रात भेने आठ बजे अजन्ताक गुफा देखबालेल प्रस्थान कयलहुँ। चारू कात उच्च पर्वतशृंखलासँ घेरल, पश्चिम भागक पहाड़केँ काटि उनैसटा बेस पैघ कोठलीनुमा गुफा बनल अछि, जाहिमे बुद्धक गत तीन जीवनक चित्रमय इतिहास खचित अछि। चित्रसभ रंगीन अछि, आइ हजारो वर्षक इतिहासकेँ जीवन्त रखने अछि। ज्ञात भेल जे मुस्लिम कालमे एतऽ कूड़ा-कर्कट, जंगल छल। बृटिश कालमे एक अधिकारी शिकारक क्रममे एतय आयल आ सीढ़ीनुमा चट्टान देखल। सफाइ कराओल गेल। आइ ई भारतक गौरव आ पर्यटकक स्वर्ग अछि।

एलोराक पथक्रममे पार्ली नामक स्थानपर गेलहुँ, जतऽ अहल्याबाइ द्वारा निर्मित बैद्यनाथक मंदिर अछि, जतय वर्षभरि हजारो शिवभक्त अबैत अछि। एहि शिवलिंगक अभिशेष सामान्य जलक बदला नारिकेरक जलसँ कयल जाइत अछि।

एलोराक गुफा छोटछीन किला जकाँ अछि, जतऽ हिन्दू, बौद्ध आ जैन धर्मक अनेको अवतारक मूर्ति पहाड़ काटि-काटिकऽ बनाओल गेल अछि जे विशाल प्रांगणमे पसरल अछि। मुख्य द्वारपर विशाल शिवमूर्ति अछि। बुद्ध आ महावीरक अनेको मुद्राक मूर्ति अछि, जे आश्चर्यचकित कऽ दैछ।

एलोरा-दर्शनसँ घुरि औरंगाबादमे रात्रिविश्राम कऽ दोसर दिन हैदराबादक हेतु प्रस्थान कयल। सिकंदरावाद होइत दोसर दिन हैदराबाद पहुँचलहुँ। ई निजामक राजधानी छल। निजामक राजप्रासाद, हाइकोर्ट, विश्वविद्यालय, चारु मीनार, सलारयंग म्यूजियम प्रभृति ऐतिहासिक स्थल देखलहुँ। चारु मीनार शहरक मध्यमे कइएक सय फीट ऊँच टाबर सदृश अछि। जतऽ बेगम बाजार सभसँ प्रसिद्ध अछि। शृंगार प्राधसानक एतय मुख्यता अछि। कहल जाइछ, निजामक बेगम सभ स्वय संध्याकाल एतय आबथि। सलारयग म्यूजियम तीन मंजिला भव्य मकानमे अवस्थित अछि। सलारयंग निजामक प्रधानमत्री छलाह। ओ अविवाहित रहि जीवन भरि दुर्लभ ऐतिहासिक वस्तुक संग्रह कयलनि। अनेको दुर्लभ हीरा, जमाहिरात, पन्ना, पोखराज, नीलम अछि, मुस्लिम कालक दुर्लभ पाण्डुलिपि, राजा-महाराजाक पोशाक, अस्त्र-शस्त्र, पूर्वकालमे व्यवहृत धरेलू सामान आदिसँ म्यूजियम सुस-

ज्जित अछि। सलारयंग एहि म्यूजियमक निर्माण कय अमर भऽ गेलाह—'कीर्त्तिर्यस्य सजीवति'। टेलीविजनक विशाल कारखाना देखि दोसर दिन दिल्लीक हेतु प्रस्थान कयलहुँ। दिल्लीसँ दरभंगा अयलहुँ।

ओहि बीस दिनक राजकीय यात्रामे श्रीमानक संग हुनक सरलता, सज्जनता, महानता एवं ऋषितुल्य स्वभावसँ बहुत प्रभावित भेलहुँ। ओहि समितिमे हिनक विशिष्ट स्थान छलनि। देशक किछु प्रमुख सांसदसँ परिचय-पात भेल आ अनेको विख्यात ऐतिहासिक स्थल देखबाक सुअवसर भेटल। यथार्थमे एहि प्रकारक राजकी यात्रा जीवनमे प्रथम आ प्रायः अन्तिमे छल, जकर विशिष्ट स्मृति जीवन पर्यन्त मानसपटलपर अमिट रहत।

सुमनजीक चारि पुष्प

श्रीसीतारामझा

हुनक गौर वर्ण, भव्य ललाट, मधुर मुस्कान, सादा परिधान, सौम्य व्यक्तित्व आ वृद्धावस्थामे युवावस्थाक गतिशीलता देखि हम प्रथमहि दर्शनमे नतमस्तक भऽ गेलहुँ। ई के थिकाह ? ई थिकाह शारदापुत्र आचार्य पं० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' जे अपन प्रिय उपनाम 'सुमनजी'सँ ने केवल मिथिलाक्षेत्र वा बिहार प्रान्त वरन् समस्त भारतक साहित्य-संसारमे जानल जाइत छथि। बात थिक १३ अगस्त १९८४क। हम मैथिलीक विद्वान लोकनिसँ सम्पर्क स्थापित करबाक उद्देश्यसँ मिथिलाक्षेत्रक विभिन्न स्थानक भ्रमण करैत मधुबनी पहुँचलहुँ। हम डा० श्रीपरमेश्वरमिश्र, मैथिली विभागाध्यक्ष, जे० एन० कालेज, मधुबनीसँ भेँट कयलियनि। ओ हमरासँ कहलनि—"झाजी, आइ दरभंगामे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक बैसार छैक। हमरा सेहो जयबाक अछि। जँ इच्छा हो तँ चलू। ओतय मैथिलीक पैघ विद्वान लोकनिसँ भेट भऽ जायत।" हम सहर्ष हुनक इच्छाकेँ स्वीकार कऽ जयबाक लेल तैयार भऽ गेलहुँ। हम दूनू गोटे संग-संग दरभंगा अयलहुँ आ बैसकमे भाग लेलहुँ। बैसकक स्थान महारानी रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय छल। बैसकक अध्यक्षता पूज्य श्री सुमनजी कऽ रहल छलाह। डा० श्रीपरमेश्वरमिश्र दोसर विद्वान लोकनिक संगहि श्री सुमनजीसँ हमर परिचय करौलनि। हुनक आकर्षक व्यक्तित्वसँ हम बड़ प्रभावित भेलहुँ। बैसाड़ लगभग दू घंटा चलल। ओहिमे हुनक बजबाक शैली, लोकक प्रति आदर एवं स्नेह तथा काज करबाक प्रणाली देखि हम आश्चर्यचकित भऽ गेलहुँ। ओकर पश्चात् हमरा कतेको बेरि हुनकासँ भेट करबाक अवसर भेटल। २८ एवं २९ अप्रैल १९८५ केँ दरभंगामे आयोजित अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक

अधिवेशनमे हम हुनक कर्मठता देखने रही। वृद्धावस्थहु मे ओ एक नवयुवक जकाँ कर्मठ छथि। ओ अपन आयुक ८४ म वर्ष पूर्ण करऽ जा रहल छथि। एहि वयसमे थकान एक स्वाभाविक लक्षण थिक, परच ओ थकान हुनक मृदुल मुस्कानसँ परिलक्षित नहि होइछ।

ओ साहित्य जगतक पँघ-पँघ पदपर रहलाह अछि। उदाहरणार्थ ओ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तार मैथिलीक विभागाध्यक्ष तथा मिथिला मिहिर एवं दैनिक स्वदेशक सम्पादक रहलाह अछि, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगाक अध्यक्ष एवं साहित्य अकादमी दिल्लीमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधि तथा ओकर कार्यकारिणीक सदस्य रहलाह अछि। ओ संस्कृत, मैथिली, बगला, हिन्दी आदि भाषाक प्रकाण्ड विद्वान छथि। ओ साहित्यक सभहि विधाकेँ अपन लेखनीसँ विभूषित कयने छथि। ओ एक सफल लेखक, कवि, पत्रकार अनुवादक एवं सम्पादक छथि। हुनक गद्य-पद्यमे विचारक प्रौढ़ता, वाणीक गूढ़ता एवं माजल शिल्प-शैलीक वोध होइछ। ओ अनेको गद्य-पद्य-ग्रन्थ संस्कृत तथा मैथिलीमे लिखने छथि आ अनेको पोथीक अनुवाद तथा सम्पादन सेहो कयने छथि। ओ अपन सम्पूर्ण जीवन साहित्य-सेवामे अर्पण कऽ देलनि आ एहि वयसहुमे किछु-ने-किछु लिखैत पढ़ैत रहैत छथि। हुनक ग्रन्थ 'पयस्विनी' १९७१ ई० मे साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा पुरस्कृत भेल अछि। एतदतिरिक्त १९८१मे हुनक दोसर पोथी 'उत्तरा' मैथिली अकादमी, पटनाक विद्यापति पुरस्कारसँ सम्मानित भेल अछि। मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे ई प्रथम व्यक्ति छथि जे मैथिली भाषाक प्रथम दैनिक पत्र (स्वदेश) प्रकाशित कयने रहथि। हुनक निवास-स्थान साक्षात् सरस्वती-सदन छनि। एहि सभ साहित्यक गरिमाक अछैतो हुनकामे कोनो प्रकारक दम्भ नहि छनि। सादा जीवन उच्च विचार हुनक जीवनक लक्ष्य छनि।

हुनक गृहक समक्ष एकटा चौकी सदिखन पड़ल रहैछ। ओहिठाम प्रतिदिन संध्याकाल साहित्यकार लोकनिक गोष्ठी होइछ। एहि सभ विद्वान लोकनिमे सर्वश्री पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', रमेन्द्र नारायण चौधरी, रमानाथ मिश्र 'मिहिर', डा० भीमनाथ झा आदिक नाम विशेष उल्लेखनीय छनि। हमरा

जहिया दरभंगा जयबाक अवसर भेटल, हम सेहो ओहिठाम एहि सभ विद्वान लोकनिक दर्शन कयलियनि ।

मिथिला क्षेत्रक बाहर रहबाक कारण हमर मैथिली भाषाक प्रति अनुराग देखि आन मैथिलीक विद्वान लोकनि जकाँ ई सेहो हमरा बड़ प्रोत्साहित करैत रहैत छथि । एहिसभ सम्पर्कक मध्य श्री सुमनजी अपन करकमलसँ हमरा चारिटा पुष्प प्रदान कऽ प्रोत्साहित कयलनि । ई चारू टा पुष्प अछि—

१. पाग

२. पुरुष-परीक्षा

३. पंचांग

४. प्रशस्तिपत्र

ई चारू 'पकार' एक-एक पुष्पक लेल प्रयुक्त भेल अछि जे हमर जीवनमे एक मोड़ आनि देलक । उदाहरणार्थ :—

१. पाग :—पाग हमर देशक संस्कृतिक प्रतीक थिक । प्राचीन एवं मध्य युगमे पागक प्रचलन सम्पूर्ण भारतमे छल । ई कोनो धर्म, सम्प्रदाय वा जातिसँ सम्बन्धित नहि छलैक । आइयो जतय नगरीय सभ्यताक प्रभाव कम छैक, लोक पाग अथवा पगड़ीक प्रयोग करैत छथि । हमर भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० एस० राधाकृष्णन पागहिक प्रयोग करैत छलाह । एखनहुँ पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली आदिमे पागक प्रयोग बेसी होइछ । जखन हमरा पाग भेटल, हमर मानसपटलपर अतीतक संस्कृतिक रश्मि बिखरि गेल । हम कखनहुँ-कखनहुँ ओहि पागक प्रयोग करैत छी आ अपन देशक पुरान संस्कृतिपर गर्व करैत छी ।

२. पुरुष-परीक्षा :—ई संस्कृतमे महाकवि विद्यापति द्वारा रचल एकटा नीति सम्बन्धी ग्रन्थ अछि । एकर मैथिली–रूपान्तर श्री सुमनजी कयने छथि । ई पोथी मनुष्यक चरित्र–निर्माणमे बड़ उपयोगी छैक । पोथीमे देल गेल नीति–निर्देश हमरा सेहो बड़ अनुप्राणित कयलक अछि ।

३. पंचांग :—ई तीनू काल यथा भूत, वर्त्तमान एवं भविष्यक स्मरण करबैत अछि । ने केवल पृथ्वीपर वरन् आकाश एवं पतालहुमे की भऽ गेल अछि,

की भऽ रहल अछि आ की होयत—एहि सभक विषयमे पंचांगहिक माध्यमसँ हमरा जानकारी प्राप्त होइछ। ई मनुष्यक लेल एकटा पथप्रदर्शक अछि। यैह कारण थिक जे डेग- डेगपर हमरा लोकनिकेँ पंचांगक सहायता लेबऽ पड़ैछ। उपर्युक्त कारणसँ ई पुष्प सेहो हमरा लेल बड़ उपयोगी सिद्ध भेल अछि।

४. प्रशस्तिपत्र :—जहाँधरि प्रशस्तिपत्रक प्रश्न छैक, ई हमरा लेल एकटा प्रेरणाक स्रोत अछि। हुनका द्वारा देल गेल ई पुष्प हमरा सदिखन आगाँ काज करबाक लेल उत्साहित कऽ रहल अछि आ करैत रहत।

श्री सुमनजी द्वारा देल गेल आशीर्वादस्वरूप ई चारू टा पुष्प सदा–सर्वदा हुनकर स्मरण करबैत रहत। माँ भगवती हुनका चिरंजीव राखथु।

साहित्य-मनीषी

श्री उमेशचन्द्रझा

साहित्यकार मनन-चिन्तन ओ समाजक स्वरूप-निर्धारण सदासँ करैत आबि रहल छथि। हुनके प्रेरणासँ मानवजीवनमे एक सामूहिक घटनाक्रम बनैत अछि, जकरा इतिहास कहल जाइछ। तेँ, हम तँ कहब, इतिहासक प्रमुख नायक साहित्यसेविए लोकनि होइत छथि। साहित्यसेवीक अनेक रूप अछि—कवि, उपन्यासकार, कथाकार, निबन्धकार, पत्रकार आदि। क्यो-क्यो साहित्यक अतिरिक्त राजनीति दिस सेहो उन्मुख होइत छथि। वर्त्तमान कालक अग्रणी लेखक आचार्य श्रीसुमनजी एहने विशिष्ट लेखक छथि, जनिकामे उक्त सभ गुण पाओल जाइछ। डॉ० अमरनाथझा जाहि गौरवक संग कहने छलाह जे हिन्दी हुनक राष्ट्रभाषा थिकनि आ मैथिली मातृभाषा थिकनि, ताही गौरवक संग सुमनजी सेहो कहैत छथि।

मिथिलाक ई साहित्यमनीषी अपनाकेँ आर्थिक विपन्नतामे दय मातृ-भाषाक उत्थानलेल मासिक ओ दैनिक 'स्वदेश' चलौलनि, किन्तु मिथिलांचलक दुर्भाग्य जे ओ चलि नहि सकल। प्रथम मैथिली दैनिक पत्रक अधिष्ठाता यैह थिकाह।

ई निरन्तर साहित्यसेवामे निरत रहैत छथि। एखनहुँ चौरासी वर्षक अवस्थहुमे ई निर्लिप्त भावेँ लिखितहिँ रहैत छथि। हिनक कविता मानव-हृदयकेँ स्पर्श करैत अछि। ओहिमे मौलिकता ओ चमत्कार रहैत छैक। कथ्यकेँ स्पष्ट करबाक लेल सटीक उक्ति रहैत छैक। पत्रकारिताक क्षेत्रमे सेहो हिनक सेवा चिरस्मरणीय रहत। मैथिली दैनिक पत्रक ई जनक थिकाह।

संस्कृतक सेहो ई उद्भट विद्वान छथि। वाल्मीकि रामायणक आधारपर एक विलक्षण राजशास्त्रक ई निर्माण कयने छथि, जे हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद

सहित साहित्य अकादेमी दिल्ली प्रकाशित करत। जेहन सिद्धहस्त ई मौलिक लेखनमे छथि, तेहने दक्ष छथि अनुवादोमे। संस्कृत आ बंगलाक कतोक कृतिक ई मैथिली अनुवाद प्रस्तुत कयने छथि।

हिनक सम्पर्कक परिणाम थिक जे हमरा द्वारा एक लघु मैथिली शब्द-कोशक सम्पादन भऽ सकल। इच्छा तँ पहिनहुँ सँ छल, मुदा कार्य दिस प्रवृत्ति नहि होइत छल। हिनक प्रेरणा उत्साह देलक आ एक चतुर्भाषिक लघु कोश 'संक्षिप्त शब्दभारती', जाहिमे मैथिलीक समानान्तर संस्कृत, हिन्दी आ अंग्रेजीक शब्द देल छैक, प्रकाशित करबामे समर्थ भेलहुँ। ओकर गौरवकेँ हिनक भूमिका बढ़ौने अछि।

एहि मनीषीक साहित्य आ पत्रकारिताक क्षेत्रमे जे सेवा अछि, तकर उपकारसँ मिथिलावासी मुक्त नहि भऽ सकैत अछि। देहातक बैलगाड़ीक लीक जेना नहि मेटाइत छैक, तहिना श्री सुमनजीक मैथिली-सेवाक लीक साहित्य क्षेत्रमे अक्षुण्ण रहत। एहि मौन साहित्यमनीषीक प्रति हम अपन कृतज्ञता प्रकट करैत छी।

Scanned by CamScanner

रचना-रस

सुरभारतीक साधक आचार्य श्रीसुमनजी

आचार्य डॉ० श्रीजयमन्तमिश्र

आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' एक विशिष्ट साहित्यकारक रूपमे देशभरिमे सुविश्रुत छथि। विशाल व्यक्तित्व एवं कृतित्वक धनी ई महामनीषी जेहने यशस्वी महाकवि तेहने निष्पक्ष आलोचक, जेहने निबन्धकार तेहने व्याख्याकार, जेहने उपन्यासकार तेहने कथाकार। हिनक कोन रूप पैघ आ कोन रूप छोट ई कहब कठिन। जेना प्रवीण वीणावादक अपन अभ्यास-कौशलसँ सातो स्वरकेँ मुखरित करैत अछि, तहिना हिनक सारस्वत साधनासँ विविध साहित्यिक विधा प्रस्फुटित भेल अछि।

आचार्य सुमनजी मैथिली-क्षेत्रक भीष्मपितामह रूपमे सुविख्यात छथि; किन्तु हिनक सुरभारतीक सेवासँ सब सुपरिचित नहि छथि, अतः हिनक संस्कृत सेवाक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करब समुचित।

आचार्य सुमनजी मूलतः संस्कृतक मर्मज्ञ विद्वान् छथि, अतः प्रारम्भहिसँ ई संस्कृतमे रचना करैत रहलाह अछि। जखन ई आचार्यक विद्यार्थी छलाह तखनहि १९३५ ई०मे "काव्यदीपिका" नामक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थक संस्कृतमे 'स्नेहवर्षिणी' शीर्षक सँ व्याख्या कयने छलाह। जहिना स्नेह-(तेल) सँ संवलित भय दीपिका प्रकाश दैत छैक, तहिना स्नेहवर्षिणी व्याख्या सँ संवलित "काव्य-दीपिका" काव्यशास्त्रीय तत्त्वकेँ प्रकाशित करैत अछि। वस्तुतः अन्वर्थनामा ई व्याख्या साहित्यशास्त्रमे प्रवेश कयनिहार व्यक्तिकेँ अनायास काव्यतत्त्वक समुचित ज्ञान करबैत अछि। एहि भावक अभिव्यक्ति व्याख्याकार श्रीसुमनजीक निम्नोक्त संस्कृत पद्यमे द्रष्टव्य—

साहित्य-सद्म विशतामादेयां काव्यदीपिकाम्।
उद्दिदीपयिषो !! स्नेहैश्छात्रवर्गः प्रसीदतु॥

अन्हार घरमे प्रवेशकर्त्ताके दीप आवश्यक होइत छैक। किन्तु दीप तँ तखने प्रकाश दैत छैक जखन ओहिमे स्नेह—तेल—रहैत छैक। जहिना स्नेहपूर्ण दीपसँ प्रयोजन सिद्ध होइत छैक, तहिना साहित्यरूप सदनमे प्रवेशकर्ता छात्र लोकनि एहि 'स्नेहवर्षिणी'क सहयोगे काव्यदीपिकाक प्रकाशमे अनायास प्रवेश कय प्रसन्न होयताह।

एहि स्नेहवर्षिणी टीकाक निम्नोक्त मङ्गलश्लोकमे आचार्य सुमनजीक विशिष्ट संस्कृत रचनाक कौशल देखल जासकैत अछि —

काञ्चन विद्युल्लेखां नवनीरद-निकष-संसक्ताम्।
उत्पश्यतो मुरारेर्निश्वासः सारयेन्मेघम्॥

नूतन श्याम-घनपर, कसौटीपर निखरल सुवर्ण-रेखा जकाँ, छिटकल कनकाभ विद्युल्लेखाके देखैत मुरारि श्रीकृष्णक निश्वास, आह्लादिनी श्रीराधाक स्मरणसँ, तेज भय जाइत छनि। निश्वास-पवनक वेगसँ श्याम-घनक अपसारण भय जाइत अछि। (सात्त्विक ओ संचारी भावक उद्रेकसँ प्रमुदित) श्रीकृष्णसँ कविक प्रार्थना अछि जे जहिना ई निश्वास मेघके हटबैत अछि तहिना ई (निश्वास) हमर (मेऽघ=मे+अघ=मेऽघः) दुरितक अपसारक हो।

एहि मङ्गलश्लोकमे अन्तर्निहित भाव ई अछि—श्रीकृष्णक श्यामल अङ्गपर विद्युल्लेखा श्रीराधाक रूप, कसौटीपर, सुवर्ण रेखा जकाँ, निखरि रहल अछि। एहि मधुराश्लेषसँ श्रीकृष्णक निश्वास तीव्र भय जाइत अछि जे अभिसारक कारण बनैत अछि। आनन्द विभोर दातासँ कयल गेल याचना जेना पूर्ण सफल होइत अछि, तहिना प्रमुदित श्रीमुरारि कृष्णसँ कवि अपन दुरितके दूर करबाक याचना करैत छथि। एहि छोट सनक श्लोकमे शब्दालंकार, अर्थालंकार, गुण, रस आदि भरल अछि।

आचार्य सुमनजीक संस्कृतपद्य-रचनामे जहिना कवि-कर्म-कौशल देखल जाइत अछि तहिना गद्य-रचनामे हिनक चातुरी द्रष्टव्य—

"भगवन्! निधेहि विलपतामस्माकं तत् सूनूनां विनये मनः। नीरदो भवन्नवतर संसारम्, सम्भर शुष्यज्जीवनां सुरसरस्वतीम्। प्रविश रविमण्डले, समुद्भावय सङ्कुचद्दलां—सुरभारती-सरोजिनीम्!!

भगवन् ! विलाप करैत सुरभारतीक सन्तति हमरा लोकनिके नम्र निवेदन सुनू । जीवन-दानक हेतु संसारमे अवतार लियऽ । सुरभारतीक शुष्क जीवनके सरस करू । रविमण्डलमे प्रवेश कय सँकुचैत संस्कृत भारती रूप कमलिनीकें विकसित करू ।

उपर्युक्त गद्यमे जौं बाणभट्टक शैली देखल तँ निम्नोक्त गद्यमे दण्डीक अपूर्व शैली देखू —

"देव ! पुनरेकधा वसन्तस्य ते पदार्पणेन चिरं वहतु दक्षिणोवायुः ! उल्लसिता भवतु गीर्वाण-वाणी-लता ! विकसन्तु काव्य-कुसुमानि ! कूजन्तु कवि-कोकिलाः ! गुञ्जन्तु मञ्जु सहृदय-मिलिन्द-पुञ्जाः ! वर्षन्तु तत्त्वमकरन्दानि ! नन्दन्तुच चिराय वसन्तागमन-प्रतीक्षमाणनयनाः संस्कृत प्रणयिनोजनाः !!"

कविक ईश्वरसँ प्रार्थना अछि—देव ! संस्कृतोद्यानमे पुनः एक बेर वसन्त रूपमे अहाँक पदार्पणसँ निरन्तर दक्षिणानिल बहओ । सुरभारती-लता हरित-भरित हो । काव्यकुसुम विकसित हो । कवि-कोकिल केर कूजन हो । सहृदय रूपी भ्रमर-समूहक मनोहर गुञ्जन हो । तात्त्विक पुष्प-रसक सुवृष्टि हो । चिरकालसँ वसन्तागमनक प्रतीक्षा करैत संस्कृतानुरागीजन प्रसन्न होथु ।

कहबी छैक—'प्रातर्दिनं सूच्यते' प्रातः काले दिनकें सूचित करैत अछि । श्रीसुमनजीक छात्र-जीवनेमे हिनक विशिष्ट प्रतिभाक प्रकाश होमय लागल । हिनक छिटपुट संस्कृतरचनाक प्रशंसा विवेकी सुधी समाजमे पसरल ।

१९४८ ई० मे प्राच्यविद्या सम्मेलनक अधिवेशन दरभंगामे महाराजाधिराज डॉ० सर कामेश्वरसिंहक संरक्षकत्वमे आयोजित भेल छल, जाहिमे समस्त भारतक विशिष्ट विद्वान लोकनि सम्मिलित भेल छलाह । सम्मेलनक समापन-समारोहमे आचार्य सुमनजी द्वारा विरचित मिथिलाक प्रसिद्ध समदाउनि रागमे निबद्ध सुललित रागलयाश्रित गीतकें सूनि समवेत सुधीजन साश्रुनयन गद्गद-स्वरें गीतकारक मुक्तकण्ठें प्रशंसा कयने छलाह ।

२४-३-१९५५ई०मे राष्ट्रपति देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद दरभंगा आयल छलाह । महाराजाधिराज हुनक पद्यमय संस्कृतमे अभिनन्दन कयने छलथिन । अभिनन्दन लिखबाक भार अनेको व्यक्तिके देल गेल छलनि । निर्णायक मण्डली आचार्य

श्रीसुमनजी द्वारा विरचित अभिनन्दनकेँ सर्वोत्कृष्ट घोषित कयलक। महाराजाधिराज श्रीसुमनजीकेँ एतदर्थ विशिष्ट पुरस्कारसँ सम्मानित कयने छलथिन। एहिसँ श्रीसुमनजी संस्कृत समाजमे एक विशिष्ट संस्कृत रचनाकारक रूपमे प्रख्यात भेलाह। एहि विशिष्ट रचनाक किछु नमूना द्रष्टव्य--

हिमाद्रि-कलितोष्णीषो गङ्गायज्ञोपवीतकः ।
विन्ध्यमेखलकोऽव्याद्वो वैदिको भारतद्विजः ।।

हिमगिरिसँ जनिक शिर आवेष्टित अछि, गङ्गा जनिक यज्ञोपवीत छथि, विन्ध्य जनिक मेखला छथि ओ वैदिक भारत रूप द्विज अपनेक (देशरत्न राष्ट्रपतिक) रक्षा करथु। राष्ट्रपतिक मङ्गलकामनामे एहिसँ उत्कृष्ट भावना की भऽ सकैत अछि ?

श्रेयः प्रेयः समेतं, हितमपि च मनोहारि, सत्यं प्रियं वा,
धीः श्रीर्वा नैक संस्था, विनति रधिकृति ज्ञानि मर्म क्व कर्म ।
वाच्यं प्राच्यं कवीनां प्रचरितमचिरं नूनमन्यून भावं,
सामञ्जस्यं गुणानां त्वयि निपुण मयि प्रेक्ष्यप्रक्षीणमास्ताम् ।।

कवि लोकनिमे पुरान एक प्रचलित कथन छनि जे सांसारिक प्रेय आ पारमार्थिक श्रेय दूनूक एकत्र समन्वय, हित एवं मनोहर वचन, सत्य एवं प्रिय कथन, सरस्वती आ लक्ष्मीक सहवास, विनय तथा अधिकार, ज्ञान ओ कर्म ई सब एकसङ्ग दुर्लभ; किन्तु अपनेमे एहि समस्त गुणक एकत्र सामञ्जस्य नीक जकाँ देखि ई उपर्युक्त प्राचीन कथन असंगत भऽ गेल अछि।

देशरत्न राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसादक प्रसादेँ जीरादेई सप्तपुरी रूप भऽ गेल अछि। श्रीसुमनजीक शब्दमे ई चमत्कार देखू —

पुरैऽ'रयोध्या' 'मथुरा' प्रकृत्या
'शैवी' शुभ-'द्वारवती' 'विशाला'।
'काञ्ची'व दाक्षिण्यमयी नु 'माया'
"जीरादयी" सप्तपुरी प्रसादात् ।।

१९६३ ई०मे बड़ौदाक महाराजाधिराज फतेह सिंह गायकवाड महोदयक अभिनन्दन दरभंगामे विद्वन्मण्डली द्वारा कयल गेल छल। देववाणीमे एहि

उत्कृष्ट अभिनन्दनक रचना आचार्य सुमनजी कयने छलाह। एहू रचनाक एक नमूना द्रष्टव्य —

आविर्भूता हिमाद्रेः सुरसरि दनुगा तीरभुक्ती भ्रमन्ती,
सत्प्रीत्या श्रीमहेशाङ्गन धरणि-रजोराशि मुल्लासयन्ती।
आप्तानाप्लावयन्ती शिशिर-रस-भरै रन्नपूर्णा जनानां,
नित्यंपायादपाया दिह नृपतिवरं पार्वती वाग्वती त्वाम्॥

एहि आशीर्वादात्मक पद्यमे पर्वतराज हिमालयसँ आविर्भूत देवी पार्वती तथा नदी वाग्वती दुनूक एक संग श्लिष्ट शब्दक द्वारा अपूर्व वर्णन कयल गेल अछि, जाहिसँ उत्कृष्ट कवि-कर्म-कौशल अभिव्यक्त होइत अछि। भाव ई अछि—

हिमालयसँ गङ्गा पहिने प्रकट भेलीह। वाग्वती हुनक पाछु पकड़लनि। ओ आगू बढ़ि तिरहुतिमे भ्रमण करैत महाराज श्रीमहेशक राज्यभूमिकेँ प्रेम-पूर्वक उर्वर बनबैत शीतकालीन सरस अन्नसँ लोकक हेतु जे अन्नपूर्णा बनलीह ओ वाग्वती तथा गङ्गाक अनुगामिनी हिमगिरिनन्दिनी जे भगवान् शंकरक परिसरकेँ उल्लसित, आप्तजनकेँ आनन्दित तथा अन्नपूर्णाक रूपेँ लोककेँ अन्न-रससँ परिपूर्ण करैत छथि ओ पार्वती निरन्तर विघ्नबाधासँ महाराजाधिराजक रक्षा करथि।

'आचार्य डॉ० जयमन्तमिश्र अभिनन्दन ग्रन्थ'मे प्रकाशित आचार्य सुमनजीक पद्य-प्रसून-सौरभक आनन्द लेल जाय—

प्राचीमार्षीं च वाणीं श्रुतिमतमतयः श्रेयसे संश्रयन्ते,
अर्वाचीं चापिवाचं कतिचन कृतिनः प्रेयसे प्रेरयन्ते।
श्रेयः प्रेयः प्रयुक्ते यदि चन भवतः पूर्णता प्राणिनां किम्
द्वाभ्यामाभ्यां विधाभ्यां तवखलु रसना लेखनी स्तः कृतार्थे॥

श्रुति, स्मृतिक अनुसर्ता लोकनि श्रेय-मुक्तिक हेतु प्राचीन आर्ष संस्कृत वाणीक सेवन करैत छथि। कतेको विद्वज्जन प्रेय-सुखक हेतु नवीन भाषाक प्रयोगेकेँ इष्ट मानैत छथि, किन्तु श्रेय ओ प्रेयक हेतु दुनू भाषाक सहप्रयोगेमे

मनुष्यक पूर्णता छैक एहि बातके प्राचीन ओ अर्वाचीन दूनू भाषाक प्रयोगसँ अपनेक वाणी तथा लेखनी—सिद्ध कऽ रहल अछि ।

साहित्य अकादेमी, दिल्लीसँ एक संस्कृत लघुकथा संग्रह प्रकाशित भऽ रहल अछि । एहि संग्रहमे आचार्य सुमनजीक एक संस्कृत लघुकथा छनि—'सर्वसहा' । एहि कथासँ सिद्ध होइत अछि जे श्रीसुमनजी सुललित पद्य ओ अनवद्य गद्य दूनूक रचनामे सिद्धहस्त छथि । मनोहर भावकेँ सुन्दर शब्दार्थ कलेवरमे रूपायित करबाक कलामे पूर्ण कुशल छथि ।

आचार्य श्रीसुमनजीक अपूर्व कल्पनाशक्तिक ज्वलन्त उदारहण अछि हिनक 'प्राचेतस राजशास्त्र' । प्राचेतस (प्रचेताक दशम सन्तति) महर्षि वाल्मीकिक आदिकाव्य रामायणसँ संकलित विषयक आधारपर एहि विशिष्ट राजशास्त्रक रचना कयल गेल अछि । एकर विशेषता ई अछि जे एहिमे पद्य वा पद्यांश सबटा वाल्मीकिरामायणसँ संगृहीत अछि । प्रतिपाद्य विषयानुकूल संग्रह रामायणक सातो काण्डसँ कयल गेल अछि । एहिसँ सुमनजीक वाल्मीकिरामायणक गम्भीर अध्ययन आ गवेषणक वैशिष्ट्य देखबामे अबैत अछि । एहिमे एको पद्य हिनक अपन नहि होइतो संकलित रूपमे सबटा हिनक अपन अछि । ई रचना-चातुरी श्रीसुमनजीक कल्पनाक अपूर्व चमत्कार थिक ।

'प्राचेतस राजशास्त्र'से राज्यकाण्ड, व्यवस्थाकाण्ड, नयाङ्गकाण्ड, युद्धकाण्ड, शासनानुशासनकाण्ड, जन-जनपदकाण्ड तथा कर्मकाण्ड एहि रूपेँ सात काण्ड अछि, जाहिमे तत्तत् काण्ड सम्बन्धी अपेक्षित सब विषय-वस्तुक सविस्तर वर्णन अछि । एहिसँ धार्मिक ओ सांस्कृतिक महत्त्वक अतिरिक्त राजनीति तथा दण्डनीतिक दृष्टिएँ वाल्मीकिरामायणक प्रासङ्गिकता सिद्ध होइत अछि ।

एहि राजशास्त्रमे राजा ओ शासकक गुणदोष, चक्रवर्तिराज्य, जनपदराज्य, एकच्छत्र राज्य, संघीय राज्य, प्रजातन्त्रीयराज्य, शत्रु-मित्र-तटस्थराज्य, राज्याङ्ग, दुर्ग, व्यूह आदिक रचना, सचिव, मन्त्री, दण्डाधिकारी, न्यायाधिकारी, मन्त्रि-परिषद, राजदूत, गुप्तचर, सन्धि-विग्रह-यान-आसन-द्वैधी-भाव-संश्रयरूप षाड्गुण्य-प्रयोग, साम-दाम-दण्ड-भेद रूप उपाय प्रयोग, सैन्यसंगठन, युद्धविधान, अस्त्र-शस्त्र, समशीतोष्ण विमान, अणु-अस्त्र-प्रयोग, अनुशासन, मानवाधिकार, सामाजिक व्यवस्था, धर्म-कर्म आदिक सविस्तर वर्णन भेल अछि ।

ग्रन्थक आरम्भमे मङ्गलाचरण, ग्रन्थक उद्देश्य आदि रामायणेक आधारपर निर्दिष्ट अछि। एहिमे कतहु-कतहु अपेक्षित पाठभेद कयल गेल अछि। द्रष्टव्य 'राजशास्त्र'क मङ्गलाचरण—

आचार्या गुरवो वृद्धा वृषा[1] वा पर्युपासिताः।
सारं यद् राजशास्त्राणामनुजीव्यं हि[2] गृह्यते ॥
(युद्धकाण्ड २९, ६)

आचार्य, गुरु, वृद्ध तथा धर्मक उपासना आवश्यक, कारण राजशास्त्रक सारतत्त्व मूल हिनकहिसँ प्राप्त होइत अछि। प्राचेतसराजशास्त्रक प्रयोजनमे कहल गेल अछि—

धर्म्यं यशस्य मायुष्यं राज्ञाँच विजयावहम्।
राजशास्त्र[3] मिदं चार्षं पुरा वाल्मीकिना कृतम् ॥
(तत्रैव १२८, १०७)

महर्षि वाल्मीकि विरचित एहि राजशास्त्रक परिशीलनसँ धर्म, यश, आयु, विजय आदि प्राप्त होइत छैक। एहि प्रकारेँ विषय, सम्बन्ध, अधिकारीक निरूपण कऽ प्रतिपाद्य विषयक निर्देश भेल अछि।

आचार्य श्रीसुमनजीक समस्त संस्कृत-रचनाक समुल्लेख एहि लघु परिचयात्मक निबन्धमे संभव नहि। ई दिग्दर्शन मात्र थिक।

---

[1],[2],[3] पाठ परिवर्तित थिक।

श्रीसुमनजीक रचनाकौशल

डा० श्रीशैलेन्द्रमोहनझा

श्रीसुरेन्द्रझा'सुमन'क काव्यक सभसँ प्रेरक शक्ति भारतीय संस्कृतिक प्रति अटूट श्रद्धा-भाव थिकनि। फलतः भारतीय दर्शन, धर्म ओ जीवन हिनक रचनाक महत्त्वपूर्ण उपादान थिकनि। संस्कृत साहित्यक माध्यमे हिनका प्राचीन शास्त्र एवं दर्शन धरि प्रवेश छन्हि और एहि प्राचीन सम्पदासँ मातृभाषाक साहित्यकेँ समृद्ध कयलनि अछि। अतः हिनक कृतिक वस्तु विन्यासमे सामान्यतः भारतीय संस्कृतिक दिव्य दर्शन होइछ। आदर्शक गरिमासँ अनुप्राणित हिनक कवि प्रतिभा वर्त्तमानहुक चिन्तनमे, ओहि अतीतसँ आलोक ग्रहण करैत अछि। तेँ, हिनक कोनो रचना हो, ओहिमे पौराणिक प्रवाद, दार्शनिक तथ्य एवं प्राचीन कविप्रसिद्धिक प्रयोग अनायासे प्राप्त होइछ। एहिसँ निस्सदेह कवितामे अर्थ-गौरवक समावेश होइछ। परन्तु एतेक होइतहुँ प्रत्येक कविता अपन मौलिकतासँ दीप्त अछि। वस्तुतः जेना अंग्रेजी साहित्यक 'क्लासिकल राइटर' अपन आदर्श 'होमर' एवं 'वर्जिल'क साहित्यकेँ बनौलनि तथा 'अरस्तू'क विचारधाराकेँ प्रतिपाद्य सिद्धान्त बुझलनि, तहिना 'सुमन'जी संस्कृत साहित्यक आदर्शकेँ अपन रचनामे प्रश्रय नहि देलनि अछि। ओ संस्कृतकेँ गला कय मैथिलीक शृंगार करैत छथि, तथापि ओहि बदलल रूपमे युगचेतना, प्रगतिवाद आ क्रांतिकारी विचारधाराक प्रतिपादन भेल अछि। लाह, लहठी बनि प्राचीन परम्पराक पालनमे उपयुक्त अछि आ वैह लाह, ग्रामोफोनक रेकार्ड बनि नवीन समाज परम्पराकेँ आगू बढ़बैछ। आत्मा वैह, परन्तु वस्तुक तत्त्वबोध बदलल। 'सुमन'जीक रचनाक प्रसंग यैह देखब—उदाहरणार्थ, प्रतिपदामे संगृहीत हिनक 'हलधर' शीर्षक कविताकेँ देखि सकैत छी जतय ई वर्त्तमान युगक

हरबाहक प्रति अपन भाव-निवेदनमे ओकरा त्रेताक हलधर जनक एवं द्वापरक हलधर बलरामसँ श्रेष्ठ प्रमाणित करैत छथि। बलरामसँ तुलना करैत ओ कहैत छथि—

नील चीर मण्डित ओ, सहजहिँ अहाँक नीलम कान्ति।
दमन हेतु उठबथि हर ओ, व्रत अहँक अहिंसा-शान्ति॥
यमुना जल कर्षथि कोपेँ, अहँ दयें नहरिसँ पानि।
दुर्योधन संगी ओ, चलइत अहाँ धर्महिक बानि॥

एतय हरबाह ओ बलरामक रूपसमताकेँ प्रदर्शित करबाक संगहिँ वर्त्तमान युगक हलधरकेँ ओकर जन सेवा कार्य श्रेष्ठ कहल गेल अछि। पुनः यमुना जलकेँ चिरबामे हरिवंशक एवं बलराम द्वारा दुर्योधनक पक्ष समर्थनमे महाभारतक प्रसंग, एकरा नव विचार-प्रेरणा एवं अर्थ-गरिमासँ संयुक्त करैत अछि। एही तरहेँ त्रेताक हलधर, जनकसँ वर्त्तमान हरबाहक तुलना करैत लिखैत छथि—

जखन अकाल-ग्रस्त जन, जोतय यज्ञ-बाट, हर लेल।
सीता उपजा आनि अपन वर जनक जगमगा देल॥
काल अकाल नियमसँ चलबी खेत-खेत हर नित्य।
घर-घर अन्नपूर्णा बाँटब धन्य अहँक अछि कृत्य॥
त्रेताकेर हलधर योगक संग भोग कयल निर्वाह।
किन्तु अहँक स्वप्नहु न भोगमे हे योगी हरवाह!

एतहु काल-अकाल नियमसँ हर चलायब, घर-घर अन्नपूर्णा बाँटब योगी-जीवन द्वारा वर्त्तमान युगक हरवाहकेँ जनकसँ श्रेष्ठ प्रमाणित करबाक प्रयास अछि।

एतय प्राचीन साहित्यसँ उपलब्ध प्रसंगकेँ युग-चेतनाक प्रतिपादनमे संयुक्त कयल गेल अछि। ई सुमनजीक कविताक बड़ पैघ विलक्षणता थिक। एतबहि नहि, ई प्राचीन आख्यानकेँ वस्तु रूपमे ग्रहण कय ओकर युगानुरूप व्याख्या कयने छथि। फलतः प्राचीन पौराणिक कथा, व्यंजनाक स्तम्भ बनि, आधुनिक विचार परम्पराक अनुमोदन करैत अछि। हिनक 'कथा-यूथिका'मे

संगृहीत रचना सभक परायणसँ बोध होयत जे युगचेतनाक स्वर कतेक विलक्षण रीतियेँ ओहिसँ ध्वनित-प्रतिध्वनित अछि। जँ खाली काव्यात्मके चमत्कार पर विचार कयल जाय तँ कतहु-कतहु कविकल्पना, प्राचीन कविताकेँ नव भावभूमिपर प्रतिष्ठित कऽ देलक अछि। कविगुरु कालिदासक मेघदूत प्रसिद्ध अछि परन्तु अपन 'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे' (प्रतिपदामे संगृहीत) शीर्षक कवितामे 'सुमन'जी मेघदूतक कथावस्तुक अवलम्बन करितहुँ एकरा सर्वथा नव रूप, नव आकर्षण ओ नवद्युति सँ अलंकृत कयने छथि। मेघदूतक अलका-सुन्दरी जे ओतय विरही यक्षक संवाद-प्रेषणक आधार मात्र छलीह—एतय स्वयं विरहक साकार रूप धय कविक कल्पनालोकमे अवतरित होइत छथि। मेघदूतक जतय अंत होइछ ततयसँ एहि कविताक प्रारंभ बूझक चाही। 'सुमन'जीक कवि यक्ष द्वारा चित्रित अपन प्रेयसीक रूपसँ संतुष्ट होमयबला नहि, ओ स्वयं अलका जाय, ओहि 'मलिन-वदन' 'अलकाक अंगना'क दर्शन करय चाहैछ—

कवि ! चलु अलकाक क्षितिज पट पर रेखा अंकित जत अश्रु-सिक्त

× × × ×

अलकाक सखी छथि द्वार ठाढ़ि बिनु पावस डूबलि नोर बाढ़ि
से अषाढ़क नव मेघ देखि टप टप गलइत छथि कोंढ़ काढ़ि

ई मौलिकता उपर्युक्त कविताक विशेषता अछि। साधारणसँ साधारण विषयकेँ असाधारण रीतिसँ उपस्थित करब हिनक रचना-कौशल थिक। तथापि, हिनक कवित्वक स्रोत प्रधानतः संस्कृतहिक आदर्श मे छनि। यैह विषय हिनक उपमान-प्रयोगक प्रसंग कहल जा सकैछ। उपमान प्रयोगमे कविक कल्पनाशक्तिक बड़ योग रहैछ। "विज्ञान मे जे बुद्धि अछि, दर्शन मे जे दृष्टि अछि सैह कवितामे कल्पना अछि।" कविता द्वारा सौन्दर्य एवं सत्यक सृष्टिक एक मात्र विधायिका कल्पना होइछ। नव-नव कल्पना द्वारा कवि अपन सौन्दर्य-चित्रमे आकर्षण अनबामे सक्षम होइत छथि। 'सुमन'जी लग कल्पनाक अक्षय वैभव छनि जाहिसँ ओ अपन रचनाकेँ सज्जित करैत छथि। एकर श्रेय संस्कृतक काव्यशास्त्रक प्रति हिनक अटूट अनुरागक छैक। तेँ संस्कृत अलंकारशास्त्रसँ प्रेरित कविकल्पनामे जतेक पाण्डित्यक प्रकर्ष भेटैत

अछि ततेक नूतनताक आकर्षण नहि। ई जतेक परम्परागत होइछ ततेक अभिनव नहि। उदाहरणार्थ हिनक 'शरद' शीर्षक कविताक निम्न पंक्ति देखल जा सकैछ—

चरण शतदल, करकमल, मुखचन्द्र रश्मि पसारि।
नयन खंजन चटुल संवर्धित शरद सुकुमारि॥
नील शैवालक शिरोरुह, खचित कमलक फूल।
कुमुद दन्तावलि विशद सरिताक शुभ्र दुकूल॥
उष्म-शिशुता गत, अनागत-शिशिर यौवन-संधि।
जकर कौमार्यक सरस सरसिज दिगन्त सुगन्धि॥

एतय उपमान-चयनमे काव्यरूढ़िक जतेक पालन भेल अछि ततेक नव कल्पनाचित्रक उद्‌घाटनक प्रयास नहि। निस्संदेह एहन रचना अनुभूतिक परिणामे नहि अध्ययनक आग्रहें भेल अछि।

'सुमन'जीक काव्यपर संस्कृत-साहित्यक प्रभावक ई अर्थ नहि जे ओ आधुनिक काव्य-प्रवृत्तिक उपेक्षा करैत छथि। एतेक धरि अवश्य जे ओ संस्कृतक स्थिर बेलाकें छोड़ि आधुनिक प्रवाहमे ओतहि धरि जाइत छथि जतयसँ फीरिकऽ अयबामे कठिनता नहि होइनि। सत्य तँ ई जे 'सुमन'जीक रचनामे प्राचीनताक प्रति सम्मान ओ नवीनताक प्रति स्वागतक भाव भेटत। एहि दृष्टियें गंगा-वर्णनक निम्न स्थल उल्लेखनीय अछि—

अहँ हिम नगपति महाकविक उर-द्रवित निरन्तर।
नित नव-नव हिम भाव सजल कविता चिर सुन्दर॥
ध्वनि रस गतिमय एक एक पद कणसँ सुरसरि।
युग-युगसँ छी दैत अमृत सन्देश विश्वभरि॥
छाया पथक विहारिणी गति अनन्त-निधि गामिनी।
करब भाव उर्वर हमर उर-मरु शीतल वाहिनी॥

एहि पंक्तिमे शब्द-संयोजन एवं अलंकार-सौन्दर्य पूर्णतः संस्कृतक अछि। तथापि गंगाक पुण्यधाराकें हिमालयरूपी महाकविक हृदयप्रदेशसँ निःसृत

काव्यधाराक कल्पना करबामे पूर्ण आधुनिकता छैक। 'सुमन'जीक काव्य-प्रवृत्तिमे प्राचीनता ओ नवीनताक यैह समन्वय दृष्टिगोचर होइछ।

'सुमन'जीक आधुनिकता हिनक भावनाक उद्दीपनमे भेटत। हिनक प्रत्येक रचनामे आधुनिकताक दर्शन होयत। ऊपर 'हलधर' शीर्षक कविताक चर्चा कयल गेल अछि। एहि प्रसंगमे हिनक 'कविताक आह्वान' शीर्षक कविता सेहो उल्लेखनीय अछि। ई कविताक सर्वथा नव भाव-भूमिपर रचित अछि। 'कविता मानव जीवनक अभिव्यक्ति थीक'—एहि सिद्धान्तकेँ 'सुमन'जी अपन एहि कविताक मध्य प्रतिपाद्य विषय बनौलनि अछि। जीवनक दुख दैन्य, आशा-निराशा, नीक–बेजाय सभ तात्त्विक विमर्श एहि रचनामे भेल अछि। हिनका प्रेरणे ततेक ठोस आ जन-जीवनक निकटसँ प्राप्त छनि जे नव शक्तिक चेतना, मानवीय अन्तरात्माकेँ भरि दैछ, जेना—

कृषक श्रमिक केर श्रम जल चुबइत पावन-गंगा नीर।
साग-भात लय ठाढ़ि खेतमे कविता कमला-तीर॥

मिथिलाक ग्राम्य जीवन आ ओकर सफल चित्रणमे कतेक प्राण छैक! 'एलेक्जेन्डर सेलकर्क'केँ निर्जन द्वीपमे जाय समाजक महत्त्वक बोध भेलनि; तखनहि हुनका जन-समुदायक महत्ताक परिज्ञान भेलनि, परंचू 'सुमन'जी अपन भावनाकेँ कमला तीरपर ठाढ़ कय अपनाकेँ जन-जीवनमे भिझराय देलनि। एहि कवितामे एक स्थलपर कोशीक अनन्त जलराशि कविहृदयमे करुणाक संचार करैत छनि तथा ओ अकिंचन विधवाक विपन्न हृदयक हाहाकार बनि कविक कंठसँ विगलित भऽ उठैत अछि—

पति परलोक बसल, घर उजड़ल चिन्तित चित्त अधीर।
मास-मास सँ जकर कमासुत सुत ज्वर गलित शरीर॥
जकर अन्नपूर्णा भसिऐलै कौशिकीक मझधार।
जीवन तट पर एक शब्द सुनइछ जे हाहाकार॥
ओहि अनाथ विधवाक अश्रुहिक सगरो उमड़ल बाढ़ि।
करुण क्रन्दनेँ कविता कनइछ कौशिकीक तट ठाढ़ि॥

जनजीवनसँ स्पन्दित कविताक धार एतऽ सामान्य-प्रयोगक भाषाक सहयोगेँ आरो गतिशील भऽ गेल अछि।

एही तरहेँ 'सुमन'जीक आधुनिकता हिनक प्रगतिशील भावनामे छनि। अर्चनाक गंगावर्णनमे देखब जे ओ देवनदीकेँ लोककल्याणकारी रूपमे 'द्विज अन्त्यज केँ एक घाट' जल पिऔनिहारि हुनक सुधारिका रूपकेँ नहि बिसरैत छथि। 'सुमन'जी गंगाकेँ क्रांतिकारिणी प्रमाणित करैत 'मुक्ति-साम्य-संदेश दात्री' कहैत छथिन। ई संपूर्ण संसारक हेतु आधुनिकतम विचार थिक। पुनः 'प्रतिपदा'क कवि अपन 'हलधर'मे एहि 'धरती-सुत'क गीत गाबि एहि 'हल-तूली'क कलाकारक संवर्द्धना करैत छथि। युग-युगसँ उपेक्षित एवं प्रताड़ित 'धरतीसुत'क स्वस्तिवादमे सुमनजीक वाणी प्रतिध्वनित भऽ उठैत छनि—

धरती-सुत अहींक कवितासँ हरित-भरित संसार।
गढ़ि आखर दश पाँच धन्य कवि कहबी अहाँ गमार॥
जे अणु गढ़ि विध्वस्त करथि जग धन्य हुनक विज्ञान।
कण-कण अविष्कार जीव हित अहँक तिरस्कृत ज्ञान॥

तहिना अपन विजयापर्व (प्रतिपादमे संगृहीत) मे शक्तिक महिमाक वर्णन कऽ देशक वर्त्तमान राजनीतिक स्थितिमे 'प्रेरणा-स्त्रोत' निवेदित करैत छथि—

विच्छेदक कुटिल कैकयिक नीति विफल हो।
ओ भरत मिलापक दृश्य एतय उपगत हो॥
जनता मारुति नेता रामक अनुगत हो।
पुनि राम राज्यमे पंचायतन अमर हो॥

वस्तुतः हिनक रचनामे 'प्राचीन जीर्ण जगतीक बीन' मे 'युग नवीन'क स्वर मुखर अछि, जाहिमे—

टूटल अछि क्षुद्र देश सीमा भूगोल बनल एके सीमा
अछि दिशा संकुचित गति-वेगेँ पुनि काल संतुलित मंत्र बलेँ
परमाणु विभाजित अंश अंश नव सर्जन मूलक ध्वंस ध्वंस

और कविक वाणी 'नव सृष्टिहिक उपहार' लेल 'भैरवी-झंकार' करैत अछि।

कला-पक्ष :—'सुमन'जीक भाषा विषयानुवर्तिनी अछि। जतय ओ कोनो सांस्कृतिक गाथाक उल्लेख करैत छथि अथवा वस्तु प्रतिपादनक उद्देश्य जखन चमत्कार उत्पन्न करब रहैछ ओतय भाषा संस्कृतबहुल रहैछ अन्यथा सामान्य धरातल पर ओ मैथिलीक सरल रूप लय प्रकट होइत अछि। वर्णन-शैलीमे प्राचीनताक पक्षपाती रहने 'सुमन'जी नव-नव छन्दक प्रचुर प्रयोग नहि कय प्राचीने छन्दक अनुसरण कयने छथि। फलस्वरूप कविक रचनामे रसात्मक चमत्कार ओ अलंकारक प्रयोग नीक जकाँ भेटत। शब्दालंकारमे श्लेष हिनका प्रिय छनि जे हिनक पाण्डित्यक निरूपणमे सहायक होइछ। अर्चनामे हिमालय रूपी महाकविक कठ सँ द्रवित कविताक रूपमे जे गंगाक वर्णन कयल गेल अछि ताहिमे श्लेषक चमत्कार द्रष्टव्य अछि। अर्चनाक अनेक पदमे श्लेषक अपूर्व निर्वाह अर्थगत विशिष्टताक समावेश करैत अछि। तहिना अर्थलंकारमे उपमा ओ रूपक हिनक काव्यकेँ ऐश्वर्यशाली बनबैत अछि। अन्यान्यो अलंकार, स्वाभाविक रूपेँ हिनक रचनामे अद्भुत अछि। उक्ति-चमत्कार हिनक रचनामे विशेष महत्त्व रखैत अछि।

जीवित कवेराशयो न वर्णनीयः ?

डॉ० श्रीनवीनचन्द्रमिश्र

'जीवित कवेराशयो न वर्णनीयः' ई उक्ति संस्कृत साहित्यमे प्रसिद्ध अछि, परन्तु तहिआ भाषा-साहित्यक प्रायः नियमित अध्ययन-अध्यापन नहि होइत छल होयतैक, ई हमर धारणा अछि। जीवित अथवा प्रकारान्तरें जीवित भाषासाहित्यक अध्ययनक क्रममे कविक रचनाक साहित्यक किंवा आलोचनात्मक समीक्षा/ प्रशंसा अनिवार्य भऽ जाइत अछि। तखन तँ पाठ्यक्रममे 'जीवित कवे रचना न निर्धारितव्यऽ' सिद्धान्त लागू करय पड़त। ई छल हमर तर्क स्व० आचार्य रमानाथझाक उपर्युक्त उक्तिक उत्तरमे जे ओ हमर प्रथम आलोचा-नात्मक कृति 'प्रतिपदा, एक अध्ययन'क भूमिका लिखबाक प्रसंग कहलनि। ओ प्रसन्न मुद्रामे हँसैत कहलनि जे तर्कमे अहाँ जीति गेलहुँ, लाउ भूमिका लिखि दैत छी। एहि प्रसंगें हम आचार्यकें ईहो स्मरण दिऔलिअनि जे ओ स्वयं श्रीसुमनजीकें 'कविक कवि' कहि हिनक रचनाकें बुझबाक हेतु एक कवि हृदयक आपेक्षिकताकें अनिवार्य मानल अछि।

सुमनजीक प्रति हमर सहजहिं आकर्षण भेल प्रवेशिका-कक्षामे हिनक गंगा-स्तुति (गंगा-तरंगणी) कें पढ़ला सन्ताँ। तहिआ हम काव्यक अभिधा, लक्षणा ओ व्यजनावृत्तिसँ परिचित नहि छलहुँ। तें एहि प्रश्नक उत्तर नहि दऽ सकैत रही जे ओ रचना हमरा उत्कृष्ट किएक बुझायल। पश्चात् आबि स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षामे क्रमशः प्रतिपदा ओ साओन-भादवक आलोचनात्मक अध्ययन करबाक अवसर भेटल। गुरुवर प्रो० जयदेवमिश्र बड़ मनोयोगसँ प्रतिपदा ओ साओन-भादवक अर्थ, व्याख्या ओ समीक्षा लिखबाक ढंग बुझौलनि। तहिएसँ समीक्षा लिखबाक दुःसाहसिक प्रवृत्ति जन्म लेलक। एही लुतुकक क्रममे

मैथिलीक प्राध्यापक भेलाक पश्चात् सर्वप्रथम प्रयास हम सुमनजीक 'प्रतिपदा' पर कयल, किएक तँ हिनके रचना हमरा किशोरावस्थामे काव्यानन्दक रससँ अभिषिक्त कयने छल।

आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'क साहित्यिक उपलब्धिक चर्चा करबा काल जे हुनक पुष्कल कृति सभ समक्ष अछि से देखि निर्णय करब कनेक दुष्कर प्रतीत भऽ रहल अछि जे 'कस्मै देवाय हविषा विधेम'—कोन रचनाक चर्चा करू आ ककर नहि। तेँ किछु बीछि-बीछि कऽ अपन रुचिक अनुकूल थोड़ेक रचनाक अंशक उद्धरण हम एहि निबन्धमे करब।

मैथिली कविताक प्रति सुमनजीक जे आकर्षण रहल तकर फलस्वरूप हमरालोकनिक समक्ष प्रतिपदा, साओन-भादव, अर्चना, सनेस, पयस्विनी, कवि-नवतिका, प्रकीर्णशतक, अंकावली, अन्तर्नाद, श्रृंगारतिलक, अन्योक्तिका, अनु-गीतांजलि, मुक्तावली आदि दू दर्जनसँ अधिक रचना अछि जाहि द्वारा मैथिली साहित्य पूर्ण संभृत भेल। खण्डकाव्यक रूपमे उत्तरा देलनि आ दत्तव-वती सदृश अनुपम महाकाव्य। कतेको निबंध ओ ग्रन्थ सभक भूमिकामे हिनक भावपूर्ण गद्यक दर्शन होइछ। हिनक रचनामे सरसता, भाव-सौष्ठव ओ भाषाक जे कमनीयता अछि से अन्यत्र भेटब दुर्लभ। हिनकामे कथा लिखबाक प्रवृत्ति सेहो अछि। संस्कृत, हिन्दी ओ मैथिली तीनू भाषा साहित्यमे हिनका समान अधिकार छनि आ तीनूकेँ अपन रचनाक वरदान देलनि अछि। संस्कृतमे अपन कोमलकान्त पदावलीक लेल ई प्रसिद्ध छथि, हिन्दीमे एकसँ एक गंभीर विषयक निबन्ध ओ सरस कविता प्रकाशित छनि। मुदा सम्प्रति विशेषतः मातृभाषा-साहित्यक भण्डारकेँ समृद्ध बनयबामे संलग्न छथि। हिनक काव्यप्रतिभाक प्रसंगेँ मैथिलीक मूर्धन्य समीक्षक आचार्य रमानाथझाक ई उक्ति द्रष्टव्य अछि—"श्री सुरेन्द्र झा सुमन मैथिलीक बड़ यशस्वी कवि ओ प्रशस्त लेखक छथि। संस्कृत साहित्यक मार्मिक विद्वान, हिनक कवितामे सभटा गुण प्रचुर मात्रामे भेटैत अछि। वस्तुतः कल्पनाक प्रौढ़ता, दृढ़ता ओ गम्भीरताक हेतु ई बेजोड़ छथि। ओ अपन 'साओन-भादव'मे तकरा चमत्कारक अतिशय कऽ देल अछि। रचना होइछ हिनक भावात्मक ओ संस्कृत बहुल · परन्तु ई

कविक कवि थिकाह आ तें हिनक कविताक रसास्वादनक हेतु एक गोट कविक हृदय चाही···परन्तु कवित्त्व-प्रतिभाक परिपक्वता, उक्तिक प्रौढ़ता, कल्पनाक दृढ़ता एवं विच्छित्तिक विन्यासमे ई जेहन श्लाघनीय छथि तेहन विरल कवि भेटताह। भर्तृहरिक सुप्रसिद्ध उक्ति ''विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः'' तकर उत्तर अपन गंगा-स्तुतिमे जेहन ई देल अछि तेहन एहि हजार डेढ़ हजार वर्षमे केओ कवि नहि देने छलाह।'' गङ्गास्तुतिक ई अंश द्रष्टव्य थिक :—

शतमुख विनिपातक कथा
कहओ न खेदक लेश अछि
जगत जीवहित साधना
एक मात्र उद्देश्य अछि।

हिनक कवित्त्वक स्रोत एखनहु संस्कृतहिक आदर्शमे छनि, आ' तें जतय कवि भाव-पक्षमे आधुनिक छथि ओतहि वर्णन-पक्षमे प्राचीनतावादी भऽ जाइत छथि। एकर कारण अछि जे सुमनजी विषयवस्तुक चयन करबा काल संस्कृत साहित्यक भण्डारसँ नीक-नीक रत्नक चयन करैत छथि। संस्कृत साहित्यक ज्ञाता होयबाक कारणे ओहि साहित्यक विभिन्न अंगक ज्ञान हुनका होयब तँ स्वाभाविके छनि संगहि आधुनिक विचार-धारासँ सेहो पूर्णतः प्रभावित छथि। 'कविताक आह्वान' शीर्षक कवितामे कालिदासक 'शकुन्तला आश्रम केर शोभा'क चित्र उपस्थित करैत विद्यापतिक 'हमर दुखक नहि ओर'क चर्चा करैत छथि संगहि १९४७क शरणार्थी समस्या 'पूर्वाञ्चलसँ सुन्दर बनक विहंगम उड़ि-उड़ि आबि' एवं भारत-पाक विभाजनक मार्मिक व्यथा-कथा 'सिंधु संगिनी रावी कनइछ खण्डित रसना दाबि'मे अभिव्यक्त भेल अछि।

हमरा जनितें तँ हिनक काव्य-प्रतिभाक विवेचना यदि मात्र अर्चना ओ प्रतिपदाक आधारपर कयल जाय तँ सेहो एक गोट पैघ मतबन्ध भऽ जायत। १९७१ मे ई अपन मुक्तक संग्रह 'पयस्विनी'क हेतु साहित्य अकादमी पुरस्कार द्वारा सम्मानित भेलाह एवं १९८१ मे 'उत्तरा' खण्डकाव्यक हेतु विद्यापति पुरस्कार द्वारा।

हिनक काव्य सौष्ठवक निदर्शनक हेतु हम पयस्विनी, अन्तर्नाद, उत्तरा ओ

अंकावली मात्रमे एक एक उद्धरण प्रस्तुत कय हिनक काव्य-गुणक चर्चा समाप्त करय चाहैत छी। पयस्विनीमे संकलित 'सरिता-वनिता' मुक्तकक ई अंश द्रष्टव्य अछि।

जल प्रवाह नहि बहइछ नोर
कल-कल स्वर नहि हिचकी जोर
तट नहि खसय हृदय हहरैछ
सरिता वनिता विकल कनैछ।
सरिते, बनिते !
जीवन भरि की विश्ववेदनामे
अहँ रहबे कनिते ?

सरिताके एक नव दृष्टिकोणसँ देखि सुमनजी नव-नव प्रसंगोद्भावनक विलक्षण क्षमताक परिचय देलनि अछि। राष्ट्रीय चेतनाक मुक्तक संग्रह अन्तर्नादक नव पुराणः नव इतिहास शीर्षकक ई अंश द्रष्टव्य अछि—

आइ पुनि सुर-असुर संग्रामक नवल इतिहास घटना
सिन्धु मन्थन हित विहित प्रतिनिधि करय नव सृष्टि रचना
पद्म-पद्मक संग गद्य-गदाक घूर्णित गति प्रखर हो
शंखध्वनि सुनि पुनि चक्रचक्रम प्रेरणामय अभय वर हो

देवासुर संग्राम एवं आधुनिक कालमे आयोजित संघर्षक पृष्ठभूमिमे समुद्र मन्थनक स्थानापन्न प्रतिनिधि चुनाव, पद्म-पद्म ओ गद्य-गदाक कयलनि अछि जे अत्यन्त सटीक ओ आवेशपूर्ण भेल अछि। उत्तराक सौन्दर्याङ्कनक प्रसंग कविक ई पंक्तिसभ द्रष्टव्य अछि—

चकित कुरंगी सदृशहि चञ्चल जकर दृगञ्चल।
वयस वसन्त प्रमाण मलय सुरभित उर अञ्चल॥
मदन गणित पञ्चाङ्ग मध्य तिथि सुदि चतुर्दशी।
तारुण्यक पूर्णिमा समीपे उदित शुचि शशी॥

एहि अवतरणमे शब्दक चयन, अलंकार-योजना ओ प्रेषणीयताक गुण बड़ बेजोर भेल अछि। अंकावलीमे अङ्क जे अन्य कविक दृष्टिपथमे अयलो नहि होयतनि, हुनक काव्यानुभूतिके स्पर्श-उद्वेलित नहिए कयने होयतनि सेहो

सुमनजीक भाव-प्रवणता ओ कल्पनाशक्तिसँ अस्पृश्य नहि रहि सकल अछि।

उदित प्रतिपदा द्विपदा मनु जनु त्रिपदा जपिअ निरन्त।
चतुष्पदिक कय गान तान लय पद प्रपंचहुक अन्त॥
छप्पय छन्द सुनाय, सप्त पद मैत्री जगत जुड़ाय।
अष्टमूर्ति पद चढ़बिअ नव-नव पद यश दश दिश जाय।

प्रमुख अङ्क तँ एकसँ दशेधरि अछि। ताहि दशो अङ्कक तिथि, मनुज, गायत्री, चतुष्पदी, पञ्च, छप्पय छन्द, सप्तपद, अष्टमूर्ति (शिव), नव (नवीन) ओ दशो दिशाक चर्चा कय अपन प्रौढ़ कल्पनाशक्ति ओ विच्छित्तिक परिचय देलनि अछि।

सुमनजी गद्यकारक रूपमे सेहो मैथिली साहित्यमे पर्याप्त यश प्राप्त कयने छथि। किछु विद्वान आलोचकक संग हमरो ई विचार अछि जे फुटकर निबन्ध ओ ग्रन्थ सभक भूमिका जे ई लिखलनि अछि तकरा यदि एकठाम कय ओकर विवेचन ओ प्रकाशन कयल जाय तँ ओ मैथिली साहित्यक एक गोट अमूल्य निधि भऽ जायत। हमर लिखल 'अंकीया-नाट—विवेचन'मे एहि प्रकारेँ ओ अपन विशिष्ट सम्मतिमे लिखने छथि :—

"अद्यापि शास्त्रीय चर्चा—अर्चा ओ कला—शिल्पक साधना—प्रसाधना छिट-पुट रूपेँ मुख्य शासनिक नगर क्षेत्रसँ हटल, रूपरञ्जित रणाङ्गणसँ छँटल सुदूर जनपदक ग्रामांचल, गिरि—गह्वर, मठ—मन्दिर ओ टोल-गोलमे सीमित रहि गेल।"

ई गद्य वस्तुतः गद्यकाव्य कहल जा सकैत अछि जाहिमे सुमनजी अंकीया नाटक उद्भव ओ विकास परम्पराक चर्चा कयने छथि।

मात्र एतबे कहि देब पर्याप्त होयत जे मुक्तकोसँ बेसी आकर्षक, मनोहारी ओ रसना रुचिव्यंजक होइछ। हिनक गद्य आ हिनक भाषण यदि सुनबाक अवसर भेटत तँ ओहिमे श्लेषक छटा, कहबाक विलक्षण आवेश ओ प्रेषणीयताक गुण भरल रहैछ जे श्रोताक मनकेँ आवर्जित, आप्यायित कय दैछ।

सुमनजी कवि ओ लेखकक संग पत्रकार सेहो छथि। पत्रकारिता बहुज्ञताक कला थिक, नवीन युगक सम्पर्कमे पत्रकारक पल-पल बितैत छनि। लोक-भावनाक समीक्षा ओ निर्माण हुनक लक्ष्य रहैत छनि। सुमनजीक रचनामे एहि सभ गुणक समावेश भेटैत अछि।

गंगावर्णनक परम्परा : श्रीसुमनजीक भाव-साम्राज्य

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्तं प्रचक्षते ।

मनुस्मृतिक एहि वचनक अनुसार पूबमे बंगोपसागर, पश्चिममे अरब सागर, उत्तरमे हिमालय तथा दक्षिणमे विन्ध्याचल, एहि मध्यक भूभाग आर्यावर्त थिक । आर्य लोकनिक आदिभूमि होयबाक कारणे एहि भूखण्डक नाम आर्यवर्त्त पड़लैक । भूगोलमे एकरा गंगाक सपाट मैदान कहल गेल छैक ।

आर्य जाति संसारमे सबसँ अधिक कृतज्ञ जाति रहल अछि । जड़ हो अथवा चेतन, जीवनयापनमे जकरा ककरोसँ एहि जातिकेँ कोनो प्रकारक सहायता प्राप्त होइत रहलैक तकरा प्रति हृदयमे श्रद्धा, भक्ति ओ कृतज्ञताक भाव संयोगि कऽ रखने रहल अछि । इतिहासकार मानवजातिक विकासक आदिम युगकेँ पाषाण युग कहैत छथि, जाहि युगमे आश्रयक हेतु पर्वतक गुफा आ वन्य जन्तुसँ आत्म-रक्षार्थ मानव प्रस्तरनिर्मित शस्त्रादिक प्रयोग करैत छल आ तहियेसँ पाथर पूज्य बनल रहल अछि । धरती अन्न, फल, मूल, कन्द आदि दैत रहलीह तेँ धरती माता, गायसँ दूध भेटलैक तँ गाय गोमाता, बड़द हर जोति देलकैक तेँ महादेव ।

पीपर एक एहन वृक्ष अछि जकरासँ फूल ओ फल प्राप्तिक कथे नहि, इन्धन पर्यन्तक उपयोगमे आबयवाला नहि, किन्तु थाकल-पियासल पथिकक हेतु आश्रय-स्थल बनबाक कारणे आइओ हिन्दू मात्रक हेतु ई वृक्ष पूज्य मानल जाइत अछि । कहबाक तात्पर्य जे एही प्रकारक भावनासँ अभिभूत रहलाक कारणेँ

हिन्दू मात्र गंगाक प्रति अगाध श्रद्धा ओ भक्ति रखैत आयल अछि। भौगोलिक दृष्टिएँ ई भूखण्ड गंगासँ सबसँ अधिक उपकृत रहल अछि। यमुना, सरयू, कमला, कोसी, गंडक, सोन आदि समस्त छोट ओ पैघ नदीकेँ अपनामे समेटैत-समाहित करैत ई गंगा समुद्रमे जाकऽ विलीन भऽ जाइत छथि। यदि से नहि होइत तँ प्रायः ई सम्पूर्ण भू-भाग सालो भरि जलप्लावित भेल झील बनल रहैत। अतः अन्यान्यो नदीक प्रति मातृभाव रखितो गंगाकेँ सर्वोपरि स्थान देने छनि। गंगाक महिमाक गान ओही दिनसँ एहि ठामक लोक करैत आबि रहल अछि जहिया मानवक कण्ठमे छन्दक रूप सजल, हृदयमे भावनाक लहरि उठल, अन्तकरणमे चेतनाक ज्योति जागल आ ओहि प्रकाशमे मुदित मानव-मन गाबय लागल आ ओही तालपर प्रकृति नाचि उठल तथा पुलकित प्राण आनन्द-विभोर भऽ गेल।

भारतवर्षक प्राचीनतम भाषा संस्कृत आ ताहि संस्कृतक आदिकाव्य रामायण, ताहि आदिकाव्यक प्रणेता वाल्मीकि आ ताहि वाल्मीकिसँ आरम्भ कऽ आइ धरिक युगमे कवि लोकनि गंगाक प्रति अपन श्रद्धा निवेदित करैत, काव्य रचना करैत अयलाह अछि। एही परम्पराक वर्तमान युगक मूर्द्धन्य कवि लोकनिक प्रथम पंक्तिमे परिगणित एक कवि थिकाह आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' जे 'अर्चना' नामक काव्यसंकलनमे 'गंगातरंगिणी' शीर्षक कविताक रचना कयने छथि। एहि कविताक अन्तिम पद थिक—

आदिकविक नहि छन्द, कालिदासक ध्वनि बन्ध न,
द्रविड़ शिशुक नहि कण्ठ, जगन्नाथक न निबन्धन,
विद्यापतिक न स्वर, न लभ्य पद्माकर सौरभ,
जननि ! सुनाओत कोना मुग्ध सुत विनय हतप्रभ।
किन्तु विदित विश्वास ई जननी हृदयाऽवर्जना
जड़ सुत क्रन्दन सुनि यथा तथा न चतुरक कल्पना।

उपर्युक्त पदमे कवि अपन लघुता प्रदर्शित करैत इतिहासक पृष्ठकेँ गौरवान्वित कयनिहार ओहि महाकवि लोकनिक नामोल्लेख कयलनि अछि जे लोकनि गंगाक वर्णन कऽ अपन वाणीक संग अपन लेखनीओकेँ धन्य बना

चुकल छथि। एहि ठाम उपर्युक्त महाकवि लोकनिक पंक्तिक संग 'गंगा तरंगिणी'क पंक्तिक तुलनात्मक विवेचन कऽ सुधी लोकनिकेँ किछु रसास्वादन करयबाक चेष्टा कयल जा रहल अछि। एहि विवेचनसँ जेना विवेच्य कवि अपना प्रयासकेँ जड़ सुत क्रन्दन कहलनि अछि, से हिनक विनम्रता मात्र थिकनि, तत्त्वतः ई पद सब हमरा कनेको झूस नहि प्रतीत होइत अछि। ई सत्य जे ओहि वर्णन सभक चिन्तन-मननसँ कवि बहुत किछु प्रेरणा प्राप्त कयने छथि, परन्तु कतोक ठाम कल्पनामे जाहि नवीन दृष्टिएँ गंगाकेँ देखलनि अछि, से कविक आधुनिक दृष्टिबोधक अतुलनीय उदाहरण सिद्ध होइत अछि।

महर्षि वाल्मीकि गंगाक सामीप्य प्राप्त करबाक अभिलाषा व्यक्त करैत लिखैत छथि—

त्वत्तीरे तरु कोटरान्तर्गतो गंगे ! विहंगोवरं
त्वन्नीरे नरकान्त कारिणि ! वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः।
नैवान्यत्र मदान्ध सिन्धुरघटा संघट्ट घण्टा रणत्-
कारत्रस्त समस्त वैरिवनिता लब्धस्तुतिर्भूपतिः॥

अर्थात् हे नरकान्तकारिणि गंगे ! अहाँक तटवर्ती तरुवरक कोटरमे पक्षी भऽ कऽ रहब नीक थिक। अहाँक जलमे माछ वा काछु भऽ रहब श्रेयस्कर थिक, किन्तु आन ठाम (अहाँ सँ दूर) मदमत्त गजराजक घण्टाध्वनिसँ भयभीत वैरी सभक वनिता द्वारा स्तुत होइत भूपतिओ बनिकऽ रहब श्रेयस्कर नहि। अपिच

उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा
वारीणः स्यां जनन मरण क्लेश दुःखासहिष्णुः।
न त्वन्यत्र प्रविरल रणत्कङ्कण क्वाणमिश्रं
वारस्त्रीभिश्चमर मरुता वीजितो भूमिपालः॥

अर्थात् जन्म मरण जन्य दुःखकेँ सहन करबामे असमर्थ हम अहाँक निकट बड़द, पक्षी, घोड़ा, साप अथवा हाथी आदि किछु होइ, किन्तु अहाँसँ दूर रहि वारांगना द्वारा मन्द झंकारसँ झंकृत कंकणक मधुर ध्वनिक बीच चामर डोलाओल जाइत होइक जकरा तेहन भूमिपालो नहि होइ।

आब द्रविड़ शिशु अर्थात् जगद्गुरु शंकराचार्यक उक्ति देखू—

वरमिह नीरे कमठो मीनः, किवा तीरे शरटः क्षीणः
अथवा श्वपचो मलिनोदीनः तव दूरे नहि नृपति कुलीनः

अर्थात् अहाँक जलमे काछु वा माछ बनि रहब नीक थिक अथवा अहाँक तटपर दुर्बल गिरगिटो बनि रहब अथवा दीन, मलिन चाण्डालो भऽ रहब नीक, किन्तु अहाँसँ दूर रहि कुलीन नृपतिओ होयब नीक नहि थिक।

आब महाकवि कालिदासक उक्तिक अवलोकन कयल जाय। ओ लिखैत छथि—

देवि ! त्वत्पुनांगणे स्थितिजुषां निर्मानिनां ज्ञानिनां
स्वल्पाहार निबद्ध शुद्ध वपुषां तार्ण गृहं श्रेयसे।
नान्यत्र क्षिति मण्डलेश्वर शतैः संरक्षितो भूपतिः
प्रासादो ललना गणैरधिगतो भोगीन्द्र भोगोन्नतः ॥

अर्थात् हे देवि ! अहाँक तट-प्रांगणमे मानापमानसँ दूर ज्ञानी लोकनिक जे तृणकुटी से श्रेयस्कर, किन्तु अहाँसँ दूर शत-शत मण्डलेश्वरसँ रक्षित प्रासादमे रहैत ललना लोकनिसँ सेवित उत्तमोत्तम भोग्य पदार्थ प्राप्त कयनिहार राज-राजेश्वरो होयब सुखद नहि।

पण्डितराज जगन्नाथ एहूसँ कतेको आगाँ बढ़ल छथि। हिनका लोकनि तँ सांसारिके ऐश्वर्यकेँ तुच्छ मानलनि अछि आ पण्डितराज तँ समस्त विशाल राज्यकेँ तृणवत मानि परित्याग कऽ गंगाक तटपर निवास करैत अमृतोसँ अधिक सुस्वादु जल पिउनिहारक जे आनन्द छनि से निर्वाण अर्थात् मोक्ष पदवी पर्यन्तक परिहास करैछ से मानैत छथि। हिनक उक्ति छनि—

अपि प्राज्यं राज्यं तृणमिव परित्यज्य सहसा
विलोलद्वानीरं तव जननि ! तीरं श्रितवताम्
सुधातः स्वादीयः सलिलभर मातृप्ति पिबतां
जनानामानन्दः परिहसति निर्वाण पदवीम्।

एहि क्रममे हमर विच्बेय महाकवि श्रीसुमनजीक गंगातरंगिणीक किछु पदक आस्वादन कयल जाय। उपर्युक्त कवि लोकनि जतय गंगाक जलमे बोहिआइत रहयवाला माछ, काछु वा तटस्थित तरुक कोटरमे पक्षी आदि किछु

होयबाक अभिलाषा व्यक्त कयने छथि ततय ई कहैत छथि—

यदि न हमर हो भाग्य जीव जे जल संचारी
अथवा तटतरु पत्र खसय टुटि अन्तहु वारी
यदि नहि संभव होय तृणक तनु सलिल विलासी
अथवा स्नातक केश लुलित भय स्रोतक वासी,
ओहि पथक हम रेणु कण बनी जाहि पथ पथिक जन
जाथि, तनिक पद लागि कहुँ जाय मिली तट बालु कण।

एहिमे तँ गंगा स्नान करबाक हेतु जाइत पथिकक हृदयमे गंगाक प्रति भक्ति ओ श्रद्धा छनि, ओ पुण्यात्मा थिकाह, एहन पुण्यात्माक पैरहुमे लागि गंगा तटक बालु कणमे मिश्रित होयबाक आकांक्षा व्यक्त भेल अछि, किन्तु एहूसँ बढ़ि जाहि भावनाक अभिव्यक्ति भेल अछि, से निम्नांकित पदमे देखल जाय सकैत अछि—

कण्टकमय तटवास हेतु प्रासादहु तेजब,
छोड़ि अरगजा लेपन गंगा पाँक अङ्जब,
नहि व्यवसायी पोत सागरक वक्ष विहारी,
काठ बनब अछि इष्ट जाह्नवी जल–संचारी,
नहि कुंकुम कश्मीरजा युवति कपोल पराग रुचि
अंग-वंग-मगधक पशुक खुर-रज बनि लहि स्रोत शुचि।

एहिमे पुण्यात्मा पथिकक पैरमे लागि जयबाक स्थिति नहि अछि, अंग, वंग, मगध जाहि बाटेँ गंगा प्रवहमान छथि, ताहि तटक जे पशु अछि, से अपन पियास मेटयबाक हेतु गंगामे प्रवेश करत, कवि ओकरो खुरमे लागि, ओहि स्रोत धरि पहुँचि, अपन जीवनकेँ सार्थक करबाक आकुलता व्यक्त कयने छथि। एहिमे एक विशेषता आरो द्रष्टव्य अछि। एक दिस कश्मीरजा युवतीक कपोलक कोमलताक उपेक्षा आ पशुक खुरक कठोरताक अपेक्षा।

एहि क्रममे एक पद आरो मननीय अछि से थिक—

नहि कस्तूरी तिलक भाल गंगौट लभ्य जत,
स्वर्णक कण अछि तुच्छ, बालु कण हो यदि उपगत,

अमृत-कलश ओंघड़ाय देब गंगाम्बु चुलुक भरि,
पंक अंग यदि संग न चन्दन लेपब उपकरि,
गंगा स्रोतक छाड़निक यदि हो सम्प्रति बिन्दु भरि
चित न चढ़त कथमपि हमर क्षीरक संभृत सिन्धु धरि।

अन्यान्य कवि जतय गंगाक तट ओ प्रवाह एवं गंगाजलक महिमा दर्शौने छथि ततय श्रीसुमनजी बालुकण, पाँक ओ गंगौट आदिकें के कहय गंगाक धारासँ बहरायल जे छाड़नि तकरो समक्ष क्षीरसागरकें तुच्छ कहि, हिनक महत्त्वकें उच्चतम शिखरपर पहुँचा देलनि अछि।

आब दोसर प्रसंगक वैशिष्ट्यपर दृष्टिनिक्षेप कयल जाय। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि—"अभिनवविसवल्ली पादपद्मस्य विष्णोः मदन मथन मौले-र्मालती पुष्पमाला", जगद्गुरु शंकराचार्य—"आदावादि पितामहस्य निगम व्यापार पात्रे जलं, पश्चात्पन्नग शायिनो भगवतः पादोदकं पावनम्", पण्डितराज जगन्नाथ—'समुत्पत्तिः पद्मारमण पदपद्मामल नखात्, मैथिल कोकिल महाकवि विद्यापति–'हरि-पद-कमल गलित मधु सोदर' तथा 'ब्रह्म कमण्डलु वाससुवासिनि' एवं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र–'श्रीहरिपदनख चन्द्रकान्तमणि द्रवित सुधारस' कहि कऽ महत्त्व प्रतिपादित कयने छथि, जाहिसँ ई प्रतीत होइत अछि जे गंगाक महत्त्व एहिं हेतु छनि जे ई ब्रह्माक कमण्डलुमे छथि, भगवान विष्णुक चरणसँ बहराइलि छथि, भगवान शंकरक जटाजूटमे समाइलि छथि, तें एतेक पवित्र छथि, किन्तु श्रीसुमनजीक कल्पनाक प्रौढ़ता निम्नांकित पदमे कोना निखरि उठल छनि तकर अनुशीलन कयल जाय।

गिरिजा वामहि अंग, अहाँ शशिकलहु उपर चढ़ि
की न बनलि छी प्रिया जगत्पति–पतिक अधिक बढ़ि,
अहिंक नीरबल नारायण पद नीरज पावन,
करथि अहिंक संचय हित विधिहु कमण्डलु धारण,
अहँ त्रिदेव सहचारिणी त्रिपथ वाहिनी त्रिदश धुनि!
त्रिविध-ताप-संहार हित होउ सदय जनपर जननि!

पार्वती महादेवक प्राणधिक प्रिया रहथुन, किन्तु हुनक स्थान वाम अंगमे

छनि आ गंगाकेँ शशिकलहुसँ ऊपर स्थान देने छथिन। भगवान विष्णुक चरण पूज्य ओ पावन मानल जाइत छनि, से धन्य गंगा जे चरणकेँ पखारि पूजनीय बना देलथिन। सम्पूर्ण सृष्टिक विधाता ब्रह्मा अपनाकेँ पवित्र रखबाक हेतु सतत कमण्डलुमे जोगाकऽ रखने रहैत छथि। एतावता अहाँ तेहन महिमा-मयी छी जे संसारक उत्पत्ति-स्थिति-संहारक जे कारण छथि, सेहो लोकनि अहाँक सामीप्य पाबि अपनाकेँ धन्य मानैत छथि। एहिमे 'त्रि'पदक प्रयोग कतेक चमत्कारक अछि से मननीय।

ब्रजभाषाक यशस्वी कवि पद्माकर जे चमत्कार देखौने छथि, तकर रसास्वादन कयल जाय। ओ कहैत छथि—

लोचन असम, अंग भसम चिता को लाइ
तीनों लोक नायक सौं कैसे कै ठहरतो
कहै पद्माकर विलोकि इभि ढंग जाके
वेदहू पुरान गान कैसे अनुसरतो
बाँधे जटाजूट बैठि परवत कूट माँहि
महाकाल कूट कहौ कैसे कै ठहरतो
पीबै तित भंगै, रहै प्रेतनके संगै, ऐसे
पूछतो को नंगै जो न गंगै शीश धरतो ?

एक दोसर पदमे ओ कहैत छथि—

सूखि जाती सिन्धु वड़बानल की जारन सौं
जो न गंगाधार ह्वै हजार धार मिलती

एही भावकेँ श्रीसुमनजी केहन मौलिकताक संग अभिव्यक्त कयलनि अछि से निम्नांकित पदमे देखबाक योग्य अछि। ओ कहैत छथि—

शिव की सकितथि विष पचाय यदि लितथि न माथे
जैतथि सिन्धु सुखाय वाड़वानलहिक हाथे ।
की न ठिठुरि हिमवान मरण-शय्यागत रहितथि
यदि न अमरधुनि ! अहँक अमृत रस भाग्यें पबितथि

शत-शत ज्वालामुखी-मुख जरि जैतथि भू दग्ध भय,
जँ न जुड़बितनि सुधामयि अहँक सुधाधिक विमल पय,

शिवकेँ कालकूट घोंटि पचा लेबाक सामर्थ्य देनिहारि तथा समुद्रकेँ बाड़वानलक प्रकोपसँ बचा लेनिहारि तँ पद्माकर सेहो गंगाकेँ कहने छथित जाहिमे भाव-साम्य अछि, किन्तु हिमालयकेँ ठिठुरबासँ तथा पृथ्वीकेँ ज्वालामुखीक मुखमे पड़ि दग्ध होयबासँ रक्षा कयनिहारि गंगाकेँ कहि श्रीसुमनजी अपन मौलिक उद्भावना व्यक्त कयने छथि। पण्डितराज जगन्नाथ कहैत छथि—

स्खलन्ती स्वर्लोकादवनितल शोकापहृतये
जटाजूटग्रन्थौ यदसि विनिबद्धा पुरभिदा
अये निर्लोभानामपि मनसि लोभं जनयतां
गुणानामेवायं तव जननि ! दोषः परिणतः।

अर्थात् पृथ्वीतलक शोक हरण करबाक हेतु स्वर्गसँ उतरैत अहाँकेँ भगवान शंकर अपना जटाजूटमे बान्हि कऽ राखि लेलनि। हे जननि ! जे पूर्णकाम छथि, जनिका लोकनिक हृदयमे कोनो वस्तुक लोभ नहि छनि, तनिको लोकनिक हृदयमे अहाँक गुण लोभ उत्पन्न कऽ दैत छनि से गुणे दोष रूपमे परिणत भऽ गेल अछि।

श्रीसुमनजी देवाधिदेव महादेव पर्यन्तक हृदयमे लोभ उत्पन्न कयनिहारि ई गंगा स्वयं केहन निर्लोभ छथि तकर वर्णन निम्नांकित पदमे कोन चतुरतासँ कयने छथि तकर रसास्वादन कयल जाय—

स्वर्ग अर्गला तोड़ि गिरिक रोधन नहि मानल,
शिवशिर बासक लोभ लेश मनमे नहि आनल,
शत-शत प्रान्तर पार, सहस कोसक कय धावन,
अन्त क्लान्त मिलि क्षारवारि, कयलहुँ भव पावन,
शतमुख विनिपातक कथा कहौ, न खेदक लेश अछि,
जगत जीव हित-साधना एक मात्र उद्देश अछि।

देवाधिदेवक शिरपर वास करब त्रिभुवनमे सर्वोच्च पद कहल जा सकैत अछि। साधारणो पदक लोभ लोककेँ कर्त्तव्यविमुख कऽ दैत छैक तँ गंगाक

हृदयमे एहन उच्च पदक लोभ होयबेक चाहियनि, परन्तु ई तँ मर्त्यलोकक शोकके दूर करबाक पवित्र परोपकारक भावनासँ स्वर्ग पर्यन्तक परित्याग कऽ चलल्हि छलीह। एहि हेतु भर्तृहरि "विवेक भ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः" कहि गंगाके लांछितो कयलथिन, हजारो कोस दौड़ैत आबि, अन्तमे क्लान्त भेलि समुद्रक खार जलमे मिलि अपन अस्तित्व पर्यन्त विलीन कऽ देलनि तथापि जगत जीव साधना जे एक मात्र उद्देश्य छलनि, तकर बिनु पूर्ति कयने नहि रहलीह। तेँ आचार्य रमानाथझा कहने छथिन जे हजारो वर्षक बाद भर्तृहरिके उत्तर देनिहार यैह श्रीसुमनजी भेलाह अछि। एहनास्थितिमे शिवक जटामे वास करबाक लोभ गंगाके कोना कर्तव्यसँ विचलित कऽ सकैत छलनि!

पण्डितराज जगन्नाथ गंगाक प्रवाहके अविद्याद्रुमलन दीक्षागुरु कहने छथिन—"अपिद्रागाविद्याद्रुमदलन दीक्षागुरुरिह प्रवाहस्ते" तँ श्रीसुमनजी गंगाके विश्वविद्यालयेक रूपमे चित्रित कऽ देलनि। ई विश्वविद्यालय भगीरथक श्रमसँ संचालित तथा भगवान विष्णुक चरणसँ उद्घाटित भेल। अन्य विश्व-विद्यालयमे प्रवेश हेतु प्रवेशिका परीक्षोत्तीर्ण होयबाक प्रमाणपत्र अपेक्षित होइछ, एतय ताहि सभक कोनो बाधा नहि। एहिमे वयसक सीमा सेहो किछु नहि। अन्यत्र न्यूनतम चारि वर्ष पढ़ू तखन जा कऽ स्नातक होयब, एतय क्षण मात्रमे। अगणित प्राध्यापक सतत प्रस्तुत। शोध, अनुसन्धान आदि कतेक भेल से गनल नहि जा सकैछ। आर्य लोकनि युगयुगसँ तत्त्वचिन्तन करैत रहलाह अछि। अतः ई विश्वविद्यालय सबहुमे सबसँ उत्कृष्ट अछि। पदक अवलोकन कयल जाय—

परम पुरातन भगीरथक श्रमसँ संचालित,
विश्व अविद्या हरण हेतु हरिपद उद्घाटित,
जत निर्बाध प्रवेश, जलक कण-कण अध्यापक,
नर-नारी, शिशु-युवा-जीर्ण पलभरिमे स्नातक,
युग-युगसँ जत आर्यजन तत्त्व-चयन कयलनि परम,
करथु अविद्या दूर से विश्वक विद्यालय चरम।

कतिपय स्थल तँ एहन अछि जकर कल्पनो प्राचीन कवि लोकनि नहि कऽ

सकैत छलाह। श्रीसुमनजीक आधुनिक दृष्टिबोध तखन प्रत्यक्ष भऽ उठैत अछि जखन सुधारिका तथा मुक्ति साम्य सन्देशदायिनी क्रान्तिकारिणीक रूपमे कयल वर्णन पढ़ैत छी। समाज-सुधारक लोकनि समाजसँ अस्पृश्यताकेँ हटाय, मन्दिरमे हरिजनहुक प्रवेशक हेतु आन्दोलन करैत रहलाह अछि, किन्तु श्रीसुमनजीक दृष्टिएँ समाज-सुधारिकेक रूपमे गंगा एहि भूतलपर अवतीर्ण भेलीह। ई सर्वविदित अछि जे गंगाजल नहि छुआइत अछि। हिन्दू मात्र समाने श्रद्धासँ गंगास्नान करय जाइत अछि। ओहि ठाम ककरो क्यो जाति नहि पूछैत छैक। एहि सत्यक चित्रण निम्नांकित पदमे कयल गेल अछि—

द्विज-अन्यजकेँ एक घाट जल अहाँ पियौलहुँ,
दलित दलहुकेँ पानि परसि हरिपद पहुँचौलहुँ,
स्वर्ग मन्दिरक रुद्ध अर्गला खोलि सहज मति,
अघी अन्त्यजक सुलभ कयल जननी दर्शन गति,
अहँ सुधारिका धरणिमे प्रथम-प्रथम अयलहुँ जखन
यम-समाजमे गेल मचि रिक्त-रक्त हलचल तखन।

एहि पदमे 'पानि परसि' शब्दमे श्लेष द्रष्टव्य अछि!

यम समाजमे जे हलचल मचल तकर केहन मनोरम वर्णन कविवर पद्माकर करैत छथि तकरो स्वादल जाय। ओ लिखैत छथि—

गंगाके चरित्र लखि भाष्यो यमराज यह
एरे चित्रगुप्त! मेरे हुकुममें कान दे;
कहै पद्माकर नरक सब मूँदि कर
मूँदि दरबाजेनको तजि यह थान दे,
देखु यह देवनदी कीन्हे सब देव याते
दूतन बुलाइ कै विदा के वेगि पान दे,
फारि डारु फरद, न राखु रोजनामा कहूँ
खाता खत जान दे, बही को बही जान दे।

अर्थात् नरक विभागेकेँ समाप्त कऽ देल जाय।

आइ साम्यवादक ढोल पिटनिहार अपने समस्त सुख-सुविधाक बीच जीवन-

यापन करैत दीन-दलितक उद्धारक नारा दैत छथि जनिकर कथनी आ करनीमे कतहु एक आरि भेट नहि, किन्तु ई गंगा संसारमे साम्य स्थापित करैत समाजमे तेहन क्रान्ति आनि देलनि तकर चित्रण देखल जाय—

गिरिक शिखरसँ सागर धरि एकहि प्रवाहसँ,
मुक्ति-साम्य सन्देश देल स्वच्छन्द नादसँ,
स्वर्ग राज्यमे भेद न राखल, नृपति रंकमे
भक्तिक श्रममे, ज्ञानक पूजीपतिक अंकमे
मुक्ति-तन्त्र जन-सुगम कय, दण्डधरक बल लय निखिल,
क्रान्तिकारिणी कयल अहँ भव-वन्दी बन्धन शिथिल ।

एहि भूतलपर सर्वोच्च हिमालय, गंगा ताहि पर्वतसँ उतरैत छथि आ निम्नतम तल समुद्र, ताहिमे खसैत छथि । एहि मध्य निरन्तर प्रवहमान हिनक धारा प्रत्येक अवगाहन कयनिहारक पापके प्रक्षालित करैत रहैत छनि । यदि हिमालय समाजक उच्च वर्गक प्रतीक थिकाह तँ समुद्र निम्न वर्गक प्रतीक, किन्तु गंगाक दृष्टिमे दूनू समान । ई गंगा स्वर्गक हेतु जेहने पावन तेहने मर्त्यलोकक हेतु शुचितमा । एहि गंगामे अवगाहन कयनिहार राजा होथु वा भिखमंगा, फलप्राप्तिमे दूनू समान भागी । ज्ञानी लोकनि ज्ञानक पूजी रखनिहार पूजी-पति थिकाह तँ भक्त लोकनि श्रम कयनिहार श्रमिक । गंगाक हेतु दूनूमे कोनो अन्तर नहि । एहि प्रकारेँ सभक हेतु मुक्तिक द्वारके फोलि देनिहारि गंगा वास्तवमे क्रान्तिकारिणी ओ असली साम्यवादिनी थिकीह ।

एहि रूपेँ महर्षि वाल्मीकिसँ चल अबैत जे गंगा वर्णनक परम्परा, ताहिमे श्रीसुमनजी जाहि महाकवि लोकनिक नामोल्लेख करैत अपन रचनाके जड़ सुत कन्दन कहलनि अछि ताहिपर तत्रत: विचार कएला उतर हमरा दृष्टिमे उनैस नहि, प्रत्युत बीसे बुझि पड़ैत छथि । पण्डितराजक उक्ति—"समृद्धं सौभाग्ये सकल वसुधाया:"मे अतिरंजकता अछि आ 'भारत-भूमिक भाल बीच भाग्यक शुभरेखा'मे यथार्थता । के एहन भक्त होयत जे गंगातरंगिणी कविता पढ़ि भाव-विभोर नहि भऽ जायत ? पद-पदसँ जेना भक्ति-प्रवाह तरंगित होइत हो तेहन प्रतीत होइत अछि ।

श्रीसुमनजीक कवित्वक प्रमुख वैशिष्ट्य

डा० श्रीदुर्गानाथझा 'श्रीश'

प्रो० श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन'क स्मरण अबितहिँ एक गोट एहन महनीय व्यक्तित्वक विलक्षण मूर्त्ति दृष्टिपटलपर अंकित भऽ जाइत अछि जे एक संग अनेक रचनात्मक प्रतिभासँ मंडित अछि, एक संग सम्पादक, गवेषक, समालोचक, अनुवादक, निबंधकार, कथाकार, वक्ता, राजनेता एवं संस्कृतविद्याक प्रकाण्ड ज्ञाता आ सर्वोपरि कवि। आधुनिक मैथिली साहित्यमे अनेकानेक प्रतिभाक नाम 'सुमन' तँ अवश्य थिक, परन्तु एहि समन्वयक कार्य-साधन करैत अछि हुनक कविक व्यक्तित्व, जे हमरा जनितेँ हुनक समग्र व्यक्तित्वक मूल-तन्तु थिक, एहन तन्तु जे हुनक व्यक्तित्वक अन्यान्य विलक्षणताकेँ एकत्र सुगुम्फित करैत अछि, ओहिमे रूप, रस ओ रंग प्रदान करैत अछि तथा ओकरा विशिष्ट बनबैत अछि। हुनकासँ व्यक्तिगत रूपेँ सम्पर्क भेलासँ एक व्यक्तिक रूपमे एवं हुनक रचनावलीक अनुशीलन कयलासँ एक साहित्यकारक रूपमे हुनक व्यक्तित्वक मूलमे निहित संवेदनात्मक सहृदयता ओ माधुर्य, अकृत्रिम सरलता ओ अपनत्व, स्वाभाविक कल्पनाशीलता ओ आदर्श तथा नवोद्भावनशील पाण्डित्यप्रकर्षक स्पष्ट आभास होइत अछि जे हुनका मूलतः कवि बनबैत छनि तथा जकर सम्मुख हुनक व्यत्तित्वक अन्य पक्ष गौण भऽ जाइत छनि।

सुमनजी साहित्य-सर्जनाकेँ अन्तःप्रज्ञात्मक अपरोक्ष सत्ताक स्वाभाविक व्यापार मानैत छथि, जेना विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर मानैत छलाह। एहि अन्तःप्रज्ञात्मक सत्ताकेँ आध्यात्मिक तथा ईश्वरीय सत्ताक संज्ञा देल जा सकैत अछि जे हृदयसँ अनन्यरूपेँ सम्बद्ध अछि। सुमनजीक शब्दमे—"शरीरक उपलब्धि थिक बल-शक्ति, मनक थिक ओज-तेज एवं सत्य-ज्ञान थिक आत्माक उपलब्धि। तदुत्तर एक ओरो तुरीया-उपलब्धि बाँचल रहि जाइछ, जकर

सम्बन्ध हृदयसँ अछि—भावात्मक, रागात्मक, संवेदनात्मक जे नाम दिऔक—ओहि आवेगात्मक अभिव्यक्तिसँ। प्रेम-भक्ति, श्रद्धा-वात्सल्य, करुणा-दुति, राग-रति आदि भिन्न-भिन्न उपाधि विवर्त ओहीसँ उठैछ, ओहीमे विलीन भऽ जाइछ।"[1] हृदयक एहि तुरीयावस्थाक उपर्युक्त 'उपाधि-विवर्त'क माध्यमसँ परम प्रेरक सत्तासँ साक्षात्कार कऽ भाव-तादात्म्य स्थापित करब कवि ओ कविताक परम लक्ष्य थिक। जेना ब्रह्मसँ साक्षात्कार करब साधकक परम लक्ष्य होइत छैक। कविता ओ सरिताक दुहूक अवतरण बहुत उँचाइसँ होइत छैक—"गिरिक कविक अन्तस्तल द्रवित पघिलि बहली"[2] किन्तु दुहूक अवतरण "सार्थक बनैछ सामाजिक धरातलक समतलमे"[3] प्रवाहित भऽ 'ककरउ उर-देश करय उर्वर दुहु चलली"।[4] ई तँ भेल एकर सामाजिक उपयोगिता, परन्तु सुमनजीक अनुसार आध्यात्मिक उपयोगिता सेहो एकर परम लक्ष्य थिक जाहि हेतु कविता ओ सरिता आकुल बनलि रहैत अछि। सुमनजीक शब्दमे—"पयस्विनी खाहे ओ पार्वती रहओ वा पावसी दुहुक वेग-गरिमा अतल प्रशान्त सागरक महिमामे जखन लघिमा बनैछ तखने अपनाकेँ सार्थक करैछ, तखने द्रुति गतिकेँ धन्य बनबैछ।"[5] अपन एही मान्यताकेँ ओ निम्नलिखित पंक्तिमे अभिव्यक्त कयने छथि, मिलनोत्कण्ठताक रूपमे कविता ओ सरिता दुहुक विरह-वेदनाक चित्रण कऽ—

दुहुक रसिक प्रेम धनिक दूर अज्ञात
असह विरह उमस पसिझ दुहुक मृदुल गात
चंचल दृगंचल दुहुक सतत सजल कोर
अंचलमे वेदनाक खोँछि भरल नोर"[6]

वस्तुतः 'अंचलमे वेदनाक खोँछि भरल नोर' सुमनजीक कवित्वक मूल वैशिष्ट्य थिक, खाहे ई 'वेदनाक नोर' अध्यात्मक धरातलपर प्रतिष्ठित हो, खाहे आध्यात्मिक तत्त्वक भौतिक परिणति हो। 'प्रतिपदा'मे संगृहीत 'कविताक आह्वान' शीर्षक रचनामे मायक ममतामे, आँखिक मोतीसँ दिन गनैत ओ रजनीकेँ भोर करैत विरहिणीक विरह-व्यथामे, शकुन्तालाक पति-गृह जाइत काल कण्व-गोतमीक दृग-नोरमे, कृषक-श्रमिकक चुबैत श्रमजलमे,

अनाथ विधवाक अश्रुक बाढ़िमे, परवशताक पाश कटबाक हेतु शूलीपर चढ़ैत स्वतंत्रता-सेनानीक बलिदानमे तथा विस्फी-आङनमे मिथिलाक नोर बहयबामे सुमनजी कविताक अस्तित्व-बोध निरूपित कयने छथि, से हुनक कवित्वक विविध ओ व्यापक संवेगात्मक पक्षक वास्तविक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि। आदि-कवि वाल्मीकिक कवित्व-प्रतिभाक स्रोत करुणाक तीव्र संवेदनात्मक आधार पर आवेगात्मक रीतिएँ प्रवाहित भऽ उठल छल ओ सुमनजीक उच्च कोटिक रचनाक यैह संवेदनात्मक आधार थिक जे रस-स्पन्दित भऽ रसिक सहृदयक मनकें आह्लादित करैत अछि, 'रसो वै सः' उक्तिकें चरितार्थ करैत अछि।

सुमनजीक आध्यात्मिक सत्ताक प्रति विश्वास, जेना पूर्वहु कहल जा चुकल अछि, विश्वकवि रवीन्द्रनाथक रहस्यानुभूति ओ तकर अभिव्यक्तिसँ मिलैत छनि। ओ 'प्रतिपदा'क आरम्भेमे हुनक निम्नलिखित पंक्तिकें उद्धृत कयने छथि—

तुमि सन्ध्यार मेघ शान्त सुदूर
आमार साधेर साधना
आमि आपन मनेर माधुरी मिछे
तोमार करेछि रचना'

कवीन्द्र रवीन्द्रक 'गीतांजलि', 'गीतमाल्य' आदिमे संगृहीत रचनासबमे एहि प्रकारक परम आध्यात्मिक सत्ताक प्रति अनुभूतिपूर्ण कृतज्ञताज्ञापनक भावक अभिव्यक्ति भेल अछि ओ सुमनजी सेहो ओही प्रकारें अपन अनेक रचनामे रहस्य-भावनाक रागात्मक अभिव्यंजना कयने छथि। अपन 'द्वैत-गीत'मे ओही आध्यात्मिक सत्ताकें सम्बोधित करैत लिखैत छथि—

भरि दी स्वर अहाँ, हम तँ मात्र व्यंजना।
रेख-लेख हमर, अहिँक कला-रंजना ॥[7]

ओ ओहि परम-प्रभुक मूल-रूप निराकार मानने छथि—"निराकार प्रभुहिक संसार ई आकार",[8] जे भावनाक अनुसारें विविध प्रतीकात्मक साकार-रीतिसँ गृहीत-आराधित होइत छथि। यैह 'परम-प्रभु' सृष्टिक प्रत्येक जड़चेतनक कारण थिकाह,[9] प्रकृतिक सुन्दर-असुन्दर, सुख-दुःखक विधायक थिकाह, जाहि

सबहिमे हुनक निवास छनि आ अपन पूजन-आराधनाक उपादान स्वयं जुटबैत रहैत छथि। भक्त-रूपमे ओ व्यक्ति निमित्त मात्र अछि, सबटा लीला तँ ओहि अपरोक्ष सत्ताक थिक जे मूल-रूपमे अरूप ओ संज्ञाविहीन थिक, परन्तु जकरा विविध संज्ञा ओ रूप प्रदान कऽ ओ अपन भक्ति ओ आस्थाक आधार तकैत अछि। कविक यैह भावात्मक रहस्यवादी धारणा हुनक 'पूजन-उपादान' शीर्षक कवितामे अनेक रीतिएँ अभिव्यक्त भेल अछि। उदाहरणार्थ कवि कहैत छथि—

अहीँ माँटिकेँ सानि सलिलसँ वात्याचक्र घुमौलहुँ
राग-आगिसँ सुखा-पका अवकाश-अकाश बनौलहुँ
स्नेह–दान कय जीवन–वाती दय दीपिका सजौलहुँ
यदि च दलित-उर-अन्धकारमे आश-इजोत जगबितहुँ
ताहीसँ हे देव ! अहँक मन्दिर आरती सजबितहुँ[10]

वस्तुतः अद्वैतमे द्वैत ओ द्वैतमे अद्वैतक यैह आस्तिक परिकल्पना सुमनजीक कवित्वक मूल-वैशिष्ट्य थिकनि। एवं एही परिप्रेक्ष्यमे हुनक काव्यगत मूल्यांकन कएल जा सकैत अछि। यैह भारतीय संस्कृतिक आधारभूत विशेषता थिक जकरा आध्यात्मिक एकत्व अथवा सामंजस्यक संज्ञा देल जा सकैत अछि आ जे पश्चिमक भौतिकवादी अथवा नववैज्ञानिक जीवन-दर्शनसँ सर्वथा भिन्न अछि। सुमनजीक शब्दमे पश्चिमी दर्शन विश्लेषणात्मक थिक भेदमूलक तँ भारतीय दर्शन थिक संश्लेषणात्मक, अभेदमूलक अथवा सामंजस्यमूलक—

विश्लेषणकेँ संश्लेषणमे परिणत करब हमर संकल्प
भूमिक लघिमाकेँ भूमामे बदलि अल्पकेँ करी अनल्प ![11]

पाश्चात्य दर्शनक विज्ञानवादक न्यूनता ओ अपूर्णताकेँ स्पष्ट करैत कवि आगाँ कहैत छथि—

कतबहु खण्डक बनह विभाजक
भाग-भागमे विभजन व्यग्र
हम अखंड ऐक्यक संकेतक
एक निकेतन कलित समग्र
'भूमा वै सुख' हमर सुखक सीमा

असीम अछि ज्ञान अनन्त
तोहर खंडनक खंड न कय सकते
अखडके खडित अन्त ![12]

कवि अरण्य ओ अरण्यवासक समर्थनमे 'वनःपर्व' एवं 'कानन' शीर्षक कविताक रचना कयने छथि, से कविक असीम प्रकृति-प्रेम मात्रकेँ व्यक्त नहि करैत अछि, प्रत्युत हुनक भारतीय जीवन-दर्शनक मूल तत्त्वक प्रति सुदृढ़ आस्थाकेँ सेहो सूचित करैत अछि। कवि वनक विषयमे कहैत छथि—"जत विविधताक एकता रसा-रस भेदहुँ"[13] आ काननक प्रतिवचनक रूपमे हुनक उक्ति अछि —

शान्त निरन्त हमर अन्तर, जत वैर न द्वेष न लेश।
विविधताक बिच एकताक नित, भेटइछ जत सन्देश॥[14]

एहि प्रकारेँ क्रान्ति ओ शान्तिक प्रसंग सेहो सुमनजी भारतक सांस्कृतिक विचार-धाराक समर्थन करैत छथि जे व्यक्ति सामाजिक दायित्वकेँ स्वीकार करैत हृदय-परिवर्तन ओ मानवीय सामंजस्यपर आधारित शान्तिपूर्ण रीतिएँ सामाजिक आर्थिक परिवर्तनकेँ श्रेयस्कर बुझैत अछि, भौतिकवादी वर्ग-संघर्ष द्वारा, रक्तपूर्ण क्रांति द्वारा नहि। यैह कारण थिक जे सन्त विनोबाभावेक भूदानयज्ञआन्दोलन हुनक कविताकेँ विशेष रूपेँ प्रभावित करबामे समर्थ भेल छलनि ओ ताहि प्रभावक फलस्वरूप 'भिक्षापात्र' शीर्षक कविताक रचना भेल छल। एहि रचनामे सुमनजी सन्तभावेक 'सबै भूमि गोपाल को' प्रसिद्ध नाराकेँ वेदक 'कस्य स्विद्धन' प्रमाणक नवीनीकरण मानलनि तथा समाज ओ व्यक्तिक पारस्परिक अनन्य सम्बन्ध ओ महत्त्वक प्रति आस्था व्यक्त कयलनि—

व्यक्तिसँ समाज तेँ समाज हेतु व्यक्ति
समाज-शक्ति व्यक्ति, तेँ न व्यक्तिसँ विरक्ति"[15]

भूदान-आन्दोलन सुमनजीक संवेदनशील आत्माकेँ आन्दोलित कयलकनि, कारण जे एहिसँ समाजमे व्याप्त आर्थिक विषमताक समाधान शान्तिपूर्ण रीतिएँ संयोजित करबाक प्रयास छल, भौतिकवादी वर्ग-संघर्ष अथवा रक्तक्रांति द्वारा नहि आ सर्वोपरि एहिसँ मानवतावादक व्यापक परिपोषण होइत छल

जे भारतीय संस्कृतिक चरम लक्ष्य थिक—

भीख ई न थीक मात्र दीनताक हेतु
लीख ई न थीक मात्र नीति-सिन्धु-सेतु
सीख ई न थीक मात्र प्रीति-कीर्ति-केतु
सहज दनुजनाक कर्म मर्म मानि लेब
महज दनुजताक लेल वर्म मानि लेब ![16]

वस्तुतः सुमनजी 'पुरातनी पुनर्नवा'क पक्षधर छथि तथा नवीनताकेँ सनातन प्रक्रियाक रूपमे स्वीकार करैत छथि [17], अपन सांस्कृतिक परम्परासँ विच्छिन्न तथाकथित नवीनता अथवा आधुनिकतापर हुनका आस्था नहि छनि एवं अपन एही मान्यताक आधारपर ओ शान्तिपूर्ण सामाजिक परिवर्तनपर विश्वास रखैत छथि। परन्तु एकर ई तात्पर्य नहि जे कोनहु परिस्थितिमे ओ क्रांतिक एकान्त विरोधी छथि, प्रत्युत नपुंसक शान्तिवादी दृष्टिकोणक प्रति ओ घोर विरोध व्यक्त कयने छथि अपन 'दत्त-वती' महाकाव्यमे। जखन विदेशी शत्रुसँ आक्रांत होइतहु राज्यक मंत्री शान्तिक दोहाइ दैत अछि तँ मृगांकदत्त तकर घोर विरोध करैत उद्घोष करैत छथि—"चाही किछु प्रतिरोध, न शान्ति दोहाइ"[18] ओ ओही सन्दर्भमे हुनक निम्नलिखित उक्ति सेहो उद्धरणीय थिक—

राजनीति-रथ, शान्ति-क्रान्ति दुहु चक्र
कखनहुँ सरल पन्थ, कखनहु पुनि वक्र
साम-दामकेँ जतय न हो गति लेश
दण्ड-विभेदक ततय उचित सुनिवेश[19]

एहिसँ हुनक राष्ट्रवादी राजनीतिक चेतनाक वास्तविक स्वरूपक परिचय भेटैत अछि जे पश्चात् हुनक 'अन्तर्नाद'मे संगृहीत रचनासबमे विशेष स्फुट भेल आ जे हुनक पूर्व विश्लेषित आध्यात्मिक चेतनासँ तादात्म्य-रूपेँ संश्लिष्ट अछि। एहि भाव-बोध ओ जीवन दर्शनक समवेत परिप्रेक्ष्यहिमे सुमनजीक कवित्वक अनुशीलन उचित थिक, केवल एक पक्ष मात्रकेँ प्रमुखता देलासँ, हमरा जनितेँ, सुमनजीक कविकेँ नीक जकाँ चीन्हल नहि जा सकैत अछि।

पुरातनी पुनर्नवाक पक्षधर सुमनजी नवीनताकेँ सृष्टि-चक्रक सनातन

प्रक्रिया बुझैत छथि। एहि तथ्यकें जतबा ओ आध्यात्मिक सांस्कृतिक अथवा नवीन राजनीतिक सन्दर्भमे सत्य मानैत छथि ततबा तकरा अपन अनुभूतिक क्षेत्रमे धारण कऽ अभिव्यक्तिक क्षेत्रमे प्रतिफलित करबहुमे, कावताक रूपमे तकरा आकार देबहुमे समीचीन बुझैत छथि। अतः हुनक रचनासब अपन माटिपानिक पौराणिक अथवा ऐतिहासिक सन्दर्भसँ ओतप्रोत अछि आ तकरा बिनु हृदयंगम कयने हुनक रचनावलीमे निबद्ध ने तँ भाव-धाराक रसास्वादन वास्तविक रूपेँ भऽ सकैत अछि आ ने हुनक कल्पना-शक्ति ओ अभिव्यक्ति-शैलीक मार्मिकताकेँ बुझल जा सकैछ। सुमनजी निश्चये 'तप्त-युग केर ताप'क अनुभव कऽ[20] प्राचीन जीर्ण जगतीक बीन पर नवीन युगक स्वर-निनादकेँ सुनलनि,[21] धरती-सुतक प्रति अपन आस्था व्यक्त कयलनि,[22] साम्यवादक रूपक-योजनाक हेतु उपयोग कयलनि[23] तथा वैज्ञानिक प्रगतिक कारणे परिवर्तित परिवेशक प्रति अपन साकांक्ष युग-चेतनाक अभिव्यंजना कयलनि,[24] "प्रायः कोनो वाद-प्रवाद नहि छूटल होयत जाहि आधार पर ई रचना नहि कयने होथि"[25] परन्तु नवीनताकेँ सनातन विषय बुझनिहार सुमनजी अपनाकेँ आधुनिक अर्थमे नवीन नहि बुझैत छथि, प्रत्युत अपनाकेँ प्राचीनता ओ नवीनताक संगमपर स्थित बुझैत छथि। 'प्रतिपदा'क भूमिकामे स्वयं लिखैत छथि—"सन्निहित अतीत ओ वर्तमान जेना भविष्यक परिकल्पक, सम्मिलित नूतन ओ पुरातन जेना सनातनक अनुकल्पक, तहिना ओज-माधुर्य, योग-वियोग, अणु-महत्, वक्र-सरल, क्रांति-शांति दूहू छोरकेँ जोड़बाक प्रस्तुत ई रेखा-लेखा।"[26] दोसर शब्दमे, सुमनजीक "आधुनिकता थिक प्राचीनताक नवीनीकरण"[27] आ ओ जाहि परम्पराक मैथिली काव्यक्षेत्रमे नवीनीकरण करबाक प्रयास कयने छथि, से थिक संस्कृत साहित्यक समृद्ध परम्परा। सुमनजी अपन मैथिली रचनामे संस्कृतसाहित्यक रस-अलंकारवादी प्रवृत्तिक सन्तुलित संयोजन-पूर्वक आधुनिक युग-चेतनाक अभिव्यक्ति चिरन्तन भारतीय संस्कृतिक सन्दर्भमे कऽ अद्भुत कलात्मक सृष्टि कयने छथि जे कोनो साहित्यक हेतु गौरवक विषय भऽ सकैछ।

सिद्धान्ततः सुमनजीकेँ संस्कृतसाहित्यशास्त्रक कोनो सम्प्रदाय-विशेषसँ

कोनो विरोध छनि आ ने अनिवार्य रूपसँ ककरो एकान्त समर्थने करैत छथि, प्रत्युत सभ सम्प्रदायक लक्ष्य ओ एके मानैत छथि, केवल चमत्कार-भेदक कारणहि विभिन्न लक्ष्य समन्वित भेल मानैत छथि तथा हुनक निश्चित मान्यता छनि जे संस्कृतसाहित्यशास्त्रमे वर्णित विभिन्न काव्यक परिभाषा पुरान नहि पड़ल अछि। "युग-प्रवृत्तिक अनुसार कखनहु रस-माधुर्य तँ कखनहु अलंकार झंकार, कखनहु वक्रिमा-भंगिमा तँ कखनहु लक्षणा-व्यजना अपन प्रभाव-विस्तार करैत रहैछ"[28] आ सामान्यतः आधुनिक कविताक वर्त्तमान युग यद्यपि काव्यक संस्कृतवादी मान्यताकें परित्याग कऽ रागात्मकताक स्थानपर बौद्धिकता, वक्रताक स्थानपर ऋजुता, अलंकार-झकारक स्थानपर उक्तिक सहजता तथा लयात्मकताक स्थानपर क्रमिक गद्यात्मक मुक्तवृत्तकें स्वीकार कऽ लेलक अछि, किन्तु अनेकानेक कवि एहनो छथि जे काव्यक परम्परागत गरिमाक नवीनीकरण कऽ काव्य-सौन्दर्यक शाश्वत दीप-सिखा जरौने छथि ओ एहन कविगणमे मुक्तक ओ प्रगीतात्मक प्रतिभाक दृष्टिसँ सुमनजी प्रायः सर्वश्रेष्ठ छथि।

एहि प्रकार संस्कृत-काव्य-परम्पराक अनुसरण कऽ मैथिली प्रगीतकाव्य-धारामे ओकर परिपक्व समृद्धिक एक नवे चमत्कार उत्पन्न करब सुमनजीक कवित्वक मुख्य वैशिष्ट्य थिकनि। सुमनजीक कविताक जे विशेषता छनि, से हुनक एहि मान्यताक कसौटीपर अक्षरशः सत्य सिद्ध होइत अछि जे "काव्य कल्पनाक चमत्कार रहौ वा जीवनक चीत्कार, अभिधेय विशेष मानल जाओ वा अभिधान प्रधान—साहित्यक एकमात्र लक्ष्य रहल असामञ्जस्यमे सामञ्जस्य आनब, कल्पनाकें वास्तविकतामे ओ वास्तविकताकें काल्पनिक रंग-टीपमे रङब, शिवकें सुन्दर रूपमे, सुन्दरकें शिव-रूपमे उपस्थित करब, आदर्श ओ यथार्थकें सुसंगत करब।"[29] परन्तु ताहूसँ महत्त्वपूर्ण अछि औचित्य अथवा सत्यकें सर्वोपरि स्थानपर प्रतिष्ठित करबाक हुनक प्रयास। हुनक मान्यता छनि जे "जे साहित्य औचित्यसँ दूर अछि ओ आदर्श ओ यथार्थ दूहूसँ दूर अधःपतित भँ जाइछ, ओ साहित्य साहित्ये नहि रहि जाइछ।"[30] वस्तुतः संस्कृत, अंग्रेजी अथवा कोनो भाषाक साहित्यशास्त्रमे वर्णित काव्यक परिभाषामे औचित्य अथवा सत्यपर सर्वोपरि बल देल गेल अछि, ओकरा काव्यक आत्मा मानल गेल अछि।

परन्तु ई सत्य वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक सत्यसँ भिन्न होइत अछि, कारण काव्यमे औचित्य अथवा सत्यक अभिव्यक्ति सार-रूपमे नहि, साकार ओ सांगोपांग रूपमे होइत अछि। एहि सांगोपांगताक हेतु कलात्मक अभिव्यक्तिक प्रयोजन पड़ैत अछि आ कलात्मक अभिव्यक्तिक हेतु शब्द, अर्थ आदि चमत्कारपूर्ण प्रयोग आवश्यक भऽ जाइछ, जकर सुमनजीक रचनहु मे प्रचुरता अछि।

कविताक सौन्दर्य वास्तविक रूपमे तखन निखरैत अछि जखन शब्द, अर्थ, भाव, विचार ओ कल्पनाक चमत्कार समवेत भऽ प्रकट होइत अछि आ ई विशेषता सुमनजीक रचनाक अन्यतम गुण थिकनि। अपन रचनामे ओ शब्दक एहन संयोजन करैत छथि जे छन्द-विशेषक अनुसार स्वाभाविक गति ओ प्रवाह, संगीतमयता आदि बड़ सहज रूपें धारण करैत अछि, अलंकारक शब्दगत चमत्कार उत्पन्न करैत अछि, जे भाव ओ अर्थकें अनायासें ध्वनित-व्यंजित करैत अछि तथा जे अर्थाभिव्यक्तिमे बाधक नहि, प्रत्युत तकर रमणीयतामे सहायक बनैत अछि। सुमनजीक अधिकांश रचनाक ई विशेषता थिकनि जे किछु अधिके रूपसँ अलंकृत रहलहु सन्ताँ, चमत्कारपूर्ण उक्ति-विन्यास एवं आरोपमूलक कल्पनाक बौद्धिक प्रयत्न भेलहु सन्ताँ उपनिबद्ध भाव अवरुद्ध भेल प्रतीत नहि होइछ, प्रत्युत ओहिमे आद्यन्त भावक तीव्रता लक्षित होइत रहैत अछि। लगैत अछि जेना उपनिबद्ध भाव कल्पनाक स्वाभाविक प्रेरक भऽ रहल अछि, छन्दक स्वतः विधान कऽ रहल अछि तथा शब्द-प्रवाहकें स्वाभाविक रीतिएँ गतिशील बना रहल अछि। सुमनजीक रचनावलीसँ एकर अनेकानेक दृष्टान्त देल जा सकैत अछि, तथापि 'साओन–भादव' एक उत्कृष्ट दृष्टान्त थिक जाहिमे सुमनजीक साओन–भादव एवं साओन–भादवसँ सम्बद्ध प्रकृतिक उपादान सबहिक आलम्बन, उद्दीपन, अनुभाव, व्यभिचारीभावक आरोपमूलक सुसंयोजित, प्रवाहपूर्ण एवं रागात्मक प्रयोग कऽ एकसंग अपन अप्रतिम कल्पना-शक्ति, अद्वितीय प्रकृति-प्रेम एवं अद्भुत भावात्मकताक परिचय देलनि अछि, संगहि वस्तुगत एवं भावगत रूप-सृष्टिमे, शब्द-संयोजन ओ अलंकारादिक प्रयोगमे कतहु औचित्यक परित्याग नहि अछि। उदाहरणार्थ, चिर-वियोगिनीक रूपमे साओन-भादवक निम्नलिखित वर्णन द्रष्टव्य अछि —

चिर-वियोगिनी प्रकृति-प्रिया केर भरल आँखि ई साओन-भादव !
विरह-उषम ग्रीषम तापित तन, प्रथम दिवस आषाढ़क उन्मन
पावस-पलक वेदना-दुर्भर, टप-टप गलइछ जीवन-यौवन
तकरहि मर्मक व्याथा-कथा कहि रहल मलिन भय जलद करुण रव ।
चिर-वियोगिनी प्रकृति-प्रिया केर भरल आँखि ई साओन-भादव ॥31

वस्तुतः केवल 'साओन-भादव'क रचनहिमे नहि, आरम्भिक कविता-संग्रह 'अर्चना' ओ 'प्रतिपदा'मे एवं परवर्त्ती 'पयस्विनी', 'अन्तर्नाद', 'अंकावली' प्रभृतिमे सुमनजीक कविता-रचनाक यैह विशेषता थिकनि जाहिमे अलंकार-वादिता एवं पाण्डित्यक दर्शन तँ अवश्य होइत अछि, परन्तु आयासपूर्वक कृत्रिम पद-रचनाक प्रवृत्ति कतहु परिलक्षित नहि होइत अछि, लगैत अछि जेना रमणीयार्थ प्रतिपादक पंक्तिसमूह कविक लेखनीसँ आवेगात्मक रीतिएँ निःसृत होइत गेल। परवर्ती रचना सबमे रागात्मक तल्लीनताक क्रमिक ह्रास ओ बौद्धिकताक प्रबलताक आभास तँ हमरा अवश्य होइत अछि, मुदा तकर ई तात्पर्य नहि जे ओहि सबमे सुमनजीक उपर्युक्त वैशिष्ट्यक सर्वथा अभाव हो, हुनक परवर्त्ती रचनासब कविता नहि, शुद्ध दर्शन बनि गेल हो।

सुमनजीक कविताक विषय व्यापक अछि ओ एहि व्यापकताक दृष्टिसँ हिनक काव्यसाहित्यकेँ विशाल कहल जा सकैत अछि। एक दिस 'यमुने'मे यदि ओ द्वापर-युगक सुवर्ण-प्रतिमाक समान गोरी-राधाकेँ पीत-वर्ण पीतरि बनबाक एवं हुनक स्मृतिमे गिरि-काननकेँ अश्रु-सिक्त बनबाक कल्पना करैत छथि तँ दोसर दिस 'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे'मे नोरक बाढ़िसँ डूबलि द्वारपर ठाढ़ि अलकाक सखीक सजीव ओ संवेदनशील चित्रकेँ अंकित करैत छथि, एक दिस 'हलधर'मे धरती-सुतक महत्ताक गान गबैत छथि तँ दोसर दिस 'श्मशान'मे यती याज्ञिक, तान्त्रिक, अध्यापक, परीक्षक, स्थितिप्रज्ञ आदिक सार्थक आरोप कऽ अपन कवित्वक चमत्कार प्रदर्शित करैत छथि तँ 'तरु'मे तरुकेँ तरुण साधकक रूपमे चित्रित करैत सांसारिक आदर्शक उपदेश दैत छथि, एक दिस 'शरद'मे शरदकेँ शिशु, किशोरी, तरुणी ओ वृद्धाक रूपमे अंकित कऽ अपन वर्णन-सामर्थ्यक विशदता स्थापित करैत छथि तँ दोसर दिस अपन 'युग-

नवीन'मे उपस्थित परिवर्तनक उल्लेख कऽ मानवीय बुद्धिमत्ता ओ क्षमताक प्रति अपन आस्था व्यक्त करैत छथि।[32] एही प्रकारेँ एक दिस 'पयस्विनी'मे पावसक पयस्विनी, तामसी (रस-चित्र) एवं परोपकारकेँ परम श्रेय मानिहार राष्ट्रीय-विचारधाराक अभिव्यंजना करैत छथि तँ दोसर दिस 'मानव मन'क अगम्य ओ अद्‌भुत अशान्ति, असन्तोष आदि स्थितिक चित्रण कऽ विज्ञानकेँ चुनौती दैत छथि—

संघर्ष अन्तरक की निरवधि ?
बहिरंग भ्रमित की क्षण शोधित
उद्धत-गति अन्तरिक्ष रोधित
विज्ञानक महाशक्ति बोधित
की करत न अन्त शान्ति घोषित ?"[33]

एतबे नहि, 'वन : पर्व ओ कानन'मे एक दिस यदि कवि आर्ष-सभ्यता ओ अकृत्रिम प्रकृतिक निवासक प्रति अपन व्यक्तिगत आसक्ति व्यक्त करैत छथि तँ दोसर दिस 'खण्ड-अखण्ड'मे आधुनिक भौतिकतावाद ओ विज्ञानवादसँ अपन आध्यात्मिक दृष्टिकोणक श्रेष्ठता सेहो सिद्ध करैत छथि। एतेक दूर धरि जे 'अंकावली'मे अंकानुक्रमेँ विविध प्राचीन सांस्कृतिक विषयक वर्णनपूर्वक भारतीय द्वैताद्वैतक स्वर अनुगुंजित कऽ सुमनजी मैथिली कविताक्षेत्रक हेतु नव नामांकन प्रस्तुत कऽ देने छथि।

परन्तु अर्चनामूलक सुमनजीक विविध रचनाक अतिरिक्त हिनक नारी ओ ऋतु-सम्बन्धी मुक्तककाव्य एतऽ विशेष रूपेँ उल्लेखनीय अछि, विशेषतः अद्वितीय मार्मिकता, रमणीयता ओ स्वाभाविक लयात्मकता आदि दृष्टिएँ एहि रचनासबमे सुमनजी बिहारीक अर्थ-गर्भिता ओ उर्दू-काव्यक हृदयकेँ द्रुत गतिसँ स्पर्श कऽ प्रभावित करबाक गुण आदि भरि अपन अपूर्व कवित्व प्रतिभाक परिचय देने छथि। उदाहरणार्थ 'नारी वर्णना'क निम्नलिखित पंक्ति द्रष्टव्य थिक—

नयन वंकिमा !
जनु मदन मीन बझबैछ बंशी घुमा !
अधर पर हँसी !

दिन-देखारे क्षितिजपर उगथि जनु शशी !
हृदय-हार ई !
गिरि-शिखरसँ चलल अछि विमल धार की ?"34

नख-शिख-वर्णनक प्राचीन परम्परामे रचित भेलहुँ सन्ताँ एतऽ शब्दरचनाक माधुर्य, कल्पनाक चित्रमय सजीवता, भावक कमनीयता, उक्तिक वक्रता, छन्दक तरलता आदि गुण ओत-प्रोत अछि जे आधुनिक कविताक हेतु सर्वथा अभिनव उपलब्धि कहल जायत। सुमनजी एहि प्रकारक मुक्तक रचनामे संस्कृतसाहित्यक प्रसिद्ध अप्रस्तुतादिक संग-संग नवीनतम, आधुनिक ओ वैज्ञानिक वस्तु-सामग्रीहुक यत्र-तत्र प्रयोग कयलनि अछि आ ओहिसँ अपन रचनामे अभिनव चमत्कार उत्पन्न कऽ देलनि अछि। उदाहरणार्थ 'नयन' पर हुनक निम्नलिखित उक्ति आस्वादनीय थिक—

अभियन्ता कन्दर्प ई भृकुटिक बान्ह बनाय।
नयन-योजनासँ तरल विद्युत देल जगाय।"35

एतऽ कतेक सुन्दर ओ नवीन रूपक योजना कऽ प्राचीन भाव-विषयहुकेँ आधुनिक परिवेशमे अभिव्यक्त कयल गेल अछि ओ एहन रचनासब सुमनजीक मौलिक उद्भावना-शक्तिक परिचायक थिक। मौलिक उद्भावना करबाक हुनक प्रतिभाक ई विशिष्ट गुण न्यूनाधिक मात्रामे हुनक प्रायः अधिकांश रचनामे निहित अछि जे हुनक रचनाकेँ आधुनिक काव्य-क्षेत्रमे एकटा पृथक् व्यक्तित्व प्रदान करैत अछि। सुमनजी आधुनिक भाव-विषय ग्रहण करबामे कोनो नवीन कविसँ पाछाँ नहि रहैत छथि, भनहिँ अप्रस्तुतादिहिक हेतु तकर उपयोग करबाक हेतु करैत होथि। एहिसँ हुनक रचनामे व्यापकता ओ आधुनिकताक समावेश तँ अवश्य होइत अछि, परन्तु शिक्षा ओ संस्कारक अनुकूल स्वाभाविक रूपेँ भाषा-प्रयोगमे संस्कृत-बहुलता ओ अभिव्यक्तिमे पाण्डित्यपूर्ण वक्रताक जे समावेश भऽ जाइछ, से हिनका सर्वसाधारणक कवि नहि बनऽ दैत छनि। हिनक रचनाक वास्तविक रसास्वादनक हेतु चाही कविक हृदय, संगहिँ कवित्व सौष्ठव बुझबाक ममता, तेँ सुमनजीकेँ 'कविक कवि' कहल गेलनि, से सर्वथा युक्तिसंगत। हिनक कतोक प्रशंसक हिनका प्रगतिवादी ओ प्रयोगवादी पर्यन्त सिद्ध करऽ लगैत छथि, किन्तु सुमनजीक कवित्वक स्वाभाविक प्रतिष्ठाक हेतु,

हमरा जनितें, से अनावश्यक अछि। "सुमनजीक वास्तविक महत्त्व कोनो 'वाद'-वृत्ताक अन्तर्गत नहि छनि, प्रत्युत कविताक ओहि भाव-भूमिपर प्रतिष्ठित छथि, जाहि हेतु कवि युगातीत कहल जाइत छथि।"[36]

सुमनजीक काव्यरचनाकें तीन श्रेणीमे विभाजित कयल जा सकैछ—प्रगीत रचना एवं प्रबंध रचना। 'प्रतिपदा', साओन-भादव', 'पयस्विनी', 'अन्तर्नाद' आदिमे हुनक प्रगीतकाव्य संगृहीत अछि, 'मुक्तावली', अन्योक्तिका', 'शृंगारहार', 'ललना-लहरी' आदि हिनक मुक्तककाव्यक संग्रह थिक ओ हिनक प्रकाशित प्रबन्ध-काव्य थिक 'उत्तरा' नामक खण्ड-काव्य एवं 'दत्तवती'। 'संजीविनी' खण्ड-काव्य ओ 'कृष्णावतरण' नामक महाकाव्य एखनधरि प्रकाशनाधीन अछि। परन्तु एहि विभागकें दुइ वर्ग मात्रमे सीमित कयल जा सकैत अछि यदि प्रो० रमानाथझाक नवीन गीतकाव्यक व्याख्याकें मानि लेल जाय।[37]

नवीन प्रगीतकाव्यक प्रमुख तत्त्व थिक संगीताश्रयक परित्याग, छन्दक स्वच्छन्दता, प्रसादगुणसम्पन्नता, लालित्य ओ माधुर्य, लयात्मकता ओ आत्माभिव्यक्ति। सुमनजी विद्यापति-सम्प्रदायक सर्वथा परित्याग कऽ संगीतमुक्त प्रगीतकाव्यक रचना कयने छथि जाहिमे सर्वत्र लालित्य-माधुर्य, लयात्मकता ओ लक्षणिकताक समावेश भेटैत अछि। अनेक छन्द-बन्धक प्रयोग करितहुँ ओहिमें ओ कतेको ठाम नवीन प्रयोग कयने छथि, परन्तु आधुनिक अर्थमे, संस्कृतक वस्तुतः अमर्मज्ञ सामान्य लोकक हेतु हुनक शब्द-रचना प्रसादगुण-सम्पन्न नहि कहल जा सकैछ। ओ स्थान-स्थानपर 'वर्म'[38] 'वल्गन'[39] सदृश शब्दावली, संस्कृतक पद-खण्ड, यथा 'अजोरणीयान्'[40] 'कस्य स्विद्धन'[41] आदि, प्राचीन पौराणिक सन्दर्भ एवं यमक, श्लेषादि तथा रूपक अलंकार प्रायः सर्वत्र प्रचुरताक संग प्रयोग करैत छथि, अनुभूति-तत्त्वकें गौण कऽ विचार तत्त्वक जेहन तीव्रताक संग समावेश करैत छथि, ताहिसँ हुनक रचनासब मर्मज्ञक हेतु चमत्कारक, अर्थगम्भीर ओ रमणीय तँ अवश्य भऽ जाइत अछि, परन्तु भावानुभूतिक स्वाभाविक अभिव्यंजनामे अवरोध सेहो उत्पन्न करैत अछि।

प्रगीतकाव्यमे आत्माभिव्यक्तिमूलक तत्त्वक जाहि अर्थमे उल्लेख कयल जाइत अछि, साक्षात् रूपें कविक व्यक्तिगत जीवनसँ सम्बद्ध आत्मानुभूतिक

स्वाभाविक अभिव्यंजनाक अर्थमे, तकर सम्यक् रूपें प्रचुरताक संग सुमनजीक प्रगीत-रचनामे अन्तर्भाव नहि रहलहु सन्ताँ सर्वत्र तकर नितान्त अभाव नहि कहल जायत। उदाहरणार्थ, हुनक 'जन्मदिवस' शीर्षक रचनाक उल्लेख करब जाहिमे भारतीय संस्कृतिक आशावादी प्रवृत्तिक प्रतिकूलो कवि अपन निराशावादी अनुभूतिक सहज अभिव्यक्ति कयने छथि—

संचित आयु-कोषसँ होइछ श्वास-श्वास व्यय हन्त !
वर्ष-प्रवेशक हर्ष-अमृतमे घोरल विषमय अन्त !!"42

तथा अपन भक्ति-रचनामे अपन आस्थामूलक आत्माक प्रगाढ़ अभिव्यक्ति स्वाभाविक तल्लीनताक संग कयने छथि—

हमर हृदय कुहरक निबिड़ अछि अभेद्य मोहक अमा।
करुणा-किरणक एक कण दय प्रकाशमय करब मा !"43

ई तँ भेल सैद्धान्तिक दृष्टिएँ प्रगीतकाव्यक आत्माभिव्यक्तिक स्वरूप-निरूपण, किन्तु साहित्य मात्रमे, कवितामे तँ सहजहिँ—प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कोनहुँ रीतिएँ सदैव कविक भावधाराहिक तँ अभिव्यक्ति होइत अछि आ ताहि दृष्टिसँ हुनक प्रत्येक रचनामे हुनक आत्मदर्शन प्रतिध्वनित होइत रहैत अछि। पाण्डित्यपूर्ण, कठिन ओ चमत्कारपूर्ण शब्द-विन्यास तथा गम्भीर ओ आलंकारिक उक्ति-वक्रता रहलहुपर अन्ततः हुनक रचना मर्मज्ञ काव्य-रसिककेँ आह्लादित करबे करैत अछि, तकर कारण ओहिसबमे निहित रससिद्ध कविक रससिक्त आत्माक अभिव्यंजना सैह थिक।

सुमनजीक एकमात्र खण्डकाव्य 'उत्तरा' ओ 'दत्त-वती' महाकाव्य प्रकाशित छनि। ताहि आधार पर निश्चित रूपें कहि सकैत छी जे एहिमे सुमनजी अपन विविध शास्त्रीय ज्ञान, जीवन-जगतक अपन गम्भीर अनुभव, भारतीय अध्यात्मदर्शन ओ संस्कृतिमूलक विचारधारा, ओजपूर्ण राष्ट्रीय चेतना तथा अपन समग्र कवित्व प्रतिभाक रसकेँ निचोड़िकेँ भरि देने छथि। परन्तु जहाँ धरि 'उत्तरा'क प्रसंग अछि, ताहिमे संस्कृतखण्डकाव्य-परम्पराक अनुसरण करितहुँ सुमनजी एकर प्रथम सर्गक अवतरण सर्वथा विलक्षण रीतिएँ कयलनि अछि, घटना-स्थल, पूर्वकथा, उपनिबद्ध नायिका ओ सम्बद्ध पात्रक परिचया-

त्मक प्रस्तावनाक रूपमे। एकरा खण्डकाव्य-शिल्पमे हुनक सर्वथा मौलिक अवदान कहल जा सकैत अछि।

'उत्तरा'क वैशिष्ट्यक विषयमे हम अपन 'मैथिली साहित्यक इतिहास'मे संक्षेपमे उल्लेख कऽ चुकल छी।[44] वस्तुतः अपन एहि खण्डकाव्यमे सुमनजी 'उत्तरा'क नृत्य-संगीतक, शिक्षा-दीक्षाक सांगोपांग वर्णनक सन्दर्भमे नृत्य, गीत, वाद्य आदि कलाक प्रसंग अपन पाण्डित्यपूर्ण ज्ञानक परिचय देने छथि आ एहि खण्डकाव्यक मुख्य विशेषता थिक चमत्कारपूर्ण वर्णन, अलंकारपूर्ण शब्द-संयोजन ओ नारी-कर्त्तव्य-बोधक गौरवपूर्ण भारतीय जीवन-दर्शन। महाभारतक विस्तृत काव्यकेँ लघु आकार देबहुमे कवि अपन कलात्मक प्रतिभाक परिचय देने छथि। आधुनिक शिल्प ओ मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रणक दृष्टिएँ एहि खण्ड-काव्यक आलोचना उचित नहि, कारण जाहि परम्पराक पोषणमे एकर रचना भेल अछि, ताहिमे वर्णनक उत्कर्षकेँ सर्वोपरि महत्त्व देल जाइत छैक। तथापि 'उत्तरा'क चरित्रमे वीरांगनोचित साहसिकताक जेहन संकेत देल गेल अछि, से नारी-चरित्र-गरिमाक नवीन स्वरूपकेँ अंकित करैत अछि। एहि सब दृष्टिसँ 'उत्तरा' मैथिली खण्डकाव्यक इतिहासमे अपन पृथक् व्यक्तित्व स्थापित करैत अछि

एहि निबन्धमे सुमनजीक किछु प्रमुख विशेषताक उल्लेख मात्र कयल गेल अछि। संक्षेपमे, सुमनजीक कवित्वक मूलविशेषताकेँ संस्कृतक समृद्ध परम्परा एवं आध्यात्मिक विचार-धाराक आधुनिकीकरणक संज्ञा देल जा सकैत अछि। आधुनिकीकरणक एहि प्रक्रियामे ओ नव-नव विषय-सामग्रीकेँ ग्रहण करैत छथि, ओकरा अपन विशिष्ट काव्य-सौष्ठवक अंग बनाय उपस्थित करैत छथि, अपन अद्भुत रस-सिद्ध व्यक्तित्वसँ राग-रंजित कऽ सामयिक वस्तुकेँ शाश्वत ओ सनातन बना दैत छथि। हुनक कवित्वक ई विशेषता जतबा हुनक पद्य-रचनामे सार्थक अछि, ततबहि गद्य-रचनहुमे, उदाहरणार्थ जखन महात्मा गाँधीजीक विषयमे कहैत छथि—"दरिद्रनारायण तेँ अर्द्धनग्न। वृद्धतम उपदेशक, युवकवत् सदैव संघर्ष लेल प्रस्तुत, बालक जकाँ स्वच्छ सरल ओ स्मितमुख।

सन्त छलाह, उपकारमे जीवन आहुत कय देल, नेता छलाह, पराधीन देशकें स्वाधीन बनाय देल। पुरुष नहि, पुरुषोत्तम छलाह, युग-निर्मित नहि, युग-निर्माता छलाह"[45] अथवा जखन ओ कविता मध्य छन्द-वैविध्यक अनिवार्यताक प्रसंग अपन विचार व्यक्त करैत छथि—"छन्दकें यदि केओ कल्पना-कामिनीक नूपूरक मन्द मधुर शिञ्जन बुझै छथि तँ हुनका उद्भट दण्डकक घटाटोप टंकारो सुनय पड़तनि। यदि मालिनी-शिखरिणीक कंकन-किंकिनिकें सुनवामे रस अयतनि तँ हठात हुनका मन्दाक्रान्ता शार्दूलविक्रीड़ितक चरण-चाप सुनबोक धैर्य सहेजय पड़तनि"[46] अथवा जे कोनो हुनक गद्य-रचना अछि, ताहि सबमे हुनक कविव्यक्तित्वक सुस्पष्ट अभिव्यक्ति होइत अछि। तें हम आरम्भेमे कहि आयल छी जे सुमनजी मूलतः कवि छथि, तखन आन किछु। हुनक ई कवि-व्यक्तित्व आधुनिक मैथिली काव्य-साहित्यकें अद्‌भुत गरिमा प्रदान कऽ रहल अछि।

सुमनजी गत साठि वर्षसँ निरन्तर साहित्य-साधनामे निरत छथि। यैह कारण थिक जे हुनक अनेक सम्पादित एवं गद्य-रचनाक अतिरिक्त विविध भाव-शिल्प-विषयक प्रायः दुइ दर्जनसँ अधिक मौलिक ओ 'अनुगीतांजलि', 'ऋतुशृंगार' 'पुत्रोऽहं पृथिव्याः' आदि अनेक अनूदित काव्य-कृति प्रकाशित भऽ चुकल अछि। कतोक तँ एखनहुँ रचना ओ प्रकाशनक प्रक्रियामे अछि। वस्तुतः सुमनजीक व्यक्तित्व एक विशिष्ट साधक ओ तपस्वीक व्यक्तित्व थिक एवं हुनक साहित्य-सर्जना हुनक अध्यात्म-साधनाक प्रतीक थिक। एहन मिथिला-मैथिलीक गौरव कविमनीषी सुमनजीक हम हार्दिक अभिनन्दन करैत छियनि।

सन्दर्भ-संकेत

१. अनुगीतांजलि-रूपसंधानिका पृ० अ

२. कविता-सरिता (पयस्विनी) पृ० १७

३. भूमिका (पयस्विनी) पृ० ख

४. कविता-सरिता (पयस्विनी) पृ० १७

५. पयस्विनी—भूमिका पृ० ख

६. पयस्विनी—कविता-सरिता पृ० १६-१७

७. तत्रैव पृ० ७७

८. तत्रैव पृ० ४८

९. तत्रैव—प्रतिमा-भावना पृ० ४७-४८

१०. तत्रैव – पूजन-उपादान पृ० ३६

११. तत्रैव—खण्ड-अखण्ड पृ० ७०

१२. तत्रैव पृ० ७२

१३. तत्रैव—वनपर्व पृ० २९

१४. तत्रैव – कानन पृ० ३२

१५. तत्रैव—भिक्षापात्रे पृ० ५४

१६. तत्रैव पृ० ५५

१७. तत्रैव (नवा पुरातनी पुरातनी पुनर्नवा) पृ० ५५

१८. मैथिली साहित्यक इतिहास (डाॅ० श्रीश) पृ० १९३

१९. तत्रैव पृ० १९३

२०. प्रतिपदा—भैरवी पृ० ३६

२१. तत्रैव—युग-नवीन पृ० ७४

२२. तत्रैव—हलधर पृ० २९

२३. तत्रैव—श्मशान पृ० ३४

२४. तत्रैव—युग नवीन पृ० ७४-७७

२५. नवीन गीत (रमानाथझा) पृ० ९४

२६. प्रतिपदा—भूमिका पृ० ट

२७. नवीन गीत (रमानाथझा) पृ० ९४

२८. प्रतिपदा – भूमिका पृ० ख-ग

२९. तत्रैव पृ० ग

३०. तत्रैव पृ० ग

३१. साओन–भादव पृ० ११-१२

३२. प्रतिपदामे संगृहीत

३३. पयस्विनी—मानव-मन पृ० २४

आचार्य सुमनजीक कृतित्व

डॉ० श्रीपरमानन्दझा'शास्त्री'

मैथिली साहित्यक आधुनिक कालक कविसभमे प्रो० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' परम यशस्वी एवं लब्धप्रतिष्ठ कवि तथा प्रशस्त लेखक मानल जाइत छथि। प्रारम्भसँ संस्कृतक शिक्षा हिनका भेटऽ लागल आ अपन नियमित अध्यवसाय, अनुपम प्रतिभा एवं अविच्छिन्न परिश्रमक बलेँ संस्कृत साहित्यक ई प्रौढ़ विद्वान भेलाह। साहित्याचार्य भेलाक बाद १९३५ ई० सँ मैथिलीक प्रख्यात साप्ताहिक पत्र 'मिथिला मिहिर', मासिक 'स्वदेश' ओ पश्चात् दैनिक 'स्वदेश' पत्रक सफल सम्पादन द्वारा स्वमातृभाषाक अमूल्य सेवा कऽ मैथिली संसारमे बेस ख्यात भऽ गेलाह।

सुमनजीक प्रतिभा सर्वतोमुखी एवं साहित्य-साधना बहुमुखी छनि। संस्कृत, हिन्दी एवं मैथिली—तीनू भाषामे हिनक विविध साहित्यिक कृति उपलब्ध होइछ। विशेषतः हिनक अभिरुचि कविता एवं निबन्धक क्षेत्रमे देखल जाइछ। संस्कृत ओ हिन्दीमे हिनक कतिपय कविता एवं निबंध यत्र-तत्र छपल अछि, जाहिसँ उक्त दूनू साहित्यमे सेहो हिनक सादर चर्चा कयल जाइछ।

संस्कृतमे सुमनजी सर्वप्रथम 'काव्यदीपिका' अलंकार ग्रन्थक टीका लिखलनि जे सर्वथा सर्वत्र प्रशंसित भेल। तदनन्तर किछु दिन धरि ई पं० रामचन्द्र मिश्रक संयुक्त सम्पादकत्वमे मुजफ्फरपुरसँ (१९३४ ई० मे) 'जागृति' नामक संस्कृत मासिक पत्रिकाक सफल सम्पादन कयलनि। समय-समयपर ओ अनेक यशस्वी व्यक्ति सभक सम्मानमे संस्कृतमे अभिनन्दन (प्रशस्ति) लिखैत रहलाह अछि, जाहिमे हिनक दू टा पद्यात्मक प्रशस्ति का० सिं० दरभंगा संस्कृत वि० वि० द्वारा प्रकाशित 'अभिनन्दनमाला' नामक पुस्तिकामे छपल अछि।

एहि अभिनन्दनद्वयक भाषा-सौष्ठव एवं काव्यवैभव अति श्लाघनीय अछि। एकर अतिरिक्त संस्कृतमे एक 'काव्यसंस्कृत भाषा च' शीर्षक निबन्ध प्रकाशित अछि जकर पदलालित्य एवं भावगाम्भीर्य परम प्रशंसनीय अछि।

समय-समयपर हुनक कतिपय हिन्दी कविता एवं निबन्ध सेहो प्रकाशित होइत रहल अछि जकर स्वागत एवं समादर हिन्दीजगतमे पूर्णरूपेण कयल गेल अछि।

बादमे चलिकऽ ई संस्कृत-हिन्दी दिससँ हटैत अपन मातृभाषा मैथिलीमे विविध रचनाक लेल तत्पर एवं सन्नद्ध भेलाह, जकर परिणामस्वरूप ओ अनेको बहुमूल्य रचना प्रस्तुत कयलनि आ एखनहुँ कऽ रहल छथि।

मैथिलीमे ई प्रारम्भमे फुटकर कविताक संग-संग 'उत्तरा' नामक प्रसिद्ध खण्डकाव्यक रचना कयलनि जे सुललित भाषा एवं समस्त काव्यगुणसँ परिपूर्ण अछि। अंकक आश्रयण कऽ 'अंकावली' नामसँ प्रशस्त पद्यावलीक रचना कयने छथि। ई रचना विलक्षण अछि। 'अंक' पर विरचित एहन पद्यावलीक रचना आइधरि प्रायः कतहु नहि भेल अछि। हिनक एक अन्य प्रशस्त रचना अछि 'सौन्दर्य-लहरी' जाहिमे अत्यन्त सरस भावमय गीतक आनन्द भेटैछ। कवीन्द्र रवीन्द्रक गीताञ्जलिक अनुवाद 'अनुगीताञ्जलि' नामसँ कयने छथि। ई ग्रन्थ भाववैशिष्ट्यमे कतोक ठाम कवीन्द्रक गीताञ्जलिअहुसँ बढ़ल-चढ़ल अछि। एकर अतिरिक्त माघ, किरात, ऋतुसंहारादि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक कतिपय अंशक रोचक अनुवाद, प्रख्यात कविगणक प्रशस्ति तथा कतिपय सरस मुक्तक पदक रचना कयने छथि, बालसाहित्यक रूपमे 'सनेस' अपन महत्त्वक लेल परम प्रसिद्ध अछि।

परन्तु अन्यान्य अनेक रचना रहितहु आचार्य सुमनजी मैथिली साहित्य संसारमे सर्वाधिक लोकप्रियता एवं यशोलाभ अपन जाहि रचनात्रयसँ कयने छथि से थिक हुनक तीन कविता-सग्रहात्मक ग्रन्थ प्रतिपदा, अर्चना आ साओन-भादव। ई तीनू पुस्तक बहुतो दिन सँ सहृदय सुधी समाजक हृदयाह्लादन करैत आबि रहल अछि। ई दृढ़तापूर्वक कहल जा सकैछ जे हिनक भाव-सौष्ठव, प्रौढ़कल्पना, उपयुक्त शब्द-चयन एवं आकर्षक भाषा शैली अनुपम

छनि। हिनक उपर्युक्त प्रकाशित रचनासभ पाठक एवं श्रोताके गीतिकाव्यक यथार्थ रसास्वादन करा रहल अछि। संस्कृत साहित्यक प्रौढ़ विद्वान रहलाक कारणें हिनक काव्यमे संस्कृत साहित्यक प्रेरणा एवं प्रभाव अवश्य लक्षित होइछ, जे हिनक वर्णन-शैली एवं संस्कृत-बहुल भाषापर स्पष्ट अछि।

आधुनिक कवि होइतहु सुमनजी प्राचीन कविक कोटिमे प्रायः परिगणित होइत छथि, कारण भाव ओ शैली नवीन रहलोपर हिनक शब्द-परिपाटी एवं अधिकांश विषय-वस्तु प्राचीने अछि। यथा प्रतिपदाक प्रायः सभ पद प्राचीनताक आवरणमे नवीनताक (प्रगतिक) द्योतक अछि। सहृदय पाठक एवं श्रोताक लेल ई त्रिपदा प्रतिपदा अछि। एहिमे अठारह पदक संग्रह प्रस्तुत अछि आ आद्यन्त सभ पद्य भाव ओ कल्पनाक दृष्टिएँ अनुपम अछि। ई संग्रह-ग्रन्थ कविक बहुमुखी प्रतिभाक पूर्ण परिचायक अछि। ई सम्यक् प्रतीत होइछ जे व्याकरण-साहित्यक अतिरिक्त दर्शन, ज्योतिष, तन्त्र, विज्ञानादिक ज्ञान कविके पर्याप्त मात्रामे छनि। प्राचीनता ओ नवीनताक समन्वय करैत भारतीय संस्कृतिक प्रति हिनक अपार अनुराग छनि—से प्रतिपदाक पदावलीसँ नीक जकाँ ज्ञात होइछ। कविताक आह्वान, असूर्यम्पश्या, यमुने आदि कवितासँ सुमनजीक प्रकृति-प्रेम लक्षित होइछ। अपन प्रसिद्ध कविता 'तरु'मे सुमनजी प्रकृतिक मानवीकरण रूपें वर्णन कयने छथि जतऽ ओ वृक्षमे एक सजग तपस्वीक सभ गुण ओ कृत्यक सम्यग् आरोप करैत मानव जीवनसँ ओकर सम्पर्क एवं त्याग प्रदर्शित कयने छथि। एहिना 'आषाढस्य प्रथमदिवसे' शीर्षक कवितामे कविक प्रयोगवादी प्रवृत्ति, हलधर एवं श्मशानमे कल्पनाक प्रौढ़ता, कविताक आह्वानमे प्रगतिवादी दृष्टिकोण तथा यौवन स्मृतिमे कल्पनाक संग-संग अर्थ-गरिमा स्पष्टतः लक्षित होइछ। एहि कवितासभके देखलासँ प्रतीत होइछ जे कविमे पाण्डित्य एवं सहृदताक अपूर्व सामञ्जस्य अछि। विषय एवं भावक दृष्टिएँ जतऽ नवीनताक भान होइछ ततहि पौराणिक गाथा, दार्शनिक तत्त्व एवं कवि-प्रौढ़ोक्ति एवं प्राचीनता ओ आधुनिकताक सङ्गम उपस्थित कऽ देने छथि। वास्तवमे प्रतिपदामे कवि विविध काव्य-रसक, जीवनक विभिन्न परिस्थितिक तथा प्रकृतिक आश्चर्यमय वैचित्र्यमयक बेस प्रभावोत्पादक वर्णन कयने छथि।

अर्चनाक पदसभमे भारतीय संस्कृतिक प्रति कविक श्रद्धा एवं अनुराग सम्यग् अभिव्यक्त होइछ। अभिनव कल्पनाक संग-संग 'अर्चना' कविक भक्ति-प्रधान काव्य प्रतीत होइछ, जतऽ अधिकांशतः पौराणिक कथावस्तुकेँ अपन प्रौढ़ कल्पनाक संग बेश रोचक ओ आकर्षक ढंगेँ प्रस्तुत कयने छथि। अर्चनाक गङ्गातरङ्गिणी, मैथिली-वन्दना एवं मिथिला-महिमा—ई कवितात्रय सहृदय पाठककेँ बड़ आकृष्ट करैछ। पहिल कवितामे गङ्गाक स्तुतिक्रमेँ हुनक पावनत्व एवं लोकोपकारित्वक वर्णन करैत कवि भगवान शिव, विष्णु एवं पर्वतराज हिमालयकेँ हुनक ऋणी बुझैत छथि तथा स्पष्ट शब्देँ ई देखबैत छथि जे हुनका लोकनिक महत्त्व एवं अद्भुत शक्तिक एकमात्र कारण गङ्गेक सम्पर्क थिक। पुनः त्रिविध भव-तापक संहार करबाक प्रार्थना करैत कवि गङ्गाकेँ ब्रह्मा, विष्णु ओ महेशक सहचारिणी कहलनि अछि। मैथिली-वन्दना एवं मिथिला-महिमाक अर्थगरिमा-समन्वित कतिपय पद-पंक्ति उदाहरणीय अछि, यथा मैथिली वन्दनामे कविक अलकृत उक्ति अछि—

जनक जनिक अन्वर्थ
सदर्थक जन्मभूमि ई।
जानकीक जन्मे जनमे
अभिधाक जीति ई॥

एवं प्रकारेँ 'अर्चना'क उक्त पदसभ अर्थ-गौरवक संग-संग श्लेषानुप्रासादि अलंकार-चमत्कार ओ ध्वनि-विन्यासक उत्कृष्ट उदाहरण अछि।

'साओन भादव' सेहो कविक सरस ललित पद-बन्धक संग्रह थिक जाहिमे कविक प्रौढ़ कल्पना-शक्ति, रस-परिपाक एवं प्रकृतिक विभिन्न स्वरूपक दिग्-दर्शन कराओल गेल अछि। एहिमे एकहि वर्षाऋतुमे भिन्न-भिन्न रसक कल्पना कऽ अलंकृत शैलीमे पदरचना कयल गेल अछि, जाहिमे यत्र-तत्र प्रकृतिक मानवीकरणक उत्कृष्ट बानगी प्रस्तुत अछि। प्रकृतिक यादृश सरस भावमय मनोहारी वर्णन 'साओन भादव'मे भेटैछ तादृश मैथिलीमे अन्यत्र दुर्लभ अछि।

अलंकारशास्त्रमे कविक प्रवीणता, कल्पनाक प्रौढ़ता तथा प्रकृतिक प्रेम-विषयक तन्मयता सम्यक् प्रतिभासित होइछ।

एखनहुँ सुमनजी मैथिलीक सेवामे सतत संलग्न छथि। हालहिमे 'दत्तावती' महाकाव्यक प्रकाशित भेलनि अछि। एहि महाकाव्यमे अन्यान्य वैशिष्ट्यक अतिरिक्त एकटा अनुपम वैशिष्ट्य ई अछि जे एहिमे यत्र तत्र तन्त्र-मन्त्र-सहित विविध शास्त्र तत्त्व (साधारण अर्थक संग-संग) निहित अछि जे कि सम्यक् सहृदय सुधी संवेद्य अछि।

सुमनजीक अनेकानेक काव्यानुशीलन सँ हुनक भाषाक सेहो पूर्ण परिचय भऽ जाइछ। संस्कृत भाषा साहित्यक प्रौढ़ विद्वान् रहलाक कारणेँ स्वभावतः हुनक भाषा संस्कृत-बहुल अछि। परन्तु हिनक तत्समो शब्द सभ ततेक प्रचलित अछि जे पाठककेँ अधिक कठिनता नहि होइछ। कविता सभक भाव अवश्य गूढ़ प्रतीत होइछ, परञ्च तत्सम-शब्दक संग-संग सरल ठेठ मैथिली शब्दक प्रचुर व्यवहार, विषयानुकूल शैलीक प्रयोग एवं भावानुकूल शब्द-चयन, अर्थानुगमनमे विशेष सहायक होइछ तथा कवितामे स्वाभाविक प्रवाह सेहो आबि जाइछ। संस्कृत साहित्यक प्रसिद्ध कवि भारवि जकाँ अर्थगौरव हिनक काव्यमे सर्वत्र उपलब्ध होइछ।

हिनक काव्यक विविध गुण ओ शैलीक विवेचनसँ यैह निष्कर्ष बहराइछ जे संस्कृत काव्यसँ प्रेरणा ग्रहण करैत आधुनिक गीतकाव्यक श्रेष्ठ रचयिता प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क काव्य-सौष्ठव बड़ प्रशंसनीय एवं आकर्षक अछि। वास्तवमे आचार्य सुमनजी मैथिली साहित्यक आधुनिक युगक पूर्ण सफल एव आदर्श कवि छथि। एखनहुँ ई मैथिली साहित्यक अभिवृद्धिमे महत्त्वपूर्ण योगदान कऽ रहलाह अछि।

आचार्य 'सुमन'क शिव

डा० श्रीरामदेवझा

घोर धार्मिक अनास्था ओ अनीश्वरवादी तथा उपयोगितावादी कविक ठीक विपरीत मनोवृत्तिक कवि छथि आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' जे अपन शिव विषयक कविता सभमे नवीन प्रकारक चिन्तनक प्रचुर सामग्रीक संग्रथन कयने छथि आ ई चिन्तन शिवक प्रति आस्था, विश्वास ओ भक्ति-भावनाक पोषके अछि, दूषक नहि। सुमनजीक व्यक्तित्वमे राजनीति ओ साहित्य, शास्त्र ओ काव्य, पाण्डित्य ओ कवित्वक अपूर्व संगम अछि, प्रखर राष्ट्रवादसँ प्रेरित ओ आस्था विश्वाससँ संपूरित हिनक काव्य सम्पूर्ण भारतीय संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करबामे समर्थ अछि। अतः कविताक उत्सक रूपमे भारतक सांस्कृतिक अतीतमे जयबाक चेष्टा कयलनि अछि। संस्कृतिक कोन-कोन विन्दुसँ कविता कविक आह्वान करैत अछि तकर गणना करैत सुमनजी शिव-पार्वती-परिणयक प्रेरणा-स्रोतक दर्शन करैत छथि—

घर घर गौरी करथि तपस्या पूजि तुषारी प्रात।
वर बौराह उमाक देखिकेँ होइछ उर आघात॥
मुदित किन्तु हिमवन्त विकल मन मैना स्नेहक स्रोत।

वस्तुतः एही प्रेरणा-भूमिपर मैथिली साहित्यमे एतद्‌विषयक एतेक परिमाणमे गीतक रचना भेल। एखनहु कवि एकरा काव्यक हेतु एकटा जीवन्त विषय मानैत छथि। गौरीक तपस्या वर-बौराहक प्राप्ति एवं तत्सम परिस्थितिमे कवि कविताक आह्वानक श्रवण कयलनि अछि।

ई शिव विषयक बहुतो कविताक रचना कयने छथि जाहिमे विशेष स्तुति एवं स्तोत्र प्रकारक छनि। ई सभ हुनक विभिन्न कविता-संग्रह सभ, यथा—

शिव महिमा, अंकावली, जतरा चारू धाम, कथायूथिका इत्यादिमे संकलित छनि। शिवविषयक कवितामे उल्लेखनीय छनि—'नमः शिवाय', 'अष्टमूर्ति पचदेवता स्तुतिमे शिव ओ गणेशक स्तुति, 'द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तुति', 'पशु पशुपति', 'स्वर्णथारक उपहार' इत्यादि। संस्कृतक शिवविषयक प्रख्यात स्तोत्र ओ काव्यक सेहो अनुवाद कयलनि अछि। एहिमे प्रमुख छनि पुष्पदन्त विरचित 'शिवमहिम्नस्तोत्र', कालिदास विरचित 'नागेन्द्र हाराय…' स्तोत्र मिथिलामे अत्यन्त प्रशस्त रहल अछि। शंकराचार्यक स्तोत्र शिवक पचाक्षर मन्त्र 'नमः शिवाय' पर आधारित अछि। स्तोत्रक प्रत्येक श्लोक पचाक्षर मन्त्रक एक-एक वर्णसँ क्रमशः आरम्भ होइत अछि। किन्तु सुमनजी जखन ओकर अनुसरण करैत मैथिलीमे स्तोत्र-रचना करय लगलाह तँ ओ एकटा नवीन काव्यकृति बनि गेल जे शंकराचार्यक स्तोत्रसँ कतोक अंशमे आगाँ बढ़ि गेल अछि। शंकराचार्यक स्तोत्रक पहिल श्लोक अछि—

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांग रागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय॥

सुमनजीक 'न' सँ आरम्भ पहिल पद्य छनि—

नन्दी निकटे नागेश नटेश्वर नाथ नित्य नाचथि नङटे।
नयनानल नियमित निशानाथ नटवर नकारमय नमस्कार॥

एहिना 'म' 'श' 'व' एवं 'य' वर्णनक स्तोत्रात्मक पद्यक आयोजन कयल गेल अछि।

अष्टमूर्ति (अंकावली) कवितामे भगवान शिवक विश्वव्यापिनी अष्टमूर्तिमे सँ प्रत्येक केर स्वतंत्र रूपमे वर्णन कयलनि अछि। एहि प्रकारक प्रत्येक मूर्तिक स्वतंत्र रूपमे स्तुति करबाक उदाहरण सुमनजीसँ पूर्वक शैवसाहित्यमे नहि भेटल अछि। अन्यो भाषामे बड़ विरल होयत सैह संभावना अछि। एहि कवितामे समस्त चराचर जगतमे भगवान् शिव अपन अठारह मूर्तिक रूपमे व्याप्त भऽ एहि सृष्टिक्रमकेँ चलायमान रखने छथि, ई भाव व्यक्त कयल गेल अछि। सुमनजी राष्ट्रवादी कवि छथि, तेँ हुनका लेखनीसँ कोनो कविता एहन नहि निःसृत भऽ सकैछ जाहिमे कोनो-ने-कोनो रूपमे राष्ट्रीय चेतनाक समावेश

नहि हो। अष्टमूर्तिक वर्णन द्वारा अखण्ड भारतक राष्ट्रीय स्वरूपकें स्मरण दियौलनि अछि। अष्टमूर्त्तिमे सूर्यकें शिवक प्रत्यक्ष मूर्त्ति मानल गेलनि अछि। शेष सात मूर्त्ति शिवलिंग रूपमे भारतक विभिन्न भागमे अनादिकालसँ स्थित मानल जाइत अछि। सोममूर्त्ति प्रभास क्षेत्रक सोमनाथ ओ बंगलादेश (पहिने– पूर्वी बंगाल)क बट्ट ग्रामसँ ३८ मील दूर सीताकुण्डमे चन्द्रनाथक रूपमे स्थित अछि। यजमान मूर्त्ति पशुपतिनाथ नामसँ नेपालमे, क्षितिमूर्त्ति एकाम्रेश्वर नामसँ शिवकांचीमे, अप्मूर्त्ति जम्बूकेश्वर नामसँ त्रिचनापल्लीमे, तेजोमूर्त्ति, अरुणाचलमे, वायुमूर्त्ति कालहतीश्वर नामसँ तिरुपतिक निकट, आकाशमूर्त्ति चिदम्बरम्मे स्थित अछि। तें कवि अष्टमूर्त्तिक वन्दना द्वारा भारतेक वन्दना कयलनि अछि। यैह राष्ट्र-चेतना हिनक काव्यग्रन्थ 'जतरा चारू धाम'मे दृश्य अछि। एहि ग्रन्थमे द्वादश ज्योतिर्लिग—सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ओंकार अमलेश्वर, केदारनाथ तथा घुश्मेश्वरमेसँ प्रत्येकक स्वतत्र रूपसँ वर्णन ओ वन्दना कयल गेल अछि। ई ज्योतिर्लिग भारतक विभिन्न भागमे स्थित अछि। द्वादश ज्योतिर्लिंगक वन्दना द्वारा भारत राष्ट्रक अन्तःस्थ एक सूत्रात्मकताक अनुसन्धान कविक वैशिष्ट्य थिकनि। भक्ति-भावनाक अभिव्यक्तिक संग भारत राष्ट्रक एकात्मस्वरूपक प्रतिपादन मैथिली शैव साहित्यमे नवीन चिन्तनक परिणाम थिक। एहि कविताक आरंभेमे कवि अखण्ड भारतक स्मरण करैत छथि—

भारत राष्ट्र अखण्ड जकर
भूखण्ड एक सौराष्ट्र।

कथा-यूथिका नामक कथाकाव्यक संग्रहमे दुइ गोट शिव विषयक कथा अछि। एहि दुनू कथामे शिवभक्तिकें कर्मकाण्डीय उपचार अथवा आत्मतुष्टि-मुक्तिक साधन रूपमे उपस्थित नहि कऽ मानव-विवेकक चरमोत्कर्षक रूपमे चित्रित कयलनि अछि। 'स्वर्णथारक उपहार' विश्वनाथ मंदिरमे एकटा एहन भक्त दम्पतीक कथा अछि जे विश्वनाथक दर्शनार्थ अबैत अछि, किन्तु बाटहिमे एकटा रुग्ण भिक्षुकक सेवा करय लागि जाइछ। मन्दिरमे एकटा स्वर्णथार छलैक जे शिवक यथार्थ भक्तेकें भेटितैक। विभिन्न रूपधारी भक्त सभक मेला लागि गेल छल, किन्तु ककरहु ओ प्राप्त नहि भऽ सकलैक।

उपरिर्चाचित भक्त-दम्पती भिक्षुकक सेवा कऽ सभसँ अन्तमे मन्दिरमे दर्शन-पूजन हेतु आयल। ओ स्वर्णथारक प्राप्तिक उद्देश्यसँ आयलो ने छल, तथापि ओ स्वर्णथार स्वतः ओकरा लगमे चल अयलैक। ई छल यथार्थ शिवभक्तिक महिमा जकर प्रतीति पीड़ितक सेवासँ भेल।

'पशु-पशुपति'मे सेहो एकटा शिवभक्तेक कथा वर्णित अछि। भक्त एकनाथ गंगोत्तरीसँ गंगाजल भरि रामेश्वरकेँ रिसाल करबाक लेल विकट पथ-प्रान्तरकेँ पार करैत बहुतो दिने रामेश्वर पहुँचैत अछि। ओतय मन्दिरसँ किछुए दूरपर छल कि पियाससँ मरैत एकटा गदहाकेँ देखि दयासँ द्रवीभूत भऽ ओकरा मुहमे ओ गंगाजल ढारि दैत छैक, जकरा एकटा महोद्देश्यसँ एतेक कष्ट सहिकऽ अनने छल तथा जे लक्ष्य धरि पहुँचि चुकल छल। पिपासाकुल मरैत गदहासन जीवक रक्षाक हेतु ओतेक मूल्यवान गंगाजल खर्च कऽ दैत अछि। भावविभोर भऽ कऽ पशुपति-पूजक एकनाथ पशुक पूजा कऽ बैसल। किन्तु वास्तवमे पशुक रूपमे भगवान पशुपतिए पूजा ग्रहण कयलथिन—

सहसा मन्दिर घण्टा बाजल जय धुनि जलद गभीर।
पशु बलि पशुपति स्वयं ग्रहण कैलन्हि जे गंगानीर॥

सुदूर उत्तरसँ गंगोत्तरीक जल लऽ कऽ सुदूर दक्षिणमे रामेश्वर शिवकेँ चढ़यबाक संकल्प चित्रित कयनिहार एहि कथाक चयनमे सेहो कविक राष्ट्रवादी भावना सक्रिय रहलनि अछि। कविक मस्तिष्कमे भारतक 'आसेतु हिमाचल'क मानचित्र स्थित छलनि जकरा एहि कथा-काव्यक माध्यमसँ अभिव्यक्ति देलनि अछि। शैव साहित्यमे राष्ट्रचिन्तन ओ राष्ट्रवादी भावना समाहित करब शिवभक्तिक संग राष्ट्रभक्तिक स्मरण करायब सुमनजीक राष्ट्रीय विचार-धाराक परिणाम थिक।

पौराणिक आख्यानक नवीन मानव-वादी कर्त्तव्यक व्याख्या करैत कवि कहैत छथि—

पंचदेवक पांचभौतिकता उपर देवत्व निर्भर
आइ देवत्वक प्रतिष्ठा मानवक निष्ठाक ऊपर

तेँ गौरीकेँ श्यामा बनबाक आग्रह करैत छथिन—

आइ गौरी वनथु श्यामा, शिव जखन शव वनल भूतल

ज्योतिर्लिंग शून्य श्मशान भूमिएमे नहि जनपथमे सेहो द्युतिमान भऽ ज्योति विकीर्ण करथु—

ज्योतिर्लिंग इरोत सून मसान नहि जनपथहु चमकओ।

(नव पुरानः नवइतिहास— अन्तर्नाद)

हिनक कविताक मुख्य भावधारा राष्ट्रवादक छनि। भारत राष्ट्रक वन्दनामे कवि बहुमुखी भऽ जाइत छथि आ एहन बेरमे भारतक विभिन्न गौरव ओ प्रेरणा बिन्दुमे शैवपीठ, तीर्थ, लिंगक स्मरण करैत छथि, जेना 'पूजन-आयोजन' कवितामे—

'काम रूपक मुखर ज्वाला अमरनाथक हिम-शिवाला।'
'सेतु बंधक वृषभ-केतुक स्नपन गंगाजल हेतुक।'
'नर्मदा गोदावरी जल महा-कालक उपर ढारी।'

'ज्ञान-विज्ञान' कवितामे—

'रुद्र एकादशो द्वादश ज्योतिर्मय दिगंते।
शक्ति पीठहु मठहु मंदिर तीर्थ कुंड न आदि-अंते।'

'जा रहल छी' कविता वस्तुतः सुमनजीक कविताक आत्मकथ्य थिकनि जाहिमे कविता द्वारा भारतक राष्ट्रिय भावनाक उत्सबिन्दु दिस संचरण करैत कहल गेल अछि—

सोमनाथक घड़ी घंटा विश्वनाथक बरद बंठा।
लटपटैल झमैल तकरा पानि चढ़ाबय जा रहल छी॥

(समस्त कविता 'अन्तर्नाद' संग्रहमे)

देशभक्ति ओ राष्ट्रभक्तिमे कोनो विरोध तँ नहिएँ अछि, अपितु भक्तिएक एकटा प्रकारक राष्ट्रभक्ति थिक। अतः राष्ट्रवादी विचारधारामे भक्ति भावना संबलहिक काज करैत अछि। तेँ सुमनजी शिवहुक प्रति आस्थावान् छथि। भारतीय समाजक हेतु शिव पूज्य देवता थिकाह। शिवपर भेल आक्षेप भारत राष्ट्रपर आक्षेप थिक से मानि ओ विदेशी विद्वान् द्वारा कयल गेल व्याख्याक उत्तरमे कहैत छथि—

"भारतीय उपासना-शास्त्रमे 'एकोहि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थु' द्वारा ब्रह्म एवं शंकरक तादात्म्य प्रकट अछि। तथापि जे ऐतिहासिक रुद्रकें अनार्य देवता कहैत छथि, हुनक रूप कल्पनामे अश्लीलता देखैत छथि, ओ नारिकेलक कठोर आवरण तँ देखैत छथि, किन्तु ओकर आन्तरिक स्निग्ध रसक आस्वादनसँ दूर रहैत छथि। यजुर्वेदीय रुद्रसूक्तमे— नमः शंकराय च, शिवाय च, शिव तराय च—एहि क्रम योजनाक दिस जेना जानिबुझिकऽ दृक्-पात नहि करय चाहैत छथि।" (शिवमहिमा, भूमिका)।

कविक आस्थाक उद्‌घोषणा 'शिवमहिमा'क भूमिकामे हुनकहि शब्दमे अछि—'मातृभाषामे एकरा छन्दोबद्ध करबाक प्रयास नहि, केवल तेन तृप्यन्तु शंकरः।'

कविक कवि 'सुमन'

डॉ० श्रीविश्वेश्वरमिश्र

मैथिली-आलोचना-समालोचनाक प्रवर्त्तक आचार्य रमानाथझा अपन 'कविता-कुसुम'क सम्पादन करैत, सुमनजीक पाण्डित्य ओ काव्य-कलाक वैशिष्ट्य देखबैत हिनका 'कविक कवि' कहल से एहि अर्थमे जे हिनक कविताक रसास्वादन करबाक लेल एक गोट कविक हृदय चाही। एहिना अपन 'नवीन गीत'क सम्पादन करैत, सुमनजीक पाण्डित्य-प्रकर्ष ओ काव्य-कौशलक चमत्कार देखबैत रमानाथ बाबू हिनका वृहत्त्रयीक कवि कहल। मुदा हमरा तँ हिनक कवित्वक परिपक्वता, उक्तिक प्रौढ़ता, कल्पनाक आह्लादकता, भावनाक भव्यता, पाण्डित्यक गम्भीरता, संस्कृत-काव्यक सरसता, शब्दक लालित्य, भाषाक माधुर्य, अभिव्यक्तिक प्राञ्जलता, वर्णनक चमत्कार ओ हृदयकेँ तुरत स्पर्श कऽ लेबाक उद्रेक क्षमताकेँ देखैत महाकवि कालिदासक प्रसंग कहल ओ उक्ति स्मरण भऽ अबैत अछि जाहिमे हुनका कविकुलगुरु कहल गेलनि अछि—

'भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः'।

कारण, कालिदासक प्रसंग कहल गेल वाणक उक्तिक सदृशे सुमनोजीक कविता-कामिनी हृदय-रंजिनी अछि—

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥

मुदा, सुमनजीकेँ 'कविक कवि' कहि रमानाथ बाबू हिनक कवित्वक गाम्भीर्य, अभिव्यक्तिक सहजता, शब्द-विन्यासक सुष्ठुता, शिल्प-शैलीक परिनिष्ठता, विच्छित्तिक विलास ओ कविताक बहुआयामी प्रवृत्तिक अभिव्यञ्जना कयने छथि, ओ एहि दृष्टिएँ सुमनजी वस्तुतः 'कविक कवि' थिकाह। ई मात्र कविताक लेल कविता नहि लिखैत छथि। ई जनैत छथि जे कविता ककरा

कहल जाइत अछि, कविकर्म की थिक, कविताक आत्मा की थिकै, सार्वदेशिक-सार्वकालिक सार्वभौमिक कविताक तत्त्व की थिकै ? एहि पृष्ठभूमिमे सुमनजी वस्तुतः 'कविक कवि' थिकाह।

सुमनजी बुझैत छथि जे "हर्ष ओ संघर्ष, अनुरक्ति ओ विरक्ति, साफल्य ओ वैफल्य—जीवन-रेखाक जे दुइ अबलम्बी विन्दु अछि, ओ संस्कारवश जखन वृत्ताकार रूप धारण करैछ तखन ओकर अन्तरालमे कविताक परिधि-लेखा प्रस्तुत होइछ।" ई मानैत छथि जे "काव्य ने थिक कामशास्त्रक प्रयोगात्मक शिक्षा आ ने थिक दर्शनक दुरूह दीक्षा, कविता ने थिक नितान्त सजल सरिता, ने थिक एकान्त तिख-रुख मरु-सिकता, ई तँ ओ पङ्क थिक जाहिमे जलक आर्द्रताक संगहि मृत्तिकाक ठोस कण सेहो संपृक्त रहैछ ओ जे पुनि पङ्कजक रूपमे सजल सरसता एवं निर्जल निर्लेपता दूहूक चित्रमय सामञ्जस्य उपस्थित करैछ।" ई कहैत छथि जे "काव्यकलामे वास्तविकता एवं काल्पनिकता दूहूक सत्ता सनातन सत्य थिक।" सुमनजीक विचार छनि जे "जीवन-वनमे विविध भावक तरु-लता पतझड़ ओ वसन्तक डाँट-दुलारमे—प्रचण्ड पछबाक आघात ओ कोमल मलय-समीरणक सिहरणमे जे द्वन्द्वात्मक अनुभूतिक 'धुपछाँही' प्राप्त करैछ ओ मञ्जरित होइछ कोमल काव्य-रसाल फलक भूमिकाक रेखा रूपमे।"

सुमनजीक मान्यता छनि जे लक्षण-वीणाक ई तार ने पुरान पड़ल अछि, ने घसैल-विझैल अछि, युगप्रवृत्तिक अनुसार कखनहु रस-माधुर्य तँ कखनहु अलङ्कार-झङ्कार, कखनहु वक्रिमा-भंगिमा तँ कखनहु लक्षणा-व्यञ्जना अपन विस्तार करैत रहैछ। परञ्ज एहि सभ लक्षण-वादक कारणे कहियो भारतीय कवि लोकनिक प्रकृत रचना प्रभावित नहि भेल।" ओ तेँ ई कहैत छथि जे "काव्य कल्पनाक चमत्कार रहौ आ जीबनक चीत्कार, अभिधेय विशेष मानल जाओ वा अभिधान प्रकार—साहित्यक एक मात्र लक्ष्य रहल अछि असमाञ्जस्यमे सामाञ्जस्य आनब, कल्पनाके वास्तविकतामे ओ वास्तविकताके काल्पनिक रंग-टीपमे रङब, शिवके सुन्दर रूपमे, सुन्दरके शिव रूपमे उपस्थित करब, आदर्श ओ यथार्थके सुसंगत करब।"

सुमनजीक काव्य-कला एहि व्यापक पृष्ठभूमि ओ चिरन्तन सीमा-परिधिमे

रचित भेल अछि। काव्य-कलाक ई सार्वदेशिक, सार्वकालिक ओ सार्वभौमिक प्रवृत्ति सुमनजीके 'कविक कवि' पदपर सुप्रतिष्ठित कयलक अछि।

सुमनजी एक दिस जँ 'त्रिशतक'कार भर्तृहरिक 'विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः' सदृश सुप्रसिद्ध सूक्तिक पर्यन्त उत्तर अपन 'गंगातरंगिणी' शीर्षक गंगास्तुतिमे देबासँ बाज नहि अयलाह, तँ दोसर दिस अपन 'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे'मे 'मेघदूत'क यक्षिणीक विरह-वेदनाक अवमूल्यन कऽ प्राकृतिक सौन्दर्यक एकान्त गायक कविकुलगुरु कालिदासहुके नहि छोड़लनि—

अछि उर जागल अलकाक व्यथा
कवि ! रामगिरिक की सुनब कथा ?

स्वतंत्रतापूर्व भारतक त्रासद वातावरण सुमनजीक कविके आकुल-व्याकुल कऽ देलकनि, मुदा राजनीतिक चेतनासँ उद्बुद्ध सुमनजी त्रस्त नहि भेलाह, शिवमय क्रान्तिक आशावान सुमनजीक कवि सौन्दर्यमय उद्घोषणा कयल—

आइ वातावरणमे अछि तप्तयुगकेर ताप
भैरवी झंझाक गतिमे झरत जगतक पाप

सुमनजीक कल्पना सत्य भेल। स्वतंत्रता-आन्दोलन भेल, सफल क्रांतिओ भेल। राष्ट्र स्वतंत्र भेल। मुदा ई स्वतत्रता प्राप्त भेल भारतके खण्डित कऽ। खण्डित भारतके देखि सुमनजी विह्वल भऽ उठलाह। हिनक कवि कचोटैत रहि गेलनि। अन्ततः हिनक व्यथित-थकित कवि कहि उठल—

पूर्वाचलसँ सुन्दर वनक विहंगम उड़ि-उड़ि आबि
सिन्धु-संगिनी रावी कनइछ खण्डित रसना दाबि
उदित भानु रजनी-तम चिरइत नव-नव लय आलोक
किन्तु हमर अछि रूप विरूपित हर्षहु बोरल नोर

एतबे नहि, राष्ट्रक असंख्य जन-समुदायके आर्थिक विपन्नतासँ क्षुधित, पिपासित ओ नग्न देखि सुमनजीक कवि 'कविताक आह्वान' करैत अछि, चकित-व्यथित होइत अछि ओहि—

हर-कोदारि-खुरपीक पुजारी अर्ध-नग्न कत लक्ष
क्षुधित-पिपासित रक्त शुष्क कय जोति कोड़ि जी दाबि

'सुजला सुफला जनिक कठिन श्रम' देखि जाहि 'कृषक श्रमिक केर श्रमजल चुवइत' अछि तकर गृहिणी अछि मात्र 'साग-भात लय ठाढ़ि खेतमे ।'

एहिना सुमनजीक कवि 'ओहि आनाथ विधवाक अश्रुहिक सगरो उमड़ल बाढ़ि' देखि करुण कन्दन करऽ लगैत अछि, जकर—

पति परलोक बसल, घर उजड़ल चिन्तित चित्त अधीर
मास-माससँ जकर कमासुत सुत ज्वर गलित शरीर
जकर अन्नपूर्णा भसिऐले कौशिकीक मझधार
जीवन तट पर एक शब्द सुनइछ जे हाहाकार

यैह थिक सुमनजीक प्रगतिवाद, यैह थिक यथार्थवाद जे हिनक संवेदनाक स्पन्दनशीलताक चरम परिणति थिक। सुमनजीक ई स्पन्दनशीलता तखन तीव्रतम रूपमे अभिव्यञ्जित होइत अछि जखन ई कलियुगक (वर्त्तमानक) हल-धरकेँ त्रेताक हलधर विदेह जनकसँ श्रेष्ठ कहैत छथि—

समता अहँक कतयसँ करता जनकपुरक श्रीमान् ?
किन्तु विदेह वैह कहबै छथि माटिक अहाँ किसान

यैह भावना, कल्पना, संवेदना, स्पन्दशीलता सुमनजीकेँ 'कविक कवि' बना देलकनि अछि। यैह थिक हिनक कवित्वक प्रौढ़ता, प्रतिभाक परिपक्वता, कल्पनाक दृढ़ता ओ विच्छित्तिक विन्यास।

अपन विशिष्ट भाव-भंगिमासँ साम्यवादक अभिव्यञ्जना कयनिहार सुमनजीक कवि श्मशान प्रसंगक अपन एकटा अनुभूति एहि शब्द-शिल्पेँ अभि-व्यक्त कयलनि अछि जे—

पूजी-श्रममे नहि भेद-भाव' अछि अहँक राज्यमे साम्यवाद
राजा रंकक अछि तुल्य मान, अछि साम्य एतहि व्यवहारवान

कविता-प्रवृत्तिक यैह विशाल आयाम सुमनजीकेँ 'कविक कवि' बनबैत छनि। प्राचीन परम्पराक रस-विन्यास देखबाक हो तँ देखू सजल शीतल श्यामल सघन मेघ-मालासँ परिपूर्ण हिनक 'साओन-भादव'। कल्पनाक इन्द्र-धनुषी आभा देखबाक हो अथवा प्रतिभाक परिपक्वता देखबाक हो, उक्तिक प्रौढ़ता देखबाक हो अथवा विच्छित्तिक विन्यास देखवाक हो, तँ देखू हिनक 'पयस्विनी' जे "पय पानिओ थिक दूधो थिक। पयस्विनी विन्दु-वाहिनी सरितो

थिक, दुग्धधारिणी धेनुओ थिक। पयोधर मुक्ताहार शृङ्गारी—बम दूधक धार—उरोजो थिक, गगनविहारी तृण-तृण जीवनसञ्चारी पावसी मेघो थिक। रुचि अछि रसना जुड़ाउ—क्षुधा मेटाउ। शुचि अछि, आचमन-अवगाहन कय कालुष्य हटाउ—हृदयकेँ शीतल बनाउ, ययेच्छसि तथा करु।"

सुमनजी अपनहुँ स्वीकारैत छथि जे "कविता सरिता जकाँ अवश्य बहुत उँचाइसँ अवतरित होइछ, कविगिरिक गौरव-रहस्यसँ, निश्चय, कोनहुँ एकान्त प्रान्तमे गलित होइछ। परञ्च ओ सार्थक बनैछ सामाजिक धरातलक सहज समतलमे। घन-पयोधन, सत्ते, दूर गगनमण्डलमे उमड़ि अबैछ, परञ्च बरिसैछ जखन 'भूमि नियराये 'भूतलमे, तखने ओ सर-सरिक रूपमे पुञ्जित-प्रवाहित होइछ' सङ्गहि पयस्विनी—खाहे ओ पार्वती रहओ वा पावसी—दूहूक वेग गरिमा अचल प्रशान्त सागरक महिमामे जखन लघिमा बनैछ तखने अपनाकेँ सार्थक करैछ —तखने द्रुत-गतिकेँ धन्य बनबैछ। काव्य-साधनाक यैह थिक प्रथम एवं चरम भाव-भूमि।"

यैह भाव वैविध्य, बहुविषयी प्रवृत्ति, वहुरूपी कल्पना, बहुरंगी चित्र ओ चित्र-विचित्र रंग-टीप सुमनजीकेँ कविक कवि बनबैत छनि।

काव्य-मर्मज्ञ पण्डित जनैत छथि जे कलाक दृष्टिएँ काव्य-सृष्टिक दू गोट सोपान होइत अछि, एक प्रेरणा ओ दोसर रचना। प्रेरणाक उद्भव शिक्षा-दीक्षा, संस्कार ओ भावुकतासँ होइत अछि। भावुक ओ कवित्व संस्कारीक अन्तस्तलमे काव्य-प्रेरणा होयब स्वाभाविक। मुदा प्रेरणा भावसँ केओ कवि नहि भऽ सकैत अछि। प्रेरणाकेँ एहन अभिव्यक्तिओ देब आवश्यक जे पाठक-श्रोताक हृदयमे ठीक ओहने प्रेरणा उठा सकय। प्रेरणा, संस्कार ओ रचनाक धरातल परिश्रम एवं अभ्याससँ निर्मित होइत अछि। कविक साधना रचनाक यैह अभ्यास थिक, अनुभूतिकेँ जँ अनुरूप अभिव्यक्ति नहि देल जा सकय तँ ई साधना अपूर्ण कहाओत, शिक्षा-दीक्षा ओ संस्कार-भावुकतासँ अनुप्राणित यैह प्रेरणा, प्रेरणाक आनुरूपिक यैह अभिव्यक्ति ओ काव्य-कलाक यैह साधना कोनहु कविता प्रणेताकेँ कविक कवि बनबैत अछि, कविकुलक अन्यतम पदपर सुप्रतिष्ठित करैत अछि। एही सर्वतोमुखी गुणक गुणी सुमनजी कविक कवि कहौलनि। हमरा तँ हिनकहु प्रसंग वैह उक्ति सार्थक बुझि पड़ैत अछि जे कालिदासक प्रसंग कहल जाइत अछि "पुराकवीनां गणनाप्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदास।"

श्रीसुमनजीक ऋषि-व्यक्तित्व

डॉ० श्रीपरमानन्दपाठक

मैथिली साहित्यके आचार्यप्रवर मनीषी कवि श्री सुमनजीक व्यक्तित्व-रूपमे अनुपन ईश्वरीय अवदान प्राप्त छैक, जनिक भावकत्वांशक गम्भीर परिचय प्राप्त करब नितान्त अपेक्षित ।

तत्त्वाभिनिवेशी भावकक रूपमे सुमनजीक व्यापक प्रतिभाक परिचय हिनक स्वरचित ग्रन्थक भूमिकांश तथा अन्य रचित पोथीक भूमिका किंवा सम्मतिक गम्भीर अध्ययनसँ प्राप्त होइत अछि, जकर आधारपर हिनक व्यक्तित्वक दुइ गोट पक्षक–राष्ट्रिय ओ साहित्यिक––स्पष्ट संकेत भेटैत अछि । विदित अछि जे सुमनजी जाहि तरहेँ अपन समस्त जीवनके सारस्वती साधनाक मन्दिरमे नियोजित राखल ताही तरहेँ राष्ट्रिय भावनासँ सेहो ओतप्रोत राखल अछि जाहिसँ हिनक दृष्टिपक्षक वैशद्यक स्पष्ट परिचय भेटैत अछि। हिनक राष्ट्रिय भावना 'गाम धरती'क उपादान-उपकरणसँ लय मातृभूमिक समस्त उपादान-उपकरणक प्रति नैसर्गिक प्रेमसँ उद्भावित अछि । हिनक विश्वास छनि जे मातृभूमिक प्रति प्रेमक विस्तार-प्रसार एवं राष्ट्रिय व्यक्तित्वक विकास हेतु मातृभूमिक परिक्रमा नितान्त आवश्यक, चारूधामक 'जतरा' अनिवार्य–''बिनु आधारसँ आधेय नहि, ई कथा सत्य । बिनु भूमिपृष्ठक भवन नहि, ई तथ्य । किन्तु कथ्य एतबे जे स्वयं भूमिक हेतु भूमिकाक काज कोन ? ओकर आधार-आधेय भाव थिक गुरुत्वाकर्षण । भूमिमे गुरुत्वक भावना ओ ओकरा प्रति सहज आकर्षण, यैह रहल अछि भू वासीक साधना । 'स्वर्गादपि गरीयसी'क मान्यता एही धारणासँ चिराय-चिरकालाय व्याप्त अछि । भारतवर्षक जे महापुरुष, सन्त, ज्ञानी-विज्ञानी कवि-कलाकार एते धरि जे स्वयं अवतार पर्यन्त भेल छथि तनिक जीवनक प्रथम साधना रहल अछि अपन मातृभूमिक परिक्रमा ।

वस्तुतः राष्ट्रक कण-कणसँ विनु परिचय प्राप्त कयने अपन आदर्शक व्याप्ति संभव नहि। तेँ तँ रामकेँ वन-वन गिरि-सागर घुमय पड़लनि, कृष्णकेँ ब्रजकुंज ओ नदीपुलिनसँ लय सागर मध्य वास करय पड़लनि" ।1

उपरिलिखित अवतरणमे 'गुरुत्वाकर्षण' पदक सन्निवेश ध्यातव्य अछि जे आन-आन संकेतक अतिरिक्त हिनक राष्ट्रिय भावनाक नैसर्गिकता ओ व्यापकताक परिचायक अछि। हिनक तात्पर्य छनि जे समस्त देशवासीक हृदयमे राष्ट्रप्रेमक भावना ओतबेक नैसर्गिक जतेक गुरुत्वाकर्षण नियमक अनुपालन। हिनक विश्वास छनि जे व्यक्तित्वक व्यापकता-महत्ताक लेल मातृभूमिक परिक्रमा अनिवार्य।

चारू धामक 'जतरा' सँ एक दिस बड़-बड़ महापुरुष सन्त ज्ञानी विज्ञानीक रूपमे व्यक्तित्वक उदात्तीकरण होइत अछि तँ प्रकृतिक पारदर्शी कविव्यक्तित्वक सेहो निष्णात–अवदात विकास होइत अछि। सुमनजीक एहि रूपमे विकसित व्यक्तित्वक व्यापक दृष्टि छनि जे एहि विराट् प्रकृतिक आयाममे ज्ञान-विज्ञान, लौकिक, अतिलौकिक,कला, कल्पना आदि समस्त चिन्तन एवं भावनक अक्षय स्रोत सन्निहिते टा नहि अतःपर अप्राप्य अछि। कला कल्पनाक हेतु तँ प्रकृति अनिवार्यतः अपेक्ष्य, जाहि तथ्यकेँ सुमनजीक विदग्ध शब्दावलीमे देखी सैह नीक–

"कला कल्पनाक क्षेत्र तँ ज्ञान-विज्ञान दूहूसँ विलक्षणे। एतय प्रकृति दृश्ये नहि दर्शको, उपभोग्ये नहि उपभोक्तो। प्रकृतिक उद्दीपना प्रसिद्ध, किन्तु एकर आलम्बन विभावत्व सेहो सिद्ध। ततबे नहि, एतय शुष्क पाषाणो बाजि उठैछ। गिरि पर्वतो शैशव यौवन एवं वार्द्धक्य रूपावस्था स्थिर रखैछ। दिवा युवाक एवं रजनी सजनीक रूपमे सन्धावेला मध्य मिलनातुर होइछ। उषा कुमारी ओ प्रभात कुमार गगनांगनमे नित्य खेलय अबैछ। कखनहुँ 'गौरी नारि' मुखचान छवि सजलि इजोरिया दाइ पहुँचैछ तँ पुनि 'पूनो धोबिनि' दिशापटकेँ दप-दप सजाय' रखैछ।2

सुमनजी भारतभूमिक 'चारूधाम'क भौतिक जतरा कयने होथि वा नहि मुदा उपरिलिखित उद्धरणसँ ई तथ्य स्पष्ट होइत अछि जे 'चारू धाम'क की कथा, एहि मनीषीक अन्तर्यात्रा भारतीय निसर्गक कण-कणमे भेल अछि आ

ओकर (निसर्ग) 'दोरुखा द्वारिमे चेतन-अचेतन दुहुक प्रवेश-निवेश'क दर्शन करैत विस्मायक आनन्दसँ हिनक अन्तःकरण उद्वेलित होइत रहल अछि, हिनक समस्त व्यक्तित्व प्रकृतिक विराट् आयाममे किंवा हिनक विराट् व्यक्तित्वक आयाममे समस्त प्रकृति समाहित भऽ गेल अछि जकर अभिव्यक्ति हिनक कारयित्री प्रतिभाक क्रियाशीलन प्रतिफलनमे होइत रहल अछि, जकरा वर्ड्सवर्थक शब्दमे 'द हार्वेस्ट ऑफ ए क्वाइट आइ' कहल जा सकैत अछि।

भारतीय भौतिक उपादाने टासँ नहि अपितु अपन राष्ट्रक ज्ञान-विज्ञान साधनाक साहित्यिक प्रतिफलनस्वरूप वेदक निगूढ़ चिन्तन-सौन्दर्यसँ सेहो सुमनजीक प्रज्ञा समलकृत रहल अछि आ स्वराष्ट्रक एहि चिन्तन भाण्डागारक श्रेय-प्रेयात्मक अन्तस्तत्त्वक अभिव्यक्ति कतिपय प्रसिद्ध वेदवाणीक अनुवादस्वरूप 'ऋच लोक'क शीर्षक पृष्ठहिपर एहि राष्ट्रिय साहित्यक (वेद) स्वरूप एवं प्राणवत्ताक परिचय निम्नांकित उद्धरणमे देल अछि। "पश्य देवस्यकाव्यम्, न ममार न जीर्यति" किएक तँ "सम्पूर्ण ग्रहपंथ जेना सौरवृत्तक परिक्रमा करैछ, समस्त नद-नदी जेना सागर संगमा बनैछ, दण्ड-पल, मास ऋतु जेना संवत्सर-चक्रक घूर्णिमा तनैछ, तहिना मानवीय विचार चिन्तनाक अंश-अंश जाहि विचार पटक तानी-भरनी बुनैछ ओकरे समुच्चय थिक वैदिक काव्य।"[3]

सुमनजी लोकद्वयसाधिनी चिन्तना ओ भावनाक संस्कृतिसँ सम्पन्न प्रज्ञाक चिन्तक कवि थिकाह आ अपन एहि प्रज्ञाक अक्षय्य स्रोत वैदिक साहित्यक प्रति प्रगाढ़ निष्ठा व्यक्त करैत कहल अछि—"असत्-सत् दिस, मृत्युसँ अमरत्व दिस ओ अन्धकारसँ प्रकाश दिस चलबे जीवन यात्राक चरम लक्ष्य थिक। शून्यताकेँ पूर्णतामे, अविद्याकेँ विद्यामे, विनाशकेँ सम्भूतिमे परिणत करबे जीवन क्रियाक प्रेरणा थिक। से सब लक्ष्य ध्येय। प्रेरणा-चेतना वैदिक मंत्रद्रष्टाक चिरन्तन साधना रहल जकर अभिव्यक्ति स्वरूप 'वैदिक ऋचाक' नित्य नवा पुनर्नवा आलोक सिखा' मानव चेतनाकेँ ओहि पारलौकिक क्षितिजपर पहुँचबैछ जकर अधःसोपानक्रम शरीरसँ प्रारम्भ भय बुद्धि धरि लागल अछि।"[4] सुमनजीक चिन्तन ओ भावनाक प्रेय श्रेयादि समस्त आदर्श वैदिक साहित्यक आदर्श लक्ष्यसँ पोषित अछि आ जे (आदर्श) समस्त मानव जातिक जीवनक

आदर्श थिक आ तेँ ई 'देवस्य काव्यम् न ममार न जीर्यति'।

सुमनजीक राष्ट्रिय प्रेम मात्र अपनहि मातृभूमिक सीमारेखामे समाहित नहि, अपितु अन्ताराष्ट्रिय भावनाक रूपमे अतीव उदार ओ अवदात अछि, जकर अभिव्यक्ति हिनक अथर्ववेदक पृथवी सूक्तक अनुवाद स्वरूप रचना 'युत्रोह पृथिव्याः' अछि। सुमनजीक एहि मान्यताक प्रति आस्था अछि जे "अथर्ववेदक प्रस्तुत पृथ्वीसूक्त संसारक अर्वोपरि प्राचीन, सर्वकालीन राष्ट्रियताक संग अन्ताराष्ट्रिय भावना समन्वयात्मक प्रतीक तथा अपनाकेँ भूमिपुत्रक गौरवसँ सम्बोधित करबाक उदात्त अभीक घोषणाक रूपमे नित्य नूतन एव चिर-पुरातन" थिक। कविक सृष्टि मनुस्मृतिक निम्न पंक्तिमे द्रष्टव्य—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

मातृभूमि आ भारतीय संस्कृतिक प्रति श्रद्धा ओ प्रेमक असीम सुधासागरमे हिनक समस्त अन्तः एवं बहिर्व्यक्तित्व स्नात अछि। हिनक चेतना विभु वा भूमाक ओहि स्थितिमे पहुँचि गेल अछि जाहिठाम राष्ट्रप्रेम सेहो रसक श्रेणीमे परिगणित होइत अछि। सुमनजी कहैत छथि जे—

"यदि रूपलुब्ध वयस उद्‌बुध लौकिक राग रसत्वकेँ प्राप्त करैछ, यदि तोतर बोल अनिमित्त हास बालवात्सल्य प्रभृतिकेँ रसपदवी भेटैछ—दुष्टक प्रति क्रोध, दुखीक प्रति करुणा, भय बीभत्स घृणा धरि रसमाल्यक प्रसून बनैछ तँ कोनो कारण नहि जे मातृभूमिक प्रति, संस्कृति सभ्यताक प्रति, चिरन्तन श्रद्धा-साधनाक प्रति, मानवक गौरवोल्लास सहज रीतिएँ प्राणीप्रीतिएँ नहि उद्वेलित-उद्‌बोधित हो।[5]

वात्सल्यरसक उद्‌भावना आचार्य विश्वनाथ कयल मुदा काव्यशास्त्रमे ओकरा (वात्सल्य) मर्यादित स्थान प्रायः प्राप्त नहि भऽ सकलैक। संभवतः एकर कारण एहि भावक पर्याप्त साहित्यक अभाव सेहो रहल, मुदा भक्तिकालीन हिन्दी साहित्यक सूरदास प्रभृति कविलोकनिक द्वारा एहि भावक रस-पेशल पर्याप्त साहित्यक सर्जन भेलाक उपरान्त साहित्यशास्त्रमे एहि रसकेँ प्रतिष्ठा नहियो भेटला उत्तर सहृदय मन मानि गेल जे वात्सल्य रसक आस्वा-

द्यता कथिमपि उपेक्षणीय नहि। एहि प्रकारेँ भारतीय साहित्यक कोन कथा, विश्व साहित्यमे राष्ट्रिय भावनाक ततेक सान्द्र अभिव्यक्ति भेल अछि जे एहि भावनाकेँ रसक कोटिमे अयवामे कोनो संकोच नहि रहि गेल अछि।

सुमनजीक कविव्यक्तित्वक व्यापक आयाममे राष्ट्रिय भावनाक पर्याप्त प्रसार रहल अछि। हिनक दृष्टिक वैशद्यमे समस्त मानवजातिक श्रेयक कल्पना-कामना समाहित भऽ गेल अछि जाहिसँ हिनक व्यक्तित्व ओहि मनीषी ऋषि लोकनिक प्रतिनिधित्व करैत अछि जनिक 'सूक्तकण'क उद्धरण हिनक स्वनिर्मित 'ऋचालोक' नामक पोथीमे निम्नांकित रूपेँ अछि—

'न देवानामति व्रतं शतात्मा च न जीवति'—अथर्व-१०/३३/९ 'देवक दिव्य नियम जे तेजथि जीवथि से न शतायु'। 'मा पुरा जरसो मृथः'–अथर्व-५/३०/१७ 'बिना बूढ़ भेने न मरथु क्यौ व्यक्ति समाजक एक'। विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्'—१/११४-१ 'देखी, अपन गाम-धरतीमे सभ जन पुष्ट निरोग'। इत्यादि।[6]

आलोच्य कविक व्यक्तित्वक उपर्युक्त आदर्श भारतेक मानवजातिक लेल नहि अपितु विश्वक मानवजातिक लेल श्रेयस्कर अछि।

सुमनजीक कविव्यक्तित्वक एहि विराट् रूपक आचार्यत्वक उपादान सेहो विराट् अछि। ई कहब पिष्टपेषणे होयत। काव्यसाहित्यक विराट् आयामक हिनक अवधारणा हिनकहि शब्दावलीमे देखल जाओ—

"कलाक आकलना हृदयसँ, गणितक गणना मस्तिष्कसँ एवं दर्शनक देशना अन्तश्चक्षुसँ होइछ। से रहितहु, काव्यकेँ कलाक अन्तर्गत मानितहु, जेना गन्ध-वती धरतीमे रूप रस परसक सत्ताकेँ अस्वीकार नहि कयल जा सकैछ तहिना काव्यसाहित्यमे कलात्मकताक संगहि ज्ञान-विज्ञानक आवश्यकता मानहि पड़ैछ।"[7]

अखण्ड सृष्टिक विधायक ओहि स्वयंभू कविक अखण्ड सृष्टि स्वरूप काव्यमे तँ प्रतिपल जन्म जरा मरणक घटना सहज मान्य संवेद्य ओ दृश्य अछि, मुदा शाश्वत रूपमे तथ्यक विधान कयनिहार लौकिक कवि प्रजापतिक अपार काव्यसंसारमे जरामरणक कोनो भय नहि। हिनक काव्यसाधनाक प्रथम ओ चरम भाव भूमिक सार सम्प्रेषी मान्यता हुनकहि कथनमे देखल जाओ—

"कविता सरिता जकाँ अवश्य बहुत उचाइसँ अवतरित होइछ, कवि-गिरिक गौरव रहस्यसँ निश्चय कोनहु एकान्त प्रान्तमे गलित होइछ परञ्च ओ सार्थक बनैछ सामाजिक धरातलक सहज समतलमे।"[8] अध्यात्म-साधनाक चरम उद्देश्य-उपलब्धि प्रायशः कोनो अन्तर्गुहाक गवेषण थिक आ तेँ ओ कोनो चिन्तक साधकक एकान्त अन्तस्मे ऊगि-डूबि सार्थक बनैछ। संसार साधनाक क्षेत्र संसरणशील वा जंगमनशील प्रतिपल नश्वर धरातल थिक आ एकर ध्येय ओ उपलब्धि सेहो नितान्त विनश्वर। मुदा काव्यसाधनाक क्षेत्र चेतनाक एकान्त ओ निगूढ बलसँ लय एहि धरातलक एक-एक कण धरि अछि, अपितु गगनतल ओ धरातल, सूक्ष्म-स्थूल, द्वैत-अद्वैत आदि समस्त परस्पर विरोधी प्रकृति ओ प्रत्ययक भूताभिमुखी समन्विति कविकर्म थिक आ एहि लक्ष्यक उपलब्धिमे प्रज्ञा भावना ओ क्रिया एहि तीनू वृत्तिसँ समन्वित कविक अभिधानक अन्वर्थता एवं काव्यक सम्पूर्ण अर्थवत्ता अछि। 'दर्शना' अवश्ये 'कवि गिरिक गौरव रहस्य'क वस्तु थिक, कोनहु एकान्त तत्त्व थिक तथापि 'नोदिता कविता लोके यावज्जाता न वर्णना'। वाल्मीकि मुनिक स्वच्छ नित्य दर्शन जखन वर्णनमे परिणत भेल, भूमिक सुख-दुःखक धरातलपर उतरल तखने ओ कवि कहौलनि। सुमनजीक काव्यस्वरूप ओ व्यापक विषयक प्रत्यय काव्यक प्रकृति-प्रवृत्ति विषयक अद्यावधि समस्त वादोपवादकेँ अभिव्याप्त करैत अछि।

द्रष्टव्य—

"जीवन-वनमे विविध भावक तरुलता पतझड़ ओ वसन्तक डाँट दुलारमे प्रचण्ड पछवाक आघात ओ कोमल मलयक समीरणक सिहरनमे जे द्वन्द्व अनुभूतिक 'धुपछाँही' प्राप्त करैछ ओ मञ्जरित होइछ कोमल काव्य रसाल फलक भूमिकाक रेखारूपमे।

'हर्ष ओ संघर्ष, अनुरक्ति ओ विरक्ति, साफल्य ओ वैफल्य—जीवनरेखाक जे दुइ अवलम्बी विन्दु अछि, ओ संस्कारक वश जखन वृत्ताकार रूप धारण करैछ तखन ओकर अन्तरालमे कविताक परिधि लेखा प्रस्तुत होइछ।"[9]

आपार काव्य संसारक विराट् दर्शन करबैत सुमनजी जाहि अन्तस् तत्त्वक अनिवार्यता देखाओल अछि ओ थिक 'औचित्य'। से हुनकहि शब्दावलीमे—

"काव्य कल्पनाक चमत्कार रहौ वा जीवनक चीत्कार, अभियेय विशेष मानल आओ वा अभिधान प्रकार—साहित्य कएकमात्र लक्ष्य रहल अछि असामञ्जस्यमे सामञ्जस्य आनब, कल्पनाकें वास्तविकतामे, ओ वास्तविकताकें काल्पनिक रंग-टीपमे रङ्गब, शिवकें सुन्दर रूपमे ओ सुन्दरताकें शिव रूपमे उपस्थित करब, आदर्श ओ यथार्थकें सुसंगत करब। एहि दृष्टिएँ जे केओ कहिओ साहित्यमे औचित्यक मर्यादा स्थापित कयलनि वस्तुतः ओ साहित्यक बहुत किछु 'क्षेम' कयलनि, भने नेम निबाहनिहार अनुयायी हुनका नहि भेटथुन। जे औचित्यकें 'रसस्योपनिषत् परा' सिद्ध कयलनि ओ निश्चय आनन्द-संवर्द्धनक भागी भेलाह। वस्तुतः जे साहित्य औचित्यसँ दूर अछि ओ आदर्श एवं यथार्थता दुहूसँ अधःपतित भय जाइछ।''10

आचार्य सुमनजीक गद्यलेखनक आन-आन विशेषता सबहिमे सांकेतिकताक विशेषता अप्रतिम अछि जाहिसँ गुरु-गम्भीर सिद्धान्तक दिस निर्देश भेटैत अछि, यद्यपि सामान्य पाठक सैद्धान्तिक अल्पज्ञताक कारणें हिनक एहेन गद्यक विराट् अर्थवत्ताकें ग्रहण करबामे अक्षम भऽ जाइत अछि। बानगीक ठेल एही उद्धरणमे देखल जाओ। 'क्षेम' पदक अभिधेयार्थसँ अतिरिक्त औचित्य सिद्धान्तक प्रवर्त्तक आचार्य क्षेमेन्द्रक प्रति आ 'आनन्दसंवर्द्धन' पदक ध्वनिसम्प्रदायक संस्थापक आनन्दवर्द्धनाचार्यक प्रति संकेत तथा ई दूनू पद समवेत रूपें हिनक कथ्यक प्रवाहमे वहैत जा रहल अछि। हिनक गद्यक ई अविरल चमत्कार अन्य विरल प्राप्य किंवा अप्राप्ये अछि।

उपरिउद्धृत हिनक अवतरणकें पढ़ैत महामहोपाध्याय डॉ० कुप्पुस्वामीक आलोचना-यन्त्रक चित्र मानसपटलपर अभिज्ञात भऽ जाइत अछि जकरा द्वारा ओ औचित्य सिद्धान्तक व्यापकता देखाओल अछि।

मानवजीवनक उदात्तीकरण किंवा स्वर्गीकरणक दुइ गोट उपादान—साहित्य ओ संगीतक स्वरूप—महत्त्वप्रतिपादनक प्रसंगे भारतीय एवं पश्चात्य आचार्यलोकनि अपन-अपन विचार व्यक्त करैत रहलाह अछि। रूपक शैली मे केओ आचार्य कविव्यक्तित्वक पोषण हेतु साहित्य ओ संगीतकें 'सरस्वत्याः स्तनद्वयम्' कहल तँ केओ 'साहित्य संगीत कला विहिनः' व्यक्तिकें 'साक्षात् पशुः पुच्छ विषाण हीनः' मानबाक आवेशमय विचार व्यक्त कयल अछि। पाश्चात्य

कतिपय आचार्य तथा हुनकालोकनिसँ प्रभावित अनेक भारतीय विद्वान् संगीत आ साहित्यके कलाक श्रेणीमे निवेशित करबाक प्रयास करैत रहलाह अछि तथा संगीत ओ काव्यक उत्कर्षापकर्षत्वक विवेचन करैत रहलाह अछि। सुमनजीक एतद्विषयक धारणा हुनकहि शब्दावलीमे देखल जाओ—

"साहित्य ओ संगीत तत्त्वके जे केओ सारस्वत स्तन्य कहि कवि वत्सके स्वर व्यञ्जनक पुष्टिक हेतु प्रेरित कयलनि हुनका ई कदापि इष्ट नहि रहल होयतनि जे किछु वत्स एहनो होयताह जे संगीतक स्वरक आगाँ साहित्यिक व्यञ्जनके गौण बना देताह, दूहूके द्वन्द्व (उभय पद प्रधान) नहि रहय देताह, प्रत्युत कर्मधारय (विशेषण विशेष्य भाव) सिद्ध कय देताह। स्वरसाधनामे कण्ठ स्वभावतः अनायास गतिशील होइछ। किन्तु व्यञ्जना-अभिव्यञ्जनामे रस-रसनाक संग तालु-मूर्धा-दन्त-ओष्ठ सभके व्यायत होमय पड़ैछ। साहित्य मनके साक्षात् प्रभावित करैछ, संगीत श्रवण विलासक मध्यमे मानसिक उल्लास जगबैछ। सूक्ष्म-स्थूलक ई व्यवधान बड़ कुशलतासँ निर्वाहित करय पड़ैछ।··· साहित्य-संगीतके यदि युगल दम्पती मानी सँ संगीत सुकुमारी प्रेयसी ओ साहित्य ओकर अनुरक्त भर्त्ता मानल जायत। स्वरपक्ष स्त्रैण ओ भावपक्ष पौरुष कहल जायत। कविसम्मेलनमे स्वरपर झुमनिहार श्रोता विशेषतः रूपसौन्दर्यक ओ अध्ययनकक्षमे भावपक्षपर रुझनिहार पाठक मानस सौन्दर्यक आवेत्ती भेटताह। संगीत ओ काव्यक संश्लेषण-विश्लेषणक ई कला रोचक होइतहु वास्तवमे जटिल अछि।"11

सुमनजी साहित्य ओ संगीतक संश्लिष्ट रूपक प्रति अपन आकर्षण व्यक्त करैत कहल अछि—"गंगा यमुनाक एकीभाव जेना प्रयागमे तीर्थराज बनबैछ, अन्तर्हित सरस्वतीक संगतिक आधार बनि जेना ओ त्रिवेणीक अभिधाके सार्थक करैछ तहिना साहित्य एवं संगीतक गंगा-यमुनी संगीत अन्तर्वाहिनी चिन्तन-धाराक समन्वयसँ गीतक गरिमाके प्राप्त करैछ।·· वस्तुतः साहित्य ओ संगीत दूहू गीत सरस्वतीक स्तनद्वयी थिक जे सर्वदा सुश्लिष्ट रूपे सभ्यता सृष्टिक पोषिका थिक।"12

कला तत्त्वक विवेचन-विश्लेषण बहुत प्राचीन कालसँ आबि रहल अछि।

पाश्चात्य मनीषी क्रोचे, हीगल प्रभृति विचारकलोकनि दार्शनिक दृष्टिएँ कला-तत्त्वक गम्भीर विवेचन कयल अछि आ कलाक दुइ गोट भेद —वास्तु ओ ललित —कऽ लालितकलाकेँ सूक्ष्मताक आधारपर हीगल वास्तुकलाक अपेक्षा श्रेष्ठ मानैत ललितो कलाक श्रेणीमे काव्यकेँ सर्वोत्कृष्ट कहल। हिन्दीक विचारक लोकनि ललित कलाक हीगेलीय सूचीकेँ अधिकांश रूपसँ मान्यता देल, किन्तु कतिपय विचारक कलाक श्रेणीमे काव्यकेँ रखबाक घोर विरोध कयल अछि, जाहिमे जयशंकर प्रसाद आ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्रमुख छथि। किन्तु सुमन-जीक कलाविषयक व्यापक ओ समन्वयकारी धारणा हिनक मनीषी व्यक्तित्वक विराट् स्वरूपक परिचय दैत अछि। हिनक आचार्यत्व भावकत्वक ओहि दृष्टिसँ समवेत अछि जे धरातलसँ लय गगनतल धरि समस्त चिन्तन-भावनक वृहत्तम आयामकेँ अत्यन्त समीपसँ देखैत अछि आ तेँ हिनक विवेचन-विश्लेषणक प्रवाहमे कतहु देश, काल ओ गत पात्र संकीर्णता कदापि क्वचिदपि प्राप्य नहि।

गूढ़तम विषयक विवेचनक क्रममे हिनक गद्यशैलीक आन-आन वैशिष्ट्यक संगे शब्दयोजनाक चमत्कार अतीव विस्मयजनक रहैत अछि आ ओकरा (शब्द योजनाकेँ) वैह व्यक्ति हृदयंगम कऽ सकैत अछि जकरा हिनक मनीषाक किछुओ प्रसाद उपलब्ध भऽ सकलैक अछि, तथापि—

> अविदित गुणापि सत्कवि
> भणितिः कर्णेषु वमति मधुधाराम्।
> अनधिगतपरिमलापि हि
> हरति दृश मालती माला॥

प्रसंग-निर्देश

१. जतरा चारू धाम—भूमिका
२. प्रकृतिशतक—भूमिका,
३. ऋचालोक—भूमिका
४. तत्रैव
५. अन्तर्नाद—भूमिका
६. ऋचालोक—पृ०-४३
७. प्रकीर्णशतक—भूमिका
८. पयस्विनी—भावभूमि
९. प्रतिपदा—रेखालेखा
१०. तत्रैव
११. तत्रैव
१२. अनुगीतांजलि—स्वरसंधानिका

धर्म आ कविताक मिलनविन्दु श्रीसुमनजी

श्रीजीवकान्त

श्रीसुमनजी-सन कवि कोनो भाषामे कम उत्पन्न होइत छथि। मैथिलीक सौभाग्य छैक जे ओकरा हिनका-सन कवि पयबाक सौभाग्य भेटल छैक।

मैथिलीमे अनेरे अनेक समस्या छैक। पहिल समस्या जे एहिमे लेखक-कविक संख्या थोड़ छैक। तेजस्वी लेखक लोकनिक संख्या सभ भाषामे थोड़ होइत छैक, से समस्या एहू भाषामे छैक। एखन अनुभव कयल जाइछ जे पहिला दस-पन्द्रह बर्ख एहि दृष्टिसँ बड़ अनुर्वर रहल अछि। दस-बीस तेजस्वी लेखक प्रत्येक दशकमे उपलब्ध होइत छल, से विगत दशक (८१–९०) मे नहि भेल अछि।

एहि भाषामे तेजस्वी लेखकलोकनिक अल्प संख्या सदिखन खटकैत रहल अछि। सुमनजी एहि विचारेँ हमरालोकनिक सौभाग्यक रूपमे विद्यमान छथि।

सुमनजी पुरना खेमाक, पुरना खाढ़ीक कवि रहलाह अछि। ई बात फूट छैक जे पुरान परम्परा जड़ भऽ गेल अछि आ ओ समाजोकेँ जड़ बनयबाये सह-योगी बनौलक अछि। हमरालोकनि मानैत छी जे हमरालोकनिकेँ परम्परा-प्रेम जड़, यथास्थितिवादी बनौओने अछि आ ओ हमरासभकेँ परिवर्तन लेल आग्रही आ क्रान्ति लेल संगठित नहि करैत अछि। नवजीवन पयबा लेल परम्पराक अस्वीकार करब जरूरी छैक।

परम्परा भंजन लेल तैयार कवि-लेखकलोकनिक नवका खाढ़ी बहुत रास बात कयलक अछि। एखुनका स्थिति बड़ अनसोहाँत अछि। नवका खाढ़ी पुरना खाढ़ीक प्रति उदासीन अछि आ पुरना खाढ़ी नवका खाढ़ीक प्रति आरो बेसी उदासीन अछि। साहित्यमे नव-पुरानक संघर्ष बड़ सदिआयल अछि। ई शुतुर्मुर्ग जकाँ आँखि मुनबाक स्थिति थिक। ई सहअस्तित्वक स्थितिक

आभास दैत अछि, से बात किन्नहु नहि छैक। सह-अस्तित्वक भ्रान्ति बनाबऽवला स्थिति घोर उदासीनताक स्थिति अछि।

उदासीनता बड़ बेकार बात थिक। आल्बेर कामू कतहु लिखने छथि जे हमरालोकनि जकरा खतम करऽ चाहैत छी, तकरा प्रति उदासीन भऽ जाइत छी।

एहि स्थितिक रहितो परम्परावादी खाढ़ीमे सुमनजी बहुत बहुमूल्य रत्न जकाँ चमकैत रहलाह अछि।

सुमनजीमे कविता आ धर्म एक ठाम बेसी रचनामे भेल अछि। ई होयब स्वाभाविक छल।

धर्मक मूल छैक अध्यात्म, अर्थात् आत्माक पसार। समस्त सृष्टिमे एकहि प्रकारक आत्मा छैक, जे प्रत्येक व्यक्तिक आत्मा थिकै। आत्माकेँ एहि रूपेँ बढ़ायब, पसारब व्यक्तिकेँ धार्मिक, आध्यात्मिक बनबैत छैक। यैह बोध व्यक्तिकेँ समस्त सृष्टिसँ जोड़ैत छैक। जे समस्त सृष्टिसँ जुड़ि गेल, तकर आत्मा धार्मिक भऽ गेलैक।

जखन व्यक्ति समस्त चराचर जगतसँ जुड़ि गेल, तँ ओकरा समस्त संसार सुन्दर आ मोहक लागऽ लगैत छैक। स्नेहसँ आ ममत्वसँ ई सौन्दर्य-बोध जनमैत छैक। संसारक कण-कण सुन्दर लागऽ लगैत छैक आ कण-कण अपन बुझाइत छैक। तखन लगैत छैक सृष्टिक रचयिता आ सृष्टिमे सौन्दर्य देखनिहार एक धरातलपर आबि गेल अछि। एहि स्थितिमे आत्मा आ परमात्मा एक ठाम मिलि जाइत छैक। एहने ठाम लेल कहल गेल छैक—कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः।

समस्त सृष्टिमे सौन्दर्य देखब—तखने कविताक उद्रेक होइत छैक। मेघ-पर, फुलपर, गंगाधारपर कविता लिखब आ ओकरा सौन्दर्य-मंडित कऽ देब तखने संभव होइत छैक।

सभ धार्मिक लोक कवि नहि होइत अछि आ ने सभ कवि धार्मिक होइत छथि। मुदा, धर्म आ कविताक उत्स एक्के ठाम छैक। सम्पूर्ण सृष्टिसँ तादात्म्य होयब धर्मक उद्रेकक स्थिति थिकै। तहिना सम्पूर्ण सृष्टिसँ तादात्म्य होयबाक बाद सम्पूर्ण सृष्टिमे अगबे सौन्दर्य देखब, ओकरापर मुग्ध होयब

आ ओकर वर्णन करैत जायब आ वर्णनसँ नहि अघायब—तखने सहज आ शाश्वत कविताक उद्रेक होइत छैक।

सुमनजीक कविता एही स्थितिमे उत्पन्न भेलनि अछि। तेँ स्वाभाविक छैक जे हिनक कवितामे धर्म आ कविताकेँ बेरायब बड़ कठिन छैक। जेना कोनो डोरीमे दू गोट गुण होइक आ ओकर बेरायब आ फूट-फूट कऽ चीन्हब बड़ कठिन छैक ,तहिना सुमनजीक रचनासभमे कविता आ धर्मकेँ फूट-फूट करब प्राय: असंभव अछि।

जे रससिद्ध कवि अछि, ओकरा लेल गद्य लिखब कठिन होइत छैक। गद्यलेखनमे सौन्दर्य-मुग्धता, सौन्दर्यक विशद वर्णन बाधक होइत छैक। तेँ गद्य-लेखन कठिन होइत छैक।

प्रत्येक भाषामे, तथापि कविलोकनि गद्य लिखलनि अछि। ओ गद्य बड़ सरस भेल अछि आ कविताक बहुत निकट भेल अछि। ओहि गद्यमे कविता सन्हिआ गेल अछि आ सृष्टिसँ तादात्म्य आ करुणाक उद्रेक ओकर प्रेरक तत्त्व भऽ गेल अछि।

सुमनजीक गद्यो तेँ कवितासँ ओत-प्रोत रहल अछि। कविता मात्र अलकारे नहि दैत गेल अछि। कविक विशाल आत्मा—सम्पूर्ण सृष्टिसँ एकात्मकताक भावसँ भरल आत्मा ओहि गद्यकेँ श्रीसम्पन्ने नहि कयलक अछि, ओकर रचनामे सेहो वैह मूलभूत वस्तु रहल अछि।

एक बेर वैयक्तिक वर्तालापमे सुमनजी जनौलनि जे ओ अपन जीवन—साहित्यिक जीवन—एक गद्यकारक रूपमे शुरू करबा लेल छलाह, मुदा संयोग होइत गेलैक जे ओ अधिकांश, आ हमरा जनैत सम्पूर्णांश रूपेँ, अपन हृदय आ मस्तिष्क कवितामे व्यक्त कयलनि अछि।

हमरा बुझने सुमनजी लेल ई स्थिति आकस्मिक नहि छल, स्वाभाविक छल। जे व्यक्ति सृष्टिसँ, ओकर आत्मासँ, ओकर सौन्दर्य-भावनासँ अपनाकेँ जोड़ि लैत अछि, ओ बहुत-बहुत कहऽ चाहैत अछि। आ, जे बहुत कहऽ चाहैत अछि ओकरा लेल कवितामे अपन बात कहब जरूरी भऽ जाइत छैक।

ई सुनबामे थोड़ेक उनटा बात-सन जरूर लगैत छैक। कवितामे थोड़ेँ थोड़ शब्द लेल जाइत छैक, मुदा, ई शब्द अर्थ-घन होइत छैक। ई थोड़ शब्द

सुनबामे थोड़ लगैत छैक, मुदा गुनलापर, विचारलापर बहुत अर्थ दैत छैक, बहुत पसरैत छैक। गद्यक शब्द-अम्बारमे बड़ कम अर्थ रहैत छैक। पद्यक थोड़ थोड़ शब्द-भंडारमे बहुत बेसी आ सदा बढ़ैत जायवाला अर्थक ढेरी रहैत छैक।

हमरा बुझने एही कारणे साहित्यकार सुमनजी मनोरथ रहैतो गद्यकार नहि भऽ सकलाह, कविता लिखब हुनका लेल अनिवार्य भऽ गेलनि।

परम्परावादी पाठकोलोकनि सुमनजीके बुझबामे असमर्थ छथि, तकर कारण अछि जे अधिकांश परम्परावादी पाठक अनुभूतिक स्तरपर सुमनजीक उँचाइ धरि पहुँचबामे असमर्थ छथि। मुदा, प्रत्येक युगमे थोड़ेक पाठक एहेन उँचाइके पयबामे समर्थ होयताह आ ओलोकनि सुमनजीक कवितामे आनन्द लऽ सकताह। एही अर्थमे सुमनजी कालजयी कवि सिद्ध होयताह, सभ कालक कवि बनल रहताह।

पुरान वस्तु सभमे सभ वस्तु अधलाहे नहि होइत छैक, से बात अपना युगक प्रसंगमे कवि कालिदास कहने छलाह। ई बात अजुको प्रसंगमे ठीक अछि। तेँ परम्परावादी कवितामे जँ दुओ-चारि गोट कवि सदा जीवित रह-ताह, तँ ओहिमे सुमनजीक नाम सदिखन अग्रगण्य रहत।

हमरा लोकनि धर्म आ परम्पराके बेजाय मानैत रहलहुँ अछि, तकर एक कारण अछि जे एहन लोक कर्मसँ विरक्त भऽ जाइत अछि। यात्रीजीक उप-न्यास 'पारो' आ 'नवतुरिया'मे पारोके बूढ़ वरसँ बियाहल गेल आ बिसेसरीके बियाहबा लेल बेचबाक ओरिआओन भेल। दूनू ठाम संस्कृत पंडितेलोकनि ई काज करैत छथि जे अपना युगमे समाजक नेता छलाह।

आश्चर्यजनक रूपे दुनू पोथीमे पंडितलोकनि लेल यात्रीजी 'अक्री' शब्दक प्रयोग कयलनि अछि। अक्री शब्द अक्रियसँ, निष्क्रियसँ उत्पन्न अछि। परम्पराक आ धर्मक जे रूप समाजके अक्री बनबैत अछि से बास्तवमे निन्दनीय थिक।

धर्म आ परम्पराक जे रूप मनुक्खक चित्तके उदात्त बनबैत अछि, जे ओकरा समस्त संसारसँ जोड़ैत छैक, जे ओकरा सकल चराचर सृष्टिसँ एकात्मकताक बोध करबैत छैक, से सदा स्तुत्य आ श्लाघ्य रहत।

व्यक्तिक रूपमे आ कविक रूपमे सुमनजी बहुत उदात्त छथि आ समस्त सृष्टिसँ एकात्मकताक अनुभव करबामे समर्थ भेल छथि, धर्म आ कविताक एहि संगमपर ठाढ़ सुमनजी श्लाघ्य छथि आ स्तुत्य छथि।

श्रीसुमनजीक मुक्तक काव्यमे नारी

डॉ० श्रीयोगानन्दझा

भारतीय जीवन-दर्शनमे नारीकेँ पुरुषक पुरुषार्थप्रवर्त्तिनी शक्तिक प्रतीक मानल गेल अछि। नारी-पूजनक परम्परा एहि सांस्कृतिक विशिष्टता रहल अछि। नारी ओ पुरुषक सहअस्तित्वमे वाक् ओ अर्थक सहभाव कल्पित अछि आ एही सहअस्तित्वमे भारतीय सामाजिक जीवन मूर्त्त भेल अछि। वस्तुतः मानव सृष्टि, स्थिति ओ पालनमे नारीक योगदान सर्वथा श्लाघनीय अछि। ओकर सहज सुलभ सौन्दर्य, आत्मत्याग ओ मानवताक हेतु बलिदानी प्रवृत्ति पुरुषक पौरुषकेँ आन्दोलित-हिन्दोलित करैत रहल अछि। नारी ओ पुरुषक पारस्परिक सहयोगहिमे मानव-जीवनक सुख ओ मंगलकामना साधित अछि। नारीक बिना पुरुषक कल्पना आ पुरुषक बिना नारीक अस्तित्वक कोनो आधार नहि। माता, पत्नी, प्रिया, बहिन, पुत्री आदि विभिन्न रूपमे नारी मानव-जीवनकेँ अनुप्राणित करैत रहल अछि।

साहित्यकेँ समाजक दर्पण कहल गेल अछि। एहिमे सामाजिक जीवन यथार्थ कल्पनाक आवरणक संग प्रतिब्रिम्बित होइत अछि। सत्यकेँ शिव रूपमे उपस्थित करबाक हेतु सुन्दरताक रंग-टीप करब साहित्यक प्रधान लक्षण अछि। मानव-जीवनक यथार्थ आकांक्षा ओ वासनाक प्रत्यक्ष वा परोक्ष कल्पना साहित्यक उपजीव्य होइत अछि।

स्वभावतः मानवजीवनक अभिन्न अंग नारीक बहुविध रूपक वर्णन साहित्यमे आदिकालहिसँ होइत रहल अछि। मानवक समस्त क्रियाकलाप, मनन-चिन्तन, लेखन-सर्जनक प्रेरणास्रोत नारी काव्यकलाक अनिवार्य अंगक रूपमे स्वीकृत रहल अछि। प्रसिद्ध विद्वान मेयरक ई उक्ति यथार्थक सर्वथा निकट अछि जे 'कृषक ओ नागरिकक अभावमे काव्यक निर्माण संभव अछि मुदा

नारीकेँ हटबिते ओकर जीवन्तता नष्ट भऽ जाइत छैक।' कमनीयता, कोमलता ओ करुणाक प्रतिमूर्ति तथा सेवा, स्नेह ओ त्यागक प्रतिमा नारीक रूपलावण्य ओ असीमित गुण सब दिनसँ काव्यकलाक हेतु प्रेरणा ओ आकर्षणक विन्दु रहल अछि।

श्रीसुमनजीक मुक्तक काव्यमे नारीक बहुविध रूपक चित्रण भेल अछि। अपन समस्त रूपमे नारीत्वक गरिमामंडित परिवेश कविक लेखनीक चमत्कारसँ महिमामंडित भऽ उठल अछि। हिनक काव्यमे चित्रित नारी-स्वरूपक चारि गोट कोटि अछि—पौराणिक स्वरूप, प्रकृतिमे आरोपित स्वरूप, काव्यशास्त्रीय स्वरूप ओ लौकिक स्वरूप।

पौराणिक स्वरूप

पौराणिक स्वरूपमे नारीकेँ आदिशक्ति कहल गेल अछि। सृष्टिक आदिमे यैह दू भागमे विभक्त भऽ पुरुष ओ नारीक सृष्टि करैत छथि। विश्वक धारण, सर्जन, पालन ओ विनाशक यैह कारणभूता छथि। पुरुषरूपमे ब्रह्मक सर्वाधिक निष्क्रिय भाव प्रकट होइत छनि। संसारमे शक्तिरूपा नारियेँ मायामोह अथवा प्रेमरज्जुसँ बान्हि संसारक समस्त गतिविधिक कारण बनैत छथि। श्रीसुमनक अंकावलीमे नारीशक्तिक एहि पौराणिक स्वरूपकेँ यथावत् ग्रहण कयल गेल अछि—

विधि अबैध हरि हारि हटथि शिव शवहि सुनिश्चित
यदि न सृष्टि पालन लय हित पुनि शक्ति समन्वित
इच्छा क्रिया ज्ञानरूपा जननी जग जाया
काली लक्ष्मी सरस्वती त्रिगुणात्मिक माया

पराशक्तिक विविध रूपक उल्लेख पौराणिक ग्रन्थ सभमे भेल अछि: काली, तारा, षोडसी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुरसुन्दरी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमला आदि विभिन्न अभिधानमे दसो महाविद्याक रूपमे पराशक्तिस्वरूपा नारीक बाह्यसौन्दर्य ओ अन्तःप्रवृत्तिक उल्लेख भेल अछि। पराशक्तिक प्रति श्रद्धाभावसँ अभिभूत कवि आनन्दलहरी, चण्डी-चर्य्या, सौन्दर्यलहरी, शक्तिस्तवक आदि ग्रन्थमे विभिन्न शक्तिक स्तोत्रक अनुवाद कयलनि

अछि। अंकावलीमे दसो महाविद्याक स्वरूपक वर्णन परम्परित रूपे भेल अछि।

पराशक्तिक धूमावती अभिधानक ध्यान पौराणिक साहित्यमे निम्न रूपे भेटैत अछि—

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा
विमुक्तकुन्तला रुक्षा विधवा विरलद्विजा
काकध्वज रथारूढा विलम्बित पयोधरा
शूर्प्प हस्तातिरुक्षाक्षा धूतहस्ता वरान्विता
प्रवृद्धघोणा तु भृशङ्कुटिला कुटिलेक्षणा
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यम्भयदा कलहास्पदा

एही ध्यानसँ भावग्रहण कय नारीशक्तिक गृहस्वामिनी रूपक वर्णन कविक 'धूमावती' कवितामे भेल अछि। एहि रूपमे नारी अपन वैयक्तिक आशा-आकांक्षासँ निरपेक्ष सतत गृहकार्यमे अपस्याँत देखाओल गेलि अछि। एहि रूपकेँ ने वस्त्रक स्वच्छताक ध्यान छैक, ने संसारमे होइत दैनन्दिन परिवर्त्तनक ज्ञान। एकर कार्यक्षेत्र शय्यागृहसँ भनसाघर धरिक छोट सन परिधिमे संकुचित छैक, मुदा सदिखन हाथमे बाढ़नि-सूप लेने ई परिवारक योगक्षेममे लागलि रहैत अछि—

मलिन वसन घर द्वारि बहारथि, बाढ़नि हाथहि नित्य
जेना कोनो आयलि छथि वेतन-भोगिनि कोनहु भृत्य
सूप हाथ किछु किछु सदिखन फटकैत अन्न भरिपूर
बिच बिच गुन-गुन सोहर-लगनी गबइत बिनु धुनि सूर
शय्यागृहसँ भनसाघर जनिका रुचि बढ़ल विशेष
जे पड़ोसिनिक बात पुछै छथि खबरि न देश-विदेश
ज्ञान जनिक बच्चा जच्चा धरि ध्यानो घरे कुटुम्ब
अक्षर जनिक गोसाञि-नाओ धरि पोथी-पतरा लम्ब

शक्तिक एहि रूपक लाथेँ कवि चमत्कारपूर्ण कल्पनाक द्वारा मैथिल नारीक संकुचित कार्यक्षेत्र, अल्प ज्ञान, संयमित जीवन ओ परिवारक प्रति कल्याण-भावनाकेँ अभिव्यंजित कयलनि अछि। वारीक एहि स्वरूपमे जनकल्याणक भाव अनुगुम्फित अछि। कविक नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा एहि पद्यमे अत्यन्त स्फुट

भेल अछि। पौराणिक पञ्चकन्या—अहल्या, द्रौपदी, तारा, कुन्ती ओ मन्दोदरीक चरित्र परम्परित रूपें हिनक काव्यमे गृहीत भेल अछि।

प्रकृतिमे आरोपित स्वरूप

प्रकृतिमे नारीक आरोप मानवक सौन्दर्य-चेतनाक प्रतिफल थिक। सृष्टिक आदिकालहिसँ मानव-मनक सौन्दर्य-चेतना जाग्रत रहल अछि। प्रकृतिक सौन्दर्य मानव-मनकें विमुग्ध कऽ ओकर भावनाकें अभिभूत करैत रहलैक अछि। सौन्दर्य-साधनसँ मानव-मनक क्लान्ति विस्मृत ओ ओहिमे असीम शान्ति परिव्याप्त होइत रहलैक अछि। प्रकृतिक मोहिनीरूपमे मानव सूक्ष्म-सौन्दर्यक अन्वेषण करैत रहल अछि। विद्युल्लताक छटा, पूर्णिमाक चान, मनोरम वसन्त, मेघक श्यामलता, तटिनीक प्रवहमानता, पिकक स्वरकाकली आ एहने विभिन्न नैसर्गिक उपादान सभ मानवहृदयकें निरंतर झकझोरैत रहलैक अछि। प्रकृतिक एहि विभिन्न उपादानकें साधर्म्य-निरुपणक आधारपर नारीमे आरोपित कऽ कविलोकनि नारी-भावनाक परोक्ष-चित्रण करैत रहलाह अछि।

श्रीसुमनजीक प्रकृति-काव्य मध्य हिनक 'प्रकृति-शतक' ओ 'साओन-भादव' ग्रंथ उल्लेखनीय अछि। 'प्रकृति-शतक' मे प्रकृतिक विभिन्न उपादानमे नारीक उत्तेजक अंग, परिधान किंवा अन्तश्चेतनाक आरोप भेल अछि। वर्षाक इन्द्रधनुषक वक्रतामे नारीक भौंहक कुटिलता, मेघक श्यामलतामे नारीक केशक मनोहरता, बिजलौकामे नारीक गौरवर्णक द्युति, किसलयमे नारीक अधरक सुकोमलता, लत्तीमे नारीक छरहर वदनक सुघड़ता, कोइलीक ध्वनिमे नारीक सुमधुर स्वरक रसमयता, चन्द्रमामे नारीक मुखक आह्लादकता, फूलक समूहमे नारीक विकसित उरोजक कमनीयता, पल्लवमे नारीक चरणक सुकुमारता, तरेगनमे नारीक विभिन्न आभूषणक चाकचिक्य आदिक आरोप द्वारा प्रकृति-सुन्दरीक विभिन्न वेष, वयस ओ अवस्थाक वर्णन भेल अछि।

द्रष्टव्य अछि इजोरिया दाइक हाव, भाव, हेला ओ शोभा—

गोरि नारि मुख चान छवि नभ आङन बिच आइ
पहिरि आभरण नखत कत सजलि इजोरिया दाइ

युवती लताक कान्ति, दीप्ति, प्रगल्भता ओ विच्छित्ति एहि पदमे अत्यन्त

रमणीयतापूर्वक अभिव्यञ्जित भेल अछि—

आनखशिख कुसुमाभरण पल्लव पट परिधान
लता युवति मन मत वरण तरुण तरुक संविधान

वसन्तऋतु आ अवनीमे रमणीक आरोप कऽ कवि प्रकृतिमे नारीक सौष्ठवक दर्शन कराय 'जतय ने जाय कवि' आ 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयभूः'के चारितार्थ कय देलनि अछि—

तन लतिका सुम गुच्छ उर किसलय अधर प्रमान
अंग चंपकें पिक वचन मधु ऋतु रमनि निदान
गिरि उरोज परिसर उदर पुलिन जघन वन केश
सिन्धु वसन पुर ग्राम सुख अवनी रमनी वेश

प्रकृतिक सौन्दर्यक व्याजें नारीसौन्दर्यक गायन कविक प्रकृति-काव्यक लक्ष्य बुझना जाइत अछि। नारीक बिम्बक अभावमे हिनक प्रकृतिकाव्य पूर्णताकें नहि प्राप्त कयलक अछि। सौन्दर्यक द्रष्टा ओ स्रष्टा कवि द्वारा एकमात्र आलम्बन साओन-भादवमे नारीक विभिन्न रूपकें प्रतिबिम्बित कयल गेल अछि। कखनो प्रकृतिप्रिया चिरसोहागिनी रूपमे प्रस्तुत भेलीह अछि तँ कखनो चिरवियोगिनी, हास्यमयी, इन्द्रजालिनी, विषादमयी, चिरवत्सला ओ चिरन्तन दम्पतीक रूपमे। एहि समस्त रूपमे नारी-प्रकृतिक विभिन्न स्वरूप उद्घाटित भेल अछि।

प्रकृतिमे नारीक विभिन्न वयसक आरोपक दृष्टियें हिनक शरद कविता अत्यन्त सफल भेल अछि। एहिमे वयःसन्धिक देहरिपर ठाढ़ि शरद-किशोरी सरसिजक व्याजें अपन यौवनक सरस सुगन्धमे दिग-दिगन्तकें व्याप्त कयने देखि पड़ैत छथि। प्रकृति-सुन्दरीक प्रेम समस्त चराचर जगतकें उन्मत्त कयने अछि। एहि अति-व्याप्त प्रेमक प्रभावें सुप्त पुरुषोत्तम सेहो शयनक त्याग कयलनि—

प्रेम स्वातिक विन्दु याचक जगत चातक भेल
जनिक प्रेमक वश पुरुष पुरातनहु उठि गेल,

प्रकृतिमे आरोपित नारीक व्यक्तित्वमे सौन्दर्य दर्शनेटा अभिप्रेत अछि से

नहि, नारीक अन्तःप्रवृत्ति सेहो कविक प्रकृतिकाव्यमे अत्यन्त स्फुट भेल अछि। वृद्धा शरदमे नारीक वात्सल्य, वयसक गरिमा ओ सन्ततिक हेतु योगक्षेमक प्रवृत्ति अभिव्यञ्जित भेल अछि—

हन्त हेमन्तक पवनसँ यदपि कम्पित गात
भेलि वृद्धा शरद धवलित काश केश निपात
किन्तु तखनहुँ अन्नपूर्णा बाध अञ्चल बान्हि
शस्य सन्तति हेतु जोगबथि शरद जननी आनि

चिरवत्सला प्रकृति जननीक विविध उपादान द्वारा विश्व-शिशुक परिपालनक प्रवृत्तिक अभिव्यञ्जनामे नारीक मातृत्वक गरिमा उद्घाटित भेल अछि—

शीत रौदसँ रक्षा पाबओ ने-अभाव जल अन्नक दाबओ
खेलओ नित कन्दुक कदम्ब सँ मुदित मयूर संग भय नाचओ
मेघक अंचल छाया मे हो पोषित वत्स ममत्व नित्य नव
चिरवत्सला प्रकृति जननी केर स्नेहाञ्चल ई साओन-भादव

एतावता श्रीसुमनजीक प्रकृतिमे आरोपित नारीस्वरूपमे नारीक बाह्य-सौन्दर्य ओ अन्तःप्रवृत्तिक परोक्ष गायन भेल अछि। हिनक प्रकृतिमे आरोपित नारी-स्वरूपमे कतहु उद्दाम वासना ओ मांसलताक गन्ध नहि अछि। नारी-सौन्दर्यक प्रति सहज चेतनाक आह्लाद हिनक प्रकृतिमे आरोपित नारी-स्वरूपक अभिव्यञ्जनामे लक्षित भेल अछि। प्रकृतिमे आरोपित नारीसौन्दर्यक वर्णनमे शालीनता कविक सहज चेतना, समदृष्टि ओ स्वस्थ मनोभावक परिचायक अछि। एहिमे नारी-जीवनक आन्तरिक उल्लासक अभिव्यञ्जना जतबे आह्लादक अछि ओकर अन्तर्वेदना ओतबे मर्मभेदी। नारी-हृदयक सुखात्मक ओ दुःखात्मक दुहू पक्षक उद्घाटन कविक प्रकृति-काव्यमे भेल अछि। सरिताक विश्व वेदनाविगलित जीवनमे नारीक पातिव्रत्य, आत्मवेदना, संयम ओ त्यागक आदर्शक आरोप भेल अछि। गंगागे मातृत्वक आरोप कय नारीक वात्सल्यक अत्यन्त सहज अभिव्यक्ति भेल अछि—

किन्तु विदित विश्वास ई, जननी हृदयावर्जना
जड़सुत क्रन्दन सुनि यथा, तथा न चतुरक कल्पना

नारीक प्रेयसी-रूपकें काव्यमे परकीया कहल जाइत छैक ओ लोकजीवनमे परपरिगृहीता। एकर प्रेममे स्वकीया पत्नीक प्रेमक अपेक्षा अत्यन्त दुर्लभता रहैत छैक। स्वकीयाक प्रति प्रेमक उपभोग अत्यन्त सुलभ रहबाक कारणें प्रेम सूक्ष्म स्वरूपमे प्रकट नहि भय पबैछ, जखन कि परकीयाक प्रति प्रेम दुर्लभताक कारणें बेसी मूल्यवान ओ सूक्ष्म भय जाइत छैक। यैह कारण थिक जे काव्यमे परपरिगृहीताक प्रेमक बहुविध रूपक व्यापक विश्लेषण होइत रहल अछि। एहि काव्यरूढ़िक अनुपालनमे श्रीसुमनजी प्रकृतिमे आरोपित नारीक प्रेयसी ओ लौकिक जीवनक मानवी प्रिया स्वरूपक युगपात् ओ तुलनात्मक वर्णन 'प्रिया ओ प्रेयसी' शीर्षक कवितामे कयलनि अछि। एहि कवितामे प्रेयसीक प्रेमक प्रति अत्यन्त आसक्ति ओ उन्मुखता प्रकट भेल अछि। प्रेयसीकें सहचरीक प्रतिष्ठा दय एक दिस जँ सामाजिक अवमूल्यन कें स्वीकारल गेल अछि तँ प्रियाकें अनुचरी मात्रक अभिधान दय पत्नीत्वक सीमाकें संकुचित कय देल गेल अछि—

ओ प्रिया रुचि अनुचरी तों प्रकृति-प्रेयसि सहचरी
ओकर परिणय उपायन लय तोहर नित प्रेमक वशी
ओ प्रिया तों प्रेयसी

मर्यादागर्भित काव्यक रचयिता श्रीसुमनजी प्रकृतिक आलौकिक स्वरूप मात्रमे प्रेयसीक आरोप कय प्रेमक मर्यादित स्वरूपकें उपस्थापित करबामे दत्त-चित्त भेलाह अछि आ आ अपन प्रकृति-प्रेमक विह्वलताकें अभिव्यक्त कयलनि अछि। प्रेयसीयोक प्रति प्रेमकें कवि सामाजिक परिवेश ओ गरिमा दऽ श्रेयसीक प्रेमक उत्कृष्टताकें अत्यन्त मनोहर स्वरूपमे विज्ञापित कयलनि अछि।

काव्यशास्त्रीय स्वरूप

नारीक काव्यशास्त्रीय स्वरूपक अभिव्यञ्जना श्रीसुमनजीक ललना-लहरी ओ शृंगारहार ग्रन्थमे स्फुट भेल अछि। काव्यशास्त्रमे नारीक विश्लेषण नायिका-भेद-निरूपणक क्रममे भेल अछि। एहिमे शृंगाररसक आलम्बन ओ उद्दीपन विभावक रूपमे नारीक विवेचन-विश्लेषण होइत रहल अछि। सामुद्रिक शास्त्र ओ कामशास्त्रसँ प्रभावित रहबाक कारणें प्रायः समस्त लक्षण-

ग्रंथमे नख--शिखसौन्दर्य, प्रकृति, युवावस्था, प्रेमीजीवनक अवस्था, मनोदशा आदिक आधारपर नारीक वर्गीकरण होइत रहल अछि। नारीक यत्नज, अयत्नज ओ सत्वज अलंकार, शत शत सहस मनोरथ, विविधतापूर्ण अनुरागचेष्टा, कामदशा ओ तिल तिल नूतन सौन्दर्य ओ प्रेमक विवेचन काव्य-शास्त्रक उपजीव्य रहल अछि।

सामुद्रिक शास्त्र ओ कामशास्त्रमे नारीक वर्ण, गंध, स्वर, गति, लावण्य, पैर, आँगुर, नह, चरण, जानु, उरु, कटि, नितम्ब, वस्ति, नाभि, उदर, त्रिवली, वक्षस्थल, उरोज, हँसली, स्कन्ध, हाथ, ग्रीवा, चिबुक, कपोल, मुख, अधर, दाँत, जीह, हास्य, नाक, नेत्र, भौंह, कान, ललाट, कपोल, केश आदि अंगक सूक्ष्माति-सूक्ष्म लक्षण नारीक विभिन्न प्रकारक अनुरूप भिन्न-भिन्न कहल गेल अछि। कामशास्त्रमे मध्यदेश, मालवा, सिंध, पंजाब, गुजरात, केरल, मद्रास, बंगाल, उत्कल, कोशल आदि प्रदेशक नारीक प्रवृत्ति ओ कामाचरणक विषयमे सेहो विचार कयल गेल अछि।

एहि शास्त्रसभमे वर्णित नारी–सौन्दर्य ओ अंग-प्रत्यंगक लक्षणादि ततेक लोकप्रिय भेल जे कविलोकनि यथावत एकरा काव्यविषयक उपकरणक रूपमे गृहीत करैत रहलाह अछि। राजशेखरक काव्यमीमांसामे पौरस्त्य, उदीच्य ओ दाक्षिणात्य देशक नारीक वर्ण-निर्धारण पर्यन्तकेँ काव्यशास्त्रक विषयक रूपमे देखल गेल अछि।

कामशास्त्र ओ काव्यशास्त्रसँ प्रभावित कवि 'ललना-लहरी'मे मैथिल, बंग, असम, उड़िया, आन्ध्री, द्राविड़ी, केरली, मराठी, गुजराती, पंजाबिनी, कश्मीरी, राजस्थानी, मागधी, भोजपुरी, ब्रजबाला, कन्नौजी, देहलवी, काशिका, उज्जयिनी, पारसी, यवनी, फिरंगिनी, पार्वती, वनवासिनी प्रभृति विभिन्न प्रदेशक नारीक सौन्दर्य, रुचि–अभिरुचि ओ कामाचरणक लक्षण प्रस्तुत कयलनि अछि। नागरी, ग्रामीणा, छात्री, नेत्री, अभिनेत्री, श्रमिकबालिका, वनबालिका आदि विभिन्न वर्गक नारीक लावण्य ओ परिवेश कविक लेखनीक श्रृंगार पौलक अछि। रसशास्त्रक स्वकीया, परकीया ओ वेशिनी नायिकाक लक्षण-निरूपणक संगहि वेष-वयसक आधारपर कुमारि, नवोढ़ा, सधवा, विधवा

आदि नारी-स्वरूपक मनोभावक अभिव्यक्ति सेहो ललनालहरीमे भेल अछि।

एहिमे देश-भेदक आधारपर नारीक स्वरूपक वर्णनमे कविक विशद् ज्ञान, यायावरी वृत्ति ओ नारी-सौन्दर्यक प्रति एकान्त निष्ठा प्रतिपादित भेल अछि।

एहि ग्रन्थमे रसशास्त्रक वैदर्भी, गौड़ी, पाञ्चाली ओ लाटी वृत्तिक व्याख्या कवि तत्तद्देशीय नारीक सौन्दर्य, गति ओ रसमयताक आधारपर कयलनि अछि। रसशास्त्रक अनुसार ओज व्यंजक कठिन वर्णसँ बनल समासबहुला उद्भट बन्धकेँ गौड़ी रीति कहल जाइछ। एहि रीतिमे अनुप्रास ओ यमक अलंकारक आधिक्य होइत छैक। श्रीसुमनजी सौन्दर्यगर्विता नयिकामे ओजक कल्पना तथा बन्धमे वृत्यानुप्रास ओ यमकक प्रयोग द्वारा गौड़ी नारि ओ गौड़ी रीति दूहक समानान्तर व्याख्या कयलनि अछि—

गौड़ अंग गुन गौरवित पद समस्त मस्तीक
ओज भरलि-उद्दीपिका गौड़ी गिरा प्रतीक

मुदा नारी-सौन्दर्यसँ अभिभूत कवि एहि पदकेँ रीतिक अनुरूप महाप्राण वर्णक संयोजन ओ समासबहुलताक समावेशसँ बचौलनि अछि जे हुनक ओजपूर्णो नारीछविमे मृदुलता ओ कोमलताक परिकल्पनाकेँ उद्भासित करैछ।

शृंगारहारमे सामाजिक जीवनमे स्थानक आधारपर स्वकीया, परकीया ओ सामान्या तथा प्रणयी जीवनमे नायकक संग सम्बन्धक आधारपर वासक-सज्जा, खण्डिता, प्रोषितपतिका, प्रवत्स्यत्पतिका, आगतपतिका तथा अभिसारिका नायिकाक मनोभाव ओ अनुरागचेष्टाक विवरणपूर्वक नायिका-भेदक निरूपण भेल अछि। एहिमे अभिसारिका नायिकाक तीन गोट भेद—शुक्लाभिसारिका, दिवसाभिसारिका ओ पुरुषवेशाभिसारिका; गर्विता नायिकाक दूइ भेद–प्रेमगर्विता ओ सौन्दर्यगर्विता; वयक अनुसार नायिकाक दूइ गोट भेद—नवोढ़ा ओ प्रौढ़ा तथा रतिरहस्यक पद्मिनी, हस्तिनी ओ चित्रिणी नायिकाक सेहो उल्लेख अछि।

वस्तुतः शृंगारहारमे शृंगाररसक अंगोपांगक समग्र तँ नहि मुदा पुष्कल वर्णन भेटैत अछि। एहि ग्रन्थमे सादृश्यमूलक अलंकारक प्रयोग द्वारा चिकुर,

सीमन्त, मुख, नेत्र, भ्रूकुटि,कंठहार, उरोज, जघन, त्रिवली, श्रोणी, पैर आदि नारी-सौन्दर्यक विविध उपादानक परम्परित स्वरूपक वर्णन भेल अछि। वय:सन्धिक हाव, प्रथम दर्शन भाव, सद्य:स्नाताक कान्ति, संयोग ओ वियोगक विविध उद्दीपन, प्रेमक स्वरूप आदिक वर्णनसँ शृंगार रसक समग्रतामे विवेचन एहि ग्रन्थक लक्ष्य बुझना जाइत अछि। शृंगाररसक अभिव्यञ्जनाक हेतु नारीक विविध अंगोपांग ओ भेद-प्रभेदक वर्णनमे नारीक स्वरूप रीतिपरक कलाविलासक उपादानक रूपमे प्रयुक्त भेल अछि।

अर्चनामे संकलित वर्णमयी कवितामे कविक वाणीविलासक पराकाष्ठा दृष्टिगोचर होइत अछि। एहिमे व्याकरण ओ काव्यक नीर-क्षीर संयोजन नारीक लावण्य वर्णन द्वारा स्फुट भेल अछि। नारीक अंग, स्वर, गीत, आभरणमे विभिन्न वर्णक प्रतिबिम्ब अभिव्यञ्जित भेल अछि। स्पर्शवर्णनक परिचय दैत कविक उक्ति अछि—

कुटिल्ल अलकक वक्र रेखा सँ टवर्गक कल्पना
कर-चरण-तल-पल्लवहिसँ चारु वर्णक स्पर्शना

स्पर्श वर्णमे कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग ओ पवर्ग अबैत अछि, से अभिव्यक्त करबाक हेतु नारीक विभिन्न अंगमे ओहि वर्गकेँ आरोपित कयल गेल अछि। एहिमे 'ट' वर्णक कुटिलतामे नारीक अलकक कुटिलताक आरोप अत्यन्त चमत्कारक अछि।

वस्तुत: उक्तिवैचित्र्य ओ सहृदयरंजनताक दृष्टियेँ हिनक शृंगार-सम्पुटित कविता सभकेँ पढ़ला उतर ई लक्षित होइत अछि जे—

सा कविता सा वनिता यस्या: श्रवणेन स्पर्शनेन च
कविहृदयं पतिहृदयं सरलं तरलं च सत्वरं भवति

शृंगार रसक कवितामे नारीक आरोप कविक ओहि काव्यरूढ़िक प्रतिचैतन्यकेँ द्योतित करैत अछि जाहिमे काव्यानन्दक सृष्टिक हेतु नारीत्वक परिवेश अनिवार्य मानल गेल अछि। तेँ ई कहल जा सकैछ जे नारीक काव्यशास्त्रीय रूपक अभिव्यञ्जनामे कवि अनुराग ओ शृंगार, चुम्बन ओ आलिंगन, रति ओ विलास, रोमांच ओ स्वेद, स्वकीया ओ परकीयाक रीतिकालीन कविक

रूपमे प्रतिष्ठित होइत छथि। हिनक काव्यशास्त्रीय नारी-परिकल्पनामे नख-शिखक प्रमुखता अछि। नारीक शरीरक अंग रूढ़-सौन्दर्यसँ युक्त अछि। गुरु नितम्ब, क्षीण कटि, पीन पयोधर, कपोल, सुन्दर-सुडौल बाँहि, सघन जाँघ, लट्रिया कोमल केश, अर्द्धनिमीलित नेत्र, द्युतिमान सीमन्त, चकचक दाँत आदि समस्त सौन्दर्य-दर्शन परम्परागत अछि जाहिमे मौलिकता ओ नवीनता नगण्ये जकाँ अछि। नारी-सौन्दर्यक समस्त छाया पुरान ओ जर्जर अछि। रीति, वृत्ति, छन्द, अलंकार, भाषा, शैली आदिक चमत्कारमे सर्वत्र पुरातन-पथित्व दृष्टिगोचर होइत अछि।

मुदा, रीतिक प्रति आसक्त रहितहुँ कवि नारीक स्वरूपक नवोन्मेषक प्रति सेहो सचेष्ट भेलाह अछि। ललना-लहरीमे पारिवारिक सम्बन्धक आधारपर माता, बहिन, कुलवधू, पितामही, मातामही, पीसी, मौसी, सासु-पुतहु, ननदि-भाउजि ओ शृंगारहारमे पढ़ुआक वधूक लक्षण-निरूपणमे कवि परम्परासँ हटि नारी-स्वरूपक गरिमामय पक्षक उद्‌घाटन रीतिमुक्त भऽ कयलनि अछि तथा नारी-चित्रणमे नव दृष्टिकोणक परिचय देलनि अछि।

लौकिक स्वरूप

लौकिक जगतमे सम्बन्धक आधारपर नारीक मुख्यतः चारिगोट स्वरूप भेटैत अछि—कन्या, पत्नी, प्रेयसी ओ माता। श्रीसुमनजीक काव्यमे नारीक एहि समस्त रूपकेँ उपजीव्य कहल गेल अछि। 'कविताक आह्वान'मे माइक ममता, प्रेयसीक नयन-संकेत, आगतपतिकाक आशा, कन्याक विदाइ ओ विधवाक अश्रुकेँ काव्यक उपजीव्यक रूपमे चित्रित कयल गेल अछि। एहिसँ 'काव्य ओ नारी' विषयक कविक दृष्टिकोण अभिव्यक्त भेल अछि।

काव्यमे कन्याक दूइ गोट रूप सामान्यतः मान्य अछि। शृंगाररसक आलम्बनक रूपमे कन्या परकीया नायिकाक एक गोट प्रभेद होइत अछि तथा वात्सल्य रसक आलम्बन भेलापर ओ माता-पिताक स्नेहक सिद्धि ओ साध्य होइत अछि। पारिवारिक जीवनमे कन्याक परवर्ती रूप माता-पिताक स्नेह ओ वात्सल्य, सहृदयता ओ कोमलता, आनन्द ओ उत्साहक केन्द्र होइत अछि। कन्याक एहि स्वरूपकेँ कवि सहज अभिव्यक्ति देलनि अछि—

घर परिसर चुह-चुह करय चंचल सहज स्वभाव
पिता धन्य ! कन्या कुलक दीप-सिखा जे पाव

कन्या-जीवनक सम्पूर्ण काल नैहरमे बीतैत छैक। पछाति कन्या परकीया भऽ अपन मातृभूमिकेँ छोड़ि दैत अछि। तथापि जीवन भरि ओकर नैहरक प्रति व्यामोह, स्नेह, लगाव ओ ममत्व नहि छूटैत छैक। मैथिली-वन्दनामे नारी-जीवनक एहि सुकोमल तत्त्वकेँ कवि व्यञ्जनाक माध्यमे प्रस्तुत कयलनि अछि—

अपन खोँछिक अन्न-कण पोछि नयनसँ अश्रु कण
खसा देल्हुँ नैहरक दिस सजल शस्य श्यायल कत न

शैशवक बाद नारीक जीवनमे एहन बेर अबैत छैक जखन ओ अपन समष्टिकेँ पुरुषायत्त कय पुरुषहिमे एकाकार भऽ जाय चाहैछ। एकर कारण होइत छैक किशोरावस्थाक अन्त ओ युवावस्थाक आरंभक वयःसन्धिक वेलामे नारीमे किछु विशिष्ट प्रकृत गुण ओ अनुराग चेष्टा सबहिक जागरण। एहि गुण ओ अनुराग चेष्टा सबहिक वशीभूता नारी अपन समस्त भावात्मक अनुराग, आत्मिक आनन्द, मानसिक उल्लास, मृदुल कल्पना, स्वर्णिम स्वप्न ओ संचित सम्पत्ति ककरो चरणमे उझीलि देबाक हेतु आग्रही देखल जाइत अछि। नारीक ई रूप ओकर प्रेयसी रूप होइत छैक।

नारीक एहि रूपमे सहज मादकता होइत छैक जे सहजहिँ पुरुषकेँ अपना दिस आकृष्ट कऽ लैत छैक। नारी ओ पुरुषक एहि आकर्षणकेँ प्रेमक संज्ञा देल गेल अछि। ई प्रेम ततबा व्यापक ओ मधुर विषयक थिक जे काल ओ देशसँ निरपेक्ष कविभावनामे एकर चित्रण-अनुकीर्त्तन होइत रहल अछि।

ई प्रेम वस्तुतः दया, वात्सल्य, सहृयता, क्षमा, कोमलता, त्याग, सेवा, श्रद्धा आदि विभिन्न उदात्त भावनाक सम्मिश्रण होइत अछि। वासनारहित विशुद्ध, आदर्श ओ वास्तविक प्रेमसँ भरलि नारीक प्रेयसी रूपक अभावमे जीवनक कल्पनो संभव नहि अछि। प्रेयसी रहित पुरुषक जीवन नीरस ओ निरर्थक भऽ जाइत छैक। एही भावनाकेँ कवि ललनालहरीक तट प्रशस्तिमे अभिव्यक्त करैत कहलनि अछि—

बिनु सुरभिक चन्दन जेना बिनु किरणेँ जनु इन्दु
ललना बिनु जीवन जेना लहरि इन्दु बिनु सिन्धु

भारतीय संस्कृतिमे नारीक पत्नीरूप अत्यन्त गरिमामय छैक । एही स्वरूपके सामाजिक जीवनमे प्रेमक उपभोग करबाक अधिकार देल गेलैक अछि । पति-पत्नीक सम्बन्धके सर्वाधिक स्पृहणीय ओ आदर्श मानल गेल अछि । समस्त सभ्य समाजमे एहि सम्बन्धके वैवाहिक अनुबन्ध द्वारा स्थायित्व प्रदान कयल गेल अछि । सुखी ओ परितृप्त गृहजीवनके समस्त सुखक मूल तथा त्रिवर्गक साधक कहल गेल अछि । सन्तुष्ट गार्हस्थ्य मानवक जीवन-यात्राके आनन्दक चरमोत्कर्ष धरि पहुँचा दैत छैक ।

भारतीय धर्मग्रन्थ सबहिक आधारपर पत्नीक अभावमे पुरुष अपूर्ण होइत अछि । पत्नीये द्वारा ओकर अर्द्धांगक पूर्णता होइत छैक । मुदा पत्नी वासना ओ विलासमात्रक प्रतीक नहि, अपितु सत्परामर्शदात्री, सुख-दुःखक सहभागिनी, सदसत् केर विवेचिका, सभ अवस्थामे अनुचरी, हृदयक विश्रामस्थल, सेवाकालक दासी तथा क्रीड़ा-विनोदक सहचरी कहल गेल अछि । ओ प्रेमिका अछि, सहचरी अछि, अनुचरी अछि, अर्द्धांगिनी अछि, गृहलक्ष्मी अछि । श्रीसुमनजीक काव्यमे नारीक पत्नीरूप परम्परा प्रसिद्ध रूपे अभिव्यक्त भेल अछि—

सखी सहचरी सचिव शुचि रति रुचि गृह परिबंध
भुक्ति मुक्ति एकल विहित अर्द्धांगिनि अनुबंध

एतावता कवि नारीके प्रेयसी रूपमात्रमे नहि देखलनि अछि अपितु ओकर ओहि रूपक प्रति सेहो भावुक छथि जे घर-परिवारक वातावरणमे विकसित होइत अछि ।

श्रीसुमनजीके नारीक चित्रांकनमे सर्वाधिक सफलता भेटलनि अछि । हिनक नारी-चित्र भावुक अछि आ स्नेह करब जनैत अछि मुदा ओकर प्रेममे वासनाक उद्दाम प्रवाह नहि छैक अपितु ओ त्याग ओ बलिदानक उच्चतम शिखर धरि पहुँचि पुरुषक प्रेरणा स्तम्भक काज करैत अछि । हिनक नारीभावनामे नारी सौन्दर्य-मूर्ति, स्नेहमूर्ति, अनुरागमूर्ति, त्यागमूर्ति, भावमूर्ति ओ विवेक-मूर्ति अछि । जे सांसारिक संघर्षमे पौरुषक मार्गके प्रशस्त करैत अछि ।

जखन कवि राष्ट्रीय भावनासँ आप्लावित होइत छथि तँ पुरुषक चैतन्यके जाग्रत करबाक हेतु नारीक शक्तिस्वरूपक आवाहन करैत छथि । समाज-सुधार

भावनासँ प्रेरित कविहृदयमे नारीक अबलारूप सबला ओ प्रेयसीरूप वीरांगनामे परिणत देखि पड़ैत अछि। अपन एहि रूपमे नारीक कोमलता ओ सुकुमारता, शक्ति, साहस, वीरता, तेज, ओज, स्वाभिमान ओ गर्वसँ सम्पुटित भऽ विवेक, त्याग ओ कर्मण्यताक प्रतीक बनि ओकर यौवन ओ कामकेँ वीरत्वक प्रखरतामे आच्छन्न कयने देखि पड़ैछ। 'नव पुरान नव इतिहास' शीर्षक कवितामे कवि जखन ओजगुणक आह्वान करैत छथि तँ शक्तिस्वरूपा नारीकेँ सेहो पुरुषक चैतन्यकेँ प्रस्फुटित करयबाक हेतु आगाँ आबय कहैत छथिन—

आइ गौरी बनथु श्यामा शिव जखन शव बनल भूतल
योगमाया सजग जगबथु शेषशायी पुरुष सूतल
रक्तबीजक रक्त अणु परमाणु चाटथु क्रूर काली
शारदा विज्ञान वैभव अन्नपूर्णा शस्यशाली

जखन कखनहुँ कवि ओजक प्रसंगक वर्णन कयलनि अछि तँ नारी-शक्तिकेँ पुरुषक धर्मपथक बाधाक रूपमे स्वीकार नहि करैत छथि। देशक युवाशक्तिकेँ माधुर्यसँ ओज दिस बढ़बाक हेतु आह्वान करैत कवि कहलनि अछि—

देवयानी कच कलापक आइ जादू कच उपर नहि
साधना संजीवनी केर लगन लागल मनहि जखनहि
आइ पार्थक चित्रपट नहि खचित सुरबालाक छविघन
पाशुपत ब्रत जखन संकल्पित न भय कल्पित क्षणहु मन

नारीत्वक चरमोत्कर्ष ओकर मातृत्वमे छैक। नारीक सहज ममत्व, स्नेह, वात्सल्य ओ सेवाभाव आदि उदात्त गुण अपन चरम स्थितिमे ओकर मातृरूपहिमे भेटैत छैक। ममताक मंदाकिनी, स्नेहक अक्षय राशि, प्रेम, त्याग, तपस्या, करुणा, सेवा, धैर्य ओ सहनशीलताक साकार प्रतिमा माता सब दिनसँ आदर ओ पूजाक पात्री रहलि अछि। मातृत्वमे देवतुल्यताक कल्पना कयल गेल अछि। माताक पदकेँ सहस्रो पितृपदसँ उच्च गरिमा देल गेल अछि। एकरा स्वर्गहुसँ वरिष्ठ कहल गेल अछि। आचार्य श्रीसुमनजीक काव्यमे वात्सल्यक प्रतीक ओ सन्ततिक आश्रय माताक चारुतापूर्ण चित्रण भेल अछि—

मायहिसँ ममता उपज बहय सिनेहक सोत
सर्ग स्वर्ग अपवर्ग सुख जनिकहि कोर इजोत

सन्तान प्रेम माताक हृदयकेँ उद्वेलित कयने रहैत छैक। जीवनक समस्त अवस्थामे सन्ततिक सुखमे माताकेँ असीम आनन्द होइत छैक। ओकर अल्पो क्लेश माताक हृदयमे काँट जकाँ कचकैत रहैत छैक। ताहूमे जखन ओकर निर्दोष सन्तति जागतिक प्रपञ्चसँ वञ्चित होइत अछि तँ कोन माय अपन आक्रोशसँ धरतीतलकेँ दलमलित नहि कऽ देत ? मैथिली-वन्दनामे माताक एहिं आक्रोशके जे स्वर देल गेल अछि, से सनातनसँ मातृत्वक सहज प्रवृत्तिक द्योतक अछि—

पतिक बात नहि राखि पिता घर सती जरलि छथि
उतरि शिवक सिरसँ गंगा समुचिते गललि छथि
माधव संग न जाय राधिका विरह बरलि छथि
काली हर उर चरण राखि जी दाबि दगलि छथि
किए बनलि वनबासिनी पति-पद-रेणु सुता हमर
ज्वालामुखी न थीक ई ज्वलित प्रश्न धरणीक उर

यद्यपि एहि पद्यमे प्रकृतिमे आरोपित पराशक्ति स्वरूपा दिव्यादिव्य नारीक स्वरूपक मातृत्व उद्घाटित भेल अछि, मुदा ई समस्त रूपमे माताक वात्सल्यक उद्घाटन करैत अछि।

एतावता श्रीसुमनजीक काव्यमे अपन विभिन्न लौकिक रूपमे नारी रति ओ प्रीति, सख्य ओ दास्य, स्नेह ओ वात्सल्यक समेकित गुणवत्तासँ महिमान्वित अछि।

समष्टिमे विचार कयलाउत्तर श्रीसुमनजीक मुक्तक काव्यमे अभिव्यञ्जित नारी-परिकल्पनामे परम्परा ओ युगप्रवृत्ति दूहूक सम्यक् समायोजन दृष्टिगोचर होइत अछि। प्राचीनताक प्रति अनुरक्त ओ नवीनताक प्रति उत्सुक श्रीसुमन जीक हेतु ई स्वभाविके।

तथापि, श्री सुमनजीक नारी-चित्रांकनक सम्पूर्णतामे परिचय हिनक खण्ड-काव्य 'उत्तरा' ओ 'दत्त-वती' महाकाव्यक नारी-चरित्रक विश्लेषणक वादे संभव, मुदा एहि दूनू ग्रंथकेँ प्रस्तुत अध्ययन-सीमामे नहि राखल गेल अछि।

आचार्य सुमनक काव्यमे आधुनिकता

डॉ० श्रीशान्तिनाथझा

कविकुल-दिवाकर, कुशल सम्पादक, सफल अनुवादक, सिद्धहस्त लेखक, दक्ष शिक्षक, पटु समालोचक, कुशल वक्ता ओ मैथिलीक वरदपुत्र कविवर श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' मैथिली साहित्यक ओ देदीप्यमान नक्षत्र छथि जनिक प्रतिभा-प्रसादसँ मैथिली साहित्यक रिक्त भण्डार परिपूरित ओ आलोकित होइत रहल अछि आ होइत रहत। सुमनजी संस्कृतक मूर्धन्य विद्वानक संग हिन्दी ओ मैथिलीमे समान अधिकार प्राप्त कयने छथि। हिनक रचना तीनू भाषामे उपलब्ध होइत अछि। ई कहब अत्युक्ति नहि होयत जे जतबा रचना कविवरक मैथिलीमे छनि ओतबा प्रायः आन कविक नहि। बहुतो विद्वान कविकेँ प्राचीनताक सीमामे बान्हल देखैत छथि, परञ्च कविक रचना देखलासँ स्पष्ट होइछ जे प्राचीनताक प्रति कविकेँ जँ आदर छनि, श्रद्धा छनि तँ नवीनताक प्रति ओतबे प्रेम छनि, गतिशीलता छनि। यैह कारण अछि जे यदि वर्ण्य विषय कविक प्राचीनताक देन थिकनि, संस्कृतक प्रति आदर थिकनि तँ नवीनताक संग ओकर उपस्थापन करब आधुनिकताक द्योतक कहल जा सकैछ। यद्यपि कविक अधिकांश रचना देखलासँ आधुनिकताक भान स्वतः परिलक्षित होइछ, मुदा विस्तार भयसँ एतऽ एक-दू पुस्तक मात्रक बानगी उपस्थित अछि। 'प्रतिपदा'क आषाढ़स्य प्रथम दिवसे, हलधर, श्मशान, जन्मदिवस, विजयापर्व, युगनवीन, कविताक आह्वान आदि देखल जा सकैछ।

'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे'क वर्ण्य विषय यक्ष-यक्षिणीक वैह प्रेम वैचित्र्य थिक जकर वर्णन महाकवि कालिदास अपन 'मेघदूत' मे कयने छथि। मुदा सुमनजीक एहि पृष्ठभूमिमे रचित विषय सर्वथा उपस्थापनक ढंग नवीन रूपेँ व्यक्त भेल अछि। यथार्थतः कालिदास अपन वर्णनकेँ जतऽ समाप्त कयने छथि

ओतऽ सँ सुमनजी अपन वर्णन प्रारम्भ कयने छथि। अर्थात् कालिदासमे यक्षक विरहक प्रधानता अछि तँ सुमनजीमे यक्षिणी-वियोगक प्राबल्य कहल जा सकैछ। तेँ कवि कहि बैसैत छथि जे—

जे हत-चेतन पावस वेधित ? सन्देश, कोना बूझए प्रेषित
अछि उर जागल अलकाक व्यथा कवि ! रामगिरिक की सुनब कथा ?

'हलधर' मे द्वापरक हलधर बलराम ओ त्रेताक हलधर जनकक महत्ता जँ प्राचीनताक सूचक अछि तँ आजुक हलधर कृष्कके आओर विषम परिस्थितिसँ परिचित करायब आधुनिकताक परिचायक थिक।

धरतीसुत अहीँक कवितासँ हरित-भरित संसार
गढ़ि आखर दश-पाँच धन्य कवि कहबी अहाँ गमार

जन्मदिवसपर रचना करब प्राचीन परिपाटीक पालन करब थिक तँ एहि कविताक अंतिम दुइ पंक्तिमे निहित नैराश्य भाव आधुनिकताक द्योतक थिक।

किन्तु गनी हम पलक जीवनक बीतल अछि कत तात !···
वर्ष प्रवेशक हर्ष-अमृत मे घोरल विषमय अन्त।

विजयापर्वक वर्णन करब प्राचीन परिपाटीक अनुकूल अछि एवं ओकर विषयवस्तु सेहो प्राचीने थिक, मुदा एहि प्राचीन कथावस्तुके उपस्थापन करबाक ढंग सर्वथा नवीन अछि। एहिमे महिषासुर, मधुकैटभ, शुम्भ-निशुम्भ, मारीच आदि जँ प्राचीन काव्यक वर्ण्य विषय थिक तँ विदेशी सरकार तथा भगवतीके स्वतंत्रतासँ रूपक बान्हब सर्वथा आधुनिकताक द्योतक थिक।

'युगनवीन'मे प्राचीन कालीन पौराणिक अलभ्य ओ वैयक्तिक वस्तु आइ-काल्हि वैज्ञानिक युगमे सभक हेतु सुलभ भऽ गेल अछि। यदि भीममे सहस्र हाथीक बल, हनुमानके समुद्रलंघन, रावणक पुष्पक विमान, रामक सेतु निर्माण, अगस्तमुनिक समुद्र सोखब पौराणिक विषय थिक तँ आइ-काल्हि विज्ञानक द्वारा पुलक निर्माण, रॉकेट, अणुबम आदि आधुनिकताक द्योतक थिक। तेँ कवि कहैत छथि जे—

नहि नाभि-जन्महिक पद्मासन
नहि शिवक हाथ भीखक भाजन

इन्दिराक क्षीर निधि कौस्तुभ मणि

नहि जनार्दनक हित संचित धन

सभ वस्तुकें कवि विराट रूपमे लीन भऽ प्रगतिशील विचारकें मान्यता दैत आधुनिक युगमे विज्ञानक प्रगतिक संग सामञ्जस्य आनि विचारक आदर कयलनि अछि आ कोनो कवि तखने सफल भऽ सकैत छथि जखन युगक अनुकूल रचना करथि। सुमनजीमे सेहो ई विशेषता देखि पड़ैछ। आ तें कवि कहि उठैत छथि जे—

जगतक जड़ता चेतनाधीन

अणु-अणु जागृत जीवन नवीन

विज्ञान सेहो रचयित प्रवीन

त्रेता-जेता ई युग नवीन

'कविताक आह्वान'मे विद्यापति ओ 'शकुन्तला आश्रमक शोभा'क वर्णन जँ प्राचीन अछि तँ कोशी-बाढ़िक विभीषिकासँ घेरल 'पति परलोक वसल, घर उजड़ल' अनाथ विधवा आ' स्वतन्त्रता प्राप्तिक संग पाक विभाजनक परिणाम-स्वरूप शरणार्थी समस्या ओ 'खण्डित रसना दाबि'क वर्णन करब आधुनिकताक द्योतक थिक।

सभसँ विशेष कविक प्रतिभाक परिचय तखन निखरि उठैत छनि जखन कोनो वस्तुकें मानवीकरण कऽ वैसैत छथि। 'अर्चना'मे कविक गंगाक महत्ताक वर्ण्य विषय जँ प्राचीन रहल अछि तँ हिमालयकें महाकविक रूपमे ओ गंगाकें शाश्वत कविताक रूपमे वर्णन करब नवीनतेक द्योतक थिक। यथा—

अहँ हिम-नगपति महाकविक उर द्रवित निरन्तर

नित नव-नव हिमभाव-सजल कविता चिर सुन्दर

पुनः गंगाकें एक विश्वविद्यालयक रूपमे चित्रित करब, परोपकारिणीक रूपमे स्वर्गक सुखकें त्याग करब, महादेवक माथपर रहबाक लोभकें त्याग करब, मार्गक अनेक बाधाकें सहन करबाक वर्णनसँ आधुनिकताक पपिचय भेटैछ।

'पयस्विनी'मे प्रकृति, नदी पहाड़क वर्णन जँ प्राचीन रहल अछि तँ ओकर मानवीकरण करबाक रंग आधुनिकताक द्योतक कहल जा सकैछ। पहाड़कें

युवक रूपमे देखायब, संघर्षशील रहब, बढ़बाक इच्छाक जे वर्णन भेल अछि से युवकक प्रतिनिधित्व करैछ। गेना—'चीड़ि धरातल बढ़इत जाइछ करइत संघर्ष'। पुनः पहाड़के एक मैथिल वृद्धक रूपमे वर्णन द्रष्टव्य—

हिमहिक दप-दप पाग माथमे कान्हहु निर्झर चादरि
पहिर तरुगनक हरियर चपकन छाता तानल बादरि

'उत्तरा'क पंचम सर्गमे पत्नी पुरुषक बाधक नहि पूर्ण संग देनिहारि होइछ आ पुरुषक जीवनक साफल्य ओकरोपर निर्भर करैछ, वातावरणपर व्यवहारपर। जँ सीता, उर्मिला, राधा, मैत्रेयी, गार्गी आदिक वर्णन प्राचीन रहल अछि तँ विद्या, वीरता ओ आदर्श उपस्थित करब आधुनिकताक द्योतक थिक। यथा—

मैथिलीक प्रेमहि वश लंकेश्वरके जीतल राम
सौमित्रक साधना हेतु, उर्मिला न भेली बाम
पत्नी पद पूरिका पतिक जीवन-यज्ञक सहकारि
विद्वानक विद्या, वीरक वीरता, नरक गति नारि

निम्न स्थलमे कवि नायिकाक 'नयन'क वर्णनमे उपमानक प्रयोग यदि प्राचीन रहल अछि, भ्रूकटाक्ष, कन्दर्पक धनुष-वाण आदिक संज्ञा पबैत रहल अछि तँ कन्दर्पके अभियंता, भ्रूके वान्ह विद्युत आदिक प्रयोग आधुनिकताक परिचायक थिक। यथा—

अभियन्ता कन्दर्प ई भिकुटिक वान्ह बनाय।
नयन योजनासँ तरल विद्युत देल जमाय

उपर्युक्त किछुए बानगी देखलासँ स्पष्ट होइछ जे कवि प्राचीनतामे आधुनिकताक अद्भुत रंग भरि देलनि अछि। तेँ बहुतो विद्वान हिनका प्राचीनता ओ आधुनिकताक संगमपर ठाढ़ देखैत छथि।

रसवादी कवि

डॉ० नीताझा

संस्कृतक काव्यरचनाक परम्परामे रसवाद एक प्रमुख स्थान रखने अछि। साहित्यक क्षेत्रमे भरत मुनिक प्रसिद्ध ग्रंथरत्न 'नाट्यशास्त्र'मे सभसँ पहिने रससिद्धान्तक चर्चा भेटैत अछि। ओना, ई रस शब्द बड़ प्राचीन अछि। विभिन्न प्रकारक अर्थमे एकर प्रयोग होइत आयल अछि। सभसँ पहिने रस शब्दक कल्पना अथर्ववेदमे भेटैत अछि। सोमरसक अतिरिक्त केवल आध्यात्मिक ईश्वरीय अनुभूतिक आनन्दक पर्यायवाची शब्द 'रसौवैसः' तैत्तरीय उपनिषदमे कयल गेल छैक। भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक आधार रस एवं अलंकार थिक। एहिमे रसक मूलाधार कामसूत्रकेँ कहल जाइत छैक। किन्तु एहि कामसूत्र हुक आधार तँ अथर्ववेद सैह थिक।

एहि सभसँ भिन्न भरतमुनिसँ पहिने सेहो एकर चर्चा उपलब्ध अछि। अभिनवगुप्तक कहब अछि जे भरतमुनि ई प्राप्त कयलनि। ओ एकर वैज्ञानिक रूपेँ विस्तारपूर्वक वर्णन कयने छथि। राजशेखर तँ भरतमुनिसँ पहिने नन्दिकेश्वरक नामक चर्चा करैत छथि। ओना किछु आचार्य एहि रसकेँ आदिकवि वाल्मीकिसँ सम्बन्ध स्थापित करैत छथि। हुनक रचनामे रसक वर्णन तँ अछि, किन्तु रसक शास्त्रीय विवेचना नहि अछि। तेँ, रसक आधार-स्रोत कामसूत्रकेँ शास्त्रक रूपमे मानल तँ जा सकैत अछि, किन्तु इहो ओतबे निर्विवाद सत्य थिक जे रससम्प्रादायक प्रथम उपलब्ध ग्रन्थ भरतमुनिक नाट्यशास्त्र थिक। हुनकासँ पूर्वक कोनो ग्रंथ उपलब्ध नहि अछि। यैह रसकेँ काव्यक प्राणक रूपमे स्थापना कयलनि। हिनके मतक आधारपर कतोक दिन धरि काव्य-रचनाक संग-संग विभिन्न आचार्य अपन-अपन मतक प्रतिपादन करैत अयलाह।

बादमे किछु एहनो आचार्य भेलाह जे रसवादक विरोध कयलनि। ओ लोकनि काव्यमे अलंकारक प्रमुखताकें स्थान दैत छथि। एतेक दूर धरि जे काव्यशास्त्रक नाम अलंकारशास्त्रक रूपमे स्वीकार कयल जाय लागल। एहि सम्प्रदायमे सभसँ पहिने भामहक नाम लेल जाइत अछि। हुनक समर्थकमे दण्डी, वामन, उद्भट एवं रुद्रट अबैत छथि। तहिना, किछु रसवादी आचार्य भरत-मुनिक समर्थक भेलाह। ओहिमे लोल्लट, शंकुक एवं रुद्रभट्टक नाम उल्लेखनीय थिक।

आचार्य लोल्लट भरतमुनिक प्रसिद्ध रससूत्र 'विभावानुभावसंचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'क नीक व्याख्या प्रस्तुत कयलनि। ओ कहलनि जे अर्थ समूह असीम किएक नहि हो, काव्यमे सरस अर्थ आवश्यक। तहिना, शकुक भरत-मुनिक रससूत्रक व्याख्यामे अपन मौलिक चिन्तन देलनि। रुद्रभट्टक 'शृंगार तिलक'मे नवो रसक संग शृंगार-रसक विशेष वर्णन कयल गेल अछि।

तकर बादक प्रगतिमे रसक स्थापना ध्वनिक रूपमे भेल अछि। ओहि अवधिमे विभिन्न प्रकारक विचारधारा प्रवाहित भेल। एक दिस कोनो आचार्य स्पष्ट रूपसँ रस सिद्धान्तक समर्थन कयलनि तँ दोसर आचार्य रस ध्वनिक रूपमे! तहिना क्यो रसाश्रित औचित्यपर जोर दैत छथि तँ क्यो समन्वयवादी छथि। ओहिमे एक जन आचार्य कुन्तक छथि जे वक्रोक्तिपर आग्रह कयलनि अछि। ओ ध्वनि एवं रस दुनूक विरोध कयलनि, किन्तु हुनका मनमे ध्वनिक प्रति विद्रोह छनि आ रसक प्रति आग्रह। हुनक 'रसनिर्भराभिप्राय' एक मौलिक रसवादी दृष्टिकोण अछि।

एहि ध्वनिकालक अवधिमे रसवादी आचार्य लोकनिमे सभसँ पहिने भट्ट-नायकक नाम लेल जयबाक थिक। यैह रसक साधारणीकरणक सिद्धान्तक स्थापना कयने छथि। एहि द्वारा काव्यानन्दक मौलिक समस्याक समाधान कयनिहार यैह थिकाह। एहि अवधिक प्रमुख आचार्यमे अभिनवगुप्तक नाम लेब आवश्यक अछि। यद्यपि ई ध्वनिवादी आचार्य थिकाह, किन्तु रसक प्रति अत्यन्त आग्रहशील छथि। ई शान्तरसक प्रति आग्रह देखौलनि एवं शृंगार रसक विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत कयलनि। तेँ रसवादी आचार्यलोकनिमे हुनक

विशेष महत्त्व अछि। ध्वनिकालक अन्य रसवादी आचार्यमे राजशेखर एवं महिम-भट्टक विशेष महत्त्व अछि। राजशेखर तँ काव्यक हेतु 'शब्दार्थौ ते शरीरम्' एवं 'रस आत्मा' कहि रसक महत्त्वकेँ स्वीकार कयने छथि एवं महिमभट्ट ध्वनिवादक खण्डन कय रसवादक अनुमोदन स्पष्ट शब्दमे कयलनि अछि—"काव्यस्यात्मनि-संज्ञिनी रसादिरूपेन कस्य चिद्विमतिः"। एहि सभसँ भिन्न एक आचार्य भोज छथि जे समन्वयवादी रहितहुँ "सर्वासु ग्राहिषीं तासु रसोक्ति प्रतिजानते"मे रसो-क्ति कहि रसवादक प्रति अपन पक्षपात प्रदर्शित कयने छथि ।

अतः रसवादक स्थापनाक पश्चात् अलंकारवाद एवं ध्वनिवादक स्थापना भेल अछि। एहि अवधिमे आचार्य लोकनि विभिन्न सिद्धान्तक मण्डन एवं खण्डन करैत गेलाह अछि। केओ कोनो आचार्यक मतकेँ सम्पूर्ण मान्यता देलनि तँ केओ सम्पूर्ण रूपसँ अस्वीकार कयलनि। किन्तु, एहनो आचार्य भेल छथि जे कोनो आचार्य विशेषक मान्यतामे संशोधन-परिवर्त्तन अथवा परिवर्द्धन कयलनि अछि।

वादक अवधिमे मम्मटकेँ विशेष महत्त्व देल गेलनि अछि। ओ अति रमणीयतापर बल देने छथि। किन्तु, पण्डितराज जगन्नाथ तँ "आस्तयंत्रापि रसोवैसः" कहि काव्य रसक आनंदमयताकेँ आत्मानन्दक समान घोषित कयने छथि। आचार्य विश्वनाथ तँ तेहन शुद्ध रसवादी छथि जे समस्त वाङ्मयमे रसहिक महत्त्व प्रतिपादित कयलनि अछि—"वाक्यं रसात्मकं काव्यम्"।

तेरहम चौदहम शताब्दीमे अबैत-अबैत क्षेत्रीय भाषा सभमे सेहो काव्य रचना होमय लागल। ओहो लोकनि केवल भाषागत परिवर्त्तन तँ कयलनि किन्तु काव्यशास्त्रीय आधार संस्कृत काव्यशास्त्रहिकेँ मानलनि। ओही क्रममे हमरालोकनि महाकवि विद्यापति पर्यन्तकेँ देखैत छी। हुनका शृंगाररसक महाकवि कहल जाइछ। गोविन्ददास सेहो शीर्षस्थ रसवादी कवि छथि। मन-बोधमे वात्सल्य ओ कवीश्वर चन्दाझामे शान्तरसक प्रधानता अछि।

आधुनिक कविलोकनिकेँ दू कोटिमे बाँटि सकैत छी। एक कोटि रसवादीक अछि एवं दोसर प्रयोगवादीक। किन्तु, गम्भीरतापूर्वक देखल जाय तँ मैथिलीक अधिक यशस्वी कवि प्रयोगात्मक रसवादी छथि। कविवर सीताराम झाक

रचनामे वर्त्तमान परिवेशक कारणे जँ प्रयोगात्मक रचना उपलब्ध होइत अछि तँ ओहिमे हास्यक तेहन रस दय देल गेल छैक जे पाठकक हेतु हृदयसंवेद्य भय जाइत अछि। तहिना कविचूड़ामणि मधुपक रचनामे करुणरसक प्राण प्रतिष्ठित रहैत छैक। जे-जे कवि प्रयोगशील छथि हुनकहु रचनाक अन्तर्गत कोनो-ने-कोनो रसविशेषक स्थान अवश्य निहित अछि।

एहि दृष्टिएँ महाकवि सुमनजीकेँ शुद्ध रसवादी कवि मानैत छी। ई एहन रसवादी कवि छथि जे समान रूपसँ सभ रसक रचनामे सिद्धहस्त छथि। कोन रसक प्रति हिनक दुर्बलता अछि से बुझब कठिन। सुमनजीक कविता-संग्रह 'प्रतिपदा' बड़ प्रतिष्ठा प्राप्त कयने अछि। ओहिमे कवि जहिना 'पूर्णिमाक अनुजा' एवं 'अमाक सहोदरा' कहि प्रतिपदाक महत्त्वकेँ स्वीकार कयने छथि तहिना 'कविताक आह्वान' शीर्षक कवितामे विभिन्न अवस्थाक महत्त्वपर जोर देने छथि। ओ अवस्थाविशेष कोनो-ने-कोनो रसक उद्भावनाक कारण अवश्य अछि। एकहि गोट कविता द्वारा ओ कविताक जन्मक जे कारण कहैत छथि सैह तँ भरतमुनिक रससिद्धान्तक कार्य-कारणक द्योतक अछि। 'अर्चना'क गंगातरंगिणी मिथिलामहिमा एवं मैथिलीवन्दनामे कवि प्रतिभा देखबैत छथि तकरा मूलतः भक्तिभावनाक रससँ तेहन सिक्त कय देने जे ओकर व्यापकतामे सभ विलीन भय जाइत अछि। प्रमुख कृति 'पयस्विनी'क 'भाव-भूमि'मे अलंकार, ध्वनि एवं छन्दक महत्त्वकेँ स्वीकार तँ करैत छथि, किन्तु पयस्विनीक भाष्य करबा काल कहैत छथि जे—"पय पानिओ थिक दूधो थिक। पयस्विनी विन्दुवाहिनी सरितो थिक, दुग्धधारिणी धेनुओ थिक। पयोधर मुक्ताहार शृंगारी-बम दूधक धार उरोजो थिक, गगनविहारी तृण-तृण जीवन संचारी पावसी मेघो थिक। कविता सरिता जकाँ अवश्य बहुत उचाइसँ अवतरित होइछ; कवि गिरिक गौरव-रहस्यसँ, निश्चय, कोनहु एकान्त प्रान्तमे गलित होइछ।" एहिमे कविक रसमयता एवं रसवादिता जतेक स्पष्ट अछि, ततेक आन बात नहि। कवि पावसकेँ पयस्विनी, तामसी एवं मृत्युञ्जयक रूपमे देखैत छथि। पावसी तामसीकेँ तँ कवि रस-चित्रक रूपमे प्रस्तुत कयने छथि जाहिमे नवोरसक सन्निवेश कय एकहि ठाम देखौलनि अछि। सरिताकेँ

रसवन्ती, वनिता एवं कविताक रूपमे चित्रित करैत छथि। पर्वतकें वृद्ध, युवक एवं बालकक रूपमे पबैत छथि। एहिसँ ई अवश्य प्रतिभासित होइछ जे कविक आध्यात्मिक, दार्शनिक चिन्तनमे रसवादिता प्राणप्रतिष्ठा पाबि लेलक अछि।

महाकवि सुमनजीक रसवादी दृष्टिक सभसँ ज्वलन्त प्रमाण थिक हिनक 'साओन-भादव'। एहि रचनामे कवि अपन काव्य-साधनाक पराकाष्ठापर प्रतिष्ठित छथि। कविक सूक्ष्म दृष्टि एवं विलक्षण अभिव्यञ्जना-शक्तिक ई उदाहरण कहल जा सकैत अछि। एहिमे प्रकृतिक मानवीकरण देखाओल गेल अछि। साओन-भादवक मेघ अर्थात् पावस सभ वर्ष अवितहिं अछि। ओ सभ वर्ष उमड़ैत अछि, गरजैत अछि। किन्तु कवि ओहि अचेतनमे जे चेतनाक संचार कयने छथि से कोनो रससिद्ध मात्र कय सकैत अछि। पावसक ओहि मेघकें कवि विभिन्न दृष्टिसँ देखैत छथि। विभिन्न रसक उद्रेक होइत अछि। एके वस्तुकें अनेक दृष्टिसँ देखब, से फेर समान रूपसँ, भरि आँखि देखि ओकरा हृदयंगम करब महाकवि सुमनजीक कविहृदय सैह कऽ सकैत अछि। संगहि ई हुनके रसवादी दृष्टि थिक एवं काव्यकलाक साधना थिक जे ओकरा ओ सब रसमे परिपाक कय देखौने छथि। ताहूसँ विलक्षणता तँ ई अछि जे पावसक एके चित्रमे नवो रसक निष्पत्ति कय कवि अपन रसवादिताक दृष्टि एवं कलात्मकता देखा देलनि अछि। ओना, एहिमे विभिन्न अलंकारक सफल प्रयोग भेल अछि, किन्तु तकरा ओ सहायक रूपमे ग्रहण कयने छथि। एहि संग्रहकें लघु आकारमे विराट्क दर्शन करओनिहार कहल जयबाक थिक।

भारतीय वाङ्मयमे मैथिलीक कविलोकनिक जे परम्परा अछि ताहिमे महाकवि सुमनजीकें ओहि कोटिक रसवादी कवि बुझबाक थिक जे अलंकार-वादक समर्थन कयलनि, ध्वनिक महत्त्वकें स्वीकार कयलनि, किन्तु काव्यक प्राण रसकें मानने छथि। यैह कारण अछि जे हिनका प्राचीनता एवं नवीनताक सन्धिक कवि कहल जाइत अछि। हिनक कवितामे जे रसनिष्पत्ति होइत अछि ताहिमे आध्यात्मिक चिन्तन एवं जीवन-दर्शनक महत्त्व अधिक अछि। हिनक एहि कविकर्मकें बुझबाक हेतु कविक हृदय चाही तें हिनका कविक कवि कहल जाइत छनि।

मानवतावादी कवि

डॉ० इन्दिराझा

समस्त देशक श्रेष्ठ साहित्यमे मानवतावादक स्वरूप प्राप्त अछि। साहित्यमे प्राप्त ई समस्त भावना जे मानव जीवनक विकासक्रममे योग दैत अछि अथवा ओ क्रिया जे मानवक मूल प्रकृतिक सम्यक् पोषण एवं संवर्द्धन करैत अछि, मानवतावादक अन्तर्गत अबैत अछि। भारतीय साहित्यमे एकरा 'वाद'क रूपमे स्वीकार नहि कयल गेल अछि, मुदा एकर दर्शन हमरालोकनिक साहित्यमे सिद्धान्तरूपमे सर्वत्र भेटैत अछि।

विभिन्न कालमे जीवनक आदर्शमे परिवर्त्तन भेल अछि। मानवतावादक कोनो एकटा निश्चित परिभाषा नहि कयल जा सकैछ, मुदा विभिन्न युगक तत्त्वचिन्तक साहित्यकार सार्वदेशीय मानवताक हित-कामनासँ प्रेरित भऽ अपन भावना व्यक्त कयलनि अछि। साहित्य द्वारा मनुष्यक सर्वतोमुखी विकासक प्रयत्न कयल जाइत अछि। क्षणिक उत्तेजनावश नहि, अपितु सार्वदेशीय एवं शाश्वत भावनाक मूल्यांकन करब एकर आवश्यक अंग अछि। मानवतावादी साहित्यकार सामयिक आ रूढ़िगत भावपर अपेक्षाकृत कम ध्यान दैत छथि। सदाचारपूर्ण साहित्य हुनका निकट अधिक समादृत होइत अछि। ओ वाह्य नियंत्रणक अपेक्षा आन्तरिक नियन्त्रणपर विशेष बल दैत छथि। हुनका समक्ष चरित्रमे संयम आ नियमक अधिक महत्त्व अछि।

मानवतावादी काव्यधाराक ध्यान अबिते प्रतिमान रुपमे जाहि कवि लोकनिक प्रतिमा सहजतः अन्तरमे साकार भऽ उठैत अछि ताहिमे मूर्धन्य साहित्यकार श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन' छथि। सुमनजीक काव्यमध्य मानवतावादक स्वर मुखर अछि। संस्कृत साहित्यसँ भावपुष्प संचय कऽ मैथिलीक प्रसाधन करब हिनक विशेषता थिकनि। एकरा नवीनताक संज्ञा देल जा सकैत

अछि, आधुनिकताक नहि। नवीनता एहि हेतुएँ जे संस्कृत काव्यरीतिक प्रयोग नवीन गीतशिल्पमे नवीन वस्तु थिक। आधुनिक एहि लेल नहि जे हिनक रचनामे संस्कृतकाव्यक रमणीयार्थ प्रतिपादन करबाक उद्देश्यसँ उक्ति-वैचित्र्यमूलक चमत्कार प्राबल्य भऽ जाइत अछि तथा आधुनिक भावधाराक प्रवाह स्वाभाविक रूपसँ अवरुद्ध। मुदा, प्राचीनताक नवीनीकरण हिनक काव्य भव्य सर्वत्र भेटैत अछि।

हिनक कल्पनाशीलताक परिचय प्राप्त करब सर्वसाधारणक सामर्थ्यसँ बाहरक वस्तु अछि। हिनक काव्यक सम्बन्धमे आचार्य रमानाथ झाक कथन अक्षरशः सत्य छनि—"रचना होइत अछि हिनक भावात्मक ओ भाषा संस्कृत-बहुल, तेँ हिनक कविता लोकप्रिय नहि होइत अछि, परन्तु ई कविक कवि थिकाह, हिनक कविताक रसास्वादनक हेतु एक गोट कवि हृदय चाही।"

आधुनिक मैथिली साहित्य विविध वाद—प्रयोगवाद, प्रगतिवाद, सहजतावाद, नवचेतनावाद आदिसँ परिचय प्राप्त कयलक। सुमनजीक काव्य प्रतिभा प्रत्येक वाद-प्रवादकेँ स्पर्श करैत आगाँ बढ़ल अछि। हिनक प्रत्येक रचनामे उक्तिवक्रता अछि तथा सादृश्यमूलक आरोपक सुन्दर संयोजन अछि। तत्सम-बहुल भाषाक प्रयोग हिनक संस्कृत साहित्यक अपरिमित ज्ञानक परिचायक अछि।

सुमनजी भारतीय कृषक अर्थात् श्रमिकक दारुण स्थितिपर संवेदना प्रकट करैत छथि अपन 'कविताक आह्वान'मे। ई वर्त्तमान युगक पीड़ित मानवक दुःखक सहभोक्ता छथि। ओकर विपन्नता हिनक उर-प्रदेशकेँ उद्वेलित कऽ दैत अछि—

कुंजपुंजसँ कोलाहल मुनि जन-पथ देखि समक्ष
हर-कोदारि-खुरपीक पुजारी अर्ध-नग्न कत लक्ष
क्षुधित पिपासित रक्त शुष्क लय जोति-कोड़ि जी दाबि
सुजला-सुफला जनिक कठिन श्रम गीत-वन्दना गाबि
कृषक श्रमिककेर श्रमजल चुबइत पावन गंगानीर
साग-भात लय ठाढ़ि खेतमे कविता कमला तीर

प्रकृतिसँ सम्पृक्ति हिनक खास विशेषता अछि। 'तरु'क मानवीकरण

कऽ ओकर लोककल्याणकारी भावनाक प्रत्यक्षीकरण कराओल गेल अछि, मानवके आदर्शक पाठ पढ़ाओल गेल अछि। महर्षि दधीचिक परोपकारिता प्रसिद्ध अछि जे लोककल्याणार्थ अपन अस्थिदान कयलनि। वृक्ष हुनकहुसँ विशेष लोकमंगलकारी अछि जकर सर्वाङ्ग परहित समर्पित अछि। द्रष्टव्य—

अमर दधीचि विदित छथि परहित निज अस्थिक कय दाने
किन्तु अहाँ आजीवन तिल-तिल कय सर्वाङ्ग प्रदाने
फल दी, फूल लुटाबी दलहुक शय्या हित कय त्यागे
त्वचा औषधिक हेतु खियाबी इन्धन शाखा-भागे

वस्तुतः मनुष्यके तरुसँ प्रेरणा लेबाक थिक, विश्व-बन्धुत्वक भावनाके अन्तस्तलमे जाग्रत करबाक थिक।

संसारक प्रत्येक जड़ ओ चेतन वस्तु महत्त्वपूर्ण अछि, क्यो ककरहुसँ कम नहि, तेँ हृदयसँ अहंभाव अवश्य वहिष्कार्य। क्यो त्याग करैत अछि तेँ प्राप्त करैत अछि। 'उक्ति-प्रत्युक्ति' शीर्षक कविताक किछु पाँती द्रष्टव्य थिक—

फल झुलइत शाखापर बजला 'फूल ! गन्ध नहि उदर भरत'
हँसि कहलनि ओ 'तोहर जन्म हित हमरा पूर्वहि झड़य पड़त'

मनुष्यके प्रेमक क्षुधा रहिते छैक। कविक शब्दमे—'प्रेम स्वातिक बिन्दु, याचक जगत चातक भेल।'

नवीन वैज्ञानिक आविष्कारसँ कविके विरोध नहि, किएक तँ ओ मानवक उपकारक अछि—

नभ विद्युत भूतल उतरि चलल वशवर्त्ती कयलक अनिल अनल
चञ्चला स्वयं छथि यन्त्र-बद्ध ई नव विज्ञानक मन्त्र प्रबल

पावसऋतुक आगमनसँ अग-जग नवजीवन प्राप्त करैत अछि तथा प्रकृतिक कण-कण जे ग्रीष्मक प्रचण्डतासँ व्यथित छल, जुड़ाइत अछि—

ई नेह बिन्दु थिक अमृत सिन्धु वत्सलता-रजनी रजत इन्दु
रससँ भरते अगजग सागर डाबर डाबा सरिता गागर
भरते नवनीते शिला-खण्ड घृत भरते खेत-पथार कुण्ड
जमते हिम-दधि गिरि शिखर-शिखर मन वन हरियर पावन परिसर

कविक एहि रचनाक महत्त्व सामयिक नहि, सार्वकालिक अछि। युग बदलैत रहत, मुदा एकर महत्त्व चिरस्थायी रहत। कविक कल्पना 'तिले तिले नूतन' होइत रहत। एतबे नहि, कवि पावसकें मृत्युंजय मानलनि अछि। उदार हृदय, दानी ओ त्यागी जलदक जयजयकार कयलनि अछि। जलद स्वयं कष्ट सहन कऽ लोकक कल्याण करैत अछि तें ओ धन्य अछि। कवि जलदक माध्यमसँ ई संदेश दैत छथि जे जखने जनकल्याणक हेतु क्यो प्राण उत्सर्ग करताह तखने ओ मरणोपरान्तो पूजित होइत रहताह अन्यथा एहि संसारमे तँ जन्म-मरणक चक्र चलिते रहैत अछि—

छल वसु-संपत्ति जते सञ्चित
धरती माताकें कय अर्पित
नहि राखल किछुओ सलिल शेष
धन निर्मल अम्बर मात्र वेश
बलिदानी दानी दिव्य जलद
गलि स्वयं लोकहित सिद्ध बलद

'वनपर्व' शीर्षक कवितामे कविक अभिमत छनि जे संघर्षरत जिनगीसँ अकच्छ, दुश्चिन्ताक तापसँ प्रतिपल छटपटाइत मानव प्रकृतिक शाश्वत निरापद कोरमे नुका ओकर अंचलक शीतल वसातक कामना अवश्य करैत अछि। ओ प्रकृतिक सुषमाक अवलोकन कऽ अपन विकार हटबऽ चाहैत अछि। वनक विशेषता निम्नपदमे द्रष्टव्य थिक—

ने मनुज-दनुज ने जन-नेता, प्रभु-सेवक
ने वर्गद्वन्द्व-अन्त्यज-द्विज, शोषित-शोषक

सामान्यतः भक्त लोकनिक ईश्वरक समक्ष पूजन-सामग्री अर्पण कऽ अपना इच्छा पूर्त्तिक हेतु याचना करैत छथि। मुदा कविक चिन्तन-प्रक्रिया ओ पूजन-प्रक्रिया भिन्न अछि। कवि लोकपीड़ासँ द्रवीभूत भेल अन्तस्सँ निःसृत भाव-सुमन लऽ देवतापर चढ़यबाक इच्छुक छथि—

दलित व्यथितकें देखि उर-द्रवित भाव उमड़बितहुँ
ताहीसँ हे देव अहाँक चरण दिस अर्घ्य बढ़बितहुँ

कवि वृद्ध, युवक ओ बालकक रूपमे पर्वतक मानवीकरण कऽ ओकर विशेषतासँ जनसामान्यकेँ अवगत करौलनि अछि। ओ मनुष्यकेँ पर्वत सदृश महान बनबाक हेतु आह्वान करैत छथि।

सुमनजी 'अन्तर्नाद' काव्य-संग्रहमे सेहो मानवतावादक समर्थन कयलनि अछि। हिनक कवित्वशक्ति राष्ट्रक लेल समर्पित अछि। हिनक काव्यमे युगसत्यक प्रति तीव्र आग्रह देखबामे अबैत अछि। द्रष्टव्य थिक 'नव पुराण नव इतिहास' शीर्षक कविताक किछु पाँती—

पञ्चदेवक पाञ्चभौतिकता उपर देवत्व दुर्भर
आइ देवत्वक प्रतिष्ठा मानवक निष्ठाक ऊपर

सुमनजीक 'वसुधैव कुटुम्बकम्'क मानवतावादी कल्याणभावना निम्न पदमे देखबायोग्य अछि—

आइ पलखति नहि कनेको पलक छुति नहि आइ करबे
स्व-हित निहिते विश्वहित चित भावनात्मक ऐक्य भरबे

वस्तुतः सुमनजीक मूल वृत्ति जीवनमे सत्य, सुन्दर आ शिवक द्रष्टा होयब रहल अछि जे मानवमुखी एवं जीवनोन्मुख भऽ कर्ममय जगतसँ सम्बद्ध भऽ गेल अछि। मानवसत्ता, मानवमन आ ओकर नियति कविक दृष्टिक केन्द्र बनल अछि।

आचार्य 'सुमन'क राजनीतिक भूमिका

—डॉ० श्रीसुरेश्वर झा

एहि पृथ्वीपर भगवान किछु महान व्यक्तिकेँ एक अलौकिक ढंगक बहुआयामी प्रतिभासँ सम्पन्न कऽ पठबैत छथिन। ओहन व्यक्तिक कोनो पक्षपर विचार करबाक काल लागत जे ओ ओही क्षेत्रक लेल सर्वोत्कृष्ट छथि। सुमनजीकेँ सम्पूर्ण उत्तर भारतमे एक विशिष्ट साहित्यकारक रूपमे जानल ओ मानल जाइत छनि। समस्त भारतवर्षक बाइस गोट प्रमुख भाषाक साहित्यकारक शीर्षस्थ संस्था साहित्य अकादेमीमे एक विशिष्ट स्थान प्राप्त रहलनि। सम्प्रति जखन ओ साहित्य अकादेमीक सदस्य नहि छथि तथापि ओहि संस्थाक निम्नवर्गीय कर्मचारीसँ लऽ कऽ माननीय अध्यक्ष एवं सचिव धरि सुमनजीक स्मरण करैत रहैत छथिन। मुदा, ई एक अपूर्व संयोग थिक जे एक उच्चकोटिक साहित्यकार, लेखक आ संस्कृत वाङ्मयक अद्‌भुत अध्येताक संगहि सुमनजीक व्यक्तित्वक राजनीतिक पक्ष उज्ज्वल एवं फरिच्छ छनि। एक साहित्यकारक रूपमे हुनक कृतित्वक बहुत अध्ययन ओ अनुशीलन कयल गेलनि अछि, परञ्च हुनक राजनीतिक जीवनपर, समग्र रूपसँ अद्यावधि कोनो अध्ययन प्रस्तुत नहि कयल गेल अछि। एहि छोट निबंधमे ओहि विषयपर व्यापक एवं गंभीर अध्ययन करब संभव नहि अछि। हम हुनक राजनीतिक सक्रियता आ चिन्तन पर संक्षेपमे विचार करबाक प्रयास कऽ रहल छी।

स्वाभाविक रूपसँ आजुक कोनो भारतवासीक राजनीतिक भूमिका महात्मा गांधीक नेतृत्वमे चलाओल गेल स्वतंत्रता-आंदोलनसँ प्रारम्भ होइत अछि। १९१६ ई० सँ प्रारंभ भऽ १९४७ धरिक समयकेँ एहि देशमे गांधीयुग कहल जाइत अछि। सुमनजी गांधीजीक चम्पारण सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन तथा 'सिविल नाफरमानी'वला संघर्षमे भाग नहि लेलनि, कारण ओ ओहि समय

मे विद्याध्ययनमे पूर्णरूपेण व्यस्त छलाह। ओ तीस-एकतीस ई० मे अध्ययन समाप्त कयलनि। छात्रावस्थामे जखन ओ मुजफ्फरपुरमे रहैत छलाह तखनहि दरभंगाक प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी एवं राजनेता पं० रामनन्दन मिश्रसँ हुनक सम्पर्क स्थापित भऽ गेल छलनि। रामनन्दन बाबूक 'मगन आश्रम'सँ हस्तलिखित एक मासिक पत्रिका बहराइत छल, जकर सम्पादनक भार हुनके मिश्रजी देने छलथिन। पत्रिका तीन वर्ष धरि चलैत रहल। ओकर एको प्रति एखन उपलब्ध नहि अछि। १९३५ मे सुमनजी राजदरभंगाक 'मिथिला मिहिर'क सम्पादक पदपर नियुक्त भऽ दरभंगा आबि गेल छलाह। ओहि समय धरि दू-दू गोट देशव्यापी स्वतंत्रता-आंदोलन भऽ चुकल छल। दरभंगा राजनीतिक जागरण तथा स्वतंत्रता-आंदोलनक एक प्रमुख केन्द्रक रूपमे समस्त देशक राजनीतिक क्षितिजपर प्रकाशमान भऽ गेल छल। एतय ब्रजकिशोर प्रसाद, धरणीधर बाबू, कमलेश्वरी चरण सिंहा ओ पं० रामनन्दन मिश्र सन कांग्रेसी नेता छलाह। हुनका लोकनिक व्यक्तित्व एवं त्यागसँ दरभंगाक नवतुरिया वर्ग प्रभावित भऽ स्वतंत्रता-संग्रामक सिपाहीक रूपमे सक्रिय भऽ चुकल छल। एहि परिवेशमे सुमनजीक दरभंगामे एक पत्रकारक रूपमे जीवन प्रारंभ होयब स्वतः एक एहन संयोगक विषय भेल जे हुनक साहित्यिक एवं राजनीतिक दुनू प्रतिभाकेँ प्रस्फुटित करबाक लेल एक अपूर्व अवसर प्रदान कयलकनि। मुदा पत्रकारक रूपमे दरभंगा राजक सेवामे रहलाक कारणे ओ खुलिकऽ तत्कालीन राजनीतिक संघर्षमे भाग लेबासँ वंचित रहलाह।

परञ्च, बियालिसक निर्णायक स्वतंत्रता संग्राममे अपन लेखनीसँ सुमनजी ओहिसँ जुड़ल रहलाह। कांग्रेस दल अंगरेजी सरकार द्वारा अवैध संस्था घोषित छल। ओहि समयमे काँग्रेसक कोनो पत्र अथवा बुलेटिन प्रकाशित होयब संभव नहि छल। मुदा, गुप्तरूपसँ स्वतंत्रता सेनानी तथा कांग्रेस कार्यकर्त्ताक बीच वितरित करबाक लेल कांग्रेस एक 'बुलेटिन' प्रकाशित करैत छल, जकर समस्त भार हिनकेपर देल गेल छलनि। ओ अपन तेज-तर्रार लेखनीसँ आंदोलनमे संघर्षरत कार्यकर्त्ता लोकनिकेँ दिशा निर्देश करैत रहलाह। ई कहबाक प्रयोजन नहि अछि जे कोनो देशक स्वतंत्रताक लड़ाइमे हथियार आ लेखनी दुनूक महत्त्व होइत छैक। इटलीक मैजिनी आ गैरीबाल्डीक उदाहरण एकर ठोस प्रमाण अछि।

जखन कांग्रेस अवैध घोषित छल तँ ओहि अवधिमे तत्कालीन दरभंगा जिला कांग्रेसक सभ कागजपत्र सुमनजीक लग गुप्तरूपसँ राखल छल। ओ कांग्रेसक सदस्य नहि छलाह। मुदा, युवावस्थेसँ हुनक चरित्र ओ विश्वसनीयतासँ कांग्रेसी नेता लोकनि एतेक प्रभावित छलाह जे हुनक हाथमे गोपनीयसँ गोपनीय कागज-पत्र सुपुर्द कऽ देल गेल छलनि। हुनक कांग्रेस ओ ओकर क्रियाकलापसँ जे सम्पर्क छलनि ताहि लेल सम्पर्कसूत्र छलथिन कुमार गंगानन्द सिंह तथा पं० रामनन्दनमिश्र। सैद्धान्तिक रूपसँ सुमनजी प्रारंभेसँ हिन्दू महासभा दिस आकर्षित भेलाह। ओ बिहारसँ हिन्दूमहासभाक सम्मानित सदस्य छलाह तथा ओहि संस्थाक १९३६-३७ ई०क लखनउक अधिवेशनमे बिहारसँ एक 'डेलिगेट'क रूपमे सम्मिलित सेहो भेलाह। ओहि समयमे महामना मदनमोहन मालवीयक भातिज कृष्णकान्त मालवीय हिन्दूमहासभाक नेताक रूपमे रोसड़ा आयल छलाह। ओतऽ हुनक अभिनन्दन करबाक भार सुमनजीपर छलनि। हिन्दू महासभाक जाहि अन्य अखिल भारतीय स्तरक नेतासँ हिनका घनिष्ठ सम्पर्क रहलनि, ताहिमे डा० मुंजे ओ वीर सावरकरक नाम उल्लेखनीय अछि।

सुमनजी राष्ट्रीय स्वयसेवकसंघसँ सेहो युवावस्थेसँ जुड़ल छलाह। छौ वर्ष धरि लगातार ओ पुरना दरभंगा जिलाक स्वयसेवक संघक जिलासंचालकक पदपर रहलाह। राष्ट्रीय स्वयंसेवकसंघमे सम्मिलित भेलासँ पूर्व ओ संघक संस्थापक डॉ० हेडगेवारक जीवनी पढ़ने छलाह, किंवा हुनक विचारधारासँ प्रभावित भेल छलाह अथवा नहि से ज्ञात नहि अछि। मुदा एतबा अवश्य जे ओ गुरुजी गोलवरकरक सम्पर्कमे अयलाह आ स्वयंसेवकसंघक अतिरिक्त हुनके निर्देशपर जनसंघमे सेहो सम्मिलित भऽ गेलाह। ओ बिहार प्रदेश जनसंघक छौ वर्ष धरि उपाध्यक्षक पदकेँ विभूषित कयलनि।

आपातकालक अवधिक उपरान्त जखन जनसंघ जनतापार्टीमे विलीन भऽ गेल तँ ओ ओहि पार्टीमे शामिल भेलाह। जनतापार्टीक विफलताक उपरान्त पुनः जनसंघक कार्यकर्त्ता ओ नेतालोकनि भारतीय जनतापार्टीक नामक अपन फराक दलक स्थापना कयलनि। ओ भारतीय जनतापार्टीमे सक्रिय भऽ गेलाह। एहि पार्टीक बिहार शाखाक उपाध्यक्षक पदपर दू बेर तीन-तीन

वर्षक लेल चुनल गेलाह। भारतीय जनतापार्टीक अखिल भारतीय स्तरक नेता लोकनिमे सर्वश्री अटलविहारी बाजपेयी, नानाजी देशमुख, जगदीश प्रसाद माथुर, लालकृष्ण आडवाणी, देवरस आ प्रो० राजेन्द्रसिंह रज्जू भैयाक निकट सम्पर्कमे रहलाह। ई स्मरणीय अछि जे एहिमे अंतिम दू गोटे राष्ट्रीय स्वयंसेवकसंघक नेता छथि।

सुमनजी सर्वप्रथम १९६२ मे जनसंघक टिकटपर बिहारविधानसभाक चुनावमे प्रत्याशी भेल छलाह। मुदा देशक ओहि तेसर आमचुनाव तक कांग्रेसक सर्वव्यापी प्रभाव छल आ तेँ हुनका सफलता प्राप्त नहि भेलनि। साधारणतया ओ दरभंगामे कोनो चुनावमे असफल भऽ जयताह से संभव नहि अछि। हुनक प्रभाव आ प्रतिष्ठा सभ वर्ग आ सभ दलक अनुयायीमे एकेरंग छनि। ओ जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म ओ दलसँ ऊपर मानल जाइत छथि। मुदा महानसँ महान व्यक्ति जखन कोनो एक राजनीतिक दलक चुनाव चिह्नक अंतर्गत चुनाव लड़ैत छथि तखन हुनक जीत अथवा हारि ओहि दलक होइत छैक, नहि कि ओहि व्यक्तिक। १९५२क प्रथम आमचुनावमे पं० रामनन्दन मिश्र लोकसभाक चुनावमे दरभंगासँ हारि गेलाह तँ ओ कहलथिन जे ओ नहि हारलाह, हुनक पार्टी सोशलिस्ट पार्टी हारल। यदि ओहि समय मिश्रजी कांग्रेसक टिकटपर चुनाव लड़ल रहितथि तँ हुनका के हरा सकैत छल? चुनावमे सुमनजीक असफलताकेँ एही परिप्रेक्ष्यमे लऽ सकैत छी। १९६७ मे ओ फेर ठाढ़ भेलाह, मुदा हारि गेलाह। ओहि चारिम आम चुनावमे कांग्रेसक प्रभाव घटि गेल छलैक। देशक सर्वमान्य नेता पं० जवाहरलाल नेहरूक १९६४ मे मृत्यु भऽ गेल छलनि। १९६९ मे ओ जनसंघक टिकटपर लोकसभा चुनावमे ठाढ़ भेलाह, मुदा ओहूमे हुनक पराजय भेलनि। जनसंघ तावत धरि लोकप्रिय एवं प्रभावकारी दल नहि बनल छल। १९७२ ई० मे ओ पुनः विधानसभाक चुनावमे प्रत्याशी भेलाह आ जीतिकऽ बिहारविधानसभामे गेलाह। मुदा, लोक-नायक जयप्रकाशक आन्दोलनमे १९७४ क मइमे विधानसभासँ हुनका इस्तीफा देमय पड़लनि। एहि तरहेँ ओ अढ़ाइ वर्ष मात्र विधानसभामे सदस्य रहि सकलाह। ओहि आन्दोलनमे हुनका गिरफ्तार कऽ दरभंगा जहलमे राखल

गेलनि । जहलमे दुखित पड़लापर दरभंगा अस्पतालमे राखल गेलनि आ नीक भेलापर पुनः जहल जाय पड़लनि । १९७५ ई०क अंतमे जहलसँ मुक्त कयल गेलनि ।

आपातकालक समाप्तिपर देशमे आम चुनाव १९७७ मे भेलैक । ओहि अवसरपर सभ बिरोधी दलक जनतापार्टीक नामसँ एक दलक संगठन कयल गेलैक । एहि गैरकांग्रेसी जनतांत्रिक दलक एहि संगठनक पाछू लोकनायक जयप्रकाश-जीक प्रेरणा छलनि । चुनावमे जनतापार्टी लोकसभामे अजेय बहुमतसँ जीतल । सुमनजी तीन लाख भोटसँ जीतल छलाह । देशभरिमे अधिकसँ अधिक भोटसँ लोकसभामे सफल भेनिहारमे हुनक तेरहम स्थान छल । एहि चुनावमे हुनका सभ वर्ग आ सम्प्रदायक लोकक मत प्राप्त भेल छलनि । मुसलमानलोकनि अधिकाधिक संख्यामे हुनका मत देने छलथिन । मुदा १९७९ मे ओ लोकसभा भंग भऽ गेल । १९८० मे लोकसभाक चुनाव भेलैक आ कांग्रेस श्रीमती इन्दिरागांधीक नेतृत्वमे पुनः बहुमतसँ जीति गेलैक । ओ १९८० क लोकसभा चुनावमे भारतीय जनतापार्टीक टिकटपर पुनः प्रत्याशी भेलाह, मुदा ओहि बेर कांग्रेसक बिहाड़िमे सफलता नहि भेटलनि । १९७९ मे लोकसभा भंग भेलाक बाद जनसंघ जनतापार्टीसँ फसक भऽ गेल आ भारतीय जनतापार्टीक नामसँ नवदलक संगठन भेलैक ।

ओ १९७७ सँ १९७९ धरि लोकसभाक सदस्यक रूपमे नई दिल्लीक 'साउथ एवेन्यू'क ३१ नम्बर फ्लैटमे रहैत छलाह । हुनक ऋषितुल्य जीवनसँ अगल-बगलमे रहनिहार सांसदलोकनि पर्याप्त प्रभावित छलाह । कमे समयमे लोकसभाक सदस्यलोकनिक बीचमे ओ अपन एक विशिष्ट स्थान बना लेने छलाह । ओ शिक्षा तथा भाषासम्बन्धी 'संसदीय सलाहकार समिति'क सम्मा-ननीय सदस्य रहलाह । एहि दुनू संसदीय समीतिमे हुनक विचारकेँ एक विशेषज्ञक विचारक रूपमे सूनल ओ मानल जाइत छलनि ।

ओ विधानसभा आ सांसदसदस्य भेलासँ पूर्व दरभंगा म्युनिसिपैलिटीक निरंतर दस वर्ष धरि 'वार्डकमिश्नर' रहलाह । संसदीय प्रणालीकेँ ठीकसँ चलबाक लेल ई आवश्यक अछि जे विधायक आ सांसद बनलासँ पूर्व कोनो

व्यक्तिकेँ ग्रामसभा, म्यनिसपैलिटी, कौरपोरेशन आ एहि प्रकारक अन्य स्थानीय शासनसँ सम्बद्ध समिति एवं निकायमे कार्य करबाक अनुभव प्राप्त रहैक। भारतमे कोनो व्यक्तिकेँ बिना एहि सभ संस्थामे कार्य करबाक अनुभव रहने एके बेर बिधानसभा अथवा संसदमे पठा देल जाइत छैक। परिणामस्वरूप ओ व्यक्ति संसदीय भाषाक प्रयोग करबामे तथा दोसर व्यक्तिक विचार सुनबामे अक्षम भऽ जाइत अछि, जाहिसँ विधानसभा ओ संसदमे सतत होहल्ला आ हुड़दंगी होइत रहैत छैक। इंगलैंड अथवा पश्चिमक अन्य जनतांत्रित देशमे कोनो व्यक्ति सोझे संसदमे नहि जा सकैत अछि। ओकर पहिने कोनो-ने-कोनो स्थानीय संस्थामे कार्य करबाक अनुभव रहबाक चाही। हुनका दरभंगा म्युनिसपैलिटीमे विचार-विमर्श करबाक पर्याप्त अनुभव भऽ गेल छलनि। तेँ ओ एक सफल विधायक ओ सांसद भेलाह। दुर्भाग्यक बात ई रहल जे जीति गेलोपर विधान सभा आ संसदमे ओकर पूर्णकाल धरि रहबाक अवसर प्राप्त नहि भऽ सकलनि।

एहि तरहेँ ई स्पष्ट अछि जे साहित्यकार सुमनजीसँ राजनीतिक सुमनजी कनियो कम ऊर्जा-सम्पन्न, कर्मठ, सक्रिय ओ प्रभावशाली नहि रहल छथि। लगातार १९६२ सँ १९८० धरि छौ गोट आमनिर्वाचनमे तीन बेर विधानसभा आ तीन बेर लोकसभामे—भाग लेलनि, चुनावक दौड़-धूपकेँ बर्दास्त कयलनि आ अपना दलकेँ जितयबाक लेल संघर्ष कयलनि। पूर्णकालिक राजनीति कय-निहारोमे सब बुते ई पार लागब कठिन छैक। दुर्बल शरीर आ कमजोर स्वास्थ्य रहितो ओ आधा दर्जन आमचुनावक भार सहि सकलाह—ई हुनक मानसिक दृढ़ता आ ठोस संकल्पक परिचायक थिक। कठोर साहित्यिक साधनामे निमग्न व्यक्ति एतेक राजनीतिक संघर्ष करबामे सक्षम भेटब दुर्लभ अछि।

सुमनजीमे साहित्यिक प्रतिभा ऊपर छनि कि राजनीतिक ऊर्जा, ई कहब कठिन अछि। ओना, साहित्य ओ राजनीतिमे कोनो विरोध नहि छैक। जे व्यक्ति संवेदनशील आ मानवीय भावनासँ ओतप्रोत नहि होयत से ने सफल साहित्यकार भऽ सकैछ आ ने प्रभावसम्पन्न राजनीतिज्ञ। संसारक कतोक प्रख्यात राजनीतिज्ञ आ राजनेता कलमक धनीक सेहो रहला अछि। भारतमे

गांधीजी, पं० जवाहरलाल नेहरू आ इंगलैण्डक चर्चिलक उदाहरण हमरा लोकनिक समक्ष स्पष्ट अछि। मुदा, ई स्पष्ट करब आवश्यक अछि जे आधुनिक कालमे राजनीतिक व्यवहारक जे दुर्दशा भेलैक अछि तथा राजनीतिक शब्दक उच्चारण मात्रसँ जे वितृष्णा उत्पन्न होइत अछि ताहि राजनीतिसँ ओ कतोक कोस दूर रहलाह अछि। राजनीतिमे नैतिकता, चरित्र, उच्चविचार आ जनसेवाक भावना आदि जतय जुड़ल रहबाक चाही, तही राजनीतिकेँ ओ अपनौलनि। जाहि माध्यमसँ कहुना प्रभुत्व, सत्ता, प्रभाव, अर्थ ओ सुविधा प्राप्त कयल जा सकैछ, तकरे एहि युगमे राजनीति कहल जाइत छैक। ओहि सबकेँ प्राप्त करबाक लेल अनैतिकसँ अनैतिक आ भ्रष्टसँ भ्रष्ट साधनकेँ उपयोग करबामे आधुनिक राजनीतिज्ञ लोकनिकेँ कोनो प्रकारक संकोच नहि होइत छनि। विश्वभरिमे गांधीजीटा एक एहन राजनीतिज्ञ भेलाह जे राजनीतिमे साधन ओ साध्यक प्रश्नकेँ उठौलनि। नीक साध्यक लेल नीके साधनक प्रयोग करबाक सिद्धान्त हुनक सर्वोच्च राजनीतिक अवदान मानल जाइत अछि। सत्य ओ अहिंसाक मार्गसँ राजनीतिक उद्देश्यक प्राप्ति गांधीजीक नीति छल। गांधीयुगक ओहि सर्वव्यापी प्रभावमे सुमनजीक प्रतिभा प्रस्फुटित भेल छलनि आ ओ सतत राजनीतिक जीवनमे उच्च आदर्शकेँ अपन समक्ष रखलनि। हुनक पोर-पोरमे उच्च राजनीतिक सिद्धान्त आ लक्ष्यक पूर्तिक आवेग सतत प्रवहमान रहैत छनि।

एखनहुँ चौरासिम वर्षक अवस्थामे शारीरिक दुर्बलताक स्थितिमे सुमन जीक बौद्धिक प्रखरता आ चिन्तन राजनीतिसँ कखनहुँ फराक नहि होइत छनि। भारतीय जनतापार्टीक कोनो सफलतासँ ओ प्रफुल्लित भऽ जाइत छथि आ ओकर विफलतासँ विचलित भऽ उठैत छथि। ओ अपन दलक अथवा ओहिसँ सम्बद्ध कोनो संस्थाक आयोजन एवं कार्यक्रममे शामिल होयबाक लेल ओतबे तत्पर रहैत छथि जतेक कोनो साहित्यकारक कृतिक लेल भूमिका आ समीक्षा लिखबाक लेल। जहिना हुनक साहित्यिक सृजन निन्रतर चलैत रहैत छनि, तहिना अपन दलक राजनीतिक क्रियाकलापमे सक्रिय योगदान देबाक लेल तत्परता रहैत छनि। साहित्य आ राजनीतिक एहन मणि-कांचन योग एक

व्यक्तिमे भेटब सम्पूर्ण भारतवर्षमे दुर्लभ अछि।

राजनीतिक एक साधारण अध्येताक रूपमे हम कहब जे सुमनजीक जीवनक राजनीतिक पक्षपर गंभीर ओ व्यापक रूपसँ एखन धरि लिखल नहि जा सकल अछि। यथार्थ तँ ई अछि जे एहि दिस अद्यावधि कोनो विद्वानक ध्यान नहि गेलनि अछि। साहित्यकार सुमनजीपर कतोक समीक्षात्मक निबन्ध आ शोध-प्रबन्ध लिखल जा चुकल अछि तथा कतोक गोटे पी-एच० डी०क उपाधिसँ विभूषित सेहो भेलाह अछि। हुनक राजनीतिक क्रिया-कलाप, चिन्तन ओ अवदानपर अध्ययन करबाक लेल हम मैथिली आ राजनीतिशास्त्रक शोधकर्त्ता लोकनिक ध्यान आकृष्ट करब अपन कर्त्तव्य बुझैत छी।

ओना तँ सुमनजीक समस्त साहित्यिक कृतिमे हुनक राजनीतिक विचारक मोती छिड़ीयायल छनि, मुदा हुनक काव्यसंकलन अन्तर्नाद, पयस्विनी, भारत-वन्दना, खण्डकाव्य उत्तरा तथा महाकाव्य दत्त-वतीमे हुनक राजनीतिक सिद्धान्त ओ चिन्तनपर विशेष सामग्री उपलब्ध अछि। राजनीतिक भाषामे कहि सकैत छी जे सुमनजी दक्षिणपंथी एवं उदारवादी राजनीतिज्ञ छथि। हुनक राष्ट्रवाद, अखंड मातृभूमिक परिकल्पना, राष्ट्रक सबलताक लेल संघर्ष, सभ वर्गक उत्थानक कामना, वैदिक गणतंत्रात्मक प्रणालीक आकर्षण, देशक आर्थिक सम्पन्नताक लेल व्यग्रता, नागरिकमे उच्च आदर्शक प्राप्तिक प्रयोजन, कर्त्तव्यपरायणता, सत्य ओ शांतिक स्थापना आ लोककल्याणकारी राज्यक कामना आदि विषयपर उक्त कृति सबहिमे स्पष्ट संकेत भेटैत अछि। सम्पूर्ण दत्त-वतीमे शब्दक लालित्य, कल्पना आ अलंकारक रसमे सानल तथा वाक्यविन्यासमे पसरल हुनक राजनीतिक सिद्धान्तक अवलोकन कयल जा सकैत अछि।

मैथिलीपत्र स्वदेश—चाहे ओ मासिक हो अथवा दैनिक—सबतरि सुमनजीक अग्रलेख सभ हुनक राजनीतिक विचारक मानू कोष थिक। ओहिसभ सम्पादकीय लेख एवं सम्पादकीय टिप्पणीकेँ एकत्रित कऽ ओकर संकलन प्रकाशन बहुत आवश्यक अछि। अगिला पीढ़ी ओहिसँ प्रेरणा ग्रहण करैत रहत।

एहिसभ साहित्यिक कृतिमे राजनीतिक सिद्धान्त ओ विचारक प्रतिपादन

करबाक अतिरिक्त ओ राजशास्त्रपर एक अनुपम ग्रंथक रचना सेहो कयलनि अछि, जे साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित होयत। एहि ग्रन्थमे प्राचीन हिन्दू राजनीतिशास्त्रक पारम्परिक आधारपर अध्याय देल गेल अछि आ प्रत्येक अध्यायक विषयकेँ वाल्मीकिरामायणक श्लोकसँ विषयक अनुरूप सजाओल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे एको गोट एहन विषय नहि लिखल गेलैक अछि जकरा लेल वाल्मीकिरामायणसँ उद्धरण नहि प्राप्त भऽ सकैछ। रामायणसँ बाहरक एको शब्द एहि ग्रन्थमे नहि अछि। सुमनजीक ई राजशास्त्रक ग्रन्थ मानू वाल्मीकिरामायणक राजनीतिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। ग्रन्थ तीन भाषामे, मूल संस्कृतश्लोक आ ओकर हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित, प्रकाशित होयत।

एहि ग्रन्थक प्रकाशनक उपरान्त सुमनजी मिथिलाक प्रख्यात राजनीतिक निबन्धकार लोकनिक पंक्तिमे अपन स्थान प्राप्त कऽ लेताह। याज्ञवल्क्यसँ लऽ वाचस्पतिमिश्र द्वितीय धरि जे मिथिलामे निबन्धकारक गौरवशाली परम्परा रहल अछि, तथा जे गत लगभग पाँच सय वर्षसँ अवरुद्ध भऽ गेल छल ताहि परम्पराकेँ आगू बढ़यबामे सुमनजीक ई ग्रन्थ एक नव कड़ीक कार्य करत। एहि तरहेँ ओ राजनीतिक नेताक संग-संग एक राजनीतिक चिन्तक होयबाक प्रमाण सेहो प्रस्तुत कयलनि अछि। मिथिलाक चन्देश्वर ठाकुर ओ विद्यापति अधिक वयसमे अपन राजनीतिक ग्रन्थ 'राजनीतिरत्नाकर' ओ 'विभागसार' लिखने छलाह। ओही तरहेँ सुमनजी सेहो अस्सीसँ अधिक अवस्थामे आबिकऽ राजशास्त्रपर अपन ई ग्रन्थ तैयार कयलनि अछि। हम कामना करैत छी जे सुमनजी शतायु भऽ राजनीतिक चिन्तन ओ कार्यमे सक्रिय रहथि।

अर्चना

डॉ० श्रीअमरनाथझा

'अर्चना' प्रो० श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन'क प्रथम प्रकाशित कविता-संकलन थिक। ई अर्चना पूर्णतः अन्वर्थनामा अछि, भारतीय परम्परामे रचनाक प्रारम्भमे मङ्गलाचरण करब एक टा आवश्यक कर्त्तव्य मानल गेल अछि तथा तदनुसारे श्री सुमनजीक काव्यरचनाक मङ्गलाचरण-रूपमे कीर्त्तन-स्मरण-मूलक ई कृति चरितार्थ भऽ रहल अछि। दृष्टिपथमे इहो बात अबैत अछि जे जेना कालिदास, भवभूति ओ भास प्रभृति महाकविक नाट्यकाव्यक मङ्गलाचरण-श्लोक सबमे देवी-देवताक स्तुतिक संगसंग नाट्यकथाक सारांश सेहो सूत्ररूपमे संकेतित भेटैत अछि, तहिना सुमनजीक एहि अर्चनामे प्रायः ओहि समस्त काव्यक संकेत सूत्ररूपमे भेटि जाइत अछि जकर वर्णन ओ अपन परवर्ती काव्यरचना सबमे करैत रहलाह अछि। तेँ ई बात निधोख भऽ कऽ कहल जा सकैत अछि जे यदि सुमनजीक समस्त काव्यकृति विविध रूपमे प्रकीर्ण रहितहुँ एकटा सुसम्बद्ध जीवनदर्शनक अभिव्यंजना थिक तँ एकर मङ्गलाचरण रूपमे ई अर्चना निश्चयतः सार्थक सिद्ध भऽ रहल अछि।

अर्चनाक महत्त्वक व्याख्या करबाक हेतु जँ एकरा आमक एकटा अच्छिन्न वृक्षक प्रथम फलोद्गमक संग उपमा देल जाय तँ विषय आओरो स्पष्ट भऽ जायत। आमक अच्छिन्न वृक्षमे यावत् धरि फलोद्गम नहि भेल रहैत अछि तावत् धरि ई बात अनिश्चित रहैत अछि जे एहि वृक्षक फलक स्वाद केहन होयत, किन्तु प्रथम फलोद्गम होइतहिँ लोकके आभास भेटि जाइत अछि जे ई वृक्ष भविष्यमे केहन स्वादिष्ट फल प्रदान करैत रहत। तहिना सुमनजीक एहि अर्चना द्वारा एहि बातक आभास नीक जकाँ भऽ जाइत अछि जे हुनक काव्यरचनाक विषयवस्तु, शब्दसौन्दर्य ओ अभिव्यंजना-शैली समष्टिरूपमे कोन

प्रकारक आस्वाद प्रदान करत।

अर्चनाक कथातत्त्वक विश्लेषण-क्रममे देखैत छी जे एहिमे पाँच गोट स्तुति संकलित अछि—गंगातरङ्गिण, मैथिलीवन्दना, मिथिलामहिमा, वर्णमयी तथा अपराजिता; संगहि एहि संकलनक प्रारम्भमे 'संकल्प-विकल्प' शीर्षक अन्तर्गत कवि विनय-भावक जे उद्‌गार व्यक्त कयने छथि सेहो ध्यान देबाक योग्य अछि। संकल्प-विकल्प द्वारा कवि ई भाव अभिव्यक्त कयने छथि जे जाहि पराशक्ति द्वारा समस्त चराचर सृष्टिक संचालन भऽ रहल अछि से सब प्रकारें स्वतः पूर्ण छथि; पृथ्वी, जल, वायु, तेज ओ आकाश, एहि पञ्चमहाभूत तथा ग्रह-नक्षत्र, विविध ऋतु, वृक्ष-वनस्पति आदि समस्त जड़ ओ चेतन प्राणी द्वारा निरन्तर हिनकहि अर्चनामे संलग्न छथि, आओर तेहन स्थितिमे हमर एहि अर्चनाक की प्रयोजन ? तथापि ओहि पराशक्ति द्वारा अनुप्राणित भऽ कऽ हुनकहि समक्ष आत्म-समर्पण कऽ रहल छी।

पुरुषसूक्तक ऋचा सबमे जे भाव निहित अछि, अथवा श्रीमद्‌भगवद्‌गीताक विराट्-दर्शन-अध्यायमे जे भाव व्यक्त अछि, बहुत-किछु ताही भावक अभिव्यंजना एहि संकल्प-विकल्पमे भेटैत अछि, भने उपस्थापनशैलीमे कल्पनाक एक टा नवीन उन्मेष प्रतिभासित रहओ।

गंगातरङ्गिणीमे गङ्गाक पुराण-वर्णित महिमाक कीर्त्तनक संग-संग समकालिक परिवेशमे हिनक महत्ताक जेहन व्याख्या कयल गेल अछि, ताहिसँ ई बात नीक जकाँ प्रमाणित भऽ जाइत अछि जे नित्य परिवर्त्तनशील संसारमे जे तत्त्व स्थायी अछि, तकरा चिन्हि ललित शब्दावली द्वारा अभिव्यजित करबाक असाधारण क्षमता सुमनजीकें छनि।

मैथिलीवन्दनामे रामायणकाव्य-वर्णित सीताक महिमाक वर्णन करैत मैथिली ओ मिथिलाभाषामे तादात्म्य भाव प्रमाणित करबामे कवि जाहि प्रकारक विचक्षणता प्रदर्शित कयने छथि से निश्चित रूपसँ हिनक मौलिक उद्‌भावना थिक।

तहिना, मिथिला-महिमामे मिथिलाकें भारतक 'लघुप्रतिभा' प्रमाणित करैत भारतराष्ट्रक संग मिथिलाक तादात्म्य स्थापित कऽ कवि अपन सूक्ष्मदर्शिता ओ दूरदर्शिता—दूनू प्रकारक दृष्टिक्षमता प्रदर्शित कयने छथि।

वर्णमयीक स्तुतिमे कवि वर्ण (अक्षर लिपि) के समस्त विद्याक मूलतत्त्व मानि तकर उत्पत्तिक जेहन विलक्षण वर्णन कयने छथि ताहिमे आपाततः कल्पना-तत्त्वक चमत्कार रहितहुँ लिपिविज्ञान ओ भाषाविज्ञानक एक टा मौलिक सिद्धान्तक अति रोचक वर्णन भेटि रहल अछि। काव्य ओ विज्ञान आपाततः भिन्न-भिन्न शाखा रहितहुँ एकहि काण्ड वा एकहि मूलसँ कोना समान रूपे रस-ग्रहण करैत अछि तकर दृष्टान्त एहि कवितामे भेटि रहल अछि।

तहिना, अपराजिता शीर्षक अर्चामे आदिशक्तिक सौम्य ओ विकराल, एहि दूनू स्वरूपके प्रकाश ओ छाया जकाँ अन्योन्याश्रित प्रदर्शित करैत जेहन चमत्कारपूर्ण वर्णन कयने छथि, संगहि कालचक्र वा ऋतुचक्रक जेहन मनोरम चित्र वर्णित कयल गेल अछि से हठात् विमुग्ध कऽ दैत अछि।

एहि विविध स्तुतिक पारायणसँ हृदयमे समष्टि रूपसँ जाहि प्रकारक स्पन्दन होइत अछि, साहित्यशास्त्रमे जकरा 'अनिर्वचनीय रसोद्रेक' कहल गेल अछि से प्रायः इएह थिक। एकर जे तत्त्वसब वर्णनीय भऽ सकैत अछि से निम्नलिखित रूपमे विश्लेषित कयल जा सकैत अछि—

(१) श्री सुमनजीक एहि अर्चनामे ओहि आर्ष परम्पराक उद्गार भेटि रहल अछि जे वैदिक सूक्त सबमे, वा वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, शंकराचार्य ओ जगन्नाथ इत्यादि संस्कृत साहित्यक महान् कवि लोकनिक कृतिमे, वा विद्यापति ओ पद्माकर सदृश लोकभाषाक महाकवि लोकनिक कृतिमे अभिव्यक्त भेल अछि। इएह कारण थिक जे सूर्य, चन्द्रमा, पर्वत, नदी, विविध पौराणिक आख्यानक वर्णन उपमेय वा उपमान रूपमे पर्याप्त रूपे उपस्थापित कयल गेल अछि।

(२) श्री सुमनजीके अपन देशक इतिहास ओ भूगोलक ज्ञान नीक जकाँ अवगत छनि, आओर तकर उपयोग अपना अन्तःप्रेरणासँ उद्भावित भावक प्रतिपादन हेतु बड़ क्षमतापूर्वक कयने छथि।

(३) वर्त्तमान शताब्दीमे राष्ट्रीय ओ अन्ताराष्ट्रीय स्तरपर जे राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वा आर्थिक परिवर्त्तन होइत रहल अछि ताहि सबसँ सारतत्त्व ग्रहण कऽ कऽ अपन कवितामे तकर सबहिक उपयोग करैत रहलाह

अछि। दृष्टान्तरूपमे गङ्गातरङ्गिणीमे गङ्गाके 'द्विज-अन्त्यजके एक घाट जल पिआओनिहारि', 'मुक्ति-साम्य-सन्देश देनिहारि', 'नृपति-रङ्कमे, वा श्रम ओ पूजीमे भेदभाव हटओनिहारि' आदि रूपमे वर्णन करबा काल सुमनजी एहि शताब्दीक सामानाधिकार-आन्दोलन, साम्यवादीक्रान्ति ओ अन्यान्य विविध आन्दोलनक प्रसंग अपन अभिज्ञता प्रदर्शित कयने छथि। तहिना, गंगाके काव्यरूपमे वर्णित करबाक क्रममे संस्कृत साहित्यशास्त्र-वर्णित काव्यसिद्धान्तक संग-संग हिन्दी साहित्यक छायावाद वा उपयोगितावाद आदिक आभास प्रदान कयने छथि। पुनश्च, विश्वविद्यालयरूपमे गङ्गाक यादृश वर्णन कयल गेल अछि ताहिसँ महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा संस्थापित हिन्दू विश्वविद्यालयक आभास भेटि रहल अछि।

(४) श्री सुमनजीके मिथिला ओ मैथिलीक प्रति असीम अनुरागछनि, जेना भगवान-भगवतीक लघुप्रतिमाक आराधना कयलहिसँ हुनक विराट्स्वरूपके प्रसन्न कयल जा सकैत अछि, तहिना मिथिलाके एकटा लघुप्रतिमा मानि हिनका प्रति भक्तिसाधना कयलहिसँ विशाल भारत राष्ट्रक प्रति अपन कर्त्तव्य-निर्वाह सिद्ध भऽ सकैत अछि, से हिनक मान्यता अछि। मैथिलीभाषाके कवि मिथिलानिवासीक प्राणवायु मानैत छथि, अर्थात् एहि भाषाक सम्पोषण होइत रहलहि मिथिलानिवासीक अस्तित्वरक्षा सम्भव अछि, से हिनक मान्यता अछि।

श्री सुमनजीक परवर्त्ती जे कोनो रचना प्रकाशित अछि, ताहि प्रत्येकमे उपर्युक्त भावसब कोनो-ने-कोनो रूपमे अवश्य अभिव्यक्त अछि, यथा साओन-भादवमे ऋतुवर्णनक संग-संग रससिद्धान्तक प्रतिपादन अछि, तथा रामायण ओ महाभारतक अनेकानेक घटना प्रसङ्गरूपमे वर्णित अछि। प्रतिपदाक कविता सबमे सेहो पौराणिक प्रसङ्ग सबहिक संग-संग समाजवाद ओ राष्ट्रीय जागरणक भावनाक वर्णन अनेक स्थानमे कयल गेल अछि। पयस्विनीमे मेघ ओ धेनु एहि दुनूके भारतवर्षक हेतु प्राणप्रद मानि यादृश श्लेषचमत्कारयुक्त वर्णन भेल अछि, ताहिसँ भारतीय आर्ष संस्कृतिक व्याख्या भऽ रहल अछि। ततबे नहि, दत्त-वती महाकाव्य अथवा उदनाक दयादबाद उपन्यासमे सेहो जाहि प्रकारक भाव समष्टिरूपमे अभिव्यक्त अछि, सेहो एहि अर्चनामे अन्वेषण कयलापर बीज-

रूपमे अवश्य भेटैत अछि।

अतएव एहि अर्चनाकें सुमनजी-कृत एकटा एहन स्तोत्रकाव्य मानल जा सकैत अछि जे समष्टिरूपमे हिनक समस्त काव्यरचनाक निर्विघ्न-समापनक हेतु रचित मङ्गलाचरण थिक।

एहि अर्चनाकालमे श्री सुमनजीक भक्तिभावना ओ सौन्दर्यबोध जाहि रूपमे अभिव्यंजित अछि तकर विश्लेषण ओ व्याख्या एहिठाम निष्प्रयोजनीय बुझैत छी, एहि विषय सबहिक प्रसंग ततेक बेसी व्याख्या पूर्वहि भऽ चुकल अछि जे पुनः किछु चर्चा करब चर्वित-चर्वण मात्र होयत। तथापि एतबा उल्लेख करबाक भाव संवरण नहि कयल जा सकैत अछि जे एहि अर्चनाक प्रत्येक रचना भक्तिभावनासँ ओतप्रोत रहबाक संग-संग काव्यसौन्दर्यसँ ओही प्रकारें अलङ्कृत अछि जेना संस्कृत साहित्यक शिवमहिम्नस्तोत्र ओ गङ्गालहरी, अथवा महाकवि तुलसीदासकृत अनेकानेक स्तोत्र भक्ति ओ काव्यशोभासँ उपर्युपरि भावें आप्लावित अछि।

प्रतिपदा

यथार्थक अभिनव अन्वेषण

—डा० श्रीशिवशंकरझा 'कान्त'

वर्त्तमान समयमे कविवर श्रीसुमनजी मैथिलीक यशस्वी कविक रूपमे स्थापित छथि। हिनक लोकप्रियताक मुख्य आधार हिनक कविताक बहिरंग ओ अन्तरंग दुनू रूप अछि। काव्य सश्रीक होइत अछि आकर्षक परिधानतँ, सुस्वादु होइत अछि अनवरत रसात्मकतासँ, सम्वेदनशील होइत अछि अनुभूतिक विपुलतासँ तथा सर्वत्र गौरव पबैत अछि भादकत्वक सम्यक् संप्रेषणशीलतासँ। यैह कारण अछि जे कोनो कवि यदि भावकत्वक सुदृढ़ समायोजनमे ओझरा जाथि तँ हुनक शिल्प काव्यक व्यक्तित्वक अनुकूल नहि भऽ पबैछ तथा ओ लक्षणक कसौटीपर पूर्णतः सफल कविक रूपमे ख्याति अर्जित नहि कऽ सकैत छथि। पं० श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन' स्वयं भावक कवि छथि। अनुभूतिक तीव्रतासँ परिचालित हिनक अभिव्यक्ति जतेक क्षिप्रताक संग प्रतिपदाक विविध कवितामे प्रवहमान देखैत छी, ताहिसँ काव्यक मूलतत्त्वक सफल उद्घाटकक रूपमे हिनक सफलता सुचिन्तित अछि। अर्थात्, सुमनजी प्रतिपदाक प्रत्येक कवितामे भावक नव उपहार लेने समक्षमे उपस्थित होइत छथि जे सामान्यतः सभ प्रकारक रुचिक सम्पन्नतासँ पूर्ण होइछ तथा समालोचकक प्रशंसाक मूल आधार।

सामान्यतः सुमनजी जाहि समयमे मैथिली साहित्यमे रचना प्रारम्भ कयल, वचारिक दृष्टिएँ आधुनिक रूपक चिन्तनक प्रभावसँ समाज तहिया पूर्ण मुक्त नहि छल। तात्पर्य जे परम्पराक व्यामोहक जकड़ल रूप काव्यक स्वरूपकेँ आच्छादित कयने छल, जाहिसँ तत्त्वचिन्तनमे एकपक्षीयताक दोष स्वभावतः उजागर होइत रहल। सुमनजी प्रतिपदाक रचना करैत समय एहि

दोषसँ मुक्ति हेतु साकांक्ष भऽ भावक सोनहुल ओ यथार्थ किन्तु आकर्षक स्वरूपकें काव्यमे आबद्ध कयल। अर्थात्, सुमनजी प्रतिपदाक माध्यमे परम्पराक परिचालनक स्वर जतेक शक्तिएँ गुञ्जित कयल ताहिसँ दोबड़ शक्ति ओ नवताक आग्रहक हेतु गुञ्जित कयल। एहि दृष्टिएँ प्रतिपदा मैथिली साहित्यमे, कविताक क्षेत्रमे, वर्त्तमान समयमे सन्धिस्थलक काव्य-संग्रह अछि जाहि ठाम भावकत्व नवीन आग्रहक संग स्फुरित होइत अछि। सुमनजी स्पष्ट ओ सत्य तत्त्वक स्पष्ट निर्देशन दैत स्पष्ट माध्यमे भावक अभिव्यक्ति करैत छथि, जाहिमे गतानुगतिक दोष नहि अछि।

प्रतिपदाक सुमनजी भावक कवि छथि। पारम्परिक काव्यक संवाहकक रूपक हिनक स्वर एतऽ बदलल छनि। एहिमे नवीन उद्बोधन नवीन रूपमे देखल जाइछ। आजुक गतिशील जीवनहुमे प्रतिपदाक काव्य ओतबे उपयुक्त अछि। जीवनकें लगसँ देखबाक प्रवृत्ति ओ अनुभव एतऽ स्पष्ट अछि तथा एहि भावकें उद्बोधित करबाक हेतु कविकें यदि नव प्रकारक उपमान ओ उपमेयक, विम्ब ओ प्रतीकक सृष्टि करऽ पड़लनि तँ से सफलतापूर्वक देखाओल अछि। एतऽ एक तथ्य ध्यातव्य जे सुमनजी सम्पूर्ण रूपमे कवि छथि। ते कवित्वक सूक्ष्म गुणहुसँ परिचित भेने ई कोनहु वस्तुक निरीक्षण ओतबे बुद्धिमत्ता ओ तीक्ष्णताक संग करैत छथि। कवि भावकें कतहु दुरूह नहि होमऽ देल अछि आ तें भाव ओ अभिव्यक्तिक सामञ्जस्यक स्वाभाविक स्पन्दन एतऽ उपलब्ध अछि। एहि पृष्ठभूमिमे प्रतिपदामे सुमनजी जे नव ओ पुरान परम्परागत ओ गतिशील भावक चित्रण कयल अछि तकर परस्पर तुलनासँ तत्त्वबोध बेसी स्पष्ट भऽ जाइछ।

काव्य सश्रीक होइत अछि कल्पनाक ओहि उत्तुङ्ग उड्डयनसँ तें यथार्थक संग बिनु छोड़नहि अन्त धरि मनोवृत्तिकें एकाग्र कयने रहय, अपनासँ फराक नहि होमऽ देअय। कल्पना एतऽ प्रेय होइछ, श्रेय होइछ भावकत्व ओ तकर स्पष्ट रूप राष्ट्रीयताक एकात्म स्वरूपमे भेल राष्ट्रक विभाजनसँ स्पष्ट बोधित अछि। 'सिन्धु-संगिनी रावी कनइछ खण्डित रसना दावि'मे जाहि आंशिक विपर्ययक बोध कराओल गेल अछि, अंग विच्छिन्नताक स्वरूप उद्घाटित कयल गेल अछि, राष्ट्रक एकात्मक स्वरूपकें क्षुद्र लोलुपताक

कारणें विभाजनक देहरिपर पहुँचाय जे अतार्किक किन्तु सुनियोजित प्रतिफल-नक रूपमे उजागर भेल, तकर स्वरूपकें सौंतल,-बान्हल ओ मर्यादित ढंगें सुमनजी प्रकट कयल अछि। 'छाया छोड़ि मुक्त आतपमे जीवन ई गतिशील कहि कविक भाव-उद्‌बोधनक आग्रह नव पक्षक समर्थन करैत देखबामे अबैछ। कारण परवशताक पाशकें काटक हेतु 'जीवनकें वन्दी' होबऽ पड़ैत छैक-'बलिदा-नक शूली'पर झूलऽ पड़ैत छैक तथा ओहि क्षणमे जीवन-संघर्षकें असली तत्त्व सेहो देखबामे अबैछ। कविता जँ 'प्रेयसीक नयनक संकेतसँ शोर' करैत अछि तँ 'आँखिक मोतीसँ गनैत' दिन ओ भोर सेहो करैत अछि। आइ तँ कविता थिक 'अर्द्धनग्न' खुरपी ओ कोदारिक पुजारी, क्षुधित ओ पिपासित रक्त-शुष्क नदी, जकर स्वेदजल गंगाजल सदृश पवित्र अछि, आ कविता ओकरहि अभ्यर्थनामे 'साग-पात लऽ जे किछु जुड़ल से लऽ, उपस्थित होइछ। सुमनजीक कवित्वक ई कोन रूपक श्रेष्ठता से अनुमान्य अछि। कृष्णावतार, रामावतारसँ जाहि ठामक माँटि आध्यात्मिक शक्ति पबैछ हरिश्चन्द्रक सत्यवादितामे जकर जीवनानुभूतिक समर्पित स्वरूप देखबामे अबैछ, आइ ओहि ठाम, ओहि भूमिपर पूजा करवाक इच्छा होइत अछि ओहि अर्द्धनग्न समुदायक, जकर श्रमसँ हम स्वयं आइ कविता लिखबा योग्य छी। ओकर त्याग कतेक महान् छैक। किंतु जीवाक हेतु संघर्ष कतेक सत्य, संघर्षक अनुभव कतेक कटु ओ कटुता कतेक वेदनापूर्ण! सुमनजी एहि तत्त्वपर समग्रतासँ विचार कयने छथि ओ तें प्रतिपदाक भावपक्षकें बुझी तँ ओ पहिले कविता 'कविताक आह्वान'मे संरक्षित कऽ देने छथि। 'अनाथ विधवाक अश्रुक बाढ़ि' कोनो भुक्तभोगिए कहि सकैत अछि तथा 'हमर दुखक नहि ओर' से कहि मात्र अपन कर्त्तव्यक इतिश्री कऽ देब, लोककें अपन कष्टक अनुभव मात्रसँ परिचित करा देब, वर्त्तमान युगक हेतु उपयुक्त नहि अछि। एहि हेतु नवीन सूर्योदयक आवश्यकता अछि जे जनमानसमे स्फूर्त्तिक संचार कऽ सकय, अन्धकार तिरोहित कऽ सकय, आलोक प्रस्तावित कऽ सकय।

नवीन उद्‌बोधनक प्रक्रियाक, नवतापूर्ण भावक, कार्यशैलीक नव पद्धतिक भावोत्तेजनाक नव प्रकाशनक जे स्वरूप 'हलधर' शीर्षक कवितामे कवि उपस्थित कयल अछि, वस्तुतः ओ सम्पूर्ण सृष्टिक हेतु सार्वकालिक अछि, सार्वलौकिक अछि।

धरती-सुत ! अहींक कवितासँ हरित-भरित संसार
गढ़ि आखर दश-पाँच धन्य कवि कहबी अहाँ गमार

मे कवि ओ हरबाह कतेक स्वाभाविक रूपमे परस्पर तुलित भऽ वर्त्तमान जीवनक अनुभूतिसँ परिचित होइछ। ई हलधर त्रेताक हलधर, द्वापरक हलधर ओ ताहि संग-संग कवि ओ वैज्ञानिक तथा कलाकारसभक संग तुलना पबैत छथि तथा कविक श्रेष्ठत्व तँ तखन बुझवामे अबैछ जखन ई हलधर अन्य सभसँ श्रेष्ठ भऽ सृष्टिक हेतु सुन्दर वरदान सिद्ध होइत छथि—

भूमि-फलक पर दूर क्षितिज धरि शस्यक चित्र महान
हल-तूली अछि सफल अहँक हे कलाकार ! रुचिमान

श्मशान की थिक ? एहन स्थल जकर नाम लैत लोक डेराइत अछि, जतऽ जाइत लोक भयाक्रान्त होइछ, कवि सुमन एहि श्मशानकेँ मनुष्य बनाय जाहि रूपक मनोवृत्तिसँ ओकरा पूर्ण कयल अछि ताहिमे जँ कल्पनाक उत्तुङ्ग वितान ओ मनोहारी रूप द्रष्टव्य अछि तँ भावोत्कर्षक नवीन दिशा सेहो संकेतित अछि—

पूजी-श्रममे नहि भेद भाव
अछि अहँक राज्यमे साम्यवाद
राजा-रंकक अछि तुल्य मान
अछि साम्य एतहि व्यवहारवान
छी समता तत्त्वक मूर्तिमान
आचार्य प्रवर अहँ हे श्मशान

सुमनजीक भावकत्वक नवीन परिपाटीक आग्रह 'तरु' शीर्षक कवितामे अछि, जतऽ सभकेँ अर्पित करबाक हेतु सम्पूर्ण जीवन अछि, शरीरक प्रत्येक अंग अछि, ओहि अंग सभसँ प्राप्त फल अछि। किंतु अपना हेतु किछु नहि, एहन त्याग ओ विवेकक समन्वित स्वरूप आजुक व्यक्तिवादी ओ भौतिकवादी समाजक हेतु अत्यन्त प्रासंगिक अछि—

श्रान्त पथिक पर जखन दिनपतिक हो कठोर करपाते
तखन ताप अपनहि ऊपर लय बचबी अहँ उत्पाते

किंतु कविक असली तत्त्व जे भावक माध्यमे ओ व्यक्त कयने छथि से थिक 'प्राचीन जीर्ण जगतीक वीनमे वाजि रहल अछि युग नवीन' एकरहि स्पष्ट कऽ देलासँ परम्परागत ओ नवीन उपस्थापनक सामयिक वर्णनक पूर्णता भऽ जाइछ। किन्तु, समग्र जीवन जे भौतिकतासँ फराक रहि, चाकचिक्यसँ फराक रहि, संघर्षरत भऽ जीवित रहल, से उपेक्षित सम्भ्रान्तक उद्धारक समस्त अस्त्र ओ साधन अपना लगमे संरक्षित रखने अछि। ताहि उपेक्षितक श्रेष्ठताकेँ स्वीकार करैत भावकत्वक अनुपम सौहार्द्र-तत्त्वकेँ उक्ति-प्रत्युक्ति शीर्षक कवितामे कवि उपस्थित कयल अछि—

ठक-ठक करइत नतमुख लोहक मुहसँ एतबे उत्तर भेल
तोँ तखनहि आभूषण बनबह चरण-चोट जखने सिर लेल

किन्तु, सुमनजीक भावक मात्र यैह रूप नहि अछि, प्रतिपदहुमे नवीनतासँ भिन्न पारम्परिक शैलीक अनेक तत्त्वक उद्‌घाटन ओ कयल अछि, से अनेक कविताक माध्मये स्पष्ट होइछ। आषाढ़स्य प्रथम दिवसे, असूर्यम्पश्या, यमुने आदिमे से पूर्णतया स्पष्ट होइछ। किन्तु, सुमनजी मूलतः संघर्षक कवि थिकाह जे परम्पराक प्रतिष्ठा ओ नवीनताक आग्रह दुनूसँ उद्‌बोधित-स्पन्दित छथि।

साओन-भादव

डॉ० श्रीकृष्णचन्द्रझा

तैत्तिरीय श्रुति-प्रतिपादित वारुणी भार्गवी विद्यामे ब्रह्मक आनंदस्वरूपता सिद्ध कयल गेल अछि—'आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्' जे स्वयं कर्त्तापुरुष अछि ओ रसरूप थिक आ ओहि रसरूप ब्रह्मक प्राप्तिक पश्चात् साधक आनंदित होइछ। काव्यानंद ब्रह्मानंदक सोदर थिक आ भक्तिकें रस-रूपमे स्वीकार कयलासन्ताँ काव्यानंदक अनुभूति ब्रह्मानंदानुभूतिकें अतिक्रमित करैछ। एहि विवेचना-हेतु तैत्तिरीय श्रुति ब्रह्मानंदीबल्लीमे प्रतिपादित आनंदक स्वरूपक प्रेक्षण अनिवार्य अछि।

ताहि दृष्टिएँ काव्यानंदक स्वरूप अनिर्वचनीय अछि। अपूर्व वस्तुक निर्माणमे जे वृत्ति क्षम होइछ तकरा प्रज्ञा कहल जाइछ। प्रज्ञा जखन नवन-वोन्मेषशालिनी होइछ तँ प्रतिभा नामसँ अभिहित होइछ। ओहि प्रतिभाक सुप्रयोक्ताकें कवि कहल जाइत छनि। आधुनिक मैथिली साहित्यक वरेण्य कवि पं० श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' एहने कवि छथि जनिक वाणी-बन्यासँ मिथिला परिप्लावित होइत रहलीह अछि।

हिनका सदृश पाण्डित्य ओ कवित्वक एकत्र सम्मिलन अन्यत्र दुर्लभ अछि। हमरा जनैत सुमनजी सदृश देवतुल्य कविक कविताक आस्वादन पूर्वार्जित पुण्यक फलोन्मुख भेलासन्ताँ संभव होइछ। हिनक समस्त काव्यकृति निदिध्यासन ओ पारायणयोग्य अछि। एहि ठाम हिनक एक सुललित कृति साओन-भादवक किञ्चित् मूल्यांकन करबाक चेष्टा कयल जाइछ।

साओन-भादव एक रसात्मक ऋतुगीत थिक। ओहिमे काव्यशास्त्र-विवेचित द्वादश रसक आलोकमे साओन-भादवक मसृणता कथित अछि। प्रथम गीत संयोग श्रृंगारमे रचित अछि, जाहिमे मिलनजन्य मादकता मनोमालिन्यकें

नष्ट करैछ। प्रकृति चिरसोहागिनी अछि तेँ शृंगाररसक व्यवधानक सम्भावना कथमपि नहि। ओकर तड़ित चंचल कटाक्ष अवस्थानुरूपे अछि। कदम्ब समूह सात्विक पुलकावली अछि। बलाकापंक्ति गगनपत्रमे अंकित प्रेमक लिपि सदृश बुझना जाइछ। वसुधारूप वासकसज्जा सुगापंखी पट पहिरि दूभिक सेज ओछौने अछि। घनपटमे आवृत दिन ओ रजनीमे भेद नहि बुझना जाइछ—'दिन-राजनी घन-पट आवृत भय एककार, न अछि विभेद लव।' दिन ओ रजनी रूपी नायक-नायिकाक एकाकार होयब संयोग शृंगारक पराकाष्ठा थिक। एहि भावक एक श्लोक वाल्मीकीय रामायणमे एहि रूपेँ दृष्ट अछि—

इमास्तामन्मथवतां हिताः प्रतिहता दिशः
अनुसिप्ता इव घनैर्नष्टग्रह निशाकराः

सम्पूर्ण कवितामे प्रकृतिक मनोरम मानवीकरण भेल अछि। गगनक पत्रमे प्रेमलिपिक अंकन, दूभि-सेजपर हरीतिमाक पट पहिरि वासकसज्जाक उपस्थिति मनोरम बिम्बकेँ प्रकट करैत अछि।

विप्रलम्भ शृंगार शीर्षकमे चिरवियोगिनी प्रकृतिप्रियाक आँखि साओन-भादवक व्याजेँ अश्रुपूर्ण अछि। जीवनक स्थूल ओ सूक्ष्म कायामे प्रकृतिक आच्छादन अछि। जीव सुख-दुखक भोक्ता थिक। भोग प्रकृति-सम्भूत विकारक परिणाम थिक। दुखक निरुक्त अछि—'दुहितं खेभ्यः' अर्थात् जे वृत्ति 'ख' (इन्द्रिय)क हेतु दुष्कर अछि ओ दुःख थिक। इन्द्रिय सांख्य-प्रतिपादित अहंकारक विकार थिक। एही कारणेँ पावसक पुलक वेदना-बोझिल अछि तथा जीवन-यौवन टपटप गलि रहल अछि। ग्रीष्मतापित तन विरहताप थिक। ग्रीष्मक अर्थें होइछ 'ग्रस्यन्ति रसान्' कविक पंक्ति अछि—

विरह उषम ग्रीषम तापित तन प्रथम दिवस आषाढ़क उन्मन
पावस-पलक वेदना दुर्भर टपटप गलइछ जीवन-यौवन

इहो पाँती वाल्मीकीय रामायणक वर्षावर्णनसँ प्रभावित अछि। आदिकवि कहैत छथि—

एषा धर्मपरिक्लिष्टा नववारि परिप्लुता
सीतेव शोकसन्तप्ता महीवाष्पं विमुञ्जति

श्रृंगारभावापन्न रचनाक पश्चात् वीररसात्मक पदक निरूपण भेल अछि। वीररसक स्थायीभाव उत्साह थिक। उत्साह-प्रदर्शनक कोनो सीमा नहि बान्हल जा सकैछ। मनुष्यक धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध आदि जतेक गुण अछि, परोपकार, दान, दया, धर्म आदि सुकर्म अछि, सभमे वीरताक विद्यमानता अछि। जकरा कोनो विषयमे असाधारण योग्यताक शक्ति हो ओ ओहि विषयमे वीर अछि। प्रधानतः वीररसक चारि टा भेद मानल गेल अछि—युद्धवीर, दयावीर, धर्मवीर तथा दानवीर।

सुमनजीक 'समर-भूमि' शीर्षकमे साओन-भादवकें नव उत्साहसँ सजल पावसक भूमि कहल गेल अछि। जखन प्रखर ग्रीष्मक शासनसँ देवपुरुष धरिक आसन डोलि उठल तखन मेघक धनुष तानि, विन्दुक वाण सन्धानि, वेगवान पवन क्रुद्ध भय युद्धमे जुटि गेल। नील घनघटाक ढाल ओ विद्युल्लेखाक तरुआरि ग्रीष्मरूप शत्रुक अंग छिन्न-भिन्न कय देल गेल जाहिसँ रक्तक धार बहऽ लागल आ आकाशसँ धरती धरि सगरो रण-सागर उमड़ि गेल। कविक पंक्ति अछि—

नील-नील घनघटा जकर अछि ढाल खड्ग विद्युत करगत अछि
ग्रीष्म अरिदलक छिन्न अंगसँ रक्तधार की बरसि रहल अछि
नभसँ लय वसुधाधरि सगरो रण-सागर उमड़ल ई अभिनव

भवभूति एकमात्र रस करुणाकें मानैत छथि, कारण जे करुणाक संवेदन अतीव तीव्र होइछ। करुणामे सहानुभूतिक मात्रा अधिक रहैछ। शोक एकर स्थायी भाव थिक। इष्टनाशक कारण चित्तक विकलता शोक थिक। करुण रसक अश्रु अमल तथा दिव्य होइछ, जे हृदयक मालिनताकें दूर करैछ। कविवर सुमनजी साओन-भादवकें विषादमयीक द्रवित नयनजल कहलनि अछि। मेघ-व्यूहसँ घेरायल दयितक अवलोकन हित दिवा-उत्तरा अश्रुमुखी भय अनुखन दर्शनोत्सुक अछि। आशारूपी दिशाक दुर्दिनग्रस्तताक कारणें चन्द्रमुखक दर्शन असंभव भय गेल अछि। मेघव्याधसँ वेधित दिनपति क्रौंचक ज्योति निःशेषित भेलाक कारणें दिवासहचरीक स्वर करुणाक चिरन्तनतासँ पूरित अछि। एहि दारुण दृश्यकें देखि आदिकविक उरक छन्द करुणाक वृष्टि करैछ—

किंवा मेघव्याधसँ वेधित दिनपति-क्रौंच ज्योति निःशेषित
सहचरीक स्वर करुण चिरन्तन विरह-अनुभवेँ मुनिमन क्लेशित
आदिकविक उर छन्द उमड़ि जल विन्दु-विन्दु करुणारस उद्भव

वस्तुतः करुणा चिरन्तन थिक। निखिल जीवक कण-कणमे करुणाक विद्यमानता अछि। एहि हेतु अनन्तकालसँ जीवात्मा परमात्माक अनुसंधान विकलतापूर्वक कय रहल अछि। महाकवि सुमन एहि वेदनाक अनुपम भोक्ता छथि।

भरत शृंगारसँ हास्यक उत्पत्ति मानैत छथि। हास्य चित्ताक विकास थिक जे प्रीतिविशेषसँ होइछ। वस्तुतः हास्य विभावक मूलमे अनौचित्य कारण अछि। एहिमे कोनो सन्देह नहि जे हास्यकेँ शृंगारसँ अधिक सम्बन्ध छैक, कारण जे ओ प्रिय चित्तानुरंजक होइछ। हास्य आनंद, आवेग, मात्सर्य, चापल्य आदि भावनासँ भरल रहैछ। ई शरीर-मानस प्रक्रिया थिक। हास्यक अनेक कारण होइछ—वाक्चातुर्य, व्यंग्य, वक्रोक्ति आदि। हास्य समस्त अनुभूतिकेँ आंदोलित करैछ जाहिसँ प्रशस्त आनन्द फूटि पड़ैछ। कविक पंक्तिपर दृष्टि-निक्षेप कयल जाय—

हास्यमयी सहचरी प्रकृतिकेर
व्यंग्य - तरंगित साओन - भादव

जगत प्रकृति-पुरुषक क्रीड़ाक परिणाम थिक। क्रीड़ाजन्य हासक विद्यमानता सर्वत्र अछि। 'ओढ़ि मेघ दल कारी कम्बल' आदि पंक्ति शृंगार जन्य हास-परिहासक कथन थिक। प्रियतमक संग परिहासक अनुभवक मूलमे शृंगारे विद्यमान अछि।

तत्पश्चात् अद्भुतरसक पाँती 'इन्द्रजालिनी' शीर्षकमे देखबामे अबैछ। नारायण पंडित अद्भुते रसकेँ प्रधानता दैत छथि। रसक सार चमत्कार थिक आ ओहि चमत्कारक सार-स्वरूप अद्भुत रस थिक। चमत्कारमे विलक्षणता रहैछ जे चित्ताकर्षण करैछ। मम्मट सौन्दर्यात्मक विशिष्ट वोधकेँ चमत्कार कहने छथि। विश्वनाथ हृदयविस्तारकेँ चमत्कार कहैत छथि आ रसमे चमत्कारकेँ प्राणस्वरूप मानैत छथि। अद्भुतता आश्चर्यक उत्पादक थिक।

अद्‌भुततासँ विचारकेँ उत्तेजना भेटैत छैक। सुमनजी अद्‌भुतक वर्णन एहि रूपेँ कयने छथि —

दिनमे रातकि दृश्य तमोमय विद्युतबल निशि दिवस ज्योतिमय
माँझ-माँझमे साँझक सुन्दर दृश्य देखाय हृदय हुलसाबय

एहि प्रकारक विस्मय इन्द्रजालिनीएँ द्वारा देखौल जा सकैछ। तेँ कवि कहैत छथि—

सूर्य-चन्द्र तारावलीक कय लोप लोक-विस्मित करइत नव
इन्द्रजालिनी प्रकृति नटीकेर चमत्कार ई साओन-भादव

तदुत्तर 'भैरवि-भयाओनि' शीर्षकसँ कवि भयानकरसक वर्णन कयलनि अछि। भयानकरसक स्थायीभाव थिक भय। आलम्बन होइछ—हिंसक प्राणी, बीहड़ तथा नीर्जन स्थान, श्मशान, बलबान शत्रु, भूत-प्रेतक आशका आदि। उद्दीपनविभावमे हिंसक जीवक भयानक चेष्टा, शत्रुक भयोत्पादक व्यवहार, निःस्तब्धता आदि। रोमांच, स्वेद, कम्प, वैवर्ण्य, चीत्कार आदि अनुभाव होइछ तथा शंका, चिन्ता, ग्लानि, मूर्च्छा आदि एहि रसक संचारीभाव थिक। कविक पंक्ति द्रष्टव्य—

विकट दन्त तडितक कटकटबय मेघ-पिशाची नभतट घेरय
बकपाँतिक लटकाय मुण्डमाला झझापंजेँ झिकझोरय
अन्धकारमे पटकि विश्वकेँ झटकि प्रलय समयक कय परिभव
घन घमंड गर्जनसँ दिशि-दिशि चलल कपाबय साओन-भादव

'काल-पुरुष'क रूपमे कवि रौद्ररसक वर्णन करैत छथि। एकर स्थायीभाव थिक क्रोध। गीताकार कामसँ क्रोधक प्रादुर्भाव मानैत छथि—'कामात्क्रोधोभिजायते'। अथर्ववेदमे पापी प्राणीक प्रति ईश्वरक क्रोधक वर्णन देखल जाइछ। महाकवि सुमन साओन-भादवकेँ कुपित कालपुरुषकक कठोर मुख ओ कुटिल भृकुटि कहलनि अछि। संत तुलसीदासक पंक्ति छनि—"लव निमेष परमाणु युग वरस कलप शत चण्ड। भजसि न मन तेहि राम कहँ काल जासु कोदण्ड।" सुमनजी कहैत छथि—

के दुरन्त दोषी जकरापर तड़ित दण्ड छोड़थि ककरापर
मेघ गर्जने तमकि-तमकि पुनि उमड़ि ऐल अछि क्षुब्ध क्रूद्धतर
आइ बरसि पड़ता ने जानि ककरापर कखन सशंक भेल सब
कुपित काल पुरुषक कठोर मुख भृकुटि कुटिल ई साओन-भादव

वीभत्सरसक स्थायीभाव थिक घृणा। घृणित वस्तुकेँ देखि लोकमे ओहिसँ दूर हँटि जयबाक प्रवृत्ति होइत छैक। निम्नांकित पंक्ति—

चिर अभिशापित घृणामूर्त्ति परिपाक पाप केर साओन-भादव
घन-व्रण भरल शरीर मलिन अछि बिजुरी नहि, ई चरक-चिह्न अछि
सलिल धार नहि, गलित गात्रकेर पूति-प्रवाह चलल अविरल अछि

ई पढ़िते जेना मनमे घृणाक भाव जागि उठैत अछि। रसक साधारणीकरणक यैह स्थिति थिकैक।

ओना भरत नाट्यशास्त्रमे शान्तरसकेँ मान्यता नहि देने छथि। हुनक अनुसार जतऽ ने दुख हो ने सुख, ने द्वेष ने मात्सर्य, केवल सभ प्राणीमे समभाव हो, ततऽ शान्तरस होइत अछि।

पतंजलि अपन 'योगदर्शन'मे योगकेँ चित्तिवृत्तिक निरोध कहने छथि। एहीसँ समाधि प्राप्त होइछ। सुमनजी 'शान्त-तपस्वी' शीर्षकमे कहैत छथि—

गगन-गुफा बसि जटिल यती के
समाधिस्थ ई सओन-भादव ?

साओन-भादव साधना-निरत एक तपस्वी थिक। ओकरा मेघक जटा ओ विद्युतक बल्कल छैक, नदी-रूपी कमण्डलुमे नभगंगाक जल भरल छैक। ई तपस्वी त्रिकाल स्थान कऽ तृणासनपर बैसि घन-ध्वनि-रूप मंत्रोच्चारण करैछ। बलाका एकर माला थिकैक, रवि-शशि-रूपी दूनू आँखि मूनि ध्यान-मग्न अछि। एकरा हेतु सुख-दुख, दिन-रजनी सभ समान छैक। ई घनश्यामक एकान्त ध्यानमे अवस्थित अछि। घन-छायारूप कायामे चपला 'श्री' समान लगैत छैक, यौवन-जल एकरा हेतु बुद-बुद प्रमाण थिकैक, संचित-रसक त्याग जन्य दुर्लभ सुख शान्तिमार्गक अनुभव करा रहल छैक, तेँ ई स्थितप्रज्ञ बुझना जाइत अछि।

तत्पश्चात् कवि 'वात्सल्यमयी' शीर्षकसँ साओन-भादवक वत्सलताक व्याख्या कयलनि अछि। कविक कथ्य छनि जे साओन-भादव चिरवत्सला प्रकृति-जननीक स्नेहाञ्चल थिक। सांख्यदर्शनक अनुसार प्रकृतिक सृष्टि अपना भोगक हेतु नहि होइछ, प्रत्युत पुरुषक निमित्त। ग्रीष्मक प्रचण्डतासँ विश्वशिशुकेँ दुर्बल क्षुधाक्रान्त देखि स्नेहमयी प्रकृति द्रवित भऽ सन्तानकेँ बिन्दु-बिन्दु हृदयरसक पान करबैत अछि। शीत-रौदसँ रक्षा, अन्न-जलक

अभावक पूर्त्ति, क्रीड़ानिमित्त कदम्ब-कन्दुकक उपस्थिति, मुदित मयूरक संग नृत्य-संयोग कय साओन-भादवक प्रकृति अपन ममत्वकें प्रकट करैछ –

शीत-रौदसँ रक्षा पाबओ ने अभाव जल अन्नक दाबओ
खेलओ नित कन्दुक-कदम्बसँ मुदित मयूर संग भय नाचओ

अनेक आचार्य वत्सलरसकें मानलनि अछि, जकर स्थायीभाव स्नेह होइछ।

'चिरन्तन दम्पती' शीर्षक कवितामे चिरन्तन प्रकृति-पुरुषक सम्मिलन जन्य भक्तिरसक प्राकट्य भेल अछि। नवश्यामल घन-युक्त निकुञ्जमे दम्पतीक हृदय प्रणयकेलिरससँ भरल अछि आ अंग-अंगमे शतअनंग रुचि विद्यमान अछि। प्रणयक नव उत्सकें नृत्यनिरत देखि भक्त-मयूर आनंदित भय रहलाह अछि। वर्षाक जल यमुना-सदृश बुझना जाइछ, नित नवीन श्यामल वन-पथ अछि, एहि रूपें राधा-माधवक केलि-कुतूहल व्यंजित भय रहल अछि। कवि रसिकगत प्रेम रसक मंगल-कामना करैत छथि; प्रणय-वेणुक स्वर-माधरी जगतमे ध्वनित भय रहल अछि। एहि कवितामे कवि प्रेममूलाभक्तिक विवेचन कयलनि अछि। एहिमे राधा-माधवक केलि-कुतूहल जन्य मधुर रसक परमोत्कर्षता प्रकट भेल अछि। भक्तिक पाँच गोट रसमे मधुररस सर्वश्रेष्ठ थिक। महादशामे एहि रसक स्थिति सर्वोच्च कहल गेल अछि। तें कवि कहैत छथि—

जयतु प्रेम रस रसिक हृदय गत
ध्वनित जगत मधु प्रणय वेणु रव

वस्तुत: प्रणय-वेणुक स्वर-माधुरी परम तन्मयता उत्पन्न करैछ। प्रेम आदान नहि, प्रदान थिक। ई आनन्दक लघु स्वर्णिम स्वप्न वा भावोन्मादता नहि थिक। प्रेम तँ शिवत्व, आनन्द ओ स्थैर्यकें प्रकट करैछ। एहि शीर्षकमे महाकवि सुमन एही भावनाकें व्यक्त कयने छथि।

एहि प्रकारक उच्च कोटिक रसरचना साहित्यमे बड़ विरल अछि। प्रकृतिकें मानवीकरण कयल गेल अछि आ सभ रसक एकरंग सुन्दर परिपाक भेल अछि। महाकवि वैह भऽ सकैछ जे रससिद्ध हो, अर्थात् सभ रसपर ओकर एक-रंग अधिकार हो। सुमनजीक जँ आन सभ रचना नष्टो भऽ जाय, केवल यैह लघुपुस्तिका टा बाँचल रहि जाय, तैयो ओ महाकविक उच्चासनपर शोभायमान रहत हे।

पयस्विनी

श्रीमार्कण्डेयप्रवासी

महाकवि सुरेन्द्रझा 'सुमन' कृत मैथिली काव्यसंग्रह 'पयस्विनी' द्रष्टाकविक काव्यदर्शन किंवा दर्शनकाव्य थिक। दुःख-सुख, आशा-निराशा, आसक्ति-अनासक्ति, स्नेह-घृणा, द्वेष-प्रेम सभक सम्पूर्ण काव्यानुभूति एक्के ठाम विभिन्न मानसिक स्थितिये आ दृष्टिये उपलब्ध कराकऽ 'पयस्विनी' मानव जीवनके समन्वयक स्फूर्ति प्रदान करैछ। आलोच्य काव्यग्रंथक 'भाव-भूमि' एहि प्रसंग अपन कथ्य स्वयं स्पष्ट कऽ दैछ—

"मानवके कण्ठक वरदान भेटलैक तँ अभिशापो पछुअयने अयलैक पियासक। दृष्टिमे सृष्टि विम्बित भेलैक तँ रूप-आकृतिक प्रतिविम्बन पिण्ड नहि छोड़लकैक। श्रुतिपुटमे संगीत गुंजित भेलैक तँ क्रन्दनक हाहाकार सेहो पुञ्जित होइत गेलैक। राकारजनीक ज्योत्स्ना यदि पुलकित कयलकैक तँ अमा-तमीक सघन छाया सेहो कम्पित करैत रहलैक। जीवनक ई द्वन्द्वे, प्रसाद-विषादक ई स्पन्दे मानव-मानवके छन्दक धन्धा दऽ गेलैक।" 'पयस्विनी' जीवनक एहि द्वन्द्व एवं प्रसाद-विषादक एहि स्पन्दनके समग्र रूपे स्वीकार करैछ। संग्रहक पचीस गोट कवितामे प्रथम तीन कविता पावसके तीन पृथक्-पृथक् दृष्टिसँ चित्रित कयलक अछि—पावस पयस्वनी, पावसी : तामसी आ पावस : मृत्यंजय। 'पावस : पयस्विनी' शीर्षक कवितामे मेघके धेनु रूपे चित्रित कयल गेल अछि—'जननी धन-धेनुक धन्य हृदय।' पावसी : तामसी शीर्षक कवितामे नवरसक पृष्ठ-भूमिमे पावसक विभिन्न रूपक प्रसंग-चित्र उभरल अछि। आ पावस : मृत्युंजय मे लोकहितक सिद्धि-हेतु स्वयंके गला देबऽवला पावसक बलिदानी चरित्रक चित्रण कयल गेल अछि—

जगकेँ सजीव कय, जीवन दय आनक हित निज तन-मन वलि कय
वलिदानी पावस मृत्युञ्जय भरि कय पाओल अमृतक परिचय

पयस्विनीमे सरिताक तीन टा रूप आत्मसात छैक—सरिता : रसवन्ती, सरिता : वनिता आ सरिता : कविता। रसवन्ती रूपमे सरिताकेँ एकटा एहन यौवन-सम्पन्न ललनाक रूपमे विम्बित कयल गेल अछि जे सागररूपी प्रियतमसँ मिलन हेतु सवेग अभिसरण कऽ रहल अछि। सरिताक दुनू तट की अछि—नितम्बिनी नायिकाक वाम-दहिन नितम्ब-पार्श्व अछि। दुनू तटक बीचोबीच रसवन्ती अनेक 'ताल-तरंग'क संग पुरैत भावुकक 'उर-हरण'क आगाँ बढ़ि रहल अछि। सागरक अतिरिक्त ओकरा के थाम्हि सकतैक ?

तट-नितम्बिनी मोड़ि-मोड़ि कटि-देश नृत्य-रस-निपुणा
कल-कल गीत गबैत नचैत-कछैत सतत द्रुतचरणा

वनिता रूपमे पतिव्रता सरिता प्रिय-मिलनातुरा अछि, ओ गिरिपाहनक रोध नहि गनैछ, चर-चाँचरक अनुरोध नहि सुनैछ। ओकरा सागरक अतिरिक्त आन कोनो प्रतिमान आकृष्ट कऽ पयबामे समर्थ नहि। "कल-कल ध्वनियेँ करी पुछारी कतय हमर निधि हृदय-बिहारी" यैह टा इच्छा, यैह टा जिज्ञासा। आ, सरिता : कवितामे दुनूक एहन संगति बैसाओल गेल अछि जे 'सरिते कविता थिकी, कविते सरिता थिकी'।

तीनू स्थितिमे सरिता स्वकीया अछि, अतः काव्यभावक हृदय-प्रमाणक निश्छल किंवा सात्विक सौंदर्यबोध करबैछ।

'घन तमाल' शीर्षक कवितामे मेघकेँ 'गगन-वन'क चतरल 'तरु-तमाल'क रूपमे चित्रित कयल गेल अछि। ग्रीष्मक उष्मतासँ अकछि गेल कवि सामाजिक आयाममे मेघक शीतलता प्रदान करयवला स्वरूपक आतुर प्रतीक्षा करैत छथि—

कत दिन ग्रीष्मक उष्णताक ई चलत अचल उत्पाते
पड़त प्रचंड किरण मार्तण्डक कते क्रूर आघाते
दुसह पसाही दावानलक करत कत वनक निपाते
बहइत रहत कि चिर कालहु घर दुर्वह लहू बसाते ?

आ, अन्ततः कवि तप्त-शप्त धरतीक ताप-शाप-हरण-हेतु कृष्णावतरणक हेतु श्याम-मेघक आह्वान कयलनि अछि—

रिक्त-तिक्तव्रज-वन, कालिन्दी कूल न तूल कलाम
आबि आइ पुनि पुण्य श्याम घन बनबिअ ललित ललाम

'प्रिया ओ प्रेयसी' शीर्षक कवितामे प्रिया आ प्रेयसीक संबंध-सीमा स्पष्ट भेल अछि। 'मानव-मन' शीर्षक कविता मनक चंचलताक सत्य स्वीकार करैछ— 'चंचल लहरी, चंचल बिजुरी, ताहूसँ चंचल मानब मन।" मानव-मनक चंचलताक व्याजेँ कविक अभीष्ट छनि इच्छाक अनन्तता वासनाजन्य चिर-अतृप्ति आ आवश्यकताक गगन-व्यापक प्रत्यक्षीकरण करायब। व्यग्यार्थ ई जे इच्छाक विस्तार मनुष्यकेँ तृप्त नहि कऽ सकैछ। ओकरा स्वयं किछु संयमित होबऽ पड़ैछ, किएक तँ

अधरक वसन्त, लोचनक शरद श्रुति घन-ध्वनियेँ ऋतु-ऋतु रंजित
अछिहे, परन्तु अन्तरक भूमि ग्रीष्मक ज्वालेँ जरि-जरि वंचित

'दीपक : एकाकी' शीर्षक कवितामे अन्धकारक विरुद्ध प्रकाशादर्शक रक्षार्थ कर्म पथपर एकसरे बढ़निहार दीपकक पौरुष-चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि। वन-पर्वमे नगर-ग्रामक अप्राकृतिक वातावरणसँ दूर शान्त सुषमामय वनस्थलीक प्रति कविहृदयक अनुराग व्यक्त भेल अछि। समसामयिक सामाजिक संघर्ष आ कोलाहलसँ विरक्त कवि अकछायलो अवस्थामे पाताल आ आकाशक दिश आकृष्ट नहि होइत छथि। हुनका बुझल छनि जे धरतीपर ग्राम-नगरक कोलाहल छैक तँ वन-प्रान्तरक शान्तिश्रो सेहो। जँ जीवन छैक तँ ओकरामे अनेक भाव-रूप होयब अनिवार्य छैक। विभिन्न स्थिति आ परस्पर विरोधी भावाभावक बीच समन्वय दृष्टिकेँ वन विविधतामे एकताक स्वाभाविक दिशा-निर्देश करैछ, किएक तँ वनमे—

गाछो अछि तँ खढ़-पातो संग जुड़ाइछ
काको अछि तँ कोइलीक कुहू न हेराइछ

एहि प्रसंगमे प्रकृतिक प्राण-परिवेशक उपस्थिति द्वारा कवि वर्गसंघर्ष अथवा स्वार्थ-संवर्धक आधुनिक चिन्तनकेँ अप्राकृतिक आ असनातन सिद्ध

कयलनि अछि। कविक ई इच्छा 'पयस्विनी'क 'कानन' शीर्षक कवितामे अधिक स्पष्ट भेल अछि। कवि काननसँ कहैत छथिन—

कानन ! आउ अहँक आननपर चानन हम छिटका दी
मलिन वदन धो-पोछि केश बिखरल-बिथुरल छटवा दी

मुदा, कानन अपन प्राकृतिके स्वरूपसँ तृप्त अछि, ओकरा विकृति वा तथा-कथित संस्कृतिक प्रति कोनो आकर्षण नहि। काननकेँ (मानवीयकृत ब्याजेँ) बुझल छैक जे अनुकृति प्रकृति नहि भऽ सकैछ। अपन 'स्व'क प्रति आस्था एवं आत्म-तोष व्यक्त करैत ओ उत्तर दैछ—

रूप विरूप कहओ क्यो, युग-अनुरूप न मानओ, क्षति नहि
किन्तु स्वरूप हमर अविकृत युगसँ युगधरि, अनुकृति नहि

आ एही क्रममे कवि तथाकथित 'परिवार-नियोजन' कार्यक्रमक विरोध करैत छथि—

साल विशाल गुल्म भेषज फल-दल अनन्त भंडार
भरल-पुरल, वांछित न नियोजन-लांछित करु परिवार

'पयस्विनी'मे पर्वतकेँ तीन अवस्थामे चित्रित कयल गेल अछि—'पर्वत : एक वृद्ध', 'पर्वत: एक युवक' आ 'पर्वत : एक बालक'। वृद्ध पर्वतक मानवीकरण वृद्ध मैथिलक रूपमे विम्बित भेल अछि। पर्वत-पठारमे सालक विशाल गाछ की थिक ? वृद्ध पर्वतराजक कराही थिकनि। गुफा बटुआ आ ओहिमे गचल अनेक गुआ-धातु—सुपारी। युवक रूपमे पर्वत 'सर्वोपरि बढ़बाक महत्त्वाकांक्षा' रखैछ। ओ संघर्षसँ घबराइछ नहि। ओकरापर देशक सीमा—रक्षाक भार छैक। युवक पर्वत कर्मयोगरत अछि। ओकर स्वेद-निर्झर देशक कृषि सम्पतिक सिंचन संरक्षण करैछ। ओ 'धातु-मणि-रत्न संचित' करैछ, किएक तँ ओकरापर स्वदेशकेँ सम्पन्न करबाक दायित्व छैक। देशपर संकट अयलापर तँ ओ गुहा-व्यूहक प्राकृतिक संरचनासँ सज्ज किलेक रूपमे तनिकऽ ठाढ़ भऽ जाइछ। आ, बालक रूपमे जननी अवनीक वंशधर 'महीधर' पर्वतक स्वाभाविक स्वरूप देखू—

नगन, मगनमन, सतत दिगम्बर, दिग धवलित मुसुकान
हाथ उठाय चहैं छथि पकड़य, दूर न मामा चान

'प्रतिमा : भावना' शीर्षक कवितामे भावनाक पूर्त्तिक रूपमे मूर्त्तिक साकार स्वरूपकें स्वीकार कयल गेल अछि। 'धूमावती'मे कवि दस महाविद्याक स्वरूप चर्चा करैत आंगन-घरक स्वकीय परिवेशमे भगवतीक प्राण-प्रतिष्ठा कयलनि अछि। भगवती धूमावतीक ईश्वरीय सत्ताक एतेक स्वाभाविक साधारणीकरण संभवतः पहिल बेर मैथिली काव्य-साहित्यमे भऽ रहल अछि। गृहिणी-रूपक ई प्रतिष्ठा मिथिलाक शाक्त चिन्तन-धाराकें आर ठोस आधार देलकैक अछि। 'भिक्षा-पात्र' शीर्षक कवितामे भारतीय नागरिकक आस्वाभाविकता कविकें कचोटैत छनि। ओ चीत्कार कऽ उठैत छथि –

भूमि-हीन-भूमि-पुत्र, कोना सहल जाय ?
धनी धन्य कोना, जखन भूख बढ़ल जाय ?

आइ जे समाजवाद आ समाजीकरण नामपर व्यक्तिक अस्तित्वपर बहु-मुखी प्रहार भऽ रहल छैक, तकरो प्रति कवि अपन स्पष्ट सैद्धान्तिक विरोध प्रकट कयलनि अछि। कविक मतें व्यक्ति आ समाज तें एक-दोसरक पूरक अछि–

व्यक्तिसँ समाज, तें समाज हेतु व्यक्ति
समाज-शक्ति व्यक्ति, तें न व्यक्तिसँ विरक्ति
एक दोसराक पूरके निके प्रसक्ति
तें समष्टि-व्यष्टि योजना प्रमानि लेब
दान ई निदान समाधान मानि लेब

कवि विपन्नताक विरुद्ध व्यक्तिक क्रांति-चेतनाक स्वागत करैत छथि।

'सत्य सूर्य : वयः तूर्य' शीर्षक कवितामे निराशा आ अतृप्तिकें तिलांजलि दऽ प्रकृतिक दैनिक कार्य-व्यापारक समानान्तरमे कर्मठ जीवनक श्रमरेखा खींचल गेल अछि। 'नटी : वधूटी' शीर्षक कवितामे वाह्य प्रकृतिक उद्दीपन आ अन्तः प्रकृतिक शुचि-रुचिक सौंदर्य-सुरभि केलिक बहुत नीक आ तुलनात्मक प्रस्तुति भेल अछि। 'सम : विषम' तुलनात्मक बरहमासा अछि। 'खण्ड-अखण्ड' शीर्षक कविता मार्क्सवादक खण्डित दृष्टिकोणक समक्ष चुनौती रूपमे प्रस्तुत

अछि। मार्क्सवाद जतऽ विराटकेँ लघु बनाकऽ—वर्गमे बाँटि—कमजोर आ परस्पर संघर्षशीलताक पृष्ठभूमि बनबैछ, ओतऽ कवि लघिमामे 'भूमा'क विराट प्रत्यक्ष करऽ चाहैत छथि—

विश्लेषणकेँ संश्लेषणमे परिणत करब हमर संकल्प
भूमिक लघिमाकेँ भूमामे बदलि अल्पकेँ करी अनल्प

आ एहि प्रसंगमे कवि पाश्चात्य चिन्तनधाराक संकीर्णतापर प्रहार करैत भारतीय जीवन-दर्शनक एकात्मता किंवा समग्रताक विजय-पताका ठाढ़ करैत छथि।

'विडम्बना' शीर्षक कवितामे लगैछ जेना कवि भारतक तपःपूत संस्कारक संग जे समसामयिक राजनीतिक-कूटनीतिक विडम्बना छैक, तकरेपर अट्टहास कऽ रहल छथि। आर्य परम्परामे पोषित साधकक हेतु राजभवनक कोन आकर्षण? पाशुपत उपलब्धिमे लागल व्यक्तिक हेतु 'सेक्स'क कोन सीमा धरि महत्त्व?

'द्वैत गीत' 'पयस्विनीक अंतिम काव्य-विन्दु अछि। एहिमे काव्यकर्मी कविक गीता-सम्मत काव्य-कर्मयोगक व्यंजनामूलक दार्शनकिता प्रत्यक्ष भेल अछि। काव्यसाधनामे लय किंवा सम्पूर्णतः समर्पित कवि एहि बातक लेशो मात्र आवश्यकता-आकांक्षाक अनुभव नहि करैत छथि जे काव्य-कर्मक श्रेय हुनके भेटनि।

जहिना 'तरुक उगब मात्र कर्म फरब फुलब ऋतुक मर्म' तहिना काव्य-कर्मो कविक हेतु स्वाभाविके। ओ तँ साधन—स्वरूप भुजा मात्र छथि, शक्तिक केन्द्र-विन्दु तँ समाजे छैक। आलोचकक समक्ष सत्य किन्तु मीठ मधुर चुनौती ई अछि जे ओलोकनि कविक मर्म-व्यंजनाक कतेक दूर धरि स्वर—विस्तार दैत छथि। साधारणीकरण तँ पाठकेक होयतैक किने! आ तेँ ओ समाजक समक्ष समर्पित छथि—

भरि दी स्वर अहाँ, हम तँ मात्र व्यंजना
रेख-लेख हमर, अहिँक कला-रंजना

जे समाजक होइछ सैह कवि आ सैह ओकर कवितोक वर्ण्य। जे भारत अछि सैह भारतीय काव्यक प्राण-संदेश होयत। अनर्गल अनुकृति कतेक दिन आ किएक? प्रत्येक खेतमे प्रत्येक जातिक गाछ किंवा फसिल उगायब संभव

नहि। एहि सत्य-द्वैतके 'पयस्विनी' मे सम्पूर्णतः स्वीकार कयल गेल अछि। भारतीय चिन्ता-धाराक जे 'स्व' छैक, 'पयस्विनी' ओकरे वन्दना करैछ— 'प्रतिमाक प्राण अहँक, हमर वन्दना।'

'पयस्विनी'क प्राकृतिक पृष्ठभूमिमे पर्वत, सरिता, वन आदिक मानवीकरण द्वारा जाहि दार्शनिक तत्त्वज्ञानक प्रत्यक्षीकरण कराओल गेल अछि, ओकर विराटके एहि निबन्धक लघुतामे समेटल नहि जा सकैछ। एहि प्रसंगमे विशद् अध्ययन-मनन अपेक्षित। स्वाभाविक छन्द-शब्द योजना, भावक सूत्रवत् संश्लेषण एवं काव्यसामर्थ्यक प्रतीक रूपमे 'पयस्वीनी' मैथिली काव्यक शिल्प–शिखरपर अनन्त कालधरि सिद्धासनमे रहत।

पयस्विनीमे अलंकारयोजना

डॉ० लक्ष्मणचौधरी 'ललित'

आचार्य श्री सुमनजीक मुक्तारूप शब्दार्थोपस्थितियुक्त मुक्तक-संग्रह अपन पयस्विनी रूप रुचि-शुचिक द्वारा जाहि तरहें काव्य-रसिककें विस्मित-विमुग्ध करैत अछि ओ मात्र काव्यानन्दक हेतु नहि थिक, अपितु काव्योत्कर्ष-प्रदर्शनक परम्परामे अपन उत्कृष्टतम स्थान रखैत अछि।

ईश्वरप्रदत्त प्रकृति मानव-हृदयक अन्तरालमे गर्भित हर्ष-शोककें अभिव्यक्ति देबाक निमित्त शब्दक शुक्ति प्रदान कयलनि, जाहिसँ प्राप्त मुक्ता अपन प्रस्तुतीकरण द्वारा आकर्षण-विकर्षणक नियमसँ शब्दकें ब्रह्म अथवा अखण्ड चेतनाक पर्याय बना देलक। वाणीक क्षेत्रमे शब्द ओ अर्थ—दूनू पूर्णतः सम्पृक्त-संश्लिष्ट अछि। शब्द बिनु अर्थ ओ अर्थ बिनु शब्दक ओतबे महत्त्व अछि जतबा माता बिनु पिता ओ शिव बिनु पार्वतीक। एही संश्लिष्ट संबधकें देखि कविकुल-गुरु कहलनि—

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ

वाणी, मनोभूमिमे विचरण करैत भावकें व्यक्त करैछ आ भाषा एही रश्मिबंधपर साहित्याकाशमे सप्तवर्णी धनुष तनैछ, जकर सुषमा-मेखलामे प्रत्येक सचेतन मानवक हृदय आबद्ध होमऽ चाहैछ। एहि सम्मोहक आकर्षणक मूल थिक अलंकार।

अलंकार शब्दक व्युत्पत्ति विद्वानलोकनि दू प्रकारसँ कयलनि अछि—'अलंकरोतीत्यलंकारः' एवं 'अलंक्रियतेऽनेनेत्यलंकारः'। प्रथम व्युत्पत्तिक अनुसार अलंकार कर्त्ता थिक आ दोसर व्युत्पत्तिक अनुसार करण। एहिसँ ई द्योतित होइछ जे अलंकार काव्यक विधायक पदसँ च्युत भऽ काव्यक साधन मात्र

बनि कऽ रहि गेल। किन्तु महाकविक पयस्विनीमे अलंकार काव्यक विधायक ओ साधक दूनू अछि।

भारतीय पृष्ठभूमिमे अलकारक महत्ता एहीसँ द्योतित अछि जे काव्य-शास्त्रहिकेँ अलकारशास्त्रक नामसँ संबोधित कयल जाइत रहल आ राजशेखर तँ एकर महिमाक आख्यान करैत वाङ्मयक प्राचीनतम ग्रन्थ वेदक सातम-अंग घोषित कऽ अलंकारकेँ वेदार्थक उपकारक तथा एकर अभावमे वेदार्थक अवगति नहि होयबाक विषय कहलनि—"उपकारत्वात् अलंकारः सप्तसंगमिति यायावरीयः। ऋते च तत्स्वरूप परिज्ञानात् वेदार्थानवगतिः।"

वस्तुतः सौन्दर्यक पर्याय, वाणीक शृंगार ओ काव्यसौन्दर्यक साधन-रूप अलंकार मात्र काव्योत्कर्षक हेतु नहि, अपितु चित्र-विधान एवं बिम्ब-विधानमे कविकर्मक महत्त्वपूर्ण साधनक रूपमे प्रतिष्ठित अछि। ई कविक मनःस्थिति-मापनक महत्त्वपूर्ण मानदंड थिक। कोन परिस्थिति एवं केहन मानसिक स्थितिमे कवि कोन विषयक कोन प्रकारसँ वर्णन करैत छथि आ हुनक भावकेँ व्यक्त करबामे भाषा कतेक दूर धरि सहायक भऽ हुनक कल्पनाकेँ रूपायित करैत अछि --एहि तथ्यक निरूपणमे अलंकारक योगदान अमूल्य थिक। पयस्विनीमे अलंकारयोजना द्वारा वस्तुध्वनि ओ रसध्वनिक प्रतिध्वनि स्पष्ट सुनबामे अबैत अछि—भने ओ अलकार-योजना शब्दश्रित हो, अर्थाश्रित हो अथवा उभयगत। सर्वत्र एकहि धार-प्रवाह, एकहि उमंग-तरंग।

काव्यमे जँ वर्णक आवृत्ति एतेक निकट हो जाहिसँ पूर्वोच्चरित वर्णक सस्कार समाप्त नहि होअय तँ ओतऽ अनुप्रास होइछ। पयस्विनीक भाषाक अन्नप्राशन संस्कारहि अनुप्रास थिक। जतहि दृष्टि जाइछ ओतहि अनुप्रास। 'पावस-पयस्विनी'क प्रथम दू पंक्ति देखब अनपेक्षित नहि होयत जतऽ 'च' ओ 'त' वर्णक पुनः पुनः आवृत्तिसँ वृत्य, 'लखि' ओ 'विशाख' शब्दमे 'ख' वर्णक एक बेर आवृत्तिजँ छेक तथा स्वर-सहित 'ख' वर्णक पदान्तमे आवृत्तिसँ अन्त्या-नुप्रास प्रथम आकर्षणक केन्द्र बनल अछि—

चित चेति चैत-तरु लखि विशाख
चरि चर-चाँचर जगतीक लाख

अनुप्रासक सदृशहि यमकालंकारक स्रोत सेहो वैदिक साहित्य थिक। यमकके शब्दालंकारक जनक मानल गेल अछि। स्वाभाविक अछि परम्परानुयायी आचार्यप्रवरक लेखनीकें शब्द-संयोजनमे अग्रपश्चात देखैत चलब। ई संयोजन सार्थकक संग निरर्थकक हो, सार्थकक संग सार्थकक अथवा निरर्थकक संग निरर्थकक—एहन सन प्रतीत होइछ जेना कविवर अलंकारक उपवनसँ यमकक पुष्प चयन कऽ कविता कुमारीक गारामे माल्यार्पण कयने होथि। पावसक पयस्विनी रूप हो अथा मृत्युञ्जयी, सरिताक रसवन्ती रूप हो अथवा वनिताक—सर्वत्र रसोद्दीपनमे सहायक अछि यमक। किछु उदाहरण—

'सित असित नील मेघक धूमिल'
'जरते जाधरि कासक विकास'
'बलिदानी दानी दिव्य जलद'
'मनक प्रवाह निरन्तर अन्तर'
'अनुरागिणी रागणी गबइछ'

'श्लिष्यन्तीति श्लेषः'। पयस्विनी शब्द स्वयं श्लिष्ट अछि। साहित्य-शास्त्रमे श्लेषक प्रयोग चारि रूपमे भेल अछि—अलंकारक सामान्य तत्त्वक रूपमे, काव्यगुणक रूपमे, शब्दालंकारक रूपमे एवं अर्थालंकारक रूपमे। पयस्विनीमे दृष्टिभिन्नतासँ श्लेषक चारू रूपक दर्शन होइछ जे यथास्थान अपन स्वाभाविक उत्कर्षसंयुक्त अछि। महाकवि अपनहु 'भाव-भूमि'मे एहि रहस्यक उद्घाटन करैत कहैत छथि—'प्रयोजन पड़ने 'पयस्'क श्लेषाश्लेष कयनहि'। श्लेष गोपन-मूलक अलंकार थिक। भाव-संगोपनसँ जिज्ञासा ओ कौतूहलक अभिवृद्धि होइछ तथा अर्थबोधक पश्चात उत्पन्न होमयवाला आनन्द हृदयकें चमत्कृत कऽ दैत अछि। द्रष्टव्य थिक विविध पावसी नक्षत्रक योजनामे श्लेषक छत्र—

थन आर्द्र पुनर्वसु पुष्ट श्लिष्ट
अछि मघा घोघ पूर्वा अशिष्ट
रोमंथ उत्तरा, हस्त हास
चरते जा धरि कासक विकास

वस्तुतः पयस्विनीमे दुग्धधारिणी धेनु, बिन्दुवाहिनी सरिता ओ मुक्ताहार-

शृंगारी नायिका-रूप त्रिवेणीक सङ्गम, गुणरूप श्लेषक पुटसँ काव्य-रसिकक रसास्वादक अक्षय निर्झरणी बनल अछि।

कल्पना किंवा भावावेशक स्थितिमे भाषाक अलंकृत भऽ जायब सहज संभाव्य थिक। कतहु आश्चर्य तँ कतहु उत्साह, कतहु हर्ष तँ कतहु शोक, कतहु भय तँ कतहु घृणा— शब्द स्वयं अपन पुनरुक्तिसँ अलंकृत अछि। पावसी प्रकृतिक रस-चित्रमे आलम्बन योजना करुणक हो अथवा रौद्रक, भयानकक हो अथवा वीभत्सक—पुनरुक्ति कविक विशिष्ट इच्छाक परिद्योतक थिक—

'टप-टप अकाससँ खसय नोर'—करुणा
'सन-सन पुरिबा बहि रहल जोर'—रौद्र
'थर-थर काँपय सरिताक नीर'—भयानक
'पिच-पिच सभथल मन भिनकि रहल—वीभत्स

एतबे नहि, पंडितप्रवर विज्ञान, दर्शन, न्याय, साहित्य आदि विविध विषयक संग-संग संस्कृत, अरबी, फारसी आदि भाषाक प्रति समदृष्टि रखैत भाषासभक दृष्टान्त द्वारा काव्यमे अपूर्व सौन्दर्यक सृष्टि कयलनि अछि। प्रस्तुत अछि 'प्रतिमा-भावना'क ई स्थल जतऽ अनेकानेक शिष्य-रत्नकेँ उत्पन्न कयनिहार आदणीय गुरुक गुरुत्व-सिद्धिक प्रमाण स्वतः उपलब्ध अछि—

प्रभा-प्रमाण आगम-अनुमान यदि च दृश्य
गुरुक हो गुरुत्व सिद्धि जखन सफल शिष्य
ककरहु हस्तीक बुतपरस्ती परिणाम
काबा कबूल करय सीभित लय स्थान

अलंकार काव्यक वाह्यधर्म मात्र नहि भय कविक आन्तरिक उक्तिक संग चित्तमे आगत भाषाक रत्न थिक जाहिमे हुनक कल्पना नित्य विचरण करैत अछि। यैह कारण थिक जे भामह विदग्धमण्डना नारीक सदृश अर्थमर्मज्ञक अलंकृत वाणीकेँ विभूषित होयबाक वर्णन करैत अलंकारक गुण-गरिमाक आख्यान कयलनि। वाक्यार्थमे प्रमुख प्रतिपाद्यक सौन्दर्यवृद्धि मात्र वर्ण सादृश्यहिसँ नहि, अपितु सुन्दर अर्थसादृश्यहुसँ होइत अछि। सुन्दर अर्थसादृश्य रसक उपकारक होइछ। पयस्विनीमे अर्थसादृश्यक नियोजन काव्यामृतक

अनवरत वर्षण कऽ रहल अछि। सरिता-कविताक अभेद भाव-सम्बन्धक निरूपणमे उपमालंकार-योजनाक हृदय संवेद्यता द्रष्टव्य थिक —

शब्द-अर्थ सन अभिन्न
सीता-राधा न भिन्न
बिम्ब-प्रतिबिम्ब रीति
सरिता कविताक प्रीति

वस्तुतः शब्द ओ अर्थक आश्रय-आश्रित सम्बन्ध अनेकानेक अर्थालंकारक सृष्टि द्वारा काव्यक श्रीवृद्धि करबामे समर्थ अछि। सरिता-कविता हो अथवा सरिता-वनिता, घन-तमाल हो अथवा पर्वत-वाल, सत्य सूर्य वयस पूर्य हो अथवा पूजन-उपादान—अनेक एहन स्थल अछि जतऽ उपमान ओ उपमेयक आरोपमे सादृश्यभंगता, निषेध-रहित तादात्म्यक प्रतीति करबैत अछि। यथा—

कंठ-कंबुमे भरि भरि स्वर-जल
व्यजन - विन्दुक संचय
नयनक अर्घीमे अति तरल
सलिल-रस कन-कन भरि कय (पूजनः उपादान)

× × ×

नयन-चकोर चान-मुख निरखब
तृषा शमित नहि भेल (सत्य सूर्यः वयस पूर्य)

किन्तु, तकर ई अभिप्राय नहि जे निषेध-युक्त उपमानक आरोपमे चमत्कार-न्यूनता रहैत अछि। देखल जाय 'सरिता-कविता' शीर्षक मुक्तकमे अपह्नुति अलंकारक पुट केहन स्फुट अछि—

जल प्रवाह नहि बहइछ नोर
कल-कल स्वर नहि हिचकी जोर
तट नहि खसय हृदय हहरैछ
सरिता-वनिता विकल कनैछ

प्रकृतमे अप्रकृतक सादृश्यमूलक संभावनाक अभिव्यक्तिमे जँ हास्यरसक आलम्बन-योजना, सहृदयक हृदयकेँ आकृष्ट करैत अछि तँ धूमावतीक चेतन-

भोगिनी नृत्य रूप अपन स्वाभाविकतासँ उत्कृष्ट अछि। द्रष्टव्य थिक धूमावतीसँ उद्धृत ई अंश—

मलिन वसन घर-द्वारि बहारथि बाढ़नि हाथहि नित्य
जेना कोनो आयलि छथि वेतन-भोगिनि कोनो भृत्य

महाकवि सुमनजी जँ एकदिस लोकन्यायमूलक प्रतीपालकारक प्रसंग प्रसिद्ध उपमानकेँ तिरस्कृत करैत एकाकी दीपककेँ एहि शब्दमे पुरस्कृत करैत छथि—

नहि देखि रहल छी जे तम-दल
अछि घेरि चलल चौदिस नभ-तल
अस्तमित भानु भयसँ विह्वल
शशि दूर पड़ाय अकास बसल

तँ दोसर दिस प्रियाक अपेक्षा प्रेयसीक श्रेष्ठता प्रमाणित करैत उपमेयमे गुणातिरेक देखाय व्यतिरेक योजना द्वारा पारम्परिक मर्यादाक रक्षा सेहो सफलतापूर्वक करैत छथि—

नूपुरक रव कतय पाओत, मंजु अलि-गुंजन यशी ?
ओ प्रिया, तोँ प्रेयसी !

जँ 'हेतोर्वाक्य पदार्थता'क निरूपण करैत कविवर एक वृद्धक रूपमे पर्वतकेँ 'अचले' कहबाक तर्क उपस्थित करैत छथि—'साल विशाल फराठी करमे चलब कठिन, तेँ अचले' तँ 'प्रतिमा-भावना'मे समान धर्म संयुक्त निरपेक्ष वाक्यार्थमे बिम्बक प्रतिबिम्बन देखाय काव्योत्कर्षक दृष्टान्त प्रस्तुत करैत छथि—

मनक सौन्दर्य निखर प्रतिमा छविवंत
रामक पद-रजक परस पाहन जीवंत

अलंकार तखनहि शोभावृद्धि कऽ सकैछ जखन ओकर विन्यास उपयुक्त स्थानपर हो। एहीसँ रस एवं भावकेँ गति (पोषण) प्राप्त होइत छैक। महाकविक 'सरिता-रसवन्ती'मे द्रुतगतिएँ दुहू दिशामे अभिसरण करबामे धर्मतुल्यताक सादृश्य जेना अनायास प्रदर्शित अछि—

उभय कूल मर्यादित रहितहु वेगवती द्रुतगमना
दिवा-निशा दुहु दिशा अभिसरण निपुण वेशीनी ललना

प्रत्येक महाकवि अपन रचनामे अलंकार एवं रसक बीच समन्वय स्थापित करैत छथि जाहिसँ हुनक रचना चमत्कृत भऽ उठैत छनि। पयस्विनीमे यैह समन्वय अलकारकेँ अलंकार्यसँ अभेद कऽ दैछ, जाहिसँ रसवत, प्रेय, ऊर्जस्विता आदिकेँ सेहो अलंकारहिक कोटिमे परिगणित कऽ लेल जाइछ। अलंकारवादी आचार्यलोकनि व्यंग्यार्थकेँ सेहो अलंकारहिमे गतार्थ कऽ देलनि अछि। आचार्य भामह पर्यायोक्त एवं समासोक्ति अलंकारक लक्षणमे प्रतीयमान अर्थक कल्पना कयने छलाह। जहिना पर्यायोक्त अलंकारमे वाच्य-वाचक वृत्तिक अतिरिक्त अन्य प्रकारक अर्थक प्रतीति व्यंग्यार्थक स्वीकृतिकेँ स्पष्ट कऽ दैत अछि, तहिना कार्य-कारण वृत्तिमे ध्वनिक प्रतिध्वनि सेहो स्पष्ट श्रुतिगोचर होइछ। कारणक सद्भावहुमे कार्यक अभाव कविक असाधारण उक्ति प्रतीत होइछ। एहन विशेषोक्तिक उक्ति-विशिष्टतामे द्रष्टव्य थिक ध्वनिगर्भिता—

कय लेल आचमन सागरसँ
नहि हमर अगस्त्यक तृषा दूर
बलि छलि धापेँ नापल जगती
ने भेल वामनी भीख पूर

एहि तरहेँ ई कहब अनावश्यक नहि होयत जे पयस्विनीक अलंकार-योजना मात्र शब्द ओ अर्थक प्रसाधने टा नहि अछि प्रत्युत गूढ़ध्वनि गर्भक सेहो अछि। जीवात्माक गुणधर्मक प्रसंग भारतीय दर्शनशास्त्रमे अनेको सहस्त्र-वर्षसँ जे गूढ़ विवेचन होइत रहल अछि तकर सारतत्त्वक ध्वनि विद्यमान अछि से सर्वथा श्लाघ्य थिक।

एवंविध अनेकानेक ध्वनि-समुदायक समायोजनसँ पयस्विनीक आत्मा अनुगुञ्जित अछि जे कविवरक नवोन्मेपशालिनी प्रज्ञा ओ सूक्ष्मातिसूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्तिक परिचायक थिक।

राष्ट्रिय भावना ओ चिन्तनात्मक कृति

अन्तर्नाद ओ भारत-वन्दना

डॉ० श्रीदुर्गानाथझा'श्रीश'

एक विशिष्ट प्रतिभाशाली कविक रूपमे सुमनजी प्रतिपदा, साओन-भादव एवं अर्चनाक प्रकाशन होइतहि अग्रगणित होअय लागल छलाह आओर हिनक कवित्वक परिपक्वता, उक्तिक प्रौढ़ता, कल्पनाक दृढ़ता एवं विच्छित्तिक विन्यास भूरि-भूरि प्रशंसित होअय लागल छल। आचार्य रमानाथझा हिनका 'कविक कवि'क संज्ञा देल, कारण हिनक कविताक रसास्वादनक हेतु एक गोट कविक हृदय चाही, आओर अर्चनामे संगृहीत गंगा-स्तुतिक प्रशंसा हुनकहि शब्दमे स्मरणीय थिक—"भर्तृहरिक सुप्रसिद्ध उक्ति—'विवेक भ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः' तकर उत्तर अपन गंगा-स्तुतिमे ई जेहन देल अछि तेहन एहि हजार-डेढ़ हजार वर्षमे केओ कवि नहि देने छलाह।" कोनो कविक कवित्वक अभिनन्दन एहिसँ बढ़ि की भऽ सकैत अछि ?

तहिआसँ अर्द्धशताब्दिओसँ अधिक भेल, सुमनजीक काव्य-यात्रा अनेक पथ-प्रान्तरकेँ पार करैत निरन्तर अग्रसर होइत रहल अछि। एहि परिपक्व वृद्धावस्थहुमे ओ कवि-कर्मसँ विरत नहि, अपेक्षाकृत अधिक निरत छथि। एहि बीच 'एहन कोनो वाद-प्रवाद नहि जे हुनक रचना-क्षेत्रमे नहि आयल हो; एहनो किछु मुक्तकक ओ रचना कयने छथि जाहिमे ओ संस्कृत काव्यक सरसता, विहारीक अर्थगर्भिता तथा उर्दूक त्वरित मार्मिक स्पर्श करबाक क्षमता भरि देने छथि' जे सुनि अथवा पढ़ि सहसा 'वाह-वाह' बहार भय जाय। वस्तुतः सुमनजीक काव्य-साहित्य विविधता-मण्डित अछि, विस्तृत, विशाल ओ व्यापक अछि, जकरा पढ़लासँ किछु नहि छुटैत अछि, रसास्वादनक सब अंगकेँ सहसा परितृप्त कऽ दैत अछि।

परन्तु मूलतः सुमनजी भारतीय संस्कृतिक कवि छथि, हुनक व्यक्तित्वे भारतीय संस्कृत ओ संस्कृतिसँ निर्मित अछि आओर जकर अभिव्यक्ति हुनक शब्द-रचना, कहबाक रीति एवं अनेकानेक सांस्कृतिक भाव-प्रतिपादनमे होइत अछि आओर एही तथ्यक प्रतिपादक थिक हिनक राष्ट्रियता-बोधक भाव-तत्त्व जे यत्र-तत्र हिनक कवितासबहिमे उपलब्ध अछि। एही दृष्टिएँ विशेष रूपें उल्लेख्य थिक हिनक 'अन्तर्नाद' ओ 'भारत-वन्दना'।

'अन्तर्नाद' सुमनजीक देशभक्ति-विषयक पन्द्रह गोट कविताक संग्रह थिक जकर अधिकांश रचना ओ राष्ट्रधर्मक चिन्तक दिवंगत दीनदयाल उपाध्यायक सप्तवर्ष-व्यापी (१९६१–६७) सामीप्यक प्रेरणा-स्वरूप कयने छलाह। अतः एहि कवितासबमे राष्ट्र-हित-सम्बन्धी कविक अन्तर्भावना निस्पादित अछि। कवि स्वयं कहैत छथि—

न वा शाब्दिक रंजना, वा आर्थिकी दृग-अंजना ई
हमर अन्तर्ध्वनिक केवल, कवि ! सहज अभि–व्यंजना ई

ई अन्तर्ध्वनि वैदिक कालहिसँ निनादित होइत रहल अछि। वैदिक ऋषिलोकनि भारतदेशकेँ राष्ट्र, मातृभूमि आदिसँ अभिहित कयल तथा भारत-वासीकेँ तनिक पुत्रक संज्ञा देल गेल। पश्चात् पौराणिक युगमे भारतभूमिक सराहना एहि शब्दमे कयल गेल —'गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु मे भारतभूमि-भागे' एवं मातृभूमिक महत्ता स्वर्गोसँ बढ़िकेँ देल गेल। देश-भक्तिक ई परम्परा सदैवसँ चलैत रहल। एहि प्रसंग बंकिमक 'वंदे मातरम्' एवं रवीन्द्रक 'अयि भुवनमोहिनि' कविता तँ प्रसिद्ध अछिए, एहन कोनो भारतीय भाषा नहि होयत जाहि मध्य देश-प्रेम-प्रगाढ़ शब्द-रचना नहि भेल हो। मैथिलीमे सेहो देश-भक्तिक अनेकानेक भावाभिव्यक्ति नहि भेल हो, से नहि। परन्तु सुमनजीक दुइ कृति 'अनार्नाद' एवं 'भारत-वन्दना'मे जाहि विस्तार ओ विविधताक संग, आत्मानुभूतिक एकान्त तल्लीनतासँ युक्त राष्ट्र-हित तथा राष्ट्र-एकताक जेहन गम्भीर अभिव्यक्ति भेल अछि, तेहन अन्य अनेक समृद्ध भाषहुमे विरल अछि।

'अन्तर्नाद'मे जयघोष, महातथ्य, रण-रस, नव-पुराण: नव इतिहास, पुरुषार्थ-शिक्षा, कला-बोध, योजना, रश्मि–रेखा, पूजन–आयोजन, ज्ञान–विज्ञान, जा रहल छी, विस्पीक डीह, बलिवेदीक विभूति, भूमा निष्ठावन्त, एवं भरतवाक्यम् शीर्षक कविता संगृहीत अछि। जयघोषमे भारतभूमिक चिरन्तन महिमाक सांगोपांग उल्लेखपूर्वक संस्तुति कयल गेल अछि तँ महातथ्यमे वर्तमान दोषपूर्ण परिस्थितिमे कविताक राष्ट्रिय उपयोगिताक अनुरूप संघर्षशील बनबाक सिद्धान्तक समर्थन भेल अछि। रण–रसमे महातथ्यहिक भाव-क्रमकेँ आगाँ बढ़बैत कवि राष्ट्रहित रणक ओजस्वी उद्‌घोष करैत छथि। नव पुराण नव इतिहासमे सुमनजी नवताक स्वस्थ स्वरूपक संकेत दैत छथि। हुनक विचार जे युगानुरूप नवता तँ ग्राह्य अवश्य, किन्तु एकर अन्तरंगमे पवित्रता ओ बहिरंगमे शालीनता अपेक्षित। कला-कविताक निखार तँ हो, किन्तु विकार नहि हो। पुरुषार्थ-शिक्षामे पुरुषार्थकेँ नव अभिप्राय देबाक प्रयास भेल अछि। धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष पुरुषार्थ–रूपमे मान्य, किन्तु जीवनक ई चारू लक्ष्य जाहि अर्थ–साधनसँ प्राप्त होइत अछि, तेकरे कवि असल पुरुषार्थ मानैत छथि। अपन इतिहासक गरिमा जगाइए असल पुरुषार्थक शिक्षा ग्रहण कयल जा सकैत अछि ओ तखने भक्षको रक्षक बनि जायत, विष अमृत बनि जायत।

अभिजात्यवर्गीय सीमाकेँ तोड़ि राष्ट्रिय जन-हित-व्यापी बनबाक सन्देश कलाबोधमे देल गेल अछि तँ योजनामे खेत-पथारक दाही-रौदी मात्र टा एकर उद्देश्य नहि, जन-जनक अन्तस्तलसँ भय ओ लोभ हटायब, मानव-संसाधनक शोध करब तथा अपन हित ताहि प्रकारेँ सम्पादित करब मानल गेल अछि जाहिँ विश्वक हित साधित होइक। रश्मि-रेखामे कवि इतिहासक एहन आलोकमय अभिलेख लिखबाक आकांक्षी छथि जे भारतक विक्रमसँ अभिभूत केओ साम्राज्यवादी आक्रान्ताक प्रवेश एतऽ सम्भव नहि हो तँ पूजन-आयोजनमे अपन मातृभूमिक पूजा-आयोजनक चित्र अंकित कयल अछि जाहिसँ प्रान्तीय विविधता सूत्रबद्ध भऽ राष्ट्रिय ऐक्य ओ ऐश्वर्यक रूपमे प्रतिफलित हो। चिन्तन ज्ञानक ओ प्रयोग विज्ञानक आधार ओ दुहूक समंजस्ये आजुक युगक हेतु आवश्यक, ज्ञान-विज्ञानमे एही तथ्यक निरूपण अनेक रीतिएँ कयल गेल

अछि तँ 'जा रहल छी'मे इतिहास-पुरुषक स्मरणपूर्वक कविताक यात्रा-संकल्पक वर्णन भेल अछि। कविक मन्तव्य अछि जे ई अभियान ताबत धरि चलैत रहत जाबत धरि असत् पर सत्क विजय नहि भऽ जायत।

देश-हित अभियान-क्रममे कवि एहि सन्देशक स्मरण बिस्पीक डीहमे कयने छथि, कारण विद्यापति नवोत्थानक पुरोधा एवं बिस्पी हुनक डीह। महात्मा गांधीक बलिदान-अवसरपर रचित बलिवेदीक विभूतिमे कवि शुभ-कामना व्यक्त करैत छथि जे हुनक बलिदानक प्रेरणासँ राशि-राशि बलिदानी देशक विभूति बनि युग-युग आलोकित करैत रहथु आओर भूमा निष्ठावन्तमे कविक कथ्य अछि जे सृष्टिमे अनन्त कालसँ चलैत सत्-असत्क संघर्षमे सत्क रक्षार्थ निरन्तर भूमा निष्ठावन्त जन्म लैत रहलाह अछि आओर एहन निष्ठावन्तक प्रति कविक अभिनन्दन-वन्दन निवेदित अछि। भरतवाक्यम्मे आधुनिक भारतक निर्मातालोकनिक स्मरणपूर्वक अन्तमे 'भव भवाय विश्वहिताय' भारत-माताक सम्मुख नमन समर्पित कयल गेल अछि।

अन्तर्नादमे संगृहीत कविताසभक ई सब केन्द्रीय भाव थिक। एहिसँ अतिरिक्तो सुमनजी संचारी अनेक उपभावक अभिव्यंजना कयने छथि जे मुख्य भावकेँ पुष्ट करैत एक अद्भुत उद्बोधनात्मक एवं रसात्मक प्रभाव उत्पन्न करैत अछि आओर प्रेरणा दैत अछि राष्ट्रहित संघर्ष करबाक, त्याग करबाक तथा अपन राष्ट्रिय प्रकृतिक रक्षा करबाक। प्रत्येक कविता एक अभिन्न भारतीय आत्माक अन्तस्तलक आवेगात्मक भाव-उद्वेलन मात्र नहि, चिन्तनक गम्भीरताकेँ सेहो अभिव्यंजित करैत अछि।

सुमनजीक राष्ट्रियता नितान्त भारतीय परम्परासँ गृहीत अछि, पाश्चात्य राष्ट्रवादक अवधारणाक अनुरूप नहि ओ तेँ ई राष्ट्रियता सांस्कृतिक अछि, खण्डित ओ भेदमूलक नहि, अखण्डित ओ अभेदमूलक। इएह कारण थिक जे प्रत्येक रचनामे पौराणिक अथवा ऐतिहासिक महापुरुषक कथा अथवा चरित्र-प्रसंगक उल्लेख उपलक्षण अथवा प्रतीकक रूपमे कवि बारंबार करैत छथि, एहन महापुरुषक जाहि सभकेँ ओ भूमा निष्ठावन्त कहैत छथि ओ जनिक युग-युगसँ अखण्ड राष्ट्रिय संस्कृतिक स्थापनामे महान योगदान रहल अछि, जनिक

विस्मरण कऽ हमरालोकनि अपन मूलभूत राष्ट्रिय स्वरूपक रक्षा कइए नहि सकैत छी।

अन्तर्नादक चिन्तन-क्षेत्र बड़ व्यापक अछि एवं राष्ट्रिय हितक कोनो महत्त्वपूर्ण विषय छूटल नहि अछि, एतेक धरि जे सुमनजीक दृष्टि नव-पुरान एव ज्ञान-विज्ञानहु दिसि जाइत अछि। ओ नवताक विरोधी नहि छथि यदि से, हुनकहि शब्दमे, 'अंतरंगक अंग शुचि बहिरंग रुचि रंजन प्रवीना' हो। ओ यदि विरोधी छथि तँ 'नग्नवसना नवीना'क आओर राष्ट्रिय भावनाक शालीनताक हेतु एतबा तँ आवश्यके। एही प्रकारेँ ओ ज्ञान-विज्ञान दूहूक महत्त्व स्वीकार करैत छथि, दुहूकेँ विरोधी नहि, पूरक मानैत छथि जे 'ज्ञान नहि विज्ञान रोधी, भव्य नहि नव्यक विरोधी' तथा 'ज्ञान बिनु विज्ञान पशुता, प्रकृति बिनु चैतन्य जड़ता' आदि उक्तिसँ स्वतः स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

एतय विशेष विस्तारक अवकाश नहि अछि। संक्षेपमे एतबे कहल जा सकैत अछि जे अन्तर्नाद सुमनजीक राष्ट्रिय भावना मात्रक काव्य नहि थिक, गम्भीर राष्ट्रिय चिन्तन-चेतनाक काव्य सेहो थिक, प्रत्युत एहि मध्य भावना एवं चिन्तनाक एहन कलात्मक संयोग भेल अछि जे दुहू मिलि अपूर्व आस्वाद्य प्रस्तुत करैत अछि।

'भारत-वन्दना' सुमनजीक दोसर राष्ट्रभक्तिमूलक लघुकृति थिक जाहि मध्य महत्त्वमयी भारत-माताक अखण्ड-स्वरूपक सजीव चित्र अंकित कयल गेल अछि, अशेष श्रद्धा ओ भक्तिक रससँ ओतप्रोत, कविक अकृत्रिम स्वानुभूतिक तरल प्रवाहक संग। एहि मध्य चिन्तनाक नहि, भावनात्मकताक प्रधानता अछि ओ तेँ हुनक ई रचना अधिक संवेदनशीलता जगबैत अछि, अधिक प्रभावित-अनुप्राणित करैत अछि। सुमनजी सांगोपांग रूपक-योजनाक सिद्धहस्त कलाकारक रूपमे मैथिली काव्य-रचना क्षेत्रमे प्रख्यात छथि आओर हुनक ई कलात्मक चमत्कार बड़ स्वाभाविक रीतिएँ भारत-वन्दनामे प्रतिफलित भेल अछि। सुमनजी भारत-माताक नख-शिखक जे कमनीय चित्र अंकित करैत

छथि, तकर उपमान बनैत अछि अखण्ड देशक प्रान्त-प्रदेश, सागर, नद-नदी; गिरि-उपत्यका, अनेकानेक सांस्कृतिक एवं भाषागत क्षेत्र प्रभृति वस्तु-उपादान एवं एहि प्रकार भारत-माताक केवल ममतामयी-वात्सल्यमयी टा नहि, सौन्दर्य-मयी ओ श्रद्धामयी सेहो एक अद्भुत रूप–प्रतिमा सजीव भऽ उठैत अछि।

भारत-वन्दनामे कुल मिला छप्पय छन्दमे रचित एकैस गोट रचना संगृहीत अछि। एहि एकैस छप्पयक अतिरिक्त दुइटा काव्य-रचना आरम्भमे देल अछि, प्रथम 'अशेष देशश्रद्धास्पदेषु केषुचित् पादेषु'क प्रति समर्पण काव्य-वचन, जाहिमे भारतक प्रसंग कविक उक्ति अछि --

भूपद भुवि व्याहृत स्वभूमि पद महत् जनपदक योग
तप-बल सत्य सनातन भारत-खंड अखंड नियोग

तथा द्वितीय कवितामे कवि भारतकें 'शक्तिमयी, भक्तिमयी एवं भुक्ति-मुक्तिमयी मही' कहि समग्र भारतवासी द्वारा हुनक आरती उतारबाक चर्चा निम्नलिखित शब्दमे करैत छथि—

हिम-निबन्धिनि सेतुबन्धिनि सिन्धुसन्धिनि भारती
आ-हिमाचल-सेतु सन्तति नित उतारथि आरती

अतः एहि दुहू रचनहुक अर्थ-बोध मुख्य भारत-वन्दनामूलक रचनाक रसास्वादनक हेतु आवश्यक।

भारतक-वन्दनाक एकैस गोट छप्पय मध्य आरम्भिक नओ गोट भारत-माताक मूर्त्तीकरण ओ सजीवीकरणसँ सम्बन्धित अछि, तदनन्तर सात गोट हुनक आश्रमक, बाड़ी-झारी, पौना-पसारी प्रभृतिक तथा अन्तिम पाँच गोट हुनक अविजेय शौर्य-गरिमासँ संबद्ध रचित भेल अछि। ई सब रूपांकन आयोजन कविक अद्भुत कल्पनात्मक संयोजनक माध्यमसँ सम्पादित भेल अछि तथा जकर माध्यमसँ देश भरिक प्रान्त-उपप्रान्त, अनेक प्रकारक प्राकृतिक उपादान, भाषा-वेशभूषा-आचार-विचार-भौगोलिक भेद प्रभृति सब किछु ऐक्यक सूत्रमे गुम्फित भऽ सम्पूर्ण ओ अखण्ड भारत-जननीक स्वरूपकें अंकित करैत अछि।

एहि विषयक विस्तारसँ एतय विवेचनाक अवकाश नहि। तथापि निम्नलिखित पंक्ति देखल जाय—

अलक झलक जनिकर हिमवत वन सघन श्यामला
वदन कमल रुचि रुचिर मानसी आभा अमला
कस्तूरी नेपाल भाल, केसरि कश्मीरी
सिन्दूरी सीमान्त पूर्व दिग् रविक अबीरी

एहिना जूड़ा नेफा-लद्दाखी बनि गेल, बेणीबन्धक छोर तिब्बती सीमा बनि गेल, कुटिल अलक पेसावर-देसावर धरि पसरि गेल, कुटिल भृकुटि कोशी-तट बनि गेल, कान कान्यकुब्ज, अधर ब्रज-अवध तथा चिबुक शुचि रुचि उज्जयिनिक बिन्दु-रेखा बनि गेल ओ एहीं प्रकारेँ समग्र देशक प्रान्त ओ तकर विशेषता भारत-जननीक अंग-प्रत्यंग तथा तनिक रूप लावण्यक कारक बनि एकरूप भऽ गेल। एहिना गढ़वाल गढ़, पानीपत-कुरुक्षेत्र खेत, खरिहान हरिआना, तेली आसामी, पनिभर चेरीपुंज, धोबि हिमालय, रंगरेज शिलांग, निर्झर भंगी प्रभृति बनि गेल तथा भारतमाताक आश्रमादि सब उपायन प्रस्तुत भऽ गेल। सबटा मूर्त्त भऽ उठल, सबटा सजीव साकार भऽ उठल। प्रत्येक रचनामे भारत-जननीक प्रति कवि असीम श्रद्धा ओ भक्तिक आवेगात्मक प्रवाह अभिव्यक्त होइत अछि, परम्परित अखण्ड भारतीय राष्ट्रियताक सबल समर्थन होइत अछि तथा संग-संग उच्च कोटिक कवित्वक स्वाभाविक व्यंजना सेहो होइत अछि, सबटा सुसन्तुलित, सुसंयोजित एवं सुसंगठित ओ ताहिमे कतहु आयासजन्य कृत्रिमता नहि, सबटा स्वाभाविक, सावेग ओ सहज। एतहि सुमनजीक अलौकिक कवित्व-प्रतिभाक भूरि-भूरि प्रशंसा करय पड़ैत अछि।

आब अन्तमे'अन्तर्नाद' ओ 'भारत-वन्दना'मे प्रयुक्त सुमनजीक वाग्धाराक प्रसंग। 'अन्तर्नाद'क भूमिकामे कविक उक्ति अछि जे ई रचना सब हुनक 'शाब्दिक रंजना' अथवा 'आर्थिकी दृग-अजना' नहि थिक, प्रत्युत हुनक 'अन्तर्ध्वनिक सहज अभि-व्यंजना' थिक। हुनक 'अन्तर्ध्वनि'क, अन्तरंग राष्ट्रिय भावनाक हुनक एहि दुहू कृतिमे निस्सन्देह स्वाभाविक अभिव्यंजना भेल अछि। किन्तु से भेल अछि हुनक विशिष्ट व्यक्तिगत वाग्धारामे, जे हुनक कलात्मक व्यक्तित्वक अभिन्न अंग थिक, जाहिसँ सुमनजी बँचि नहि सकैत छथि। तेँ दुहू कृतिमे यत्किंचित इतिवृत्तात्मकताक आभास तँ होइत अछि, किन्तु 'शब्दिक

रंजना'क संग-संग अर्थ-वक्रता सेहो सर्वत्र निबद्ध अछि। सुमनजीक गद्य-रचना हो वा पद्य-रचना, शब्द-शब्दमे यमक-अनुप्रास प्रभृति शब्दालंकार एवं पद-पदमे रूपक-विशेषोक्ति प्रभृति अर्थालंकार, सायास नहि, सहज रूपें, संयोजित होइतहिँ रहत, वाक्य-वाक्यमे भावानुरूप ललित, मधुर ओ ओजगुणक समा-योजन होयबे करत तथा कोनो छन्दक प्रयोग हो, कविक भावावेगसँ मेल खाइत अप्रतिहत प्रवाहक नियोजन होयबे करत। इएह सुमनजीक विशिष्ट शैली थिक। यदि से नहि भेल तँ सुमनजीक रचना नहि भेल आओर ई कलात्मक वाग्धारा अन्तर्नाद ओ भारत-वन्दनामे सेहो न्यून नहि अछि।

अन्तर्नाद ओ भारत-वन्दना दुहूमे सुमनजी भारतीय राष्ट्रियताकेँ एहन सबल एवं स्थायी संवेदनात्मकता प्रदान कयने छथि, एकर सहयोगी अनेक प्रकारक उपादान-उपकरणक एतेक संचारित्व जुटओने छथि तथा चिन्तन ओ भावात्मक धरातल पर एकरा एतेक उद्दीप्त कयने छथि जे राष्ट्रिय भावना ओ चिन्तनाक ई दुहू कृति रसक आस्वाद्य प्रस्तुत करैत अछि आओर एहि प्रकार ओ सिद्ध कऽ देल अछि जे 'मातृभूमिक प्रति, संस्कृति-सभ्यताक प्रति, चिरन्तन श्रद्धा-साधनाक प्रति मानवक गौरवोल्लास सहज रीतिएँ प्राण-प्रीतिएँ उद्वेलित-उद्बोधित होइत अछि।

अंकावली

डॉ० श्रीपरमानन्दमिश्र

जाहि दिन स्वयं 'सुरेन्द्र' मानव-कल्प मृदुल काया धारण कऽ माँ मिथिलाक पावन अंकमे शोभन सौरभ सम्पन्न 'सुमन' रूपमे अवतरित भेलाह ओहि दिन ममतामयी माताक अंक स्नेह-स्निग्ध भऽ धन्यधन्यताक दिव्यानुभूति कऽ उल्लसित भऽ उठल। मातृहृदयकेँ अपन स्निग्ध सौरभसँ हुलसित करयवला सुमनक सुगन्धसँ समस्त मैथिली काव्य-कान्तार महमहा उठल।

सुमन जेहने नाम तेहने रूप—आ तेहने सुगन्धक महमही आ परागक गहगही। एहन बेजोड़ सुमन मैथिली-काव्य-काननमे दोसर प्रस्फुटित नहि भय सकल।

एहि कमलक एक-एक दल अपन सौन्दर्य आ सुगन्धसँ साहित्य-सागरकेँ दलमला रहल अछि।

अंकावली अछि सुमनजीक आंकिक मेधा आ सांख्यिकी परिज्ञानक प्रौढ़तम प्रतीक। काव्य आ गणित अछि परस्पर विरोधी तत्त्व। विज्ञान आ व्यवसाय, बैंक आ नियोजनालय वा कार्यालयक छुच्छ वस्तुनिष्ठ शुष्क गणनाक विषयकेँ सरस काव्यक विषय बना देब साधारण प्रतिभासँ असम्भव। किन्तु एहि असम्भवकेँ सम्भव बना देबाक सामर्थ्य धारण करयवला कवि आइ 'कवीनां गणना प्रसंगे' 'कनिष्ठिकाधिष्ठित' भऽ गेल छथि।

सुमनजीक अंकावलीमे विज्ञान-विनियुक्त विवेचनशील विवेक सरस काव्य-प्रवाहमे रूपान्तरित भऽ दर्शन अध्यात्मशास्त्र वेदवेदाङ्गादिक तत्त्वज्ञानमे तल्लीन भऽ 'सा विद्या या विमुक्तये'क ओहि सीमा धरि पहुँचि गेल अछि जाहि विषयमे हिन्दीक ख्यातनामा कवि जयशंकर प्रसाद कहने छथि—'जिसके आगे राह नहीं।'

अंकावलीक पद्यावतरणमे कविक अध्यात्म साधना मुकुलित मूलाधारसँ

स्फुरित भऽ सहस्रदल कमल पर पहुँचि अपन गति स्थिर कऽ बिन्दु-बिन्दु बरसैत पीयूष-रस पानसँ प्रमुदित भऽ रहल अछि। आद्या आ द्वितीया केर तादात्म्य सम्बन्धक संग व्यष्टिमे सृष्टिक पूर्णताक परिज्ञानमे जतऽ विन्दु-सिन्धु-सम्वन्ध सदृश द्वैताद्वैतक स्वर अंकित भऽ उठैछ ततऽ ज्ञान अपन गन्तव्य ताकि लैत छैक। अंकावलीक सांख्यिकी विवेचनमे सुमनजीक प्रज्ञा विन्दु-सिन्धु सम्बन्धक परिज्ञान प्राप्त करैत व्यष्टिमे समष्टिये धरि नहि परञ्च ब्रह्मोष्ठि पर्यन्तक साक्षात्कार कयल अछि। एहि प्रकारक सुरनरमुनिदुर्लभ पूर्णताक उपलब्धि सुमनजीक कठिन अध्यात्म साधना ओ बड़ पैघ सारस्वत अनुष्ठानक प्रतिफल थिक।

एकसँ लऽ कऽ नौ धरि अंक नवे टा होइत अछि। अंकगणितशास्त्रमे ई नौ टा अंक मूलांक कहल गेल अछि। शून्य तँ आकाश तत्त्व थिक। अंक विद्यामे शून्यक अपन स्वतंत्र कोनो अस्तित्व नहि छैक। शून्य कोनो अंकक दहिना कातमे अवस्थित भऽ गेला उत्तर ओहि अंकक महत्त्वमे दस गुणा वृद्धि कऽ दैत छैक। बिहारीलाल कहैत छथि—

कहत सबै बेंदी दिए, अंक दश गुणो होत
तिय लिलार बेंदी दिए, अगणित होत उदोत

शून्यक महत्त्व अंकक सहवासक अपेक्षा कोनो रूपवती रमणीक सहवास प्रप्त कय असंख्य गुणा अभिवर्धित भय जाइत अछि।

आइ सुमनजी सदृश विज्ञानी व्यक्तित्वकेँ पाबि अंकविद्याक महत्त्वमे असंख्य गुण वृद्धि भऽ गेल अछि। ससीम अंकमे असीम ब्रह्मक साक्षात्कार बड़ पैघ साधना-सामर्थ्यक विषय थिक। चेतनापूर्ण मानवमे एहि प्रकारक सामर्थ्य छैक जे ओ नरक अंकावलीमे नारायणक साक्षात् दर्शन कऽ सकैत अछि। मानव-चेतना स्वर्ग आ अपवर्गक विधान कऽ सकैछ। आइ मानव अन्तरिक्षक विशालतामे नुकायल ओकर सम्पूर्ण रहस्यकेँ ज्ञात कऽ लेबा लेल उद्यत अछि। चन्द्रमापर अपन विजय-ध्वज फहरबैत मानवक विजय अभियान द्रुत गतिसँ आगाँ बढ़ि रहल छैक। युगक रहस्यक ग्रन्थि सोझरयबाक लेल विज्ञान तत्पर अछि। लोक परलोक दिस मानवक गति सुलभ भऽ रहल अछि। तखन एहिमे

अनेकक परिकल्पना तँ कोनो नवीन नहि। अपन धर्मग्रन्थमे पहिनहिँ परब्रह्म परमेश्वरक उद्घोषणा भऽ चुकल अछि—'एकोऽहं बहुस्याम'। परमेश्वरक ओहि उद्घोषणाक प्रत्यक्षीकरणक कविक ई प्रयास स्तुत्य अछि।

अंकावलीक कवि लीलामयी विश्वात्मिका छविक अंकन तथा ओकर संकलनमे संलग्न छथि। कालक कोनो सीमा नहि, आ ने दिशा कतहु खीमा गाड़िकऽ अपन परिसमाप्तिक संकेत दैत अछि। किन्तु कविक कल्पना शाश्वत थिक। एहि अनन्त विश्वछविक अकनक प्रयास तथा ताहि विषयक ओकर दार्शनिक चिन्तन सेहो नित्ये थिक। देखय जाय—

काल सीमा, दिशा खीमा अछि अनन्त, न अन्तना ई
कल्पना कवि नित्य, अंकन नित्य, नियमित चिन्तना ई

अंकावलीमे काल-सीमा विहीन विराट् सृष्टिक दृश्यादृश्य छविक अंकनमे सन्नद्ध कविक कल्पना ज्ञान-विज्ञानक परिधिसँ ऊपर उठि गेल अछि।

अंकावलीमे एकसँ लऽ नौ धरि प्रत्येक अकक वैशिष्ट्य सुललित काव्य-रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। सांख्यिकी नियमानुसार एकपर शून्य धऽ ओकरा दस बनाओल जाइत अछि। यैह नियम प्रत्येक अंकक संग लागू अछि। शून्यकेँ आगाँमे रखलाउत्तर प्रत्येक अंकक महत्त्व दशगुणित भऽ जाइत अछि। मूलांकमे सबसँ अन्तमे आबऽबला नवम अंक संख्यात्मकता तथा महत्ताक दृष्टिएँ सबसँ पैघ अछि। पहाड़ामे आठक पहाड़ा पढ़ू तँ देखबैक जे ओ क्रमशः घटल जाइत अछि किन्तु नौक पहाड़ामे नौ अपन अस्तित्व सुरक्षित रखने रहैत अछि। नौ मूलांक ओहिमे आद्यन्त रहिते छैक।

अंकावलीमे एकमेव, द्वितीया, त्रयी, चतुष्टयी, पञ्चदेवता, षड्वर्ग, सप्तैतेचिरजीविनः, अष्टमूर्ति, नवग्रह तथा दशावतार दसटा शीर्षक अछि। एहि तरहेँ एहि पुस्तकमे मूलांकसँ लऽ शून्यक महत्त्व ज्ञात करयबाक उद्देश्यसँ दसक वर्णन सेहो कयल गेल अछि। ई एकटा विशिष्ट प्रयास अछि – 'अधिकन्तु न दोषाय'।

प्रथम शीर्षक 'एकमेव'मे एकेश्वरवादक सिद्धान्त निरूपित अछि। जहिना अनन्त पंथ रहितो गन्तव्यधाम एकेटा होइत अछि तहिना अनेक मतक रहितहुँ

भगवान एके टा छथि—

पंथ अछि अनन्त गन्तव्य धाम एक
विविध मतहु रहितहुँ मन्तव्य नाम एक

अनेक प्रकारक राग एकहि कंठसँ ध्वनित होइत अछि, तहिना कोटि-कोटि जीव एक ब्रह्मे भ्रमण करैत रहैत अछि।

ध्वनित रणित राग-रंग कंठ एकमे
जीव कोटि-कोटि भ्रमे ब्रह्म एकमे

द्वितीयामे द्वैताद्वैत सिद्धान्त समर्पित अछि—

भूमि बीज बिनु नहि तृन तरु
बिनु जनक-जननि नहि जन्य
मान्य न द्वैत विशेषण यदि
अद्वैत विशेष्य अमन्य

त्रयीमे तीन संख्यात्मक त्रिकाल, त्रिमूर्ति, त्रिगुन, त्रिज्ञान (प्रत्यक्ष, स्वच्छ, अनुमान) त्रिलोक आदिक महत्ता विवेचित अछि—

प्रकृतिक पुरुष पुरुषोत्तम
भगवद्वाणी त्रित्व विधान
सत रज तम गुण कर्म, अकर्म
विकर्मक क्रमिक प्रमान

चतुष्टयीमे चतुःसंख्यात्मक चतुर्युग, चतुर्वेद, चतुर्धाम, चतुराश्रम, आदिक महिमा आख्यायित अछि। पाँच संख्याक विवेचन-क्रममे पंचदेवता, पंचकन्या, पंचवाण तथा पंचतत्त्वक वर्णन कयल गेल अछि। षड्वर्गक संग षडङ्ग, षट्-कर्म, षडानन, षड्ऋतु, षट् आहुति स्वर, षड्रस तथा षट्चक्र कमल चर्चित अछि।

सप्तम संख्याक महत्ता-प्रदर्शनक्रममे विवृत विषय अछि—'सप्तैतेचिर-जीविनः, सप्तपुरी, सप्तपदी, सप्तसिन्धु तथा सप्तक। अष्टम संख्याक महत्ताक प्रतिपादन-क्रममे अष्टमूर्ति, अष्टाङ्ग प्रणाम, अष्टसिद्धि, अष्टाङ्ग योग तथा अष्टक चर्चित अछि। नवग्रह, नवदुर्गा, नवधा भक्ति तथा नवाङ्कक चर्चा-

क्रमे नवांकक महत्ता उपस्थापित कयल गेल अछि। दशक महत्त्व प्रदर्शित करैत दशावतार तथा दशमहाविद्याक वर्णन विन्यस्त अछि।

विज्ञान-सम्मत तार्किक कल्पना-शक्तिक विकास, बुद्धि-विन्यास, ज्ञान-गाम्भीर्य, अन्वेषण-अनुसंधानक संग प्राचीन तथा अर्वाचीनक अपूर्व समन्वय अंकावलीक अपूर्व वैशिष्ट्य अछि। संख्याशास्त्रमे धर्म आ दर्शनक समावेश कऽ गागरमे सागर भरल गेल अछि।

उर्ध्वगामी, स्फुरित भावसिद्ध विशाल कल्पना-शक्ति-सम्पन्न सुमनजीक कोमलकांत पद-विन्यास सारल्य एवं तारल्यादिसँ विनिविष्ट अछि। अर्थ-गाम्भीर्यपूर्ण क्वचित् कुत्रचित् क्लिष्ट पदप्रयोग हिनक गम्भीर मनीषा एवं गहन अध्ययनशीलताक प्रमाण अछि। वैविध्यपूर्ण अर्थच्छविक नव्यानुसंधान निरत सुमनजीक सिद्ध-सारस्वत साधना विद्यापतिक महत्ताकेँ सुस्पर्शी एवं सुष्ठुस्पर्धी प्रतीत होइत अछि।

कोमल कमनीय भाव-सिद्ध कविताक संग लालित्यपूर्ण गद्यसाहित्यक विधाता तथा सफल पत्रकारक गरिमा सम्पन्न सुमनजीक काव्य-व्यक्तित्व त्रिगुणीभूत अछि। ई काव्य-प्रणेता मात्र नहि, कवि-निर्माता सेहो छथि। ई 'कवीनां कविः' 'गुरुणां गुरुः' छथि।

अतीत आ वर्त्तमान, विज्ञान आ साहित्य, कल्पना आ गणित, दर्शन आ वेदवेदाङ्गादिक विशाल क्षेत्रकेँ अपन विराट् व्यक्तित्वमे आयत्तीकृत कयने सुमन-जीक महती महीयान व्यक्तित्व काव्यक्षेत्रक प्रजापतित्वक पूजनीय स्थान ग्रहण कऽ भूरिशः वन्दनीय अछि।

अन्योक्तिका

डॉ० श्रीश्रुतिधरझा

विद्यापतिकेर वाटिका 'चन्द'हुकें चमकैत
छुछ्छ; की रहि जाइत ने यदि न 'सुमन' गमकैत ?

भक्ति-भावनाक अभिव्यक्तिक प्रमुख साधक होइछ सुमनाञ्जलि समर्पण, किन्तु जतय 'सुमने' हो समाराध्य ओतय ओहिसँ प्रकृष्टतर पूजनसामग्रीक उपलब्धिक बाध्यताक कारणें आराधक सबाध भऽ जाइछ। भावक भूमि नहि, कल्पनाक काया नहि, कवित्वक कमनीयता नहि, वर्णनक विलास नहि—एहि क्षीण पूजीपाटीक लोक कोना कऽ साहस जुटाबओ काव्याचार्य आचार्यप्रवर 'सुरेन्द्र'क कविताऽऽरण वीथीक दुस्सह सञ्चारक ? ओ तँ बुझू गोवर्द्धनाचार्यक ई कमनीय सङ्केतोक्ति जे सत्कविक रचनारूपी सूपसँ फटकल तुषविहीन शब्दरूप सुमधुर तण्डुलसँ पकाओल खीरसँ तृप्त जन दयिताधरहुक प्रति साभिलाष नहि होइत छथि, सुधा-दासीक तँ बाते की ? ..

अध्ययनकालमे आचार्यवर सुमनजीक जाहि कल्पनाशक्तिक साक्षात्कार भेल छल से गङ्गास्तुतिक एहि उक्तिक संस्काररूपमे अद्यावधि मानस-पटलपर विराजमान अछि—

शिव की सकितथि विष पचाय यदि लितथि न माथे
जैतथि सिन्धु सुखाय वाडवानलहिक हाथे
की न ठिठुरि हिमवान मरणशय्यागत रहितथि
यदि न अमरधुनि अहँक अमृत-रस भाग्यें पवितथि ?

आचार्य सुमनजी रससिद्ध कवि छथि। ई हिनक शत-सीमारोहिणी रचनालतिकाक प्रतानसँ नीक जकाँ भान होइछ। कवित्वक सङ्ग पाण्डित्यक संयोग मणि-काञ्चन योग होइछ। ई सुलभ नहि, अति विरल। किन्तु, प्रकृत कवि एहू निकषपर पूर्णतः उत्तीर्ण छथि। पतञ्जलि कहैत छथि—"लक्ष्य

लक्षणे व्याकरणम्' तहिना साहित्य-वाङ्मयकेर पूर्णतो तँ लक्ष्यभूत काव्य एवं ओकर विद्याविशेष सहितक लक्षणक समष्टियेपर आश्रित मानल जाय। किन्तु, नैसर्गिक रुचि-भेदादि प्रयुक्त लक्ष्यकारकविक लक्षणकारो होयब असम्भव नहि तँ विरल अवश्ये। संयोगवश अन्योक्तिकाकारक अन्योक्ति शैलीक अन्योक्तिलक्षण एहि विरलताकेँ प्रमाणित करैछ—"किन्तु एहि तीनू शैलीक (स्वभावोक्ति, वक्रोक्ति एवं व्यंग्योक्तिक) दोग सँ एक एहनो उक्ति शैली निर्गत होइछ जे तीनू कोटिक स्पर्श रखितहुँ,सभसँ पृथक् असम्पृक्त भासित होइछ····· एहिमे प्रस्तुते अप्रस्तुत आ अप्रस्तुते प्रस्तुत बनि जाइछ।" अन्योक्तिकाक ई परोक्षभाव जे एकरा छविमय आस्वाद्य एवं लोभनीय बनबैछ, ताहि विषयमे रचनाकारक सङ्गहि समस्त सहृदय पाठकवृन्द असन्दिग्ध भावें ऐकमत्य होयत।

काव्य प्रयोजनक सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे ई धर्मादिपुरुषार्थलाभक सङ्गहि कलामे विचक्षणताजनक तथा कीर्ति एवं प्रीति करैछ। अन्योक्तिका एहि उद्देश्यमे समासवृत्त्या सफल अछि। एक छवि देखल जाय—

तजि प्राची रक्ता प्रथम प्रिया प्रभाती अङ्ग
रविव्यसनी अन्तिम वयस प्रतीचीक व्यासङ्ग

ई बानगी धर्म विरुद्ध कामक हेयताक हेतु सशक्त सङ्केत दऽ श्रेयस्साधक होयबाक कारणे कीर्तिकर तथा समासोक्ति रूपकादि अलङ्कारक ध्वनि-मिश्र प्रयोग जन्य कतेक प्रीतिकर भेल अछि से सहृदय पाठककसँ परोक्ष नहि।

"एकोहिदोषो गुण सन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः (चन्द्रमाक) शैत्यादि गुणसमूहमे एकटा दाग-दोष झँपा जाइछ। चन्द्रमाक एहि सुप्रसिद्ध कालिदासीय चित्रसँ किछु विचित्रे भासय सौमनस चन्द्रचित्र जाहिमे एक परिहार्य दोषक मध्य झँपा जाइछ समस्त गुणसन्तान। देखल जाय से शब्दक वितान—

रत्नाकर कुलमे जनम शिवशिर विदित निवास
शुचि रुचि तारापति यदपि हत! कलङ्क उपहास

सुधीजन जनैत छथि जे साहित्यक लक्ष्य होइछ सत्य, शिव आ सुन्दर समष्टि। ई कहबाले' तँ तीन, मुदा अछि नहि एक दोसरासँ भिन्न।

तात्पर्य ई जे कोनो एकके पकड़ू तँ दोसरो स्वयं ओहि सङ्ग आवियै जायत। अतएव श्रेष्ठ कविजन शिवत्वक भावके मूर्द्धन्य बनाइयेकऽ रचनामे प्रवृत्त होइत छथि। नीतिकार कहैत छथि—"अयशः प्राप्यते येन सत्सु चापगतिर्भवेत् स्वर्गात् च भ्रश्यते येन तत् कर्म न समाचरेत्।" प्रकृत अन्योक्तिकाकारक उक्त चन्द्रचित्रमे अभिव्यक्त ई उपहास-भय शिवत्वमूलके अछि।

जलनिधि व्यर्थे नाम थिक रत्नाकर पद फूसि
प्यासल कण्ठ न देल जल-विन्दु लव न धन हूसि

आ

झील झलक झरना ललक सागर सगर हहाय
पथिक पात्रगुन लहि लघुहु कूपहि प्यास बुझाय

एवं एतत्सदृश कतेको कवितामे देववाणीक छाया-सम्भिन्नता भने भेटओ, अथापि छायाक तलीय वङ्किमाविशेष ओकर नूतनता एवं स्पृहणीयतामे बाधक नहि बनि सकत।

निस्सन्देह अन्योक्तिका प्रकृतिजगतक विविध विषयक ललित एवं सूक्ष्म शिक्षाप्रद चित्र-दलसँ सज्जित सौवर्णी मनोहारिणी नलिनीक रूपमे भासित भेल अछि। छोट-छीन संग्रहमे एतेक विविधताक चयन अदृष्टपूर्व। दूभि, कोल्हुक वड़द, कपास आदि विषयक चयन एकरा प्रमाणित करैछ तथा चित्रण नितान्त मौलिकतामण्डित भेल अछि—

नगन-आवरन स्वच्छ शुभ अन्तर विशद अतूल
सूत पूत गुनमय तदपि मान रहित लघु तूल

सहृदय सुधीक निकष-दृष्टि एहि कपासकेँ अवश्ये पास करत।

सोद्देश्य कवितामे आस्थावान आचार्यक विचार हमरा अश्वघोषक एहि उक्तिसँ प्रतिविम्बित बुझाइछ जे—"यत् मोक्षात् कृतम् अन्यत् अत्रहि मया तत् काव्यधर्माद् कृतं पातुं तिक्तम् इव औषधं मधुयुत हृद्यं कथं स्यत् इति।" 'नदी' 'पलङ्ग' आदि कवितासे एकर स्पष्ट भास होइछ। अनुचित चञ्चलताक प्रति व्यङ्ग्य नदी शीर्षक कवितामे अत्यन्त मुखरित भेल अछि—

गिरि गौरव नहि गुनल किछु समतल नहि समभाव
चंचल गति सरिताक मति क्षार वारि धरि धाव

आब बेरी नहि नमारि, हम करब ई गोहारि जे हमरासभ ली ई अवधारि जे 'पलङ्ग' केर 'यति' भावक द्रष्टा कवि "नानृषिः कविः इति उक्तम् ऋषिश्च कल दर्शनात्"— भट्टतौतक एहि मतकेँ यथार्थताक सफल आयाम देबयवाला छथि। कवित्वक हेतु अपेक्षित एहि 'अपूर्व-दर्शन'क आलोकसँ हम यज्ञान्त अभिषेकके पसिन्न करब—

फूल सेज सजि वसन शुचि सटलि कामिनी अङ्ग
दोलित तन डोलल न मन सरिपहुँ यती पलङ्ग

कथायूथिका

डॉ० श्रीदेवेन्द्रझा

जीवन भरि साधना ध्येय हो यदि उन्नतिक प्रतीक्षा
हे महोपदेशक ! अपनहिसँ लेब जीवनक दीक्षा

ई पाँती आचार्य सुमनजी 'प्रतिपदा'मे 'तरु'क विषयमे कहबाक हेतु जे कहथु, मुदा ई अक्षरशः हुनके लेल सत्य प्रतीत होइत अछि। हिनका सन महोपदेशक के ? जीवन-दर्शनक एहन सूक्ष्म व्याख्या कतऽ ? सुमनमे यथार्थतः सुरभि आ सौन्दर्य दुनू तेहने आह्लादकारी एवं समाकर्षक अछि। हिनक काव्य-काननमे जाहि-जाहि प्रकारक रंग-विरंगक पुष्पक प्रस्फुटन भेल अछि ओकर मनोहारी रूप आ गुण जाहि रूपेँ दिगदिगन्तकेँ आकृष्ट एवं विमुग्ध कयलक अछि ओ निश्चये ककरो लेल गौरवक विषय भऽ सकैत अछि। हँ, ई बात अवश्य जे हिनक काव्यमे गगनक व्यापकता, पयोनिधिक गंभीरता, हिमालयक उच्चता एवं धरित्रीक सहज संवेदनशीलता एहि रूपेँ परिव्याप्त अछि जकर मूल्यांकन-समीक्षा करबाक हेतु जीवन भरिक साधना सेहो पर्याप्त नहि होयत।

आचार्य सुमनजीक 'कथायूथिका'मे सरल सरस सुबोधगम्य भाषामे विलक्षण भावक उपस्थापन वस्तुतः गागरमे सागर भरबाक प्रयास थिक। विविध प्रकारक धार्मिक, पौराणिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक कथाक एतेक सुन्दर विन्यास एहिमे भेल अछि जे अत्यन्त हृदयग्राही एवं मर्मस्पर्शी तँ अछिए संगहि जीवन-यात्राक हेतु पाथेयक रूपमे अत्यन्त उपयोगी भेल अछि।

पोथीक भूमिकामे कवि कहैत छथि—

जाही-जूही कथा-यूथिका गाथा याथातथ्य
कतहु पढ़ल वा पड़ल कानमे किदहु लिखल वा कथ्य

एकर कथावस्तुक स्रोत एहिसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि। कथाक क्रममे

एहिमे सोरह गोट कथाक संकलन अछि। प्रत्येक कथा उपर्युपरि अछि।

प्रथम कथा अछि 'विश्वामित्रक दीक्षा' जाहिमे महर्षि वशिष्ठक चारित्रिक उत्कर्ष ककरो लेल अनुकरणीय भऽ सकैछ। विश्वामित्रक प्रबल इच्छा जे ब्रह्मर्षिक पदसँ सुशोभित होइ, मुदा वीर, धीर, तेजस्वी, दृढ़संकल्पी, शूर होइतहुँ अहंकारक कारणेँ असफल भऽ जाइत छथि। ओ

सोचथि हमर मानमर्दनमे बूढ़ वसिष्ठ वरिष्ठ
आइ अन्त कय देव, खड्ग लय द्रुतपद चलल बलिष्ठ

मुदा जखन "गमल महर्षिक हृदय रागद्वेषक न जतय छल लेश" तखन "फेकि खड्ग ब्रह्मर्षि चरणपर खसला विश्वामित्र" आ तुरत "लगा हृदय मुनि कहल उठू अहँ हे ! ब्रह्मर्षि पवित्र" यथार्थतः

अहंकारकेँ छोड़ि देल जखनहि अहँ धीर महान
अधिकारी अहँ ब्रह्मक ज्ञानक ब्राह्मण भेलहुँ निदान।

दोसर कथा अछि 'राज-धर्म' जे विशेष रूपेँ आधुनिक युगक हेतु अत्यन्त उपयुक्त प्रतीत होइत अछि। राजा केहन होयबाक चाही, हुनक की धर्म होइत छनि, प्रजाक हेतु कोना अपन सुखकेँ उत्सर्ग करबाक चाही आदि-आदि विषयक विलक्षण दृष्टान्त एहिमे देल गेल अछि। राजाक उद्घोष अछि—

सभ लोकक रक्षाक भार अछि माथ
प्राण अछैत न जाय देब ककरहु हम एना अनाथ

तेसर कथा अछि 'बोधक पात्र' जाहिमे ई देखाओल गेल अछि जे बोध ग्रहण करबाक हेतु पात्रक उपयुक्तता अनिवार्य छैक। भूखल लोक की शिक्षा लेत ? चारिम कथा 'वास्तविक मित्र'मे यथार्थ मित्रक परिचय देल गेल अछि। जे विपत्तिमे काज आबय सैह असली मित्र थिक। भेँट भेलापर ऊपरसँ तँ बेश स्वागत-सत्कार करैछ मुदा अवसर अयलापर सुटकि जाय तँ ओ मित्र नहि थिक। अन्तमे प्रमाणित कऽ देल अछि जे—

के वास्तव मित्र के अछि व्यवहारी
न केवल आचरण बाहरी हो अन्तर अधिकारी

पाँचम कथा अछि 'स्वर्ण थारक उपहार' जाहिमे यथार्थ शिवभक्तक परिचय

कराओल गेल अछि। 'बड़ बड़ तापस, वैरागी, मुंडी, जटी विशेष'क स्तुतिसँ थार नहि घुसकैत अछि, मुदा एक साधारण गृहस्थ जे पगु कोढ़िक सेवाकेँ अधिक महत्त्व देलक अछि, ओकरा मंदिरमे प्रवेश करितहिँ सोनाक थार अप-नहि ओकर हाथ दिस ससरि जाइत छैक। पीड़ितक सेवा यथार्थ पूजा थिक आ एहने सेवक यथार्थ भक्त होइछ। छठम कथा अछि 'भीखक बाती' जाहिमे संत समर्थ रामदासक हृदयक उदारताक वर्णन भेल अछि जे तमसाहि गृहस्वामी द्वारा फेकल गेल हाथक गोबड़ौरकेँ सेहो सहर्ष स्वीकार कऽ भगवानसँ प्रार्थना करैत छथि—

हे हरि जकर देल थिक बाती आरतीक हित आइ
अन्धकारमय तकर हृदयगृह आलोकेँ भरि जाइ

सातम कथा अछि 'पण्डित ओ गोआरि' जाहिमे महानैष्ठिक पण्डित जे सभ शास्त्र-पुराणक अध्ययन कयने छथि, जपतपमे नित निरत रहैत छथि, दिन भरि भगवानक पूजा करैत छथि, गोदुग्धक आहार करैत छथि, व्रत-नियमक पालन करैत छथि, मुदा नदी पार नहि कऽ पबैत छथि, परन्तु एक अशिक्षिता गोआरि सरसरायल हरिक नाममे अटूट विश्वास राखि नदी पार कऽ लैत अछि। यथार्थे हृदयक निर्मलता, मोनक पवित्रता वाह्य आडम्बरी पूजा-पाठसँ अधिक फलप्रद होइछ। आठम कथा अछि 'सबहिँ बलेल'। एहिमे ई दर्शित कयल गेल अछि जे पूर्ण क्यो नहि अछि, सभक आवश्यकता सभकेँ बेर कालमे पड़िये जाइत छैक। कतबो क्यो गुणी वैज्ञानिक किएक नहि रहथु, मुदा यदि ओ पानिमे हेलऽ नहि जनैत छथि तँ पानि भँवरमे हुनका नाविकक आवश्यकता पड़िये जाइत छनि। ओहि अवसरमे दिमागी गुन कर्पूर बनि उड़ि जाइत छैक। तेँ ककरो उपेक्षा किंवा अनादरक दृष्टिसँ देखबाक कोनो औचित्य नहि छैक। नवम कथा अछि 'भाग्यवादी'। एहिमे भाग्य आ कर्त्तव्यमे कें पैघ होइछ तकर सूक्ष्म व्याख्या कयल गेल अछि। भाग्यो तखने संग दैत छैक जखन कर्त्तव्य कयल जाइत अछि। साधनाक रसमे सिद्धिक सरोज फुलाइत छैक। लगमे अन्नक पोटरी राखल अछि तेँ की ? यदि हाथ पैर नहि डोलाओल जाय तँ ओकर भोग असंभव अछि, कारण 'उद्यमेनहि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः" सर्वथा

सत्य थिक । दशम कथा अछि 'अहंकार'। एहिमे ई दर्शाओल गेल अछि जे ककरो अहंकार नहि करबाक चाही जे हमही सब किछु छी। कागज, कलम, मोसि, हाथ आ मस्तिष्क सभक समान स्थान छैक, सभक सहयोक प्राप्त भेलाक बादे लिखबाक कार्य पूर्ण भऽ सकैछ। साइकिलमे जतबे महत्त्व छैक कोनो दामी टायर-ट्यूब आ सीटक ओतबे महत्त्व छैक पाँच पाइक भोल्टयूबक। एगारहम कथा अछि–'पंचतत्त्व' जाहिमे ई सिद्ध कयल गेल अछि जे पाँचो तत्त्वक सामंजस्येसँ जीवक निर्माण भऽ सकैत छैक, कोनो एकक अभावमे ओकर अवस्थितिक कल्पना नहि कयल जा सकैछ।

बारहम कथा अछि 'जैन लोककथा'। एहिमे अद्वैत, काम, भोग, नायकक सूक्ष्म व्याख्या कयल गेल अछि। यथा—"द्वन्द्व-रहित चित रहय शांत मत अद्वय मानल।" "कामप्रवृत्ति क्रोधमूलक थिक क्रोधे स्व-पर–विनाशी" "मिलिजुलि भोग न सोग" इत्यादि।

तेरहम कथा अछि 'राजपूती त्याग' जाहिमे त्यागक महत्त्वपर प्रकाश देल गेल अछि। अग्रज आ अनुजमे केहन प्रेम रहबाक चाही तकर आदर्श प्रस्तुत करैत अछि त्यागी भीमसिंह। चौदहम कथा अछि 'प्रत्युपकार' एहिमे प्रमाणित भेल अछि जे अवश्यमेव भोक्तव्यं कृत कर्म शुभाशुभम्। जाहि चुट्टीक प्राणक रक्षा परबा गाछपरसँ पात खसाय करैत अछि, सैह चुट्टी व्याधाक पैरमे काटि परबाक प्राण रक्षा ओकर मर्मबेधी तीरसँ कऽ दैत अछि। उपकारक फल अवश्ये अमोघ होइछ। पन्द्रहम कथा अछि 'सहयोगिता'। देवता सहयोगक भावना रहबाक कारणेँ पूज्य बनल छथि, राक्षस एकर अभावेक कारणसँ उपेक्षित अछि। तेँ समान अवसर रहलो सन्ता जतऽ सुरगण सम्मान्य बनि जाइत छथि ओतऽ असुरगण उपहास आ उपेक्षाक पात्र। असुरक फुटकर भोग अहितकर होइछ, सुरक सहयोग सुखद होइछ। अन्तिम सोलहम कथा 'पशु-पशुपति' अछि जाहिमे भक्तक परीक्षा भेल अछि। सभ जीवक प्रति जकरा हृदयमे समान स्नेह छैक सैह उच्च कोटिक भक्त थिक। सर्वभूत हिताय जे अपन सुख सुविधाक त्याग करैछ सैह पूज्य बनैछ। कतेक परिश्रमसँ एकनाथ पिता-माताक कबुलाक पूर्ति करबाक हेतु सन्नद्ध छथि, मुदा बाटमे छटपटाइत गदहाकेँ ओ अपन गंगाजल पिआय वस्तुतः पशुक रूपमे पशुपतिक पूजा करैत छथि आ एहीमे हुनक भक्तिक सार्थकता सिद्ध होइत अछि।

एहि प्रकारेँ आचार्य सुमनजीक कथायूथिकाक सोड़हो कथामे सोडहो कलाक चमत्कार सन्निविष्ट अछि।

ललना-लहरी

डॉ० श्री रमानन्दझा 'रमण'

बिन्दु विसर्गक योजना जत कवि-कल्पित भाव

राधा माधव मूल रसहिक थिक विदित विभाव

'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'क विभाव रसनिष्पत्तिक प्रथम आ महत्त्वपूर्ण अवयव थिक। ई महत्त्वपूर्ण अवयव लोकमे रति आदि चित्तवृत्तिक उद्‌बोधक-रूपमे मान्य अछि। चित्तवृत्तिक उद्‌बोधक आलंवन विभाव 'राधा' अर्थात् नारी, 'माधव' अर्थात् 'पुरुष'मे आश्रय पाबि जाइछ जे रसनिष्पत्तिक आवश्यक एवं आधारभूत शर्तकें पूरा करैछ। जेना आश्रय आ आलम्वनक बिनु रसनिष्पत्तिक परिकल्पना असंभव अछि, तहिना ललना बिनु जीवनक परिकल्पना असंभव अछि। जेना सुगन्धिक बिनु चन्दनक कोनो मोल नहि, बिनु किरणक चन्द्रमा नहि शोभैछ, तथा सिन्धु बिना लहरि-विन्दुक कल्पना नहि कयल जा सकैछ, तहिना ललनाक बिना जीवनक कल्पना करब निरर्थक अछि। एहि शाश्वत सत्यकें महाकवि सुमनजी अपन काव्यप्रतिभाक बलें एक चिरंतन आ आकर्षक रूप दैत छथि—

बिनु सुरभिक चन्दन जेना, बिनु किरणें जनु इन्दु

ललना बिनु जीवन जेना, लहरिक बिनु खिन सिन्धु

कविक कल्पित भाव, बिन्दु विसर्गक जाहि कोनो योजनाक माध्यमे प्रकट होअय, मूल रसहिक स्वरूप प्रकट करैछ। 'राधा-माधव' संयोग हो वा विप्रलम्भ, शृंगार रसहिक बोध करबैछ। तात्पर्य जे 'राधा' शब्द वा 'माधव' उच्चारण कयलासँ अथवा सुनलासँ शृंगाररसकें छोड़ि आन रसक उद्रेक नहि करबैछ। एहि स्थापना-वाक्यखण्डसँ इहो स्पष्ट होइछ जे सुमनजी रसहिकें काव्यक आत्मा मानैत छथि आ तें ओहि काव्यशास्त्रीय सम्प्रदायक

रससिद्ध कवि छथि जे रसवादी सम्प्रदायक नामे ख्यात अछि।

काव्यशास्त्रक आलम्बन विभाव 'राधा'के ललनालहरीमे महाकवि विभिन्न रूपमे प्रकट कयल अछि। ई विभिन्नता आत्मगत नहि, स्वरूपगत अछि। ऊपरे ऊपर तँ अन्तर बुझाइछ जे भौगोलिक कारणे, सामाजिक सम्बन्धक कारणे अथवा पारिवारिक संबंधक कारणे प्रतीत भऽ सकैछ, किन्तु वास्तविक रूपमे कोनो अन्तर नहि अछि। संक्षेपमे कहि सकैत छी जे आश्रम आ आलम्बन तँ एके अछि, किन्तु उद्दीपन विभावमे अन्तर होइत गेल अछि। आलम्बनगत चेष्टा अथवा वाह्य प्रकृति बदलैत गेल अछि। रसवादी सम्प्रदायक अनुसारे नओ प्रकारक रस अछि जाहिमे रसराज थिक शृंगार। ओहिना, ललना-लहरी मे नओ खण्ड अछि। एहिमे प्रथम छथि देश-प्रदेशक तेरह प्रकारक ललना। एहि तेरहोमे पहिल छथि मैथिल ललना। मैथिल ललनाक अतिरिक्त बंग, असम, ओड़िया, आन्ध्री, द्राविड़ी केरली, मराठी, केरली, मराठी, गुजराती, सिन्धी, पंजाबी, कश्मीरी आ राजस्थानी। मैथिल ललनाक चित्र गढ़ैत महाकवि लिखल अछि—

सीथ सोझ कोंचा कुटिल पँघ आँखि मुँह पानि
लुरिगरि गितगाइनि सहज लिअ तिरहुति तिय जानि

एहि चित्रात्मक पाँतीमे महाकवि मैथिल ललनाक वाह्य आ आन्तरिक गुणोत्कर्षके अंकित कऽ देल अछि। कश्मीरी ललनाक चित्र बनबैत कवि लिखल अछि—

कनक गौर मुख रुचि ललित कुंकुम-रंजित अंग
अंगूरी छवि कश्मीरी वाला बलित अलंग

कश्मीरी बालाक अंगूरी छविक चित्रणक संग कवि आश्रयक कायिक, वाचिक मानसिक आदि प्रतिक्रियाके दर्शबैत छथि तथा अंगज ओ अयत्नज अलंकारक माध्यमे इहो कहैत छथि जे कश्मीरी बालाक अनंग बलित होइछ जे प्राकृतिक कारणे मान्य अछि।

ललना-लहरीक दोसर लहरि थिक देशक विभिन्न जनपदक ललना, जाहिमे मागधी, भोजपुरी, ब्रजवाला, कन्नौज, मेरठ, देहली, काशिका, उज्जयिनी अबैत छथि। ब्रजवालाक चित्रण करैत कवि लिखलनि अछि—

यमुना जल पिबितहु सतत श्यामक धरितहुँ ध्यान
गोरि नारि ब्रजनारि पुनि राधा प्रेम प्रमान

भारतीय जनमानसमे यमुना मात्र एक नदी नहि अपितु राधा-कृष्णक लीलाधाम ब्रजक प्रक्षालन करैत अछि तथा कृष्णक प्रेममे व्याकुल ब्रजवनिताकेँ शीतलता प्रदान करैत अछि। ओही ब्रजबालाक रूप ओ सौन्दर्यक वर्णन महाकवि कयने छथि।

ललनालहरीक तेसर लहरि थिक अभिजन। एहिमे पारसी, यवनी, फिरंगिनी, पार्वती तथा वनवासिनी— पाँच विन्दु अछि। पारसी ललनाक प्रसंग कविवर लिखल अछि—

गोर नाम, मुख व्यक्त रुख, पट परिधान अनन्य
नमछरि छोहरि पारसिक निरखि रसिक मन धन्य

कविक दृष्टि कतेक तेज होइछ, कठोर आ कुलिशकेँ वेधि ओहि विन्दु पर कोना पहुँचि जाइछ जाहिठामसँ रसक धार फूटैत रहैछ, से पारसी ललनाक वर्णन सँ प्रकट भऽ जाइछ। कविक अनुसार पारसी ललनाक वस्त्राभूषण तँ अनन्य होइछ, किन्तु मुखमंडल पर रुच्छता रहैछ। ई रुच्छता ओहिना एकटा आवरण थिक जेना नारिकेल फलपर कठोर आवरण रहैछ। ओहि कठोरताक भीतर प्रवेश कऽ रसिकक मन धन्य भऽ जाइछ। ईहो कहल जा सकैछ जे रुख मुख उद्दीपनकारके थिक।

ललनालहरीक चारिम लहरि थिक परिजन। एहिमे नागरी, ग्रामीण, छात्री, नेत्री, अभिनेत्री, श्रमिक बालिका आ वनपालिका ललना छथि। श्रमिक बालिकाक वर्णन करैत कवि लिखैत छथि—

मलिन वसन भूषण न तन रुच्छ केश, कृश गात
श्रमिक बालिका मनक श्रम हरय खरड़ि खढ़-पात

सौन्दर्यवादी दृष्टि ओकरे पसिन्न करैछ जे आँखिकेँ नीक लगैछ। आँखिक प्रियगर मनोकेँ नीक लगैछ से सामान्यतः मानल जाइत रहल अछि। किन्तु श्रमिकबालिका, जकरा देहपर ने आकर्षक वस्त्र छैक आ ने आभूषण, तथापि ओ लोकक मनकेँ ओहिना अपना दिस आकर्षित कऽ लैछ जेना खढ़-पात खरड़ि

देलापर झमटगर गाछक छाह बटोहीकेँ आकर्षित कऽ लैछ।

ललनालहरीक पाँचम लहरि थिक रीतिकालक मान्यताक अनुसार ललनाक वर्गीकरण। एहिमे ललनाक चारि कोटि अछि—वैदर्भी, गौरी, पांचाली आ लाटी। काव्यशास्त्रक रीति थिक पदरचना। ई पदरचना पदक अंगसंस्थान थिक। पदक कोमलता, कठोरता आदिक आधारपर ई वर्गीकरण अछि। वैदर्भी रीतिक पदरचनामे माधुर्य गुण व्यंजक वर्णक प्रयोग रहैछ। ई प्रयोग सामासिक नहि होइछ। सुकुमारताक कारणेँ श्रृंगाररसक हेतु उपयुक्त मानल जाइछ। गौड़ीक पदरचना वैदर्भीक प्रतिकूल होइछ। ओजगुण-प्रकाशक वर्णक प्रयोग होइछ। समासबहुल आडम्बरपूर्ण पदक प्रयोग एकर विशेषता थिक। एही कोटिक गौड़ी ललनाक रूपकेँ महाकवि चित्रित कयल अछि। ललनाक प्रसंग 'ओज भरलि उद्दीपिका' एही गुणकेँ प्रकट करैछ—

गौर अंग गुन गौरवित पद समस्त मस्तीक
ओज भरलि उद्दीपिका गौड़ी गिरा प्रतीक

ललनालहरीक छठम लहरि थिक रसप्रकृतिक अनुकूल ललनाक चित्रण। एहिमे तीन श्रेणी अछि स्वकीया, परकीया आ वेशिनी (सामान्या अथवा वेश्या)। स्वकीया थिकथि पतिव्रता, परकीया छथि अप्रकटरूपेँ अन्य पुरुषमे आसाक्त तथा वेशिनी छथि पूर्णभुक्त, कोनो प्रतिबन्ध नहि। नायिकाक भेद-विभेदमे कवि आ रसवादी काव्यशास्त्रीक मन ततेक रमल छनि जे नायिका-भेदक संख्या तीन सय चौरासी धरि ठेका देल अछि। वेशिनीक वर्णन करैत महाकवि लिखने छथि—

प्रात शिथिल, दिन मलिन, निशि विकसित, साँझहि ज्ञात
चानक चानी मन हुलसि कुमुद वेशिनी ख्यात

ललनालहरीक सातम लहरिमे थिक वेश-वयस। एहि लहरि कुमारि, नवविवाहिता, सधवा आ विधवा चारि प्रकारक ललनाक अवस्थाक प्रसंग अछि। ललनालहरीक छठम लहरिमे रसप्रकृतिक अनुकूल एकटा स्वकीया वर्णित छथि। एहि स्वकीयाक एकटा प्रभेद होइछ मुग्धा। वयक अनुसार एहि मुग्धोक प्रभेद अछि, जेना ज्ञातयौवना, अज्ञातयौवना, नवोढ़ा, विश्रब्ध नवोढ़ा।

महाकवि सुनमजीक अनुसार जे कुमारि थिकथि ज्ञात आ अज्ञात यौवना, नवविवाहिता थिकथि नबोढ़ा, जे लज्जा आ भयक कारणें पराधीन रतिवाली होइत छथि। एहि नवविवाहिताक चित्रण करैत सुनमजी लिखैत छथि—

उत्सुक मन, सहमल्हि कने जने अपरिचित आन
काय कामना क्रमहि गभि नबोढ़ाक मन मान

ललनालहरीक आठम लहरि थिक घर-परिवार। एहि लहरिक नओ गोट बिन्दु अछि—पत्नी, माय, बहिनि, कन्या, कुलबधू, पितामही, मातामही, पीसी आ मौसी। ई वर्गीकरण पारिवारिक संबंधक आधारपर कयल अछि। कुलबधूक चित्रण प्रस्तुत करैत कवि कहैत छथि—

मंद हँसब, बाजब चलब अंगनहु अंग पट झाँपि
लजवंती छविमंति धनि दृगक पड़य तन काँपि

ललनालहरीक अन्तिम लहरि थिक प्रकीर्ण। एकर अन्तर्गत एक पृथक रसक परिकल्पना कयल गेल अछि। ओ थिक सासुर रस। कवि मानैत छथि जे सासुर रसक निष्पत्ति 'विभावानुभावसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'क आधारपर नहि भऽ सकैछ, अपितु एहि रसक निष्पत्तिक अवयव थिक सासु, सारि आ सरस सरहोजि। एहि अवयवक आधारेपर सासुर रसक निष्पत्ति संभव अछि—

सासु न सासुर नाम टा से बिनु सारि असार
बिना सरस सरहोजिएँ रस सासुर निःसार

रसवादी सम्प्रदायक विकासक पाछू मध्यकालक सामन्ती सामाजिक व्यवस्था अछि। कविलोकनिकें पेटक चिन्ता नहि छलनि, आ नायिकाक भेद-प्रभेद-विभेदमे अपन तर्क ओ अन्वेषण-शक्ति लगा दैत छलाह। एकरे परिणाम थिक जे नायिकाक संख्या तीन सय चौरासी धरि पहुँचा देलनि। आब स्थिति ओहन नहि छैक। ओहि विभाजनपर पुनर्विचार होएबाक समय आबि गेल अछि। हमर विश्वास अछि, आजुक समय-साल, विचारधारा ओ मान्यताकें देखैत जँ नायिकाक पुनः वर्गीकरण कयल जाय तँ महाकवि सुमनजीक ललनालहरी नायिका-भेद लेल एकटा वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत कऽ सकैछ।

गाम-धरती

डॉ० श्रीधीरेन्द्रनाथमिश्र

साहित्यमनीषी ओ साधक तपस्वी आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन'क लेखनीसँ निःसृत एक-एक रचना मैथिलीक धरोहर रूपमे अनुवर्त्तमान अछि। पावनमयी मिथिलाक एहने तपःपूत द्वारा सृजित 'गाम-धरती' एक अभिनव विधामे, नवीन कल्पनाक प्रतीक रूपमे, दृष्टिगत होइत अछि। कविता-विधामे ग्राम्य-संस्कृतिक संस्मरणात्मक विवेचन एहिमे सम्यक् रूपेँ भेल अछि। गाम-घरक परिवेश, जननी ओ जन्मभूमिक प्रति अनुरक्ति,-आसक्ति स्नेह-प्रेम आदि कविक प्रवृत्ति बुझना जाइछ।

मैथिलीमे कविता-विधामे संस्मरणपरक दुइए गोट पोथी अद्यपर्यन्त प्रकाशमे आयल अछि—मधुपजीक मधुवर्षी लेखनीसँ लिखित 'प्रेरणापुंज' ओ सुमनजीक रसवर्षी निर्झरिणीसँ सृजित 'गाम-धरती'। जतऽ मधुपजीक पोथीक परिवेश किछु व्यापक अछि ततहि सुमनजीक पोथी संक्षिप्त रहितहुँ गागरमे सागरकेँ चरितार्थ करैत बिन्दुमे सिन्धु समाहित कयने अछि। १९६९मे प्रकाशित गाम-धरती (ग्रामदर्शिका)क भूमिका सेहो पद्यहिमे निबद्ध अछि, जे पीठिका रूपमे दृष्टिपथपर अबैछ, जाहिमे अपन लाघवता देखबैत अपन गाम-घर, लोक-वेद, इलाका ओ साहित्य-शृंखलाक विविध विधाक कड़ीक रूपमे विभिन्न साहित्यस्रष्टाक प्रति अनुराग-प्रदर्शनमे श्रेष्ठता देखाय कवि चमत्कृत कयलनि अछि। जे स्वयं भूमि थिक तकर भूमिका की हो, तकर केहन सटीक भावाभिव्यंजना भेटैछ निम्न पदमे—

गाम नामसँ परिचय-पातहु ग्रामहि शाखा-मूल
व्यक्ति सुमन ग्रामटिका बल्लिक अभिव्यक्ति अनुकूल
भूमि भूमिका स्वयं भूमि-पृष्ठक की पीठाधार
अपन गुरुत्वाकर्षण बल चुम्बित कय सार-असार

विवेच्य पोथी कतोक शीर्षकमे विभक्त अछि, यथा चास-वास: भूमि-आकाश, सीमा-निवेश: घर-परिवेश, टोल-पड़ोस: संग-समाज, घर-आङन: मातृका-गोसा-उनि, संस्था-आस्था : प्रकृति-विकृति, संगी-अंगी : नाम-संबोधन, नाम-स्मरण : तर्पण-अर्पण, बद्ध-सम्बद्ध : स्मृत-विस्मृत, छाया-प्रतिच्छाया : ध्वनि-प्रतिध्वनि, कण-कण बटोरि : क्षण-क्षण सङोरि, सहचर-परिचर : पुरजन-परिजन, विन्दु-पराग : रंग-अनुराग, चित्र-विचित्र : विखरल चित्र, अग्र-प्रत्यग्र : तरुण उदग्र, साक्षी : प्रत्यक्षी, स्वगत : जनान्तिक एवं स्मरणिका--कुल सत्रह खण्ड।

अपन गाम-घर सभकें प्रिय होइत छैक, एहिठामक भूमिक प्रति मोह-माया रहैत छैक, लोकक प्रति नेह-प्रेमक अजस्र प्रवाह हृदयमे प्रवहमान रहैत छैक आ तहिना आत्मीय जनक अशेष स्नेह-भाव हृदयकें आह्लादित करैत रहैत छैक, गाम-घर, टोल-पड़ोस, आ एतेक धरि जे चर-चाँचर, धार-पुष्करिणी सभमे निजत्व बोध होइत छैक। महाकवि सुमनजी मिथिलाक सुप्रसिद्ध ग्राम बल्ली-पुरक वासी थिकाह। स्वाभाविक रूपें हिनकहु गौरव छनि आ तें अपन नदी तटस्थित वासडीह, गामक चर-चाँचर, उर्वर भूमि, देवस्थली, ठाम-ठाम पंडित गुणीक श्रीमुखसँ श्रुति-स्मृतिक पाठ, गीतनाद, परस्पर आनन्द-विनोदक वार्त्ता-लाप, स्वर-सम्राट गायक कलाकार ओ अखाड़ापर लङौटा फेकनिहार पहलमान, दर्शकगणक नयन तृप्त कयनिहार नाट्य-प्रदर्शन, साधु सन्तक सत्कार, दुर्गापूजा, फागु, दीपावली, जूड़शीतल प्रभृति पूजा-उत्सव आ कीर्त्तन-भजनसँ लोक समु-दायक मनोरंजन ओ भक्तिभावक चित्रण, विभिन्न जातिक विवरण, नाना व्यव-साय, सामाजिक संस्कार, गमैंया भोजभात, पर-पंचैती ओ अनेकानेक क्रीड़ा आदिक मनोहर भावाभिव्यक्ति 'चास-वास : भूमि-आकाश'मे प्रकट करैत छथि।

गाम-घरक सीमानिर्धारणसँ लऽ ओकर सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक ओ नैतिक परिवेशक सारगर्भित व्याख्या 'सीमा-निवेश: घर-परिवेश'मे भेल अछि। एहि परिप्रेक्ष्यमे द्रष्टव्य थिक प्रस्तुत शीर्षकक निम्नांश—

उत्तर दच्छिन ठाकुरवाड़ी रामायण नित गान
स्थल पच्छिम राधाकृष्णक पुनि सीताराम प्रभान

× × ×

पल-पल श्रुति-पुट वयन, नयन अनुखन सतसंग प्रसंग
नाम रूप यश लीला सुरभित ग्रामांचल अनुषंग

एहि क्रममे कवि विविध सत्संगी एवं साहित्यानुरागी वेद, पुराण, महाभारत, रामायण, गीता, तुलसी, विद्यापति चन्द्र, रैदास ओ कबीर आदिक स्मरण करैत अमृतोपम उपदेशसँ बल्लीपुर-प्रदेशकेँ धन्य-धन्य मानैत अपन श्रद्धा-सुमन अर्पित करैत छथि।

मनुष्य मात्र समाजक अंग होइछ। मनुष्यक सम्पूर्ण विकासक माध्यम समाज सैह होइछ। 'संघे शक्तिः' कहल गेल छैक। समाजसँ व्यक्ति-व्यक्तिकेँ बल भेटैक छैक। टोल-पड़ोस आ समाज कोना लोकहितमे सम्बल-सहायक होइत छैक मान-मर्यादा ओ संस्कृतिक रक्षामे, तकर अतिआकर्षक चित्रण कविक टोल-पड़ोस : संग-समाज'मे भेटैछ। एतदतिरिक्त एहि शीर्षकक ई प्रमुख वैशिष्ट्य थिक जे मिथिलांचलक पचकोसी सहित सम्पूर्ण प्राचीन दरभंगा जिलाक प्रशस्त गामक प्रस्तुतिमे चमत्कार आनल गेल अछि, ओ चाहे कोनो इतिहासपुरुष विद्वानक जन्मस्थान हो किंवा धर्मनिष्ठ-ब्रह्मनिष्ठ मीमांसक, दार्शनिक वा नीति-विशेषज्ञक कर्मस्थली, ककरो छोड़ल नहि गेल अछि। विभिन्न ग्राम ओ मनीषीक नाम प्रतीकात्मक रूपमे समाहित भऽ एहिमे चमत्कार अनने अछि।

मिथिला मध्य कोनो मांगलिक अवसर अबैछ, ममता, दया, करुणाक प्रतीक माँ कुलदेवताकेँ सर्वप्रथम लोक गोहरबैत अछि, जाहिसँ यज्ञकार्य शुभ-शुभ कऽ सम्पन्न भऽ सकय। सभक गोसाउनि फराक-फराक होइत छथिन, 'घर आङन : मातृका-गोसाउनि'मे एहि विषयकेँ रेखांकित कयल गेल अछि। एहि मध्यमेँ मिथिलाक संस्कार, कला, मातृभक्ति, गोसाउनिक प्रति आस्था, पावनि-तिहार, हकार-व्यवहार, पारिवारिक मधुर सम्बन्ध ओ सनातन धर्मक अक्षुण्णताक प्रति प्रतिबद्धताक अतीव मनोरम समीकरण कविक पाण्डित्य-प्रकर्षकेँ प्रदर्शित करैछ।

आनुप्रासिक शीर्षक 'संस्था-आस्था : प्रकृति-विकृति'मे वर्ण्य-विषयक प्रतीकात्मक रूप झलकैत अछि। गामक शैक्षिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक ओ सांस्कृतिक अभ्युत्थानहित विभिन्न सरकारी ओ गैरसरकारी संस्था-संघ ओ

संगहि आपसी राग-द्वेष, वैमनस्य-कलह, प्राकृतिक विपदा, प्रकृतिक चित्र-वैचित्र्य आदिक स्वाभाविक चित्रण भेल अछि 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' केँ चरितार्थ करैत। पद्यान्तमे कवि भाव-विभोर भऽ अपन जन्मस्थानकेँ स्वर्गहुसँ श्रेष्ठ स्वीकार करैत लिखैत छथि—

अपन जन्म-धरतीक माटि स्वर्गहुक स्वर्ण सँ बाढ़ि
तीर्थक जल लय तकरा पूजब संगी संग हकारि

नामक महिमा-गरिमाक उपाख्यान-बखान 'संगी-अंगी : नाम—संबोधन'मे भेल अछि, जे कविश्रेष्ठक गुरुता सिद्ध करैत अछि। मर्यादापुरुषोतम रामसँ लऽ देवकीनन्दन श्याम धरि, नरसँ नारायण धरि, काशी-काञ्चीसँ कमला धरि जँ भगवत-नाम आ तीर्थस्थानक स्मरणमे एक दिशि कवि भावाभिभूत छथि तँ दोसर दिशि ग्रामस्थित व्यक्ति–नामके सेहो रससिक्त कयने छथि—

ठक्कन नामहु निश्चल चिक्कन, बौकू बचनक जोर
धनपति निर्धन, दीना धनिजन, कारी नामहु गोर

तर्पण कयल जाइछ पितरक, तर्पण कयल जाइछ श्रद्धेय जनक, वन्द-नीय महापुरुषक, पूर्वजक। 'नाम-स्मरण : तर्पण-अर्पण' तकरहि प्रतीक थिक। इतिहास-देवताक आवाहन करैत, आत्म-गौरव रखैत अपन गामक विविध क्षेत्रमे ख्यात नामधारी पुरुषक चर्चा कवि कयने छथि।

गामक स्मृतिशेष कतिपय विशिष्टसँ लऽ सामान्य जन कविक स्मृतिलोकमे अबैत छनि, जकर गुण-गौरव, क्रिया-कलाप ओ रूप-प्रारूपक ई मूल्यांकन करैत अघाइत नहि छथि। कविक समदर्शिता भव्य भावेँ प्रदर्शित-निवेशित भेटैछ निम्न पदमे—

गच्छ-गच्छ केर पच्छ-पच्छ केर जत जे कुल-परिवार
सभके मन-मन सुमरि स्मृतिक छाया सँ कय सत्कार

महाकविक वैज्ञानिकताबोधक शीर्षक कविता 'छाया-प्रतिच्छाया : ध्वनि-प्रतिध्वनि' भेटैछ। एहि क्रममे अपना माटि-पानिक दामोदर, राजोबाबू, राधाकान्त, आनन्दकका, नरसिंहकका, योगीन्द्रकका, मुनीकका, महावीरबाबा, बाबूकका, वेणीभाइ, भूषणभाइ, विजयबाबू, लक्ष्मीबाबू, तेजकाका लोकनिक

रुचि-प्रवृत्ति ओ गुण-वैशिष्ट्यकेँ सांगोपांग रीतिएँ प्रतिबिम्बित कयलनि अछि।

'कण-कण बटोरि : क्षण-क्षण सड़ोरि'मे कवि इलाकाक मठ-मन्दिर, बान्ह, सार्वजनिक हित-हेतु पोखरि, वाल्यचांचल्यजन्य चुभकब, मोगिया गोनिक अथाह पानि, चर-चाँचर, नौलखा बाग, पौराणिक गाथा आल्हा रूदलक श्रवण, क्रीड़ा, नट-नृत्य-कृत्य, दसौन्ही- कवित्त, कीर्त्तन-भजन, शास्त्रार्थ, नानी-दादीक कथा-कहिनी, वाद्य ओ कंठ-संगीतक मधुर जयदेवक रसमय 'कोमलकान्तपदावली'सँ प्रेरित-प्रभावित प्रतीत होइत, कतहु कुश्तीक दंगल तँ कतहु घोड़दौड़ वा भेड़क युद्ध आदिक विन्यस्त ओ मुग्धकारी विवेचन कयलनि अछि।

समाजक बन्धनमे रहब, एहि संस्कारमे अपनाकेँ तादात्म्य स्थापित करब ओ विभिन्न संस्कार आ कार्यक संचालनार्थ-संपादनार्थ पुरजन-परिजनक सहयोग कोनो-ने-कोनो रूपमे लेबहि पड़ैछ। यथा—खबास, पौनी-पसारी, व्यापारी, जन-बनिहार, माली, लहेरी, डोम आदिक बिनु साहाय्येँ कोनो सामाजिक कार्यक पूर्णता संभव नहि अछि, ई भाव 'सहचर-परिचर : पुरजन-परिजन'क विवेच्य थिक।

'विन्दु-पराग : रंग-अनुराग'मे सहृदय काव्यपारखीक ललित-कला दिशि प्रेम-प्रवृत्ति सेहो परिलक्षित होइछ। अन्तरंग-बहिरंगक अनन्त समभाव द्वारा कविक चारित्रिक उदात्तता उजागर भेल अछि तथा एहि क्रममे ई किछु इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव, श्रेष्ठजन, मनोरजन-गुंजन ओ परिमल हृदयसँ समष्टिक नमन विनीत भावेँ परिमार्जित रूपेँ कयलनि अछि—

गुरु-लघु सेवक-सेव्य छोट-बड़ जत जे भूति-विभूति
गत-आगत-अनागतक प्रति अर्पित सुमनस अनुभूति

गामक शहरीकरण, प्राचीन ओ अर्वाचीन व्यवहार-परम्परा ओ सृष्टि तथा परिवर्तित चित्रक कुतूहलता दिशि कविर्मनीषीक संकेत भेटैछ 'चित्र-विचित्र: विखरल चित्र'मे। एहि खडमे कल्पनाक यानपर गामक उड़ान भरैत सुमनजी अपन समाजक भिन्न-भिन्न व्यवसायमे निरत लोक, यथा संत-असंत, ककरो कार्यदक्षता तँ ककरो कचहरीक व्यस्तता, क्यो जहाजपर उड़ैत तँ केओ खेत-पथार लेल फनैत, केओ कपिलेश्वर-कुशेश्वर तीर्थ घुमैत तँ ककरो नाच

नचबैत, खने पान-दोकानक आनन्द लैत तँ क्षणहिँ हाट-बजारक चहल-पहलमेँ प्रमुदित होइत देखि भाव-विह्वल भऽ उठैत छथि।

'अग्र-प्रत्यग्र : तरुण-उदग्र'मे कविक दृष्टि अपन ग्रामक अतिरिक्त समीपवर्ती प्रशस्त ग्राम शिवाजीनगर, वागीशनगर, श्यामनगर ओ वैद्यनाथपुर दिशि सेहो गेल अछि। एहि स्थानविशेष सभक छोट-पैघ, बाबू-भैया, भलमानुस, शिक्षक-शिष्य, श्रमिक, गृहस्थ, विभिन्न जाति ओ वर्गक लोकक कर्त्तव्यनिष्ठता आ नवयुवकवृन्दक प्रमुदित–उल्लसित भावेँ ग्रामक अभ्युन्नति हेतु प्रयत्नरत होयबाक दृष्टान्त निस्सन्देह प्रेरणामूलक थिक।

'साक्षी : प्रत्यक्षी'केँ समक्ष राखि महाकवि मुक्तकंठे आत्मगौरवक संग अपन जननी-जन्मभूमिकेँ स्वर्गहुसँ बाढ़ि मानैत छथि तँ संघ–संघटन द्वारा राष्ट्रिय-जागरणक शंख फुकैत राष्ट्रभक्तिक परिचय-विमोचनमे औदार्य देखबैत छथि।

स्वर्गादपि गरीयसी गामक धरती पूजन पर्व
संग सवर्ग देव-देवकीनन्दन लेब सवर्ग
पूजब कन-कन, मन दय छन-छन जननी अवनी जन्य
श्री समरेन्द्र भविष्णु भार उपहार अरपि मन धन्य
संघ सघटन दिस रुचि जाग्रत जागरूक जत लोक
राष्ट्रभक्ति गंगा सागर संगम गामहु आलोक

संस्कृत, हिन्दी ओ मैथिलीकेँ त्रिवेणी-संगमक प्रतीक मानैत सुमनजी अपन पत्रकार-जीवनक प्रारंभकालक अर्चा-चर्चा 'त्रिवेणी', 'ग्रामवार्ता', 'साधना' आदिक द्वारा कयलनि। अपन आङन-दलानहिकेँ कवि गंगा, यमुना ओ ब्रज-रज मानैत छथि। मिथिला ओ मैथिलीक यथार्थोन्मुखी आदर्शक चित्रणमे, एकर प्राकृतिक सुषमा-सुरभि ओ गुण-गौरवक बखानमे कविक पटुता श्लाघनीय अछि, स्तुत्य अछि। कण-कणक प्रति सम्मानभाव रखैत कविहृदयक 'स्वगतः जनान्तिक'मे निम्न प्रकारेँ प्रकट भऽ उठैछ—

कन-कन अपन भूमि-धरतीकेँ पुजइत मन सम्मान
आइ सपुन पुनि पूजि रहल छी देश अखड प्रमान

'स्मरणिका' 'गाम-धरती'क अन्तिम पुष्प थिक, जे कविके जीवन-दर्शनक, अपन पूर्वजक, लोकवेद आ ग्राम-नाम दिशि ध्यानाकृष्ट करबैत अछि—

गाम-नाम मन पड़ितहिं पहिने तात चरणहिक ध्यान
तदनु हुनक अनुपम अनुसरणी मातुल-तनुज महान
बौआ काका कहि जनि चरणक धूलि चढ़ाबी माथ
तनिकहि नामक स्मरण-पुण्य सँ निज के करी सनाथ

वस्तुतः सुमनजीक ग्रामकथाक अत्युत्तम विवेचन 'गाम-धरती'मे भेटैछ। ओतुका लोक, समाज, जाति, वर्ग, संस्कार-व्यवहार, संस्था, प्राकृतिक दृश्य, देवालय-धर्मालय, चर-चाँचर, अखाढ़ा, मित्रबन्धु, श्रेष्ठजन, मातृपितृभक्ति, राजनीतिक उथल-पुथल, मनोरजन-संस्थान, राग-द्वेष, प्रेम-नेह, नाम-चर्चा, शिष्टाचार सदाचार, प्रवचन-कीर्त्तन, देवता-पितर, उर्वर धरती ओ परती-पराँत सभ किछुक सन्निवेश एहि संस्मरणात्मक कृतिमे भेटैत अछि।

समासतः ई कहब समीचीन लगैछ जे वर्ण्य-विषय, भाषा, भाव, अलंकार, छन्द, शैली, शिल्प ओ वर्णनादिमे, महाकविक कल्पनाक प्रौढ़ता, दृढ़ता, गंभीरता ओ भव्यता भेटैछ। 'गाम-धरती' कथाकाव्यक रूपमे प्रतीत होइत संस्मरणात्मक कोटिक अद्वितीय पोथी थिक।

सनेस

श्रीअरविन्दकुमारसिंहझा

शब्दशिल्पी आचार्य श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन'केँ पाबि मैथिली-साहित्य अत्यन्त गौरवान्वित, प्रतिष्ठित ओ सम्पुष्ट भेल अछि। संस्कृत-साहित्यक गम्भीर अध्ययनसँ परिमार्जित हिनक सर्जनात्मक प्रतिभा मैथिली-साहित्यक नख-शिख श्रृंगार कयलक। अध्ययनक आधार प्राचीन साहित्य रहितहुँ हिनक दृष्टि-कोण ओ कल्पनाशक्ति नव रहल अछि। तेँ, नवीनता आ प्राचीनताक सगमक दृश्य हिनक काव्यमे स्वतः परिलक्षित होइछ।

सुमनजीक 'सनेस' बाल-साहित्यक उत्कृष्ट देन थिक। विभिन्न कोटिक सात गोट मात्र बालोपयोगी काव्य-रचनासँ संयुक्त रहितहुँ हिनक 'सनेस' अपनामे जे विशिष्टता समेटने अछि, से अद्वितीय प्रमाणित भेल। काव्यक दू पक्ष—भावपक्ष ओ कलापक्ष मानल गेल अछि। कविक ई कर्म आ धर्म थिकनि जे अपन हृदयगत भावकेँ वैशिष्ट्यपूर्ण कलासँ सुसज्जित कऽ पाठकक समक्ष प्रस्तुत करथि। एहि सनेसमे भावपक्षक दृष्टिएँ अनेक आधार एकत्रित कयल गेल अछि जे अपनहिमे चमत्कारक अछि। अधिकांश भाव प्रकृतिक प्रांगणसँ लेल गेल अछि आ तेँ कवि प्रकृतिसँ पूर्णतः प्रभावित बूझि पड़ैत छथि। ओ प्रातःकालक मनोरम ओ सहज वर्णन करैत लिखलनि—

चट—चट कय फूलक कोँढी सभ फुला रहल अछि अपने फुरने
बिना जगौने आँखि मीड़ि हम उठि जाइत छी भोरे अपने
चुन—चुन करय चड़ै—चुनमुन्नी फुदुकि एम्हर-ओम्हर हो तहिना
घप—घरसँ जुटि कै हमरा सभ खेल—कूदमे लागी जहिना

भावपक्षक संगहि चमत्कारक ओ आकर्षक, आह्लादक ओ रमणीयार्थ

प्रतिपादक कलापक्ष विशेष विलक्षण अछि, जकर संयोगसँ भावपक्ष सेहो अत्यन्त चमत्कारक भऽ गेल अछि। कलापक्षक अन्तर्गत भाषाक प्रवाह, भावानुकूल शब्दयोजना, अलंकारक स्वाभाविक प्रयोग आदि तँ परिलक्षित होइते अछि, परन्तु जे तत्त्व सभउँ विशेष प्रमुख अछि, ओ थिक कविवरक कल्पना-शक्ति। हिनक कल्पनाशक्ति कतेक प्रबल आ प्रखर अछि, यथार्थक परिप्रेक्ष्यमे कतेक प्रेषणीयता उत्पन्न करैत अछि, से एहि पोथीक अनेक कवितासँ परिलक्षित होइछ।

स्पष्ट अछि जे विवेच्य पोथी नेनासभक लेल लिखल गेल, तेँ 'सनेस' पढ़ने ई सिद्ध होइछ जे भाषा-प्रयोगक दृष्टिएँ अत्यन्त सरल ओ सहज कवि छथि। भारतवासीक वैशिष्ट्य जाहि तरहेँ अभिव्यक्त भेल, से स्वतः आकृष्ट कय लैछ.—

देश हमर अछि भारत वर्ष
सभसँ बढ़ल चढ़ल उत्कर्ष
जनिक माथपर उज्जर केश
बनल हिमालय निर्मल वेश
हिलि-मिलि गंगा-यमुना नीर
उमड़ल, जहिना मन आवेश

मानवीकरणक दृष्टिएँ 'स्वदेश' कविताकेँ विशिष्ट कहल जा सकैत अछि—

जकर माटि माखनसँ मीठ
जकर पानि लग दूधो ढीठ
मयल-वायुसँ सरस बसात
पुष्ट भेल अछि जमिकहि दीठ
सीखल भाषा, सीटल वेश
जतय, हमर से जयतु स्वदेश

चारिम कवितामे मिथिलाक महत्ता व्यक्त करैत एकरा सभसँ उत्कृष्ट मानलनि अछि। मिथिलावासीक भाषा-भूषा, आहार-व्यवहार, खेत-पथार,

आदिक वर्णन द्वारा गामघरक सजीव चित्र प्रस्तुत भेल अछि—

घर–घर चर्खा टकुरी ताग
बाड़ी–बाड़ी पटुआ साग
चुभकै लेल चभच्चा पानि
लाबा लै अछि सजल मखान
लतरल बेढ़ भीड़ पर पान
मुह मे लाली, गर मे गान
सबतरि केरा आम लताम
सभ सँ सुन्दर हमरे गाम

भारतीय काव्यपरम्परामे ऋतुकेँ विशिष्ट स्थान देल गेल अछि। ऋतु-वर्णन काव्यकलाक खास वैशिष्ट्य थिक। ई अपन कल्पनाशक्तिक बलेँ 'ऋतुक झगड़ा'मे गर्मी ओ जाड़ मासक जाहि स्वाभाविकताकेँ वर्णित कयने छथि, से अत्यन्त व्यापक अछि—

दूहू सँ कल्याण जगक अछि शीत ताप आवश्यक
गर्मी बल जाड़क आदर अछि शिशिर–कम्पसँ तापक
एकक दोसर पूरक बनि हे मित्र ! नित्य बनि जाउ
वर्ष–वर्ष हर्षित करबा ले' मिलि जगती मे आउ

संग्रहि 'परिचय'मे जाहि तरहेँ विभिन्न वैशिष्ट्यक अंकन भेल, सेहो हिनक कवित्वशक्तिक परिचायक थिक—

जखन महिमा अपन माटिक जगत रहले गाबि
अन्नपूर्णा स्वर्ण–अंचल जतय उपजल आबि
दीप–दर्पण वृद्ध वाचस्पति, अयाचिक साग
उदयनक गर्वोक्ति, विद्यापतिक चपकन–पाग

अन्ततः 'सनेस' कवितामे कविवरक उद्‌गार एहि तरहेँ व्यक्त भेल अछि—

उठि भोरे बाबा सिनेह सँ, श्लोक कंठ करबौल
बाबू व्यस्तहु रहि, सिनेह सँ जे किछु नीति सिखौल

बाबी–नानी कथा–पिहानी कहि कत रीति रमौल
माय कते जतने जे बानी रसमे बोरि पिऔल
लय तकरहि माधुरी असेस, अनलहुँ अछि ई अपन सनेस

वस्तुतः मैथिली-साहित्यक सुमेरु आचार्य श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन' प्रणीत 'सनेस' काव्यात्मक वैशिष्ट्यक अमूल्य रत्न थिक। सहजता, सरलता ओ यथार्थताक भावभूमिमे लिखल गेल ई पोथी हिनक काव्य-साधनाक एक सफल उदाहरण थिक आ तेँ बालोपयोगी रचनाक दृष्टिएँ सेहो सनेस' उत्कृष्ट, अभिनव ओ मौलिक काव्य-कृतिक रूपमे उल्लिखित अछि। हिनक समस्त साहित्य मानसरोवरक प्रतीक अछि, जे अपन नैसर्गिक चारुता ओ सहज गम्भीरतासँ मानवक अन्तःकरणमे आनन्दक सृष्टि करैछ। आचार्य सुमनसँ मैथिली-साहित्यके एखनो बड़ आशा छैक।

उत्तरा

डॉ० श्रीअमरनाथझा

'उत्तरा' नामक खण्डकाव्य महाकवि सुमनजीक उत्तरजीवन, अर्थात् जखन ई विश्वविद्यालय-सेवासँ निवृत्त भेलाह तखनुक एक प्रशस्त रचना थिक। उत्तरजीवनमे रचित रहबाक कारण स्वाभाविक अछि जे एहिमे हिनक समस्त अध्ययन-अनुशीलन ओ अनुभवसँ परिपक्व भाव ओ विचारक अभिव्यञ्जना भेल अछि, यद्यपि एहि आशुकविक आरम्भिकहु रचनामे अपरिपक्वता कदापि नहि लक्षित अछि। सुमनजी-रचित एकमात्र खण्डकाव्य रहबाक कारण एकर जे महत्त्व अछि, से तँ अछिए, तकर अतिरिक्त अन्यान्यहु कतिपय दृष्टिसँ मैथिली साहित्यमे एहि कृतिक असाधारण गौरव अछि।

एहि काव्यक सर्वप्रमुख गौरव ई थिक जे एहिमे महाभारतक बहुतो रास कथा वर्णित अछि। महाभारत भारतीय वाङ्मयक एहन मौलिक ग्रन्थ थिक जाहि प्रसङ्ग कहल गेल अछि जे 'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न कुत्र चित्।' अर्थात् एहिमे जे किछु कहल गेल अछि से अन्यत्र कतहु नहि अछि तथा जे एहिमे नहि कहल गेल अछि से अन्यत्रहु कतहु नहि अछि। एहन महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक सारतत्त्व जाहि प्रकारेँ रोचक रीतिसँ सुमनजी मैथिली भाषामे गुम्फित कयलनि अछि ताहिसँ एहि काव्यक संग-संग ओ स्वयं अक्षयकीर्तिमान भऽ गेल छथि। मैथिलीभाषामे महाभारतक आधारपर रचित यद्यपि अन्यान्यो काव्य, यथा मुंशी रघुनन्दनदासकृत सुभद्राहरण, प्रो० तन्त्रनाथझाकृत कीचकवध आदि उपलब्ध अछि, किन्तु ओहि सबमे महाभारतक मौलिक कथाक ओतेक विस्तृत परिचय नहि भेटैत अछि जतेक एहि 'उत्तरा'मे। उत्तरामे पाण्डव-लोकनिक अज्ञातवाससँ लऽ द्रोणपर्व धरिक अधिकांश कथावस्तुक आभास करा देल गेल अछि आ ततबहुसँ महाभारतक सारतत्त्वक आभास भऽ जाइत अछि। खण्डकाव्यक माध्यमसँ एतेक व्यापक कथावस्तुक ज्ञान करायब साधारण काव्य-

कौशल नहि थिक। जीवनपरिधिक विभिन्न विन्दु यथा सम्पत्ति ओ विपत्ति नृत्यसंगीतादि कोमल कला एवं युद्धक विभीषिका, अनुराग एवं विराग इत्यादिक वर्णन कऽ महाकवि सुमनजी एहि काव्यमे ओहि दिशि संकेत कयने छथि जाहि दिशिक बलपर कहल गेल अछि जे महाभारतमे जे किछु अछि ताहिसँ भिन्न कतहु किछु नहि अछि।

एहि काव्यमे श्री सुमनजी कोनो वैयक्तिक वा क्षेत्रीय भावना धरि सीमित नहि रहि राष्ट्रव्यापी भावना दिशि उन्मुख छथि। मिथिला ओ मैथिली सम्बन्धी भाव हमरा लोकनिक हेतु भने बड़ महत्त्वपूर्ण रहओ, किन्तु व्यापक आर्यसंस्कृतिक मुख्यधारसँ विच्छिन्न भऽ हमरालोकनिक जीवन कदापि गौरवास्पद नहि रहि सकैत अछि। एहि तथ्यक अवगाहन कऽ कवि राष्ट्रव्यापी महत्त्वक विषय दिशि एहि काव्यकेँ उन्मुख कयने छथि। मुदा, ताहि संग-संग एहू बातक प्रतिपादन बड़ विलक्षण रीतिसँ कयल गेल अछि जे छोट-छोट घटना सेहो समय-समयपर एतेक महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत अछि वा सामान्यहु व्यक्तिक क्रियाकलाप कोनो–कोनो समय ततेक महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत अछि जाहिसँ समग्र देशक इति–हासक गतिमे परिवर्त्तन आबि जाइत अछि। दृष्टान्तरूपमे राजकुमारी उत्तराकेँ नृत्यपरीक्षामे सर्वतोभावेन उत्तीर्ण देखि जखन समस्त दर्शकवृन्द जयजयकार करऽ लागल छल, तखन सैरन्ध्री (द्रौपदी) सेहो अपन हार्दिक उद्गार प्रदर्शित करबाक हेतु अपन हृदयहार बहार कऽ उत्तराक कण्ठमे पहिरा देलनि। सैरन्ध्रीक ई कार्य अनायास घटित भऽ गेल छल, कलाप्रेम ओ दानशीलताक कारण हुनक हाथेँ एहि प्रकारक कार्य अनायास ओ स्वाभाविक रूपमे भेल छल, किन्तु संयोगवश हुनक हाथेँ वैह हार उत्तराक कण्ठमे पहिराओल गेल छल जे पाण्डव लोकनिक कुलवधूक आभूषण छल, से देखितहिँ पाण्डव चौंकि उठल रहथि जे ई हार तँ ओहि कनियाँक कण्ठमे पड़ब उचित छल जे हमर कुलमे पुत्रवधू पदपर प्रतिष्ठित होथि। तत्कालेँ हुनक मस्तिष्कमे इहो बात जमि गेल जे यदि ई हार उत्तराक कण्ठमे पड़िए गेल तखन आब यैह यत्न कर्त्तव्य थिक जाहिसँ ई हमर पुत्रवधू भऽ जाथि। अर्जुनक एहि मानसिक संकल्पक ई परिणाम छल जे उत्तराक विवाह अभिमन्युक संग घटित भऽ सकल। एतावता ई प्रमाणित होइत

अछि जे जीवनमे कतिपय छोट-छोट घटना सेहो कोनो-कोनो समय एतेक महत्त्व-पूर्ण सिद्ध भऽ जाइत अछि जाहिसँ देशक इतिहासक गति बदलि जा सकैत अछि। एहि प्रसङ्ग इहो उल्लेख कऽ देब आवश्यक अछि जे उपर्युक्त घटना सुमनजीक निजी कल्पना थिकनि, आधारग्रन्थ महाभारतमे द्रौपदी द्वारा हर्षो-द्गारमे उत्तराक कण्ठमे अपन कुलक्रमागत हार पहिरयबाक कोनो उल्लेख नहि अछि। सुमनजी एहि घटनाक उद्भावना कऽ नियतिचक्रक गतिक प्रसङ्ग अपन वैयक्तिक दृष्टिकोण आभासित कयलनि अछि।

तहिना, नृत्यसमारोहक अन्त भेलापर जखन सब क्यो अपन अपन निवास-स्थान दिस जा रहल छल तँ एकान्त अवसर पाबि कामार्त्त कीचक सैरन्ध्रीक घर्षण करबा दिशि जे लागि गेल से राजमहलक भोगविलासमय वातावरणक लेल एकटा साधारण घटना मानल जा सकैछ, किन्तु कीचकके सैरन्ध्रीक स्वरूपक अनुमान करबामे जे भ्रान्ति भऽ गेल छलैक, तकरे दुष्परिणामस्वरूप ओकरा मृत्युदण्ड भोगऽ पड़लैक, तकर आनुषङ्गिक परिणाम स्वरूप दुर्योधन-लोकनिकें सन्देह उत्पन्न भऽ गेलैक जे पञ्चपाण्डव लोकनि विराटराजाहिक आश्रयमे अज्ञातवास कऽ रहल छथि। तखन ओ लोकनि सन्देहक निराकरण करबा लेल विराट राजपर आक्रमण कऽ देल आ एवंप्रकारें ऐतिहासिक घटनाचक्रमे गति परिवर्त्तन अबैत गेल। एहि प्रकारें एहि काव्य द्वारा प्रमाणित होइत अछि जे राष्ट्रनीति वा लोकनीतिक राष्ट्रव्यापी प्रवाहक गतिनिर्द्धारणमे एहनो-एहनो व्यक्तिक क्रियाकलाप समय समयपर असाधारण महत्त्व रखैत अछि जकर जीवन सामान्यरूपसँ महत्त्वहीन रहैत अछि। समाजवादी राजनीतिमे व्यक्तिक महत्त्व गौण मानल गेल अछि, किन्तु सुमनजी एहि रहस्य दिशि बड़ कुशलतापूर्वक ध्यानाकर्षण कयने छथि जे राष्ट्र, समाज ओ परिवारक हेतु व्यक्तिगत आचरण सेहो कतेक बेसी महत्त्वपूर्ण रहैत अछि। पुनः एहि बातक उल्लेख कऽ देब आवश्यक अछि जे नृत्य-समारोहसँ प्रत्यागत होयतहि काल एकान्त अवसर पाबि कीचक जे सैरन्ध्रीक प्रति बलात्कार-चेष्टा कयलकनि, सेहो सुमनजीक मौलिक उद्भावना थिकनि, आधारग्रन्थ महाभारतमे तँ ई वर्णित अछि जे महारानी सुदेष्णाक आदेश पाबि सैरन्ध्री जखन कीचकक शयनगृहसँ आसव आनऽ गेलीहि तखनुक अवसरपर कीचक एहि प्रकारक प्रयास कयने रहय। सुमनजी जाहि

प्रकारक अवसरक उद्भावना कयने छथि ताहिसँ द्रौपदीक चरित्र अपेक्षाकृत उच्चतर प्रमाणित होइत अछि, अतः एहि प्रकारक उद्भावनासँ सुमनजीक सूक्ष्मदर्शिता एवं प्रतिभा सेहो नीक जकाँ प्रमाणित होइत अछि।

आर्यसंस्कृतिक विकासमे नारीक सहयोग कतेक महत्त्वपूर्ण रहैत आयल अछि ताहि प्रसङ्ग उत्तरा द्वारा एकटा कीर्तिमान स्थापित भेल अछि। जे नारी एकदिशि नृत्यसंगीत ओ अन्य समस्त ललितकलाक साक्षात् मूर्ति-स्वरूप आह्लाद प्रदान करबाक क्षमता राखि सकैत छथि, सैह नारी विषम परिस्थिति पड़लापर कुलिशकठोर सेहो भऽ जा सकैत छथि, से उत्तराक चरित्रसँ नीक जकाँ प्रमाणित होइत अछि। जे उत्तरा राजप्रासादमे समस्त सुखसुविधा मध्य रहि गीत-नृत्यक एकान्त साधनामे संलग्न रहैत छलीहि सैह आसन्नप्रसवा रहितहुँ शत्रुक कपट-पूर्ण व्यूहरचनाक भेदन-निमित्त अपन पति अभिमन्युकेँ रणोत्साह प्रदान करबामे कनेको तारतम्य नहि कयलनि, यद्यपि एहि बातक आशंका पूर्वहिँ छल जे द्रोणाचार्यक चक्रव्युहसँ अभिमन्यूकेँ जीवित बहरा जायब असम्भवप्राय छल। उत्तराक समक्ष एकदिशि नवयौवन जनित समस्त भोगविलासक साम्राज्य छल आ दोसर दिशि वैधव्यदुःखसमुद्र। किन्तु, कुलगौरव ओ राष्ट्रीय हितक रक्षार्थ ई अपन वैयक्तिक भोगविलासक बलिदान करबामे कनेको न-नु-म-च नहि कयलनि। वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' अर्थात् फूलहुसँ बेसी कोमल रहितहुँ समय पड़लापर वज्रहुसँ बेसी कठोर बनि जयबाक क्षमता हिनकामे छलनि, आ एहने सक्षम नारी लोकनिक अवदानपर भारतीय संस्कृतिक गौरवमे श्रीवृद्धि होइत रहल अछि। उत्तरा सदृश नारी जँ अवतीर्ण नहि भेल रहि-तथि तँ भारतवर्षक इतिहास ओ संस्कृति एतेक गौरवमय कदापि नहि भऽ सकितय। अभिमन्यु द्रोणाचार्यक व्यूहभेदन कय जे वीरगति प्राप्त कयलनि से महाभारत-युद्धक गतिनिर्धारणमे बड़ मार्मिक घटना छल, आ ओहि नव-विवाहित नवयुवक अभिमन्युकेँ जयमाल पहिराय युद्धप्रयाण करबालेल प्रोत्साहित कय उत्तरा जाहि प्रकारक धैर्य ओ त्याग प्रदर्शित कयलनि से महाभारतक युद्धक हेतु एकटा निर्णायक घटना छल। ततबे नहि, ओहि महायुद्धक पश्चात् पाण्डव-लोकनि उत्तराधिकार वहन कयनिहार परीक्षितक जन्म देबाक श्रेय सेहो एही

उत्तराकें छलनि, आ तें ऐतिहासिक दृष्टिसँ सेहो उत्तराक असाधारण महत्त्व अछि। एहन महिमामयी उत्तराक प्रसङ्ग एकोटा स्वतंत्र काव्य-रचना नहि भेल छल, से एकटा विषम विषय छल। श्री सुमनजी सदृश सहृदय कवि एहि तथ्यकें हृदयङ्गम कऽ एहि काव्यक जे रचना कयल से यथार्थतः बड़ प्रशंसनीय थिक। जेना राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्तहिकें एहि बातक गौरव प्राप्त भेलनि जे प्रथमतः वैह अपन 'साकेत' नामक प्रबन्धकाव्यमे प्रमाणित कयलनि जे रामायणक कथाक विकासमे लक्ष्मणपत्नी उर्मिलाक चरित्र अन्य कोनहु चरित्रसँ कम महत्त्वपूर्ण नहि अछि, तहिना महाकवि सुमनजी एहि काव्यमे प्रमाणित कऽ देने छथि जे महाभारतक कथाविकासमे उत्तराक महत्त्व उत्तरदिशि स्थित ध्रुव नक्षत्र जकाँ ध्रुव अछि। उत्तराकें नृत्यशिक्षा प्रदान करबाक अवसर पाबिएकऽ अर्जुन अज्ञातवासक समय व्यतीत कऽ सकल रहथि, उत्तरा द्वारा प्रोत्साहन पाबिकऽ अभिमन्यु चक्रव्यूह-भेदन हेतु प्रस्थित भेल रहथि, तथा पाण्डवलोकनिक राज्यक उत्तराधिकारीकें जन्म देबाक श्रेय सेहो उत्तरहिकें छलनि। एहन महिमामयी नारीक चरित्रकें उजागर करबाक सर्वप्रथम श्रेय हिनके छनि।

भारतीय संस्कृतिक महत्ता प्रवृत्ति ओ निवृत्तिक समन्वय-विन्दुपर केन्द्रित अछि, आ ताहि तथ्यकें एहि काव्यमे बड़ चमत्कारपूर्णरीतिसँ निर्देशित कयल गेल अछि। मनुष्य-जीवनमे नृत्यसंगीतप्रेम ऐहिक ओ दिव्य दुनू प्रकारक आनन्दक जेहन अनुपम मनोरम अनुभूति प्रदान करैत अछि तकर छवि उत्तराक कलासाधनक वर्णनमे बड़ कुशलतापूर्वक रूपायित भेल अछि। पुनश्च उत्तरा एकदिशि जँ कौलिक स्वत्वरक्षार्थ अपन नवपरिणीत जीवनाधारकें युद्धयात्राकालमे प्रोत्साहित करैत छथि तँ दोसर दिशि कृष्णक ज्ञानोपदेशक मनन करैत वैधव्यदुःख रूपी समुद्रतरण करबाक धैर्य सेहो धारण करैत छथि। जे उत्तरा संगीत ओ नृत्यक लहरिसँ समस्त सभासदक संग-संग आचार्यहुकें भावविभोर बना देने रहथि, सैह उत्तरा कौलिक मर्यादाक रक्षार्थ अपन पाञ्चभौतिक अस्तित्व बिसरि निवृत्तिमयी तपस्वनीक जीवन अङ्गीकार कऽ भारतीय संस्कृतिक जाहि उच्चतम गौरवशिखरकें प्राप्त कयल, तकर दृष्टान्त इतिहासमे विरल अछि, आ तकर बखान करबाक श्रेय मैथिली साहित्यमे सुमनहिजीकें सर्वप्रथम प्राप्त छनि।

तें कहल जा सकैछ जे एहि 'उत्तरा'क माध्यमसँ सुमनजी भारतीय संस्कृतिक मौलिक वैशिष्ट्यक व्याख्या बड़ रोचक रीतिसँ कयने छथि।

'उत्तरा'क रस, ध्वनि, गुण, अलङ्कार ओ पदयोजना आदि चमत्कारक उल्लेख करब हम अनावश्यक बुझैत छी, किएक तँ ई बात स्वतःसिद्ध अछि जे जीवनभरि काव्यभारतीक साधनामे रत रहि देशव्यापी ख्यातिलाभ कयनिहार सुमनजी जे किछु रचना करैत छथि, ताहि सबमे उपर्युक्त तत्त्व सब ओहिना स्वाभाविक रूपमे समाविष्ट रहैत अछि जेना चन्द्रमामे आह्लादकता सहज रूपमे वर्त्तमान रहैत अछि। किन्तु एहि बातक उल्लेख कऽ देब आवश्यक बुझैत छी जे एहि खण्डकाव्यक माध्यमसँ भारतीय वाङ्मयमे संचित विशाल ज्ञान-भाण्डार बड़ कुशलतापूर्वक आलोकित भेल अछि। छद्मवेषधारी पञ्चपाण्डव तथा द्रौपदी मिलि जीवनोपयोगी सम्पूर्ण कलाज्ञानक साकार रूपमे तँ प्रतिभासित भइए रहल छथि, संगहि राजनीति ओ अर्थनीति सम्बन्धी वार्त्ता द्वारा स्थान-स्थानपर विविध उपयोगी ज्ञान वितरित कयल गेल अछि। विषम परिस्थितिहुमे लोक अपन मान-मर्यादाक रक्षा कोन विधिसँ कऽ सकैत अछि, परोपकार ओ कृतज्ञताक की महत्त्व ओ उपयोगिता छैक; व्यक्ति, परिवार ओ कुलमे परस्पर केहन भाव रहबाक चाही आदि लौकिक ज्ञानक संग-संग परमात्मतत्त्वहुक विवेचन बड़ मार्मिक रीतिसँ कयल गेल अछि। कृष्णक द्वारा विधवा उत्तराकेँ जाहि रीतिसँ परमज्ञानक व्याख्या सुनाओल गेल अछि से ओहने महत्त्वपूर्ण अछि जेहन महाभारतयुद्धमध्य मोहकातर अर्जुनकेँ सुनाओल गेल गीताक उपदेशक महत्त्व अछि। एहि प्रकारेँ देखैत छी जे अर्थ, धर्म, काम ओ मोक्ष, चतुर्वर्ग पुरुषार्थसाधक ज्ञान एहि काव्य द्वारा बड़ रोचक रीतिएँ आलोकित भऽ रहल अछि। लघुकाय रचना रहितहुँ एकर अध्ययन-अनुशीलनसँ लोककेँ जीवनपथपर असाधारण प्रकाश भेटैत छैक। काव्यरचनोक सर्वाधिक उपयोगिता तँ सैह थिक।

स्तोत्रसाहित्य

डा० श्रीफूलचन्द्रमिश्र 'रमण'

भारतीय संस्कृतिमे उपासना विधिक स्वतन्त्र सत्ता स्थापित भेलापर भक्तिपरक हृदयस्पर्शी स्तुति करबाक परम्परा चलल, जे पछाति स्तोत्रसाहित्यक स्वरूप धारण कयलक। एकर तीन विभाग भेल—शैव, शाक्त एवं वैष्णव स्तोत्र। धर्मक आधारपर जैन एवं बौद्ध स्तोत्रक प्रणयन सेहो पर्याप्त भेल। संस्कृतमे स्तुति-रचनाक आरम्भ दोसर शतीसँ मानल जाइत अछि।

स्तोत्र-साहित्यमे कवि अपन उपास्यदेवक महिमावर्णन, भक्तिक प्रदर्शन तथा दार्शनिक विषयपर गम्भीर विवेचन करैत रहलाह। हृदयक दीनता ओ दयनीयताकेँ दास्यभावेँ मधुर शब्दमे अभिव्यक्त कऽ अपन भावुकताक परिचय दैत रहलाह। भगवानक उदारता, विशालता तथा दिव्य ऐश्वर्यक आत्म-विस्मृत—परिकल्पना कऽ असीम अनुकम्पाक अभ्यर्थी होइत रहलाह। फलस्वरूप, स्तोत्रमे साहित्य ओ संगीत दुनूक मधुर समागम भेल, जाहिसँ धर्मप्रिय जन-मानसपर एकर पूर्ण प्रभाव पड़ल।

संस्कृत एवं प्राकृतक पश्चात् आधुनिक भारतीय भाषा साहित्यमे जे भक्तिवादक सिंहनाद भेल, द्वैत, अद्वैत ओ द्वैताद्वैतक वाद-प्रतिवाद भेल तकरहु मुख्य प्रभाव संस्कृते स्तोत्र साहित्य मानल जाइछ। एहि प्रसंग आचार्य सुमनक उक्ति अछि—"संस्कृतक भक्तिवाङ्मय परवर्ती कालमे प्रवाहित भऽ लोकभाषाक साहित्य क्षेत्रके उर्वर बना देल। पराप्रीतिमूलक भक्तिधारा समस्त मध्यकालीन भाषासाहित्यकेँ सिक्त-अभिषिक्त करैत जनमानसकेँ उद्बुद्ध कऽ देलक। एकर प्रभाव मैथिलीक समस्त प्राक्तनसँ अद्यतन साहित्यमे परिलक्षित होइछ।"

मैथिली साहित्यमे आचार्य सुमनक जे स्तोत्र साहित्यक अन्तर्गत मौलिक ओ अनूदित रचना अछि, ताहि प्रसंग किछु परिचयात्मक प्रयास प्रेक्षणीय थिक।

हिनक 'नमः शिवाय' पञ्चाक्षर स्तोत्र अछि। अनुप्रासक सुवाससँ गमगमाइत एहि स्तोत्रमे हृदयक मञ्जुल भाव, शब्द-योजनाक पाण्डित्य तथा प्रार्थना ओ स्निग्धताक कमनीय मनोज्ञ अभिव्यक्ति भेल अछि। मानस-पूजाक समर्थक कवि कोनो मंदिर वा तीर्थक शंकरक नहि, माटिक महादेवक स्तुति करैत छथि तथा अपार महिमाक निदर्शन करैत छथि—

'महिमामय माटिक महादेव मनसा मकारमय नमस्कार'

भक्तकविमे उपास्य देवक प्रति सहज स्वामि-दास भाव रहैत अछि। आचार्य सुमन शिवकेँ 'नाथ' कहि अपन भक्तिरसक गम्भीर अनुभूतिक उद्‌गार व्यक्त कयलनि अछि --'नाथ नित्य नाचथि नङटे।' परन्तु परम्परागत स्तुति-माहात्म्यक परित्याग कयने छथि जे हिनक आधुनिकताक परिचायक थिक।

'शैवी भूमिका'मे साहित्यक सौन्दर्य ओ आध्यात्मिक गाम्भीर्य दुनू एकत्र मण्डित कऽ शिव-स्तव करैत छथि—

रहितहुँ मगन नगन, गरिमा गनितहुँ, लघिमा जनि सिद्ध
माथ सुधाकर रहितहुँ, जनिक गरल गर भरल प्रसिद्ध
वामहुँ सभक दहिन, नागक नाथहु अनाग चिर ख्यात
दोषाकर केँ माथ चढ़बितहुँ सगुण रूप विख्यात

ब्रह्म एवं शंकरक तादात्म्यक प्रसंग आचार्य कहैत छथि—'भारतीय उपासना-शास्त्रमे 'एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः' द्वारा ब्रह्म एवं शंकरक तादात्म्य प्रकट अछि। अथापि जे ऐतिहासिक रुद्रकेँ अनार्य देवता कहैत छथि, हुनक रूप-कल्पनामे अश्लीलता देखैत छथि, किन्तु ओकर आन्तरिक स्निग्धरसक आस्वादनसँ दूर रहैत छथि। यजुर्वेदीय रुद्र-सूक्तमे—नमः शंकराय च, शिवाय च, शिवतराय च—एहि क्रम-योजनाक दिस, जेना जानि-बूझि कऽ दृक्‌पात नहि करय चाहैत छथि।'

शिखरिणी छन्दमे ग्रथित शिवमहिम्नःस्तोत्र संस्कृतक शैव-स्तोत्रमे सर्वाधिक लोकप्रिय अछि। एकर पद्यानुवाद करैत कविक पूर्वाभास अछि—'प्रस्तुत

शिवमहिमा गन्धर्वपति पुष्पदन्तक रचित 'शिवमहिम्नःस्तोत्र'क मैथिली रूपान्तर अछि जकरा सम्बन्धमे कहल जाइछ 'महिम्नो नापरा स्तुतिः।' मातृभाषामे एकरा छन्दोबद्ध करबाक प्रयास वाग्विलास लेल नहि, केवल 'तेनतृप्यतु शंकरः।'

एतय 'एहि प्रयाससँ शंकर प्रसन्न होथु' ई जे संतुष्टि–प्रवृत्ति अछि ओ समर्पण-भावक द्योतक थिक। ताही निमित्त पुष्पदन्तक स्वरमे सुमनक सेहो अत्युक्ति अछि --'शिव सर्वोपरि देव छथि चरम महिम्न–स्तोत्र।'

'शक्ति-स्तवक' मे चारि महाविद्याक स्तोत्र संकलित-अनूदित अछि। अनुवक्ताक स्वयं स्पष्ट कथन छनि—"प्रस्तुत शक्ति-स्तवकमे जे सभ स्तोत्र संकलित अछि ओ उपासना सम्प्रदायमे शीर्ष-स्थानीय रूपमे मान्य अछि, भक्त-साधकक कंठक बहुमूल्य माल्य अछि। ओही सभकेँ मातृभाषामे अनुकलन करबाक रुचि-मत, भाव-गत प्रयास थिक।" एतय कविक मौलिक भगवती-स्तुति 'नमस्तस्यै' द्रष्टव्य अछि—

चिर-पुरातनी जगतक जननी वृद्धा वेद प्रसिद्ध
तदपि षोडशी त्रिपुरसुन्दरी नित्य यौवना सिद्ध
काली श्यामा नीरदवर्णा, तदपि सुवर्णा गौरि
नगना अबरवसना, कमला कनक कमल कर ओरि

एतय 'रमणीयार्थ प्रतिपादकता' कविक रुचि-मत भेल अछि तथा भाव-गत अछि—अहेतुक हित-साधक मातृभक्ति।

जगद्गुरु शंकराचार्यक आनन्दलहरी तथा सौन्दर्यलहरीक सेहो ई मैथिली रूपान्तर कयने छथि। हरिस्मरणिका (विष्णुस्तोत्र) पर हिनक छन्दोबद्ध भाषानुवाद अछि। हिनक आनो पुस्तक ओ छिट-फुट रचनाक आधारपर समग्ररूपमे एतावता प्रमाणित होइछ जे—कवि स्वभावसँ शैव, संस्कारसँ शाक्त तथा व्यवहारसँ वैष्णव छथि। एहि त्रिवेणी-संगमसँ हृदय-ग्राहिणी ओ भाव-संवाहिनी काव्य-स्तुति मैथिली काव्यधारामे जाहि वैशिष्ट्य आ नैपुण्यसँ तरंगायित भेल अछि ओ सुमनक व्यक्तित्व एवं कृतित्वक अक्षय स्रोत थिक। मानव-जीवनक स्थायी मूल्यवान् तत्त्वक रस-निःस्यन्द थिक।

संस्कृत ओ मैथिलीमे आनोआन देव-देवी आ तीर्थक वन्दना भेल अछि—

'आनो अनेक देवता-तीर्थक स्तुति-परम्परा प्रचलित अछि किन्तु ओ सभ अल्प-स्वल्प। तीर्थवन्दनामे सर्वाधिक गंगाक स्तुति अछि। 'आचार्य सुमनक 'गङ्गा-तरङ्गिणी' मिथिलाञ्चलमे एतेक प्रसिद्ध भेल जे आइ लगभग चारि दशकसँ ई हुनू अन्वर्थनामा भऽ गेल अछि।

पाँच गोट स्तुति-पद्यसँ संकलित 'अर्चना' स्तोत्र-साहित्य अथवा भक्ति-काव्य थिक। एहि सम्बन्धमे डा० शैलेन्द्रमोहन झाक उक्ति अछि—'हिनक अर्चना मैथिली मन्दिरक एक भक्ति-प्रधान काव्य अछि।' स्वयं कवि 'संकल्प-विकल्प'मे कहैत छथि—

प्राणमे रक्षित हमर जे भाव तकरा आनि
अहिंक आगाँ समर्पित कय रहल छी हे दानि !
एतबे हमर थिक अर्चना

यद्यपि गंगा-तरंगिणीमे कविक अलौकिक काव्यप्रतिभा ओ दिव्य चमत्कार प्रदर्शित भेल अछि, तथापि भक्तिजन्य दीनता एवं आत्मनिवेदन जाहि हृदय-द्रावक शब्दमे भेल अछि ओहिसँ कोन सहृदय-व्यक्तिक चित्त भक्तिभावेँ आर्द्र नहि भऽ जाइछ—

हमर हृदय-कुहरक निविड़, अछि अभेद्य मोहक अमा
करुणा-किरणक एक कण दय प्रकाशमय करब मा

क्रान्तदर्शी कवि एतय भाव-विभोर भऽ निर्वाणलोकमे विचरण करय लगैत छथि। 'यदि न हमर हो भाग्य' कहि लौकिक जीवनसँ मुक्ति पाबि परमानन्द-सहोदर निमित्त अध्यात्म-तत्त्वक सत्त्वमे मिलि जयबाक अभीष्ट-सिद्धि चाहैत छथि—

ओहि पथक हम रेणु-कण बनी जाहि पथ पथिक जन
जाथि, तनिक पद लागि कहुँ जाय मिली तट बालु-कन

भक्तिरससँ ओतप्रोत हृदयमे सामाजिक प्राणीक प्रति ऊँच-नीचक भेद-भाव, राग-द्वेष, अन्याय-अनिष्ट आदि सत्य-शिव-सुन्दरक स्थायीभावमे परिवर्तित भऽ जाइछ। साधु-समभाव, सहज-प्रेम ओ कल्याणक उत्कर्षसँ मन-मन्दिर देदीप्यमान भऽ जाइछ। एहि प्रसंग आचार्यक सार्थक वाणी ध्वनित अछि—

द्विज-अन्त्यज के एक घाट जल अहाँ पिओलहु
दलित-दलहु के पानि परसि हरि-पद पहुँचोलहुँ

उपासनाक्षेत्रमे निरन्तर संयमित रहने आत्म-संतोष मनःशान्ति तथा जीवनक सार्थकताक बोध होइत छैक। ओहि बोध-इजोतमे तन्त्र-मन्त्र ओ विविध उपचारक संग मन्दिरहि वा ठाँव-बाटेपर उपास्यदेवक अर्चना करब आवश्यक नहि रहि जाइछ। प्रत्युत अपन निर्मल मनके मन्दिर मानि ओहीमे श्रद्धापूर्वक पूजा-अर्चाक भाव-विधान उपासक कऽ लैछ। एही पृष्ठभूमिमे कविक देश रम्यतासँ अभिव्यंजित ध्यान-धारणा ओ आभ्यन्तर-अर्चना द्रष्टव्य थिक—

मूर्धन्य ध्वनि हे! राग रस केर अधर मधुर निवासिनी
वर्णमयि ! अपरूप रूपक कविक हृदय विलासिनी
× × ×
नित्य ऋतु-शृंगार सजनहु प्रकृति रहथि पराजिता
हृदय-मन्दिर मूर्त्ति पूजित सुन्दरी अपराजिता

आचार्य सुमनक स्तोत्र-साहित्य (भक्तिकाव्य)क भाषा तथा भाव, रस एवं अलंकार, साहित्य ओ अध्यात्म कौनो दृष्टिसँ अनुशीलन कयल जाय तँ एकर अलौकिकता पदे-पदे प्रमाणित होयत। भावक उदात्तता एवं कल्पनाक प्रचुरतासँ मण्डित हिनक स्तुति बड़ प्रासादिक ओ नैसर्गिक अछि। स्तोत्र-साहित्यमे हिनक स्तुति आस्तिकवादक स्तुत्य उदाहरण भेल अछि। कवियेक शब्दमे मननीय अछि—

मैथिलीक पद-अंगुलिक विभा उदित भय कविक उर
अरुण करुण रस-रश्मिसँ हरओ लोक-व्यापित तिमिर

अनुवाद-साधना

श्रीगोविन्दझा

अनुवाद द्वारा मैथिली-साहित्यक संवृद्धि करबाक श्रेय प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'केँ अन्य ककरहुसँ कम नहि छनि। ई संस्कृत ओ बङ्गला दू भाषासँ अनुवाद कयने छथि। दूनूक विवेचन फूट-फूट करब। संस्कृतसँ जे अनुवाद कयने छथि तकर मूल प्रेरक अछि हिनक भक्तिभावना --देशविषयक वा देव-विषयक। संस्कृत भाषा ओ साहित्यक दू भेद अछि—वैदिक ओ लौकिक।

पुत्रोऽहं पृथिव्याः—वैदिक संस्कृतसँ जे अनुवाद कयने छथि से थिक 'पुत्रोऽहं पृथिव्याः'। एहिमे अर्थववेदक बारहम काण्डक प्रथम सूक्तक अनुवाद अछि जे 'पृथ्वीसूक्त' वा 'भूमिसूक्त' कहबैत अछि। समस्त वैदिक साहित्यमे ई सूक्त प्रायः सर्वोत्कृष्ट मानल गेल अछि। एहिमे प्रकृतिक वरद ओ सम्मोहक स्वरूपक चित्रण नितान्त आत्मीयतापूर्वक कवित्वमय भावोद्रेकमे कयल गेल अछि जाहिमे ने धार्मिक तर्कहीनता अछि आ ने अविश्वसनीय आख्यान। अतः मैथिलीमे अनुवादार्थ एहि सूक्तक चयन सुमनजीक सदसद् विवेकक परिचय दैत अछि। दोसर बात ई जे सुमन केवल एक कविए टा नहि, अपितु अपन मातृभूमिक प्रति ओ अपन गौरवमय प्राचीन परम्पराक प्रति तीव्र संवेगसँ भरल एक उत्कृष्ट राष्ट्रनेता सेहो छथि। तेँ एहि पृथ्वी सूक्तमे हुनका अवश्ये उदात्त राष्ट्रीयताक सन्देश भेटल होयतनि। आरम्भमे मंगला-चरण रूपमे अपन एक मौलिक संस्कृत कविता 'राष्ट्रिय मधुराष्टकम्' शीर्षकसँ देने छथि जे एतऽ विवेच्य नहि अछि। ततःपर उक्त सूक्तक सरल-सरस अनुवाद देलनि अछि जाहिमे तिरसठि गोट ऋचा अर्थात् श्लोक अछि। अन्तमे 'आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो……' इत्यादि वैदिक मन्त्रक अनुवाद सेहो देलनि

अछि। एही मन्त्रसँ मिथिलामे दूर्वाक्षत देल जाइत अछि। एहिमे राष्ट्रक मंगल-कामना बड़ उदात्त रूपमे कयल गेल अछि। प्रायः समस्त वैदिक साहित्यमे एही टू ठाम उदारतम राष्ट्रीय भावनाक स्वर मुखरित भेल अछि।

वैदिक ऋचाक अनुवाद अक्षरशः नहि कयल जा सकैत अछि। से कयने अनुवाद नीरसे नहि, दुर्बोधो भऽ जायत। एक कुशल अनुवादकक रूपमे सुमनजी ई बात खूब जनैत छथि। अतः एकर अनुवादमे ओ अन्तर्निहित आशयकेँ स्पष्ट करैत आ मूल भावकेँ सम्पुष्ट करैत किछु-किछु मौलिकता ओ अपन कारयित्री प्रतिभा सेहो देखओलनि अछि। यथा —

रत्नाकर करइत तिरपेच्छन जनिक चरण पूजै छथि
नित गतिशीला सरिता कृषि-सस्यादि उपज बढ़बै छथि
रंग-बिरंग वनस्पति खगमृग मीन मनुज-सन्तान
पय पिबइत जिबइछ तेहि जननिक कोर हमर वरदान

एकर मूल ऋचा ओ अविकल गद्यानुवाद नीचाँ देल जाइत अछि जाहिसँ स्पष्ट होयत जे अनुवादक अपना दिससँ कतेक मसाला भरलनि अछि—

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो
यस्यामन्नं कृष्टयः सम्बभूव
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्
सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु

[जाहिमे समुद्र, सिन्धु आओर जल अछि, जाहिमे अन्न उपजैत अछि आ खेती होइत अछि, जाहिमे प्राणी सभ जीबैत अछि से भूमि हमरालोकनिकेँ दूध पिआबथु।]

एहि ठाम समुद्रक तिरपेच्छन करब आ चरण पूजब, सिन्धु अर्थात् सरिताक उपजा बढ़ायत, जननीक कोर आ वरदान — ई सभ अनुवादक अपना दिससँ भरलनि अछि। एहि प्रक्षेपसँ निःसन्देह मूलक आशय स्पष्ट भेल अछि आ भाव पुष्ट भेल अछि। मूलमे दू शब्द ध्यान देबाक योग्य अछि—प्राणत् (जे श्वास लैत अछि) आ एजत् (जे स्पन्दित होइत अछि)। अतः प्राणत्सँ अभिप्रेत अछि जीव आ एजत्सँ वनस्पति। विद्वान् अनुवादक भावकेँ विशद

कयलनि अछि "रंग-बिरंग वनस्पति खग-मृग मीन मनुज सन्तान।"

एकर विपरीत जतऽ मूल स्वतः स्पष्ट ओ कवित्वमय अछि ततऽ अनुवाद यथासम्भव अविकल भेल अछि। यथा—

यस्ते गन्धः पृथिवि सम्बभूव
यं बिभ्रत्योषधयो यमापः
यं गन्धर्वा अप्सरसश्च भेजिरे
तेन मा सुरभि कृणु मा नो द्विक्षत कश्चन

गन्धवती पृथिवी, अहाँक कन-कन व्यापित जे गन्ध उदार
जकरासँ अन्नौषधि सुरभित, जकरासँ सुरसरि मधुधार
जकरा सेवथि सुर गन्धर्व सगर्व अप्सरा लोलुप चित्त
सुरभित करब अहाँ हमरा, नहि करय द्वेष क्यौ ताहि निमित्त

अविकलक अर्थ ई नहि जे एको शब्द मूलसँ बेसी नहि रहय। किछु शब्द एहूमे जोड़ल अछिए। जेना 'गन्धवती' शब्द मूलमे नहि अछि। 'कण-कणमे गन्ध व्याप्त अछि' ई कहि देलाक बाद 'गन्धवती' कहब एक प्रकारेँ पुनरुक्ति भेल। एहिना 'अन्नौषधि'मे अन्न फाजिल सन लगैत अछि। मुदा वैदिक भाषामे अन्न सहित वनस्पति मात्र ओषधि थिक, तेँ अन्नक पृथक् उल्लेख अनावश्यक। परन्तु मैथिलीमे ओषधि थिक रोग-निवारक वनस्पति, पेट भरनिहार वनस्पति नहि। तेँ अनुवादक उचिते अन्न शब्द जोड़लनि अछि। पुनः मूलमे अछि केवल 'आपः', जकर अर्थ नदी कयल जा सकैत अछि, परन्तु अनुवादक नदी विशेष 'सुरसरि' राखि देलनि अछि। एहिना मूलमे गन्धर्व ओ अप्सरा तँ अछि किन्तु सुर नहि अछि। 'सगर्व' आ 'लोलुपचित्त' केवल पादपूरक वा फिलर थिक। पद्यानुवादमे किछु-ने-किछु पादपूरक वा अन्त्यानुप्रास साधक तत्त्व अत्याज्य भऽ जाइत अछि। अन्त्यानुप्रास अनुवादककेँ वा सामान्य पद्यनिर्माताकेँ कतेक विवश कऽ दैत अछि तकर एक उदाहरण एहि पुस्तकक प्रथमे ऋचामे देखल जाय। मूलमे कहल गेल अछि "सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति" अर्थात् सत्यऋत आदि पर पृथ्वी टिकल अछि; मुदा अनुवाद अछि—

ऋत सत्य बृहत ओ उग्र यज्ञ तप दीक्षा
ब्रह्मत्व एते आधार धराक परीक्षा

स्पष्टतः एतऽ 'परीक्षा' शब्द अन्त्यानुप्रासलाभार्थ खोंसि देल गेल अछि, ई सभ धराक आधार थिक एतबहिसँ कथ्य पूर्ण भऽ जाइत अछि।

कतोक ऋचाक अनुवाद एतेक उत्कृष्ट अछि जे अनुवाद थिक से कनेको भान नहि होयत, ततबे नहि, मूलहुसँ अधिक ललित ओ प्रभाववान् लागत। यथा—

गिरि पर्वत हिमवन्त गगन चुम्बी अति उज्ज्वल
हरित-भरित वन-कानन फल दल लदल तरुक दल
जकर भूमि परिसर श्यामल सित रक्त पीत भल
धनपति इन्द्रक कृपा वृष्टि-सिंचित धरती-तल
बनि अजेय निर्भय बसी करइत धरणी-वन्दना
नहि शत्रुक आक्रमण ने आघातक सम्भावना

एही प्रकारक अनुवाद-सौष्ठव अछि ऋचा ७,१०, १३, ४४, ४५ आदिमे।

उपसंहार रूपमे निःसंकोच कहल जा सकैत अछि जे सुमनजीक अनूदित रचनामे 'पुत्रोऽहं पृथिव्याः' सभसँ उत्कृष्ट ओ उपादेय भेल अछि। मूल ग्रन्थ वैदिक भाषामे अछि जकर अर्थ पण्डितहुकेँ बिनु टीका देखने लागब कठिन। अतः ई अनुवाद कैक हजार वर्ष पुरान दुर्बोध वरेण्य साहित्यक रस सर्वसाधारण पाठककेँ सुलभ करबैत अछि—इएह थिक एकर सर्वोपरि उपादेयता।

लौकिक संस्कृतमे ई तीन प्रकारक वस्तुक अनुवाद कयने छथि—मुक्तक काव्य, स्तोत्र ओ कथा। काव्यमे ई शृंगारतिलक ओ ऋतुशृंगारक अनुवाद कयने छथि जे दूनू कालिदासकृत कहल जाइत अछि। पहिल शृंगाररसक मुक्तक श्लोक सभक संग्रह थिक जकर एक-एक श्लोक युवा पण्डित लोकनिक मुहमे गुञ्जित रहैत छल। 'ऋतुशृंगार' प्रसिद्ध मुक्तक ग्रन्थ 'ऋतु-संहार'क रूपान्तरण थिक। एतऽ नाम बदलबाक कारण ई भेलनि जे 'संहार' शब्दक अर्थ मैथिलीमे नाश करब होइत अछि, संग्रह वा सकलन नहि। पृथ्वी-सूक्तक अनुवादक प्रसंग जे गुणावगुण कहल अछि आ सौन्दर्यलहरीक प्रसंग जे

आगाँ कहब से बहुत अंश धरि एहू दुनूक अनुवादमे चरितार्थ होइत अछि। विशेष एतबे जे प्रसाद गुण अनुवादमे ओहन नहि आबि सकल अछि जेहन मूलमे अछि. परन्तु श्रुतिमाधुर्य मूलहुसँ अधिक आयल अछि। अपन मौलिक रचनामे शृंगाररससँ सामान्यतः विरक्त रहनिहार सुमनजी एहिमे देखा देलनि अछि जे एहिमे ओ 'विरक्त' छथि, 'अक्षम' नहि।

संस्कृत साहित्य नाना प्रकारक स्तोत्रसँ भरल अछि। एहिमे किछु स्तोत्र सामान्य स्तोत्रसँ नितान्त भिन्न रूप-रंगक अछि जाहिमे भक्तिक उद्‌गार त' शुद्ध स्तोत्र-सन रहैत अछि किन्तु शिल्प-पक्ष ओ वाग्भंगी उच्चस्तरीय काव्यक अनुरूप होइत अछि। उक्तिवक्रता, आलंकारिकता, कल्पनाक उड़ान, भाषाक व्यायाम इत्यादि वैलक्षण्य एहि स्तोत्र सभमे ओहने-सन पाओल जाइत अछि जेहन कालिदास, भारवि, माघ, श्रीहर्ष आदिक काव्यकृतिमे। सुमनजी एही कोटिक कतोक नामी स्तोत्र सभक अनुवाद कयने छथि, जेना सौन्दर्यलहरी, आनन्दलहरी, शिवमहिम्नः स्तोत्र, अपराधक्षमापन स्तोत्र, ताराष्टक, त्रिपुर-सुन्दरीस्तोत्र, षोडशीस्तोत्र, भुवनेश्वरी स्तोत्र, आदि। निःसन्देह, एहि सभक अनुवाद परम कठिन कार्य। तथापि एकर गुणोत्कर्षसँ आकृष्ट भऽ अनेक मैथिली-कवि अनुवाद करबाक प्रयास कयलनि अछि जाहिमे प्रकाशित अछि केवल दू कविक प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' ओ श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क।

सौन्दर्य-लहरी—एहिमे शिखरिणी छन्दमे १०२ श्लोकमे भगवतीक नखशिख वर्णन भक्तिक भावधारामे कयल गेल अछि। शंकराचार्य एकर रचयिता मानल जाइत छथि। एकर मैथिली अनुवाद प्रथमतः सुमन जी कयलनि, आ तकर बहुत दिनक बाद व्यास जी सेहो कयलनि। अनुवादमे सुमन जी कतेक सफल भेल छथि से जनबाक हेतु प्रथमतः पहिल श्लोकक तीन गोट अनुवादक गहन समीक्षा कयल जाइत अछि।

१ शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं
न चे देवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि
अतस्त्वामाराध्यां हरिहर विरिञ्च्यादिभिरपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति

२ शक्ति-युक्त शिवमे प्रभुता भव-विभवक विभुता
शक्ति-वियुक्त शिवो शव स्पन्दनहुक नहि क्षमता
स्वगुण-अर्जनक हेतु हरिहरहु पद्म-आसनहु
गुण-संकलना करथि त्रिगुणायि तव उपासनहु
तनिक कोना अभिवन्दना स्तवन वचन पदवन्दना
कऽ सकते अरजल न जे पुण्य पुराकृत कर्मणा

३ शक्तिक योगहिसँ शिव होइत छथि प्रभु सकल विभव सम्पन्न
ओना विना शक्तिक सक्षम नहि स्पन्दन करबा योग विपन्न
विधि-हरि-हर आराध्य योग्य अहँ कोना क्षुद्रजन पुण्य विहीन
प्रणमन स्तवन सकब कय भगवति, हम बिनु साधन सभ विधि दीन

४ शिव जँ रहथि शक्तिसँ संयुत तखनहि हुनक प्रभाव
यदि नहि तँ ओ स्पन्दन मात्रो कथमपि कय नहि पाब
तेँ हरि-हर-विधि आदि देवहुक पूज्य अहँक गुणगान
सएह सकथि कय जे अर्जित कयने छथि पुण्य महान

एहिमे पहिल मूल श्लोक थिक; दोसर, तेसर ओ चारिम क्रमशः सुमनजी व्यासजी, ओ गोविन्दजी द्वारा कयल अनुवाद थिक। सुमनजीक अनुवादमे 'भव-विभवक विभुता' मूलसँ फाजिल अछि आ 'प्रभुता'क अनावश्यक विस्तार मात्र थिक। शक्ति थिक इकारक मात्रा, से नहि रहने 'शिव' 'शव' भऽ जयताह—ई बात मूलमे 'न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि'सँ ध्वनित कयल गेल अछि। अनुवादमे 'शव' साक्षात् उल्लिखित अछि। अनुवादक जखन अभिधया ई कहि देलनि जे शक्ति बिना शिव मुर्दा, तखन फेर 'स्पन्दनहुक क्षमता नहि' कहब निरर्थक भऽ जाइत अछि। एके भाव चैतन्यशून्यता अभिधा ओ व्यजना दून् मार्गे दोहराओल गेल अछि। 'स्वगुण-अर्जनक हेतु' मूलमे नहि अछि, परन्तु कविक आशयक अनुकूल ओ प्रसंग-संगत अछि। 'पद्म-आसन'मे सन्धिविच्छेद खटकैत अछि। द्वन्द्व वा तत्पुरुषमे सन्धि तोड़लो जा सकैत अछि; बहुव्रीहिमे सम्भव नहि। 'पीताम्बर' आ 'लम्बोदर'केँ 'पीत-अम्बर' आ 'लम्ब-उदर' नहि बनबिअनि से नीक। 'गुण-संकलना करब' प्रचलित

वाग्धाराक विरुद्ध एक कृत्रिम प्रयोग थिक। 'त्रिगुणमयि' सम्बोधन मूलमे नहि अछि। मूलमे 'प्रणन्तुं स्तोतुं वा' अछि, किन्तु अनुवादमे 'अभिवन्दना स्तवन वचन पदवन्दना' अछि। अभिवन्दना ओ पदवन्दना दूनू वन्दना सैह भेल, तेँ पुनरुक्ति-जकाँ लगैत अछि। 'स्तवन'मे 'वचन' निरर्थक जोड़ल गेल अछि।

व्यासजीक अनुवादमे 'सकल विभव सम्पन्न' फाजिल अछि, जे 'प्रभु' शब्दक व्याख्या मात्र थिक। 'स्पन्दितुमपि' मे जे 'अपि' अछि से अनुवादमे छोड़ि देल गेल अछि; स्पन्दनो करबा योग नहि ई कहब ठीक होइत। 'सुक्षम' आ 'योग' दूनू शब्द समानार्थक, तेँ पुनरुक्ति खटकैत अछि। 'विपन्न' फाजिल अछि, जे केवल अन्त्यानुप्रासलाभार्थ जोड़ल गेल अछि। 'आराध्य'क आगाँ 'योग्य' फाजिल अछि। 'हरिहर विरिञ्च्यादिभिरपि'मे 'आदि' तथा 'अपि' अनुवादमे उपेक्षित अछि। 'हम बिनु साधन सभ विधि दीन' मूलमे नहि अछि, किन्तु प्रसंगोपयुक्त अछि।

आनक काजकेँ दुसनिहारक नैतिक दायित्व होइत छैक जे ओ अपनहुँ किछु कऽ देखाबय। एही भावनासँ हमहु एहि श्लोकक अनुवाद कऽ देखाओल अछि। अपन त्रुटि अपना नहि सूझैत छैक, परन्तु अनुवाद करबामे जे किछु विवशता छैक तकर भान अनुवादकर्ताकेँ अपनहुँ होइत छैक। एही विवशताक कारणेँ 'प्रणन्तुं स्तोतुं वा'मे 'प्रणन्तुम्' छूटि गेल अछि; होयबाक चाही 'प्रणाम वा गुणगान'। 'पुण्य'मे 'महान्' विशेषण केवल अन्त्यानुप्रासलाभार्थ खोँसल गेल अछि।

एहि स्तोत्रक अनुवादमे सुमनजी मूल श्लोकसँ पैघ छन्द धयलनि अछि, जाहिसँ मूलभाव ऐलफैलसँ अँटि सकय। मूल शिखरिणी छन्दमे अछि आ अनुवाद छप्पए (षट्पद) छन्दमे। सुमनजी एही छप्पए छन्दमे उज्ज्वल कीर्ति-कर 'गंगास्तुति'क रचना कयने छथि आ' एही छन्दमे हिन्दीक कवि राजा हरिश्चन्द्रक प्रख्यात यमुना वर्णन निबद्ध अछि। परन्तु 'सौन्दर्यलहरी'क अनु-वादकेँ ई छन्द अविकल नहि रहऽ देलकनि। मूलक सभ भाव छप्पए छन्दक चारिए चरणमे समाविष्ट भऽ जाइत अछि, अतः छओ पंक्ति पुरयबामे उक्तिकेँ तोरिकेँ नमड़ायब वा किछु सामग्री अपना दिससँ जोड़ब आवश्यक भऽ गेलनि

अछि। उदाहरणार्थ निम्नलिखित श्लोक पूर्ववत् तीन अनुवादक संग देखल जाय (पृष्ठ ४७)—

१ अहः सूते दक्षं तव नयनमर्कात्मिकतया
त्रियामा वामं ते सृजति रजनीनायकमयम्
तृतीया ते दृष्टिर्दरदलित हेमाम्बुज रुचिः
समाधत्ते सन्ध्यां दिवसनिशयोरन्तरचरीम्

२ दहिन नयन दिनमणिक रूप रचइछ दिनमाने
यामिनीक तनइछ वितान वामहि दृग चाने
त्रिलोचनक भामिनी त्रिलोचनि त्रिभुवन-भाविनि
दृष्टि तृतीया स्वयं कमल दल आभा भासिनि
श्याम भृकुटि क्षितिजहिँ मिलित
दृग तृतीय ज्योतिक कला
दिन-रजनी बिच रुचिर शुचि
सन्ध्या वेला पाँटला

३ भगवति, भानुस्वरूप वाम नयनहि
प्रसवित अछि दिवस प्रकाश
दहिन नयन शशधर रूपहिँ
शर्वरी त्रियामा करय विकास
किंचित् उन्मीलित दल हेम कमल
सन शोभित तृतिय नयान
दिवस - राति बिच सन्ध्या कालक
छाया स्थल—करु जन कल्याण

४ सुरुज सरूप दहिन लोचन तुअ दिवस बनावय
ससि सरूप तुअ बाम नयन पुनि रजनि अनावय
फुटइत कनक-कमल-सोदर तुअ तेसर नयाने
दिवस-जामिनी माझ करय साँझक निरमाने

एतऽ सुमनजीक अनुवादमे 'दिनमाने'मे 'माने' निरर्थके नहि, संगतिहीन

सेहो अछि। 'सृजति रजनीम्'के 'यामिनीक वितान तनइछ' कहब विलक्षण वक्रोक्तिक उदाहरण अछि। सम्पूर्ण तेसर पाँती फाजिल अछि। अनुवादमे 'दर-दलित' विशेषण छूटल अछि। 'स्वयं'शब्द सेहो पादपूरण मात्र करैत अछि। 'श्यामभृकुटि क्षितिजहि मिलित' मूलमे नहि अछि। जखन पाँचम-छठम पाँतीमे 'दृग तृतीया……सन्ध्यावेला पाटला (थिक)" ई पूर्ण वाक्य अछिए तखन चारिम पाँतीक अन्वय नहि बैसैत अछि। जँ पाँचम पाँती एकदम हटा देल जाय तँ वाक्य बैसि जाइत अछि आ मूलक भाव पूर्णतः स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

व्यासजीक अनुवादमे वाम नयन सूर्यस्वरूप आ दहिन नयन चन्द्र स्वरूप कहल गेल अछि। मूलमे एकर बिपरीत वाम नयनकेँ चन्द्र ओ दहिन नयनकेँ सूर्य कहल गेल अछि। स्पष्टतः ई कविक भ्रम थिकनि। 'अहः सूते दक्षं नयनम्' एकर अनुवादमे प्रसवार्थक सू धातुकेँ गहिकेँ पकड़ि 'वाम नयनहि प्रसवित अछि दिवस प्रकाश' ई कहब बड़ टेढ़ लगैत अछि। एतऽ उक्तिवक्रतामे व्यासजी सुमनोजीसँ आगाँ बढ़ि गेल छथि। 'तृतीय'मे ह्रस्व इकार बड़ खटकैत अछि। अन्तिम वाक्य 'करु जन-कल्याण' मूलमे नहि अछि, ततबे नहि, मूल कविक प्रासंगिक भावधाराकेँ मार्गान्तरित सेहो करैत अछि। 'शर्वरी त्रियामा' पुनरुक्ति भेल।

उपर्युक्त दूनूमे कोनो अनुवाद अविकल आ पूर्ण सन्तोषजनक नहि अछि। अतः हम प्राचीन भाषाक अवलम्बन कऽ अविकल अनुवाद कयल अछि जाहिमे मूल भाव, रचना-शिल्प ओ मैथिलीक सहज वाग्धारा सुरक्षित रखबाक प्रयास कयल अछि तथा बाहरसँ एको अक्षर नहि घोंसिआओल अछि।

आनन्दलहरी—इहो शंकराचार्य विरचित कहल जाइत अछि। सौन्दर्यलहरीमे जतेक उक्तिवक्रता अछि ततेक एहिमे नहि। प्रायः तहिँ एकर अनुवाद सेहो अधिक प्रवाहमय ओ प्रसादगुण सम्पन्न भऽ सकल अछि। एहूमे सुमनजी मूल श्लोकसँ बेसी बन्हायल नहि छथि। निःसंकोचपूर्वक अपन मसाला यत्र-तत्र जोड़लनि अछि आ मूलक उक्तिकेँ मोड़लनि अछि। सौभाग्यवश, मूलक आशयकेँ कतहु बिगड़य नहि देलनि अछि। अनुवादमे एके छन्दक

हो तकर आग्रह छोड़ि अनुवादकर्ता अनेक छन्दक प्रयोग कयलनि अछि आ मूलक कलेवरक नापसँ अनुवादक कलेवर रखलनि अछि। फलतः फाजिल बात जोड़बाक आवश्यकता कम भेलनि अछि। अनुवादक उत्कृष्टताक एक नमूना देखल जाय—

मधुर अधर-मधुरी ताहू पर पानक लाली
नयन-नलिन श्यामला तहूपर कज्जल काली
भरल केसरिया तिलक, झलक ग्रिम मोतिम हारे
कनक-डोरि कटि-वसन, जयतु गौरी गिरिबाले

एहिमे माधुर्य ओ प्रसाद दूनू गुण छलकि रहल अछि। परन्तु मूल श्लोकसँ मिला कऽ देखला पर विचलन आ प्रक्षेप एहूमे भेटत। मूलमे अछि 'मुखे ते ताम्बूलस्'; अनुवादकर्ता एकरा विस्तारित कयलनि अछि—'मधुर ·· लाली'। निःसन्देह ई विस्तारण सोनमे सुगन्धि अनलक अछि। किन्तु 'भजानि त्वाम्' जे केवल 'जयतु' कऽ देल गेल अछि ताहिसँ मूलक भक्तिभाव किछु दबल अछि।

एक आर नमूना देखल जाय (श्लोक १६)

बड़दो बूढ़ सबारी, बाड़ी-झाड़ी जनिकर सुन्न मसान
भोजन आक-धथूर, नगन तन, भूषण विषधर नाग निदान
के न जनैछ कपाली रहथि भिखारी, धनपतिद्वारक दाग
से पुनि बनल महेश्वर दाता ऐश्वर्यक, बल अहिँक सोहाग

सुमनजी अनुवादहुमे मैथिलीक सहजोक्ति (मोहाबरा)केँ पकड़ने रहलाह अछि तकर प्रमाण थिक एतऽ 'बाड़ी-झाड़ी', 'सुन्न-मसान', आक-धथूर' आदि शब्दयुग्म। सम्पूर्ण तेसर पाँती प्रक्षिप्त अछि।

शिवमहिम्नःस्तोत्र—संस्कृत साहित्यक समीक्षकलोकनि पुष्पदन्तकृत 'शिवमहिम्नःस्तोत्र'क बड़-बड़ प्रशंसा कयने छथि। मिथिलहिमे नहि, समस्त भारतमे ई परम प्रख्यात अछि। भक्ति-पक्ष ओ काव्यकला-पक्ष दूनूमे ई उत्तम कोटिक मानल जाइत अछि। एहिमे ३८ श्लोकमे शिवक महिमा वर्णित अछि। एकर अनुवाद अन्य सकल स्तोत्रक अनुवादसँ नीक

भेलनि अछि। व्यासजी सेहो एकर अनुवाद कयने छथि। कतहु-कतहु सुमन जीक अनुवाद व्यासजीक अनुवादसँ उत्कृष्ट भेल अछि, यद्यपि व्यासजी बादमे अनुवाद कयलनि अछि। एहि स्तोत्रक सभसँ प्रसिद्ध श्लोकक अनुवाद देखल जाय—

यदि नीलमक पहाड़ बनय गलि कज्जल काली
पुनि अगाध सागरकेँ यदि मसि-पात्र बना ली
पत्र धरणि, लेखनी कल्पतरु लए सरस्वती
लिखथि त्रिकालो, तदपि न प्रभु-गुणगण लिखि सकती

मूलमे 'असितगिरि समं स्यात् कज्जल' कहल अछि, किन्तु अनुवादमे 'नीलगिरिक बराबरि' नहि कहि उत्प्रेक्षा कयल गेल अछि जे यदि नीलमक पहाड़ गलिकेँ मोसि भऽ जाय। ई मूलसँ अधिक चमत्कारक भेल। परन्तु 'गुणगणानां पारं याति'क अनुवाद 'तदपि न प्रभुगुणगण लिखि सकती' मूलक अनुरुप नहि भेलनि, 'तथापि गुणक पार नहि पओतीह' ई ठीक होइत। व्यास जीक अनुवाद एहि अंशमे उत्कृष्ट अछि—

श्यामल गिरि सम कज्जल हो पुनि मसिपात्र सिन्धु, पृथ्वी विशाल
बुझु लेखपत्र, अरु कल्पवृक्ष-शाखाक कलमलए सदरि काल
रहती लिखैत यदि स्वयं शारदा, ईश अहँक गुण-कीर्ति ग्राम
तैओ पाओल जाएत नहि पार ओकर कथमपि हे पूर्ण काम

मूलहुसँ सुन्दर अनुवादक एक आओर उदाहरण अछि—

ज्योतिर्मय शिवलिंगक महिमा कहाँ कते धरि मूल
नापए चाहल हरि विरिञ्चि दुहु कौतुकवश आचूल
उपर चढ़ल विधि अधर चलल हरि कतहु आदि नहि अन्त
थकित-चकित दुहुके दर्शन पुनि देलहुँ सदय अनन्त

एतऽ खटकैत अछि केवल एक बात। मूलमे 'तव ऐश्वर्यम्' अछि, तखन एकर अनुवाद 'ज्योतिर्मय शिवलिंगक महिमा' किएक कयल गेल। एहि स्तोत्रमे प्रायः एके ठाम मूलसँ विचलनक दोष पबैत छी।

बरद सवारी, खाट-पाट, पट अजिन कुठारो
कर कपाल, तन भस्म, अंग सापक फुफकारो
अछि एतबे टा अपन उपकरण जाहि भिखारिक
आनक हित भ्रूभंगहि सम्पति भरथि बखारिक
जनिक कृपा लव देवगण ऋद्धि–सिद्धि लए छथि सुखी
तनिक भक्त जनकेँ न पुनि विषय तृषा करइछ दुखी

मूल कहैत अछि जे शिव स्वयं आत्माराम छथि तेँ हुनका विषय मृगतृष्णा ग्रसित नहि करैत अछि, किन्तु अनुवादक कहैत छथि जे भक्तके विषयतृषा दुखी नहि करैत अछि। एहिना मूलमे अछि 'खट्वांग', जकर अनुवाद एतऽ 'खाट-पाट' कयल गेल अछि। ई मूलसँ स्पष्ट विचलन थिक, किएत तँ खट्वांगक अर्थ खाट नहि, एक प्रकारक अस्त्र थिक जे शिव धारण करैत छलाह। ई मैथिलीमे खटङ्ग कहबैत छल। व्यासजी सेहो एकर अनुवाद 'खाटक पौआ-पाशि' कयने छथि, परन्तु से अस्त्र विशेषक बोध नहि करबैत अछि।

शक्तिस्तवक—एहिमे चारि गोट स्तोत्रक संग्रह अछि: ताराष्टक (८ श्लोक), त्रिपुरसुन्दरी स्तोत्र (८ श्लोक), षोड़शी स्तोत्र वा कल्याणी स्तोत्र (१५ श्लोक), भुनेश्वरी स्तोत्र (२६ श्लोक)। सुमनजी स्वयं एहि स्तोत्र सभके 'उपासना-सम्प्रदायमे शीर्ष स्थानीय रूपमे मान्य' तथा 'भक्त-साधकक कण्ठक बहुमूल्य माल्य' कहने छथि। पूर्वक स्तोत्र सभमे जेहन कवित्व-छटा अछि तेहन एहि सभमे नहि। अवश्यमेव एकरा सभक अनुवाद सुमनजी काव्यानुरागवश नहि, भक्ति भावनाक उद्रेकवश कयलनि अछि आ ताहि दृष्टिएँ अनुवाद प्रशंसनीय अछि। मूलक अर्थसँ पलायन करब वा मूलक भित्तिपर अपन भवन ठाढ़ करब एहि अनुवादमे पदे-पदे देखि पड़त। प्रायः एको श्लोक एहन नहि अछि जकर अनुवाद अविकल भेल हो। एकमात्र उदाहरण पर्याप्त होयत—

हन्तेतरेष्वपि निधाय मनांसि चान्ये
भक्तिं भरन्ति किल पामर दैवतेषु

त्वामेव देवि मनसाऽहमनु स्मरामि
त्वामेव नौमि शरणं जननि, त्वमेव

अर्थात् क्यो-क्यो अन्य पामर देवता सभमे चित्त लगा भक्ति करैत छथि। हे देवि, हम मनसँ केवल अहीँक ध्यान करैत छी, अहीँके प्रणाम करैत छी। हे जननी, अहीँ हमर शरण छी। आब निम्नलिखित अनुवादसँ एकर तुलना कयल जाय।

क्यौ जन भजथि इन्द्र यम वरुण कुबेर व्यस्त दिक्पाल
क्यौ ग्रह पुजथि सूर्य शशि मंगल उदय-अस्त जनि भाल
क्यौ स्रष्टा पालक विनाशके एक एक टा टेक
हम त्रिगुणे सर्वेश्वरि जननी, भजी अहीँके एक

एकरा अनुवाद कही वा नहि ताहूमे सन्देह। परन्तु स्वीय हो वा परकीय, रचना नीक भेल अछि – अकाव्यके काव्य बनयबाक कौशल प्रशंसनीय अछि। 'देव्यपराधक्षमापन स्तोत्र' सेहो शक्ति-स्तवकमे राखल जयबाक योग्य छल, परन्तु से आनन्दलहरीक संग छपल अछि। वस्तुतः ई स्तोत्र ने सौन्दर्य-लहरी-सन उत्तम काव्यमे अछि आने शुष्क स्तोत्र सभक कोटिमे। वात्सल्य भाव एकरा बड़ आकर्षक बना देने अछि। एकरो अनुवाद व्यासजी कयने छथि। एहिसे उक्तिवक्रता कम अछि तेँ प्रसाद गुण भरल अछि। एहिमे कतोक श्लोकक अनुवाद सवैया छन्दमे कयल गेल अछि जाहिसँ एहिमे शिवताण्डव-स्तोत्र जकाँ ध्वनिमूलक रोचकता आयल अछि—

मन्त्रन यन्त्र न ज्ञान कने न मने मन संचहु ध्यान लगाबी
ने आऽवाहन-वाक्यहु कंठ स्तुति-स्तबको नहि श्लोकहु गाबी

एहिमे कतहु-कतहु अविकल अनुवाद सेहो भेटैत अछि। यथा —

कांक्षा नहि मोक्षक, नहि भव-विभवक किछु वांछा
नहि विज्ञानक कथा तथा सुखहुक आकांक्षा
हमर याचना अहँक ओतए एतबे कल्याणी
पल-पल जीवन जपी मृड़ानी शिवा भवानी

अत्यन्त सरल-सहज ठेठ मैथिलीमे निम्नलिखित सारानुवाद देखबाक योग्य अछि—

मायक सहज स्वभाव ई बेटा बरु बकटेटि
तेजथि नहि, मानथि सतत छमथि दोष सभ मेटि

पुरुष परीक्षा—विद्यापतिकृत पुरुष-परीक्षाक मैथिली गद्य-पद्यमे अनुवाद सर्वप्रथम कविवर चन्दा झा कयलनि। सुमनजी एकर अनुवाद केवल गद्यमे कयने छथि, कारण जे ई अनुवाद छात्रक हेतु कयल गेल अछि।

अनुगीतांजलि—ई बङ्लासँ अनूदित पुस्तक थिक। एहिमे कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ ठाकुरक एक सय एक कविताक वा गीतक पद्यानुवाद कयल गेल अछि। गीतक स्रोत अछि हुनक गीतांजलि, तहिँ एकर नाम 'अनुगीतांजलि' राखल गेल अछि; परन्तु कतोक गीत आनो स्रोतसँ लेल गेल अछि। गीतक चयन एहि बातक प्रमाण अछि जे चयनकर्त्ता तद्युगीन कविताक परम मर्मज्ञ छथि। गीतांजलिक शतशः अनुवाद भेल अछि, मुदा निःसंकोच पूर्वक कहल जा सकैत अछि जे सुमनजी जेहन अनुवाद कयलनि अछि तेहन कदाचिते केओ आन व्यक्ति कऽ सकल होयताह। एकर अनेक आधार अछि।

पूर्वमे वारंवार प्रदर्शित कयल जा चुकल अछि जे ई अनुवादमे मूलक पर-वाहि बहुत कम करैत छथि। परन्तु अनुगीताञ्जलि मे अद्भुत मूलानुसारिता अछि सीमोल्लंघन कदाचिते भेटत। दोसर छन्दक चयन एहन चातुरीसँ कयल गेल अजि जे ओहिमे मूलक कलेवर ठीक-ठीक अँटि जाइत अछि ततबे नहि, अपितु मूल छन्दक जेहने लय-तरंग वा ध्वनिलहरी छैक तेहने अनुवादहुमें उतरि गेल अछि। एकर कारण अछि मैथिली ओ बङ्लाक साम्य यथा—

अन्तर मम विकसित करु अन्तरतर हे
उज्ज्वल करु, निर्मल करु, सुन्दर करु हे
जाग्रत करु, उद्यत करु, निर्भय करु हे
मंगल करु, निरलस करु, संशय हरु हे
विकसित करु अन्तर मन विकसित करु हे

आनक कविता पर स्वयं कविता करैत रहबाक खेल सुमनजीकेँ बड़ प्रिय

छनि। मूलक सीमाबन्धनकेँ छोड़ि सुमनजी कतहु-कतहु एहू अनुवादमे खूब उड़लाह अछि। एक मात्र उदाहरण देखल जाय जतऽ रवीन्द्रनाथक भावुकता-पूर्ण सरलतम उक्तिकेँ सुमनजी तिलिया फुलिया लगा परम पाण्डित्यपूर्ण बना देलनि अछि —

भजन पूजन साधन आराधना समस्त थाक् पड़े
रुद्ध द्वारे देवालयेर कोणे केन आछिस ओरे
अन्धकारे लेकिये आपन मने
काहारे तुइ पूजिस संगोपने
नयन मेले देखू देखि तुइ चेये—देवता नाइ घरे

ई भेल मूल। एकर अनुवाद एहि प्रकारेँ अछि —

भजन-यजनमे स्तवन-नमनमे नहि भेटत ओ झाँकी
हरिमन्दिरकेर द्वार बन्द कए नयन मूनि की आँकी
जपतप करितहुँ नाम-रूप-लीलाकेर करितहु सुमिरन
अगम अगोचर अलख प्रभुक नहि हो मन्दिरमे दर्शन
अन्तर दृगकेँ खोलु देखु कत छथि ओ अन्तर्यामी
आइ धरातलपर उतरल छथि गरुड़ध्वज नभगामी

रवीन्द्र केवल एतबे कहैत छथि जे 'देवता नाइ घरे'। अनुवादक चारि पाँतीमे एकर सुन्दर भाष्य लिखि देलनि अछि।

ऋतुसंहारसँ ऋतुशृंगार धरि

श्रीचन्द्रनाथमिश्र'अमर'

कविकुलगुरु महाकवि कालिदास भारतीय प्रतिभाक एक एहन अतुलनीय उदाहरण छथि जाहि प्रसंग कोनो कविक ई उक्ति—

पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासा
अद्यापि तत्तुल्य कवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव

सर्वथा चरितार्थ अछि। ओ अपन महाकाव्य, नाटक तथा मेघदूत ओ ऋतुसंहार नामक ग्रन्थ सबहुमे जे अनुपम सौन्दर्यकेँ उरेहिकऽ राखि देने छथि तकर तुलनामे आन साहित्यक कोन कथा, संस्कृतो साहित्यमे अन्यत्र दुर्लभ अछि। एक प्रकारसँ ई कहल जा सकैछ जे सम्पूर्ण संस्कृत साहित्यकेँ गोदुग्ध मानि ली तँ तकर नवनीतक स्वाद कालिदासहिक रचनाक गंभीर अध्ययनमे प्राप्त कयल जा सकैत अछि।

संस्कृत काव्य सभक मर्मोद्घाटन कयनिहार टीकाकार लोकनिमे मल्लिनाथक स्थान सर्वोपरि छनि। मल्लिनाथ कालिदासक रचनाक प्रसंग लिखने छथि—

कालिदास गिरां सारं कालिदासः सरस्वती
चतुर्मुखोऽथवा ब्रह्मा विदुर्नान्ये तु मादृशाः

अर्थात् कालिदासक रचनाक मर्म स्वयं कालिदास बुझैत छलाह, दोसर साक्षात् सरस्वती, तेसर चतुर्मुख ब्रह्मा बूझि सकलथिन, एकर अतिरिक्त क्यो नहि, हमरासन अल्पज्ञक तँ कथे नहि हो।

कालिदासक आविर्भावक पश्चात् सहस्राब्दी बीति गेल। एहि मध्य अपरिमित साहित्यक रचना होइत आयल—परन्तु आइओ बुझना जाइछ जे साहित्यसंसारमे अपन प्रतिभाक गौरवसँ जाहि स्थानपर अधिकार पाबि, कालिदास विराजमान छथि, ओहि आसनक अधिकारी केवल कालिदासे छथि।

संस्कृत साहित्यक अध्येता यदि कविकर्ममे प्रवृत्त होथि तँ महाकवि कालिदासक प्रभाव बिनु ग्रहण कयने सर्जनात्मक प्रक्रियाकेँ आगाँ बढ़ाइए ने सकैत छथि। ताहूमे जाहि कविमे प्रकृतिक प्रति विशेष आकर्षण होइनि ओ तँ कोनहु प्रकारेँ कालिदासक प्रभावसँ अस्पृष्ट रहिए नहि सकैत छथि।

वर्त्तमान कालक मूर्द्धन्य साहित्यकारक अग्रिम पंक्तिमे आसीन आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' 'साओन-भादव', 'प्रकृति शतक' 'पयस्वनी' आदि प्रकृति-विषयक काव्य-प्रणेता उपर्युक्त कथनक अपवाद कोना रहि सकैत छथि ?

जखन श्रीसुमनजी रचित पंक्ति 'हंस नूपुर नृत्य-निपुणा' (प्रतिपदा) पढ़ैत छी तँ 'सोन्माद हंसरवनूपुर नादरम्या' (ऋतुसंहार तृ० सर्ग), 'शरद ऋतु सुन्दरी अंगक सुछवि नखत अनन्त' (प्रतिपदा) पढ़ैत छी तँ 'तारागण प्रवर भूषण-मुद्वहन्ती (ऋतुसंहार तृ० सर्ग, 'खन सूची वेधित अन्धकार, जगमगा गेल झट ताडित तार' (पयस्विनी) पढ़ैत छी तँ घनान्धकारीकृत शर्वरीष्वपि तडित्प्रभादर्शित मार्ग भूमयः' (ऋतुसंहार द्वि० सर्ग) आदि पद सब स्मृतिपथपर आबि जाइत अछि। एही प्रभावक कारणेँ हमर विवेच्य कवि महाकवि कालिदासकृत कुमार संभव, शृंगार तिलक, ऋतु संहार आदि काव्यक अनुवादे करबामे प्रवृत्त भऽ गेलाह।

एहि ठाम ऋतुसंहारक अनुवादमे अनुवादकक द्वारा जे यत्र तत्र मौलिक प्रतिभाक उपयोगक कारणेँ विशेषता परिलक्षित भेल अछि तकरे नमूनाक रसा-स्वादन पाठककेँ करायब अभिप्रेत अछि।

सर्वप्रथम अनुवादक 'ऋतुसंहार'क स्थानपर एकर नामकरण 'ऋतुशृंगार' कयने छथि। ऋतुसंहार शब्दसँ सब ऋतुक वर्णनक एकत्रीकरण अर्थ बहराइत अछि, परन्तु ऋतुशृंगार पदसँ ऋतुसभक सौन्दर्यवर्णन अर्थ ध्वनित होइछ। वस्तुतः ऋतुसंहार पदसँ अधिक भावप्रवणता ऋतुशृंगार पदमे अछि। अतः एकर नवीन नामकरण द्वारा अनुवादक एहिमे चमत्कारक वृद्धिए कयलनि अछि।

ऋतुसंहार महाकवि कालिदासक काव्यकृतिमध्य प्रारम्भिक रचना मानल जाइत छनि, तकर कारण ई जे रघुवंश, कुमारसंभव, मेघदूत आदि काव्यमे जे प्रौढ़ता परिलक्षित होइत अछि से एहिमे नहि। बहुत विद्वान् तँ एकरा कालि-

दासक रचना मानबहुमे सन्देह प्रकट करैत छथि परन्तु बहुतो विद्वानक तर्क छनि जे साधारणतः वसन्त ओ वर्षा ऋतुक वर्णन संस्कृत साहित्यमे जतेक व्यापक परिमाणमे प्राप्त होइत अछि ततेक ग्रीष्म ऋतुक नहि आ कालिदास 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'मे सेहो ग्रीष्मक वर्णन व्यापक रूपमे कयने छथि, एहिसँ एहन प्रतीत होइछ जे ग्रीष्मऋतु हिनका बेसी प्रिय छलनि। अभिज्ञान शाकुन्तलम्मे जे मनोहारी वर्णन भेल अछि ओकर आभास एहि ऋतुसंहारमे देखल जाइछ। अतः ई ग्रन्थ कालिदासक थिकनि से निःसन्दिग्ध।

उक्त काव्यमे महाकविक प्रकृति-प्रेम ओ सूक्ष्मदर्शिता अत्यन्त स्फुट रूपमे चित्रित भेलनि अछि। एकरा पढ़ला उत्तर परिलक्षित होइत अछि जे कविकेँ प्रत्येक ऋतुक सूक्ष्म विशेषतासँ पूर्ण परिचय छलनि। पशु-पक्षी, लता-पुष्प, गाछ-वृक्ष, धरती-आकाश, वायु-जल आदिक जेहन जीवन्त चित्रण ऋतुसंहारमे भेल अछि तेहन अन्यत्र भेटब दुर्लभ अछि। जतय आदिकवि महर्षि बाल्मीकि अथवा व्यास आदिक रचनामे एहि ऋतु सभक उपादान सबकेँ आलम्बन प्रधान मानि वर्णन कयल गेल अछि ओतय कालिदास एहि सबकेँ मात्र उद्दीपन मानि वर्णन कयने छथि।

ऋतु-संहार छबो ऋतुक वर्णनक आधारपर छओ सर्गमे विभाजित अछि। ग्रीष्मवर्णनसँ आरम्भ भऽ क्रमशः वसन्त वर्णनमे जाकऽ समाप्त भेल अछि। ग्रीष्मसँ वसन्तवर्णन धरि तत्तत् ऋतुक वृक्ष, लता, पशु, पक्षी तथा वातावरणक चित्रण द्वारा कवि अपन कवित्व-प्रतिभाक चमत्कार देखौने छथि। एकर भाषा ततेक सरल ओ तेहन सरस अछि जाहिसँ पाठकक चित्त रसाप्लावित भऽ जाइत छनि।

एहि ग्रन्थक प्रसंग अनुवादक अपन विचार व्यक्त करैत लिखैत छथि— "युगयुगान्तक लेल भारतक प्रतिनिधि कवि कालिदासक रचनामे प्रकृतिक छवि अनुपम रीतिसँ विन्यस्त अछि। कुमारसंभवक नगाधिराज यदि देवतात्मा रूपेँ प्रतिष्ठित छथि तँ मेघदूतक अलका, कामिनी जकाँ चित्रित भेल अछि। शकुन्तलाक आश्रममे, मालविकाग्निमित्रक प्रमदवनमे रघुवंशक देवदारु मण्डपमे प्रकृतिक जे सुषमा अंकित अछि ओकर प्रागूरूप भेटैछ ऋतुसंहारमे जे किशोर कालिदासक रस-तूलिकासँ रंजित-व्यंजित अछि। कालिदासक मूल रचना

जहिना मैथिली संस्करणमे ऋतुश्रृंगारक अभिधान ग्रहण कयलक अछि संभव थिक तहिना मूलभाव-बन्धमे सेहो किछु नव निबन्धन ग्रहण कयने हो। किन्तु हमरा विश्वास अछि कविकुलगुरु आइ जीवित रहितथि तँ जहिना ऋतुसंहारके ऋतुश्रृंगार अनुचित नहि बुझितथि तहिना अपन भाव-बन्धनमे मैथिली संस्करणक परिवर्त्तन-परिवर्धनके विकृत नहि कहितथि।"

एहि आत्मविश्वासक पृष्ठभूमि सबल अछि। अनुवादक केवल अनुवादके नहि छथि. हिनक मौलिक कवित्व-प्रतिभा अपन युगक प्रतिभाशाली कविलोक-निक मध्य स्पृहणीय मानल जाइत छनि। प्रकृतिवर्णनमे हिनको लेखनी अनुपमे रहलनि अछि। अनुवादकक आत्मविश्वासक सत्यताक प्रमाणमे स्थालीपुलाक-न्यायसँ मूल ओ अनुवादक किछु छिटफुट अशक रसास्वादन कयल जाय। ग्रीष्म ऋतुक वर्णन क्रममे महाकवि कालिदासक पद छनि—

सुवासितं हर्म्यतलं मनोहरं प्रिया मुखोच्छ्वास विकम्पितं मधु
सुतन्त्रिगीतं मदनस्य दीपनं शुचौ निशीथेऽनुभवन्ति कामिनः

अर्थात्, एहि आषाढ़ (ग्रीष्म ऋतु)क रातिमे कामीलोकनि सुगन्धयुक्त अट्टालिका, प्रेमिकाक मुखोच्छ्वास युक्त मदिरा तथा कामोद्दीपक मधुर गीतक आवश्यकताक अनुभव करैत छथि। आब एकर अनुवादक स्वरूप देखल जाय—

चिक्कन चुनमुन छत पर बैसक, स्निग्ध इजोरिया तनल वितान
झंकृत बीना वेनु निनादित, कलकण्ठक रस-रंजित गान
परसि सरस कर-किसलय तियक मुखक छवि विंवित मधुरसपान
उन्मद प्रियतम झुमइत करइछ उष्म ग्रीष्म रजनी रतिमान

मैथिली रूपान्तरमे मैथिलीक स्वाभाविक माधुर्यके निखारबाक हेतु जतय मूलमे 'सुवासितं हर्म्यतलं मनोहरम्' कहल गेल अछि ततय अनुवादक छतक हेतु चिक्कन चुनमुन सन ठेठ विशेषणक प्रयोग कऽ मैथिलीक गाढ़ रंग चढ़ा देलनि अछि। एहि संग दोसर वैशिष्ट्य अछि जे मूलमे प्रिया मुखोच्छ्वास विकम्पितं मधु कहल गेल अछि, परन्तु अनुवादक तियक मुखच्छविमे विंबित मधुरसपान कहि मर्यादाक रक्षा कयने छथि। मैथिल संस्कृतिमे मदिरापाने शास्त्र विरुद्ध, ताहूमे स्त्री द्वारा तँ मदिरापान आरो विचित्र। तेँ मुखच्छविमे मदिराक आरोप कयलासँ अनौचित्यक सर्वथा परिहार भऽ जाइत अछि। तहिना

सुतन्त्रि गीतं मदनस्य दीपनम् पदमे तन्त्री मात्रक उल्लेख अछि आ ताहूमे विशेषणक रूपमे 'सु' उपसर्गक प्रयोग पद पूर्त्यर्थ सन प्रतिभासित होइत अछि, परन्तु अनुवादमे "वीना वेनु निनादित कल कण्ठक रस-रंजित गान" कहि भावक विस्तार कऽ देल गेल अछि एवं 'कामिनः निशीथेऽनुभवन्ति'क स्थानपर 'उन्मद प्रिय झुमइत रजनीकेँ रतिमान करइछ' कहि श्री सुमनजी कालिदासोसँ दू डेग आगू बढ़ल बुझना जाइत छथि। ग्रीष्मक वर्णन क्रममे कविकुलगुरु लिखै छथि—

निताम्त लाक्षारस रागरंजितैर्नितम्बिनीनां चरणैः सुनूपुरैः
पदे पदे हंसरुतानुकारिभिर्जनस्य चित्तं क्रियते समन्मथम्

अर्थात् एहि ग्रीष्म ऋतुमे पृथुल नितम्बिनी कामिनी पैरमे आलता लगा हंसक गतिक संग जेहन मधुर ध्वनि होइत छैक ताही समान निनादित होइत नूपुरकेँ धारण कयने चरण-विन्यास द्वारा लोकक चित्तमे कामोत्तेजना भरि देत अछि। एकर मैथिली रूपान्तर अछि—

आलत रत-रत चरन अरुन, नूपुर रुनझुन तरुनिक मदचालि
हंसक धुनिकेँ छपइत पद-पद ककर न मनकेँ दँ अछि घालि

एहिमे चरन अरुनक संग रतरत विशेषण नूपुरक ध्वनिक हेतु रुनझुन सन अनुरणनात्मक विशेषण मैथिलीक स्वाभाविक सुरभिसँ पदकेँ सुवासित कऽ देलक अछि। मूलमे जतय हंसक ध्वनिक अनुकरण मात्र कहल गेल अछि ततय अनुवादमे 'हंसक ध्वनिकेँ छपइत' कहि ध्वनिक माधुर्यमे प्रगाढ़ता भरि देल गेल अछि। तहिना 'क्रियते समन्मथम्' पद ओहि आतुरताकेँ अभिव्यजित नहि कऽ सकल अछि जे 'दँ अछि घालि' द्वारा अभिव्यक्त भेल अछि। श्रुतिमाधुर्यकेँ सुरक्षित रखबाक हेतु अनुवादक वीणा, वेणु, चरण, तरुणी आदि पदमे 'ण' क स्थानपर नकारक प्रयोग कयने छथि।

वर्षा वर्णनक क्रममे महाकवि कालिदासक उक्ति छनि—

बलाहकाश्चाशनि शब्दमर्दलाः सुरेन्द्रचापं दधतस्तड़िद्‌गुणम्
सुतीक्ष्णधारा पततोग्र सायकैस्तुदन्ति चेतः प्रसभं प्रवासिनाम्

अर्थात् मृदंग समान शब्द करैत मेघ विजुरीक प्रत्यचाकेँ इन्द्रधनुषपर चढ़ौने, वारिधारा रूपी सुतीक्ष्ण वाणक वृष्टिसँ प्रवासी लोकनिक चित्तकेँ

क्लेशित भऽ रहल अछि। श्री सुमनजी एहि भावकें बहुत थोड़ शब्दमे व्यक्त करैत कहैत छथि—

इन्द्र धनुषपर जोड़ि तड़ित गुणधारा शर बरिसाबथि
वज्र गर्जनें पावस उद्धत विरहीजन तरसाबथि

एहि पदमे पावसक हेतु उद्धत विशेषण विशेषरूपें द्रष्टव्य थिक। निरर्थक कोनो निरपराध व्यक्तिकें दुख देब उद्धते लोकक काज भऽ सकैत छैक। एक तँ प्रवासी बेचारा अपने वियोगानलक तापसँ पीड़ित रहैत अछि ताहि परसँ ई पावस आबि ओकर ओहि पीड़ाकें आरो संवर्द्धित कऽ दैत छैक। तें उद्धत विशेषण द्वारा अनुवादमे पूर्णतः भाव विस्तार कऽ देल गेल अछि।

शरद् वर्णनक क्रममे महाकवि कालिदास लिखैत छथि—

काशैर्मही शिशिर दीधितिना रजन्यो
हंसैर्जलानि सरितं कुमुदैः सरांसि
सप्तच्छदैः, कुसुमभारनतैर्वनान्ता
शुक्लीकृतान्युपवनानि च मालतीभिः

अर्थात्, शरदऋतु काशपुष्पसँ पृथ्वीकें, चन्द्रमासँ रातिकें हंससँ नदीक जलकें, कुमुदसँ सरोवरकें, सप्तपर्णक रजत परागसँ वनकें तथा मालतीसँ उपवनकें उज्ज्वल बना देलक अछि। एहिमे 'शुक्लीकृतानि' क्रियापदक अन्वय प्रत्येक पदक संग भेल अछि। आब एहि पदक मैथिलीरूपान्तरकें देखल जाय।

अवनी धवलित कास विकासें, रजनी चान इजोर
तटिनी हंसें विमल-धवल, चर-चाँचर कुमुदें गोर
सप्तपर्णकेर रजत परागें दप दप कानन श्याम
मालतीक फूलक हासें अछि चकचक शरदक धाम

मूलमे प्रयुक्त 'शुक्लीकृतानि' क्रियापदसँ ओ सूक्ष्मता नहि अभिव्यक्त भऽ सकल अछि जे धवलित, विमल-धवल, इजोर, गौर, दपदप तथा चकचक विशेषणक प्रयोगसँ भेल अछि। एहि प्रयोगसँ जेना मैथिलीक रूप प्राणवन्त भऽ उठल अछि। एवंक्रमे अनुवादक स्वरूप बहुत ठाम मूलसँ अधिक निखरि उठल अछि। स्थान ओ समयक संकोचें एतय दिग्दर्शन मात्र कराओल गेल अछि। वस्तुतः भूमिकामे जे आत्मविश्वास व्यक्त कयल गेल अछि से अतिशयोक्ति नहि, सर्वथा तथ्यपरक अछि।

उगनाक दयादवाद

डॉ० श्रीदेवकान्तझा

'उगनाक दयादवाद' मैथिली कथा-साहित्यक एक मधुरतम उपहार थिक जतय मैथिली-मन्दिरक महान पुरोधा आचार्य 'सुमन' उपन्यासकारक एक विशिष्ट रचनात्मक मुद्रामे अवतीर्ण भेलाह अछि। महाकवि सुमनक ई औप-न्यासिक यात्रा मैथिलीसाहित्यक एक अत्यन्त सुखद प्रसंग थिक जतय मिथिला मैथिल ओ मैथिलीकेँ एक नव दृष्टि, सम्मुन्नत दिशा, वृहत्तर आयाम, मोहक शिल्प आ समर्थ शैली भेटलैक अछि। सामाजिक यथार्थ ओ वर्गीय संघर्षपर रचित एहि कृतिमे क्रान्तिक ज्वालामुखी नहि, निर्माणक मधुर स्वर्णप्रभातक कल्पना कयल गेल अछि। उपन्यासक स्वर प्रगतिवादी आ दृष्टि प्रयोगवादी ओ रचनात्मक अछि। उपन्यासमे सबतरि जागृतिक शंख फूकल गेल अछि। गाढ़ निन्नमे मातल मिथिलावासीकेँ झिकझोरि जगायब एकर लक्ष्य थिक। कोला-कोलीमे बाँटल लोककेँ राजनीति ओ संस्कृतिक मुख्य धारामे आनल गेल अछि। कटु-तिक्त सत्यकेँ मधुर चाशनी ओ नग्न यथार्थकेँ आदर्शक अभिनव परिधान पहिराओल गेल अछि। मार्क्स-फ्रायडक नकेल पकड़ि ओकरा गाँधीवादी मोड़ देल गेल अछि। प्रेमचन्द्रक आदर्शोन्मुख यथार्थवादक स्वर एतहु मुखर अछि। यथार्थक माटि-पानिपर आदर्शक पावन मन्दिर गढ़ल गेल अछि।

शीर्षक 'उगनाक दयादवाद' सर्वथा साभिप्राय अछि। जहिना टहलू 'उगना' महाकवि विद्यापतिकेँ प्रिय छलनि तहिना बाबू-भैयाक मातहत खबास जाति आ ओकर प्रतिनिधि पात्र तुलसी मंडल श्री सुमनकेँ प्रिय छनि। 'उग-नाक दयादवाद' अर्थात् मिथिलाक खबासक वर्ग-विशेष (जे उपहसित-उपेक्षित रहल अछि)। एहि शोषित आ अपेक्षित वर्गकेँ 'उगनाक दयादवाद' कहब प्रतिष्ठासूचक ओ सम्मानवर्धक थिक। जेना पूर्वक अस्पृश्यकेँ हरिजन,

तहिना मंडल-कापरि-कामति-राय आदि खबासके 'उगनाक दयादवाद' कहल गेल अछि। जहिना महाकविक अन्धभक्त उगना तहिना बाबू-भैया (ब्राह्मण-कायस्थ) केर एकान्त उपासक रहल ई खबास-वर्ग, परञ्च अनन्य सेवक रहितहु ई वर्ग बहुत दबायल आ जाँतल रहल अछि। जहिना दिन-राति महा-कविक सेवामे मातल रहितहुँ बेचारा उगना चेराक मारि खयलक तहिना बाबू-भैयाक मातहत ई जाति सभ दिन गारि-मारि अगेजैत आयल अछि। शोषित दलित वर्गक उद्धारक ई अभिनव प्रयास सर्वथा सराहनीय थिक। खबास वर्गविशेषक उद्धारक संग एहिमे मैथिली महाजातिक समुद्धारक बृहत्तर परि-कल्पना अछि। जाति, वर्ग ओ लिंगादिक जे कृत्रिम विभेदक तत्त्व अछि ताहि खाधिकें पाटि एकताक बहुविध आयामकें उजागर कऽ सभकें एकहि मैथिल महाजातिमे संघबद्ध कयल गेल अछि। एकता, प्रेम आ मैत्रीक सनेस उपन्यासक केन्द्रीय स्वर थिक। विकास ओ प्रगतिक एही सिंहदुआरिपर ठाढ़ मैथिल समाज मिथिला-मैथिलीक अपन सहज सिद्ध अधिकार पाबि सकैत अछि। मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक जयघोष उपन्यासमे सर्वत्र मुखर अछि। मिथिलाकेसरी जानकी बाबूक मिथिला राज्यक आन्दोलनमे जे कथानायक तुलसी बाँहि पुरलक अछि से बेस साभिप्राय थिक। एकर अर्थ ई नहि अछि जे आलोच्य उपन्यास कोनो राजनीतिक घोषणापत्र थिक, मुदा एतेक अवश्य जे एहिमे मिथिलाक जनान्दोलनकें एक एहन सुदृढ़ दिशा ओ गहन अन्तदृष्टि देल गेल अछि जे मैथिल समाजक हेतु सर्वथा स्पृहणीय थिक। अधिकारचेतना ओ संघर्षक दीप-शिखा तखने प्रज्वलित होयत जखन हमर गणशक्ति जाग्रत आ संघबद्ध होयत। तें महादेवक गणशक्तिक आवाहन एतय गर्भितार्थ प्रकाशक अछि।

उपन्यासक कथाशिल्प अभिनव आ प्रयोगधर्मी अछि। आञ्चलिकताक चित्ताकर्षक परिवेशमे देशकोशक सम्पूर्ण कथा कहल गेल अछि। आञ्चलिकताक संग मनोरम नागर-परिवेश देल गेल अछि। मधुर रागात्मकताक, सहज संवेदना आ आह्लादक भावाभिनिवेश एकर विशेषता थिक। मैथिली साहित्यक आञ्चलिक परम्परामे आलोच्य उपन्यासक अस्मिताकें चिह्नल-परेखल जा सकैछ। एक गाम आ एक परिवारक कथा सम्पूर्ण मिथिलाक कथा कहैत

अछि। ई कथा मनुष्यक नहि मनुष्यताक थिक, देशेक नहि संसारक थिक तथा एहिमे अछि मानवीय संवेदनाक एकहि समरस भावभूमि। आञ्चलिकताक यैह वैश्विक अथवा सार्वत्रिक अन्तश्चेतना एकर विशेषता थिक। तुलसी आ रधिया-सबियाक एकहि परिवार तथा 'मधुपुर'क एकहि गामक चारूभरक परिवेशकें सहेजि समग्र मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक यावतो कथा एहिमे तेना ने उघेसि देल गेल अछि, समस्त अञ्चलविशेषक परिदृश्यकें तेना ने चित्रित कयल गेल अछि तथा यथार्थपरक कल्पनाक तेहन ने सहज रंग-टीप मढ़ल गेल अछि जे अपूर्व पानि-सिसरींक घोल जकाँ ई अनेरे सहृदय-हृदयकें जुड़ा दैत अछि। मिथिलाक्षेत्रक लोककें अपन भाषा, स्वदेश तथा मैथिलत्वक प्रति उद्बोधित-उत्प्रेरित करब आलोच्य उपन्यासक कथाक मूलाधार थिक। शोषणक चक्कीमे कुहाइत-पिसाइत पीड़ित-दलित खबासवर्गकें आत्मनिर्भरता आ आत्मसम्मानक पाठ पढ़ा ओकरा राष्ट्रनिर्माणक मुख्य धारामे आनल गेल अछि। छोटका-बड़का अगुआ-पछुआ, गरीब धनिक, शोषक, शोषित, बाभन-सोल्हकन, मालिक-खबास ओ किसान-मजूराक वर्गसंघर्षकें अँखिदेखार कऽ ओकरा स्वस्थ विकासात्मक मानवतावादी मोड़ देल गेल अछि। आब उगनाक दयादवाद कोनो बँधुआ मजदूर नहि, मनुष्यताक आभासँ जगमगपूर्ण मनुक्ख थिक जनिक लोक देवता जकाँ पूजा करैत अछि। औपन्यासिक कथ्यक स्थापना केहन आकर्षक अछि ; "आब उगनाक दयादबादमे विद्यापति-शिवसिंहे नहि, विद्या ओ लखिमा सेहो अवतरित भऽ रहल छथि।

जातिवाद, बाढ़ि, महामारी, गरीबी, बेकारी ओ अशिक्षा मिथिलाक कोढ़ थिक। गाँधीजीक ग्रामस्वराज्यक कल्पनाकें चरितार्थ कऽ एहि ग्रामीण समस्या सभसँ निपटबाक दिशा निर्दिष्ट कयल गेल अछि। गोत्रबाद, गोलबद्धता, गुटबाजी, पाखण्ड, मानिजनी आ महन्थी मैथिली-आन्दोलनक अभिशाप रहल अछि। एतुक मनुष्यता कोनो हरिसिंहदेवी जीर्ण-शीर्ण व्यवस्थामे जकड़ल रहल अछि। एतुक स्वच्छ वायुमण्डलमे जाति-पाँजिक सघन कुहेस लागल अछि, तिलक-दहेजक घटाटोप अछि, बबुआनीक ठाठ चढ़ल अछि आ अछि पसरल पाखण्डक घनान्धकार, एहिसभ कुहसकें फाड़ि विद्वान कथाकार मानवतावादी जीवन-दर्शनक

संधान आ संघशक्तिक आह्वान करैत छथि । माँ मैथिली जा धरि कोनो लाल-पिअर पौती-मौनीमे मुनल-बान्हल रहती ता धरि हुनक आत्मा कूही होइत रहतनि ओ हकन्न कनिते रहती, अपन माथ-कपार पिटिते रहती । तेँ कोनो सर्वहारा युवा तुर्कक हाथमे आब एकर भविष्य सुरक्षित रहतैक । तुलसी-सबियाक सशक्त नेतृत्वमे आब मिथिला-मैथिलीक उद्धार सम्भव थिक । तेँ कोनो धर्मध्वजी कविकाठीकेँ आब अपन आडम्बरक कण्ठी तोड़ि देबाक चाही । जाति व्यर्थ थिक । आचरणे मनुष्यताक निष्कर्ष थिक । आइ हमरा कोनो नन्दकिशोर नहि चाही, तुलसी चाही, सबिया वा माधुरी चाही जे कोनो कामुक निरसू बाबूक प्राण बचा हुनक राक्षसकेँ झिकझोरि मनुक्ख बना सकय । आलोच्य उपन्यास जनवादी नहियो रहैत, जनान्दोलनक माटि-पानिपर जनवादक स्वस्थ रूप गढ़ैत अछि । विद्वान् कथाकार विध्वंसमे नहि, निर्माणमे विश्वास रखैत छथि । ओ कदाचित् एही नारकीय मर्त्यलोककेँ कोनो नन्दन-कानन अथवा एही हाड़-काठक लोककेँ राक्षससँ देवता बनयबाक लेल अपस्याँत छथि । स्वप्निल लगितो कथाशिल्पीक ई साधना स्वाय्यवर्द्धक आ स्पृहणीय थिक ।

प्रस्तुत पोथीमे मोल कथाक नहि, कथ्यक अछि । महत्त्व पात्र-सृष्टिक नहि, चित्रणक अछि । मान आभिजात्यक नहि, मनुष्यताक अछि । तुलसी-सबियाक चित्रणमे लेखककेँ पूर्ण सफलता हाथ लगलनि अछि । कथामे स्त्री-शक्तिक विशेष रूपेँ आह्वान कयल गेल अछि । सबिया-रधिया तथा माधुरी-अपर्णांक चित्रण अत्यन्त सजीव अछि जे सहृदय-हृदयपर अनेरे नगजकाँ गड़ि जाइत अछि । सबिया-रधियाक भूमिका पूर्णशक्तिक आ उत्साहवर्द्धक अछि । कथानकक नेतृत्व एक एहन सर्वहाराक हाथमे देल गेल अछि जे पूजीवादी अर्थ-व्यवस्था ओ सामन्ती विलासिताकेँ ध्वस्त नहि, अपितु ओकर नवनिर्माण वा संस्कार-परिष्कार कऽ सभकेँ संघबद्ध करबामे सफल भेल अछि । ग्राम 'मधु-पुर'क परिदृश्यमे सम्पूर्ण मिथिलाक सामाजिक-राजनैतिक-सांस्कृतिक चेतनाक समुद्घोष कयल गेल अछि । मधुपुरकेँ तेना ने ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पृष्ठ-भूमिमे मधुबनी, पटना आ कलकत्तासँ एकहि सोनाक डोरीमे जोड़ि देल गेल अछि जे सबतरि गाम-घरसँ महानगर धरि जनान्दोलनक एक्के लहरि लहरा रहल

अछि। कलकत्ता तँ मिनी मिथिले थिक। मिथिला-बंगालक एहि सांस्कृतिक एकताक सूत्रकें पकड़ि जे किछु कहल-सुनल गेल अछि से सर्वथा प्रभावी तथा चित्ताकर्षक अछि। देओर-भाउजिक सरस हास-परिहास, प्रेमी-प्रेमकाक रोमानी भाव-विलास तथा दाम्पत्यक सहज रंग-उल्लास, औपन्यासिक कौतूहल आ रोचकतामे चारि चान लगौने रहल अछि। ग्राम्य ओ नगर परिवेशक अपूर्व चित्रण अछि। महानगर कलकत्ताक कृष्ण-पक्ष ओ शुक्ल-पक्षक तेहन ने सजीव चित्र उतारल गेल अछि जे यात्रासाहित्यक एक आदर्श प्रतिमान गढ़ैत अछि। देशकालक अपूर्व रेखाचित्र अछि (द्रष्टव्य पृष्ठ ४० "पारिवारिक वातावरण जहिना गमथिल छल ·· मुदा बुन्नपात कृपणक वचन जकाँ छने बिला जाय") बाढ़ि-पानिक व्याथा-कथाक तलस्पर्शी शब्दचित्र अछि। मैथिली आन्दोलनक यथार्थ व्यंग्यचित्र अछि। कथोपकथनमे सहज रोचकता अछि। सभसँ सुखद पक्ष जे महाकविक औपन्यासिकता हुनक कवित्त्वसँ आनाक्रान्त अछि।

औपन्यासिक कथाशिल्पमे प्रतिपक्ष दुर्बल अछि। कथानायक प्रतिपक्षी नन्दकिशोरकें यथेष्ट भूमिका नहि भेटि सकल अछि। तें उपन्यासमे पक्ष-विपक्षक अखाड़ा नहि जमल। तुलसीकें एकतरफा डिग्री भेटि गेलैक। विरोध-वैषम्य तथा द्विधा द्वन्द्वक पक्ष निर्बल अछि। औपन्यासिक विस्मय-कौतूहलक पक्ष हल्लुक अछि। नायिकात्वक प्रश्न बड़ जटिल आ कठाइन अछि। माधुरी सर्वहाराक प्रतिनिधि पात्री थिकीह। ओ एक एहन विद्युज्ज्योति थिकीह जे कथानकक मुख्यधारामे खपैत नहि छथि। सावित्री-सबिया परिस्थितिक उपजा थिकीह। तें सिद्धान्त वा आदर्शक वेदीपर सबियाक त्यागमय बलिदान पाठककें सन्तुष्ट नहि करैत छैक। शैली सहज ओ भावाभिव्यञ्जक अछि। आकार-प्रकार तथा कथाशिल्पक दृष्टिसँ एकरा उपन्यासिका वा दीर्घकथा कहल जा सकैछ। देओर-भाउजिक आधिकारिक कथामे जे प्रासंगिक अंश अछि से नगण्य थिक। कथान्विति अन्त-अन्तधरि बनल रहैत अछि।

आजुक समसामयिक उपन्यासमें मूल्य कथाक नहि, कथ्यक होइछ। आजुक उपन्यास बोध आ संवेदनाक धरातलपर मानवीय आस्थाक दस्तावेज थिक, ई आत्मान्वेषणकेर एक प्रक्रिया थिक, ई नव-नव उदीयमान मानवमूल्यक आवि-

ष्कर्त्ता थिक, ओकर प्रतिष्ठाता तथा नियामक थिक, ई यथार्थ परिप्रेक्ष्यमे वर्ग-चेतनाक प्रतीक थिक, ई प्रकृति आ समाजक विरुद्ध संघर्षक महाकाव्य थिक ओ थिक जिनगीकेँ नव-नव आयाम आ वृहत्तर संदर्भसँ जोड़वाक सार्थक सृजन-कर्म। समकालीन उपन्यास शिल्पक साज-सज्जाक स्थानपर अपन एहन विचार-तत्त्वकेँ रेखांकित करबाक प्रयत्न करैत अछि जे कोनो आरोपनकेँ स्वीकार नहि करत। आजुक उपन्यासमे ओ अनुभूति-प्रवणता सर्वाधिक महत्त्व रखैत अछि जे लेखककेँ यथार्थ जीवनखण्डसँ भेटैत छनि तथा जकरा ओ संवेदनाक माध्यमसँ अपन पाठक धरि संप्रेषित करैत छथि। समकालिकताक एहि निष्कर्षपर महाकवि सुमनक उगनाक दयादवाद एक उत्कृष्ट उपन्यास थिक जे यथार्थक माटि-पानिपर जनजीवनकेँ अधिकार-चेतना आ संघर्षक प्रभूत आलोक-राशि प्रदान करैत अछि। वृहत्तार संदर्भमे नव-नव जीवनमूल्य आ मानवीय मर्यादाक प्रतिष्ठा करैत अछि तथा जगबैत अछि जिजीविषा, कुण्ठा, संत्रास, अभाव ओ पीड़ाक संसारमे आशा-उल्लासक शत-शत दीपशिखा। एहिमे बोध एवं संवेदनाक एहन संसार अछि जे पाठकीय चेतनाकेँ अनेरे अपना दिस चुम्बक जकाँ खीचि लैत अछि। संक्षेपमे आलोच्य उपन्यास मैथिल-चेतनाक समर्थ दस्तावेज थिक। जे मार्क्सक आँखिए एकरा देखताह, अथवा फ्रायडक कमाल तकताह, अथवा तिलस्म वा ऐयाशी जादूगरीक चटकार चाहताह तनिका घोर निराशा हाथ औतनि, मुदा जे माँ मैथिलीक मंदिरमे फूल-पान, धूप-दीप तथा अतर-फुलेलक मधुमय शृंगार करबाक लेल कटिबद्ध छथि तनिका लेल एतय सर्जनाक फुलडालीमे साधनाक जगमग दीपमालिका सजल अछि। अन्ततः 'उगनाक दयादवाद' एक एहन कृतिरत्न थिक जे कोटि-कोटि मिथिलावासीकेँ जीवित-जाग्रत रखबाक लेल तथा मिथिला मैथिल एवं मैथिलिक प्रति उत्प्रेरित-उद्‌बोधित करबाक लेल अलम् अछि।

नव बाट तकैत उगनाक दयादवाद

श्रीअशोककुमारठाकुर

सामाजिक न्यायक पूर्वपीठिकाक रूपमे लिखा गेल उगनाक दयादवाद। हँ, लिखाइए तँ गेल ! सुमनजी नँभेल तँ नहि लिखै छला। नँभेल ! नव बात, नव दृष्टि, नव बाट, सैह तँ थिक नँभेल, आ से देखौलनि एकटा छोट-छीन रचनामे सुमनजी। आइ जखन सामाजिक न्यायक विजयक उल्लासक उत्सव मनौल जा रहल अछि, तखन ई आर प्रासंगिक भऽ गेल अछि, सार्थक रचना, आर जीवन्त, आर प्राणबन्त रचना। ई लिखबाक कोन बाध्यता छलनि से तँ नहि कहल जा सकैछ, मुदा एतबा तँ अनुमान लगौले जा सकैत अछि जे तथाकथित उच्चवर्गक संग छाया जकाँ सदिखन ठाढ़ भेल ओहि पछुआयल वर्गक उत्थानक लेल मनमे औनाइत भावनाक अभिव्यक्ति एहि पोथीमे भेल अछि।

एहि उपन्यासक माध्यमे कहल गेल अछि समाजक ताहि अंगक कथा जे सभ दिनसँ तथाकथित उच्चवर्गक सेवा-टहलमे लागल रहल, आ बदलामे भेटलैक ऐंठ-कूठ, गंजन-गारि, फज्झति-लांछना आ जानि नहि कते उत्पीड़न। सबहक सेवा करैत पीढ़ी-दर-पीढ़ी गरीबी आ अशिक्षाक अंधकारमे पड़ल रहल, मुदा समाजक एते विशाल अंग दिस ने कोनो नेताक ध्यान गेलनि आ ने साहित्यकारेक। ई समाज हरिजन नहि छल जाहिसँ कोनो सरकारी सुविधा भेटितैक, आ ने आर्थिक रूपे सुदृढ़ जे अपन स्थान समाजमे बना सकैत; तेँ बाध्यता छलैक ओकरा लेल बाबू-भैयाक खबासी करब, खेतमे हर जोतब, माल-जाल चरायब, भार ऊवब, आ कहुना आधा पेट अन्न आ आधा देह वस्त्रक ओरिआन करब। देश स्वतंत्र भेल, समाजक सभ वर्गपर सरकारक दृष्टि पड़लैक, मुदा ई वर्ग उपेक्षिते रहि गेल।

साहित्यकारक संवेदना कष्टमे पड़ल उपेक्षित लोक वा वर्गपर होइत छैक। सुमनजी अपन उपन्यासक नायक एही वर्गसँ लेलनि अछि। तुलसी मंडलक माध्यमे धानुक, कियोट, कुर्मी, कहार आदिमे फुटैत सामाजिक, राजनीतिक आ आर्थिक चेतनाक कथा कहलनि अछि। कथाक पसार कोनो पैघ नहि अछि, नेना तुलसीसँ लऽ युवक तुलसीक कथा थिक उगनाक दयादवाद। छीतन मंडल अपन छोट भाइ तुलसीकेँ निरसू बाबूक ओहिठाम चरबाहीमे नहि लगा गामक स्कूलमे नाम लिखा देलनि। निश्चय ई एकटा नव घटना छल, नव बात भेल छल समाजमे आ तकरे सुफल छल तुलसी सन व्यक्तित्वक निर्माण। तुलसी जेना-जेना शिक्षा ग्रहण करैत गेल, ओकर दृष्टि जीवनक प्रति बदलैत गेलैक। संघर्षक मार्गपर बढ़ैत सामाजिक दुर्दशाकेँ देखैत रहल। ताहिमे सुधारक लेल यथासाध्य प्रयत्न सेहो करैत रहल।

सभसँ पहिल काज ओकरा बुझना गेलैक जे अशिक्षाकेँ समाप्त करी आ ताहि क्रममे ओ अपनो शिक्षित भेल गेल। गाममे बाढ़िक प्रकोप छल ताहिसँ गामक लोक विशेष कऽ निर्धन समुदाय अधिक कष्टमे छल। तुलसी अपन नेतृत्वक परिचय दऽ सेवासँ सभक सहायता कयलक। ओतबे नहि, मैथिली महासभामे सेहो आन अभिरुचि देखा मैथिलीक नव परिभाषा देबाक लेल तथाकथित मैथिललोकनिकेँ सोचबाक लेल बाध्य कयलक। एही बीच ओकर भाउजि रधिया अपन छोट बहिन साबीसँ तुलसीक विवाहक गप्प सेहो उठौलक, मुदा रधियाक पिता ड्राइवर छलै आ ओकर मालिक साबीक विवाह कोनो दोसरसँ करबाक बात चलौने छला। जातिक बैसाड़मे निर्णय भेल जे ड्राइवर भोज देथु। तुलसी एकर विरोध कयलक आ भोज दऽ विवाह करब ओकरा मान्य नहि भेलैक। ओकर दृष्टि अपन समाजमे व्याप्त कुरीति दिस सेहो छलैक, जे समाजकेँ आगू नहि बढ़ऽ दैत छलैक। गृहश्रमिक संघक स्थापना भेल आ गाम-गामक मंडलजी कामतिजी सभ ओकर सदस्य बनला। एहिसँ तुलसीक सर्वप्रियतामे किछु कमी अवश्य आयल, कारण गाममे बाबू-भैयाक काजमे बाधा पड़ि गेलनि, आ बहुत काज अपने हाथेँ करऽ पड़नि, तथापि समाजक दुनू अंगक लेल ई आवश्यके छल।

एही बीचमे रधियाके बहिनक चिट्ठी भेटलैक आ ओ तुलसीके कलकत्ता पठेबा लेल प्रोत्साहित करऽ लागलि। तुलसी सनेस-बारी लऽ कलकत्ता बिदा भेल ट्रेनमे जानकी बाबूक नेतृत्वमे मिथिला राज्यक माँगक नारा सुनलक आ ओहो ओहिमे सम्मिलित भऽ गेल। जेल गेल आ घुरलापर कलकत्ता सेहो गेल। कलकत्तामे भाउजिक बहिन साबी आ डाक्टर साहेबक कन्या अपर्णाक संग खूब घूमल। ताहि क्रममे अपन पुरना मित्र जगदीशक संग कलकत्ताक झोपड़पट्टी आ सड़कपर पुल तर रहनिहार समाजक दुर्दशा सेहो देखलक। निश्चय साबीसँ रागात्मक सम्बन्ध भऽ गेल छलैक, मुदा ओ ओकर गुणपर मोहित छल, पढ़ाइ-लिखाइ आधुनिकतापर मोहित छल। गाम घुरलापर तुलसीक लेल दोसर समस्या ठाढ़ छलै। मलेरियामे गामक गाम समाप्त भऽ रहल छल। अपन संगठनके प्राण-प्रतिष्ठा दऽ एहिमे लगौलक। एहि कार्यमे कलकत्तासँ अपर्णाजी आ साबी सेहो आबि ओकरा सहयोग देलनि। कैम्पक समाप्तिक उपरान्त एकगोट अनाथ कन्या मधुरीके सेहो ओकरा अपन परिवारमे राखऽ पड़लै। कलकत्तावाली सभ तँ चलि गेलि, मुदा रधियाक संग मधुरी एहि परिवारक अंग बनि गेलि। ग्राम पंचायतक चुनाव भेल, तुलसी मुखिया चुनल गेला। तुलसीक जीवन-निर्माणमे सहायक मोहन मिसर सरपंच भेला। नव मुखियाक नेतृत्वमे गाममे सहयोगक भावनाक उदय भेल आ गाम विकासक पथपर बढ़ि चलल। उपन्यासक अंतमे पुनः अपर्णा आ साबी अबैत छथि। साबी तुलसीक विवाह मधुरीसँ कराबा त्यागक परिचय दैत छथि।

उपन्यासक कथा छोट अछि आ संरचनाक हिसाबे सेहो ओतेक सशक्त नहि अछि, मुदा कहल जाइत अछि जे दलित साहित्यक मैथिलीमे अभाव अछि, तकर तँ निश्चय एहिसँ क्षतिपूर्त्ति भेल अछि। कथाकारक जीवनदृष्टि ओकर पात्र सभपर तँ रहिते छैक, तकरा सोलहो आना सिद्ध ई उपन्यास करैत अछि। एकर कथानायक मातृभाषाक माध्यमे शिक्षित भऽ मैथिली साहित्य परिषदक स्नातक होइत अछि। मैथिलीक परिभाषाके व्यापकता प्रदान करैत अछि। समाजमे व्याप्त अनाचारके लोकक सोझाँ अनैत अछि। मानवताक पाठ पढ़बैत सेवाभावके सर्वोच्च स्थान दैत अछि आ समाजके पुनः सोचबाक लेल

बाध्य करैत अछि। उपन्यासमे पात्रक संख्या कोनो अधिक नहि अछि, आ ने तुलसी छोड़ि आन पात्रक विकासे भऽ सकल अछि, तथापि कथ्यक तँ महत्त्व अछिए।

एहिमे औपन्यासिकता अंतमे अबैत अछि। प्रारम्भमे सुमनजी कथाकारसँ अधिक पत्रकार बुझना जाइत छथि, घटनापर घटनाक वर्णन आ सेहो पत्रकारक शैलीमे। इतिहासक अमोघ विधान छैक, जकरा चिरस्मरणीय बनक छैक, अमर बनक छैक, ओकरा शांति नहि भेटतैक। एही ससारमे तँ एहनो लोक होइत अछि जे अपनेमे एकटा इतिहास बनि जाइत अछि। विरले एहन लोक जन्म लैत अछि। संसार ओकर अवहेलना करैत छैक, समाज ओकर वहिष्कार करैत छैक, सर-सम्बन्धी-मित्र हतास करैत छैक, मुदा ताहि सभ संकटकेँ झेलैत ओ आगू बढ़ैत रहैत अछि। ओ सभक हित चाहैत अछि मुदा ओकरापर विश्वास कहाँ लोककेँ होइत छैक? ओ अपन कर्तव्यपर आगू बढ़ैत जाइत अछि, सफलता-असफलतापर बिनु विचार कयने। एहने एकगोट संघर्षशील व्यक्ति उक्त रचनाकारक नाम थिक श्रीसुरेन्द्रझा सुमन', मैथिली पुष्पोद्यानक सुरभित सुमन। मैथिलीक प्रति जे हुनक अनुराग से सौंसे उपन्यासमे भेटत। कहब अतिशयोक्ति नहि जे मिथिलाक माटि-पानिक कथा अछि उगनाक दयाद्वाद।

प्रश्न उठैत अछि जे के थिक उगना आ के सभ थिक ओकर दयादवाद? उगना कोनो एक व्यक्ति नहि, कोनो दन्तकथाक नायक नहि, ओ तँ एक टा वर्ग-विशेषक परिचायक थिक। महाकवि विद्यापतिक सेवामे लागल उगनाक रूपमे भगवान शिव, प्रकारान्तरमे समुदायविशेषक रूप धारण कऽ लेलक। समाजक अगुआलोकनिक ध्यान ओम्हर नहि गेल जकर परिणाम भेल वर्गसंघर्षक समस्या। एहि समस्याक समाधानक संकेत जे एहि पोथीमे भेल अछि ओ मानवोचित एवं सर्वग्राह्य अछि। विजयक उल्लास कखनहु उन्मादक रूप लऽ लैत अछि आ सैह फेर सामाजिक विद्वेषक जन्म दैत अछि। कथाकारक रस-भाष्य से तँ नहिए टा छनि। ओ तँ काम्य आ प्राप्यक बीचमे एकटा सुरभित समाजक कल्पना कयने छथि। आ तेहने वातावरणक रचनो भऽ गेल अछि।

हुनक पात्र सभ सक्रिय अवश्य अछि मुदा आक्रामक नहि। ग्रामीण जीवक जे मर्यादा अछि, सामाजिक ऐक्य अछि तकरे छवि भेटैत अछि सौंसे पोथीमे। वातावरणक निर्माणसँ कथामे विश्वसनीयता बढ़ि गेल अछि, आ से उपन्यासक लेल अत्यावश्यको होइछ।

सुमनजीक काव्य करबाक हिस्सक सम्पूर्ण उपन्यासक भाषापर अछि। तेँ भाषा प्रवाहमयी बनि गेल अछि। जेना "साबी साबिके जकाँ घर-बाहरक काजमे हाबी अछि, परंच ककरोपर दाबी नहि जमा सकलि।" शब्दयुग्मक प्रयोग तँ अत्यधिक अछि, ताहिसँ भाषाक गतिमयता बनल रहैत अछि,—जेना "काज-धाज, नौआ-बाभन, विआह-दान, जन-मजदूर, चिक्कनि-चुनमुनि, पहिरन-ओढ़न, टहल-टिकोरा, नामी-गरामी, देखबा-सुनबा," आदि। ग्राम्यजीवनक जे चित्र आँकल गेल अछि ओ खाँटी थिक। गामक विधि-व्यवहार, गीत-नाद, पूजा-पाठ आदिक जे वर्णन भेल अछि ओ कथाकारक मैथिलीक पाठक लेल पँघ सनेस थिक।

मैथिली उपन्यास-साहित्य भलमानुस, जयवार आदिक सीमारेखा टपि उगनाक दयादबाद दिस जे दृष्टिपात कयलक अछि से शुभ लक्षण थिक। मैथिलीक परिभाषाकेँ व्यापकता भेटौक आ तुलसीक प्रयास सफल होउक।

दत्त-वतीक वस्तु-कौशल

डा० श्रीरामदेवझा

समग्रतामे जीवन, समाज ओ युगक सरस ओ कलात्मक प्रतिविम्बन जाहि काव्य-रूपमे संभव होइछ सैह थिक महत् काव्य—महाकाव्य। कविक कारयित्री प्रतिभा ओ बहुज्ञतासँ समन्वित सर्जन-शक्ति, गम्भीर चिन्तन ओ उदात्त विचार, भाषा-साहित्यक व्यंजना-शक्तिक समवायिक प्रतिफलन होइत अछि महाकाव्यमे। महाकाव्यसँ साहित्य महिमा-मण्डित होइत अछि। अतः महाकाव्यकेँ कोनहु भाषा, साहित्य ओ समाजक प्रौढ़त्वक मानदण्ड मानल जाइत अछि।

मैथिली साहित्य अतीत कालमे विद्यापति-गीत-गंगाक रसधारासँ तेना सिक्त-स्नात होइत रहल जे कतोक शताब्दी धरि कोनहु कविकेँ महाकाव्यक रूपमे दीर्घकाव्यक रचना दिस प्रवृत्तिए नहि भेलनि। अवश्ये अठारहम शताब्दीमे भाषाकवि मनबोधक 'कृष्णजन्म', उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे कवीश्वर चन्दाझाक 'मिथिला भाषा रामायण', बीसम शताब्दीक प्रथम चरणमे कविवर लालदासक 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण' ओ 'महेश्वर विनोद' 'गणेशजन्म', सदृश दीर्घ काव्यक रचना भेल। ई कृति सब मैथिली साहित्यक गौरव ग्रन्थक रूपमे आदृत अछि। परन्तु भारतीय काव्यशास्त्रमे महाकाव्यक जे लक्षण-निरूपित भेल अछि, जे स्वरूप निर्धारित अछि, नायक-नायिका, कथा-वस्तु, वर्णन-विन्यास ओ रस-योजनाक जे निर्देश देल अछि तकर सभक व्यवस्थित अनुबन्ध एहि काव्य सबमे नहि भेल अछि। तेँ आलोचक लोकनि एहि काव्य सबकेँ बृहत् काव्य, पौराणिक प्रबन्ध इत्यादि कहैत छथि परन्तु महाकाव्य कहबामे संकोचक अनुभव करैत छथि। यदि महाकाव्य कहितहुँ छथि तँ महाकाव्यक परिभाषाकेँ शिथिल करैत।

काव्यशास्त्रमे विहित लक्षणक अनुसरण करैत मैथिलीमे महाकाव्य रूपमे रचित पहिल कृति थिक मुन्शी रघुनन्दन दासक 'सुभद्राहरण'। १९३६ ई० मे मैथिली साहित्य परिषद्क मुजफ्फरपुर-अधिवेशनमे कवि स्वयं एहि महाकाव्यक किछु महत्त्वपूर्ण अंशक पाठ कयने छलाह। एहि अधिवेशनमे पंडित बदरीनाथ झा मैथिलीमे एक महाकाव्य लिखबाक घोषणा कयलनि आ पश्चात् 'एकावली-परिणय'क रूपमे अपन घोषणाकें चरितार्थ कयलनि। एकरा पश्चात् अनेक महाकाव्यक रचना होइत रहल, यद्यपि अत्यन्त मन्थर गतिसँ। मैथिली महाकाव्यक क्रमशः विकासमान विटपक शिखर-पुष्प थिक आचार्य श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन' विरचित 'दत्त वती' महाकाव्य।

महाकाव्यक नायक थिकाह मृगांक दत्त ओ नायिक थिकीह शशांकवती। दुहूक समतुल्यताक व्यंजना जें कविकें इष्ट छनि तें नायक-नायिकाक नामक उत्तरखंडकें योजित कऽ काव्यक नाम 'दत्त-वत्ती' राखल गेल अछि। एहि नामकरणक संकेत कवि द्वारा देल गेल अछि, यथा --

अछि मृगांक शशांक पद पर्याय एकहि अर्थगति।
लग्न राशिक दत्त नाम उपाधि युक्तवती स्वमति ॥३२/८
भव-भवानी मृड-मृडानी दम्पती युग-युग जेना।
हो मृगांक-शशांक पद-पर्याय दत्त-वती तेना ॥३१/१६

पचीस सर्गमे निबद्ध 'दत्त-वती' महाकाव्यमे विहित लक्षणक समग्र तत्त्वक सतर्कतापूर्वक निर्वाह कयल गेल अछि। प्रत्युत ई कहबाक चाही जे भामह, दण्डी, रुद्रट, आनन्दवर्द्धन, भोज, वागभट्ट, हेमचन्द्र ओ विश्वनाथ द्वारा निरूपित महाकाव्यक सामान्य लक्षणक संगहि यदि कोनहु आचार्य द्वारा किछु विशिष्ट उपादान निर्दिष्ट अछि तँ तकरहु 'दत्ता-वती' महाकाव्यमे कोनहु रूपमे अवश्य समाहार कऽ देल गेल अछि। अतः लक्षणक दृष्टिएँ ई काव्य सम्पूर्ण महाकाव्य थिक।

'दत्त-वती' महाकाव्यक बाह्य संरचना, यथा—सर्गबद्धता, अष्टसर्गाधिक्य, आरम्भमे नमस्क्रियादि, सर्गान्तिमे छन्दक परिवर्त्तन, विविध छन्दक प्रयोग इत्यादिक निर्वाह तँ स्वभावतः भेले अछि। अतः एकर सभक सोदाहरण विवेचन-

विश्लेषणक प्रयोजन नहि बूझि पड़ैछ। महाकाव्यक आभ्यन्तर संरचनाक महत्त्वपूर्ण उपादान होइछ ओकर कथानक, नायक-नायिका ओ अन्य पात्र, विविध वर्णन, रस-संयोजन, शैली ओ उद्देश्य। एकरहि सभक चारु ओ समीचीन संयोजनपर महाकाव्यक श्रेष्ठता निर्भर करैत अछि। कविक कल्पना ओ अनुभूति, उद्भावना ओ भाव-सम्प्रेषण, शास्त्र ओ लोकस्वभावक अभिज्ञता, युगचेतना ओ विचारधारा एहि उपादानक माध्यमसँ अभिव्यंजित होइत अछि। एहू सबमे सर्वाधिक महत्त्वक होइत अछि कथानक। कारण, अन्य सब उपादानक आधार वा आश्रय कथानके रहैत अछि।

काव्यवस्तु वा कथानक तीन प्रकारक होइत अछि—प्रख्यात, उत्पाद्य ओ मिश्र। पुराण-इतिहास इत्यादिसँ गृहीत वृत्तकेँ प्रख्यात कहल जाइछ। कवि द्वारा उद्भावित वृत्तकेँ उत्पाद्य तथा जाहि कथानकमे प्रख्यात ओ उत्पाद्य दुहूक मिश्रण रहैत अछि तकरा मिश्र कहल जाइछ।

महाकाव्यक कथानक महान् चरित्रसँ सम्बद्ध, सदाश्रय, इतिहासमे प्रसिद्ध होयबाक चाही। आचार्य लोकनि एहि सम्बन्धमे निर्देश देने छथि—

'इतिहास कथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयम्।'
'इतिहासोद्भवं वृत्तं अन्यद्वा सज्जनाश्रयम्।'

'दत्त-वती' महाकाव्यक कथानक ग्रहण कयल गेल अछि सोमदेव विरचित 'कथासरित्सागर' सँ। रामायण, महाभारत ओ अन्यान्य पुराण जकाँ 'कथासरित्सागरो'केँ इतिहासक गरिमा प्राप्त छैक। एकरहु कथासबकेँ प्रसिद्ध आख्यान कोटिमे परिगणित कयल जाइछ। भारतीय वाङ्मयक बहुतो उच्चकोटिक काव्य-नाटकक कथानकक स्रोत यैह ग्रन्थ रहल अछि। संगहि मूल कथानकमे मृगांक दत्तक चरित्रक वर्णन वीर, साहसी, धैर्यवान सत्पुरुषक रूपमे कयल गेल अछि। अतः 'दत्त-वती' महाकाव्यक कथानक इतिहासोद्भ वृत्त एवं सज्जनाश्रित अछि, ताहिमे सन्देह नहि। परन्तु 'दत्त-वती' महाकाव्यक कथानकक वैशिष्ट्य ओ कविक नवोन्मेषक चारुताक अनुभव मूलकथाकेँ देखले पर भऽ सकैछ।

'कथासरित्सागर'क द्वादश लम्बकक नाम अछि 'शशांकवती लम्बक'।

एहि लम्बकमे दोसर सँ अन्तिम छत्तीसम तरंग पर्यन्त अवध नरेश अमर दत्तक पुत्र मृगांक दत्त द्वारा उज्जयिनीक राजा कर्मसेनक कन्या शशांकवतीक हरण-परिणयक कथा वर्णित अछि। पिशंगजट मुनि प्रिया-विरहमे विषण्ण भेल नर-वाहन दत्ताक समाश्वासन हेतु ई समस्त कथा कहैत छथिन।

अवधक राजा अमरदत्त ओ रानी सुरतप्रियाक पुत्र भेलाह मृगांकदत्त जनिक दस गोट सखा-मन्त्रीं छलथिन—प्रचण्डशक्ति, स्थूलबाहु, विक्रमकेसरी, दृढ़मुष्टि, मेघबल भीमपराक्रम, विमलबुद्धि, व्याघ्रसेन, गुणाकर ओ विचित्रकथ। भीमपराक्रम ओ मृगांकदत्त दूहू स्वप्न देखैत छथि जे उज्जयिनीक राजा कर्मसेनक अनन्य सुन्दरी कन्या शशांकवती मृगांकदत्ताक पत्नी होयथिन। मृगांकक हृदयमे पूर्वानुराग उत्पन्न होइतनि। ओ अपन बुद्धिबलसँ शशांकवतीकेँ पयबाक निश्चय करैत छथि। (तरग–२)। मृगांक समस्त सखासंग महाव्रतीक रूपमे उज्ज-यिनी जयबाक योजना बनाय भीमपराक्रमकेँ अभिचार सामग्री नरमुंडादि संग्रहक आज्ञा दैत छथिन। मुख्यमंत्रीकेँ एकर पता लागि जाइतनि। संयोगात् एक दिन भवनक छतपर स्थित मृगांक द्वारा फेकल पानक पीक नीचाँमे मुख्यमंत्रीक ऊपर पड़ि जाइतनि ओ क्रुद्ध भऽ जाइतथि। ओमहर राजा अमरदत्तकेँ विसूचिका भऽ जाइतनि। मुख्यमत्री प्रतिशोधक उपयुक्त अवसर बूझि राजाकेँ कहैछ जे राजकुमार राज्य-लोभसँ राजापर मारण-मन्त्र आरम्भ कयल अछि आ प्रमाणमे भीमपराक्रमक घरसँ अभिचार-सामग्री बरामद करबैछ। अमरदत्त मन्त्रीक कथनपर विश्वास कऽ मृगांकदत्ताकेँ राज्य-निष्कासनक दण्ड दैत छथिन। मृगांक सखा सहित उज्जयिनी दिस विदा भऽ जाइत छथि। पहिने अपन मित्र किरातराज शक्तिरक्षितक ओतऽ जाइत छथि। ओतऽ अपन उद्देश्य-सिद्धिमे हुनकासँ सहायताक आश्वासन लऽ आगाँ वन-प्रदेशमे बढ़ैत छथि। वनमे शुष्कवृक्षक रूपमे स्थित ब्राह्मण कुमार श्रुतधि शापमुक्त भऽ संग होइत छथिन। श्रुतधि छलाह अवध निवासी दमधिक पुत्र जे बहुत पूर्व अकाल पीड़ित भऽ पिताक संग वनमे आश्रय लेलनि तथा बुभुक्षा-जन्य त्रुटिक कारणे पिताक शापसँ शुष्कवृक्ष भऽ गेल छलाह। आगाँ बढ़लापर पारावत नागसँ शप्त भऽ सखा सब किछु अवधिक हेतु बिछुड़ि जाइत छथिन। एकाकी मृगांक सखाक

अन्वेषण करैत उज्जयिनीक दिशामे आगाँ बढ़ैत छथि। वन-पथमे क्रमशः श्रुतधि ओ विमलबुद्धिसँ मिलन होइत छनि। विमलबुद्धि अपन देखल स्वप्न एवं ओहिमे एक दशभुज सिंहक दसो भुजा टुटबाक ओ सिंहिनीक प्राप्तिक वर्णन करैत छथि जाहिमे मृगांकक सफलताक भविष्य-सूचना अनुमित होइत अछि। (तरंग–३)।

तीनू आगाँ बढ़ैत छथि। मृगांक शबरराज मायाबटुक साहस पूर्वक प्राण बचबैत छथिन। मायाबटु मित्र बनि जाइत छनि तथा अपन मित्र मातंगराज दुर्ग पिशाचक संग सहायताक वचन दैत छनि। ओतहि तान्त्रिक प्रयोगसँ मयूर रूपमे परिवर्तित भीमपराक्रमक उद्धार करैत छथि। (तरंग–४)। मायाबटु केर लोक द्वारा नरबलिक हेतु पकड़ल गेल गुणाकरक सेहो मुक्ति होइछ। (तरंग–५)।

पुनः आगाँ बढ़लापर विचित्रकथ (तरंग–६), एवं प्रचण्डशक्तिक (तरंग–७) मिलन होइछ। मृगांक सँ बिछुड़लाक पश्चात् विक्रमकेसरीकेँ एकटा ब्राह्मण वेताल सिद्ध करबाक प्रेरणा दैत छथिन आ उदाहरण रूपमे प्राचीन राजा त्रिविक्रमसेन द्वारा वेताल-सिद्धिक वर्णन करैत 'वेताल-पचीसी'क कथा कहैत छथिन। विक्रम-केसरी ब्राह्मणक निर्देशानुसार वेताल-सिद्धि कऽ ओकरहि सहायतासँ शशांकक निकट आबि जाइछ (तरंग–८–३२)। आगाँ वृक्षक फलरूपमे परिणत अपन शेष सखा व्याघ्रसेन, स्थूलबाहु, मेघबल ओ दृढ़मुष्टिसँ पुनर्मिलन होइत छैक। (तरंग–३३-३४)

आब सब व्यक्ति उज्जयिनीक निकट पहुँचैत छथि। ओहिठाम उज्जयि-नीक रक्षादुर्गक भेदन कऽ भीतर प्रवेश असम्भव जानि ओ मातंगराज दुर्ग-पिशाचक राजधानी जाइत छथि। ओहिठाम मृगांकक संग देबाक हेतु पहिनहि सँ मायाबटु अपन विशाल सेना सहित पहुँचल रहैछ। सभक विचारसँ गुणाकर स्वयं जाय शक्तिरक्षितकेँ सेना सहित बजा अनैछ। सब सेना सम्मिलित रूपेँ उज्जयिनीपर चढ़ाइ करय, ई विचार होइछ। श्रुतधि विचार दैत छथिन जे पहिने दूत पठाओल जाय। सुविग्रह नामक दूत उज्जयिनी जाय मृगांकक संदेश दैत अछि जे कर्मसेन मृगांककेँ परिणय-पूर्वक शशांकवती प्रदान करथि अन्यथा युद्ध अवश्यम्भावी। प्रज्ञाकोश मंत्री कर्मसेनकेँ पत्र पढ़ि सुनबैत

छथिन। कर्मसेन प्रस्तावकें अस्वीकार कऽ युद्धक हेतु सन्नद्ध होइत छथि। ई वार्त्ता जानि मृगांकदत्त ससैन्य युद्धक हेतु प्रयाण करैत छथि। (तरंग–३५)।

मृगांकदत्तक विशाल सेना उज्जयिनीक निकट अबैत अछि। ओमहर सँ कर्मसेन सेहो अबैत अछि। घमासान युद्ध पाँच दिन धरि चलैत अछि। एहि मध्य श्रुतधि गुप्तरूपसँ जाय सूचना अनैत छथि जे शशांकवतीक हृदयमे मृगांकक हेतु प्रेम-भाव उत्पन्न भऽ गेल छनि ओ व्यक्त रूपमे पिताक विजय-कामना हेतु किन्तु वास्तवमे मृगांककें वर रूपमे पयबाक हेतु उद्यानमे स्थित गौरी मंदिरमे आराधना हेतु गेलि छथि। अतः गुप्त रूपसँ राजकुमारीक हरण करबाक मन्त्रणा होइछ। मृगांक रातिमे मित्र सहित नगरक भीतर गौरी मंदिरमे जाइत छथि। गौरी-मन्दिरमे शशांकवती निराश भऽ आत्महत्या करबाक चेष्टा करैत छथि। तखनहि गौरीक वाणी सूनि पड़ैत छनि जे अहाँक भावी पति आबि गेल छथि। तखनहि सखी आबि राजकुमारीकें रोकैत छनि। मृगांक मित्र सहित ई घटना देखि प्रकट भऽ जाइत छथि। शशांकवती प्रसन्न होइत छथि। मृगांक राजकुमारीकें घोड़ापर बैसाय अपन शिविरमे अनैत छथि आ राता-राती सेना सहित मायावटुक नगर चल अबैत छथि। दोसर दिन कर्मसेन ई समाचार जानि पुनः चिन्तन करैत छथि आ दूत द्वारा विवाह-सन्देश पठबैत छथिन जे हमर पुत्री हेतु मृगांकक समान अनुकूल पति के भऽ सकैछ तें ओ उज्जयिनी आबथि आ विधि पूर्वक कन्यासँ विवाह करथि। श्रुतधि कर्मसेनक सदाशयता जानि कुमारकें उज्जयिनी जयबाक विचार दैत छथिन। परन्तु मृगांकक विचार होइत छनि जे माता-पिताक बिना विचार लेने ई उचित नहि होयत तें राजा अमरदत्तकें बजयबाक हेतु भीमपराक्रम अयोध्या पठाओल जाइत छथि।

अयोध्यामे मृगांकक निष्कासनक पश्चात् अमरदत्तकें अपन दुष्ट मंत्री विनीतमतिक दुरभिसन्धिक पता चलि जाइत छनि। ओ परिवार सहित मंत्रीकें वध करवा दैत छथिन आ नगरक बाहर विष्णु मंदिरमे सपत्नीक पुत्र-वियोगमे दुखी भऽ निवास करऽ लगैत छथि। ओ पुत्रक संवाद सुनि तुरन्त सेना सहित चलि मायावटुक नगरमे पहुँचि जाइत छथि। एही मध्य अमरदत्तक पुनः

सन्देश अबैछ जे अहाँ तँ उज्जयिनी आयब नहि, तेँ अपन पुत्र सुषेणकेँ पठा रहल छी जे विधिपूर्वक अपन बहिनीक विवाह अहाँक संग करीताह।

अमरदत्त कर्मसेनक सन्देशकेँ सम्मान दैत निश्चय करैत छथि जे विवाह अयोध्यामे सुषेणक उपस्थितिमे सम्पन्न होअय। मृगांकदत्त, शशांकवती ओ अन्यान्य जन अयोध्या चलथि ओ मायाबटु सुषेणक उज्जयिनीसँ अयलापर संग लेने अयोध्या आबथि। तदनुसार अयोध्यामे सुषेणक उपस्थितिमे मृगांकदत्त ओ शशांकवतीक समारोहपूर्वक विवाह सम्पन्न होइछ ओ दुहू प्रेमी-प्रेमिकाक चिरप्रतीक्षित मिलन होइछ। कतोक समय बितलापर मृगांकदत्तक राज्याभिषेक कऽ अमरदत्त पत्नी सुरतप्रियाक संग वाराणसी जाय तपस्यामे लागि जाइत छथि। मृगांकदत्त अपन शौर्यसँ सकल पृथ्वीमण्डलकेँ जीति चिरकाल धरि राज्यक एकच्छत्र सुशासन कयलनि--

'सद्वीपमेतदवजित्य चतुर्दिगन्त—
मेकातपत्रमवनीवलयं शशास'
'अध्यास्य तैश्च सचिवैः सह तामयोध्यां
नानादिगागत नृपार्चित पादपद्मः
सम्राट् समं दयितया स शशाङ्कवत्या
भोगाननकण्टक सुखान्बुभुजे चिराय' (तरंग-३६)

'दत्त-वती'मे ई कथानक मूलरूपमे ग्रहण कयल गेल अछि-किन्तु एहिमे कथाक उद्देश्य अत्यन्त उदात्त ओ व्यापक राखल गेल अछि। भारत राष्ट्र, एकर अखण्डता ओ एकताक रक्षा, आभ्यन्तर विखण्डनक प्रवृत्ति ओ बाह्य आक्रमणसँ मुक्तिक हेतु जनचेतनाक जागरण, मानव-धर्मक पालनक संगहि उद्दाम राष्ट्रिय चेतनाक संचार एहि महाकाव्यक इष्ट अछि। एकरहि आलोकमे मूलकथामे अनेक नवीन घटनाक सृष्टि, अनेक नवीन पात्रक सृष्टि, मूलपात्रक कार्य ओ चरित्रमे परिवर्त्तन कयल गेल अछि।

काव्यशास्त्रमे एहि प्रकारक परिवर्त्तनक अधिकार कवि लोकनिकेँ देल गेल छनि। आनन्दवर्द्धनक विचार छनि जे प्रबन्धमे विभाव, भाव, अनुभाव तथा संचारीक औचित्यसँ लालित्यपूर्ण इतिहास प्रसिद्ध अथवा कल्पित कथानकक

निर्माण कयल जाय। इतिहासक ओहन कथांक परित्याग कऽ देल जाय जे रसक अनुकूल नहि हो वा रसक प्रतिकूल सिद्ध हो। प्रबन्धक मध्यमे रसक अनुकूल नवीन कल्पना द्वारा कथानकक संस्कार कयल जाय। एकर अर्थ भेल जे कवि अपन अभीष्ट रसक अनुसार मूल कथानकमे परिवर्त्तन करबाक हेतु पूर्ण स्वतन्त्र छथि—

विभाव भावानुभाव संचार्यौचित्य चारुणः
विधिः कथाशरीरस्य वृत्तस्योत्प्रेक्षितस्य वा
इतिवृत्ति वशायातां त्यक्त्वाऽननुगुणां स्थितिम्
उत्प्रेक्ष्याप्यंतराभीष्ट रसोचित कथोन्नयः

ध्वन्यालोक, ३/१०–११

आनन्दवर्द्धनक निर्देशक अनुसरण करैत रसक अनुकूल कथामे उन्मुक्त भावसँ कल्पनाश्रित कथांशक समावेश 'दत्त-वती' महाकाव्यमे सर्वत्र भेल अछि। मूलकथामे मृगांकदत्त द्वारा शशांकवतीक प्राप्तिक हेतु संघर्षपूर्ण प्रयत्न ओ अन्ततः सफलता वर्णित अछि। ओहिमे वीररसक प्रमुखता अछि, अवश्य परन्तु अंगीरस शृंगारे अछि। दत्त-वतीमे मूलक अंगीरस शृंगारकेँ अक्षते नहि राखल गेल अछि, अपितु पूर्वराग, नायिकाक सौन्दर्य, नायक-नायिकाक विरह-वर्णनसँ ओहिमे अतिशय चारुताक सृष्टि कऽ देल गेल अछि। तथापि राष्ट्रचेतना केर सम्पोषण–उद्‌बोधनक महत् उद्देश्यक परिप्रेक्ष्यमे वीररस ततेक व्यापक रूपमे व्यंजित भेल अछि जे शृंगार रस सहजहिं व्याप्त भऽ कऽ वीर-रसक सम्पोषक बनि गेल अछि।

राष्ट्र-चेतनाक हेतु ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अपेक्षित होइते छैक। एहि हेतु अतीत कालमे भारतपर भेल विदेशी आक्रमणक घटनाकेँ ताकल गेल अछि। पतंजलिक 'महाभाष्य'मे प्रदत्त सूचना 'अयोध्यामरुणद्‌यवनः' तथा 'कथासरित्सा-गर'क अष्टादश लम्बकमे वर्णित उज्जयिनीक राजा विषमशील-विक्रमादित्यक

Scanned by CamScanner

कथा-प्रसंगमे म्लेच्छक आक्रमण ओ विक्रम द्वारा ओकर विनाशक उल्लेखके[1] पल्लवित कथांशक रूपमे 'दत्त-वती'क मूल कथानकमे योजित कऽ दुइ हजार वर्ष पूर्वक आक्रान्त भारतक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक सृष्टि कयल गेल अछि। एहि तरहेँ दत्त-वती' महाकाव्यक कथानकमे प्रसिद्ध कथा, इतिहास ओ कविकल्पित कथाक मनोरम संगम भेल अछि।

आधार स्रोतक कथानकक 'दत्त-वती'क कथावस्तुक संग तुलना कयने देखल जाइछ आरम्भिक सात सर्गक कथा—मृगांकक जन्म, बालक्रीड़ा, गुरुकुलमे शिक्षा, उज्जयिनीक राजकुमार सुषेणसँ मैत्री, उज्जयिनीमे क्रीड़ा-प्रतियोगिता ओ ताहीमे मृगांक एवं शशांकवतीक परस्पर प्रथम दर्शन; स्नातक भऽ आपस आबि राजशासनमे मृगांकक सहभागिता, सचिवायत्त शासनक दोष-दर्शन, अराजकताक स्थिति, सचिव विमतिक विश्वासघाती चरित्रक आभास, सचिवक संग मृगांकक प्रच्छन्न संघर्ष ओ मृगांकपर राजद्रोहक आरोप नवीन उद्भावना थिक। एहिना बीसम सर्गमे अमरसेनक वानप्रस्थ ओ मृगांकक राज्याभिषेकक पश्चात् पचीसम सर्ग पर्यन्तक घटनाक्रम—दमधिक उपदेश, शासन-व्यवस्था, मृगांक-शशांकवतीक तीर्थाटन, मृगया, पूर्व सचिव विमति ओ ओकर पुत्र विधृति द्वारा लोभ ओ प्रतिशोध भावनासँ प्रेरित भऽ अवध ओ उज्जयिनीपर विदेशी द्वारा आक्रमणक षड्यन्त्र, विक्रमकेसरी द्वारा उज्जयिनीक जन-संघटन ओ रक्षा, अवधमे जनजागरण, सैन्य-संघटन, विदेशी आक्रान्ताक विरुद्ध रण-अभियान, आक्रान्ताक पराजय, देशद्रोहीक अन्त, विजयोत्सव, शकारि विक्रमादित्यक

---

१. कथासरित्सागर, लम्बक १८—

'म्लेच्छोपद्रव दुःस्थिता'–१७।

'तेजाता म्लेच्छरूपेण पुनरद्यमहीतले'–१९

'म्लेच्छाक्रान्ते च भूलोके निर्वषट्कार मङ्गले' १–२२

'तान् म्लेच्छानुत्सादयिष्यति'–२३

'म्लेच्छान्व्यापादयाशेषांस्त्रयीधर्म विघातिनः'–२९

'म्लेच्छ संघान् हनिष्यति'–३९

'म्लेच्छ संघाश्च निहताः शेषाश्च स्थापिता वशे'–९८

आभास-पूर्वक विक्रमकेसरीक नेतृत्वमे मालव गणतन्त्रक स्थापना ओ अन्तमे दमधि द्वारा राष्ट्रोदयकेँ विश्वोदयमे एवं यौद्धिकताकेँ शान्ति-व्यवस्थामे परिणत करबाक उपदेश सेहो कवि-कल्पित कथावस्तु थिक।

आठम सर्गसँ बीसम सर्गक पूर्वांशक कथावस्तु स्थूल रूपमे मूल स्रोतक अनुसरण करैत अछि अवश्य, परन्तु घटना सभक स्वरूप, उद्देश्य ओ उपयोगिता सर्वथा परिवर्तित भऽ गेल अछि। मूलकथाक अद्भुत, अलौकिक, असंभाव्य ओ अस्वाभाविक घटनाकेँ तर्कसंगत स्वाभाविकता ताहि रूपमे प्रदान कयल गेल अछि जे ओ सभ औपन्यासिक रोचकतासँ परिपूर्ण भऽ गेल अछि।

आचार्य कुन्तक वक्रोक्तिक छओ गोट भेद मानने छथि जाहिमे अन्तिम दुइ भेद प्रकरण-वक्रता ओ प्रबन्ध-वक्रता कहल गेल अछि। एकर स्थिति प्रबन्ध-काव्यमे विशेष रूपेँ देखल जाइत अछि। प्रबन्धक कोनो घटनाविशेष अपन विशिष्ट चारुतासँ समग्र प्रबन्धमे दीप्ति उत्पन्न कऽ दैछ तँ ओहिमे प्रकरण-वक्रता रहैत अछि। प्रकरण-वक्रता होइछ नओ प्रकारेँ। एहिमे प्रथम तीन गोट प्रकरण-वक्रताक उपयोग 'दत्त-वती' महाकाव्यमे प्रचुरतया कयल गेल अछि। कवि नायकक चरित्रकेँ दीप्त करबाक लेल एहन भाव-प्रवण परिस्थितिक उद्भावना करैत छथि जाहिसँ प्रबन्धमे सौन्दर्यक सृष्टि होइत अछि। काव्य-शरीरमे मूलतः जे बात नहि रहैछ तकर कल्पना ओ जे बात रहैछ ताहिमे संशोधन कऽ सौन्दर्य-सृष्टि कयल जाइछ। एहि दृष्टिएँ 'दत्त-वती' महाकाव्यमे प्रकरण-वक्रताक प्रभूत उदाहरण अछि। कथावस्तुक आरम्भ ओ अन्तक कथांश तँ कविक उद्भावना थीके अन्यत्रहु बहुशः प्रसंगमे कविक अभिनव उद्-भावनाक दर्शन होइत अछि। उज्जयिनीक क्रीड़ा-प्रतियोगितामे मृगांक ओ शशांकवतीक प्रथम पारस्परिक दर्शनक घटना समस्त कथानककेँ प्रभावित करैत अछि। मूल कथामे मृगांकक मन्त्री श्रुतधिक पिता दमधि केर उल्लेख मात्र अछि जकर सम्बन्ध मूल कथासँ नहि। किन्तु 'दत्त-वती'मे दमधि अवधक एक गोट प्रज्ञावान् नागरिके नहि, अपितु नायककेँ नीति-सम्बन्धी गम्भीर विचारसँ मार्ग-दर्शन करौनिहारक रूपमे प्रस्तुत कयल गेल छथि। प्रतिनायक विमतिक पुत्र विधृति सर्वथा नवीन सृष्टि थिक। विधृति अपन उपस्थिति ओ क्रियाकलापसँ

नायक मृगांकदत्तक चरित्रकेँ उत्कर्षता प्रदान करबाक अवसरक सृष्टि करैत अछि। मृगांकक संघर्षमे विधृति प्रतिरोधी बिन्दुक काज करैत अछि। विमति मूलकथामे केवल दुइ बेर उल्लिखित भेल अछि। पहिल बेर मृगांकक विरुद्ध अवध नरेश अमरसेनक मनमे शंका ओ क्रोध उत्पन्न कऽ मृगांककेँ निर्वासन दण्ड दियबैत अछि आ दोसर बेर, अमरसेनकेँ जखन वस्तुस्थिति ज्ञात होइत छनि तँ विमतिकेँ सपरिवार मृत्युदण्ड दैत छथिन। किन्तु 'दत्त-वती'मे विमति एकटा कुटिल बुद्धि षडयन्त्री, चतुर, लोभी, स्वार्थी, विश्वासघाती ओ राष्ट्रद्रोही प्रति-नायकरूपमे समग्र प्रबन्धमे विद्यमान रहैत अछि जकरा संग नायक मृगांकक निरन्तर संघर्षसँ हुनक चारित्रिक गुण उत्कर्षताकेँ प्राप्त कऽ सकल। मूलकथामे विद्यमान पात्र, प्रसंग ओ घटनाक संशोधन 'दत्त-वती'मे आदिसँ अन्त धरि देखल जाइछ। विमतिक ऊपर मृगांकक पानक पीक पड़ि गेल छल जकर बदला हुनक निर्वासन द्वारा लेल गेल छल मूल कथाक अनुसार। परन्तु 'दत्त-वती'मे एहि प्रसंगकेँ पूर्ण अर्थवान बना देल गेल अछि। पूर्ण सुयोग्य, वीर, बुद्धिमान, राष्ट्रिय भावनासँ आपन्न, लोकप्रिय राजकुमार मृगांकक उपस्थितिसँ विमतिक अवध राज्यपर अपन अधिकार स्थापित करब सम्भव नहि होइतैक तेँ गम्भीर षड्यन्त्र-रचना कऽ मृगांककेँ हुनक पितेक आदेशसँ निर्वासित करौलक। मूलकथामे अमरसेनक आदेशसँ विमतिक वध सूचित भेल अछि। परन्तु 'दत्त-वती'मे विमति-विधृति राजासँ क्षमादान पबैत अछि तथापि अन्ततः अपन विदेशी आक्रान्ता मित्रक हाथेँ निहत होइछ। मूलकथामे पारावत एकटा नाग थिक जे मृगांककेँ अपन एगारहो सखासँ किछु समयक हेतु विच्छिन्न भऽ जयबाक शाप दैछ। 'दत्त-वती'मे पारावत नागजातिक राजा थिक जकरा अपन साहससँ पराभूत कऽ मृगांक ने केवल प्रेमी तापस-कुमार ओ प्रेमिका नाग-कन्याकेँ पारावतक दण्ड-यातनासँ मुक्त कराय मिलन करबैत छथि, अपितु पारावतकेँ अपन सहयोगी मित्रो बना लैत छथि।

मूलकथाक पारावत नागक शापसँ मृगांकक सखा सब वन-प्रान्तरमे भुतिया जाइछ। सभक संग अद्भुत घटना सब घटित होइछ। क्रमहि-क्रमहि सब पुनः मृगांकक सन्निधिमे आबि जाइछ। 'दत्त-वती'मे एहि घटनाक

बुद्धिसंगत व्याख्या कयल गेल अछि। मृगांक अपन दसो सचिवकेँ शक्ति-संचय ओ भारतवर्षक विभिन्न जनपदक स्थिति-परिस्थितिक आकलन प्रत्यक्ष रूपमे करबाक हेतु विभिन्न दिशामे पठबैत छथि। आ एहि भ्रमण-वृत्तान्तक माध्यमे समग्र भारतक, अखण्ड भारतक प्रत्यक्ष दृष्ट मानचित्र ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

ई सब प्रकरण-बक्रताक भावपूर्ण स्थिति-उद्‌भावना, उत्पाद-लावण्य ओ विद्यमान-संशोधनक किछु बानगी थिक। एहि प्रकारक प्रकरण-वक्रतासँ समग्र 'दत्त-वती' महाकाव्य समृद्ध अछि। एहि समृद्ध प्रकरण-वक्रतासँ चारुतर प्रबन्ध-वक्रताक सृष्टि भेल अछि ताहिमे सन्देह नहि।

नाटक, खण्डकाव्य ओ महाकाव्यक समग्र वास्तु-शिल्पक कौशलकेँ प्रबन्ध-वक्रता कहल जाइछ। समस्त प्रबन्धक वस्तु-विन्यासक सौन्दर्य एकरा अन्तर्गत आबि जाइछ। ई छओ प्रकारेँ भऽ सकैत अछि। एहिमे प्रथम अछि मूल रसमे परिवर्त्तन। ई सबसँ महत्त्वपूर्ण अछि। एकरहि अनुकूल कथावस्तुक समग्र संरचना कवि द्वारा निर्मित होइत अछि। कुन्तकक कथन छनि जे—

इतिवृत्तान्यथावृत्त रससंपदुपेक्षया
रसांतरेण रम्येण यत्र निर्वहणं भवेत्
तस्या एव कथामूर्तेरामूलोन्मीलित श्रियः
विनेचानन्दनिष्पत्त्यै सा प्रबन्धस्य वक्रता

कवि अपन नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा द्वारा मूल कथाक रसमे परिवर्त्तन कऽ सहृदय लोकनिक आह्लादकताक सृष्टि करबाक उद्देश्यसँ नवीन रसक योजना करैत छथि। प्रख्यात कथा वा आधार कथामे निहित अंगी रसकेँ बदलि नवीन रसकेँ प्रमुख स्थान देबाक हेतु सम्पूर्ण कथावस्तुमे आमूल परिवर्तन करब अनिवार्य भऽ जाइछ। ई परिवर्त्तन ताहि रूपमे होइछ जाहिसँ अलौकिक काव्य-सौन्दर्यक सृष्टि भऽ सकय।

'दत्त-वती' महाकाव्यमे एहि प्रबन्ध-वक्रताक सफलतम प्रयोग देखल जाइछ। मृगांक-शशांकवतीक मूल कथा सहज रूपमे श्रृंगार प्रधान अछि। किन्तु 'दत्त-वती'मे मूल रसमे परिवर्त्तन कऽ अंगीरस बनाओल गेल अछि राष्ट्रिय-चेतनासँ

सम्पन्न वीर रस। भारतक अतीत इतिहासक पृष्ठभूमिमे वर्त्तमानक स्थिति ओ वैचारिकताक अभिव्यंजनाक संगहि भारतक अस्मिता, एकता, अखंडताक रक्षाक हेतु त्याग, बलिदान ओ राष्ट्रक प्रति समर्पण-भाव जाग्रत करबाक हेतु राष्ट्रभक्ति पूर्ण वीररसक निष्पत्तिक दृष्टिएँ समग्र कथानकमे परिवर्त्तन कयल गेल अछि। एहि परिवर्त्तनमे कविक वस्तु-रचना-कौशलेक परिचय नहि भेटैत अछि, अपितु कविक सुचिन्तित राष्ट्रिय विचारधारा ओ राष्ट्रभक्तिक प्रखर स्वरूपक सेहो दर्शन होइत अछि। एहि आलोकमे 'दत्त-वती' महाकाव्यक कथावस्तु देखलापर बोध होइछ जे एहि महाकाव्यक स्रष्टा अपन कथा-संरचनाक छोटसँ-छोटो घटनाकेँ अत्यन्त सूक्ष्मतासँ, अत्यन्त बौद्धिकतासँ, अत्यन्त कौशलसँ देखि-परेखि कऽ काव्यक इष्ट-सिद्धिक हेतु योजित कयलनि अछि।

महदुद्देश्यसँ रचित सौन्दर्य-राशिसँ समृद्ध 'दत्त-वती' महाकाव्य मैथिली साहित्यक अद्वितीय ओ अमूल्य निधि थिक।

प्रसंगात्

विभिन्न विद्वानक दृष्टिमे सुमनजी

म० म० डॉ० उमेश मिश्र

पं० श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन'केर वा हुनक पाण्डित्यकेर परिचय देब निष्फल थिक। संस्कृत साहित्यक विशिष्ट विद्वान भए मैथिलीक सेवा 'मिथिला मिहिर'क सम्पादकक रूपमे अथवा स्वतंत्र ग्रन्थकारक रूपमे कए ई चिर परिचिते छथि। प्राचीन पद्धतिक विद्वान भेनहु हिनकामे आधुनिक कलाकारक चमत्कार कविता-क्षेत्रमे विलक्षण अछि। हिनक रचनासभमे पाण्डित्यक संग-संग काव्यक गुण सभकेर अपूर्व मिश्रण अछि। भाषा सरल भेनहु भावगाम्भीर्यक कारणे 'नारिकेल फल सम्मितं वचः श्रीसुरेन्द्र कृतिनो मनीषिणः स्वादयन्तु रस-गर्भ निर्भरं सारमस्य रसिका यथेप्सितम्' –'भारवि' जकाँ हिनको काव्यक सम्बन्धमे कहल जा सकैत अछि। ('प्रतिपदाः एक अध्ययन'क सम्मतिसँ)

कुमार गंगानन्द सिंह

कल्पनाक अद्‌भुत शक्ति यदि देखबाक हो तँ एहि पुस्तिकाक पदकेँ पढ़ू। साओन-भादव प्रतिवर्ष अबैत अछि, चल जाइत अछि। वर्षा हैब, एहि दूनू मासक साधारण घटना थिक। परन्तु वर्षामे भिन्न-भिन्न रसक कल्पना करब, करब, प्रकृतिकेँ सांसारिक जीव बनाय भिन्न-भिन्न रूपमे ओकरा निरूपित करब, और ओहि निरूपणकेँ मर्मस्पर्शी बनैब साधारण विषय नहि उच्च कोटिक कलाकारक द्वारा ई संभव भय सकैत अछि।

मैथिलीक अनन्य उपासक पण्डित श्रीसुरेद्र झा एही श्रेणीक कलाकार छथि– तकर प्रमाण हुनक ई रचना छैन्हि। मणि जकाँ हुनक प्रतिभा प्रस्तुत पुस्तिकामे प्रतिभासित अछि। ('साओन-भादव'क 'आमुख')

पं० बलदेव मिश्र ज्योतिषाचार्य

पं० सुरेन्द्रझा 'सुमन' कें एहि रूपें जनैत छलहुँ जे ओ संस्कृतक विद्वान छथि तथा 'मिथिला मिहिर' दरभंगाक सम्पादक छथि। ओ बड़ विनीत तथा भद्रपुरुष छथि तथा आनो हुनक प्रशंसा प्राध्यापक श्री श्रीकृष्णमिश्रक मुखसँ सुनने छलहुँ। कविवर पं० श्रीसीतारामझासँ हुनक अतिथेयताक प्रशंसा सुनल छल। स्वयं हुनक निर्भीकताक तथा कर्मठताक अनुभव तखन कयल जखन ओ रामगढ़क कांग्रेसक सम्बन्धक हमर समालोचनाकेँ मिथिला मिहिरमे स्थान देल। ततबेक नहि, उत्तम जकाँ अपन सम्पादकीय विचार लिखल।

सुमनजी बड़ पैघ कवि छथि से बुझबाक योग्य भेल। जखन काशीक मैथिल छात्र समिति हुनका कोनो समारोहमे बजौलकनि तथा ओ अपन गंगा-वतरणक पाठ कएलनि तथा चन्द्रधारी मिथिला कालेजमे मैथिलीक प्राध्यापक नियुक्त भेलाह।

('श्यामनन्दनसहायव्याख्यानमाला'—पृ०—१५५-५६)

आचार्य रमानाथझा

श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन' मिथिला कालेजक मैथिलीक प्राध्यापक, मिथिला-मिहिरक भूतपूर्व सम्पादक, मैथिलीक बड़ यशस्वी कवि ओ प्रशस्त लेखक छथि। संस्कृत साहित्यक मार्मिक विद्वान, हिनक कवितामे संस्कृत काव्यक सबटा गुण प्रचुर मात्रामे भेटैत अछि। वस्तुतः कल्पनाक प्रौढ़ता, दृढ़ता एवं गंभीरताक हेतु बेजोड़ छथि ओ अपन 'साओन-भादव'मे तकर चमत्कारक अतिशय कए देल अछि। रचना होइत अछि हिनक भावात्मक ओ भाषा संस्कृत-बहुल, तेँ हिनकामे प्रसाद गुण नहि रहैत अछि ओ तेँ हिनक कविता लोकप्रिय नहि होइत अछि परन्तु ई 'कविक कवि' थिकाह। हिनक कविताक रसास्वादनक हेतु एकगोट कविक हृदय चाही। एम्हर ई प्रगतिवादी कविता सेहो लिखए लगलाह अछि परन्तु ताहिमे स्वानुभूतिसँ विशेष भावनामूलक रहलें ओ ओहन चमत्कारक, ओहन स्वाभाविक, ओतेक हृदयस्पर्शी नहि होइत अछि, यद्यपि रोचकता, ग्राहकता किंवा रमणीयतामे हिनक प्रतिभा ओहूमे कम नहि निखरैत अछि। हिनका कवितामे स्व० ईशनाथझाक मधुरता नहि छन्हि,

श्रीमधुपजीक कल्पनाक कमनीयता नहि छन्हि, परन्तु कवित्वक प्रतिभाक परि-पक्वता, उक्तिक प्रौढ़ता, कल्पनाक दृढ़ता एवं विच्छित्तिक विन्यासमे ई जेहन श्लाघनीय छथि तेहन बड़ विरल कबि भेटताह। भर्तृहरिक सुप्रसिद्ध उक्ति 'विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः" तकर उत्तर गंगास्तुतिमे जेहन ई देल अछि तेहन एहि हजार-डेढ़ हजार वर्षमे केओ कवि नहि देने छलाह।

('कविता–कुसुम', पृ० - ६२)

श्रीसुमनजीक स्थान मैथिलीक नवीन काव्यधारामे अन्यतम अछि, 'प्रति-पदा'क भूमिकामे ई अपनाके प्राचीनता एवं नवीनताक सगमपर स्थित बुझैत छथि। किन्तु हमरा विचारे ई प्राचीन अधिक छथि, नवीन कम। हँ, आधु-निक सोलहो आना छथि। हिनक आधुनिकता थिक प्राचीनताक 'नवीनीकरण'। चमत्कारपूर्ण सूक्ष्म कल्पनासँ निबद्ध हिनक प्रत्येक रचनामे उक्तिवक्रता भेटैत अछि, किछु नव बात उत्पन्न करबाक क्षमता भेटैत अछि। 'रमणीयार्थ प्रतिपादन' करब हिनक कवि-कर्मक मूल उद्देश्य थिक आओर एहि रमणीयार्थ-प्रतिपादन करबाक हेतु ई सादृश्यमूलक आरोपक बेश सुन्दर योजना करैत छथि, तथाकथित प्रगतिवादी कवितहुमे। हिनक विषय-क्षेत्र व्यापक अछि, प्रायः कोनो वाद-प्रवाद नहि छुटल होएत जाहि आधारपर ई रचना नहि कयने होथि। किन्तु सभ प्रकारक रचनामे हिनक वर्णनक उपर्युक्त प्रवृत्तिअहिक प्रवलता प्रमुख अछि। वर्णनक एहि पाण्डित्यपूर्ण उत्कर्षक कारणे हिनक रचना सर्वसाधारणक हेतु दुरूह अछि। भाषा हिसक तत्सम बहुल, ओ उक्तिक पाण्डित्यपूर्ण बक्रता हिनका सर्वसाधारणक कवि नहि बनए दैत अछि। किन्तु हिनक कवितामे जे पाण्डित्यपूर्ण मार्मिकता अछि, से हिनकहि टामे अछि। तेँ श्री यात्रीजी ओ श्री तंत्रनाथबाबूक संग हिनकहु हम मैथिलीक आधुनिक कवि मध्य वृहत्त्रयीमे परिगणित करैत छी। नवीन गीतकाव्यक प्रतिनिधि कवि होइतहु सुमनजीक रचनामे साक्षात् आत्मविज्ञापनक अभाव अछि, 'जन्मदिवस' तकर अपवाद मात्र थिक। एमहर किछु मुक्तकक ई रचना कएल अछि जाहिमे संस्कृत-कथ्यक सर-सता एवं बिहारीक अर्थ-गम्भीरता भरि देल अछि तथा हृदयके 'तुरत' स्पर्श करबाक उर्द्धक क्षमता सेहो समन्विन कए देल अछि। सुमनजीक वास्तविक

महत्त्व काव्यधाराक कोनो 'वाद'क वृत्तक अन्तर्गत नहि अछि प्रत्युत कविताक ओहि भाव-भूमिपर प्रतिष्ठित अछि जाहि हेतु कवि युगातीत कहल जाइत छथि।

('मैथिली नवीन गीत'—पृष्ठ—९४-९५)

प्रो० हरिमोहन झा

"..... मैथिली साहित्यमे रमल रहबामे हमरा सुमनजीसँ बड़ प्रेरणा भेटल अछि।"

(प्रो० हरिमोहन झाक संग श्रीविश्वनाथ झाक अंतरंग वार्तोक एक अंश। 'रचना' (दरभंगा), प्रवेशांक, मइ १९८४)

चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय मैथिली साहित्य परिषद्क वार्षिकोत्सव कामेश्वर भवनमे, कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक वर्तमान उप-कुलपति कुमार श्रीगंगानन्द सिंहजीक अध्यक्षतामे आयोजित छल जाहिमे मुख्य अतिथि छलाह व्यंग्य-सम्राट प्रो० श्रीहरिमोहन झा।

स्वागतक हेतु साहित्यमनीषी प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'जी अपन भाषणक क्रममे कहलथिन जे आजुक मुख्य अतिथि वस्तुतः प्रणम्य छथि, किन्तु तेहन प्रणम्य देवताक सृष्टि ओ कऽ चुकल छथि जे प्रणम्य कहबाक साहस नहि कऽ सकैत छियनि। प्रिय पाहुन कहियौनि से ई पहिनहि विकट पाहुनक रचना कऽ चुकल छथि।

श्रीहरिमोहनबाबू उत्तर दैत कहलथिन—श्री सुमनजी कवि छथि। कविक वाणीमे अतिशयोक्ति स्वाभाविके, ताहूमे हिनकामे सुकुमारता, मधुरता ओ नवीनता एहि तीनूक अद्भुत समावेश रहलनि अछि। हमरा तँ बुझना जाइछ जे सुकुमारताक 'सु' मधुरताक 'म' आ नवीनताक 'न' अक्षर लऽ कऽ हिनक नाम सुमनक रचना भेल अछि।

(मार्च १९६६, वैदेही)

कविचूड़ामणि 'मधुप'

हमरा जनैत, हमर समकालीन कविलोकनिमे सर्वश्रेष्ठ कवि श्रीसुमनजी छथि। ······एहन प्रतिभा, एहन व्यक्तित्व, एहन चरित्र, एहन विद्वत्ता संसारमे विरले देखल जाइत अछि 'न भूतो न भविष्यति'। जेहने पाण्डित्यक प्रकर्ष

तेहने कवित्व प्रतिभाक उत्कर्ष, जेहने नम्रता तेहने साधुता। ····· ओना तँ हम सुमनजीक प्रत्येक रचनासँ आह्लादित छी, प्रत्येक शब्दसँ प्रभावित छी, मुदा हुनक 'गंगा-तरंगिणी' हमरा जनैत सर्वश्रेष्ठ छनि। भर्तृहरिकें जे एहिमे उत्तर देने छथिन से सत्ये निष्णात् कविक प्रतिभाक चरम उत्कर्षक द्योतक थिकैक। ····· तहिना कतेको पद छनि जे भाव-विह्वल बना दैत अछि। 'साग-पात ले' ·····आ एहिना कतेको पद अछि जे अनायासे मन पड़ि जाइत अछि।

(श्रीविश्वनाथझाक संग मधुपजीक अंतरंग वार्ताक एक अंश।
मिथिला मिहिर, २५ जुलाइ, १९७६)

पं० जीवनाथ झा

हम सबसँ पहिने नाम लेब सुमनजीक। हुनकामे पाण्डित्य छनि। पाण्डित्य आ प्रतिभासँ मिलल हुनक कविता हमरा सदैव झुमबैत आयल अछि। हम अपन जीवनक एक गोट व्यक्तिगत रहस्य कहैत छी— हम जखन सुमनजीक 'साओन-भादव' पढ़लहुँ तँ ततेक प्रभावित भेलहुँ जे जुनि पूछू। कतेको आवृत्ति हम 'साओन-भादव'क देने होयब। प्रभावित तँ एतेक भेलहुँ जे मोनमे जागल जे किछु एहने रचना करी —'साओन-भादव' सन। आ हम लागले लिखऽ लगलहुँ 'आसिन-कातिक'। ····· वस्तुतः सुमनजी सफल कवि छथि। .. ओ महाकविए टा नहि, महापुरुष सेहो छथि।

(श्रीविश्वनाथ झा द्वारा पण्डित जीवनाथ झासँ लेल
गेल साक्षात्कारक अंश, मिथिला मिहिर, २५-१२-'७७)

प्रो० तंत्रनाथ झा

····· सुमनजीक कवितामे सूक्ष्म कल्पना छैन्हि, चमत्कारपूर्ण भावक अभिव्यंजना छैन्हि, पाण्डित्य छैन्हि। संस्कृत श्लोकक स्वाद हुनका कवितामे भेटैत अछि।

(प्रो० तंत्रनाथझाक संग श्रीविश्वनाथझाक अंतरंग वार्ताक अंश।
श्रीतंत्रनाथझाअभिनन्दनग्रन्थ, पृ०—४६)

पं० उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'

—कवि गुरुजी (स्व० कविशेखर बदरीनाथ झा)क शिष्यमे सुमनजी बेस चर्चित .... भेंट भेल तँ ई कहि देलनि जे मैथिलीक सेवा अमूल्य सिद्ध होयत, एकर भंडार भरियौक। एकरा एखन प्रयोजन छैक, संस्कृत-हिन्दीक क्षेत्र बड़ विशाल, भोतिआयले रहब। बात जँचल, लागि गेलहुँ। जँ साहित्य अकादमीक पुरस्कार-प्राप्तिकेँ 'अमूल्य सिद्धि' बूझल जाइत होइक तँ से भेटल अछि। पहिने पोथी कोनो तेहन छपले नहि छल, जे छपल छल से एक छोट-सन गीत-संग्रह। अभावमे विलम्ब भेलैक, भेलैक तँ सिद्धि।

('इतिश्री'सँ, पृष्ठ—१५४)

कवि छथि। कविक कवि छथि। पाण्डित्य छनि। प्रतिभा छनि। हमरा हुनक प्रत्येक रचना प्रिय लगैत अछि। ओना 'साओन-भादव'क शब्द-शब्द आ पाँती-पाँतीसँ हम प्रभावित होइत रहलहुँ अछि, चमत्कृत होइत रहलहुँ अछि।

(श्रीविश्वनाथ झाक संग कविवर मोहनजीक अन्तरंग वार्ताक अंश—। मैथिली अकादमी पत्रिका, वर्ष—१, अंक—२, दिसम्बर-जनवरी १९८०—८१)

डॉ० हरिमोहन मिश्र

श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन' १९३३ ई०सँ कविता लिखैत छथि तथा एखनहुँ लिखि रहल छथि। प्रायः सभसँ अधिक हिनके कविता-ग्रन्थ प्रकाशित भेल अछि। हिनक कवितामे आरंभसँ अन्त धरि रोमांटिक तत्त्व बड़ कम भेटैत अछि। अनेक कविता एहेन अछि जकर आरंभिक किछु पंक्ति रोमांटिकताक आभास दैत अछि, किन्तु कवि लगले संस्कृत-रीतिवादी पद्धतिपर ससरि जाइत छथि। ईशनाथझाक 'शरद' (माला) आ हिनक 'शरद' (प्रतिपदा) कविताक तुलनासँ ई स्पष्ट भऽ जायत जे एकहि विषयपर दुइ कवि कोन प्रकारेँ अपनाकेँ व्यक्त कयने छथि। ईशनाथझा भावनान्दोलित भऽ शरदक वर्णन कयने छथि, किन्तु सुमन अपन कवितामे शरत्कामिनीक शैशवसँ वार्धक्य धरिक विभिन्न अवस्थाक चित्र उतारने छथि जे कविक कल्पना-विकासक परिचायक थिक। किञ्चित् प्रसंगान्तर भेनहु दुनू कविक 'हलधर' शीर्षक कविताक तुलना प्रकृतिकेँ

नीक जकाँ उद्घाटित करैत अछि। शीर्षकसँ ई प्रतीत होयत जे दुनू गोटे अपन-अपन कवितामे सामाजिक वास्तवक चित्रण कयने छथि। ईशनाथझाक 'हलधर' कविता रोमांटिकतामे पर्यवसित भऽ गेल आ सुमनजीक 'हलधर' कविता उक्ति-वैचित्र्यक झोरी भऽ गेल। सुमनजीक जे किछु कविता आद्यन्त रोमांटिक रहि सकल, ताहिमे मुख्य अछि कविताक आह्वान, असूर्यम्पश्या ओ यौवन-स्मृति।

(आधुनिक मैथिली कविता, पृष्ठ—६३)

सुधांशु 'शेखर' चौधरी

आचार्य सुमन साहित्यिके समाजमे नहि, सभ समाजमे लोकप्रिय छथि। ओ तहियो लोकप्रिय छलाह जहिया हुनक एको गोट कविताक संग्रह नहि छपल छल। हुनक लोकप्रियताक वास्तविक आधार कवितासँ बेसी हुनक स्वच्छ-निर्मल आचार-व्यवहार ओ सौहार्द्र रहल अछि। हुनक कवितामे भाव सम्प्रेषण सामान्य पाठकक हेतु सहज संवेद्य नहि अछि। हुनक कविता एके शब्दक तीन-तीन अर्थक संग चलैत अछि आ सम्पूर्ण कविता तीन कथ्य कहैत अछि। इएह कारण थिक जे हुनक कविताक विशेषताक सम्बन्धमे विचार करैत स्वर्गीय रमानाथझा कहने छथि जे सुमनजी कवि नहि, कविक कवि छथि अर्थात् हुनक भाव-सम्प्रेषण ततेक गंभीर, ततेक गूढ़ होइत अछि जे कविए टा बूझि सकैत अछि, सहज साहित्यिक रसिक नहि। . जतेक गंभीरताक संग ओ अपन कवितामे भावसम्प्रेषण करैत छथि, सामान्य साहित्य-प्रेमी हुनक भावके पकड़ि नहि पबैत अछि। तँ की तकर अर्थ ई जे हुनकापर असम्प्रेषणीयताक दोष मढ़ल जाय ? सुमनजी 'नव लेखन'क मसीहा नहि थिकाह, नव कविता सेहो नहि लिखलनि अछि, मुदा भाव-गाम्भीर्यक कारण हुनक कविता साधारण पाठकके बोधगम्य नहि भऽ पबैत छैक। केवल ताही कारण हुनक कविताक महत्ताके कम कऽ नहि आँकल जा सकैत अछि।

(आधुनिक कविता : एकर सम्प्रेषणीयताक समस्या' पृ०—१९-२०)

श्रीबाबूसाहेबचौधरी

१९४०क बाद मैथिलीक विषयमे जखन नीक जकाँ जानैक इच्छा भेल आ किनकोसँ कविक विषयमे जिज्ञासा कयलापर यैह उत्तर भेटैत छल जे कविक

समूहमे कविवर सीताराम झा, सुमनजी, मधुपजी तथा यात्रीजीक स्थान अन्यतम छनि। कलकत्तामे रहि मिथिला संघक माध्यमे मैथिलीक अधिकांश साहित्यकार, नेता, कार्यकर्त्ताकें चीन्हैक सुयोग भेटल परंच सुमनजीक संग चारियो दिन एक ठाम रहैक सुयोग नहि भेटल। गाम गेलापर दरभंगामे साक्षात हुअय, विभिन्न मंचपर साक्षात हुअय, किन्तु ही भरि कहियो गप्प नहि भेल। बुझना गेल जे जहिना हुनक साहित्य अगम-अथाह तहिना हुनक व्यक्तित्वो। सभ साहित्यकारकें हँसैत, तमसाइत तथा गम्भीर मुद्रामे देखल, परंच कहियो हिनका तमसाइत नहि देखि सकलहुँ। एक व्यक्ति हमरा कहलनि जे मनुष्यसँ यावत झगड़ा नहि होयत तावत नीक जकाँ चीन्हब असम्भव। हम कहलियनि जे कियो एहन होथि जे झगड़ाक अवसरे ने देथि तखन? उत्तर भेटल तखन ओ मानव नहि महामानव छथि। एक व्यक्ति कहलनि जे आअरो ऊपर उठितथि जँ ओ राजनीतिक चक्करमे नहि पड़तथि। किछु हो, ओ महामानव छथि। हुनका विषयमे हम हुनके लिखल पाँती उद्धृत करब—'काटथु वा पटबथु दुहूकें छायासँ सम्माने'।

Dr. Jayakanta Mishra

Among the poets who have drown their inspiration from Sanskrit and produced good modern lyrics Surendra Jha 'Suman' ranks very high. His greatness lies in a chaste and elegant style which can yield its finest shades of meaning and nuances to only the trained ear. A common reader may be superficially pleased with his lines but it is only the learned who can fully appreciate his poems......His sanskritijed diction and measured rhythms and rhetorical style can never make his poems 'memorable' for the common reader but his poems would continue to be read and enjoyed by all those who

love Mithila thought and culture in which his poems are steeped and who can read and brood over lines of good poetry.

(History of Maithili Literature, Page–296)

Prof. Radhakrishna Chaduhary

Surendra Jha 'Suman' is basically a scholar of Sansksit. He has been the pillar of Maithili language and his position as the editor of Mithila Mihir has been compared to that of Acharya Mahavira Prasad Dwivedi and Acharya Shiva Pujan Sahaya of the Hindi literature. During his stewardship of Mithila Mihir, he prepared a band of devoted Maithili scholers and trained them scientifically. Most of them have made names in their respective branches. He has a facile pen and is a master artist. His selfeffacing nature deserves emulation by others of his like. Many of the modern Maithili creations are directly or indirectly the result of his hand in many cases his annonymous help is now only an open secret.....He occupies a very prominent place in the modern Maithili literature. His choice of words, discription of seasons and alliterations are unique in modern Maithili literature .... He is a dedicated soul for the cause of Maithili language and litirature..... Sumana, with his stead fast adherance to classical poise and dignity, has produced literature of permanent interest.. It is very difficult

to give an exhaustive account of a poet of the eminence of 'Suman' He deserves as special study keeping in view the varieties of his publications. Even as a translator into Maithili, he is superb and has translated both prose and poetry.

(A Survey of Maithili Literature—Page-198-200)

पण्डित मदनमोहनझा (नवानी)

'श्रेयांसि प्रतिबध्नाति पूज्य-पूजा-विबर्जनम् ।' सुमनजी हमरासँ वयःक्रमे तँ ज्येठ छथिहे, आनो तरहेँ श्रेष्ठ छथि, आदरणीय छथि। हुनक व्यक्तित्वक विविध विलक्षणता, छात्र-जीवन-कालहिसँ, सहृदय साहित्यानुरागी विद्वज्जन सभसँ श्रुत-विदित भय हमरा प्रमुदित करैत आबि रहल अछि आ हुनक मूक प्रशंसक वना चुकल अछि।

सुमनजी बहुज्ञ छथि, बहुभाषाविद् छथि, मैथिलीभाषाक अग्रणी साहित्यकार छथि, कुशल प्रवन्धक छथि, सफल संपादक छथि, अतिलोकप्रिय छथि, जकर साक्षी हुनक सांसद रूपमे निर्वाचित होयब अछि, एहि तरहेँ हुनक बहुआयामी व्यक्तित्व श्लाघ्य छनि।

हमरा जनैत सुमनजी मैथिलीकाव्यभूमिक ओहेन चतरल-पसरल वटतरु छथि जकर छायामे सकल मैथिल-समाज काँ विश्राम भेटैत छैक, पैघ-सँ-पैघ आ छोट-सँ-छोट शिक्षित जनकेँ ओहि छायाकेँ पाबि समान रूपमे एक सुख-विशेषक अनुभूति होइत छैक। 'पयस्विनी'क शीतल रसक पान कय ककरा तृप्ति नहि भेटतैक ? सुमनजी सृष्टिकर्त्ताक एहन सफल शिल्प छथि जकरा कोनो कोणसँ देखलापर नव-नव सौन्दर्यक सुखद प्रतीति सहृदयकेँ होइते छैक। तटस्थताक सङ्ग संश्लिष्टता, विरागक सङ्ग राग, मितभाषिताक सङ्ग प्रभावोत्पादक वक्तृत्वकला---एहि सब परस्पर विरोधी गुणक समाहार हुनक व्यक्तित्वकेँ उदात्तसँ उदात्ततर बनौने छनि। मैथिली-साहित्यक सर्जन-संवर्धन-सेवनमे जीवन बितौनिहार एहन मनीषी सुमनजीकेँ हम अपन श्रद्धासुमन समर्पित कय अपनाकेँ कृतार्थ बुझैत छी।

भवतां दीर्घजीवित्वमिच्छता सांप्रतं मया
रक्ष्यते शब्दमात्रेण पूज्य-पूजा-परम्परा

(आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन'क अवदान राष्ट्रभाषा हिन्दीओक क्षेत्रमे थोड़ नहि छनि, परन्तु कुयोगे कहल जा सकैछ जे एहि अभिनन्दनग्रन्थमे ताहि पक्षपर अल्पो प्रकाश नहि पड़ि सकल। ई दरभंगा लोकसभा क्षेत्रसँ एहि ठामक प्रतिनिधित्व सेहो लोकसभामे कऽ चुकल छथि। २ .२. १९७९के राष्ट्रपतिक भाषणपर धन्यवाद प्रस्तावक क्रममे जे ई अपन भाषण प्रस्तुत कयने छलाह से हिनक हिन्दीक व्युत्पन्नतासँ पाठककेँ परिचित करयबाक हेतु एतऽ उद्धृत कयल जा रहल अछि।

—सं०)

हमारी समस्याएँ

उपाध्यक्ष महोदय,

सदन में जो धन्यवाद-प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ है, मैं उसका हार्दिक समर्थन करता हूँ।

पिछले कई दिनों से पक्ष-विपक्ष में वाद-विवाद चल रहे हैं। हमारा यह सदन विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक सदन है और इसमें उच्चारित एक एक शब्द विश्व के पचामांश जन-समुदाय को प्रभावित करता है। अतः वाद यहाँ विवाद के लिए नहीं, जनता के हृदय-संवाद के लिए होना चाहिए, राजनैतिक दाव-पेंच के लिए नहीं, देश की कोटि-कोटि मानवता की सुख समृद्धि के चिन्तन के लिए होना चाहिए।

मैं इस प्रसंगमे राष्ट्रपति के इस अतिम वाक्यांश से अपना विचार प्रारभ करूँगा :

"यह देश एक न्यायसंगत, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ता रहेगा, बशर्ते कि इस लक्ष्यकी प्राप्ति के लिए हम सब मिलकर कोशिश करें। दृष्टकोण भिन्न होते हुए भी हमें अपने उद्देश्य में एक-रूपता लाने की कोशिश करनी चाहिए। साथ ही हमें चाहिए कि हम न ऐसे काम करें, न ऐसी बात कहें और न ऐसे रवैये अपनाएँ जो हमारे राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति में बाधक हों।"

वास्तव में दृष्टिकोण की भिन्नता स्वाभाविक है किन्तु जहाँ तक देश के समुन्नयन का प्रश्न है वहां पक्ष-विपक्ष को एक विंदु पर, "वादः विवादाय" नहीं, 'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः' के उद्देश्य पर, समरस होना चाहिए।

यह तो विरोधी भी स्वीकार करेंगे कि जनता सरकारने लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा में बहुत कुछ किया है। आरभ से ही मुद्रा-स्फीति पर नियंत्रण रखा है। वस्तुओं के मूल्य में विशेष चढ़ाव-उतार नहीं आने दिया है और सबसे बढ़कर विकास योजना को नगर की सीमा से आगे बढ़ाकर, ग्राम सीमा में पहुँचा कर ग्रामवासिनी भारत माता के चरण पूजन का विस्तृत उपक्रम किया है।

'वन्दे मातरम्' राष्ट्रीय गीत में राष्ट्रमाता की वंदना करते हुए एक विशेषण कहा गया है "सुहासिनी समुधुर भाषिणीम्"— वह भारतमाता, जिसकी भाषा मधुर है—आज इसी तत्त्व की, भारतीय भाषाकी अवहेलना हो रही है। संविधानने यहाँ हिन्दी को राजभाषा की मान्यता दी और अंग्रेजी को तत्काल सहभाषा, 'एसोसिएट लेंग्वेज' के रूप में ही रखा। पर आज भी अंग्रेजी की तूती बोलती है, हिन्दी उसके पीछे-पीछे लड़खड़ाती-लंगडाती सी चल रही है। अब भी तो राजकीय निर्देशक भाषण से लेकर नीचे आफिस-कहचरी में, शिक्षा-दीक्षा में, बोल-चाल में हिन्दी अथवा अन्य जो भी भारतीय भाषा हो, वह चलनी चाहिए। अंग्रेजी का मोह जितनी जल्दी दूर हो सके, होना चाहिए।

देश में इस समय सबसे बड़ी समस्या बेकारी की है, गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों की स्थिति सुधारने की है, जाति-वर्ग, अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक में आर्थिक भेदभाव मिटाने की है, खेतों में नहर-छहर की और गांवों में सड़क-परिवहन की है। स्कूल-कालेजों में नियमित पढ़ाई की व्यवस्था हो, शिक्षितों में बेकारी की अनास्था दूर हो, हड़ताल-घेराव के कारणों को दूर कर उत्पादन बढ़ाया जाय, बिजली लोहा कोयला सीमेंट आदि की कमी न रहने पाए, ये सब देश के व्यापक प्रश्न हैं। मैं कोई मांग और कमी के आंकड़े देने की आवश्यकता नहीं समझता। केवल अपने राज्य बिहार के सम्बन्ध में यही कहना चाहूँगा कि भूमि, खान, जंगल, पहाड़, लोहा-कोयला आदि साधनों के रहते हुए भी

यहाँ अन्य राज्यों की अपेक्षा पिछड़ापन बहुत है। वहाँ भी उत्तर बिहार की स्थिति और चिन्तनीय है। इस क्षेत्रीय विषमता को दूर करने का, मैं विशेष आग्रह करता हूँ।

समय सीमा को देखते हुए मैं यहाँ केवल अपने प्रतिनिधि-क्षेत्र की समस्याओं की ओर ही संकेत करूँगा।

राष्ट्रपति के भाषण में बाढ़-विभीषिका की चर्चा को प्राथमिकता दी गई है। बिहार बाढ़ से सर्वाधिक उपद्रत राज्य रहा है। पिछले दस वर्षों में बाढ़ से पूरे देश के जन-धन की जितनी क्षति आंकी गई उसमें २३ प्रतिशत क्षति बिहार की हुई और बिहार में भी दो-तिहाई क्षति उत्तर बिहार में हुई। उदाहरणार्थ १९७५ में सरकारी सूचना के अनुसार पूरे देश में बाढ़ से ४ अरब पौने छः करोड़ की बरबादी हुई थी जिसमें बिहार मे ही २ अरव साढ़े छब्बीस करोड़ की बर्बादी हुई। इसमें सिर्फ दरभंगा प्रमंडल की क्षति ६० करोड़ थी।

उत्तार विहार मुख्यत: मिथिला नदीबहुल देश है :—

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिस पूर्व कौशिकी धारा।
पश्चिम बहथि गंडकी उत्तार हिमवत बल विस्तारा।
कमला त्रियुगा धेमुरा वागमति क्षीरोदा जलधारा।
मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा॥

हिमालय की गोद से निकलती दर्जनों छोटी-बड़ी नदियां वर्ष-वर्ष इस भाग को बाढ़ से बर्बाद कर रही हैं। आवश्यकता है यहाँ नेपाल के सहयोग से उत्तार बिहार की मुख्य नदियाँ कोशी-कमला-बागमती को उनके उद्गम स्थान बाराह क्षेत्र—शीशापानी-नूनथर में डैम निर्माण द्वारा नियंत्रित कर, बाढ-नियंत्रण-नहर-सिचाई एवं जल-विजली सम्बन्धी बहुद्देशीय योजना लागू कर अभिशाप को वरदान में बदला जाय। इस सम्बन्ध में वहाँ से सर्वदलीय मांग भी प्रस्तुत की गई है। मैं इस ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ।

मैं जिस क्षेत्र-नगर का प्रतिनिधित्व करता हूँ वह दरभंगा प्राच्य-पाश्चात्य दोनों शिक्षाओं की केन्द्रभूमि है। वहाँ पर दो-दो यूनिवर्सिटियां हैं, कामेश्वर सिंह विश्वविद्यालय एवं मिथिला विश्वविद्यालय। किन्तु विश्व-

विद्यालय अनुदान-आयोग से उन्हें अभी तक उचित सहायता नहीं मिली है। मिथिला विश्वविद्यालय बिहार के विश्वविद्यालयों में कालेजों एवं छात्रों के अनुपात से सबसे बड़ी परिधिवाला है किन्तु उसे सबसे कम अनुदान मिला है। इस ओर मैं शिक्षामन्त्री श्रीप्रतापचन्द्रजी चन्द्र का ध्यान आकृष्ट करता हूँ। उनके नाम में दो चन्द्र लगे हैं, मैं कामना करूँगा कि इस काम से उनके यश में चार चाँद लग जायँ।

गृह मंत्रालय के मन्त्रिमंडल – पटेल-पाटिल-मंडल— तीनों लकारान्त ही हैं। मैं मिथिला-मैथिल मैथिली इन तीनों लकारान्तों की उनमे अपेक्षा का आग्रह करता हूँ। साथ ही एक सांसद की हैसियत से संसदीय कार्य मन्त्री श्री रवीन्द्र वर्माजी से कवीन्द्र रवीन्द्र के शब्दों में ही निवेदन करूँगा कि भारतीय संस्कृति के शत-दल कमल का एक-एक दल सौरभवाही है। कोई भी दल-पखुड़ी बिखरी तो भाव-भाषा की गुंथी लड़ी ही टूट जायगी। भारतीय संस्कृति में मिथिला का मूल्यवान् अवदान है। किन्तु उसकी भाषा मैथिली आज भी संविधान में उपेक्षित है। जिसके बोलनें वाले ३ कोटि हों, जिसकी स्वतन्त्र "तिरहुता" लिपि हो, जिसमें १४ वीं १५ वीं शताब्दी से गद्य-पद्य एवं नाट्य साहित्य का प्रवाह निरंतर प्रवाहित रहा हो, जो बिहार के समस्त विश्वविद्यालयों में एम० ए० तक के अध्ययन-अध्यापन का विषय हो, पचासों डी० लिट्, पी० एच० डी० उपाधिधारी शोध-कार्य में लगे हों, बंगाल, काशी, नेपाल के विश्वविद्यालयों में जो भाषा-रूप में गृहीत हों, जो पी० ई० एन०, साहित्य अकादेमी द्वारा सम्मानित हो, जिसके कवि स्वनामधन्य विद्यापति की पदावलियों का अनुवाद अंग्रेजी रूसी, आदि विदेशी भाषाओं में समादृत हो, उस साहित्य-समृद्ध तीन कोटि जनसमुदाय की भाषा को संविधान में अभी तक स्थान नहीं दिया जा सका, यह सर्वथा चिन्तनीय है। मैं इस समस्या के समाधान के लिये सरकार एवं माननीय सदस्यों से साग्रह निवेदन करता हूँ। इस अवसर पर मुझे कवि विद्यापति की एक कविता याद आती है—

बालचंद विज्जावइ भाषा, दुहु नहि लगइ दुज्जन हासा,
ओ परमेसर हर सिर सोहइ, ई निश्चइ नाअर मन मोहइ।

मैं माननीय प्रधानमंत्रीजी से – जो सरकार के सर्वेसर्वा हैं, योजनासूत्र के सूत्रधार हैं उनसे, नम्र निवेदन करूँगा कि वह दरभंगा क्षेत्र के विकास की योजना को सफल बनाएँगे। उन्हें स्मरण होगा ही, पिछले (चीनी) युद्ध के समय एक दरभंगा-हाउस ने दसों मन सोना एक बारगी उनके हाथों सौंपा था और उसी दरभंगा राजपरिवार ने स्वतः १ लाख २१ हजार एकड़ भूमि विनोबाजी के भूमिदान में सौंप कर देश में भूदान का रेकार्ड स्थापित किया था, आज वहाँ के किसान भूमिहीन अकिंचन बने हैं। उन्हें कोई व्यवसाय दीजिये, उद्योग-धन्धों की सुविधा दीजिये, कोई संयत्र स्थापित कर बेकारों की फौज को जीवन संघर्ष में सफल बनाइये।

उद्योग मत्री श्री फर्नान्डीस-साहब की संसदीय मुजफ्फरपुर क्षेत्र-सीमा मेरी दरभंगा संसदीय क्षेत्र-सीमा से बिलकुल मिली जुली है। मुजफ्फरपुर के साथ दरभंगा के उद्योग-धन्धों को भी पनपायेंगे, उनसे ऐसी आशा है।

मिथिला के कला-चित्रों की आज विदेशों में मांग है। व्यापारमंत्री माननीय धारियाजी इस धन्धे को विशेष प्रश्रय देंगे।

वित्त मत्री माननीय चौधरी साहब कई बार हमारे क्षेत्र में पधारे हैं। वहाँ की गरीबी का चित्र उनके सामने है। गरीबी रेखा से नीचे यहाँ ६५ प्रतिशत व्यक्ति हैं। उनकी आर्थिक स्थिति के सुधारने की आशा हम वित्त-मंत्रीजी से व्यक्त करते हैं।

माननीय रक्षामंत्री महोदय से सविनय निवेदन करूँगा कि दरभंगा सीमा-वर्ती सुरक्षा का महत्त्वपूर्ण केन्द्र हैं। इसी से सैनिक हवाई अड्डा भी वहाँ प्रस्तुत है। रक्षा उपकरण प्रस्तुत करने का कोई वृहत् केन्द्र वहाँ स्थापित होता तो उस पिछड़े इलाकों का वास्तविक उद्धार होता।

अन्त में नितांत व्यग्रता से रेलमंत्री माननीय दंडवतेजी को मैं दंडवत् करता हूँ। समस्तीपुर-दरभंगा लाइन के आमान परिवर्तन का प्रस्ताव गत ५ सालों से खटाई में फूल रहा है। संसदीय अवधि का पूर्वार्ध बीत चुका है, पर मधुदण्डवतेजी पूर्वार्ध मधु के बदले उत्तरार्ध दण्ड ही हमें देते रहे। यह स्कीम आज से ५ साल पहले स्वीकृत हुई थी। इस प्रसंग में राज्य सभा के

तारांकित प्रश्न सं० ४०६ दिनांक २. १२. १९७४ में सरकार की ओर से जो टिप्पणी थी, उसके अनुसार इसका सर्वेक्षण भी पूरा कर लिया गया था। दरभंगा और उसके उत्तरीय भाग का औद्योगिक विकास भी इसके अभाव में रुका है। यह एन० ई० रेलवे की पहली ऐतिहासिक लाइन है। १०५ साल पहले १८७५ ई० में बनी थी तथा अकालग्रस्त क्षेत्र को राहत देने के लिये बनी थी। तीन-तीन भूतपूर्व रेल-मन्त्रियों ने सदन में इसके निर्माण का आश्वासन भी दिया था। फिर भी इस लोकप्रिय मांग की ऐसी अक्षम्य अवहेलना से क्षेत्र भर में असन्तोष व्याप्त होना स्वाभाविक है। मैं माननीय रेल-मंत्रीजी से साग्रह, सानुरोध इसका शीघ्र प्रतिकार चाहता हूँ।

"रिजोल्यूशन की शोरिश है, मगर उसका असर गायब।
पलेटों की सदा सुनता हूँ और खाना नहीं आता।"

एक और विषय की चर्चा अप्रासंगिक नहीं होगी। भारत जैसे समस्या-बहुल देश में, जहाँ लोकसभाई सांसदों को देशव्यापी प्रसंगों के साथ-साथ लगभग ११ लाख नागरिकों का प्रतिनिधित्व करना पड़ता है, सैंकड़ों वर्ग किलोमीटर बिखरे क्षेत्र से सम्पर्क रखना पड़ता है, अनधिकृत रूप से ही सही कार्यपालिका अधिकारियों से कुछ कम समय नहीं लगाना पड़ता और जो लोकतंत्र संसदीय प्रणाली का दायित्वपूर्ण माध्यम है, उसे सहायक, डाक एवं क्षेत्रीय परिवहन की सुविधा होनी चाहिए।

मान्यवर, अंत में मैं धन्यवाद प्रस्ताव का हार्दिक समर्थन करता हूँ और आप को भी धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे अपने क्षेत्र की समस्याओं को रखने का अवसर दिया। नमस्कार।



सहयोगी रचनाकार

अमरनाथझा—विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

अमलेन्दुशेखरपाठक—शोधछात्र, मैथिली विभाग, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

अरविन्दकुमारसिंहझा—चनौर, भाया—मनीगाछी, जिला—दरभंगा

अशोककुमारठाकुर—इंजिनियर प्रेस गली, मिरजापुर, दरभंगा

आरसीप्रसादसिंह—१३, बी०, राजेन्द्रनगर, पटना—१६

इन्दिराझा—बिहार स्टोर्स, नारायण मार्केट, लंगरटोली, पटना—४

उपेन्द्रनाथझा 'व्यास'—श्रीभवन, बोरिंग रोड, पटना—१

उमेशचन्द्रझा—चीनीगोदाम, लालबाग, दरभंगा

काञ्चीनाथझा 'किरण'

काशीकांतमिश्र 'मधुप'

काशीनाथठाकुर 'कलेश'

कृष्णचन्द्रझा—हिन्दी विभाग, चन्द्रधारी मिथिला कालेज, दरभंगा

गोविन्दझा—रोड नं०—६, पूर्वी पटेलनगर, पटना—२३

चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'—आदित्य सदन, मिश्रटोला, दरभंगा

चन्द्रभानुसिंह—नदियामी, भाया—विरौल, जिला दरभंगा

जगदीशप्रसादकर्ण—बलभद्रपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

जयकान्त मिश्र—१, सर पी० सी० बनर्जी रोड, इलाहाबाद—२

जयमन्तमिश्र—हनुमानगंज, मिश्रटोला, दरभंगा

जीवकांत—ड्योढ़, पोस्ट—घोघरडीहा, जिला—मधुबनी

दमनकांतझा—जेड—१४, आशियानानगर, पटना—१४

दुर्गानाथझा 'श्रीश'—५६, जी, दिवानी तकिया, कटहरबाड़ी, दरभंगा

देवकांतझा देवगंगम्, हनुमाननगर, पोस्ट–शास्त्रीनगर, पुनाइचक, पटना–२३

देवेन्द्रझा— विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग, बिहार विश्व-विद्यालय, मुजफ्फरपुर

धीरेन्द्रनाथमिश्र—धर्मपुर, लक्ष्मीसागर, दरभंगा

नरेन्द्रनाथदास विद्यालंकार

नवीनचन्द्रमिश्र—एम० आर० एम० कालेजक सामने गली, लालबाग, दरभंगा

नीताझा—उपाचार्या, मैथिली विभाग, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

परमानन्दझा 'शास्त्री'—बेला, दरभंगा

परमानन्दपाठक—भारत सेवक समाज कालेज, सुपौल

परमानन्दमिश्र—उषा आयुर्वेद भवन, रोसड़ा, जिला–समस्तीपुर

पुरुषोत्तमझा—राजकैम्पस, लालबाग, दरभंगा

फूलचन्द्रमिश्र 'रमण'—संस्कृत विभागाध्यक्ष, हर्षपतिसिंह कालेज, मधेपुर, जिला–मधुबनी

बबुआजीझा 'अज्ञात'—बाथ, भाया–बेनीपुर, जिला—दरभंगा

बदरीनारायणझा २२७६८, सुभाषनगर, चेम्बूर, बम्बई–७१

बुद्धिधारीसिंह 'रमाकर'

भीमनाथझा धर्मपुर, लक्ष्मीसागर, दरभंगा

मणिपद्म

मदनेश्वरमिश्र द्वारा डॉ० रत्नेश्वरमिश्र, नरगौना, ल० ना० मिथिला विश्व-विद्यालय, दरभंगा

मार्कण्डेय प्रवासी के–३ कंकड़बाग कालोनी, पटना–२०

मैथिलीपुत्र प्रदीप स्वयप्रभा निकुंज, अल्हरियाबाग (इस्माइलगंज) लहेरिया-सराय, दरभंगा

योगानन्दझा—कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

रमाकान्तपाठक—दिग्घी पश्चिम, दरभंगा

रमानन्दझा 'रमण'—फ्लैट नं०-१३, रिजर्व बैंक स्टाफक्वार्टर्स, राजेन्द्रनगर, पटना–१६

रवीन्द्रनाथठाकुर— पटेल केनाल रोड, शिवपुरी, पटना–२३

रमेन्द्रनारायणचौधरी—ग्रन्थालय अधिष्ठाता, चीनीगोदाम, लालबाग, दरभंगा

रामचन्द्रमिश्र – पकड़ीकोठी, जिला–सीतामढ़ी

रामदेवझा—कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

लक्ष्मणचौधरी 'ललित'—मिश्रटोला, दरभंगा

लक्ष्मीकांतमिश्र—पब्लिक स्कूल, बेला, दरभंगा

विश्वेश्वरमिश्र—विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पूर्णिया कालेज, पूर्णिया

शान्तिनाथझा—विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग, एम० एल० एस० कालेज, सरिसवपाही, जिला–मधुबनी

शिवशंकरझा 'कांत'—विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग, चन्द्रधारी मिथिला कालेज, दरभंगा

शैलेन्द्रमोहनझा

शोभाकांतमिश्र—डरहार, लहेरियासराय, दरभंगा

श्रीकृष्णमिश्र

श्रुतिधरझा—हनुमानगंज, मिश्रटोला, दरभंगा

सीतारामझा—विचौली, पोस्ट–पूराकलाँ, जनपद–इटावा (उत्तर प्रदेश)

सुरेश्वरझा – रम्भासदन, २/बी, राजकुमारगंज, दरभंगा

हरिश्चन्द्रमिश्र—नवटोल, पोस्ट–सरिसवपाही, जिला–मधुबनी



स्वदेश सान्ध्यगोष्ठीक किछु सदस्य

श्री रमेन्द्रनारायण चौधरी, डा० श्री मदनेश्वर मिश्र, श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', डा० श्री भीमनाथ झा, आचार्य श्री जयमन्त मिश्र आ डा० श्री सुरेश्वर झा ।

ग्रन्थ-क्रम

किछु समर्पण पंक्ति

१. कविवर सीताराम झा ('पयस्विनी'सँ)—

अम्ब चरित अवलम्ब कवित कत विषय ललितगर
भाषा प्राकृत प्रकृत-मधुर निर्मल स्वर निर्झर
सूक्ति-सुधा, वसुधाक कम्प, उनटा बसात बहि
लोक-लक्षणो विलक्षणे, शिक्षाक कथा कहि
जतरा सगुन विचार कत, अतिचारक कर आन के ?
ज्योतिष कवित प्रमान के ? सीताराम समान के ?

२. कविशेखर बदरीनाथ झा ('पयस्विनी'सँ)—

आर्या साहस्री भार्या कत जनि श्रीकृष्णक
राधा - परिणय वाधा हरि मन पुरल सतृष्णक
एकावली ललित रचना परिणय घटना शुचि
मैथिलीक गर पहिराओल मनि रतन ग्रथन रुचि
गुरुवर कविशेखर शिखर बुद्धि वयस यश वृद्ध जे
सुरसरस्वती-मैथिली कवि सुकृती रससिद्ध जे

३. बाबू भोलालालदास ('पयस्विनी'सँ)—

जनिका नहि परवाहि आहि, क्यो कहो बताहो
मैथिलीक हित लड़बे उचित पहिरि सन्नाहो
जे विधान - विद्वान, सुकवि, सम्पादक, वक्ता
उभय भारती मिथिला हित नित जे अधिवक्ता
दास मैथिलिक लाल छथि जे अमोल भोला भला
माथ मातृभाषाक नहि झुकओ, कटओ बरु निज गला

४. राजपण्डित बलदेवमिश्र ('अंकावली'सँ)—

झुकय न मैथिल पाग, दाग नहि तिरहुति चपकन
मैथिलीक अनुराग बढ़य जन-गन मन अनुखन
मिथिला - मैथिल संस्कृत - संस्कृति, वाद - विवादे
आइ सुनब कत जन - कानन पंचानन नादे ?

राजपण्डितक अछि कत न कीर्ति अखण्डित तिरहुते
बलदेवक बल देल जे पण्डितगण - मन संचिते
अभिनन्दन शत-शतक जे रचल रचाओल संभृते
श्रद्धानत 'सुमन'क प्रणति सहित समर्पित तनि कृते

५. पण्डितराज त्रिलोकनाथ मिश्र ('अंकावली'सँ)—

जनि विनोद रुचि रुचिर न अनत कतहु कन पटुता
जनि पाण्डित्य - कवित्व - सूक्ति प्रतिभाक न समता
जनि बिनु विद्वानक मलान मुख, शिष्य अनाथे
तनि त्रिलोकनाथक स्मृति हित नित झुकबी माथे
पठन - पाठनहु, भाषणहु, लेखनकला विकासनहु
देश-समाज सुधारनहु, जे अनुपम प्रतिभा धनहु

६. अच्युतानन्द दत्त

परमानन्द दत्त ('श्रृंगारहार'सँ)—

विविध निबन्ध ग्रथित, कविता कत कलित, विनोद-व्यंग्य बहुरंग
पत्र - पत्रिका, ग्रन्थ - पुस्तिका सम्पादन - प्रणयनहुँ प्रसंग
विदित महाभारत रघुवंश, विलास भामिनिक पद्य तरंग
जनि पण्डित्य प्रकर्ष मातृभाषा उत्कर्ष देल कत अंग
दत्त अच्युतानन्द दिवंगत बन्धु परम आनन्दक मूर्ति
स्मृति हित अर्पित रस-तृप्तिक हित सुरभि हार श्रृंगारक पूर्ति

७. पुलकितलालदास 'मधुर' ('श्रृंगारहार'सँ)—

पुलकित छी जनि मधुर गुणक स्मरण हिसँ सद्यः अद्य
पुलकित लाल दास नामहु उपनाम मधुर अनवद्य
मैथिलीक सुविकास हेतु जीवन भरि जनिक तलास
आइ कतहु स्वर्गक नन्दनसँ देखइत हेता विकास
कल्पनाक ई कल्पलता सुमनक श्रृंगारक हार
मधुमय हुनि हित दत्तबन्धुहिक संग दत्त उपहार

८. प्रो० जयदेवमिश्र ('कविनवतिका'सँ)—

सरस कला कौतुक सतत, हरि-स्मरण रस सार्थ
कोमल कान्त स्वभावमय, श्री जयदेव यथार्थ
कर-पल्लव 'कवि - नवतिका' परभृतिका ध्वनि धीर
नित कूजित, विकसित सुमन, जनिकहि कृपा-समीर

९. कोइलख गाम ('प्रकीर्णशतक'सँ) —

गाम सहस लख परतख तदपि न कोइलख समतुल
भद्रकालिकालय विद्यालय घर - घर गुरुकुल
पारिजात तरु फलित उमापति गुरु कर रोपित
सब सब चन्द्रावतीक यश-सौरभ रोचित
जतय अपूछक पूछ, खुद्यिहु रतन अमोले
लूटन - दुखमोचन - बबुआजी नखत खगोले
ठाकुर गुरु जयसिंह, विष्णु शिवनन्दन ध्याने
सम्मानित श्रीकान्त प्रान्तभरि सुयश विताने
पण्डित - मण्डित प्राच्य ज्ञान आचार - विचारे
पुनि विज्ञान विधान आधुनिक रुचि संचारे
बन्धु विदित जयदेव सहित हरि भव अनिरुद्धो
वेद योग आनन्द, दत्त भव विभव समृद्धो
मधुप - किरणहुक रुचि - परिचय मन दमनहु सुमने
बुझि पड़इछ बल्लीपुर - कोइलख एकत अपने
सौजन्यक बल जय माधव सुवंश अनुरोधे
प्रथम पाठ सुरभारतीक पढ़लहु" शिशु - बोधे
श्रद्धा - स्मृतिक प्रकीर्ण कण, अर्पण करइत छी जखन
पूजि कोइलखक भूमि कन, स्वयं आइ छी द्रवित मन

१०. राजनगर ओ पं० सहदेव झा ('अन्योक्तिका'सँ) —

राजित राजनगर मिथिलेश रमेशक सिद्धिस्थान
प्रतिष्ठान आद्यादि महाविद्याक तीर्थ प्रतिमान
रमेश्वरी विद्यालय जत शत-शत शिष्यक समुदाय
करइत रहथि सुचित शुचि संस्कृत-संस्कृतिकेर स्वाध्याय
गुरुवर श्री सहदेव प्रधानाध्यापक विद्वद्रत्न
व्याकृति सह साहित्य शिष्यहित शिक्षण कयल सयत्न
राजनगर कमलालय विद्यालय एखनहु स्मृतिकक्ष
अक्षर मौक्तिक धन्य कते अन्तेवासी प्रत्यक्ष
आपत करइत भाव-'सुमन', छी स्वयं कृतार्थ बनैत
श्रद्धानत गुरुपदक गुरुकुलक धूलि मौलि चढ़बैत

अर्चना

संकल्प-विकल्प

करबे कोना हम अर्चना ?
स्वयं अर्चित अहर्निश वर्चस्विनी छथि देवि
अर्चनीय बनैत छथि कवि जनिक पदकें सेवि
अर्चनामे जनिक जागलि उषा रात्रिक शेष
जनिक पदकें सहस करसँ परसि रहल दिनेश
स्वयं घसि-घसि शशि चढ़ा रहलाह चन्दन अङ्ग
सिन्धु चरण पखारबे हित बढ़थि उमड़ि तरङ्ग
सुरभि-शीतल मलय-पवनक व्यजन प्रतिपल हाथ
फूल-फल उपहार लय तरु-गण झुकाबथि माथ
दीप मन्दिर-द्वारिपर बरि रहल नखत अनन्त
गन्धवति आतपित धूपित करथि सुरभि दिगन्त
स्तवन-कूजनमे निरन्तर द्विज-कुलक आवेश
नाचि-नाचि रिझा रहल छथि शिखी रञ्जित-वेश
प्राणमे रक्षित हमर जे भाव तकरा आनि
अहिँक आगाँ समर्पित कय रहल छी हे दानि !
एतबे हमर थिक अर्चना ॥

गङ्गा-तरंगिणी

गिरिजा वामहि अङ्ग अहाँ शशिकलहुँ उपर चढ़ि
की न बनलि छी प्रिया जगत्पति पतिक अधिक बढ़ि

अहिँक नीरबल नारायण - पद - नीरज पावन
करथि अहिँक सञ्चय हित विधिहु कमण्डलु धारण
अहँ त्रिदेव-सहचारिणी त्रिपथ-वाहिनी त्रिदश-धुनि
त्रिविध ताप संहार हित होउ सदय जन पर जननि ॥१

अहँ हिम-नगपति महाकविक उर-द्रवित निरन्तर
नित नव-नव हिम भाव-सजल कविता चिर-सुन्दर
ध्वनि - रस - गतिमय एक-एक पद - कणसँ सुरसरि !
युग-युगसँ छी दैत अमृत सन्देश विश्व भरि
छाया - पथक विहारिणी गति रहस्य निधि गामिनी
करब भाव उर्वर हमर उर-मरु शीतल वाहिनी ॥२

शिव की सक्तिथि विष पचाय यदि लितथि न माथे
जैतथि सिन्धु सुखाय वाडवानलहिक हाथे
कौ न ठिठुरि हिमवान मरण-शय्या गत रहितथि
यदि न अमर-धुनि ! अहँक अमृत-रस भाग्येँ पबितथि
शत शत ज्वालामुखो-मुख जरि जैतथि भू दग्ध भय
जँ न जुड़बितनि सुधामयि ! अहँक सुधाधिक विमल पय ॥३

जन्म-जन्म सञ्जित हिमवन्तक पुण्यक लेखा
भारत - भूमिक भाल बीच भाग्यक शुभ रेखा
कयल जलधिकेँ रत्नाकर दय जीवन-धारा
भूतलकेँ कयलहुँ स्वर्गहुसँ बढ़ि शुचि - सारा
तीर्थराज - लक्ष्मी अहीँ काशी शीतल–कारिणी।
जनकभूमि-रज-कणक हित जय मिथिला-सहचारिणी ॥४

सगर सगर-सुत सुतल महानिद्रा-मुद्रित गुनि
जननि ! जगाओल सुक्ति–प्रभातक अरुण किरण बनि
पाप – कुमुद–कुल दलनि, पुण्य–पङ्कज–विकासिका
भगीरथक तप – गगन–भानु – रश्मिक प्रकाशिका

हमर हृदय-कुहरक निबिड़ अछि अभेद्य मोहक अमा।
करुणा-किरणक एक कण दय प्रकाशमय करब मा ॥५

पाप - रात्रि निःशेष – कारिणी अहीं प्रभाती
कलिक कलुषमय गुफा-तिमिर प्रति दीपक बाती
जन्म निधन नक्षत्र अस्त हित दिनमणि दीपित
यमभय - करिदल - दलन हेतु मृगपति उद्दीपित
जनिक जलक कणसँ अघक शत-शत सेतुक भञ्जना।
कत सम्भव मूकक मुखेँ तनिक शक्ति-अभिवन्दना ॥६

यदि न हमर हो भाग्य जीव जे जल-सञ्चारी
अथवा तट-तरु पत्र खसय टुटि अन्तहु वारी
यदि नहि सम्भव होय तृणक तनु सलिल-विलासी
अथवा स्नातक केश लुलित भय स्रोतक वासी
ओहि पथक हम रेणु–कण बनी जाहि पथ पथिक जन
जाथि, तनिक पद लागि कहुँ जाय मिली तट बालु-कन ॥७

नहि कस्तूरी - तिलक भाल गङ्गौट लभ्य जत
स्वर्णक कण अछि तुच्छ बालु-कण हो यदि उपगत
अमृत-कलश औंघड़ाय देब गङ्गाम्बु चुलुक भरि
पंक अंग यदि संग, न चन्दन लेपब उपकरि
गंगा-स्रोतक छाड़निक यदि हो सम्प्रति बिन्दु भरि।
चित न चढ़त कथमपि हमर क्षीरक सम्भृत सिन्धु धरि ॥८

कण्टकयय तट-बास हेतु प्रासादहु तेजब
छोड़ि अरगजा-लेपन गंगा-पाँक अङ्जब
नहि व्यवसायी पोत सागरक वक्ष - विहारी
काठ बनब अछि इष्ट जाह्नवी - जल -- सञ्चारी
नहि कुंकुम कश्मीरजा युवति-कपोल - पराग रुचि।
अङ्ग-बङ्ग-मगधक पशुक खुर-रज बनि लहि स्रोत शुचि ॥ ९

स्वर्ग-अर्गला तोड़ि गिरिक रोधन नहि मानल
शिव-शिर वासक लोभ-लेश मन मे नहि आनल
शत-शत प्रान्तर पार सहस कोशक कय धावन
अन्त क्लान्त मिलि क्षार-वारि कयलहु भव पावन
शत मुख बिनिपातक कथा कहो, न खेदक लेश अछि।
जगत जीव हित-साधना एक मात्र उद्देश्य अछि।। १०
द्विज-अन्त्यजके एक घाट जल अहाँ पिऔलहु
दलित-दलहुके पानि परसि हरि – पद पहुँचौलहु
स्वर्ग-मन्दिरक रुद्ध अर्गला खोलि सहज मति
अघी अन्त्यजक सुलभ कयल जननी दर्शन – गति
अहँ सुधारिका धरणिमे प्रथम-प्रथम अयलहुँ जखन।
यम - समाजमे गेल मचि रिक्त-रक्त हलचल तखन।। ११
गिरिक शिखरसँ सागर धरि एकहि प्रवाहसँ
मुक्ति साम्य सन्देश देल स्वच्छन्द नादसँ
स्वर्ग - राज्यमे भेद न राखल नृपति - रङ्कमे
भक्तिक श्रममे, ज्ञानक पूजी - पतिक अङ्कमे
मुक्ति-तन्त्र जन-सुगम कय दण्डधरक बल लय निखिल।
कान्तिकारिणी ! कयल अहँ भव-वन्दी-बन्धन शिथिल।।१२
परम पुरातन, भगीरथक श्रमसँ सञ्चालित
विश्व - अविद्या हरण हेतु हरि - पद उद्घाटित
जत निर्वाध प्रवेश जलक कण-कण अध्यापक
नर नारी शिशु युवा जीर्ण पल भरिमे स्नातक
युग-युगसँ जत आर्य जन तत्त्व चयन कयलनि परम।
करथु अविद्या दूर से विश्वक विद्यालय चरम।।१३
आदिकविक नहि छन्द कालिदासक ध्वनि - बन्ध न
द्रविड - शिशुक नहि कण्ठ जगन्नाथक न निबन्धन

Scanned by CamScanner

विद्यापतिक न स्वर न लभ्य पद्माकर सौरभ
जननि ! सुनाओत कोना मुग्ध सुत विनय हत-प्रभ ?
किन्तु विदित विश्वास ई जननी हृदयाऽऽवर्जना।
जड़ सुत क्रन्दन सुनि यथा तथा न चतुरक कल्पना ॥१४

मैथिली-वन्दना

जनिक चरण-नख-ज्योति तिमिर-तति उर-उर हरइत
नूपुर-सिञ्जित सञ्चित कयनहि वीणा मुखरित
पद - पल्लवक पराग सती - शिर सिन्दूर - श्री
चरण - चिह्न बनि भाग्य-रेख मिथिलाक उदित की ?
मैथिलीक पद-अंगुलिक विभा उदित भय कविक उर।
अरुण करुण रस-रश्मिसँ हरओ लोक-व्यापित तिमिर ॥१

जनक जनिक अन्वर्थ सदर्थक जन्म - भूमि ई
जानकीक जन्मे जनमे अभिधायक जीत ई
सीता खेतक स्वयं लक्षणा लक्षित रहितहु
मैथिलि ! मिथिला-वाणीमे रुचि व्यञ्जित करितहु
रहितहु विश्व-विभूति अहँ तिरहुति-माटिक मूर्ति छी।
रसरसना सम मैथिली मिथिला-मानक पूर्ति छी ॥२

चक्रवर्ति दशरथक कुलक अहँ दीप - शिखा बनि
कयलहुँ ज्योतिर्मय अवधक नभ चन्द्र - कला धनि
सरयू जलमे धोरि चरण - रज मधुर बनौलहु
कोशलेशकेर भुजा - वासिनी शक्ति कहौलहु
भोग वयस वन-वासिनी बनि योगक पथ अहँ धेलहु।
नहि जीवन भरि बिसरलहु जे विदेह - पुत्री थिकहु ॥३

धनुर्भङ्गहिक समय अङ्क अहँ रामक वामा
बनि चललहु जे छोड़ि सती - कुल - रत्न ललामा
रहू बनल युग युग धरि रविकुल - दिवस - कमलिनी
सुरभि विश्व भरि पसरि रहल अद्यावधि जननी

फिरलहु नहि दुर्दैववश जनकक जनपद जन्म भरि ।
किन्तु नैहरक स्वर अहाँ बिसरल छी नहि आइ धरि ॥४

धनुष - यज्ञ सर्वस्व - दक्षिणा जनकक जारी
दाशरथिक रथ भरल स्वर्ण यौतुकसँ भारी
बिदा काल दय रत्न-राशि कोशलक कोषमे
हृदय रिक्त जल - सिक्त जुटल छथि वरक तोषमे
अपना खोंछिक अन्न - कण पोछि नयनसँ अश्रु-कण
खसा देलहु नैहरक दिस सजल शस्य-श्यामल कत न ॥५

जे छाया हिमवत - वनमे रस कमला जलमे
डाली भरलहु लोढ़ि फूल - फल जे फुलहरमे
ढारि लटकि शुक पाठ कयल कोकिल कूजल छल
सखी संग सम्भाषणमे जे स्नेह स्वर भरल
कहू मैथिली ! की कतहु भेटल स्व - रस प्रवासमे ?
अवध - पुरी रनिवासमे पञ्चवटी वन - वासमे ? ६

यज्ञवाट ई बाट अहँक कहियासँ ताकथि
ऋतु - ऋतु वन - वन फूल - पात लय माला गाँथथि
जल भरि कमला ठाढ़ि कखनसँ घरक कातमे
कुशल पुछै छथि सखी बाग्वती बात - बातमे
तारक पंखी पाँतरक कर, झारी चर - चाँचरक ।
मैथिलि ! उत्सुक अवनि छथि भरल अन्नसँ आँचरक ॥७

नीति - निरत राजा देखल निज अवध - प्रजा मति
अनल - शुद्ध संगिनी मैथिलिक लिखल वनक गति
किन्तु करुण परिणाक आश्रमक बनि शुचि कविता
तमसा - तीरक कवि - आङन मे रस उर्वरिता
वन - वासिनि ! एकाकिनी दूरहु पति-उर वासिनी ।
करुण अश्रु - कणसँ अहँक रामायण रस प्लाविनी ॥८

पतिक बात नहि राखि पिता - घर सती जरलि छथि
उतरि शिवक शिरसँ गङ्गा समुचिते गललि छथि
माधव संग न जाय राधिका विरह - बरलि छथि
काली हर - उर चरण राखि जी दाबि दगलि छथि
किऐ बनलि वन–वासिनी पति–पद रेणु सुता हमर।
ज्वालामुखी न थीक ई ज्वलित प्रश्न धरणीक उर॥९
मेध – यज्ञमे अवध मध्य बनि स्वर्णक प्रतिमा
भेलहु प्रतिष्ठित–प्राण अहाँ हे ! रामक वामा
मन्दिर-मन्दिर समय–समय भारत भरि चर्चा
किन्तु एतहि टा प्राण–प्राण मे होइछ अर्चा
युग–युगसँ मिथिलाक अहँ रोम–रोम रमि गेल छी।
मैथिलीक रूपेँ अहाँ की न कण्ठ बसि गेल छी ?१०

मिथिला-महिमा

चारु–चिकुर अछि जनिक हिमवतक वन–हरीतिमा
उर-माला कमलाक भरल स्वर्णाञ्चल महिमा
दहिन गण्डकी भुजा बाम कोशी असीम बल
हलधर–अवनी, अमर–सिन्धु जल–धौत चरण–तल
लघु प्रतिमा भारतक ई, विधि शिल्पी कर–कौशलेँ।
दर्शनीय रूपेँ रचल जनक जनपदक छवि- छलेँ॥१
जकर प्रथम वाणी श्रुति रूपेँ भुवन -- पाविनी
तत्त्व -- चिन्तना आरण्यक उपनिषद - वादिनी
वक्र वचनसँ प्रखर तर्क शास्त्रक निर्झरिणी
कण्ठ - स्वरसँ सङ्गीतक रसमय तरङ्गिणी
श्वास-श्वाससँ शास्त्र पुनि पुलक-पुलक कविता कलित।
भुक्ति - मुक्ति करगत सतत तीरभुक्ति जनपद ललित॥२
शस्य - श्यामला, कमल - हस्त पद - तल गत गङ्गा
जे साक्षात वैष्णवी पुनि पावन श्रुति सङ्गा

धारि सदा - नीराक कमण्डलु जे ब्रह्माणी
वृषभ - वाहिनी शिवक अन्नपूर्णा कल्याणी
छथि प्रतीक जे त्रिशक्तिक भक्तिक अधिकारिणि प्रखर
जपवे 'मिथिला' मन्त्र जे त्रिपदा गायत्री हमर ॥३
काशी जकर समान वयस्या वङ्ग सुशिष्या
मगध कलिङ्ग फराकहिसँ जनि' कयल नमस्या
काञ्ची तक्ष -- शिला की सख्य जोड़वे कारण
विद्यापीठ रहल यत्ने नहि तुलित तदपि कण
वैशाली सहचारिणी अङ्ग अङ्ग बनले जकर ।
युग-युग ज्ञात त्रिभुक्ति कहि जय जननी मिथिला हमर ॥४
तीरभुक्ति अछि बास, चास हिमवत सीमा धरि
अपन आङनक टाट बढ़ल बङ्गक सीमा धरि
कमला त्रियुगा नित्य जनिक घर जल भरइत छथि
याज्ञवल्क्य चरवाह गोतमक सङ चलइत छथि
जनिक जनक हरबाह छथि सफल गृहस्थी अछि तनिक ।
अन्नपूर्णा जानकी खेतक छथि उपजा कनिक ?५
बड़ - पाकड़ि छाया पथ - शाला बाट - बाटमे
सर - सरिता खोलल पनिशाला घाट - घाटमे
दूर्वाञ्चल श्यामल आसन सभ ठाम सुविस्तृत
दैछ वाटिका आमन्त्रण उद्यान - भोज हित
सतत जतय स्वागतक हित द्विजकुल कोमल सरस ध्वनि ।
सत्कृत जन जनकेँ करथि यजन-अवनि मिथिला जननि ॥६
ग्रीष्म धूप लय, लेसि दीप-विद्युत पावस घन
वर्षा हर्षित अर्घ्यक भरथि अछिञ्जल उन्मन
कास - हासिनी शरद सिङरहारक भरि डाली
लय नवान्न नैवेद्य रुचिर हेमन्त सुशाली
नव किसलय नव-नव कुसुम लोढ़ि-लोढ़ि ऋतुपति मुदित ।
जनिक अर्चना हेतु से जगत्पूज्य मिथिला विदित ॥७

वर्णमयी

अहिक स्वरसँ पिक सुकूजित वेणु— वीणा - रञ्जना
विगत-अञ्जन नयन-व्यञ्जनसँ रसक अभि-व्यञ्जना ॥१
कुटिल अलकक बक्र रेखासँ टवर्गक कल्पना
'कर - चरण - तल - पल्लव'हिसँ चारु वर्ग स्पर्शना ॥२
अन्तःस्थ - सलिला विलय-रूप सरस्वती रस-वाहिनी
कवि - हृदय उष्मा सघन जय हंस शीर्ष-स्थायिनी ॥३
अहिक सस्मित दन्त्य कान्तिक विन्दु इन्दु-द्युति ललित
अहिंक कण्ठक छन्द ध्वनि संगीत स्वर लहरी कलित ॥४
मञ्जु नूपुर—शिञ्जिते अनुनासिकक अनुरञ्जना
चरण - तलहिक ताल - व्याख्यामे मृदङ्गक कल्पना ॥५
मूर्धन्य ध्वनि हे ! राग रस केर अधर मधुर निवासिनी
वर्णमयि ! अपरूप रूपक कविक हृदय विलासिनी ॥६

अपराजिता

हे सुकेशी ! सघन श्यामल केश - राशिक कुञ्चने
झहरि जाइछ पावसक उमड़ल जलद - माला मने ॥१
सुमुखि ! अहँक सिङारसँ शरदक सिङरहारक दशा
देखितहिँ छी, सहज झरि जाइछ पराजित परवशा ॥२
मानिनी ! मानक भयेँ अछि शिशिर कम्पित-गात ई
मुख - कमलकेँ देखि हेमन्तक गलल कमलावली ॥३
अङ्ग चम्पक सुरभि मातल मलय - वायु दिगन्तमे
बहय जकरहि स्पर्शसँ कुसुमित रसाल वसन्तमे ॥४
श्यामे ! मृदुल कर चरण-पल्लव देखि विकसित तनु-लते !
ग्रीष्म मर्मर पत्र व्याजेँ मुरुझि जाइछ संगते ॥५
नित्य ऋतु - शृङ्गार सजनहु प्रकृति रहथि पराजिता
हृदय - मन्दिर मूर्ति पूजित सुन्दरी अपराजिता ॥६

प्रतिपदा

प्रतिपदा

पूर्णिमा अनुजा बिदित ई कला मात्रक न्यूनतें
थिक अमाक सहोदरा पुनि कला मात्रक पूर्णतें
क्षितिज सीमापर उदित ई तिथि अमर उद्‌बोधिता
ज्योति-रेखासँ लिखित ई अतिथि छथि संबोधिता ॥
किन्तु रेखा मात्र ई राकाक रोचक भूमिका
फलक ई अंकित जतय विधु-यामिनी मधु-दूतिका
पद तुरीय अगम्य छन्दक तत्त्वदर्शिक सम्पदा
मैथिली - पद - रेणुगत त्रिपदा हमर ई प्रतिपदा ॥

कविताक आह्वान

अरुण किरण-रेखासँ जागल जग-मग नवल प्रभात
सिहकय लागल नहु नहु खेलइत संगी सुखद बसात
हँसइत फूल द्वारिपर झुलइत नचइत सरिता—कूल
जल तरङ्गपर चकमक करइत पथपर कण-कण धूल
कोर बैसि सूनल हम प्रथमे गुन-गुन स्वर्गिक गान ।
मायक ममतामे कविता की करइत अछि आह्वान ? १
सहजहिं मलय-समीर आबि पुलकित कैलक उद्‌यान
कुसुमित कली-कलीक सुरभिवश चञ्चरीक चित प्राण
आमक शाखा आलिङ्गित कय कुहकय कोकिल-कीर
नव वसन्त यौवनसँ मातल जड़-जंगमहु अधीर

नख-शिख कुसुमित लता-कुञ्जमे बैसलि प्रणय-विभोर
प्रेयसीक नयनक सङ्केतें कविता करइछ सोर ।।२
भीजल थल आर्द्राक आर्द्र लोचन-जलदें बहि नोर
हिम भेल द्रवित, नदीक व्यथासँ भरि अयले दृग-कोर
परदेशीक प्रेयसी उन्मन दूर जकर चित - चोर
आँखिक मोतीसँ दिन गनइत रजनी कयलक भोर
सूचित करइत पहुक आगमन पाँती पतिक पठाय
आशा-बँधबय 'धीरज धरु धनि' कविता सखी सुनाय ।।३
घर-घर गोरी करथि तपस्या पूजि तुषारी प्रात
वर बौराह उमाक देखिकें होइछ उर आघात
मुदित किन्तु हिमवन्त विकल-मन मैना स्नेहक स्रोत
जनमि जनक-जननीक मैथिली घर-घर करथि इजोत
शकुन्तला आश्रमकेर शोभा पति-गृह आवि विभोर।
कण्व गौतमीकें कनबथि, कविता पोछथि दृग-नोर ।।४
कुञ्ज-पुञ्जसँ कोलाहल सुनि जन-पथ देखि समक्ष
हर-कोदारि-खुरपीक पुजारी अर्ध-नग्न कत लक्ष
क्षुधित पिपासित रक्त शुष्क कय जोति कोड़ि जी दाबि
सुजला सुफला जनिक कठिन श्रम गीत वन्दना गाबि
कृषक श्रमिक केर श्रमजल चुबइत पावन गङ्गा-नीर।
साग-भात लय ठाढ़ि खेतमे कविता कमला तीर ।।५
पति परलोक बसल घर उजड़ल चिन्तित चित्त अधीर
मास-माससँ जकर कमासुत सुत ज्वर-गलित शरीर
जकर अन्नपूर्णा भसिऐले कौशिकीक मझ-धार
जीवन-तटपर एक शब्द सुनइछ जे हाहाकार
ओहि अनाथ विधवाक अश्रुहिक सगरो उमड़ल बाढ़ि।
करुण क्रन्दनें कविता कनइछ कौशिकीक तट ठाढ़ि ।।६
रस-तीतल बीतल वय सहसा कटु जीवन-संघर्ष
छोड़ि फूल, मूलक अन्वेषणमे बूझल उत्कर्ष

छाया छोड़ि मुक्त आतपमे जीवन ई गति-शील
नीचाँ धरती माता, ऊपर निर्मल-अम्बर नील
परवशताक पाश कटइत जीवन बदीक अधीर।
वलिदानक शूलीपर झुलइत कविता गाबय गीत ॥७
पूर्वाञ्चलसँ सुन्दर बनक विहङ्गम उड़ि-उड़ि आबि
सिन्धु-संगिनी राबी कनइछ खण्डित रसना दाबि
उदित भानु रजनी-तम चिरइत नब-नव लय आलोक
किन्तु हमर अछि रूप विरूपित हर्षहु बोरल नोर
एखनहु धरि बिस्पी-आङनमे मिथिला बहबय नोर।
कविता मिलित कण्ठसँ गवइछ 'हमर दुखक नहि ओर ॥८

'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे'

ई रामगिरिक नहि दिव्य देश नव कुटज-कुसुम-विकसित प्रदेश
ने प्रिया-स्मरणसँ विगलित - मन अभिशापित पुरुषक अभिनिवेश
ओ स्नान - पुण्य इतिहास देखि धैरज धय सकइछ जग परेखि
दुख-सुख चक्र क गति सह्य मानि आश्वासन दय सकइछ विशेष
गुनि सगुन, सुदिन यात्रा विचारि सन्देश-वचन दूतें प्रचारि
भूगोलक नकसा रेखि-लेखि पथ देखा सकैं छथि रुचि बिचारि
दिङ्नाग-निचुल केर उक्तिक छवि स्ववचन रचनें निष्प्रभ कय कवि
रुकि-रुकि गिरि कानन सुन्दरतासँ सजइत अपन कलाक सुछवि
करइत रेवा-रेखाक पार, सुनि शिप्रा—वातक चाटुकार
आवेशी रन—रसनामे कय ककरहु वियोगसँ चमत्कार
पथ वक्रहु उज्जयिनीक लोभ छोड़इत हुनि होइछ मनःक्षोभ
लोचन - लाभक फल लैत चलथि प्रेयसी प्रबोधय क्षीण - शोभ
दुर्बल शरीर, कर वलय रिक्त, छथि तरुण यदपि अभिशाप-तिक्त
कवि ! चलु अलकाक क्षितिज पट-पर रेखा अंकित जत अश्रु-सिक्त
अलकाक सखी छथि द्वार ठाढ़ि, बिनु पावस डूबलि नोर बाढ़ि
से आषाढ़क नव मेघ देखि टप-टप गलइत छथि कोँढ़ काढ़ि
... ...

एते दिन बसुधा संग-संग उत्ताप सहथि दुहु अंग - अंग
हुनि, जेठ हेठ होइतहिँ आगत घनश्याम दर्शने विरह भंग
एकाकिनीक ई व्यथा-भार, अछि आइ असह प्रथमहि अषाढ़ ।१

वसुधाक तापसँ द्रवित गगन, राधा - विरहेँ हरि सजल-नयन
सरिताक क्षीणतेँ उमड़ल घन सीता-अन्वेषी रघुनन्दन
नहि हमर प्रियक की प्रेम सघन, अलकाक परी सोचय छन-छन ।२

केतकी कण्टकित नव पराग, जूही-कलिका सुनि अलिक राग
विकसित, पुलकित वन-वन कदम्ब पल्लवित प्रेम-अङ्कुर सराग
उजड़ल अछि हमरे एक बाग, की अलका-युवति क सुप्त भाग ।३

वर्षा सुन्दरि घन चिकुर कलित घर-घर तरुणी-मुख अलक-ललित
निधि मिलन हेतु उद्ग्रीव नदी नख-शिख धरि वेणी उन्मोचित
अछि हमर बद्ध वेणी वञ्चित, अलकाक विरहिणी छथि चिन्तित ।४

भरि गेल वकुल - गन्धेँ दिग्-वन, केतकी-परागेँ अन्ध पवन
केकीक नृत्य घर-घर होइछ घनश्यामक दर्शन सभक नयन
हमरहि-आङनमे ज्वलित ज्वाल, अछि दग्ध भेलि अलकाक बाल ।५

घन संग दामिनी पीत-वसन, निधि-सगिनी क आङन अरिपन
पट पहिरि हरित युवती लतिका लय रहल तरुक भुज-आलिङ्गन
अछि विरह - धूसरित एक-वसन, अलकाक अङ्गना मलिन - बदन ।६

... ...

नहि देखि सकलि उमड़ल नभ-घन, सहसा चुप बैसलि शून्य भवन
आषाढ़ क रिम-झिम नोर-जोर चौंकलि लखि मुखपर अलक सघन
जे हत-चेतन पावस-वेधित, सन्देश कोना बूझय प्रेषित ? ।७

आषाढ़क प्रथम दिवसहिक ई, अछि ज्वाला, दग्ध भय रहल ई
ओ मेघ दूत की आबि करत आषाढ़क प्रथम दिवसमे की
अछि उर जागल अलकाक व्यथा, कवि!रामगिरिक की सुनब कथा ?८

हलधर

(१)

नील चीर मण्डित ओ, सहजहिँ अहाँक नीलम कान्ति
दमन हेतु उठबथि हर ओ, व्रत अहँक अहिंसा-शान्ति
यमुना जल कर्षथि कोपेँ, अहँ दयेँ नहरि सँ पानि
दुर्योधन - संगी ओ, चलइत अहाँ धर्महिक बानि
ओम्हर मदिर कादम्बरी, एम्हर कादम्बिनि रस - कूप
कृष्ण - सहोदर ओ छथि, सहजहिँ कृष्णे अहँक स्वरूप
हुनक रेवती प्रिया हन्त ! भदवा धरि बारलि एक
आर्द्रा सँ स्वाती धरि अनुगामिनी अहाँक अनेक
छी युग - युगक अहाँ हलधर, ओ छला द्वापरक अन्त
तुलना अहँक कतयसँ पौता, लागल एक 'परन्तु'——
ओ बलराम स्वयं, अहाँक छथि निर्बल केर बल राम
इन्द्र - प्रस्थ धरि हुनक हुकूमति, खेतहु अहाँ गुलाम

(२)

जखन अकाल - ग्रस्त जन, जोतय यज्ञ - वाट, हर लेल
सीता उपजा आनि अपन घर जनक जगमगा देल
काल - अकाल नियमसँ चलबी खेत – खेत हर नित्य
घर – घर अन्नपूर्णा वाँटब धन्य अहँक अछि कृत्य
त्रेता केर हलधर भोगक सङ योग कयल निर्वाह
किन्तु अहँक स्वपनहु न भोगमे हे ! योगी हरवाह !
समता अहँक कतयसँ करता जनकपुरक श्रीमान ?
किन्तु विदेह वैंह कहबै छथि माटिक अहाँ किसान !

... ...

धरती - सुत ! अहीँक कवितासँ हरित—भरित संसार
गढ़ि आखर दस – पाँच धन्य कवि, कहबी अहाँ गमार !
जे अणु गढ़ि विध्वस्त करथि जग धन्य हुनक विज्ञान !
कण - कण आविष्कार जीव-हित अहिँक तिरस्कृत ज्ञान !
भूमि - फलक पर दूर क्षितिज धरि शस्यक चित्र महान !
हल - तूली अछि सफल अहँक हे कलाकार ! रुचिमान !

श्मशान

एकान्त नदी-तट वनक प्रान्त, आश्रम अहाँक अछि बसल शान्त
जकरा दर्शनसँ गलित-राग, बिनु साधन जन पावय विराग
माया न मोह ममता न मान, हे जटिल यती, जगमे श्मशान !१
अछि चिता होम-वेदी प्रचण्ड, क्रन्दन-स्वर वेद-ध्वनि अखण्ड
ऋत्विक् अन्त्यज, दानीय शिवा, अछि यज्ञ अनुष्ठित रात्रि-दिवा
कुश-तिल-समिधा सञ्चित विधान, अहँ कर्मठ याज्ञिक, हे श्मशान !२
युग-युगसँ चालित अग्निहोत्र, हवि चढ़बथि नाना नाम-गोत्र
नरमेध नित्य, कखनहु विरोध, करइछ न दक्षिणायनक बोध
कय वाममार्गहिक अनुष्ठान, नित तान्त्रिक-कर्मी हे श्मशान !३
अछि अहँक पाठशाला सुबोध, कण कणसँ दर्शन-तत्त्व बोध
लय पाठ एतय ने होथि मुक्त, के एहन जीव छथि जगत युक्त
अध्यापक दोसर ऐहन आन, कहु के अछि जगमे हे श्मशान !४
वेदान्त कहथि सब थिक अनित्य, अछि किन्तु अहँक अस्तित्व नित्य
रवि खसथि साँझ, शशि झरथि भोर, नहि ज्वलित तेज हो शमित तोर
बनि एकमात्र तेजक निधान, छी ज्योतिमान नित हे श्मशान !५
वादी-प्रतिवादी मिलन एतहि, सभ क्रोध-विरोधक शमन एतहि
भाषा-भूषा जत वेष-भेष, आस्तिक-नास्तिकक न भेद-लेश
छी एक-रूपमय एकतान, चरितार्थ एकता हे श्मशान !६
जनिकर जीवन चिन्ता निर्झर, क्षण भरि विराम नहि, तन जर्जर
विश्रान्ति शान्तिमय अहिँक अंक, पाबथि से सहजहिँ निरातंक
के कहत अहाँकेँ क्रूर-प्राण ? चिर विश्रामस्थल, हे श्मशान !
फूलक शय्या पर कुसुम-वृन्त, छिलइत छल जनिकर अङ्ग हन्त !
से दबि कठोर काठक पहाड़, नहि बुझथि कनेको कष्ट भार
हे हठयोगक शिक्षक महान ! छी कठिन परीक्षक, हे श्मशान !८
क्रन्दन-ध्वनि होइछ एक कात, पुनि क्षुब्ध गृद्ध-दल करय घात
मनमे न घृणा-करुणाक थान, बिनु उपनिषदेँ जत ब्रह्म-ज्ञान
हे स्थितप्रज्ञ, साधक महान ! गीता-गाता अहँ, हे श्मशान !९

छथि कोनहु कोनमे जन-नेता, भस्मावशेष छथि दिग्जेता
करतल-गत विश्वक ज्ञान जनिक, अछि माटि मुष्टिभरि कतहु तनिक
नित धूलि मिला' मानीक मान, छी अनल मान्य अपने श्मशान !१०
पूजी-श्रममे नहि भेद–भाद, अछि अहँक राज्यमे साम्यवाद
राजा रंकक अछि तुल्य मान, अछि साम्य एतहि व्यवहारवान
छी समता-तत्त्वक मूर्तिमान, आचार्य-प्रवर अहँ, हे श्मशान !११
प्रिय-विरहेँ जरइत हृदय आगि, नहि मिझा सकल जे अश्रु लागि
चढ़ि चिता ज्वलित, तापित हीतल, करइत छथि सती एतहि शीतल
परिबोधक एहेन कतहु आन, के अछि ? अहीं कहु, हे श्मशान !१२
छल गढ़ल कुसुमहिक जकर अङ्ग, मुख समतामे चन्द्रक प्रसंग
से होथि पलहि भस्मावशेष, ई दारुण दावानलक देश
ज्वालामय अहँक शरीर–प्राण, छी अनल-किरीटी, हे श्मशान !१३
ने सुनी प्रेयसिक करुण वचन, देखी न सजल जननीक नयन
ने बुझी मोल हीरक वीरक, ने करी चित्त चेतन नीरक
चेतना—हीन नीरव पखान, हे अन्ध, बधिर, मौनी, श्मशान !१४
अछि संग प्रेत, तन भस्म अङ्ग, मृत्युञ्जय प्रलयकर असङ्ग
धूमेँ अछि श्यामल अहँक मूर्ति, सब तीर्थ कमण्डलु विधिक पूर्ति
अहँ ध्यान त्रिदेवक मूर्तिमान, आद्यन्त-हीन छी, हे श्मशान !१५

भैरवी

आइ वातावरणमे अछि तप्त युग केर ताप
भैरवी झंझाक गतिमे झरत जगतक पाप ॥१
तार स्वप्न क टूटते जागरण भैरव गीत
वर्त्तमानक चरण—घातेँ चूर्ण पतित अतीत ॥२
कोनहु कोनहिमे मलिन अछि जकर क्षीणालोक
जे न जगबय ज्वाल उर, ने हरय तिमिरक लोक ॥३
क्षणिक दीपक मृत्तिकाक न आइ बचत इजोत
भैरवी झंझाक झोँकक कतहु अछि न इरोत ॥४

आइ जन-मनमे न भ्रम हो कतहु मुक्ता-सीप
द्वीप-द्वीपक तिमिर-हारी उगओ गगनक दीप ॥५

आइ केशव-ग्रीवमे नहि छजत गुञ्जा माल
सिन्धु मथि प्रस्तुत जखन अछि कौस्तुभक मणि-माल ॥६

विद्युतक ई क्षणिक विलसित बन्द युग-युग हेतु
महापवनक वेग चालित भिन्न मेघक सेतु ॥७

इन्द्र-धनु नव रंग रंजित स्वयं लोपित क्षुद्र
कयल ज्या योजित अपन पिनाक जखनहि रुद्र ॥८

नहि पिपासित भूतलक हित लघु जलक ई कूप
उमड़ि आयल गगन-तटमे जखन मेघ स्तूप ॥९

आइ नहि नूपुरक रुन-झुन वेणु-वीणा-शब्द
गगनमें गर्जल जखन गम्भीर स्वरमे अब्द ॥१०

कामिनी-यौवन न पार्थक रुचि-विलासक वस्तु
पाशुपत पूजित जकर शुचि लक्ष्य तपसँ अस्तु ॥११

घिचत कृष्णा—चीर दुःशासनक नहि जे शक्ति
चढ़ल कृष्णक अंगुलिक ब्रण-बद्ध वस्त्रक भक्ति ॥१२

स्वर्ण पुर-उद्यान उजडत मरुत—सुतहि क हाथ
कनक-मृग छल हरल जे खल मैथिली दशमाथ ॥१३

नहि निशा-पट तिमिर क्षालित नखत फेनक विन्दु
किरण-माली उदित होइछ पूर्ण राका-इन्दु ॥१४

मास मधु की लय मनाओत दग्ध उर उद्यान ?
विषुव-रेखा टपि उगल छथि भानु दिग् ईशान ॥१५

मेघ-माला सजल झरते गलित नीरक गर्व
देखु गगनक फाँकमे हँसि रहल शारद पर्व ॥१६

क्षीण आशावरी स्वर जत भैरवी झंकार
किन्तु नहि संहार ई नव सृष्टिहिक उपहार ॥१७

तरु

तरुण तपस्वी मग्नमना छी !
चिर साधक तरु ! अहँ जन्महिसँ तपमे लग्न कोना छी !!
कठिन योग-साधन ई अविरत शीर्षासन अभ्यासे
गृह - विहीन भय गिरिक शिखर वन बीच लेल आवासे
हिम ऋतु राति बैसि पालामे निश्चल अहाँ बितौलहुँ
दीर्घ निदाघ तप्त आतपमे दिन भरि अहह ! गमौलहुँ
वाण तीक्ष्ण वर्षाकेँ हर्षहिँ बाहर रहि नहि गनलहुँ
मेघ क वज्र - गर्जनो, विद्युत - कुटिल तर्जनो सहलहुँ
प्रकृति-रचित पर्णक कुटीर छल ने छारल ने सज्जित
दण्ड-कमण्डलु धरि नहि जोगल ने गैरिक अनुरञ्जित
बल्कल वसन बनल, तन धूसर, छी अद्भुत अवधूते
पवनहि असन, ओस-कनसँ पुनि तृषा शमन अजगूते
सुख-दुःखक अछि स्वाद समाने ई मानल अनुपाते
उमस बिहाड़ि, पाथरक वर्षा पुनि वासन्ती वाते
स्तुति - निन्दामे भेद न मानल रिपु-हित बुझल समाने
पटबथि वा काटथि दूहूकेँ छायासँ सम्माने
सृष्टि-तत्त्व ने मुनिजन धरिमे भेद-बुद्धि व्यवधाने
समदर्शी ! अहँ द्विज - अन्त्यजकेँ कयल तुल्य फल दाने
स्वयं उपागत लता सुन्दरी देखल लपटलि अंगे
धीर ! नियममे तदपि न पाओल रञ्च - मात्र कहुँ भंगे
अमर दधीचि विदित छथि परहित निज अस्थिक दय दाने
किन्तु अहाँ आजीवन तिल-तिल कय सर्वाङ्ग प्रदाने
फल दी, फूल लुटाबी, दलहुक शय्या हित कय त्यागे
त्वचा औषधिक हेतु घिँचाबी इन्धन शाखा—भागे
अस्थि-काष्ठ संयोगहिसँ रचि विविध वस्तु उपयोगी
गृह उपकरण देल यश-लिप्सा शून्य विलक्षण योगी

श्रान्त पथिक पर जखन दिनपतिक हो कठोर कर पाते
तखन ताप अपनहि ऊपर लय बचबी अहँ उत्पाते
विश्वक अकथ वेदना-गाथा कहथि अहँक यदि काने
सदा सञ्चरण-शील समीरण तखन व्यथा—अनुमाने
छी देखैत अतिकम्पित झर्झर अश्रु-पत्र बहबैते
दया द्रवित अहँ विहगक ध्वनिमे अनुखन रही कनैते
फल क समय आनत होयब, अहँ देल जगत के शिक्षा
आश्रयगत यदि उच्छेदक हो ततहु अदेय न भिक्षा
जीवन भरि साधना ध्येय हो यदि उन्नतिक प्रतीक्षा
हे महोपदेशक ! अपनहिंसँ लेब जीवनक दीक्षा
उर्ध्व शाख पर विहग बसल छथि हे अच्युत ! श्रुति-मानी
अधो - मूलकें सेबि रहल जग, हम विमूढ़ नहि जानी
अहा ! अहँक अर्चामे डोलबथि चौर वसन्त-समीरे
पाद्य पयोद चढ़ाबथि, पृथ्वी बनि आसन स्व—शरीरे
धूपित कय दिन भरि भाष्कर पुनि चन्द्र चन्दनक वारि
चढ़ा जाथि, खद्योत—दीप रजनी उपासिका वारि

जन्म-दिवस

जन्म-दिवस थिक, माय गोसाउनि मनबथि लय फल-फूल
क्यौ सुरभित तन सिङरहार सन झहरि चढ़य पद-धूल
पिता आइ पूजा - आसनपर, मङ्गल चण्डी - पाठ
जुटल बाधाबा देबय आगत मित्र—मण्डलिक ठाठ
रंग – विरंगक पत्र डाकसँ अभिनन्दनकेर छन्द
जन्म—दिवस थिक हमर आइ, घर भरि उमड़ल आनन्द
गणक गुनथि ग्रह वर्ष-प्रवेशक शुभसूचक अवदात
किन्तु गनी हम पलक जीवनक बीतल अछि कत तात
सञ्चित—आयु कोषसँ होइछ श्वास-श्वास व्यय हन्त !
वर्ष-प्रवेशक हर्ष - अमृतसे घोरल विषमय अन्त

विजया-पर्व

विजयाक पर्व अछि गर्व जकर मन-मन मे
मिलि गेल हमर अरि-वर्ग रजक कण-कण मे
जा' धरि छल भेदक भाव देशमे जागल
जा धरि न सम्मिलित शक्ति एकमे लागल
ताबते महिष खुर आघातक आतङ्के
छल देव-भूमि ई पराधीनता दागल
जय महिषमर्दिनी स्वतन्त्रते ! ध्वनि-ध्वनि मे
विजया क पर्व अछि गर्व जकर मन-मन मे ॥१

हिमवानक काननसँ पञ्चानन वाहन
पंजा उठाय कूदल संग्रामक प्रांगण
सागर - तरङ्गसँ विन्ध्य-शृङ्गसँ संगहि
हुंकार उठल, रिपु त्रस्त समस्त नतानन
भय गेल पलहिमे ध्वस्त, हर्ष जन-जन मे
विजयाक पर्व अछि गर्व जकर मन-मन मे ॥२

निज अंगुहिसँ फुटि मधु-कैटभ मायावी
कय रहल पूब-पश्चिमसँ घातक दावी
निद्रा–मुद्रित अद्यापि पड़ल मधुसूदन
संकटमे हमर प्रजापति, मुँहपर जाबी
चिर-स्वप्न तोड़ि जागृत प्राकृतिक नयन मे
विजया क पर्व अछि गर्व जकर मन-मन मे ॥३

ई शुम्भ – निशुम्भ सहोदर दुइ दिस गर्जल
नोचय चाहय जननीक केश बुझि निर्बल
सुग्रीव दूत पुनि छलसँ कलबल बजइत
हे सिंह – वाहिनी ! शैल शृंगपर पहुँचल
अरि - मर्दन हित गर्जओ केसरि कानन मे
विजयाक पर्व अछि गर्व जकर मन-मन मे ॥४

जे जन – स्थानमे उपनिवेश अपनौने
बाल्कि बलसँ जे छ्ल कोहराम मचौने
माया - मारीचक कनक - हरिण रचि छलसँ
मैथिली - हरण कय पार समुद्र पठौने
हे राम ! अहँक अभियान सफल युग-युग मे
विजयाक पर्व अछि गर्व जकर मन-मन मे ॥५

की वर्षक बीझ मेटाय खड्गकेर पूजन
की माटिक दुर्ग ढहाय दिग्विजय पूरण
निज गात्रासृगक न साहस से बलिदानी
की-घोँटि-घोँटि पिबि विजया विजयाराधन
ई कर अशक्त की शक्त शक्ति – वन्दनमे !
विजयाक पर्व अछि गर्व जकर मन-मन मे ॥६

ई वर्ष – वर्ष विजयाक पर्व पुनि आबओ
महिमा शक्तिक ई भक्ति समेत सुनाबओ
नीतिक वल परपक्षहुक हृदय-परिवर्त्तन
सभ युगमे राम-पौरुषेँ लंका कंपन
युग-युग धरि रक्षित जनिकर स्मृति क्षण क्षण मे
विजयाक पर्व अछि गर्व जकर मन-मन मे ॥७

विच्छेदक कुटिल कँकयिक नीति विफल हो
ओ भरत - मिलापक दृश्य एतय उपगत हो
जनता – मारुति नेता रामक अनुगत हो
पुनि राम – राज्यमे पञ्चायतन अमर हो
नहि राग–द्वेष, भय-भेद कतहु जन जन मे ।
विजयाक पर्व अछि गर्व जकर मन-मन मे ॥८

असूर्यम्पश्या

दिनक चरण-ध्वनि दूरहिसँ सुनि तारा होथि इरोत तुरन्त
ने मुह सकथि निहारि बाल अरुणहुक कुमुदिनी कोमल-बृन्त ॥१
स्पर्श मात्रसँ लजबिज्जी संकुचित – गात्र बन आङन तग
नैश बिन्दु ई पत्र – पतित उड़ि जाइछ अपनहि किरण प्रसंग ॥२
रजनी – गन्धा सुरभि भारसँ मह – मह करइत गृह उद्यान
ककरहु वासित कर'क हेतु झरि जाइछ रातिहिमे अनजान ॥३
भू-गर्भक ई रत्न, खानिमे युग–युगसँ भय रहल अलभ्य
किरण नयन – कोणहुसँ देखि न सकथि भानु, जँ छथि न असभ्य ॥४
प्रतिदिन तरुण अरुण खिड़कीसँ ताकथि, असफल फीरथि ऊबि
झंझा वातायनसँ निहुरथि अञ्चल - छाया सकथि न छूबि ॥५
केहन रस ! जकरा राख'क हित नारिकेल सम्पुटित विधान
मूर्ति केहेन ? दर्शनहुक हित संसार बनल अस्पृश्य प्रमाण ॥६
कल्पित रूप, गन्धसँ घोषित युग - युगसँ आकर्षण - बिन्दु
उपमित कुसमित लता अङ्गसँ कान्तिक समतामे लघु इन्दु ॥७
किन्तु स्वयं ई सिङरहार झरइत कहि जाइछ अपन कथा
ई अदृश्य प्रेयसी सुनाबय अश्रुक कणसँ अपन व्यथा ॥८
'छवि नहि आँकह हमर गगन - पट, ने हम चन्द्रिकाक रुचि रूप
हमहुँ भूतलेपर उपजलि छी जल पिबैत भू - गर्भक कूप ॥९
कारामे बन्दी सुन्दरता, ने ई दण्डिक अर्जित भाव
हम प्रतीक नहि स्थायी भावक, हमरामे सञ्चित अनुभाव ॥१०

श्रान्ति-गीत

साधन कठोर भैरवक घोर
स्वरहिक रहलहुँ अभ्यासी ।
एकान्त प्रान्त कण्टक नितान्त
बनलहुँ युगसँ बनवासी ॥

आकुल—व्याकुल अछि कण्ठ आइ आशावरीक रचि गीति।
विभावरी—सरसीमे कमलक जगबओ प्रातक प्रीति॥
... ...

मार्तण्ड तप्त पथ किरण—शप्त
ई चरण प्रगतिहिक नामी।
पादप छाया न तकर माया
छन भरिहुक नहि विश्रामी॥
थाकल तन, मनमे जागल अछि आइ विरामक छन्द।
छायामे छन बैसि पथिक सुस्ताथि मेटि उर—द्वन्द्व॥
पर्वतक शिखर काराक निगड़
हम तोड़ि चलल छी निर्झर।
नहि कतहु रुद्ध गति हमर शुद्ध
तट छोड़ि सिन्धु दिस सत्वर॥
हम चलल आइ छी स्वयं उपटि कय करय उर्वरा भूमि।
गाबि सकथि अगहनक गीत जेहिसँ गृहस्थ—गण झूमि॥
... ... —

ई लोल लहरि जल—ओघ घहरि
नहि ताकल तट कत दूर।
मूलक खोजहिँ कुदलहुँ ओजहिँ
यद्यपि अनन्त जल — पूर॥
भुज थाकि चलल, दृग ताकि रहल आश्रय तरणीक अधीर।
चढ़ि-चढ़ि जेहिपर पार करथि जग पहुँचथि शान्तिक तीर॥

यौवन-स्मृति

आइ हमर अमातमीकेँ पूर्णिमाक पियास लागल
सुप्त मनमे लुप्त विभवक रस भरल अनुभूति जागल
आबि पाँतर बीच सहसा कुञ्ज - पुञ्जक छविक छाया
विमन करइछ, कास-वनमे हँसि कदम्बक मञ्जु माया
स्मृतिक दीपक हमर खण्डहरमे हठी के आबि बारल ?
नव वसन्तक सरस सुषमा ग्रीष्म - उष्माकेँ पजारल
... ...

जखन मधुमय मलय - पवनक रथ चढ़ल ऋतुराज आवथि
मंजरित माकन्द - मकरन्दे मिलिन्दक मन जगाबथि
मधु-निकुञ्जक मञ्जु शीतलता लतावलि बढ़ि सजाबथि
झुलि रसालक डारिसँ कोकिल कलित कण्ठेँ बजाबथि
किन्तु तखनहुँ हन्त ! हमर करील — वनमे ठूठ शाखा
ग्रीष्म - ज्वालामय हृदय नहि सुनय रसमय मधुक भाषा
सघन श्यामल जलद कुन्तल ललित नभ बालाक आनन
बिन्दु - बिन्दु उदार अम्बर बरसि पुलकित करय कानन
वकुल मुकुलित सुरभि शीतल भरय दिस-दिस पवन व्यापी
नाचि —नाचि कला ललित व्यंजित करय चित्रित कलापी
किन्तु बादर भरल भादर कृपण की कारण ? हताशेँ
हमर चातक विमन, मूर्छित भय रहल अछि आइ प्यासेँ
दग्ध भेल वसन्त ग्रीष्मेँ हमर पावस शरद - शोषित
कास - हासो पंकजक वन पुनि पवन हेमन्त दूषित
हमर उपवनमे चतुर्दिक् रहत पतझर मात्र वासी
किन्तु नहि ओ आबि सकता पल्लवित ऋतुपति प्रवासी
... ...
पथिक ! जुनि पूछह, हेरायल हमर मन अज्ञात भावेँ
छी तकैत कतेक झुकि - झुकि कतहु भेटओ कोनहु भावेँ
दन्त मुक्ता देल, श्यामल केश नीलम नोचि फेकल
किन्तु ओ माणिक्य तारुण्यक कोनहु मोलेँ न भेटल
नहि ययातिक युक्ति जागृत काय पुनि नवकल्प कल्पित
भेटय बिनु याचनहि सभके किन्तु एकहि बेर अल्पित

यमुने !

छथि जनक हिमाचल दुहुक एक, की भेद जनमि पश्चिम कनेक ?
शिव - माथ चढ़लि ऐली गङ्गा, यमुने ! तव प्रतिमा श्यामतेक ॥ १
की करब दूर यदि हरिद्वार, कनखल खलखल नहि अहँक द्वार
हे इन्द्रप्रस्थ - सहचरी रचब, तटपर इतिहास सजल नव-नव ॥ २

द्वापरक आदिसँ अद्यावधि, बसि - बसि उजड़ल, जरि - जरि उपजल
नृप-मुकुट -मणिक किरणावलिसँ अछि अहँक सलिल मलिनहुँ झलमल ।। ३
पश्चिम सँ दक्षिण दूर-दूर, बहि रहल वेगवति पयः पूर
घनश्याम दर्शनक प्यासलि रहि, युग-युगसँ चलइत छी किछु कहि ।।४
यमुने ! मधुरा गोकुलक गली, श्यामल अछि गुंजित कुञ्ज कली
राधा-माधवक विलास-ललित, अछि पुलिन-कुंज रस - भरित कलित ।।५
द्वारका बसल छथि अहँक कृष्ण, चित हुनकहु नित कृष्णे ! सतृष्ण
भारत रचइत चित करथि बोध, नहि अहँक भाग्य मे अश्रु - रोध ।।६
राधा क विरह उद्धव-बोधेँ, अल्पित, कल्पित अलि - अनुरोधेँ
प्रतिवर्ष अहह ! घनश्याम आबि, नित सजलहुँ डुबबथि नीर-बाढ़ि ।।७
तपि गौरी राधा पीत वर्ण, पीतरि बनली प्रतिमा सुवर्ण
नहि मन केवल तनहुक स्वरूप, श्यामे ! अहाँक अछि श्याम रूप ।।८
नहि दुखद बुझल कालिय क दश, नहि कलुषित किछु कय सकल कंस
हल-कर्षण संकर्षणक विरुचि, नहि गनल, देखि श्यामक छवि शुचि ।।९
छल अहँक नियति मे श्याम-विरह, हे श्यामे ! सञ्चित अश्रु - निबह
गिरि चरण-प्रान्त मे विह्वल स्वर, की अहँक करुण कविता सुस्वर ?१०
कल-कल स्वर नहि, प्रियतम पद-ध्वनि, अन्तर-मीलित छथि नीलम मणि
बसि वृन्दावन वियोग-योगिनि, युग-युग सँ प्रिय, छवि ध्यान क धुनि ।।११
स्वर - लहरी व्यापित विरह-गान, तट-तट पर विहग क करुण तान
स्मृतिसिक्त अश्रु - जल गिरि-कानन, कवि - कल्पनाक उर्वर आङन ।।१२
विरहेँ तपि तीर्थराज अयलहुँ, मिलि गङ्गाजल निर्मल बनलहुँ
अन्तःसलिला कवि-सरस्वती, मिलि त्रिवेणी क छल सँ कनलहुँ ।।१३
मुक्तिहु मे नहि उद्वैत भाव, चिर - विरहिणि ! नयनाञ्जन प्रभाव
स्मृति सलिलहु मे छथि मिलल श्याम, पुष्पक बसि बुझबथि कवि क राम ।।१४

('क्वचिच्च कृष्णोरगभूषणेव भस्माङ्गरागा तनुरीश्वरस्य ।
पश्यानवद्याङ्गि विभाति गगा भिन्नप्रवाहा यमुनातरंगैः ।।')

भिन्न-प्रवाह यमुना - तरंग, विम्बित रहते गंगा क संग
निधि मिलन-समय शत-शत मुखसँ, लंबित चुम्बित छवि अहिक अंग ॥१५
अन्तर्हित होइतहुँ, मिलि अन्तहु, स्मृतिमे श्यामे ! निधि - नीलिमाक
छविसँ कवि-हृदयक कला कलित, रुचि बिन्दु-बिन्दु रचइत अहाँक ॥१६

शरद

शिशु—सजल अञ्चल 'उत्तरा'—जननीक चञ्चल-'हस्त'
पान करइत 'पय', शरद - शिशु जन्म लेल प्रशस्त
किशोरी—चरण - शतदल, कर - कमल, मुख - चन्द्र रश्मि पसारि
नयन - खंजन चटुल, सम्बर्धित शरद सुकुमारि
नील शैवाल क शिरोरुह खचित कमलक फूल
कुमुद दन्तावलि विशद सरिताक शुभ्र दुकूल
उष्म - शिशुता गत, अनागत शिशिर, यौवन सन्धि
जकर कौमार्यक सरस सरसिज दिगन्त सुगन्धि
तरुणी—पहिरि 'चित्रा'—ऽऽभरण सद्यः नैश शीत स्नात
इन्दु - वदना शरद-युवती ठाढ़ि सरिता - कात
सिङरहारक हार उर तीराक टिकुली साटि
हंस - नूपुर नृत्य - निपुणा सुरभि जग भारि बाँटि
अरुण किरणे भेल सिन्दूरित जकर सीमन्त
शरद ऋतु-सुन्दरी अङ्कक सुछवि नखत अनन्त
कौमुदी क महोत्सवक रस - रास पुलकित अंग
आगमन मे नगर भरि दीपावलीक प्रसंग
प्रेम - स्वातिक बिन्दु याचक जगत चातक भेल
जनिक प्रेमक वश पुरुष पुरातनहु उठि गेल
जनिक हासे कुमुद धवलित दिशा ज्योत्स्ना - स्नात
जयतु नवयौवनवती ऋतु शरद विकसित - गात
वृद्धा— हन्त ! हेमन्तक पवनसँ यदपि कम्पित गात
भेलि वृद्धा शरद धवलित काश केश निपात

Scanned by CamScanner

किन्तु तखनहु अन्न - पूर्णा बाध अंचल बान्हि
शस्य सन्तति हेतु जोगवथि शरद - जननी आनि

उक्ति-प्रत्युक्ति

१—कृषक -

"आषाढ़क रिमझिममे रोपी अगहन अन्न ओसाबी आबि
भूमि-पुत्र छी हमहुँ, सफल अछि खेत, गीत खरिहानक गाबि
तोँ निष्फल की घाम चुआबह बैशाखक लुत्तीमे दग्ध
रोपह तेहन बीज जाहिसँ नहि होइछ उदर-भरण किछु लब्ध
मरह गन्धपर कल्पनाक बल आलवाल धागे भरि नित्य
'फूल सूँघि नहि भूख मेटाइछ' कहबी तोहरहिमे अछि सत्य।"

मालि—

"मित्र! सत्य थिक अहँक कथा, नहि उपजत हमर नन्दनक वन
क्षुधा न मेटत जगतक, कणसँ करत न खरिहानक छवि घन
रूप - पिपासित तरुण प्रेयसी - वेणी - गुम्फन हेतु तकैत
व्रती उपोषित अर्चनाक हित प्रतिमा-पदकेँ जखन पुजैत
सुमन-सुमन कय चयन नयन भरि जुड़त हमर उपवनमे आबि
हमर साधना एतबे हेतुक भुक्ति-मुक्तिमे संगति लाबि॥"

२—सागर—

"देखह विभव अनन्त जलक ई दूर क्षितिज धरि पसरि रहल
की कलकल करइत बहइत छह? मिलबह पलहि बीच अविचल
वक्ष बिहारी पोत, भरल, जत वणिजक होइछ यातायात
तोँ हमरहि उत्तुङ्ग तरङ्गक अंग समैबह एकहि कात॥"

नदी—

"सत्य, महत्ता लवणाकर! अछि अहँक प्रभाव सुदूर दिगन्त
नद निर्झर झरि अहँक चरण नत, रत्नाकर! छी अगम अतन्त!!
किन्तु पोत चढ़ि प्यासेँ आकुल आरोहीक कण्ठमे बिन्दु—
हमरहि, मेटि पिआस करत लघु अहँक महत्ताकेँ हे सिन्धु!!"

३—सुवर्ण—

चमकि सुवर्ण लौह सँ कहलनि—"पिण्डश्याम छवि तोहर असभ्य
देखह, हमर विनिमये जगके कोनहुँ वस्तु ने कतहु अलभ्य।"

लौह—

ठक ठक करइत नतमुख लोहक मुहसँ एतबे उत्तर भेल
"तो तखनहि आभूषण बनबह चरण-चोट जखने सिर लेल।"

४ फल ओ फूल

फल झुलइत शाखा पर बजला 'फूल! गन्ध नहि उदर भरत।'
हँसि कहलनि ओ 'तोहर जन्महित हमरा पूर्वहि झड़य पड़त॥'

५. खरिहान ओ खेत—

भरल-पुरल खरिहान खिलखिला' उठला कटला खेतक दीस।
कहल खेत—'तो कतय न जौं हम तोरा लेल कटवितहुँ सीस

६. गिरि ओ रज--

गर्वोन्नत गिरि घृणा भरल मुह फेरल सिकता-कणक उपर।
हँसि पड़ला रज निहुरि, 'अरे! हम तोहरहि श्रृङ्गक शिखा-शिखर!'

७. गगन ओ भूतल

गगन दूर सँ घन गर्जन कय कहलनि—'हमही दै छी पानि!'
भूतल उत्तर देल-'भाफ सँ हमरहि भने बनै छह दानि!!'

८. रज्जु ओ तृण—

रज्जु गजक गति रोकि तृणक दिस गर्वें ताकल शक्तिक लेल।
'हमर संहतिक फल ई जानह' तृणक सहज उत्तर ई भेल॥

युग-नवीन

प्राचीन जीर्ण जगतीक बीनमे—बाजि रहल अछि युग नवीन
झड़ि रहल पुरातन पत्र-जाल, अङ्कुरित देखु नव-नव प्रवाल
पट पीत-धूसरित प्रकृति त्यागि, छथि पहिरि रहलि परिधान लाल
जगतीक पड़ल उद्यान जीर्ण—छथि आगत युग ऋतुपति नवीन॥१

भूगर्भक सञ्चित स्नेह सरल, शत-शत स्रोतें उन्मुक्त तरल
अछि बहिर्भूत, कय जग चालित, बनि शक्तिक वाहन वेग प्रबल
चिर-रुद्ध प्रकृति-भण्डार पीन, खुजि गेल युगक हाथें नवीन ।।२
नभ-विद्युत भूतल उतरि चलल, वशवर्ती कयलक अनिल-अनल
चञ्चला स्वयं छथि यन्त्र-बद्ध, ई नव विज्ञानक मन्त्र प्रबल
जगतक जड़ता चेतनाधीन अणु अणु जागृत जीवन नवीन ।।३
नहि नाभिजन्माहिक पद्मासन, नहि शिवक हाथ भीखक भाजन
इन्दिरा क्षीरनिधि कौस्तुभमणि, नहि जनार्दनक हित सञ्चित धन
सभ वस्तु विराटक रूप लीन, अन्तर्दर्शी युग – दृग नवीन ।।४
ने सिन्धु लंघ्य मारुति मात्रक, ने पुष्पक दशमुखहिक वाहक
पुनि मैथिलीक उद्धार हेतु ने राम बनथु निधि-पथ याचक
विज्ञान-सेतु रचइत प्रवीन, त्रेता - जेतब ई युग नवीन ।।५

... ...

ने विन्ध्य अगस्त्य मात्र लंघित, ने सिन्धु नलहि कर सँ बधित
ने शत योजन गति पवनसुतक, ने सुर मात्र क गति व्योम-पथक
ने गज-सहस्र बल वैयक्तिक ने सुधा-गरल दल गत यौगिक
ने लंकेशक गृह अग्नि-वायु, ने वरदानक बल स्ववश आयु
पार्थक शर वेधित भूमि - जलें, ने आइ भीष्म केर तृषा शमन
ने वाह्य शत्रु - आक्रमण - बलें, ककरहु सक पृथ्वीराज-दमन

× × × ×

घर-घर छथि बद्ध पवन-वेगी, घर-घर प्रकाश रवि-शशि सेवी
घर-घर निर्झर मानव - वशमे, छथि बन्दी अनल-शलाकामे
नहि भेद आइ अछि कतहु रहल, बदलल अमाक रुचि राकामे
आयल अछि नव द्रष्टा प्रवीण, युग वर्तमान स्रष्टा नवीन
टूटल अछि क्षुद्र देश-सीमा, भूगोल बनल एके खीमा
अछि दिशा संकुचित गति-वेगें, पुनि काल सन्तुलित यन्त्र-बलें
परमाणु विभाजित अंश-अंश, नव - सर्जन मूलक ध्वंस-ध्वंस

× × × ×

सहजहिँ अतीत टूटल सितार, जत युक्त वर्तमानहिक तार
प्राचीन जीर्ण जगतीक बीन—मे बाजि रहल अछि युग नवीन

उपेक्षित

वीणा के सखि ! आज बजाबथि ?
युग - विच्छिन्न तार योजित कय की बुझि राग जगाबथि ?
उपवन एक विजन होइत यदि की मधुमास उदास ?
की अनर्थ जँ एक कुसुम किंशुकक सहय उपहास ?
एक बिन्दु जँ सिन्धु क सीमा सँ तट-सैकत लीन !
पल्लव एक झरत यदि, कानन की तरु-तति रुचि-हीन ?
नखत अनन्त बरय नभ आङन, दीप एक द्युति दीन
दल एक पंक-अंक झरि संगत, ते की शतदल क्षीण ?

... ...

मूक कण्ठ वसि वीणा - वादनि हठि उर-तार सम्हारथि !
कौतुक - वश अगुलिक परस रस की स्वर-राशि सजाबथि ?
वीणा के सखि ! आज बजाबथि !

प्रत्यर्पण

नभ-चुम्बी गिरि शृङ्ग-द्रवित स्रोते स्तोत्रक उद्गार
अतल सिन्धुकेर शत तरंगसँ ध्वनित सतत जयकार
कानन - काननसँ सुरभित सुमनक रस पूरित छन्द
दिस—दिस भ्रमि-भ्रमि पवन भ्रमर सुनबथि नित गीत अमन्द
किरण सुवर्णें गढ़थि प्रतापक प्रतिमा प्राची - कूल
रजनी नक्षत्रक लिपिमे रचइछ पद विरुदक मूल
प्रतिभावान प्रभात शीत—बिन्दुक रचि—रचि शुचि गीत
सन्ध्या—प्रतीचीक पटपर चित्रित करइछ रुचि रीति
कलित कण्ठसँ बिहगावली पढ़ैछ कीर्तिहिक पद्य
भौतिक तत्त्व रूप—रस—गन्ध—स्पर्शक विस्तृत गद्य
प्रतिपद जनिक विश्व मापक रहितहुँ वामन आकार
प्रतिपद श्रुतिमे निराकार होइतहुँ जे छथि साकार
प्रतिपद करथि प्रदक्षिण दीक्षित जनिक अर्चना—हेतु
प्रतिपद कवि युग—युगसँ रचइछ जनिकर महिमा सेतु
प्रतिपद ई प्रतिपक्ष जनिक अछि ध्यान शुक्ल ओ कृष्ण
तनिकहि पदगत प्रतिपदाक प्रत्यर्पण कविक सतृष्ण

साओन-भादव

चिर-सोहागिनी

चिर सोहागिनी प्रकृति प्रियाकेर भरल वयस ई साओन-भादव !
ककर कटाक्ष तड़ित चञ्चल अछि, ककर पुलक ई नव कदम्ब अछि
जलद - जाल बनि ककर अलक आकुल ई पसरल दिग्-दिगन्त अछि ?
ककर बलाका ललित प्रेम-लिपि गगन-पत्रमे अङ्कित नित नव ?
चिर सुहासिनी प्रकृति प्रियाकेर सरल वयस ई साओन - भादव ॥१
उमड़लि सरिता सिन्धु - संगमा, आलिंगित - तरु लता भंगिमा
दूभि - सेज सजि वासकसज्जा वसुधा पहिरलि पट - हरीतिमा
दिन रजनी घन -पट आवृत भय एकाकार, न अछि विभेद लव
चिर विलासिनी प्रकृति प्रियाकेर सरस वयस ई साओन-भादव ॥२

चिर-वियोगिनी

चिर वियोगिनी प्रकृति प्रियाकेर भरल आँखि ई साओन - भादव !
विरह - उषम ग्रीषम तापित तन, प्रथम दिवस आषाढ़क उन्मन
पावस - पलक वेदना - दुर्भर टप - टप गलइछ जीवन यौवन
तकरहि मर्मक व्यथा - कथा कहि रहल गलित भय जलद करुण रव
चिर वियोगिनी प्रकृति प्रियाकेर भरल आँखि ई साओन-भादव ॥१
की अरण्य - कन्या पति -त्यक्ता वा बाल्मीकि आश्रमक कविता ?
वृन्दावन - योगिनी वियोगिनि चिर - अनुरक्ता तदपि वञ्चिता
सञ्चित कय की तकर अश्रु - कण बिन्दु - बिन्दु वरिसय घन अनुभव ?
चिर वियोगिनी प्रकृति प्रियाकेर भरल आँखि ई साओन - भादव ॥२

समर-भूमि

नव उत्साह - सजल पावसकेर समर - भूमि ई साओन - भादव !
देखि विकट उत्ताप जगत भरि, विकल लोक आतपमे जरि-जरि
प्रखर ग्रीष्म - शासनसँ आसन डोलि उठल सुरपुर पुरुषक धरि !
तानि - मेघ - धनु विन्दु - वाण लय क्रुद्ध युद्धमे जुटल पवन-जव
नव उत्साह सजल पावसकेर समर - भूमि ई साओन-भादव ॥१
नील - नील घन - घटा जकर अछि, ढाल, खड्ग, विद्युत करगत अछि !
ग्रीष्म अरिदलक छिन्न अगसँ रक्त - धार की वरसि रहल अछि ?
नभसँ लय वसुधा धरि सगरो रणसागर उमड़ल ई अभिनव
नव उत्साह - सजल पावसकेर समर भूमि ई साओन - भादव ॥२

विषादमयी

कोन विषादमयीक नयन जल—द्रवित आइ धरि साओन - भादव !
मेघ - व्यूहकें दस दिस घेरल, प्रियतम जकर रिक्त - कर बेधल !
दिवा उत्तरा अनुखन दर्शन - उत्सुक अश्रुमुखी पथ हेरल
आशा - दिशा ग्रस्त दुर्दिनसँ चन्द्रमुखक दर्शनहुँ असम्भव
कोन विषादमयीक नयन - जल गलित आइ धरि साओन-भादव ॥१
किंवा मेघ - व्याधसँ बेधित, दिनपति क्रौञ्च ज्योति-निःशेषित
सहचरीक स्वर करुण चिरन्तन विरह अनुभवें सुनि-मन क्लेशित
आदिकविक उर छन्द उमड़ि जल बिन्दु - बिन्दु करुणा रस उद्‌भव
कोन विषादमयीक नयन - जल —रचित आइ धरि साओन - भादव ॥२

हास्यमयी

हास्यमयी सहचरी प्रकृतिकेर व्यङ्ग्य तरङ्गित साओन - भादव !
स्मितमुख वक–पंक्तिएँ व्योम - तल, केतकि व्याज हँसय थल खलखल
विकच कुमुद दन्तावलीक छल हास्य - मुखर सर - सरिता कलकल
द्रुम - दल पल्लव - पुलकित अनुखन व्यंग्य - बिन्दु घन बरिसय अभिनव
हास्यमयी सहचरी प्रकृतिकेर अङ्ग - तरङ्गित साओन - भादव ॥१

ओढ़ि मेघ - दल कारी कम्बल, झाँपि चन्द्रमुख अनचिन्हारि छल
घन - पथसँ रहि-रहि कनडेरिएँ ताकि हँसय - हँसबय अति चञ्चल
बिजुरि - घटा जनु हास - छटा प्रियतमक सग परिहासक अनुभव
हास्यमयी सहचरी प्रकृतिकेर अङ्गित इङ्गित साओन - भादव ॥२

इन्द्रजालिनी

इन्द्रजालिनी प्रकृति - नटीकेर चमत्कार ई साओन - भादव !
दिनमे रातुक दृश्य तमोमय, विद्युत बल निशि दिवस ज्योतिमय
माझ - माझमे साँझक सुन्दर दृश्य देखाय हृदय हुलसावय
सूर्य - चन्द्र-तारावलीक कय लोप लोक विस्मित करइत नव
इन्द्रजालिनी प्रकृति नटीकेर चमत्कार ई साओन - भादव ॥१
वीरबधूटी लाल ढेर ई जलसँ आगिक वृष्टि भेल की ?
असह छनहि अछि उषम उमस झझाक झोँक झट झमकि गेल की ?
आतप - छाया नव-नव माया रचइत मोहय, विश्व चकित सब !
इन्द्रजालिनी प्रकृति नटीकेर चमत्कार ई साओन - भादव !२

भैरवि भयाओनि

घन घमंड गर्जनसँ दिस–दिस चलल कँपाबय साओन – भादव !
विकट दन्त तडितक कटकटवय, मेघ पिशाची नभ–तट घेरय
बक पाँतिक लटकाय मुण्ड माला झझा – पंजे झिकझोरय
अन्धकारमे पटकि विश्वके झटकि प्रलय – समयक कय परिभव
घन घमण्ड गर्जनसँ दिस – दिस चलल कँपाबय साओन-भादव !१
वृष्टि - मुष्टिएँ सृष्टि कानि की, भयेँ भेल अछि पानि-पानि की !
दूरहु रहितहुँ, ज्योति अछैतहुँ रवि-शशि-नखत नुकैल जानि की ?
जीव-जन्तु-तृण–तन्तुक गति की ? स्वयं प्रकृति कम्पित झंझा-रव
घन घमण्ड गर्जनसँ दिस – दिस चलल कँपाबय साओन-भादव ॥२

कालपुरुष

कुपित काल - पुरुषक कठोर मुख भृकुटि कुटिल ई साओन-भादव !
के दुरन्त दोषी जकरापर, तडित दण्ड छोड़थि तकरापर
मेघ गर्जने तमकि - तमकि पुनि उमड़ि ऐल अछि क्षुब्ध क्रुद्धतर
आइ बरसि पड़ता ने जानि ककरापर, कखन ? सशक भेल सब
कुपित कालपुरुषक कठोर मुख भृकुटि - कुटिल ई साओन-भादव ॥१
झझानिल छल कोपें कम्पित, बलित शरीर तडित ज्वालावृत
बज्र खसावथि तनिकापर जे मानिनीक नहि चरण - प्रान्त नत
बरजि रहल छथि गरजि-गरजि कय अशरण पथिकक हन्त पराभव
कुपित काल-पुरुषक कठोर मुख भृकुटि - कुटिल ई साओन–भादव ?२

घृणामयो

चिर अभिशापित घृणा - मूर्ति परिपाक पाप केर साओन - भादव !
घन - व्रण भरल शरीर मलिन अछि, बिजुरी नहि, ई चरक-चिह्न अछि
सलिल - धार नहि, गलित गात्रकेर पूति - प्रवाह चलल अविरल अछि
बहि - बहि जमल पीज अछि सगरो नहि बुझबे जे ई थिक कादब
चिर अभिशापित घृणा - मूर्ति परिपाक पाप केर साओन - भादव ॥१
हंस घृणासँ दूर पड़ैले, नदी - हृदय कलुषित भरि ऐले
वर्षा - व्याजें फेकि थूक नभ घृणा करय, पिच-पिच थल भेले
शरद - वैद्यकेर चरण धरथु बरु मरण शरण अछि एके लाघव
चिर अभिशापित घृणा - मूर्ति परिपाक पाप केर सावन-भादव ॥२

शान्त तपस्वी

गगन - गुफा बसि जटिल यती के समाधिस्थ ई साओन - भादव !
मेघक जटा, विद्युतक बल्कल, नदी कमण्डलु, नभ गङ्गा -जल
स्नान त्रिकाल,ठाँओ कय आसन तृण विस्तृत, घन-ध्वनिक मन्त्रबल
वितत बलाका माला जपइत ध्यान निमीलित रवि-शशि दृग-युग
गगन गुफा बसि जटिल यती के साधनस्थ ई साओन - भादव ?१

सुख-दुख दिन - रजनी समान अछि, घनश्यामक एकान्त ध्यान अछि
घन - छाया काया, चपला श्री यौवन जल बुद्बुद् प्रमाण अछि
सञ्चित रसक त्याग-सुख दुर्लभ शान्ति-मार्गहिक कहइत अनुभव
गगन - गुफा बसि जटिल यती के स्थितप्रज्ञ ई साओन - भादव ?२

वात्सल्यमयी

चिर - वत्सला प्रकृति जननीकेर स्नेहाञ्चल ई साओन - भादव !
देखि विश्व - शिशु ग्रीष्मक पाँतर पड़ल, क्षुधा - ज्वालासँ आतुर
झटकि उठाय कोर भरि बादर स्नेहमयीक द्रवित उर - आँचर
बिन्दु - बिन्दु हृदयक रस पय दय करइत सन्तानक जीवन नव
चिर वत्सला प्रकृति जननीकेर स्नेहाञ्चल ई साओन - भादव ॥१
शीत - रौदसँ रक्षा पाबओ, ने अभाव जल - अन्नक दावओ
खेलओ नित कन्दुक कदम्बसँ मुदित मयूर संग भय नाचओ
मेघक अञ्चल छायामे हो पोषित वत्स, ममत्व नित्य नव
चिर - वत्सला प्रकृति जननीकेर स्नेहाञ्चल ई साओन - भादव ॥२

चिरन्तन दम्पती

प्रकृति-पुरुष दम्पती चिरन्तन मिलित रस-भरित साओन-भादव !
नवल श्याम घन नभ - निकुञ्जमे कनक - गौरि चञ्चला संगमे
प्रणय-केलि रस भरल, तरल उर शत अनंग रुचि अङ्ग - अङ्गमे
भक्त-मयूर - वृन्द अभिनन्दित नृत्य – निरत नित प्रणय-उत्स नव
प्रकृति-पुरुष दम्पती चिरन्तन मिलित रस - भरित साओन-भादव ॥१
कालिन्दी - उपमित वर्षा–जल, नित नवीन द्रुम - श्यामल वन-पथ
नन्द-निदेश घनक ध्वनि पल पल राधा – माधव केलि–कुतूहल
जयतु प्रेम–रस रसिक हृदयगत ध्वनित जगत मधु प्रणय-बेणु रव
प्रकृति - पुरुष दम्पती चिरन्तन मिलित रस-भरित साओन-भादव ॥२

पयस्विनी

पावस पयस्विनी

चित चेति चैत तरु लखि विशाख, चरि चर-चाँचर जगतीक लाख
जेठहु ठुट्ठ नहि ठाढ़ि—पात, निःशेष हरिअरी चारु कात
भूखक भाफें हुँफइत जरइत, किछु चरी गगन - गिरि दिस बुझइत
नव-नव वनव्राध क लय उद्देश, उद्ग्रीव बढ़लि सभ दिशा देश।

सित असित नील मेघक धूमिल, धूसर भास्वर कत रंग रूप
छपइत व्योमक पथ पसरि चलल, चपलाक पुच्छ चञ्चल अनूप
बनपथ-अतीत गिरि - शृंग सिंघ, अछि पुलकित रोम कदम्ब अंग
आषाढ़, जेठ, साओन, भादव, अछि चरण चारि लागल कादव
थन आर्द्र पुनर्वसु पुष्ट श्लिष्ट, अछि मघा घोघ, पूर्वा अशिष्ट
रोमन्थ उत्तरा, हस्त हास, चरते जा धरि कास क विकास
छापल पश्चिम, दखले दच्छिन, उत्तर उतरल, पूबहु पसरल
फिरइत दिगन्त, चलइत अनन्त, नभ - कानन परिसर चरय हन्त !
पवमान देखि दिनमान छपित, अनुमानि साँझ, बुझि समय समित
बढ़इत अन्हार, रातिक पछाति, चौंकल उद्विग्न वन धेनु पाँति ॥
चरवाह हवा उचिते झटकल, झंझा - झोंके झटपट समटल
अटपट सन जे सभ छल अवंड, बरजल तकरा लय तड़ित - दण्ड
सब चलल झटकि हुँकड़ैत झुण्ड, झुकि-झुकि झोंकें सहसा सशङ्क
गति - अतिरेकें सुर - रज प्रचाण्ड, उड़ि चालल बलाका-कण अखण्ड
हरियर कचोर नभ ओर छोर, गोचर चरइत, क्रम - क्रम बढ़इत

क्षितिजक दिस ससरल आबि रहल, चञ्चल गतिएँ हुलसल फुलसल
तृण तरु वन छनछन विकल विमन, मन पड़ले श्यामल वत्स अपन
वात्सल्य भरल रससँ उमड़ल, हुँकड़ैत पन्हायल पय उछलल
टप-टप चुबइछ दूधक धारा, जीवनमय उज्ज्वल शुचि - सारा ॥
ई नेह - बिन्दु थिक अमृत सिंधु, वत्सलता - रजनी रजत - इन्दु
रससँ भरते अंग - जग सागर, डाबर डाबा, सरिता गागर
झरते नवनीते शिला - खण्ड, घृत भरते खेत - पथार कुण्ड
जमते हिम - दधि गिरि शिखर - शिखर, मन -वन हरिअर पावस परिसर
पुनि तृप्त तृषित जगती - रसना, शस्यक प्रशस्यता वर - अङ्ना
जननी धन–धेनुक धन्य हृदय, जय–जय पावस पयस्विनी जय

पावसो : तामसो
(रस-चित्र)

हास्य— अति अन्धकार घन घोर घटा, कखनहु छिटकय बिजुरीक छटा
गम्भीर अभिनयक दृश्य हटा, हँसबैछ हँसैछ जेना विपटा
करुण—मेघक भरि आयल नयन - कोर, टप-टप अकाससँ खसय नोर
ठनकाक ठनक हिचकी अथोर, कनबैछ कनैछ निशीथ घोर
रौद्र—सन–सन पुरिबा बहि रहल जोर, झाँटक डाँटब अछि विषम रोर
अपराध ककर, कत दण्ड घोर, तमतन तमसायब तमक जोर
भयानक – वन-वन तरु-तरु कम्पित अधीर, थर-थर काँपय सरिताक नीर
बेहोस खसय तट माटि भीड़, डेरबैछ प्रकृति डेरबुक अधीर
वीभत्स—पिचपिच सब थल मन भिनकि रहल, चाली सहसह पद पिचकि रहल
गलि-पचि खढ़-पातो गन्हा रहल, बरिसात राति–दिन घिना रहल
वीर—रण–थल निशीथ, तम–दल विपक्ष, तडितक इजोत लड़इछ समक्ष
छन तिमिर जोर, खन बढ़ इजोर, जय–पराजयक नहि ओर-छोर
शृंगार—वन गृहमे बसि की रति रहस्य, चन्द्रिका चन्द्र सङ सोझरबैछ ?
प्रेमक पवनक झोंके नभ-घन-खिड़की खुजि झाँकी झलकबैछ

अद्‌भुत—खन सूची-वेधित अन्धकार, जगमगा गेल झट तडित तार !
खन घन-पट पसरल समटि देल, जादूगर पवन पसारि खेल !
शान्त—विकसित होयत जखनहि प्रभात, सिहकय लागत मलयक बसात।
तिमिरक परदाके चीरि उदित, सत रविक किरण अगजग द्युतित

पावस : मृत्युंजय
(बलिदानी चरित्र)

छल वसु - संपत्ति जते सञ्चित
धरती माता के कय अर्पित
नहि राखल किछुओ सलिल शेष
घन निर्मल अम्बर मात्र वेश।
बलिदानी दानी दिव्य जलद
गलि स्वयं लोकहित सिद्ध बलद
जनि' रक्त - सिक्त सुजला सुफला
श्यामल धरणी जननी सबला।
कयलनि जगतक उत्ताप नाश
नित तन अर्पण करइत सहास
सहि सहज चण्ड आतप प्रहार
जगके देलनि छायोपहार।।
तपनक कठोर कत दमन सहल
पवनक झकोर कत जोर बहल
कत उषम उमस, कत पवन दमस
सहि सहि जगके कय सकय सरस।।
जगके सजीव कय, जीवन दय
आनक हित निज तन मन बलि कय
बलिदानी पावस मृत्युञ्जय
मरि कय पाओल अमृतक परिचय।।

सरिता : रसवन्ती

कलकल छलछल उच्छल उज्ज्वल रूपवती के जाइछ ?
अवनी-तल निम्नोन्नत यदपि न गति वेगेँ भसिआइछ !!
उभय कूल मर्यादित रहितहु वेगवती द्रुत गमना !
दिवा-निशा दुहु दिशा अभिसरण निपुण वेशिनी ललना !!
निभृत निकुञ्ज दूरतम प्रियतम नीर नील घन-श्याम !
की तनिकहि तकबाक उदेसेँ चललि प्रेम उद्दाम ?
तट - नितम्बिनी मोड़ि-मोड़ि कटि-देश, नृत्य रस निपुणा ।
कल-कल गीत गबैत नचैत कछैत सतत द्रुतचरणा ।।
ताल तरङ्ग सङ्ग पुरइछ तट - तरु खग वीणा सङ्गत ।
अनुरागिणी रागिणी गबइत करइछ छवि नव रङ्गत ।।
आवर्तक भ्रू - भङ्गिमाक अभिनय संकेत विधान ।
लहरिक लहरापर नचइत अबइछ ई नटी प्रमान ।।
कल - कल शब्द अलंकृत झंकृत गुणमय रीति विलक्षण ।
भाव गभीर नीर अवगाहक भावुक उर हर तत्क्षण ।।
ध्वनि रञ्जित, पद - पद विलक्षणा संकेतेँ अभिधावित ।
अनुभाविनी भाव सञ्चारिनि सत् शिवत्व दिस भावित ।।
गति स्वच्छन्द अमन्द तरङ्गिनि कवि - उर अजिर स्रवन्ती ।
राशि राशि सौन्दर्य प्रवाहित विन्दु - बिन्दु रसवन्ती ।।

सरिता : वनिता

सरिते !
वहइत कतय चललि छी ?
प्रियक खोजमे विकलि गललि छी !
वन-वन घुमइत,
पथ-पथ हेरइत,

गिरि-पाहनक रोष नहि गनइत,
चर-चाँचर अनुरोध न सुनइत।
कल कल ध्वनिए करी पुछारी—
कतय हमर निधि हृदय-बिहारी !
छोड़ि-छाड़ि घर परिजन अविरत,
पतिव्रते ! तप निरत निरन्तर
प्रिय छवि प्रतिबिम्बित अभ्यन्तर,
मनक प्रभाव निरन्तर अन्तर।
लहरि- लहरिमे बिन्दु - बिन्दुमे,
द्रवित अहँक उर मिलन-सिन्धुमे
बनि वनिता, जीवन सहचारी,
तकइत घूमि रहल सुकुमारी ॥
तपस्विनी वर वरण अनन्या,
रूप वयस रति-रस लावन्या।
मुनि वचनें, तनु रचनें धन्या,
रुद्रक उर-तल मरु-थल कें की
प्लावित करबे प्रेमक वन्या ?
धनि धनि पुनमति, पर्वत कन्या !
सत्यवंत सिन्धुक चिर-संगिनी,
सावित्रीक चरित्र प्रसंगिनि,
दमयन्ती पति-वरण पुनीता,
वनिता वनकन्या धनि सरिता !
वनवासिनि प्रवासिनी सीता,
प्रेम योगिनी वा व्रजवनिता ?
युग-युग सञ्चित अन्तर ज्वाला—
विश्वक व्यथा द्रवित गिरिबाला।
जल प्रवाह नहि, बहइछ नोर,

कल-कल स्वर नहि हिचकी जोर,
तट नहि खसय हृदय हहरैछ,
सरिता वनिता विकल बनैछ।
सरिते, वनिते !
जीवन भरि की विश्व वेदनासँ
अहँ रहबे वनिते !

सरिता : कविता

'सरिते ! थम्हू कने, छने अहाँ, विरमि एतय लेब।'
कविते ! चलू सङ्, एके रङ्, बिलमय न देब ॥'

+ + + +

ककरउ उर देशसँ दुहुक भेल जन्म,
प्रकृति कोर खेलि बुझल दुहू नेह नर्म।
रसक कत तरंग, अंग - अंगमे उमंग,
जीवनमय यौवनमय इंगित अनंग,
दुहुक रसिक प्रेम — धनिक दूर अज्ञात,
असह विरह उमस सिक्त दुहुक मृदुल गात।
चंचल दृगंचल दुहुक सतत सजल कोर,
अंचलमे वेदनाक खोंछि भरल नोर।
गिरिक कविक अन्तस्तल द्रवित पघिलि बहली,
ककरहु उर - देश करय उर्वर दुहु चलली।
रसमे, धुनिमे समान,
शीतलतामे प्रमान,
अभिशापित जगतीक लेल दुहू वरदान।
तन दुइ, मन एक मात्र, प्राण रसक युगल पात्र,
शब्द अर्थ सन अभिन्न, सीता राधा न भिन्न,
बिम्ब प्रतिबिम्ब रीति, सरिता कविताक प्रीति,
सरिते कविता थिकी, कविते सरिता थिकी।

घन : तमाल

कानन वन बिच तरु तमाल हे ! चतरि सघन वन सहृदय
तबधल जे मन प्राण जगत केर जुड़ा जाउ छाहरि कय
तपन तापसँ उजड़ि उपटि कत विपट शरणकेर अर्थी
आकुल कण्ठ गोहारि रहल, हे सुजन, स्वजन अन्वर्थी
उमड़ि आउ, घन धुनि सुनाउ पुनि घहड़ि घुमड़ि घन – घोर।
आश्वासक आशा —— विश्वास जगाउ, सहेजि सङ्गोर।१

कत दिन ग्रीष्मक उष्मताक ई चलल अचल उत्पाते
पड़त प्रचण्ड किरण मार्तण्डक कते क्रूर आघाते
दुसह पसाही दावानलक करत कत वनक निपाते
बहइत रहत कि चिर - कालहु धरि दुर्वह दहन बसाते
अहह ? असह दुख देखि वारि - दृग वारिद ? बरसिअ वारि।
अब्द, निरब्द नभहु जुमि झमकिअ तमकि तडित तरुआरि।२

बरिसओ बुन्द वाण अविरत, डुबबओ दिग् - विदिग् अखण्ड
आखण्डलक धनुष टंकारे हो अखण्ड भू - खण्ड
चमकओ तडित - खड्ग द्रुत गतिएँ पीत रक्त उद्दण्ड
नील ढाल घन सघन घुमओ उद्वर्तित निज-भुज दण्ड
वज्री ! वज्र खसाउ, आउ अरि - उर कम्पन - निष्णात।
करइत चिर कठोर उद्धत गिरि - शिखर उपर अभिघात।३

उमड़ि घुमड़ि रस बरषि हरषि बसबिअ अहँ अवनी श्याम
पुनि निरन्न परतीकेँ धरती रचिअ भूरि घन धाम
सर - सरि रेखा मात्र, भरिअ रस - रंग प्रेम उद्दाम
मन - मयूरकेँ नचबिअ, सजबिअ वन कदम्ब - अभिराम
रिक्त - तिक्त ब्रज वन, कालिन्दी - कूल न तूल – कलाम।
आबि, आइ पुनि पुण्य श्याम घन ! बनविअ ललित ललाम।४

पुनि अम्बर वन मेघेँ मेदुर तनओ तमालक छाया
पुनि घर - आङन गृह - गोसाउनिक अनुगत गति तुअ पाया

समय सीरपर बर्षओ पुनि पर्यन्य, धान्य धन धन्या
पुनि मरु - सिकता कन - कन मालव उर्वर सस्य अनन्या
गगन वनक पुनि तरु तमाल तति रचि दल नवल वितान।
श्यामा अवनि, श्याम घन अनुखन मिलओ कलित कल्याण।५

प्रिया ओ प्रयसी

ओ प्रिया, तों प्रेयसी !
ओ तुनुक सुषमा तनक श्री, तों मनक नित श्रेयसी !
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !
ओकर भ्रू - भंगीक केवल, मानसक मृग विकल चचल !
तोहर सरिता लहरि लहराइत ललित मृदु मानसी !
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !
चटुल ओकरहु नयन अंचल, तोहर खंजन मोन चचल !
गोर गोल कपोल, किन्तु उषाक लाली आतशी !
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !
ओकर अधरक रक्तिमापर, दन्त मुक्ता रजत उज्ज्वल !
तोहर अरुण प्रभातपर दिवसक प्रकाशक आरसी
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !
ओकर हासक शुभ्र रेखा, कत तोहर शुचि चन्द्र-लेखा !
टिकुलि टिमटिम तोहर, नखत अनंत जगमग शिशु शशी
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !
बेणि श्यामल कुसुम गुंफित, जलद–माला तड़ित चुंबित।
अलक आकुल वदन, अनुखन, सघन झँपइत बिधु हँसी।
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !
ओकर नव परिधान धानी, शस्य – श्यामल वन वनानी।
ओकर स्वर्णाभरण, कुसमाकर तोहर सुरभित रसी।
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !

बोल मधु - माखल प्रियाकेर, रस भरल सुर कोकिलाकेर।
नूपुरक रव कतय पाओत, मंजु अलि–गुंजन यशी ?
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !

ओ प्रिया रुचि – अनुचरी, तों प्रकृतिप्रेयसि ! सहचरी
ओकर परिणय उपायन लग, तोहर नित प्रणयक वशी।
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !

मानव-मन

चञ्चल लहरी, चञ्चल बिजुरी ताहूसँ चञ्चल मानव-मन
प्यासल मरु–सिकता-कण अनन्त ताहूसँ तबधल तृषित नयन
विस्तृत बारिधिकेँ भरथु-पुरथु सरिता शत शत कलकल वहइत
भरि सकत अरे ! के रिक्त मानवक उर-परिखा लघुतमहु अमित
अम्बरक तिमिरकेँ हर'क हेतु रवि, शशि, अनन्त नक्षत्र व्यस्त
अन्तरक तामसी घनीभूत जे हरत ज्योति से अति दुरस्त
कय लेल आचमन सागरसँ तहि हमर अगस्त्यक तृषा दूर
वलि छलि धापेँ नापल जगती ने भेल बामनी भीख पूर
पसरल दावानल पीबि ब्रजक विहरथु गुञ्जामाली किशोर
उर दाही गरल घोंट पचबथि से कतहु मदन-मर्दन अथोर
अधरक वसन्त,लोचनक शरद,श्रुति धन-धुनिएँ ऋतु-ऋतु रंजित
अछिहे, परन्तु अन्तरक भूमि ग्रीष्मक ज्वालेँ जरि-जरि वंचित ॥

... ...

गलइछ नित हिम बिन्दु-बिन्दु, घन परिणत होइछ सतत सिन्धु
पूर्णिमा अमा-गत क्षीण इन्दु, संघर्ष अन्तरक की निरबधि ?
वहिरंग भ्रमित की कण रोधित, उद्धत गति अन्तरिक्ष रोधित
विज्ञानक महाशक्ति वोधित,की करत न अन्त शान्ति घोषित ?
झंझा वेगी वेगी निर्झर ताहूसँ वेगी मानव मन
चंचल लहरी, चंचल बिजुरी, ताहूसँ चंचल मानव मन

दीपक : एकाकी

एकाकी के अहँ बरनिहार !
सम्पूर्ण स्नेहसँ जीवन भरि तिल-तिल कय के अहँ जरनिहार !
नहि देखि रहल छी जे तम-दल अछि घेरि चलल चौदिस नभ-तल
अस्तमित भानु भयसँ विह्वल शशि दूर पड़ाय अकाश बसल
पुनि अहाँ क्षीणतम ज्योति-बलेँ की बुझि युग-युगसँ अड़निहार
एकाकी के अहँ बरनिहार ?
छथि कोटि-कोटि नक्षत्र ठाढ़, अछि जनिक ज्योतिसँ नभ सिङार
सभ क्यौ तटस्थ, सभ क्यौ उदास, नहि ककरहु उर साहस उदार
की सोचि विपथ दिस चलनिहार ! एकाकी के अहँ बरनिहार ?
माटिक शरीर, बातिक उर बल, अछि बिन्दु मात्र स्नेहक संबल
नहि शीशक रक्षा-यन्त्र सबल, लघु जीवन, लघु लघु शिखा चपल
पल-पल प्रवात पुनि बहनिहार ! एकाकी के अहँ बरनिहार ?
खटितहुँ,पल-पल, जरितहुँ कलबल, कय सकब कुटीरहि धरि प्रकाश
होइतहि निशान्त सभ भिझा देत, केवल शिखाक कलुषोपहास
बुझितहु विनाश दिस बढ़निहार ! एकाकी के अहँ बरनिहार ?
ई उत्साही सहचर पतंग, जे जरय अंग बनि अहँक संग
तकरहु बिनाश केर मूल हेतु बनि अयश मात्र होइछ अभंग
आदर्शवादपर मरनिहार ! एकाकी के अहँ बरनिहार ?

वन : पर्व

हम चलब नगरकेर पार गामसँ दूरे
अछि बसल वनक सीमा सुषमासँ पूरे
ने धवल महल, ने भीत-टाट केर वेरा
अछि जतय मुक्त प्रकृतिक युग युगसँ डेरा
नहि कल - करखाना, हर–फारक तैयारी
तरु लता गुल्म जत बनल रहय भंडारी

Scanned by CamScanner

ने नल - पानिक, ने कूप–पोखरिक आशा
झरि झरि झरने नित मेटय सभक पिपासा
ने सभा–समिति, ने पर-पचक स्त्र दगल
जत सुनी विहंगक कल-कूजन श्रुति-मंगल
ने मनुज – दनुज, ने जन नेता, प्रभु – सेवक
ने वर्ग-द्वन्द्व, अन्त्यज द्विज, शोषित - शोषक
जत बाघ अछैत, नचैत हरिण - दल देखी
चाननके घृणा न गन्हपसारिमँ लेखी
गाछो अछि तँ खढ़-पातो संग जुड़ाइछ
काको अछि तँ कोइलीक कुहू ने हेराइछ
जत आम नीम, जूही - जवास, दल काँटो
लघु लता, महावट, लंब ताल, तृण नाटो
दुर्गम पथ रथ न, तथापि कतहु गति-रोध न
संस्था-संस्थान न शोध तदपि उद्बोधन
कृत-विकृत कुरान-पुरान, पुरा नव वेदहु
जत विविधताक एकता रसा रस - भेदहु
नगरक रागें, गामक द्वेषें अकछाइछ
निर्द्वेष - राग वन दिस मन पुनि अकुलाइछ
हम चलब वनक दिस सत्य सनातन वासे
ने जायब सुतय पताल, न उड़य अकासे

कानन

[वचन : प्रतिवचन]

"कानन ! आउ, अहँक आननपर चानन हम छिटका दी
मलिन वदन धो - पोछि, केश बिखरल बिथुरल, छटबा दी
वास - भूमि अछि ऊभड़ - खावड़, बेउड़ेब घर - आङन
निघिन - सनक अछि घर - परिसर, मन अछि तकरा चमका दी
कोस - कोस कुश कास बाँस पुनि कते अपरिचित तृण - तरु

लता - गुल्म, जनि' नाम कोष धरि लिखल न, से कटवा दी
लगबा दी मङाय केसर गुलाब केओला कचनारो
कत बिध रूप - रंग रंजित धङवाय सागरक पारो
वन - विहंग उड़बाय, काबुली बुलबुल कागा - तूआ
बेर - बेढ़ हित छड़ - बलछड़; वेष्टनी शिष्ट अनतूआ
सड़कक तड़क - भड़क, ट्रक बस कत चलत सतत आङनमे
नगर सगर बसि, सरस करत नित कत कलकल काननमे
किछु छाँटब, आँटब, किछु काटब, प्रयोजनी जत काज
रन्धन - इन्धन व्यर्थ, अर्थ गृह - आयल सज्जा साज"

... ...

"हम प्रकृतिक सन्तान, हमर भगवाने छथि निर्माता
हमर ममत्व भूमिकें, हम सन्तति ओ छथि भू माता
रूप विरूप कहओ क्यो, युग अनुरूप न मानओ, क्षति नहि
किन्तु स्वरूप हमर अविकृत युगसँ युग धरि, अनुकृत नहि
साल विशाल गुल्म भेषज फल - दल अनन्त भंडार
भरल - पुरल वांछित, न नियोजन - लांछित घर - परिवार
शान्त निरन्त हमर अन्तर, जत वैर न द्वेष न लेश
विविधताक बीच एकताक नित भेटइछ जत सन्देश
तरु सन्ततिकें नहि कटाय ककरहु विशाल - उद्देश
प्रकृत जीवनक संजीवन हम, हमर अहम् वन देश।"

पूजन : उपादान

धरती ताप जगाय अही' भाफें घन सघन बनौलहुँ
सरस हृदय कय द्रवण - प्रवण जीवनकें सहज सजौलहुँ
दूर गगन संचरणशील कल्पना - समीर बहौलहुँ
जगती हित नित्त यदि च अपन कन-कन जीवन वरिसबितहुँ !
ताहीसँ हे देव ! अहँक पद - पंकज पाद्य चढ़बितहुँ !!१

कंठ-कंबुमे भरि - भरि स्वर - जल व्यंजन - बिन्दुक संचय
नयन क अर्घी मे अति तरल सलिल रस कन-कन भरि कय
स्वेद - बिन्दु सात्विकता भावित अङ्ग - अङ्ग उद्‌गत लय
दलित-व्यथितके देखि - देखि उर द्रवित भाव उमड़बितहुँ !
ताहीसँ हे देव ! अहाँक चरण दिस अर्घ्य घढ़बितहुँ !२

गंधवती धरतीक समस्त सुरभि गुण अणु - अणु संचित
सलिलक रस लय, पवन परस दय विविध रूप रस व्यजित
तरु-तरु गुल्म लतावलि झुकि-झुकि वृन्ते झरि-झरि रजित
फूलक हँसिएँ मुकुलित मनमे नवल विकास जगबितहुँ !
ताहीसँ हे देवि ! अहँक उर पुष्प - हार पहिरबितहुँ !३

अगुरु उरक अति शुष्क भाव चन्दन लय मलय पखाने
नागरताक कणा धूमिल धूपक स्तुति शुष्क समाने
गद्‌गद स्वर गुग्गुल द्रव - द्रव्यक पच सुगन्ध विधाने
अनपेक्षितहुँ उपेक्षित हृदयक आशा गन्ध उड़बितहुँ
ताहीसँ हे देव ! अहाँके सुरभित — धूपित करितहुँ !४

नूतन वातावरण पुरातन धरतीपर उपजाबी
मूलक मूल्य, कन्द आनन्दक फल परिणाम रचावी
वन उपवनमे तरु -तरु तृण - तृण नव रस स्वाद बढ़ावी
नित नूतन रसज्ञ रसना हित नव रस स्ववश चढ़बितहुँ !
ताहीसँ हे देव ! निवेदन नैवेद्यक हम करितहुँ !५

अहीं माटिकें सानि सलिलसँ वात्याचक्र घुमौलहुँ
राग - आगिसँ सुखा - पका अवकाश अकाश बसौलहुँ
स्नेह दान कय जीवन - बाती दय दीपिका सजौलहुँ !
यदि च दलित उर अन्धकारमे आश इजोत जगबितहुँ !
ताहीसँ हे देव ! अहँक मन्दिर आरती सजबितहुँ !६

पर्वत : एक वृद्ध

दप-दप हिमहिक पाग माथपर कान्हहु निर्झर चादरि
तनपर चपकन पहिरि तरु-गनक तानल छाता बादरि
साल विशाल फराठी करमे चलब कठिन, ते" अचले
बटुआ कटि लटकाय गुफाहिक गुआ धातु कत गचले
सर-सरि सररि नहाथि कोनहुना फल, दल तोड़थि निचले
घाटी - घाटी नहु–नहु कखनहु सम्हरि चलथि पथ बिचले
कखनहु मन प्रसन्न खेलबथि कत मृग – शावक समुदाय
हरित–भरित तृण–लता – गुल्म फल – दल सन्देश सजाय
खन तमसाथि गरजि पशु हिंस्र बाघ – सिंहक हुंकार
जे फनैत दल चढ़य न मस्तक ते" उचिते दुत्कार
खनहु विहंगम स्वर – संगमसँ गुन - गुन गान गबैत
मन हरैत छथि, गुन भरैत छथि, नीतिक श्लोक पढ़ैत
अनुभव रतन जोगाय, योग्य जनके" कत जतन सुझाय
दिव्य औषधिक, मणि धातुक, जत परिचय दैछ बुझाय
कमा–कमा निज शिला अंग सब - घर परिवार बसाय
खोजी आरोही शिष्यहुके" शिखर विचार चढ़ाय
तन कठोर पाहन, जत जगतक झाँट – बिहारि सहैछ
हिम - कोमल मन देखि जगत तापित, दृग द्रवित बहैछ
वृद्ध वसय रहितहुँ, हिम सहितहु", गलितहु" जगहित हेतु
दया - द्रवित चित, झरि उर-निर्झर सरस करथि नित खेत
नमन करिअ, अनुगमन करिअ, परिकरमा श्रद्धा - गाढ़ !
पर्वत वृद्ध अहीँक समृद्धिक चिन्तन करइत ठाढ़ !!

पर्वत : एक युवक

के ई उद्धत उन्मत यौवन, उद्गत उन्नत भाल ?
सर्वोपरि बढ़बाक महत्त्वाकांक्षा जनि उत्ताल !!
जननि अतल पाताल,ज्वार उर धधकि ललकि भू गर्भ

चीरि धरातल, उठले जाइछ करइत कत संघर्ष
पड़इछ किरण प्रखर उत्तप्त तपन तपइत कत घोर
घन गर्जन-तर्जन नहि गनइत वज्र - चोट नहि ओट
हिम निपात सहइत नित चित्त न चंचल चन्द्र वितान
शीत-ताप–वर्षा प्रपात रुखि-बिरुखि झुकय नहि जान

... ...

यदि च देश - सीमापर पड़इछ माथ सुरक्षा भार
सहि कत-कत आघात न रिपुकें करय दैछ संचार
यदि च देश हित कृषि-संपत्तिक देख - रेख दायित्व
कत श्रम घमि, झरि स्वेदनिर्झरें पटबय पटु स्थायित्व
यदि च धातु - मणि - रत्नें पूरित हो करबाक उदेश
युग-संचित खनिजहु खुनि-खुनि करइछ सम्पन्न स्वदेश
वन सम्पदा विशाल, पालनो पशुक चरीक प्रबन्ध
गिरि - गुरु युवा जुड़ओ युगजीवी नेता कर्म निबन्ध

... ...

कन-कन माटि बालु उघइत भरइत कत खदक खाधि
पाथर थुरइत वन जंगलहु लगबइत विविध उपाधि
करइछ युग युगसँ उपभोग योग्य सामग्री पूर
जय जय श्रमिक ! धातु खनि खनइत घमइत अथ च मजूर
खेत-पथार बाध वन सघन पटबइत निर्झर स्रोत
जय किसान उपजबइत कत बिध अन्न-धान मनि-मोति

... ...

यदि कखनहु रण-भेरी बजइछ सजइछ वेष जवान
गुहा व्यूह कत गूढ विरचि गचि घाटी रण सामान
हिम उष्णीष शीर्षपर पहिरल उपत्यका पदत्राण
कवच सघन वन, हाथ साल बन्दूक तानि मयदान
युगजीवी अभिमानी मानी पर्वत देशक प्राण
जय गिरिपति ! जय सीमापति जय-जय हिमवान जवान !!

पर्वत : एक बालक

हरित-भरित चंचल वन अंचल चारू कात पसारि
कोर उठाय गोर शिशु अवनी जननी रहलि दुलारि
मुख उज्ज्वल, अम्बर उच्छल जनि भालो भाग्य विशाल
प्रकृति जननि उर द्रवित दुग्ध हिम पिवइछ ललकि रसाल
नगन, मगन मन, सतत दिगम्बर दिग धवलित मुसुकान
हाथ उठाय चहै छथि पकड़य दूर न मामा चान
धातु-रतन कय जतन जोगाबय खेल खेलौने ढेर
सुधि-बुधि बिसरि अचेतन, चेतन रितल बितल कत बेर
खेलइत कखनहु गुड़रि उठै छथि बाघ सिंह होहकारि
खनहु वन-बिहग कल धुनि सीटी बजबथि मधुर सम्हारि
अगर - डगर घाटी - परिपाटी घुमथि रेङथि कत ढंग
गुफा नुकाथि, कुदथि फुर-फुर पुनि निर्झर झरना संग
तट-तराइ मे करथि चराइ धेनु धन अगनित ढंग
गाछ लता लय गुल्ली-डंडा भाँजथि - भुजथि उमंग
आँकड़-पाथरकेर पथार लगबैछ हाट कत मेल
शिशु पर्वतक केहन शैशव शुचिरुचि मत देखिअ खेल
दौड़-धूप कय थाकि पानि पिबइछ पुनि झरना कात
फल-दल तोड़, ओज वन - भोजन परसल दोना पात
अवनी जननी कोर सजाबथु अपन वंशधर मानि
नाम महीधर चिरजीवी, पर्वत नहि गर्वक हानि

प्रतिमा : भावना

ककरहु संकल्प केर मूर्त आकार
सृष्टि बीच आबि स्वयं स्रष्टा साकार
कविक हृदय कल्पनाक कविता नव मूर्ति
गगन वाष्प पवन सघन सरिता थिक पूर्ति

मनक सौन्दर्य निखर प्रतिमा छविवंत
रामक पद-रजक परस पाहन जीवंत
ज्ञान निराकार साकार भक्ति हेतु
तुनुक तनुक प्राण परिष्कार शक्ति केतु
अणुक शक्ति दृश्य तखन जखन धातु-धूलि
ध्यान जमय जतय बिन्दु ज्योति सिन्धु घूलि
प्रमा प्रमाण आगम-अनुमान यदि च दृश्य
गुरुक हो गुरुत्व सिद्ध जखन सफल शिष्य
ककरहु हस्तीक बुतपरस्ती परिणाम
काबा कबूल करय सीमित लय स्थान
मूर्ति-भंजनाक योजनाक अभियान
बन्द करिअ, मन्दिरहुक अन्दर भगवान
व्यक्ति एक, नाम कते, लौकिक अनुबन्ध
पिता-पुत्र भाइ - बन्धु बहुबिध सम्बन्ध
रहितहुँ अदृश्य, दृश्य कर्म तडित शक्ति
बरय-बहय, भरय-खुनय कते बिधि प्रसक्ति
चित्र ई विचित्र भरल भावना पवित्र
प्रतिमा खनि अमृत स्रोत खुनत मन खनित्र
ज्योति लिंग भूमि गड़ल बढ़ल गगन शृंग
कीट विकट जन्तु रङल रङ्ग कृष्ण भृङ्ग
मूर्ति पूर्ति भावनाक बूझवे परिणाम
प्रतिमा प्रमाणित प्रतीक प्रेम प्राण
मूर्ति पूर्ति भावनाक कल्पनानुसार
निराकार प्रभुहिक संसार ई अकार

धूमावती

धयल षोडशी श्यामा सुषमा धामा अपन नयान
कयल त्रिपुर - सुन्दरी नयन-अभिरामा अनुखन ध्यान

कर-कमला कोमल कमला कय हृदय-कमल सन्धान
तारिणि तारा तरल द्वितीया दिस टकटकी निदान
छली शारदा हमर उपास्या वीणा पुस्तक संग
स्मितमुखि गीत कवित संगीत ललित लयं भरथि उमंग
अथवा मदिरारुण - नयना मधु-बयना छवि छविवंति
घर-आङन चानन छिटकाबथि भरथि सुरभि रसवंति
किन्तु नियत छल, उचरल मंत्र अदृष्ट, दृष्ट परिणाम
इष्ट बनलि अयली घर हमर अदृष्ट देवता वाम
धूमावती सती, वयसा वरिष्ठ, बचसा कटु क्लिष्ट
रूप विरूपा, प्रकृति अनूपा, कृतिहु विकृत, नहि शिष्ट
मलिन वसन घर-द्वारि बहारथि बाढ़नि हाथहि नित्य
जेना कोनो आयलि छथि बेतन-भोगनि कोनहु भृत्य
सूप हाथ किछु - किछु सदिखन फटकैत अन्न भरिपूर
बिचे-बिच गुन-गुन सोहर-लगनी गबइत बिनु धुनि सूर
शय्या-गृह सँ भनसा-घर जनिका रुचि बढ़ल विशेष
जे पड़ोसिनिक बात पुछै छथि, खबरि न देश-बिदेश
ज्ञान जनिक बच्चा - जच्चा धरि ध्यानो धरय कुटुम्ब
अक्षर जनिक गोसाञि नाञो धरि पोथी पतरा लम्ब
मन छल विमन, कोना खन काटव बिरुचि, न रुचि विज्ञान
दृगक पियास मेटैत कोना ? ताकल भगवति-भगवान !!
देखल अहा भगवती ! धूमावती निरूपति रूप !
स्वयं महाविद्या परतच्छे तन - मन सबहु अनूप !
स्वर्ण-अन्नसँ भरल सूप, बाढ़नि स्वच्छता प्रतीक
श्रमक स्वास्थ्य-सौन्दर्य दिव्य आन्तरिक रूप रुचि लीक
पुनि छलि लगहि छिन्नमस्ता करइत जे नव संकेत
छिन्न अपन मस्तक कय उर-रुधिरहु दय भरी निकेत
विदित महाविद्या धूमावति हमर देवता इष्ट !
धन्य जीवनक क्षण, क्षणभरि यदि दर्शन पुरल अभीष्ट

श्यामा उमा अन्नपूर्णा सभ एतय समन्वित रूप
धन्य कयल अनुरक्त भक्त केँ, जयतु देवि अनुरूप

भिक्षा-पात्र

ई न कोनो गन्ध - उदर कर मे अछि रिक्त
ई न कोनो दक्षिणाक मन्त्रे अभिषिक्त
ई न कोनो कामनाक संचय अतिरिक्त
तिक्त मुखेँ जकरा प्रति भृकुटि तानि लेब
दान - दक्षिणा प्रयुक्त सुकृति मानि लेब ।।
ई न कवच-कुण्डल केर छली वज्रपाणि
बलिक बन्धनो न लेल वामनी प्रमाणि
ई न शिविक जाँच ले' कपोत-बाज बानि
जकरा दिस शंकाकुल दृष्टि तानि लेब
राजनीति रीति कोनो तुष्टि मानि लेब ।।
भूमि - हीन भूमि - पुत्र कोना सहल जाय ?
धनी धन्य कोना जखन भूख बढ़ल जाय ?
श्रमेँ मूल, पत्र-फूल सम्पदा सहाय
कोना तखन श्रमिक श्रमण श्रद्धा फल लेब
अपन भूमि रतन यदि न भाजन भरि देब ।।
'कस्य स्विद्धनं' सदा सुनी प्रणाम वेद
'सर्वं गोपाल-भूमि' एतय घोषणा अभेद
'न दुःखभागि क्यो कदापि' तोषणा अखेद
दुर्ग तरओ, सर्व सुखी, गर्व तकर लेब
मानवीय स्वर्ग नवे याचना तदेव ।।
व्यक्ति सँ समाज, तेँ समाज हेतु व्यक्ति
समाज शक्ति व्यक्ति, तेँ न व्यक्ति सँ विरक्ति
एक दोसराक पूरके निके प्रसक्ति
तेँ समष्टि - व्यष्टि योजना प्रमाणि लेब

दान ई निदान समाधान मानि लेब
ई न वर्ग - मूल शूल - हस्त क्रान्ति रक्त
ई न द्वन्द्व - मूल भौतिकी क अन्ध भक्त
ई न सर्व-हरी सर्व-हरा दल विभक्त
भ्रान्ति गर्त, क्रान्ति पर्त दूहू मेटा देब
महाभारतेक शान्ति - पर्व जुटा लेब ॥
क्रान्ति शान्ति हेतु, भ्रान्ति ज्ञान हेतुए
व्याधि ओ उपाधि सह्य स्वास्थ्य हेतुए
जेठ तपय तते हेठ मेघ वृष्टिए
प्रलय एतय विदित, नवल सृष्टि हेतुए
नवा पुरातनी, सनातनी पुनर्नवा
नवीनता पुरातनी सनातनी नवा
दिवा तपी, निशा शशी, सुखाय वा दुखाय
किन्तु ई उषा - प्रदोष अन्विता नवा
भीख ई न थीक मात्र दीनताक हेतु
लीख ई न थीक मात्र नीति सिन्धु सेतु
सीख ई न थीक मात्र प्रीति-कीर्ति केतु
सहज मनुजताक कर्म मर्म जानि लेब
महज दनुजताक भेद वर्ग मानि लेब ॥

सत्य सूर्य : वयसपूर्य

वयस अतीत तीत रहितहुँ स्मृति-पाक पागि भेल मीठ
बुझि पड़इछ रसाल - रस चूसल शेष वयस भेल सीठ
अङ्कुल, बङ्कुल, दल फूटल दुइ मुकुलित पुलकित देह
सिंचित करइत श्रम-जल मालिनि प्राण पुरल भरि नेह
दल किसलय नव मुकुल मृदुल दृग मोहय कुसुमक वृन्त
सौरभ श्वास - श्वास उमड़य सुरभित कय, दिशा-दिगन्त

ने आपतक तपन, ने पावस-पवन बहय पुर - जोर
मुकुलित तन, विकसित मन, विहँसय शरद साँझ मधु भोर
आशा - दीप अखण्ड बरैछ, मनक मन्दिर आलोक
ने जगत क झझा - जंजालक झोंक, न चिन्ता - शोक
वयस - सन्धि सन्ध्याक क्षितिजपर रेखा उदित उदार
छिटकि चटुल चन्द्रिका चमकि जगमगा देल संसार
नयन चकोर चान मुख निरखय तृषा शमित नहि भेल
'जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल'
मधुमय मधु - यामिनी, कामिनी सङ्ग रभस - रस रङ्ग
जागि गमाओल, प्यास रसक न मिझाओल निमजि तरग
कत हबि हबिस चढ़ाय मनक अगिनिक नहि मेटल भूख
कतबहु नदी नहायल तदपि रहल मन रूखक रूख
स्पृहा-नखत कत हृदय - गगन बिच झिलमिल झलफल जोति
मिझा रहल, किछु बुझा रहल टुटइत मन मानिक - मोति

... ..

देखिअ प्राची दिशा - रेतपर बहय प्रभाती स्रोत
अमल कमल अरुणिम रस उछलल अलि-दल पड़ि गेल नोत
उन्मद उड़ि-उड़ि अलिकुल घुरि फिरि पल-पल सेवल आबि
कते सुनाओल गीत प्रीत - रस गुन - गुन नव धुनि गाबि
नव प्रभात जीवनक वनक छल नव - ऋतु वयस वसन्त
सौरभ सुमन रूप रस बाँटल द्रुम - वल्ली रसवन्त
चढ़ल दिवस, रविकर - निकरक तिख तपस बढ़ल दिनमान
जीवन ज्वलित शिखा दगधल कामना शलभ उपमान
कटु कठोर संघर्ष जीवनक घोर, न कोमल भाव
आब प्रभाव रखैछ, बहैछ जखन मरु वायु - अभाव
रन प्रभावमे दाह, मलयमे लय सुरभिक भय गेल
पिअरायल मुख, नुका चान कत ? उड़गन कहुँ चलि देल ?

अली गली मे जाय नुकायल कली -कली निस्तत्त्व
कण्ठ कोकिलक बझल बिझायल पंचम स्वर पंचत्व
अशन - वसन सबहु क अकाल अछि न पुनि स्वर्ग - अपवर्ग
नरक नर क हित प्रस्तुत करइछ शोषक शोषित वर्ग
ज्ञान विना प्रज्ञा क ज्ञापिते संहारक विज्ञान
सत्य अहिंसा शान्ति शब्दगत, अर्थ अनर्थ प्रभाण
विश्व विभाजित देश - देशगे देशहु खण्ड प्रखण्ड
अणु - परमाणु बनाय भूमिके शून्य गगन उद्दण्ड
कतहु योग भोगाय स्वाहा, कतहु भोग योगाय
कतहु श्रेय लय गेल प्रेय दबि, श्रेयहु प्रेय बिलाय
विषम परिस्थितिमे स्थिति समता, चाहय जर्जर विश्व
आइ तकर हित तप'क हैत नहि क्यौ जनमहिसँ निःस्व
जा धरि नहि उपभोग - योग्य दुर्बल दुर्गत संसार
ता धरि भोग न योग्य, योगहिक व्यक्ति-व्यक्ति संचार
कर्मठ तपी तपन गगनक कुटीर बिच साधक धीर
तपथि आतपेँ वितरथि ज्योति जगत नहि विरमथि वीर
सत्य सूर्य कर्तव्य क तपइछ, नहि छन कतहु विराम
घोषित तथ्य श्रमे विश्राम, अलस आराम हराम
सत्य सूर्य अछि उपर, अधर पुनि बसय पूर्य तुलि गेल
गगन गनित युग - युगक कल्पना वस्तु - निष्ठ जनि भेल

नटी : वधूटी

चंचल अंचल ओम्हर, एम्हर उर भरले तरल सिनेह
नगर - डगर मे सोर ओतय, सुर मंजु विपंची गेह
एक क छवि छापल जाइछ खबरिक कागज सत रंग
छपित छुपित बेसुधि पुनि क्यौ गृह – कारज सीमित अंग
रजत – पट क शोभा छायामयि छलना क्यौ उतरोल

नील पट क घोघट ओटहि पुनि ललना, सुनी न बोल
सहस – सहस दृग – सागर चपल तरंगक झपन लैछ
दूरहु नयन क कोनहु कोन निरखि उर कम्पन ह्वैछ
हुनक विकच कचनार वयस रस-कानन जन अलि पुंज
हुनक सुरभि मंजरि तुलसिक पूजित निज आङन -कुंज
वन – वन कुसुम कुसुम मधु उन्मद मधुकरीक झंकार
आमक आङन पिकी वसंत - वधूक स्वरक सत्कार
रती काम – वामा उद्दामा जत तत मुक्ता मोल
सती अनामा पति - सतभामा संचित निधिक अमोल
राजनीति मत कूट कपट उत अह – निस अस्त - व्यस्त
शुद्ध संस्कृति क मणि क ज्योति नित उदित न इत पुनि अस्त
ओम्हर चचला चपला चमकय घन घमड नभ छापि
दृग चौंकाय, खसाय वज्र, जग दैछ तिमिर पुनि चापि
एम्हर उदित जे निर्मल शीतल रेखा क्षितिजक छोर
करइछ हीतल शीतल जगती चन्द्रिकाक शुचि कोर
लहरि लेव सागरक खार जल उच्छल नीलम नीर
ज्वार – भाट उठ – बैठ कते घुस--पैठ सहब बसि तीर
अथवा गंगा - धार नहायब ? शुचि रुचि उषा प्रभात
बिन्दु - बिन्दु आचमन तृषित चित स्नातक ! पुलकित गात

सम : विषम

(तुलनात्मक बरहमासा)

मधु निकुञ्जमे जाउ अहाँ, फागुनक फाग धुनि गाउ
रंगिनि संगिनि संग अंग रुचि रंग अबीर लगाउ
हमरा चैत चेताबय चित चढ़ि, चर-चाँचर चलि जाउ
खेतक मोती दाना चुनि-चुनि घर - खरिहान सजाउ
अहँक विशाखा सखी सिखाबय राधा बाधा दाह !

हरि सकबे हरि! विरमि-विलमि वन विजन सघन तरु छाँह
हमर जेठ तपि हठि वर्षा हित कहय, तपसि तपि आउ
श्रम-बिन्दुक संचय करइत, घन गगन स्वयं उमड़ाउ
अहँक अषाढ़ प्रथम दिवसहिमे असह विरह-अभिभूत
अभिशापित अचेत गिरि-शिखरहि पठबय मेघक दूत ।।
घन श्यामक आगमन आङनहि, वन-वन विकच कदम्ब
साओन हमर सोहागिन सजबय केश-वेश घन लम्ब
नित्य सहज संयोग, धरणि - अम्बर अछि एकाकार
हरित-भरित बसुधा दृग अंचल प्रकृतिक सुचिर सिङार
'ई भर बादर भादर' अहँक गबैछ 'दुखक नहि ओर'
हमर सहज आसिन आशा लय पोछय आँखिक नोर
कातिक बातिक कन्त जराबय घर भरि अहँक इजोत
किन्तु तेरहम वितइछ घर-घर ककरहु ई न इरोत ।।
अगहन गहन हमर अन-धन जे भरय खेत-खरिहान
निर्भर हर्षक वर्ष जाहि पर भरि सब तरि धन-धान
पूस हूस अछि तूस - तुराइ बिना हिम-राति कटैत
जाड़ - ठाड़ गड़इछ जन-परिजन अहँक पुसौठ अछैत
सीर पंचमी माघ जोत जत हमर किसानी ठाठ
हर - फारक चालन, संचालन वेद विप्र घन—पाठ
माघक श्री पंचमी हमर दिग् देश वसन्त सजैत
अहँक पुरै अछि रंग-रभस पुनि फागुक राग रचैत
फाग राग रुचि अहँक हमर शुचि चैताबरिक प्रसंग
कोना तखन समगम सरिगम धुनि विषम दुहुक रुचि-रंग

खण्ड : अखण्ड

तों गिरिकें अणु, अणुकें पुनि परमाणु, तकर पुनि खण्ड-प्रखण्ड
बनबह गिरिकें शिला, शैलकें कंकड़, सैकत - कण शत-खण्ड

तोहरा छह बल विज्ञानक विस्फोटक त्रोटक ध्वंसक हन्त !
द्रवित द्रव्यके करह वाष्पमय अग्निक दाह प्रवाह अनन्त
हम गढ़इत छी प्रतिमा धूलि माटि—कणकें कय सलिलक सेक
जे जत बिखड़ल शत सहस्र कण, कय तनि संहत संगत एक
विश्लेषणकें संश्लेषणमे परिणत करब हमर संकल्प
भूमिक लघिमाकें भूमामे बदलि अल्पकें करी अनल्प
वाक्य हमर ऐकिक आरम्भिक तोहरा पद - खण्डक आवेश
तों प्रदेशकें देश कहह, हम विश्वहिकें कुटुम्ब परिवेश
विश्वनाथ वा जगन्नाथ व्यापक विभु विष्णु विराट महान
हमर देवता सहस नाम रहितहु कखनहुँ न गनित अभिधान
तोहर दिव्यता बाष्प-द्रव्यमय, जडमय सीमित कक्ष समक्ष
जकर लक्ष्य नरता वानरता मानवता नवता प्रत्यक्ष
हम अपवर्गक पथक पथिक, तों वर्ग-वर्गमे बाँटह स्वर्ग
नर मात्रहिकें नारायण बनबी, तों नरक नर क संवर्ग
लघुतम तोहर गणित अगनित नित हमर महत्तम कलना एक
भिन्न व्यकलनक बनह हिसाबी, ऐकिक नियम एम्हर अछि टेक
भाषा प्राकृत - विकृत विभाषा, अनुसृत संस्कृति प्रकृतिक मूल
हम पद मूलक विदित उपासक, तों शीर्षकहिंक पकड़ह चूल
गगन अनन्त नखत कन गनइत तों संख्यानक विज्ञ विशेष
हम धराक आख्यानहि बुझलहुँ शेषक शय्याश्रयी अशेष
'अणोरणीयान' बुझले—गमले, तदपि महीयान् अन्तिम तत्त्व !
भूमा सुख, तें मृतसँ अमृत असत्सँ सत, लघु सँ पूर्णत्व ॥

कतबहु खण्डक बनह विभाजक, भाग-भागमे विभजन-व्यग्र
हम अखण्ड ऐक्यक संकेतक एक निकेतन कलित समग्र
'भूमा वै सुख' हमर सुखक सीमा असीमे अछि ज्ञान अनन्त
तोहर खण्डनक खण्ड न कय सकबे अखण्डकें खण्डित अन्त

विडम्बना

जे शूल पर झुलइछ तनिक पद, फूल अहँ कि चढ़ायवे ?
जे मूल कें रचइछ स्वयम् तनि चूल अहँ कि सजायवे।
जे वज्रभुज करवाल भँजइछ, तनि कनक—केयूर की ?
जे गिरि - शिखर अभ्यस्त पद, रथ उपर तनि न चढ़ायवे ॥
ज्वल अनल ज्वाला जनि नयन, सुरमा न चसमा तनि रुचिर।
जे शर - निकर उर पर सहथि तनि हित न हार गढ़ायवे ॥
जे कंटकित मुकुट क विकट भट, स्तवक कुसुमक स्तुति न तनि।
जे गिरिक निर्झर जल पिपासु, न कूप-जल भरि लायवे ॥
जे सागरक उत्ताल लहरि विशाल तरइछ वितत - भुज।
पुनि तनिक क्रीडा - केलि हित गृह-वापिका न सुनायबे ॥
जे मुक्त प्रकृतिक काननक संचरण - पटु पचानने।
तनि घेर-बेढ़क हेतु पुनि पिंजर न हन्त रचायबे ॥
जनि राजभवनक शयन, रानिक नयन, शिशु बयनहु रुचिर।
निष्क्रमण रोध न कय सकल, अनुरोध तनि न जनायवे।
जे पाशुपत उपलब्धि हित छथि पशुपतिक संधान मे।
तिय रूपसी छवि उर्वशी तनि आगु व्यर्थ नचायबे ॥
जे महाभारत समर उत्कट शान्त चित गीता रचथि।
तनि सान्त्वना मे गुनगुना रस - गीत धनि की गायबे ?
जनि भृकुटि तनितहिँ क्षुब्ध सागर शान्त, सेतु निबन्धने।
तनि सन्तरण हित काठ एकठा नाओ अकठ चलायबे !!
जे धूलि अणु - परमाणु गढ़इछ शक्ति - गीत परम्परा !
तनि श्रम पुरस्कृत कर'क हित अहँ कनक-कन कि गनायबे ॥
जे अन्तरिक्ष-परीक्षणक हित ग्रह-गनक भ्रमनक रसी।
तनि श्रम हरण हित विश्रमक तृण-छाउनी न छरायबे ॥
जे धनक धुनि रस-सजल साओन-भादवक सजइछ घटा।
पद - बिन्दु अनुपद सिंचना तनि पथ न हन्त ! पटायबे ॥

द्वैत-गीत

भरि दी स्वर अहाँ, हम तँ मात्र व्यञ्जना।
रेख - लेख हमर, अहिँक कला रञ्जना॥
चरण हमर, गति अहाँक
शब्द सहज, अर्थ बाँक
पद-वितान हमर, अहँक छन्द - बन्धना।
शक्ति अहँक, भुजा हमर
भक्ति हमर, ध्वजा अहँक
प्रतिमाक प्राण अहँक, हमर वन्दना।
तरुक उगब मात्र कर्म
फड़ब - फुलब ऋतुक धर्म
वन—उपवन रस जगँब मधुक योजना।
भूतल के तपन ताप
हृदय रसक बनब भाफ
उमड़ि—घुमड़ि बरिसब ई घनक घोषणा।
भरि दी स्वर अहाँ, हम तँ मात्र व्यञ्जना॥

अन्तर्नाद

आइ मानव आपदा हरबाक
हित पद - संपदा हो
आइ त्रिपदा द्विज - मता नहि
जनपदक हित प्रतिपदा हो

भूमिका

नहि विधा अभिधाक ई, समिधा न ई कवि-सृष्टि यज्ञक
विज्ञ बोल न अज्ञ घोल न, स्वर मुदा जननी-कृतज्ञक
पूर्व योग, प्रयोग पश्चिम, समय—दक्ष प्रदक्षिणा थिक
उत्तरे दिक् - काल व्यापी, कवि ! हमर ई लक्षणा थिक
न वा शाब्दिक रंजना, वा आर्थिकी दृग - अंजना ई
हमर अन्तर्ध्वनिक केवल, कवि ! सहज अभि - व्यंजना ई

जयघोष

जयतु शक्तिमयी, समर बिच अमर रिपु उद्वेलिनी
जयति भक्तिमयी, चिरन्तन चारु सत् चित् केलिनी
भुक्ति-मुक्तिमयी मही, श्रीं-ह्रीं वरनि संकेतिनी
कर्मगति, थिति ज्ञान, नित चित भरतभूमि निकेतिनी ॥१
अन्नपूर्णा सङहि अवनी धातु मणि लक्ष्मी खनी
श्रुतिमयी वाणी अङहि भारत महाशक्तिक धनी
कतहु गिरिजा, सिन्धुजा कहुँ, वेदजा सुरधुनि कतहु
कतहु कमला सजल गमला पल्लवित पुष्पित लतहु ॥२

कतहु पद्मिनि, हस्त शंखिनि, कतहु चित्रिणि चित्रिता
शान्त ललित उदात्त उद्धत भूमिका कत भिन्नता
विश्वमंचक रूप शोभा भव - विभव उन्नायिका
जयतु ऋतु-ऋतु कृति-प्रकृति कत रूप नवरस नायिका ॥३
पीत रक्त सिताऽसिता कत वर्ण एकत रंजिता
द्रविड द्रुतपद, वन्य गद्गद्, स्वरित श्रौत प्रपंचिता
बयो - वृद्धा ज्ञान - सिद्धा विश्व - श्रद्धा बर्धिता
जय सनातनि चिरपुरातनि आदि - अन्त विवर्जिता ॥४
नित्य नूतन - वैभवा जय षोडशी सकला कला
भारती धरती सदैव पुनर्नवा शिशु शशि बला
सतत गर्वोन्नत शिखर, उर - सागरक गंभीरता
बाहु साल विशाल, प्रतिमा परिसरहु उर्वर मता ॥५
शान्त स्वच्छ गभीर मानस फलित कानन कामना
मलय चामर पवन पुलकित चन्द्र चर्चित चन्दना
दुर्ग दुर्गम अद्रि तुंग तुरग सिन्धु दिगंगना
सिंहवाहिनि रहथु दाहिनि शिवक शक्ति चिरन्तना ॥६
बाध अंचल अन्नपूर्णा, कंठ गीता माधुरी
कुरुक्षेत्रक खेत अभिमत, रुचिर सप्तपुरी पुरी
ध्वनित मेदुर मेघ मन्द मृदंग सिन्धुर रागिनी
नृत्य-निरत मयूर नूपुर झिंगुरी झनकारिणी ॥७
उपवनक डाली भरल, माली स्वयं कुसुमाकरे
धूप-दीपो भानु - चाने, पाद्य गंगोदक करे
कोटि माथक नमन स्तवनक गीत अगनित कंठ स्वर
मन्त्र 'वन्दे मातरम्' उच्चरित उर - उर उच्चतर ॥

... ...

हिम निबन्धिनि, सेतुबन्धिनि, सिन्धुसन्धिनि भारती
आहिमाचल - सेतु सन्तति नित उतारथि आरती ॥६

महातथ्य

आइ पुनि गोकुल - गलीमे किए हमरा बजा रहलहुँ ?
शरद चंदक यामिनीमे किए व्रज वन सजा रहलहुँ ?
किए यमुना - पुलिन पुलकित कय रहल छी नयन नलिनेँ ?
किए मधुमय समय पुनिमक पर्व पुजबी मलय पवनेँ?
सजनि ! राधा विरह - बाधा दूर करबा लय न आयब
आइ वृन्दा - कुञ्जमे किन्नहु न हम रस रास गायब
हस्तिनापुर - इन्द्रप्रस्थक दृश्य दुर्गत द्यूत कैतव
सुनि रहल छी जखन शकुनिक दाओ-पेंचक निघिन करतब
एकवसना द्रौपदीकेर लाज अञ्चल जखन लुंठित
गेल गलि - पचि पंचजन युगपुरुष पौरुष परुष कुंठित
टेर कृष्णा केर कृष्णक कान धरि द्रुतगति सुनयबै
असह केशक कथा केशवकेँ खनहु बिसरय न देबै
द्वारका प्रासादसँ रणछोड़केँ अरि - रंग - मंचे
रण - निमन्त्रण देब, छूटत छनहि जत गृह - रस प्रपंचे
पार्थसारथि हाथमे रथ — रासि देब थम्हाय जा कय
पांचजन्यक घोषमे गीताक अमृतऽध्वनि सुना कय

× × × ×

व्यास व्यस्त सरस्वती - तट महाभारत विरचना हित
तुरित गणपतिकेँ जुमायब चेतना दय लेखना हित
पार्थसारथि रचथु भारत महा तथ्य सुझा रहल अछि
मधुर - माहुर भागवत रस—रास एखन बुझा रहल अछि

रण-रस

आइ नहि बंसीक सुरमे अपन कंठक धुनि सजायब
आइ नहि वीणाक लयमे सरस स्वर निर्झर मिलायब
आइ नूपुर पहिरि नाचय जैब नहि बनि नृत्य - बाला
आइ रसिकक हृदय दोला झुलव नहि भय कुसुम माला

आइ क्रौंची जखन क्रन्दन करय उर विह्वल अधीरे
व्याध वाणक लक्ष्य बनले प्रिय जकर तमसाक तीरे
अग्नि-वीणा लय एखन कवि जाय दी द्रुतपदें हमरा
श्लोक परिणत होय जहिसँ शोक-धुनि से उठय लहरा
जनस्थान मसान बनइछ, अगस्त्यक दिग्देश दडित
आइ खर-दूषणक दोषें पुनि पवित्र अरण्य खडित
दृप्त सूर्पनिखा नचै अछि विश्व वन बिच सुन्दरी बनि
कत कबध प्रवंधमे अछि तपोवन उपटैब मन गुनि
ब्रह्मकुलहुक शैवदलहुक व्यक्ति शक्तिक दुरुपयोगी
ज्ञान हत विज्ञान बाधित दनुज मनुजक रक्त भोगी
यज्ञ बनइछ अज्ञ संज्ञक, तपक पुनि संताप नामे
अर्थ काम सदर्थ, लुंठित धर्म मोक्ष अनर्थ - धामे
धनुष्कोटिक प्रणय पणकेर वणिक सागर पार कय यदि
जुटि जुमय दशमुख विमुख धरतीसुताकेर न्यार कय यदि
तखन कोनहु वीर्यवानक लोकमे अन्वेषणाहित
आदिकवि कौशिकक हाथें करथु अभिनव योजनान्वित
नहि प्रणय पण परिणयक नृपनयक थिक ई रूप रेखा
असुर उद्वासनक हित वनवास पूर्वहिं रचित लेखा
मैथिली हरणार्थ प्रस्तुत कपट कंचुक हरिण कंचन
किन्तु मायावीक कथमपि चलि न सकतै आइ बंचन
लक्ष्मणक रेखा विपुवकें टपि सकत नहि छद्मवेषा
आइ सीताकें सजग कय रचब अभिनव कथा रेखा
कौशिकक उत्तर कुटी पुनि ज्वलित गैरिक अग्निवर्णा
दक्षिणा पथ अगस्त्याश्रम शस्त्र - शास्त्र प्रशस्त पूर्णा
शास्त्रहुक संस्कार तखनहि जखन अस्त्रक झनत्कारे
शान्तिहुक सत्कार तखनहि प्रतीकारक चमत्कारे

अनल आहुति सहित रस—आहूति युगपद संचिता हो
मनुक अनुशासन, धनुक ध्वनि मुनि मनुज मन अंचिता हो

× × × ×

आदिकवि केर कंठ बसि दशवदन वध हित राम वजबी
आइ रामायणक रण-रस कुश लवक गर सजग सजबी

नव पुराण : नव इतिहास

ने पुराणक वस्त्र पुरना, नग्नवसना ने नवीना
अंतरंगक अंग शुचि वहिरंग रुचि रंजन प्रवीना
आइ नव परिवेश शेष विशेष वेषक रचब रचना
कवि ! हमर छवि आँकबे नव वृत्त प्राची-पटल घटना
नवयुगक अवतरण, नव प्राचेतसक संबोधना हित
सूत - शौनक नवे, व्यासो अभिनवे, युग कल्पना नित

× × ×

कनककशिपुक क्रूरतासँ जखन युग - प्रह्लाद ताडित
तखन भवनक खंभसँ प्रगटय दियौ नरसिंह नादित
निगम मणिकेँ लुटय आबय देखु, कटु कनकाक्ष क्रूरे
महामीनक अवतरण हित जनक मन करबे अधीरे
यदि च दितिजक दुराग्रह डुबबय चहय वसुधाक धूजा
की न उचित महावराहक बिकट दन्तावलिक पूजा ?
सिन्धु मन्थन हित यदि च सुर - असुर संहृति सर्जना हो
शेष रज्जुक योजना हित कमठ पीठक अर्चना हो
दानदर्पी बली बलि, पुनि बामनी संवर्धना हो
अमृत छीनय सुरासेवी, मोहिनीक प्रवर्तना हो
यदि च मिझबय सहसभुज जमदग्नि - अग्नि बहाय झंझा
प्रखर परशु थम्हायबे शुभ की न रामक सुदृढ़ पंजा ?
यदि च पुनि भूदेव दुर्दम, शौंव शक्तिक दुष्प्रयोगी
बध अवधि अवधक किशोरक पाणि धनु - वाणक प्रयोगी

आइ मर्यादा - पुरुष - लीला - वपुष अवतरण संगहि
आइ बुद्ध - प्रबुद्ध कल्किक कल्प संकल्पक प्रसंगहिँ
पञ्चदेवक पाञ्चभौतिकता उपर देवत्व दुर्भर
आइ देवत्वक प्रतिष्ठा मानवक निष्ठाक ऊपर
सूर शूरक रूप रूपित, गणपतिहु गणतंत्र पूरक
पच देवहु संचमंच रिपु - प्रपचक मंच चूरक
आइ गौरी बनथु श्यामा, शिव जखन शव बनल भूतल
योगमाया सजग जगबथु शेषशायी पुरुष सूतल
ज्योति लिंग इरोत सून - मसान नहि जनपथहु चमकओ
स्फुरित शक्तिक पीठशक्तिक स्रोत जलथल सगर उमड़ओ
रक्तबीजक रक्त अणु - परमाणु चाटथु क्रुर काली
शारदा विज्ञान वैभव, अन्नपूर्णा शस्य - शाली
देवयानी कच - कलापक आइ जादू कच उपर नहि
साधना संजीवनीकेर लगन लागल मनहि जखनहि
आइ पार्थक चित्तपट नहि खचित सुरबालाक छवि धन
पाशुपत व्रत जखन संकल्पित, न भय कल्पित छनहु मन

... ...

आइ पुनि सुर - असुर संग्रामक नवल इतिहास घटना
सिन्धु मंथन हित विहित प्रतिनिधि करय नवसृष्टि रचना
पद्य - पद्मक संग गद्य - गदाक घूर्णित गति प्रखर हो
शंख ध्वनि पुनि चक्र चंक्रम प्रेरणामय अभय वर हो

पुरुषार्थ शिक्षण

प्रकृति कविता की प्रकृतिए यदि विकृतिएँ दूषिता हो ?
सरस घन की रस बरसि यदि धरा सैकत-शोषिता हो ?
आत्म - रक्षा जीवतुक थिक प्रथम दीक्षा, तदनु शिक्षा
हाथ भिक्षापात्र, माथ न अर्थशास्त्रक सत्समीक्षा !

ब्रह्म - सूत्रक भामती वा नाट्य - सूत्रक भारती
काम - सूत्रक वृत्ति व्यर्थ, यदि न अर्थक सारथी ॥

× × ×

कोना नन्दक कुसुम - नगरी कौमुदी उत्सव निमग्ना !
जखन पश्चिम - वायवी सीमान्त रेखा छिन्न - भिन्ना !!
आइ तक्षशिलाक विद्या - चत्वरक एकान्त कुञ्जे
ककर मुक्त शिखा शिखर प्रज्वलित बाधा - तृणक पुञ्जे ?
मगध दगधल, जकर क्रोधानलक इंधन नंद - वंशे !
चन्द्रगुप्तक रश्मि - रेखा यवन - कमलक कयल ध्वंसे
आइ चनका डीह पर के पाठशाला सजा रहले ?
पाठ हित पुरुषार्थ शास्त्रक शस्त्र संगहि पिजा रहले ?
धर्म - मोक्षक प्रथम - अंतिम बिन्दु मिलले मध्य रेखा
अर्थ बिनु पद प्रथम चरमहु व्यर्थ पुरुषार्थक लेखा—
शास्त्र सूत्रें गथा रहले, मंत्र यन्त्रें जगा रहले
शस्त्र शास्त्रें सजा रहले, शिखा शाखा सुनत के पुनि
शिष्य - मडल बजा रहले ?
तनिक अन्तेवासिनी भय चन्द्रिका प्रियदर्शिनी भय
जुटव राष्ट्रक रक्षिणी, रिपु - भक्षिणी विष - अर्पिणी भय
डँसब देशक दस्यु - गणकें कुटिल कृष्णा सर्पिणी भय !!
कुटिल कटुपथ नीति रथ चढ़ि स्वाभिमान सदर्थ करबे
विषक विष औषध विषम, सम शमन सम, अन्वर्थ करबे
राक्षसहु रक्षक बनत, गुप्तहु प्रकट चन्द्रक कला पुनि
विष प्रयोगहु अमृत परिणत, बंधनो मुक्ताफला गुनि
चेतना चित देत, अंत दुरंत गृह - कलहुक वदन्ते
बद अन्तर्द्वंद्व देशक शेष - सीमा प्रकृतिवन्ते
पुरुष - सूक्त उदात्त स्वर कय पाठ पटु बटु लेत दीक्षा
शस्त्र - रक्षित राष्ट्र पौरुष फलित करत शास्त्र शिक्षा।

आइ पुनि की सुना रहलहुँ अश्वघोषक ललित भाषा ?
शोक हरबा लय अशोकक चक्र चालित पथ विभाषा
आइ की पुनि नचा रहलहुँ रचा रति-रुचि कला-मंचे ?
गृह-तपोवनक नन्दिनीके वंदिनी पुर-पथ प्रपंचे
मेनकाक सुता न ई थिक, कण्व-पालित प्रकृति-कन्या
हंत ! दुष्यन्तहिक दोषेँ घुमा रहलहुँ अन्यमन्या
देखा रहलहुँ की अलोरा गुफा प्रतिमा छवि अनन्या
अजन्ताक कलामुखी किन्नर-सखी रुचि रूप-धन्या
विरह-दग्ध विदग्ध अलका-बालिका हित मेघ दूतेँ
पठा रहलहुँ, चेतनो-अवचेतनो की बुझि सबूतेँ
हंत भृंग चकोर दूतक वचन रुचिरो रुचि न जाबय
रघु-कुमारक बान गुन धनु उपर कविके कहू चढ़बय
आइ नहि बिलमाउ माघक मेघ बनि हृदिकेँ पथक बिचा
योजना शिशुपालवध केर धर्मराजक अध्वरक बिच
युद्ध नीति किरात अर्जुन रीति वेणी-संहरण हित
वीर-चरितक उत्तरेँ भवभूति केर भूकाल सीमित
उदयनक उदयक उद्देशेँ लाबनिक लावन्य धूनओ
पुनि युगक यौगन्धरायण संग रत्न-वन कला घूमओ
... ...

हम न आइ समाधिभाषा सुनब, घुमब न मठ-विहारेँ
दर्शनक वन बीच मृगदल दलन पंचानन दहाड़ेँ
वचन केर पल्लवन वा संदर्भ-शुद्धिक चारु धारा
कान्त कोमल पदावलि अथवा गिरा शृंगार सारा
कोमला प्राकृति वचन रचना, न वा अवहट्ट हाटे
भ्रमहु हम नहि भ्रमन करबे एखन प्रीतक रीति बाटे
राजभवनक उषा हित नहि चित्रलेखा चित्र अंकन

करओ तूली लय, गली दय, कला जन - जनपदक टंकन
गृह - गृहिणि आङन न सीमित पारिजातक सुरभि रंजन
अपन परती भूमि पर नन्दन बसाबथु नन्द - नन्दन
गीत - गोविन्दक प्रणय रण - प्रवण परिणत पुण्य गीता
व्रजक राधा - धब बनथु पुनि धनुष - यज्ञक राम - सीता
नहि नचारी पर नचायब शिव - भवानी लास्य लीला
ताण्डवक फटुताल भैरव - भैरवी केर काल - क्रीड़ा

... ...

आइ अङ्कन देव - उत्थानक लिखित हो देश - सीमा
कमल पुरइन पुरओ छवि - पट जय किसान जवान खीमा
आइ फूलक माल पहिरथु गगन - नेता विज्ञ नव्ये
तिलक केसरिया लगाबथु समर जेता भाव भव्ये
आइ अभिनन्दन क चन्दन चढ़ओ अभिनेता न नेता
अन्तरक स्वर तार गुंजओ सर्वभूतहितैक चेता
कर्म - पटु कर में चुमायब दूभि - अक्षत पान - फूलो
अगिलि - पटु पदकें नमायब माथ रेणु चढ़ाय चूलो
वरण करते आइ कवि ! तनिके स्वमेव कला कुमारी
रतिक रस लालस न करुणा - कणक, ओघ - बलक भिखारी

योजना

आइ पलखति नहि कतेको, पलक छति नहि आइ करबे
स्व-हित निहित विश्व - हित चित भावनात्मक ऐक्य भरबे ।१
एखन रुकबे नहि कबे ! प्रतिभा प्रभावित भाववाही
आइ उपजेबे उसर, नहि भयक रौदी, लोभ दाही ।२
समय सम्हरि बजा रहल अछि, रीति काल लजा रहल अछि
कर्मपथ रथ जा रहल अछि, कवित प्रकृत सजा रहल अछि ।३
तखन घुरिअयबो उचित नहि, घूरि जयबो नहि उदेसे
घुमब धुरियैले पदे, मधु - क्रत चुनब देशे - प्रदेशे ।४

बौध बुद्धक लेब ढंगे, जिन—अहिंसा व्रत प्रसंगे
वैष्णवी संस्कार अंगे, शैव दीक्षा शक्ति सगे।५
सम्प्रदाय सहाय दशनामी प्रणामी नहि उमगे
ग्राम—ग्रामक देव - देवी पुजक पुनि सयत्रानुषंगे।६
गुरु सिखक बानी कृपानी, अहल्या—लक्ष्मीक राखी
मानसी—तुलसीक शुभ संकेत, सूर कबीर साखी।७
पद्मिनीकेर रूप - दर्पण, योगिनी मीराक अर्पण
रक्त - तर्पण आत्म - बलिदानीक, सन्तक सत् समर्पण।८
माधवक साचिव्य शुचि, यौगन्धरायणि योजना लय
चंदवर संकेत, भूषण छन्द, पृथ्विक प्रेरणा लय।९
पञ्चतन्त्रक नीति रस, चण्डेश्वरक स्वर सन्धि - विग्रह
चतरि अक्खर - खंभ बिद्यापतिक कीर्तिलताक संग्रह।१०
दछिन दिग् - वाही पवन, पुलकेशि पुलकित कीर्ति साका
खारवेलहु क्षार - वारिधि पार कय, उत्कल पताका।११
अनल प्रज्वल चोल - नृपकुल—चूल अरिदल तूल भस्मे
पाण्ड्यहुक पाण्डित्य रण - पाण्डव अरिक पुर रीति रस्मे।१२
पुरुषपुर प्रख्यात 'पेशावर' जकर यश नाम अंकित
जीत रण रणजीत पुनि निज कीर्ति गिरिगुरु शृंग लंघित।१३
शाह पृथ्वी नयक पालक, गिरि विशृंखल शृंखला कसि
सभ महान समान मान्ये, दक्षिणोत्तर कुन्तला बसि।१४
बिशद वृत्त अतीत पट, चित्रित बिचित्र अनूप रूपे
कय स्हल छी योजना निर्मित करब नव यश - स्तूपे।१५
कोकिलक जय भैरवी, बंकिमक वन्दे मातरम्
रविक उच्छल जलधि उर जपि - मन्त्र मधुरं भारतम्।१६
समिधि सविधि जुटाय आ - हिम - सेतु होमक वेदिका
यज्ञ सारस्वत महाभारतक राजस सात्विका।१७

आइ फहरेंबँ पताका, कीर्ति राका दिग् - दिगन्ते
आइ झहरँबे सुधा रस, मरु - धरा उर्वर अनन्ते ।१९
आइ लहरयबँ लहरि दुग्धो – दधिक सर - सरि प्रबंधे
शक्ति शान्तिक रक्त कान्तिक भ्रान्ति ने रहते निबन्धे ।२०
सेतु हिम - केतु धरि पुरबी पुरीसँ द्वारका धरि
एकमेव परत्व - स्वत्वक तत्त्व उमड़ओ लहरि सबतरि ।२१
अग्निवर्णा नभ त्रिवर्णा, विजय हेतुक केतु फहरओ
बिन्ध्य बन्धन, हिमक लंघन, सिन्धु मन्थन कर ने केओ ।२२

रश्मि—रेखा

आइ अणु परमाणु जाग्रत, जड़ जगत जीवंत जंगम
विगत निश नैराश्य, आशा-उषा विहुँसलि क्षितिज संगम ।१
कर्म रत युग - धर्म चिन्मय, रचि रुचिर रचनाक मुद्रा
आइ कवि ! जगबय दियऽ जग-दृग-जडित जड़ताक निद्रा ।२
मेटयतँ कालुष्य परवशता, विवशता तिमिर - लेखा
गढ़ल जयतँ नवोदित इतिहास सूर्यक रश्मि - रेखा ।३
आब नहि क्यौ आक्रमण कय, सिन्धु सिकता पार करते
आब नहि क्यौ विश्व - जेता कोनहु कोनहु चापि धरते ।४

आब जुटि अयते न शक दल, हून नहि पुनि हूलि सकते
आब नहि लुटाक दल गिरि सिन्धु नद पथ बूलि सकते ।५
नाथ बनत अनाथ नहि, ने क्षमा - मूर्तिक नयन भंजन
आब सिकता - दस्यु सिन्धुसुताक करत न हरन - गंजन ।६
नहि बचयबा लय सतीत्व, चिताग्नि सजते क्षत्रियाणी
स्वजन मर्दन हित न, दोसरसँ लुटौत राजधानी ।७
आइ चंगेजी न रंगेजी, न अंगेजीक चंक्रम
सजग अंगेजल जखन विक्रम पराक्रम स्वमत संगम ।८

विक्रमेसँ रत्न नव आदित्यसँ लालित्य नव रस
आइ लोकालोक संवत्, बलित जन साहित्य हितवश ।९
स्वर्ण निष्क कनिष्क चलबथु, चलथु पार समुद्र गुप्तो
स्कन्द उठबथु स्कन्ध पर, शासनक गौरव भार लुप्तो ।१०
श्रमण आश्रम, भिक्षुणी नहि, राज्य-श्रीकें बनय देबै
हर्ष राष्ट्र प्रकर्ष हित, पुनि बाण वाणीकें पुजयबै ।११

× × ×

शीत भीतहु, ग्रीष्म भीष्महु सुखद मलयानिल वसन्ते
मध्य कतबहु वध्य रहते, चिर अमरता आदि अन्ते ।१२

पूजन-आयोजन

आइ पूजन योजना अछि मातृका गृह वसोधारा
भव्य भावक गव्य हवि दूर्वाक्षतो अक्षत उदारा
... ...

कामरूपक मुखर ज्वाला अमरनाथक हिम शिवाला
जगन्नाथक पुरी पूर्वा, द्वारका पश्चिम अपूर्वा ।१
शृंगवेर सुमेरु शंकर, बिट्ठलेश्वर बेंकटेश्वर
सेतु बंधक वृषभ-केतुक, स्नपन गंगा जल सहेतुक ।२
कांचनी कांचीक प्रतिमा, आलबाड़क भक्ति महिमा
शक्ति शिव विष्णुक परत्वक, तमिल केरल आन्ध्र गरिमा ।३
द्रविड रक्षित दक्षिणी तट, बिन्दु - सर कन्या-कुमारी
नर्मदा गोदावरी – जल, महाकालक उपर ढारी ।४
मलय चंदन शीतला अनुलेपनी पशुपतिक अंगे
सुरभि कस्तूरीक तरला, पुरी प्रतिमाऽर्चन प्रसंगे ।५
स्नान-मन्त्रक वर्ण-वर्णें, बिन्ध्य हिम मलयाद्रि झरने
गंग-यमुनी कृष्ण - कवरी, सिन्धु गोदावरी शवरी ।६
कौशिकी - गण्डकी धारा, ब्रह्मपुत्रो जल उदारा
देशमंडल कमंडलुमे, अँटल ग्रहगन ख-मंडलमे ।७
करब पूजित रेणु कन - कन, अन्न - पूर्णा बौंसि आङन
दुरत दुर्वह दरिद्रा केर, क्षुधा क्षोभक भाव आब न ।८

ज्ञान-विज्ञान

आइ नखत न गगन गुनबे, सदा - नीरा नहरि खुनबे
अभय हृदयक संग भुजबल, युक्ति शक्तिक अश्व हँकबे
रथक गति अथ प्रगति पथपर, चलत दूर न मंजु मंजिल
गति प्रगति - रोधी विरोधी, नहि पुरान कुरान अंजिल
ज्ञान नहि विज्ञान रोधी, नव्य नहि भव्यक विरोधी
कल्पना वास्तव न दूरे, योग योग्य प्रयोग पूरे

× × × ×

एक धरती, भुजा युग्मे, त्रिगुण वृत्त त्रिकोण तिग्मे
धाम चारू पंच नद जल, शास्त्र षट् रस, पुरी सप्तक
अष्ट - छापी अष्ट - गंधक, रत्न नव - नव दिस-विदिश दश
रुद्र एकादशो, द्वादश लिंग, ज्योतिर्मय दिगन्ते
शक्ति पीठहु मठहु मंदिर, तीर्थ कुण्ड न आदि अन्ते
स्तूप चैत्य विहार परिखा, लगओ कतहु न रेख करिखा
पथ - विपंथ महजिद मजार, हजार तर्जक गली गड़खा
बुर्ज गिर्जहु अपन तर्जहु पढ़ओ शर्मन, करओ शिजदा
जिद न कनियहु, सब अमनिएँ, स्तवन सबहुक अपन ध्वनिएँ ।।

... ...

पंथ शत गंतव्य एके, मंत्र कत मंतव्य एके
कतहु कनहु न रोक - छेके, धरथु पथ पद अपन टेके
किन्तु रुचि-संस्कार नाम प्रकार मत अधिकार समतहु
अपन माटिक गंध, पानिक रस किए पुनि अमत समतहुँ !
कवि ! नवल संयोजना ई, प्रेरणा पावन पुरातन
सूर्य चन्द्र समान सत्यो नव पुरान न सत सनातन

× × × ×

आइ इंधन रंधनी नहि केवला काठी फराठी
तरल अतल पताल स्नेहक स्रोत स्रुतिसँ अपन माटी
स्रवित लहु-लहु, द्रवित लौहहु खनि-खनिक मनि मनिक सजने
देश - कोशक कोष भरते अपन साधन शक्ति जनने
अग्नि बज्र गलौत, विद्युत्‌के बजौतें छहरि निर्झर
लौह-वृष शिव-वृषभ संगहिँ चरहु चाँचर करत उर्वर
प्रबल प्रज्वल लौह गलि-गुलि तीव्रतम तरुआरि बनतै
ताम्रपर्णी स्वर्ण-पत्री स्व-रस वंश संस्कार तनतै
खड खण्डहु शक्ति-पुञ्ज प्रमाण अणु-परमाणु बनतै
'अणोरणीयान् महतो महीयान्' मंत्र पुनि झंकार करतै
लवणसँ लावण्य संगहि तत्त्व सत्त्व अनेक झरतै
अम्ल पुनि रस-धुर्य बनतै द्रवण द्रव्यक रूप तनतै
पहुँचतै भू रश्मि-रेखा खगोलो भूगोल बनतै
ग्रह उपग्रह धरि सघन घन खेत ओ खरिहान छनतै
मनुजनुक कर्मण्यतासँ सुरहुकेँ लगतै सेहन्ता
पुनि पुराणक वचन जँचते नवयुगहु बिच सजि अहंता
ध्वनि निरन्तर गगनमे गुंजित निरन्तर तत्त्व रचने
देवताहुक सत्य तखने मनुजताकेर स्वत्व जखने
ज्ञान विनु विज्ञान पशुता, प्रकृति विनु चैतन्य जड़ता
उभय संगत, अभय अभिमत, ज्ञान गुण विज्ञान क्षमता
शस्त्र-शास्त्रक प्रेय-श्रेयक, लोक - वेदक प्रति - नवीने
ब्रह्म-क्षात्रक, स्वर्ण-लोहक, श्री-श्रमक गति-विधि प्रवीणे
पीठपर धनु, दीठपर मनु—मन्त्र, कर कुश कर्म लीने
ज्ञान नहि विज्ञान बिनु, नहि तंत्र साधन मंत्र-हीने

'जा रहल छी'

पर्व गंगा सिन्धु संगम, लगन सक्रमणक अनूपम
अंग-अंग उमंग पुण्य प्रसंग काल तरंग चक्रप

कविक कविता गिरिक सरिता सिन्धु बिन्दु सजा रहल छी
जलधि उच्छल छहरि नहरि नहा रहल छी, जा रहल छी

... ...

पार्थ छथि ठकुऐल ठाढ़े, कुरु-क्षेत्रक व्यूह गाढ़े
सारथीक मुखे समुख—गीता सुनाबय जा रहल छी ॥१
सिन्धु-तटपर दर्भ आसन, बैसि रघुपति करथि अनशन
दमन हित उठबथु शरासन से सुझाबय जा रहल छी ॥२
मान व्यक्तित्वक बचत नहि, जा न राष्ट्रक मान जाग्रत
तथ्य ई पुनि मानसिंहहु कें जनाबय जा रहल छी ॥३
हल्दिघाटिक शिला तापी, क्षुधित क्यो उद्भट प्रतापी
संग भामा-चेतकक रस रसद पठबय जा रहल छी ॥४
जौहरी चित्तौर एखनहु, स्वर्णवर्णक शुद्धि रखनहुँ
बनि निकष पाषान कनकन, कनक कसबय जा रहल छी ॥५
सोमनाथक घड़ी-घंटा बिश्वनाथक बड़द बंठा
लटपटैल झमैल अकरा, पानि चढ़बय जा रहल छी ॥६
विजय-नगरक खडहरकें दुर्ग दुर्गम बनयबाक लय
बुक्क हरिहर संग विद्यारण्य बजबय जा रहल छी ॥७
शिव भवानी खड्ग धारा, युग अपूजित रक्त धारा
अपन बलिदानी असुग दय, बीझ छोड़बय जा रहल छी ॥८
छथि प्रतापादित्य अस्ते, गुप्त चन्द्र कुमार अस्ते
विग्रही ग्रह राहु केतुक तिमिर चीरय जा रहल छी ॥९
बधनक कटु शृंखलाकें, थुरय थिर जीवन गला कय
क्रान्ति-वीरक मुखबिरक बढ़ि खबरि लेबय जा रहल छी ॥१०
कते एखनहु मीर जाफर, सफरमैना चन्द नानक
सिंह जयक शृगाल दलहुक, गाल गलबय जा रहल छी ॥११
दुकि घरहु वा आङनहु नहि, जे फुकय घर आततायी
गृह-कलह अनलक लपट, दुःसह-उठाबय प्रत्यवायी ॥

द्वेष-द्वंद्वी। लोभ फंदी, मंदमति पर-प्रत्ययी जे—
तकर भंडाफोड़ करबा लय, समाज सजा रहल छी॥१२
भयक थरथर, लोभ जर्जर, काम कलकल, दाम दलमल
मल समाजक पथ-पतितकें सुपथ चलबय जा रहल छी॥१३
श्रमिक श्रमसँ मिलल सपना, कृषिक कणसँ कनक कलना।
पुंज लुंजित कम्र प्रपंची, झुलय पूजीपतिक पलना।
तनिक बंकक बहुल अंकाबलि मेटाबय जा रहल छी॥१४
जे विपन्नक अन्नपूर्णा, छिनय ऋण-कण कीर्ण जाले
जन विपत्तिसँ वितत संपति अरजि भू-धन गरजि काले
तनिक पंक कलंककें निर्मम धोखास्य जा रहल छी॥१५
बुद्धि रहितहुँ जे अबुद्धें शुद्धि रहितहुँ जे अशुद्धे
जन समाजक लाज बेचथि, घूस फूसि बजार लुब्धे
बोरि चोरबजार घुसखोरी, जराबय जा रहल छी॥१६
आइ नहि कवि !, रोध मानव, छतहु नहि गति रोध आनक
युगक आहि बताहि कैलक, तदनु ई अनुरोध जानक
रमु, बिलमु अध-वध अवधि, हम विजय बजबय जा रहल छी॥१७

विस्पीक डीह

आइ अभिनन्दनक चन्दन चढ़यबा लयँ जा रहल छी
अपन ठाकुरकें पुजय विस्पीक डीह सजा रहल छी

... ...

आइ विश्वेश्वरी-मंदिर खंडहर मंडित कर'क अछि
आइ कर अइपन गोसाउनिकें सजल पूजित कर'क अछि
प्रथित गजरथपुरक पथकें करब स्वच्छ बहारि निर्मल
रसिक शिवसिंहक सखाकें पुनि करब स्वागत प्रणय-जल॥१
आइ तिरहुत माटि ओ कमला बलानिक पानि कलकल
हिमवतक वन सुरसरिक तट अवधि कनकन मचल हलचल

आइ राजा रंक पंडित गृहथ श्रमिक समान मानिअ
जाति पाँतिक भेदभावहु उपर मैथिल गनित जानिअ ॥२
एकरस मय, देश-कोशक भावना लय वलित आशा
चलब पूजन करब नगर — मनोमोहिनि अपन भाषा
अपन भाषा अमर संस्कृत — कल्पतरु केर शिखर शाखा
मध्य युगहुक हट्ट अवहट्टक महामणि खचित पाखा ॥३
ललित प्राकृत पारिजातक पल्लविल सुरभित सुरोचित
वयन देसिल मधुर, जन जन - पदक बिच जे युगहु योजित
तकर हीरक हार लय कवि - कंठहारक करब पूजन
शरदऋतुअहुमे मधुक आवाहनी कोकिलक कूजन ॥४
आइ अपन पियासा मेटबय सलिल शीतल ताकि रहलहुँ
जीवनक पथ आतपित कत छाँह तरुतल झाँकि रहलहुँ
अपन घर - आङनक उगना छूटलि संगहि चलित चंपित
पुनि कोनत आओत जुड़ाबय, युगयुगहु दृग आँकि रहलहुँ ॥५
आइ हम अयलहुँ भवानीपुरक पथ कत मनोरथ चढ़ि
उग्रनाथक साधना हित पहुँचि, रस पाबय अमृत बढ़ि
हमर उगना कतय गेला ? पुछब गौरीकें करुण धुनि
हम बजायब अपन उदनाके सुनबय गीत धुनि-गुनि ॥६
आइ हम चलते चढ़ावय चौमथक विद्यापतिक मठ
जतय राखलि जननि जाह्नवि भक्तपुत्रक प्रेमसम हठ
गाबि हम सब भरित कंठें - पाओल बड़ सुखसार तीरे
करुण राग अलापबे — छोड़इत बहय पुनि नयन नीरे ॥७
हम चढ़ायब अछिजल गंगाजली भरि कविक नामे
सुमन अंजलि समर्पण हित तिरहुतिक धुनि गाम गामे
आइ सुनबय जा रहल छी अपन धुनिक महेशवानी
अंग — बंगहु मगध — अवधहु असम उत्कल वन — वनानी ॥८
नाट्य धुनि नव नचारी वा लचारीहुक राग — रागिनि
भारतक इतिहास शाही गली दिल्ली राजधानी

आइ विद्यापति न तिरहुत मात्र मैथिल रूप परिचित
भव्य भारत चतुःसीमा टपि बनल छथि विश्व पूजित ॥८॥
आइ रसिया विपिन बसिया बजा रहला मधुर बँसिया
व्याप्त – मिथिला पदावलि बरतानिया अमरिका रसिया
आइ हम ओहि विश्वकविकेर कथित रसकें पुजय चललहुँ
अपन भाषा, अपन भूषा अपन स्वर-धुनि गुनय चललहुँ ॥१०॥
आइ नहि क्यो दाबि सकतें हमर युग-युग भाव-भाषा
आइ नहि क्यो जाबि सकतें मुहक बोली हृदय-आशा
आइ विद्यापति वरन हित स्वयं विद्या छथि समर्पित
आइ विष पिबि नीलकंठ कविक अमृत सुरसरि प्रवाहित ॥११॥
आइ विसपीडीह पर लोरिक सङहि सलहेश जाग्रत
दिना-भद्री दीन-दलितक देवताहुक भव्य स्वागत
आइ सब मिलि कय दयालोसिंहके जगबा रहल छी
गाम-गहबर डीह जे जत सबहुके सजबा रहल छी ॥१२॥
प्राणपूरक प्रेरणा लय, जन-जनक चित चेतना दय
गमइ-गामक वेदना, संवेदना पुर-परिसरक लय—
कविक अभिनन्दनक क्रममे, स्वाधिकारक अतिक्रममे
देश-भाषा ज्योति जगबय राष्ट्रहित योजना-क्रममे—
कर्मिक पूजाम - पर्व आत्मिक गर्व जगबय जा रहल छी
अपन ठाकुरकें पूजय बिसपीक डीह सजा रहल छी ॥१३॥

बलिवेदीक विभूति

वलिदानक वेदीपर की हम फूल चढ़ायब जाय ?
गङ्गोत्रीक स्रोतके की पुजि होयत शीत चटाय ?
जनिक ज्योतिसँ पराधीनता निशा - तिमिर संहार—
अंवरमणिके की कहुँ चीन्हब माटिक दीप जराय ?१॥
रजधानी देहली विरल अविरल दृग यमुना - कूल
राजघाटकेर बाट - बाटमे साखी एखनहु धूल

तिलतिल जे होमल कोमल जीवन पलपल अविकार—
तनिक चरणरज शीश नबायब वलिवेदी समतूल ।२
क्यो कहइछ, गाँधी छल आँधी तृणपर्णहु झरि गेल
सहजहिँ एहि झंझाक झोंकमे पाप ताप उड़ि गेल
क्यो बजइछ, प्रकृतिक परिवर्तन स्वाभाविक संसार
क्यो बुझइछ दबाब भूगर्भक कंपित भूतल भेल ।३
सब बजइत अछि, मलयपवन ओ चन्दन शीत सुगन्ध
गाँधी मधुवसन्त नवयुगकेर जनचेतना निबन्ध
नव स्वातन्त्र्य रसाल मंजरित भारत उपवन हार—
गणतंत्रक कोकिल कलरव सुनि सकलहुँ जनि' वल हंत ।४
क्यो क्रान्तिक मशाल लय दौड़य नारा लगा अधीर
क्यो द्वन्द्वक छंदहिमे गाबय, क्यो उठबय शमशीर
किन्तु कण्ठमे गीता, करमे चर्खा - चक्र चलाय —
अर्धनग्न योगी सहजहिँ बन्धन काटल गम्भीर ।५
भारत-गगनक रवि शशि वा नक्षत्र बनथु क्यो व्यक्ति
ज्योतिपुंज नीहारिकाक छथि बिन्दु-बिन्दु अभिव्यक्ति
एखनहुँ जनि' बल-संबल लय जन-गण-मन मंत्रोच्चार—
तनिक स्मरण जागरण कराबओ अमृतपुत्रमे शक्ति ।६
जनिक सत्यसँ 'सत्यमेव जयते'क प्रतीक प्रकाश
जनिक अहिंसामे विश्वक भविष्य कल्याण विकास
शान्ति क्रान्तिमय, क्षमा शक्ति लय, व्यवहारी सिद्धांत—
भारतमाताकेर सपूत बापू पद पूत प्रकाश ।७
त्याग - तपक बल स्वयं बनल जे निर्बलकेर बलराम
रामराज्यकेर सपना अपनाओल जे मन अभिराम
जन - जनमे आत्मा महान् एखनहुँ छथि व्यापित भेल—
बलिदानीक आत्मबल गाथा इतिहासक विश्राम ।८

हिंसा - त्रस्त ग्रस्त अणु - अणु आयुधसँ अस्त - व्यस्त
कूट कपट ओ द्रोह लपटसँ आकुल विश्व समस्त
दिल्ली राजघाटकेर बाटक बाकुट माटि उठाय—
बाँटय चललहुँ सत्य अहिंसा शान्तिक एक उपाय ।९
श्रद्धांजलिक सहस्र धारमे हमरहु बिन्दु कनेक
वलिदानक प्रशस्ति गाथामे हमरहु ई स्वर एक
बापूकेर स्मृतिमालामे गाँथय चललहुँ पद क्षुद्र—
वलिवेदीक विभूति भूति देशक बढ़वओ शुभ टेक ।१०

'भूमा निष्ठावन्त'

देव - दानवक दलमे चलइछ युग - युग समर अनन्त
अंधकार - ज्योतिक बिच तनइछ अहनिस द्वन्द्व तुरन्त
सत् - असत्क संघर्ष निरन्तर, धर्म अधर्म भिड़न्त
होइछ क्यौ अवतरित भूमि पर भूमा निष्ठावन्त ।१
राम - कृष्ण वा दया - विवेकक रूप - गुणक अनुरूप
सिद्ध - बुद्ध वा तिलक - सुभाषक भाषा - भाव अनूप
शंकर - रामानुजक दर्शनो, शिवा - प्रतापक शक्ति
चाणक्यक चतुरंत राष्ट्र निर्माणक प्रखर प्रसक्ति ।२
चन्द्रगुप्तकेर कर्मठ तारुण्यक प्रचण्ड हुंकार
मुट्ठी भरि हड्डीमे ज्वालामुखीक तप्तोद्गार
व्यक्ति समाज समर्थ परस्पर, अर्थ धर्म विनियुक्त
करइत छथि युगधर्म विश्वहित राष्ट्रपक्ष अनुयुक्त ।३
कूट - कपटकेर साधनसँ नहि होय साध्य सत् सिद्ध
रक्त क्रान्तिसँ लोकतन्त्रकेर आराधना विरुद्ध
चीर - हरण द्रुपदाक मूल विपदाक बुझाय उदन्त !
खंड अपूर्ण, अखण्ड भारतक पर्वोद्योग तुरन्त ।४
व्रज - रजकेर मणि पूत महाभारत रचनामे व्यग्र

धर्मराज हित कयल शान्ति - अनुशासन पर्व समग्र
राष्ट्र पार्थ - सारथी कर्म क्षेत्रक पथ कयल उदात्त
कत वलिदान चढ़ल वेदीपर तखनहि उदित प्रभात ।५
व्याधं वाणसँ बेधल जाइछ युग - युग माथुर कृष्ण
किन्तु हुनक रणगीतेँ उर बल प्रेरित प्राण सतृष्ण
'क्लैव्यं मा गम' 'सतत अनुस्मर युध्य च' शुभ संदेश
कर्मयोग विनियोग राष्ट्रहित जयतु स्वधर्म स्वदेश ।६
कते भगत 'इनक्लाबी' कते सुभाष हिन्द जय भाषी
लौह पुरुष कत मानवता - एकात्मवाद विश्वासी
सर्वोदयी भावना भावित जय भावेक प्रयासी
प्रियदर्शिनी अखण्ड देश हित प्राणार्पण अभ्यासी ।
तिलतिल दय सिनेह हृदयक जनि ज्वालित जीवन-बाती
युग धरि ज्वलित प्रदीप शिखामे द्योतित देशक थाती
आलोकित देहली मातृमंदिरक जनिक बल हंत
हो पुनि - पुनि अवतरित भूमि पर भूमा निष्ठावंत ।८

भरतवाक्यम्

राम सानुज शंकरक मधु माधवी पद पल्लवा
देथु नित्यानन्द प्रेम प्रतीति श्रीधर बल्लभा
राम कृष्ण समर्पिता मति गति विवेक निवेदिता
राम मोहन तीर्थ सदयानन्द युग संबोधिता
झलक प्राची तिलक रवि अरविन्द-बन्धु दिगंगना
चन्द्र वंकिम कला वन्दे मातृभूमिक नन्दना
मद न मोह न दास कर्मक केस वेस न कल्पना
लाज राष्ट्रक लाल वल्लभ नेह रूपक अल्पना
देश भगतक रकत चाननसँ सुवासित भारते
भवतु भव्य भवाय विश्वहिताय नित्य नमोस्तु ते

भारत-वन्दना

हिम किरीटपर जड़ित सूर्य-शशि गंगा-जमुनी
खचित विविध विधि मणि-माणिक्य किरण मन रमनी
अति उतुंग गिरि-शृंग शुभ्रतम हैमी रेखा
कनक धातु रुचि रचित मुकुट-पुट, के कर लेखा ?
तनिक भाल शिखि चन्द्रकित दिव्य दर्शनालोक लय
लोक अशेप। अशोक हो, रहओ न शेषो दैन्य भय।१
अलक झलक जनिकर हिमवत-वन सघन श्यामला
वदन कमल रुचि रुचिर मानसी आभा अमला
कस्तूरी नेपाल भाल, केसरि कश्मीरी
सिन्दूरी सीमन्त पूर्व दिग् रविक अबीरी
तनिक मुखक छवि- छटा, कवि-भाव घटा घन विद्युते
करओ छनहि मे दिग्-दिशा जगमग अगजग द्योतिते।२
जूड़ा नेफा लद्दाखी, सीमन्ते सीमा
वेणी — बन्धक छोर रेशमी तिब्बत खीमा
कुटिल अलक पसगल पेसावर देसावर धरि
गिरि-तट लट नागिनि वर्मी वन घन परिसर धरि
हिम उपत्यका उज्ज्वला भाल जनिक भल झकझके
ऋतु - ऋतु कुसुमित वन घने बिन्दी टिकुली चकमके।३
भृकुटि कुटिल कोशी - तट मिथिला नेत्र दर्शिनी
वैशाली पल कलित अंग वरुनी विमर्शिनी
गन्धमादनी सृग - दावक काशी जनि नासा

श्वास — श्वाससँ भरय आत्म — जीवन विश्वासा
कान कान्यकुब्जेक जे अवध — मण्डले कुण्डले
श्रवण सुखद शब्दे व्रजे सुनत केन भू - मण्डले।४
गोर गोल कश्मीर कपोले केसरि रञ्जन
सिन्धु सैकती मुक्तावलि दन्तावलि मञ्जन
अधर मधुर व्रज — अवध राम — कृष्णाङ्कित नामे
शुचि रुचि चिबुकक बिन्दु-रेख उज्जयिनि ललामे
ग्रिम दिल्ली वलयित वलित शिरोधरा उन्नमित नित
जय—मालक अधिकारिणी ग्राम-काय,पुर-शिर मिलित।५
कृत ममत्व! वत्सला! सन्ततिक हित उर गिरि झरि
शत-शत स्रोतोवहा पयस्विनि अमृत दुग्ध भरि
उदर क्षेत्र - परिसर उर्वर, अन्न-धन-लक्ष्मी अँटि
त्रिवलि त्रिवेणी वलित-ललित कटि कलित विन्ध्य-तटि
वनि जनि सुर — सरि धार ई हार हीरकक लम्बिते
ग्रिम अग्रिम उर उदर पुनि सिन्धु नितम्बिनि सङ्गते।६
पञ्चनदक अंगुलि अजित मुष्टिक पंजाबो
जनि भय कम्पित रहइछ अरिदल सहमल आबो
राजस्थान मराठा भुज — बल रक्षित — गाता
दश दिश दश भुज विस्तारथु अथ भारत माता
अमल कमल वर अभय कर कलित सहित कोमल कला
चक्र चंक्रमण, शंख ध्वनि, खड्ग — खप्परहु रक्तला।७
रोम — रन्ध्र आन्ध्रे, वैदर्भी नाभि गभीरा
उर परिवेशे मध्य देश, दक्षिण वन — चीरा
रोम — राजि शुचि अंग झार - खण्डक वन सघते
पद रस मद मद्रास, केरली कदली जघते
मैसूरी चन्दन जनिक अंग विलेपन साधना
अतल शान्त सागर सलिल पद — सेतुक प्रक्षालता।८

मगध बौंध जनि अंग वंग मधु मधुरी वानी
वैदर्भी गौड़ी पांचाली रीति प्रमानी
रूप अनूपे कामरूप, लावण्य उत्कला
केयूरो मणिपूर, भोजपुर ओज उर बला
बुन्देली धुनि बुलन्दी, वाहन गुर्जर कैसरी
जनिक ज्ञान वैभव विभा दक्षिण मन्दिर देहरी ।९
गढ़वाले गढ़, पानीपत — कुरुखेते खेते
हरियानी खरिहान, धेनु—धन मत्स्य निकेते
खनिज खजाना छुटा घटय ने नाग — पुरस्कृत
तेलि असामी, पनिभर चेरो - पुंज समुद्यत
हलधर माथुर मैथिलो, जन — परिजन जनपद जते
छहरि — नहरि गिरि नद-नदी, मस्त गृहस्थी भारते ।१०
धोबि हिमालय, रँगरेजो शिलांग कत रंगी
जल - थल मल रज सफा कस्य निर्झर बनि भंगी
विन्ध्य शिलबटे, उखरि - मुसर जत साल ताल बन
उत्तर खंड विशाल सजल दल पल्लव फुल - वन
बनिक मरुधरा तुलाधर, सिक्ख जाट रजपूत भट
गौड द्रविड पुरहित सचर अनुचर वनवासी निकट ।११
नेना - भुटका पढ़ओ-गुनओ ते गुरु-कुल ऋषि-कुल
मुलुक - मुलुक केर शिष्य जुमओ सौजन्यक सन्तुल
टोल — पीठ विश्वक विद्या शिक्षा दीक्षा हित
विक्रम — तक्ष शिला, नालन्दा कत नव निर्मित
ज्ञान योग प्राचीन चित, नव विज्ञान प्रयोग नित
शिल्प कलाक नियोग हित, खुजल खुजत कत मत-बिहित ।१२
जनि कन्या कुमारिका पूजथि प्रथम तुषारी
तदनु व्रत — स्नाता दाक्षायणि सिन्धु कुमारी
शिव कैलाशी वृष वाहन चलि, मिलथि सिन्धु - तट

सिंह – वाहिनी वर - वर्णिनि वर वरण करथि झट
पूर्व प्रशान्त गभीर पुनि पश्चिम उद्धत युग लहरि
निलित शिलान्तर दर्शनहि उर विवेक आनन्द भरि ।१३
फट्टक खैबर - बोलन घाटी हिम - गिरि टाटी
सिन्धु तरङ्गित परिखा घर बान्ह'क परिपाटी
अङना समतल भूमि उतर दिस, दछिन दलाने
आतय बनल मठ - मन्दिर नित प्रीति घण्टा ध्वाने
बैसक चत्वर चतुर्मुख चारू धाम प्रमाण अछि
सप्त-पुरी विश्राम हित रचित कुटी अनुमान अछि ।१४
अहमदबादे सजय सजाबय धोती अंगा
पटना मखान क इन्तिजाम तिरहुति दरभंगा
बर — बजार अछि खुजल सजल बबइ – कलकत्ता
टहलबा क हित गिरि - वन निर्झर तट अलबत्ता
चितरञ्जनमे सबारी कसल तुरगम - वेगिनी
विजगापत्तन तरणि कत झिलहेरि क रुचि केलिनी ।१५
पूब - पछिम अछि बाड़ी - झाड़ी बाग — बगीचा
पटौनी क परिबंध कयल निधि नहरि लगीचा
कोन - कोन मे भरल बखाड़ी पाँत – पात कय
खिड़की दीपक खुजल हवा पुरिबा पछबा लय
चान - सुरुजकेर जकर घर रजत – स्वर्ण दीपक जरय
ऋतु -ऋतु मन रंजन करय शीत ताप सन्तुलित कय ।१६
लंक लेल लंको यदि भृकुटी ततय कनेको
बर्महु कैं अभिचंक होयत यदि तनी छनेको
थर्थर हिन्द - चिनहु, मलयेशहु कपय झपय
श्याम अनाम सुनाम, श्रृंग सिर लय पद - चंदन
पूर्वहिसँ पूर्वीय दिस छल सोदरहिक भावना
नाम गाम अभिजन सबहु सब तरि हिन्द उपासना ।१७

अफरीकों करतें न फरीकीं, अरब न रगड़ो
मिस्र ग्रीक टर्की क्यो ने पुनि ठानत झगड़ो
ईरानो न अराम करत, अफगाम न फानत
हमर लौह बल पाकिस्तानो मन अनुमानत
बिपरीतहु जे पड़ोसी तहुपर सदय पिरीत छल
आक्रमणहु मे अविचलित, अन्त हमर तें जीत छल ।१८
अङरेजोक करेज न जर्मन पैर जमौतें
पुर्तगाल गलतें, फार्सी फँसतें यदि औतें
चेक जेक उजबेक न ककरो डेग ससरतें
अस्तिरियाक — अस्ट्रेलियाक हस्ती न उमगतें
साम्राज्यक विस्तार जे चाह, न तनिक निस्तार अछि
मित्र राष्ट्र बननहिं सभक कल्याणक संचार अछि ।१९
चीनों चनकि चौंकि चुप्पहिं हटि जायत अपने
रूस अमरिकहु के फबतैं नहि दल गत सपने
पानि – पानि अपने जापानो यदि अभियानी
गुरु लग गुरुअइ चलइ न पुनि चेले अनुमानी
वाद – विवादक प्रसर की ? जे संवादक बाहके
युग पूर्वहिसँ भारतें सुख – शान्ति क सम्पादके ।२०
मुलुक - मुलुककेर मल्ल पछड़ि जमतें मयदानी
चलि नहिं सकतैं कोनहु खन्हु कन भरि सयतानी
दछिनाहीं उतरंग हवा पछवा वा पुरिबा
चलत न ढाहय - ढुहय पुङत छुबि अपने हुरिबा
किन्तु सबहु संभव विभव प्रजा पूत जत भारती
जननिक नित मन-मंदिरहिं यदि च उतारथि आरती ।२१

अंकावली

?

गगन अंकनमे जखन अछि, नयन आंकिक गणक मग्ने
युग रहस्यक ग्रन्थि सोझरयबाक हित विज्ञान लग्ने
जखन ज्योतिष ज्योति-पिण्डक खंड-खंडक चलित चंक्रम
जखन लोकालोक परलोकक सुलभ अछि गतिक संक्रम
जखन लक्षक लक्ष ज्योतिर्जीव लगबय विश्व मेला
अन्तरिक्षक वक्षपर नव-नव ग्रहक संग्रहण वेला
तखन की पुनि नव-ग्रह जपबाक भूमिक भूमिका ई !
रोहिणीपति चौठ-चानक अइपनक शुचि पीठिका की ?
जखन चानक उपर फहराइछ प्रथम मानव पताका
टूक – टूक करैछ नभक रहस्यकेँ धरतीक खाका
बनल रस ऊसर, उबड़-खाबड़ अमृत विधु मृत प्रमाने
मुखक रुख, युव-दृगक सुख उपमान छवि शृङ्गार चाने
तखन ई अंकन कथिक ? लेखा विधिक श्रुत कल्पना की ?
बिन्दु-रेखा माप की ? दस-पाँच आँकक अल्पना की ?
शिल्प-विधि प्राविधिक निरवधि शब्द-अर्थक वल्गना की ?
ज्ञान उपर प्रभुत्व विज्ञानक, तखन कवि-कल्पना की ?

... ...

प्रश्न नूतन, किन्तु वस्तु पुरातनी नित चेतना ई
ज्ञान - बिन्दुक परस रेखा लम्ब विज्ञानक प्रमा ई
नरक अङ्कावली नारायणक एकावली बनइछ
चेतना मानवक नव-नव सर्ग पुनि अपसर्ग बनइछ

अन्तरिक्षक अन्तरीक्षण परिधि विधि संवर्धना ई
संकलन लीलामयी विश्वात्मिका छवि – अंकना ई
काल सीमा, दिशा खीमा अछि अनन्त, न अन्तना ई
कल्पना कवि नित्य, अंकन नित्य, नियमित चिन्तना ई
... .

उदित प्रतिपदा द्विपदा मनु जनु त्रिपदा जपिअ निरन्त
चतुष्पदिक कय गान तान लय पद प्रपंचहुक अन्त
छप्पय छन्द सुनाय, सप्त पद मैत्री जगत जुड़ाय
अष्टमूर्ति-पद चढ़बिय नव-नव पद यश दश-दिश जाय

एकमेव

दशो दिशा विभाग, दिशाकाश एक टा
दिवा निशा प्रभाग, महाकाश एक टा
भानु, वृहद् – भानु, शिशिर–भानु भानुएँ
तेज – ओज तिमिर - तोम दलन टेक टा ।१
अरुण-वरुण दिशा, उदय - अस्त नाम टा
सूर्य सदातने, अद्यतन विराम टा
नखत कत अनन्त, अन्त अन्तरिक्ष धाम
गगन सिन्धु बिन्दुमात्र ज्योति जत ललाम ।२
डारि भिन्न, पात भिन्न, भिन्न फल-फूल
किन्तु तरु विशाल एक, एकमेव मूल
आम - जाम मधुर, दाख दाड़िम मधु मीठ
किन्तु एक मधुरिम रस, द्रव्य शेष सीठ ।३
सूत कते स्यूत - मते बुनल वस्त्र मात्र
जले सगर सागर - सर - कूप - नदी - पात्र
नभ उड़ैत, जल डुबैत, थल चलैत जन्तु
कमठ - पीठ तनुक तुनुक - प्राण एक किन्तु ।४

व्यक्ति ओ समाज मे न द्वन्द्व भावना
लोक - तन्त्र, व्यक्ति - यन्त्र ऐक्य साधना
समष्टि व्यष्टिवाद एतै एक - प्राणता
भेद मे अभेद, अभेदो क भिन्नता। ५
बिन्दु संयुता एतै तरंगिणी स्वयं
सिन्धु संगता एतै पयस्विनी स्वयं
मेघ बिन्दु, अद्रि रेणु, कीर्णता स्वयं
व्यष्टि मे समष्टि केर पूर्णता स्वयं ।६
जलद - जलधि नद - नदी न, सलिल सेक टा
वर्तिका न, व्यजनिका न, तडित वेग टा
व्यजन - अनुरंजन स्वर - स्वरित अक्षरे
प्रणव एक ओङ्कार, विदित त्र्यक्षरे ।७
कथा कते, विधा कते, व्यथा क एकते
प्रथा कते तथापि मूल एक टेकते
कवि क कवित अगनित प्रतिभैक अंचले
छवि क अंग अमित रंग - टीप चंचले ।८
पन्थ अछि अनन्त, गन्तव्य धाम एक
विविध मतहु रहितहु, मन्तव्य नाम एक
पद–पदार्थ लक्ष, रसक लक्ष्य अन्तिमे क,
द्रव्य द्रवित ज्योति गति क, शक्ति अन्त एक ।९
दर्शन ओ दृश्य एक, दर्शक समतूल
स्पर्शन ओ स्पृश्य एक, स्पर्शक अनुकूल
हरिजन ओ हर जन जत जनक-जन्य मूल
चाहिअ सौजन्य धन्य जन्म कर्म तूल ।१०
बिन्दु – बिन्दु मिलि तरंग गंग – अंग मे
अन्त मे प्रसंग एक सिन्धु – संगमे
ध्वनित – रणित राग – रंग कंठ एकमे
जीव कोटि – कोटि भ्रमे, ब्रह्म एक मे ।११

द्वितीया

भूमि - बीज विनु नहि तृन तरु बिनु जनक-जननि नहि जन्य
मान्य न द्वैत विशेषण यदि अद्वैत विशेष्य अमन्य ।१
रूप – अरूप, सगुण - निर्गुण वा निराकार – साकार
विनु भावें अभाव बुझवाकेर अछि की कोनो प्रकार ? ।२
जड़ बिनु जंगम गमन करत कत ? तन बिनु करत कि प्रान ?
परम पुरुष विनु परा प्रकृति अव्यक्त व्यक्त अनुमान ।३
आदि ककर यदि अन्त न ? न वा अनादि अनन्तहु नाम
रमन रमा बिनु, भानु विभा बिनु, शिव न शिवा बिनु वाम ।४
आद्या कतय द्वितीया बिनु इति बिनु अथ कतय बनैछ ?
जनम - मरण छायातप, अग्नीषोम द्वन्द्व सङ द्वैछ ।५
प्रेम तत्त्व की ? प्रेमिक प्रेमी यदि न भिन्न तनु हन्त !
भेद क भेद अभेद भावनहिँ दुरित हरित पुनि अन्त ।६
जयतु द्वैत वृषभानु - नन्दिनी नन्दित नन्द – किशोर
द्वैताद्वैत भक्त - भगवंत जयतु नित चन्द्र – चकोर ।७
दर्शन विषय एक, दृग युगल श्रवण एकहु, श्रुति युग्म
तन दुइ, मन पुनि एक न संगत प्रेमक प्रतिभा तिग्म ।८
भेद अभेदहु सूचित उचित, सूचित कत निगम निकाय
गहिअ द्वितीया तारिणि चरणे शरणे ऐक्य उपाय ।९

त्रयी

त्रिवृत प्रणव, त्रिपदा गायत्री, त्रयी विदित पुनि वेद
गत – आगत – अनागतक भेदें, काल त्रिविध निर्वेध ।१
अभिधा काली आदि-विदित लक्षणा कलित लक्ष्मीक
अन्तर्वाहिनि सरस्वती, व्यंजना शक्ति शाब्दीक ।२
गुण माधुर्य धुर्य, ओजक खोजहिँ सर्वत्र प्रसाद
उत्तम मध्यम अधम, अपेक्षाकृत त्रित कविता – स्वाद ।३

रीति निदान गुणक सन्धानहि, तीनि प्रधान प्रमान
शब्दागम पर्याप्त आप्त, परतच्छ, स्वच्छ अनुमान ।४
प्रकृति, पुरुष, पुरुषोत्तम, भगवद्–वाणी त्रित्व विधान
सत रज तम गुन, कर्म अकर्म विकर्मक क्रमिक प्रमान ।५
थिर दृढ़ सत पुनि, चंचल रज गुनि, मोह-जड़ित तम तोम
अरति-विरति-रति,थिति-गति-अवगति,त्रितय अनल-रवि-सोम ।६
तल अन्तस्तल, उपर गगन घन, अवनि सतह, तिहु लोक
सप्तक तिन गुनि तार मन्द्र, मध्यावधि स्वर – आलोक ।७
मन – वचनक सङ कर्म, लोकमत स्वमत वेदमत शोधि
साधन साधक साध्य समाहित, त्रिपद सिद्ध अविरोधि ।८
उच्चावच समतल थल, शीतल करइत देश - दिगत
जीवन - तृन मिलि त्रिगुन त्रिवेनी, पहुँचओ निर्गुन अत ।९

चतुष्टयो

चतुर्युग—

'कृत' युग विदित विशुद्ध योग हित, भोग योग - हित 'त्रेता'
'द्वापर' योग भोग - हित, 'कलियुग' रहइछ केवल भोक्ता
नीति - रीति 'कृत' धर्म - समाहित, नीति धर्म - मत 'त्रेता'
धर्म नीति - मत 'द्वापर', 'कलियुग' कूट — नीतिहि क नेता
'कृत' मनुजत्व शुद्ध देवत्व, देव मानबे 'त्रेता'
'द्वापर' दनुज मनुज बनइछ, 'कलि' मनुजे दनुज अचेता
'कलि' सूतल आलस्य - जड़ित, 'द्वापर' तन्द्रा सपनाइछ
'त्रेता' अभ्युत्थान - शील, 'कृत' जाग्रत् जगत जुड़ाइछ
सत्य सभक जीवनमे जेहि छल, ने आलस्य न तन्द्रा
गुणातीत मन - वचन सत्य घन, कृत्य रहित - छल-छन्दा
सत्ययुगक थिक सत् स्वभाव ई, पुनि त्रेताक विचारे
धर्म तत्त्व रुचि प्रचुर, अघहि लघु, मर्यादित व्यवहारे
द्वापर राजस तुलित अनृत - ऋत, भौतिक आत्मिक ध्याने

कलिक कलह आकुल जीवन। तामस गुन दोष निधाने
विदित चतुर्युग जीवन - कल्पक, अवधि विदित अति स्वल्प
श्रेयक साधन प्रेय - पूर्ण, कर्तव्यक ली संकल्प
नाम कलिक द्वापरक यजन, त्रेताक ध्यान — सन्धान
स्थितप्रज्ञ रहि गुणातीत थिति, कृत युग कृती महान

चतुर्वेद—

साम पद्य, यजु गद्य, वेद ऋक चम्पू उभय विधान
विदित चतुर्थ अथर्व मुक्त स्वच्छन्द वृत्त अनुमान
साम साम, यजु दाम, दण्ड ऋक्, वेद अथर्व विभेद
जीवन नीतिक विदित चारु चारू विधि सिद्धि अभेद
ऋक् प्रभात, मध्याह्न यजुष् सन्ध्या सामक प्रतिरूप
निशा निशीथ अथर्व श्रुतिक अहनिस ओंकार अनूप ॥

अर्थ-वर्ण ओ वाणी—

अभिहित लक्षित व्यञ्जित पुनि तात्पर्य संगता वाणी वाचा
संवृत विवृत स्पृष्ट उपमा वर्णक विषमा कत ढाँचा
गिरा चतुर्गुण रूप अनूपा परा, अपर पश्यन्ती
अनाहता मध्यमा मुनि मता वैखरि विखरि स्फुरन्ती

वर्णाश्रम—

ब्रह्मचर्य गार्हस्थ्य वानप्रस्थो चतुर्थ संन्यास
विप्र क्षत्र विश शूद्र रचित वर्णाश्रम सृष्टि विकास

चतुर्धाम—

अटक-कटक धरि, हिमगिरि-तट सागर-अंचल धरि व्याप
एक भारती-भूमि, जकर कण-कण मे तीर्थ कलाप
तदपि चतुर्दिश सीमा पर सीमापति पीठासीन
देव विराजित छथि हरि-हर युग - युग सँ नित्य नवीन
अछि प्राची सीमा, सनाथ जत जगन्नाथ रथ-रूढ़
दक्षिण रामेश्वरम् स्वयम् छथि दक्ष रक्षके गूढ़

पाश्चात्यक वात्याक रोधके जतय द्वारकानाथ
उत्तरखण्ड अखण्ड बनल बदरी - केदार सनाथ
राष्ट्र-धर्म केर, काल-कर्म केर चारु चिरन्तन धारा
चतुर्धाम मठ शङ्कर - योजित संस्कृति प्रकृति - उदारा

... ...

जयतु चतुर्मुख चतुर्वेद चतुराश्रम वर्ण - चतुष्क
चतुर्मुखी चतुरस्त्र चतुर्दश करथु सरस रस शुष्क

पंचदेवता

१-गणेश —

जन स्वतन्त्र गणतन्त्र न चलइछ बिनु गणनायक
विघ्न विविध विध विधि-विधान मे यदि च अनायक
मंगल - मूल अतूल बुद्धि - वैभव - बल दायक
प्रथम पूजिअत देव पञ्च विच बिदित विनायक

२-सूर्य —

भुवन भवन तिमिरावृत रहितय प्राण स्पन्दन कतहु न
दिशा - विभाग न, काल - कला न समीप दूर युग-छनहु न
नहि गति वेग, मनक आवेग न, ग्रह पथ, अथ-इति वा नहि
तत्सवितु वरेण्य ज्योतिर्मय, भानु भजब भगवान हे

३. शक्ति —

विधि अवैध, हरि हारि हटथि, शिव शवहि सुनिश्चित
यदि न सृष्टि - पालन-लय हित, पुनि शक्ति - समन्वित
इच्छा क्रिया ज्ञान रूपा जननी जग जाया
काली लक्ष्मी सरस्वती त्रिगुणात्मिक माया

४. शिव —

संहारहु मे अछि अनन्त सृष्टिक उपहारे
हालाहल पचाय मृत्युञ्जय उचित विचारे
वामा संगत अंग, अनंग तदपि कय क्षारे
क्रूर क्षुद्र हित रुद्र प्रकृति नित शिव अविकारे

५. विष्णु—

रक्षण - पालन कयनहि लोकहु मे व्यापकता
गीतहु मे युद्धहु मे बुद्धि क शुद्धि प्रखरता
अंक - संगता लक्ष्मी, रक्षा चक्र चक्रमण
कमल कोमलहु प्रकृति, करथि श्रुति - शत्रु निष्क्रमण
सिन्धु वसिन्दहु, गिरिधरहु, गो - गंगा नित संगतें
विष्णु राष्ट्र - बधिष्णु हो, राम - कृष्ण रुचि रजितें

पंचकन्या

१. अहल्या—

हिम समीर शीतल क्षीरोदा नदी उदारे
कुटी जतय रूपसी उर्वशी गोतम - द्वारे
कय प्रवेश मुनि वेश कपट - पट् सुरपति द्वारे
शील हरण कय, जनिक लुटल सर्वस संसारे
तन दूषित, मन मुनि-तियक पूत, तदपि अभिशापितें
पाषाणी प्रभु पद परसि धन्या धनि कन्या वृतें

२. द्रौपदी—

मिलित करिअ उपभोग, भोग्य जे उपगत, सुतगन !
कहल सहज भावहिँ जननी कुन्ती सिनेह - घन
पञ्च - पति क बनि प्रिया द्रौपदी नव आदर्शे
विजय - वैजयन्ती यशवन्ती भारतवर्षे
यज्ञ - वेदिका जनमि जे रण - वेदी कय प्रज्वलित
पूर्व जन्म अभिशाप, तें कन्या बनि कत वर कलित

३. तारा—

वर-वर्णिनी गुरुक वाणी जनि शिष्य क आनन
तारा दृग - तारा बनि सजलनि चन्द्रक आङ्गन
बुध - जननी भय विवदमान विधि सन्धिक मानलि
वा वालि क अलि हित अपना के कुसुम प्रमानलि

अंगज अंगद भक्त वर वा बुध सुत उत्पादिके
पुनि सुकंठ संगत बनलि कन्या धन्य कुमारिके

४. कुन्ती—

मन्त्र साधने सिद्धि जनिक आकर्षण योगें
धर्म पवन सुरपति सुरवैद्य - युगल संयोगें
कवच - कुण्डली कर्ण, धर्मवीरो युधिष्ठिरो
भीमार्जुन सन रण - पण्डित पाण्डव पँच वीरो
काम - कामना नहि कनहु वीर धीर प्रसव क व्रती
तदुचित सुचित उपासना कन्या धनि कुन्ती सती

५. मन्दोदरी—

मन्द उदरि, मन्द स्मित, मत्त मयन्द - गामिनी
मन्दोदरी मय क तनुजा दशवदन - भामिनी
रहितहुँ लंका वंका नागरि, ज्ञान - गुनागरि
सुता समान बुझल सीता के पति रति वागुरि
शत-शत सुत कन्या जनमि, पुन-बल पंकहु जलज बनि
कन्या पंचक बिच गनित पातक-पातिनि सुमिरु धनि

पञ्चबाण—

नीलोत्पल अरविन्द अशोक चूत नवमल्ली
पंच बाण कामक सुविदित पुर–कानन–पल्ली
सम्मोहन उन्मादन शोषण तापन स्तंभन
पंच वाण पौराणिक काव्य – जगत अनुरंजन
किन्तु वास्तविक जागतिक विषय इन्द्रियक सुख सुगम
रूप रम्य, मधु धुनि, मधुर रस, मृदु परस, सुगन्ध सुम

पञ्चतत्त्व—

क्षितिक सहज क्षय प्रकृति विकृति जत जगतक आकृति
गन्धवती नासिका विषय कर्षण गुरुता प्रति
सलिल द्रवित शीतल निम्नग रसना रस ग्राही

अनल रूप दृग - विषय ऊर्ध्वगति दीपित दाही
पवन सतत गतिमय परस त्वचा - अग्र तीर्यक् गमन
श्रवण विषय गुण शब्दमय पञ्च तत्त्व अन्तिम गगन

पञ्च-प्रपञ्च —

पंच वायु ज्ञानेन्द्रिय पंचक तदनु विषय पुनि पंच
अन्न - प्राण - मन - विज्ञानक, आनन्दक कोष प्रपंच
पंच गव्य पंचामृत पंच सुगन्धि रत्न पुनि पल्लव-पच
पंच तत्त्व पंचत्व अन्त पचोपचार पूजिअ सुर पंचा

षड्वर्ग

अङ्गन्यास —

(१) नमो विन्ध्य हृदयाय, (२) हिमालय शिरसे-स्वाहा
(३) मानस सर कैलाश शिखायै वषट् प्रवाहा
(४) विन्ध्य कवच हुंकार, न रिपुक प्रहार क अवसर
(५) दृग उपत्यका कामरूप - कश्मीर मुखोत्तर
(६) पूर्वोत्तर घाटी - मलय - सह्य अद्रि अस्त्राय फट
करन्यास करितहिँ सकल आक्रमणी रिपु विफल हट

करन्यास —

कर-अंजलि क वरिष्ठ सिन्धु नद जनि (१) अंगुष्ठे
अपर छोर पर ब्रह्मपुत्र जनि विदित (२) कनिष्ठे
(३) मध्यांगुलि संगत गंगा, (४) नर्मदा तर्जनी
(५) कावेरी अनामिका दच्छिन पानि सर्जिनी
(६) कल तल - पृष्ठ क अंशिनी कत नद - नदी तरंगिनी
सजल स्वदेशोपासना कर - न्यास षट् अंगिनी

षडङ्ग—

विनु अंगे अंगी प्रसंग की ? विनु नीरे की गंग ?
विनु कर्मे पुनि व्यर्थ विचारो, सिन्धु न विना तरंग
वेद पुरुष केर नेत्र ज्योतिषे, श्रुति निरुक्त, कर कल्प
छन्द चरण, व्याकृति मुख, शिक्षा घ्राण, षडङ्ग अनल्प ॥

कहइछ वेद, खेद एतबे जे विनु वेदाङ्ग विचार
करइछ जे प्रचार से हमरा बनबय पंगु विकार

षट्कर्मा -

(स्मार्त)

पढ़ब व्यर्थ यदि पढ़ा न सकलहुँ ग्रहण ग्रहे विनु दान !
यजन कोना यजमान न डेबल ? षट्कर्मी द्विज मान

(तन्त्र)

मन मोहन, उर वशी-करण, राधाक चित्त उच्चार
विद्वेषण कुरु पाण्डु कुलक बिच लोक शत्रुहुक घात
अन्त शान्ति जगतीक बीच; जन-तन्त्रक मत अनुसार
जे स्वतन्त्र छथि सर्व-तन्त्र नित जयतु ब्रजेश कुमार

षट्रस—

कटु रहितहुँ हो सत्य मीठ, नहि तीत अतीतो
छुटय राग रस तखनहि वसन कषाय प्रतीतो
अमृत अमल, लावण्य अन्तरक जखन पिरीते
तखन रसक आनन्द अन्यथा षट् रस रीते

षडानन—

सेनानी सुरपक्षक छथि सपक्ष षण्मुख प्रत्यक्ष
षट् कृत्तिका मातृका तारा दूध पिऔलनि कक्ष
सतत असुर संहार हेतु छथि छओ मुख वास्तव व्यक्त
जल,थल,नभ,गिरि,वन पुनि जनपद जनि सैनिक अभ्यस्त
अथवा चउदिस उपर-अधर धरि व्यापित षट् संचार
संचर गुप्त गुप्तचर जनि, तनि सेनानिक जयकार

षड्ऋतु—

संवत्सर साकार काल पुरुषक छओ अंगे
कर, पद, दृग, श्रुति, वदन, नासिका षड् ऋतु रंगे
तपन-घनोदय शरद - हिमागम शिशिर - वसन्ते
अयन दक्षिणोत्तर अधरोपरि काय दिगन्ते

षट् आहुति-स्वर—

श्रौषट् वौषट् हुंफट करइछ खटखटाह षट्कर्मी
स्वाहा स्वधा त्रिधा व्याहृतिसह त्र्यक्षर प्रणवक मर्मी
किन्तु त्रिगुणमय द्वैत गुणित जत विधि निषेध सहधर्मी
प्रकृति नियन्त्रित षड् यन्त्रहि षट् पद कैवल्यक मर्मी

षट् चक्र कमल—

मुकुलित मूलाधार, स्फुरित नाभिपद पद्म बसि
हृदय कमल आगार, कम्बु कंठ पंकज सरसि
भ्रूदल बिच संचार, क्रमहि सहस दल गति शिरसि
पिबिअ अमृत - आसार, बिन्दु - बिन्दु रहले बरसि
सरस दल क रस - चक्र पान करक अधिकार तनि
षट्चक्र क कय भेद ज्योति तन्तु उत्थान जनि
षट् कोणाश्रित षट् कमल षडैश्वर्यमयि षट्ठिके !
निज पद कमलक षट्पदे बनबिअ षण्मुख-मातृके !!

सप्तैते चिरजीविनः

१. अश्वत्थामा—

सुनि रण मरण मृषा वचनहु सुत हित तनु त्यागल
द्रोण गुरुक सुत-शिष्य अमर से रहल अभागल
पाण्डु-कुलक अन्तक आतंकी विप्र कलंकी
उत्तराक गर्भक निपात करितहु निष्टंकी
ब्रह्म-अस्त्र साधल, मुदा बाधल नहि हरि-कृपा बल
अश्वत्थामा जीवितहु मुइले, बिनु मणि फणि विकल ॥

२. बलि—

जनमि दैत्य-कुल दान यजन मे सुरहुक काने
कतरल, अतरल यश-उदारता लता बिलाने
भगवानहु वामन बनि जनिका याचल द्वारे
त्रिविक्रमक पद क्रमहि नपाओल पीठ उदारे

वलि वलिदानी आइ धरि यशहु शरीरहु अमर बनि
प्रातः स्मरणक मालिका ग्रथित प्रथित शुभ नाम जनि

३. व्यास—

वेदक कयल विभाग साम ऋक् यजु अथर्वणे
वेदान्तक विस्तार ब्रह्म - सूत्रक संग्रथने
कयल पुरा-नव अन्वर्थक पुराण शुचि देशे
महाभागवत महाभारतक कथा अशेषे
व्यास कृष्ण द्वैपायने गीता गायक द्विभुज हरि
जगद्गुरुक पदपर अमर प्रस्थान - त्रय ज्ञान-भरि

४. हनुमान—

रुद्रक नव अवतार अंजनी नयन अंजने
पवनपूत श्रीरामदूत खलदल—निकन्दने
वन अशोक मैथिली - शोक अनलक चिनगी लय
डाहि देल कंचन लंका असुर क जिनगी लय
लंघित वारिधि, वधि असुर विनु फल नहि विसराम
भक्तिवंत हनुमंत पद, गहथि अन्त अभिराम

५. विभीषण—

लंकहु बंकहुमे बसइत जनिका न कलंकक लेश
डोभा डाबर पाँक जनमि जनि कमल सुरभि—परिवेश
दशमुख रुख कठोर, कत घातक घात, लात कत खाय
सीतापतिक चरण शरणागत अमर सुयश जग छाय
भक्त-विभूषण युग अमर दूषण रहित सुनाम
जयतु विभीषण भक्तवर जनि चित अनुपल राम

६. कृपाचार्य—

द्वापर छल रण-युगे जतय आचार्य धनुर्धर
नाम कृपे मन कृपा—कृपण, कृति क्रूर निठुरतर

कुरुक पक्ष धय प्रलय मचाय बचा निज प्राणे
अश्वत्थामक माम चरित उद्दाम प्रमाणे
तदपि विधिक छल वंचना अयश सुन'क हित अमर बनि
कृपाचार्यपर करु कृपा यम, यम-नियमक प्रसर पुनि

७. परशुराम —

हेहर हैरय वंशक ध्वंसक, क्षत्र निपातक
परशु हस्त उद्धत राजन्य विपिन उत्पाटक
धनुष वान लय कान्ह तानि यज्ञक उपवीते
राम नाम अभिराम परशु युत युग – युग गीते
जिति अर्जित भू–सम्पदा नहि राखल अपने छते
दय कश्यप कें काश्यपी अमर परशुधर छथि मते

... ...

मार्कण्डेय—

युग-युग धरि जीबथि कृति बल जे यश-अवदाते
सप्त चिरंजीवी कर्मठतें पठित प्रभाते
हुनि संगहिं मुनि मार्कण्डेयक नाम आठमे
शिवक कृपा वल यमदल निदरि चिरायु पाठमे
दुर्गा सप्तशतीक जे ऋषि, मन्त्रक द्रष्टा थिका
पौराणिक व्यक्तित्व संग युगजीवी संस्था थिका

सप्तपुरी—

सप्त-पुरी पौराणी सुविदित बँटइछ कण-कण मोक्ष
स्वयं जगत केर त्राता हरि-हर जतय न खनहु परोक्ष
विदित 'अयोध्या' सरयु सिंचिता, मथुरा यमुना नीर
'माया' विदित महामायाकेर कनखल खलखल तीर
'काशी' शीतल-वाहिनि गंगा, विश्वनाथ दरवार
'काञ्ची' काञ्चनपुरुष विष्णु शिव सेवित मन्दिर द्वार

महाकाल लालित-पालित 'उज्जयिनी' पुरी ललाम
सागर जल कल्लोल, कृष्ण रनछोर 'द्वारका' धाम
सप्त-पुरीक धूलि कण केर स्पर्शन - दर्शन सँ मुक्ति
व्यर्थ खपायब माथ शास्त्र - दर्शनक तर्क मत युक्ति

सप्तपदी—

पहिल चरण चलइछ सङ इच्छा एक
दोसर पदें सुसंगत कर्मक टेक
तेसर डेग उठाबी वचन समान
चारिम यदि युगपद विचार अनुमान
पाँचम मनसा तुलित कलित कल्यान
छठम हृदय स्पंदित हो एक प्रमान
सातम दुइ तन मिलित समन्वित प्राण
सप्तपदी सप्त - व्याहृतिक वितान
परिणत परिणय प्रणय प्रणव प्रणिधान
शब्द-अर्थ, जल लहरि न पृथक् निदान

सप्तसिन्धु—

क्षीरोदधि लवणोदधि भेदें सिन्धु सलिल सतरंग
एक विश्व - सागर प्रणवक जनु व्याहृति सप्तक अंग
अथवा सिन्धु पश्चिमा सीमा नद पचांबु समेत
व्यास - सरस्वति सहित पुरातन सप्तसिन्धु समवेत
किंवा यमुना गंगाधारा प्राची दिशा बहैत
पंच सरित भगिनी परिकरमा पच्छिम, सात बहैत
अथवा गंगा - यमुना सरयू गंडकि सोन उदार
कोशी पद्मा सहित सप्त जल पहुँचय सिन्धुक द्वार
वा उत्तर खण्डक गिरिकुण्डक सप्त गंग शुचि नीर
गोदा कृष्णा तापति, नार्मद तम्रलुक दक्षिण तीर
सप्तसिन्धु जत सिंचित धरनी कतहु न अपन अवंच
कतबहु कुटिल समस्या जटिलहु सहल उर्वरे अन्त

सप्तक—

सप्त मृत्तिका, सप्त मातृका, सप्त भुवन, स्वर सात
सप्तधातु, सप्ताश्व, सप्त नगरी, व्याहृति संख्यात
सप्तरथी, सप्ताङ्ग सैन्य, श्रुत सात सकार-तकार
सप्तशती दुर्गा गीता सप्ताह सुनिअ शुचिसार

अष्टमूर्ति

उपर अधर धरि व्यापित रूप अनूप जनिक प्रत्यक्ष
क्षिति जल अनल अनिल नभ शशि रवि यजन योजना दक्ष
गन्ध, स्वाद, पुनि रूप, परस, ध्वनि, शीत, ताप अनुभूति
कष्ट मेटि शिव अष्टमूर्ति जग जगबथु नित सम्भूति

१. शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः—

जड जंगम जत रूप गंध रस सम्भृत संचित
फलक पटल जत विषयमात्र होइछ रुचि चित्रित
गिरि सागर मरु-मालव वन-पुर ऊसर-उर्वर
पीत रक्त सित असित प्रजा पुनि मिश्र रक्तधर
पृथुल रूप पृथ्वी प्रकृति जनिक विकृतिसँ परिणता
'सर्व' सर्वहित करथु से शस्य प्रशस्यक प्रचुरता

२. भवाय जलमूर्तये नमः—

रसा रसवती, हरित भरित वन रस रसाल फल
गगन शून्य घन सघन वरस, रस विद्युत द्युति भल
गिरि-निर्झर झर, सिन्धु बिन्दु बल सरित स्रवन्ती
कन-कन अन्न प्रपन्न विदित रसना रसवन्ती
भव - उद्भव जत विभव अछि जलमय रूपहिँ संभृता
'भव' से भव हित जलद बनि बरसथु नित रस सम्पदा

३. रुद्राय अग्निमूर्तये नमः—

शीत–भीत जगती कंपित पबइछ जत गर्मी
द्रव परिणत भय द्रव्य बनय दृढ़ सुखि द्रुति गर्मी

रस परिपाक – विपाक ओजमय स्फूर्ति पूर्ति कय
करइछ उष्ण सतृष्ण जगत जड ज्वलन मूर्तिमय
'रुद्र' त्रिलोचन अग्निमय मद मदनक उद्धत विनत
क्षुद्र विषय-तृण जाल जत ज्ञान-ज्वाल जरवथु सतत

४. उग्राय वायुमूर्तये नमः—

जल जरि जे जल बनल भाफ पुनि जलद योजना
श्वास - श्वास मे विश्वासक सत्प्राण प्रेरणा
गति तिर्यक् शोषणो रुक्षता अवगुण टेकल
अनिल-सलिल पुनि गगन-अवनि बिच अंतर मेटल
स्थिति नहि पहुँचत प्राप्ति धरि जा नहि गति संचारणा
'उग्र' मूर्ति शिव वायुमय बहथु, करथु जग चालना

५. भीमाय आकाशमूर्तये नमः—

नहि विकास अथवा प्रकाश यदि अवकाश न हो
ध्वनित न शब्दक शक्ति शून्यता आकाश न हो
अनिल उद्‌र्ध्व-गति कतय ? अधोगति सलिल न संभव
तिर्यक् गमन पवनहुक, क्षिति अवनिहु नहि अनुभव
जड-जंगम क्षिति थिति सकल आदि-अन्त जत कल्पिता
व्योमकेश 'भीम'क दया ध्वनि शून्यहु हो व्यंजिता

६. पशुपतये यजमानमूर्तये नमः—

पंचतत्त्वहु क योग कतय, योजक नहि प्रानी
रूप गंध रस परस शब्दहुक अनुभव दानी
पंचभूत नहि वर्तमान, यजमान भविष्य न
हवि भाजी नहि ज्वलित-ज्योति तेँ हुतो हविष्य न
पूजन संगति दान जत यजन कर्म पटुता भरथु
'पशुपति' यज्ञ स्वरूप शिव यजमानक पशुता हरथु

७. महादेवाय सोममूर्तये नमः—

रम्य कान्ति रस तृप्ति शीत शुचि रुचि गुन एकत
सौम्य भावना भरित रमनि मन रति अति अभिमत
अनल भाल केर, गर क गरल कटुता ज्वाला जत
हरथि, भरथि मुद कुमुद शिशु शशिहु शिवक सीसगत
सरस कला माला कलित प्रतिभा प्रभा पसारि नित
अन्नौषधिमय सौम्यमय 'महादेव' बाँटथु अमृत

८. ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः—

स्वर्ण किरण कण बिकिरण करइत तिमिर हरण हित
जीवन ज्योति जगाय भगाय, जगत जडता नित
काल-कला पुनि दिशा - भाग सभ क्थुक नियंता
सृष्टि-यंत्र संचालन हित सुविदित अभियता
ईशानक दृग सूर्य जय ! अगजग जगमय जनिक बल
हरथु तिमिर मल कलुष-त्रय, भरथु प्रकाश विकास भल

× × × ×

अष्टाङ्ग प्रणाम —

कर-युग, पद-युग, शिरशा, उरसा, मनसा, वचसा साङ्ग
देव - द्विज - गुरु जनक - जननि पद करु प्रणाम साष्टाङ्ग

अष्ट–सिद्धि —

'अणिमा' बल परमाणु प्रमाणहु, 'लघिमा' लघुता तूल
'गरिमा' गिरिवत् गौरव - मण्डित, 'महिमा' महिक अतूल
'वशिता' वश जग स्ववश, 'ईशिता' सँ उपलभ्य प्रभुत्व
जन-गन मनक आप्त बनि व्यापक, 'प्राप्ति' सकल पुनि तत्त्व
काम–कामना शेष न लेशो 'प्राकाम्यहु' पुनि गम्य
अष्ट–सिद्धि साधना सिद्ध योगी जन जगत् - प्रणम्य

अष्टाङ्ग-योग —

'यम' संयम थिक, सत्य अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय अभोग
शौच, तोष, तप, स्वाध्याय प्रणिधान ईश्वरक 'नियम' प्रयोग

पद्म, सिद्ध बा वीर कोनहु आसन लगाय थिर बैसि
पूरक, कुम्भक, रेचक क्रम प्राणक आयाम विशेषि
विषय मात्र सँ सन्निकर्ष इन्द्रियक हटाय, चित्त सन्हिआय
'प्रत्याहार' करी अन्तर्मुख वृत्ति, बहिर्मुख वृत्ति दुराय
धारण करइत सुचिर एक चित धरी 'धारणा' मन विलमाय
'ध्यान' कोनहु रूप क वा ज्योतिस्वरूपक एकनिष्ठ मन लाय
तखनहि ध्याता-ध्यान-ध्येय त्रिपुटी मिलि संपुट एक
योग अष्टविधि वृत्ति - निरोधी साधन साधक टेक

अष्टक—

काय शल्य शालाक्य आदि आयुर्वेद क अष्टांग
बौद्ध दर्शनहु सम्यक् — पूर्वक अष्ट मार्ग सिद्धांग
अष्टाध्यायी पाणिनि विदिते, अष्टक स्तवक प्रसिद्ध
जे समस्त कष्टक निवृत्ति-पूर्वक करइछ फल सिद्ध

नवग्रह

१. सूर्य—

जनिक ज्योतिसँ जगमग अगजग जीवित जीव जहान
जनि आलोक लोक-लोकालय आलोकित ग्रह चान
जत भूगोल खगोल गगन बिच आकर्षित गतिवान
दिक्-कालक प्रमान प्रभु ग्रहपति जयतु भानु भगवान

२. चान्द्र—

जनिक समान न कान्ति सरस शीतल सुषमाक निधान
जे रमनीक वदन छवि कवि हित विदित जगत उपमान
अंक कलंकहु गुन-आगर दोषाकर अमृत निधान
अरस शुष्क विज्ञान कहथु किछु सरस सुधामय चान

३. मंगल—

क्रूर प्रकृति प्रचलित ग्रह विग्रह मङ्गल सुवदित लोक
भूमिपुत्र कहबैछ यदपि अछि दूर गगन आलोक

रक्त वरन अनुरक्त भक्त हित करुना कनक प्रसक्ति
जग जंगल जीबन दंगल बिच मंगलहिक करु भक्ति

४. बुध—

तारापति गुरु वा चानहु वा जनक कोन बुध जन्य ?
सौम्य बोधमय उभय अभिजाने बुध ग्रह जगत अनन्य
घुमथु निकट रवि कवि क बीच बसि साँझ-प्रात रुचिवत
स्वय बुध-ग्रह पूर्वाग्रह बिनु योगहि ग्रहनक अंत

५. वृहस्पति—

आकार क सदृशे प्रज्ञा नामक गुण, विदित विचार
रेखा मात्र वक्र गति सचारें पड़इछ अतिचार
गुण गौरवसँ सुरहुक गुरु पद पूजित ज्ञान वसिष्ठ
विज्ञानहुँ गरिष्ठ, से केन्द्र बहस्पति बसथु वरिष्ठ

६. शुक्र—

जनिक दृश्य भय समय शुद्ध हो, सन्ध्या प्रात यदर्थ
नव कल्पनें, नीति रचनें कवि नाम जनिक अन्वर्थ
संजीवनी सदृश विद्या जनितहुँ, शुक्लहुँ सब व्यर्थ
जखनहि ग्रहण कयल असुरक दल गुरुपद अपद अनर्थ

७. शनि—

मन्द प्रकृति, गति मन्द शनैश्चर, दृग्गोचर अपघात
एक राशि मे वास सात सालहुँ तदधिक उत्पात
रविसुत चन्द्र सप्तकहु, वेष्टित इष्ट न ककरहु तात
संकट-विकट अशनि सन रहितहुँ शनि ! सुनु शांतिक बात

८-९. राहु-केतु—

छायामय छलमय, मुख अमृत, हलाहल हृदय रखैत
रुण्ड मुण्ड दुहु खण्ड भेनहुँ एखनहु अहँ क्रूर फनैत
रवि शशि ग्रहणे, तम संग्रहणे, राहु-केतु कहबैत
आबहुँ भावहुँ मे नहि तनबे शान्ति अन्त मनबैत

नव दुर्गा—

पहिल 'शैलपुत्री' गिरिजा पुनि 'ब्रह्मचारिणी' ब्राह्मी रूप
चन्द्रोज्ज्वला 'चन्द्रघण्टा' 'कुष्माण्डा' रूप चतुर्थ अनूप
'स्कन्दमातृका' 'कात्यायनि' पुनि 'कालरात्रि' धृत-कर खड्गा
'महागौरि' भव्या नव्या पुनि 'सिद्धिदायिनी' नव दुर्गा

नवधा भक्ति—

'श्रवण' नाम यश 'कीर्तन',अनुखन 'स्मरण' चरणहु क 'सेवन'
'अर्चन' 'वन्दन' 'दास्य' 'सख्य' पुनि अन्तिम 'आत्म निवेदन'

नवाङ्क—

नव - निधि, नव - द्वीप दीपा, नव - रत्न, नव-नवा तारा
अङ्क नवा, नव विधा भक्ति भजु नवलकिशोर उदारा

दशावतार

दश दिश व्याप्त प्रणव त्रिवृता व्याहृति सप्तक सह व्यक्त
दश अवतार भार भूतल केर हरण क हेतु प्रसक्त
मन समेत दश कर्म ज्ञान इन्द्रिय कृत दशविध पाप
विभु मानव दश रूप हतल महिमें; महि मे नित व्याप

१. मीन —

महाप्रलय मे जलधि बीच छल डुबइत पृथ्वी तत्त्व
बीज मात्र गलइत छल बचइत कोना जीव निःसत्त्व ?
श्रुति क यावतो ऋचा असुर भौतिक क द्वन्द्व पड़ि लुप्त
आदि मानव क नौका डूबल सृष्टि मात्र छल सुप्त

अणु रहितहुँ ब्रह्माण्ड भाण्ड केँ भरि निज रूपेँ पीन
महामीन अवतार करथि उद्धार वेद - पथ छीन

२. कच्छप—

अमृत विष क मिश्रण सँ जगत क सागर सलिल विषाक्त
विनु मंथन नहि निकसत गुण - मणि तत्त्व-रत्न विख्यात

शेष रज्जु गुण, मंदर मंथ, असुर – सुर बिच संघर्ष
फलित, भरथु पृथ्वी–तल के पुनि श्रमबल सकल सहर्ष
कमठ पीठ आधारक बिनु नहि संभव मथन कर्म
कच्छप रूप जगत्पति पति राखथु थपइत श्रुति धर्म ।।

३. वराह—

अवनी लीन महासागर मे अखिल जीव दिग्–भ्रान्त
जड़ जल तत्त्व उमड़ि आयल जत भूतल सूतल श्रान्त
कनकलोचन क दृष्टि सृष्टि केर करइत नित संहार
दिशि–दिशि एक शब्द–धुनि सुनि पड़इत छल हाहाकार
महावराह रूप धय दन्तावलिपर धरणी धारि
पुनरुद्धार करी पुनि धरतीपर श्रुति–मत संचारि

४. नरसिंह—

नरक ज्ञान निर्मल, पशु सिंह क सिंहक बल विज्ञान
विनु समन्वये प्रह्लादित नहि जगती केर कल्यान
यदि हिरण्यहि क उपवर्हण लय माथ सुप्त मनुजत्व
निश्चय लोक शोक सँ स्तंभित ज्वलित वह्नि निःसत्त्व
नर–हरि बनि नख उर विदारि कनकक अणु कण विस्फोट
करइत, हरइत जगत क पीड़ा, प्रभु महिमा बड़ि गोट

५. वामन—

दान धर्महु क मर्म दया थिक, अहंकार असुरत्व
साधन शुभ अशुभहि मे परिणत, यदि च साध्य निज स्वत्व
कर्म रहौ कतबहु रुचि–रोचित शोचनीय यदि छद्म
यज्ञ अज्ञहि क थिक जहि मे नहि हो साधित अध्यात्म
वलि क कलेवर लंबित कतबहु, वामन लघु पद नापि
देथु पठाय पताल युद्ध बिनु, मति बल सुर हित थापि

६. परशुराम—

रक्षा – दीक्षा पाबि चलथि पथ भक्षणहि क धय नीति
बुझथि न जे थिक पद योग क हित, भोग क पथ अनरीति

ज्ञान क मस्तक सँ बढ़ि–चढ़ि बुझि सहस्र गुणित भुज-शक्ति
तनिक विनाशक हित नित परशु उठाबथि पुरुष प्रसक्त
सप्त व्याहृति क त्रिपदा पढ़इत विप्र राम निश्छत्र
धरइत छथि अवतार, तनिक पद चढ़बी श्रद्धा–पत्र

७. राम—

जन्म महीसुर – कुल लय शिव - पद रखितहुँ भक्ति अनन्त
किन्तु रूप – लम्पट कामुक निर्दय खल प्रकृति दुरन्त
जनस्थान केँ जारि–उजाड़ि बसावय असुर स्थान
प्रतिष्ठान ऋषि - मुनि क विदित तकरा बनवय समसान
दशमुख - वध हित दशरथ - सुत श्रीराम तानि धनु -वाण
युग -युग जनमि करथि निरवधि वधि सकुल असुर निष्प्राण

८. कृष्ण—

योग नष्ट छल चलित पुरातन, बंधु – बधु दुर्योग
धर्म क क्षेत्र कुरु क क्षेत्रहु छल द्वेष – राग केर रोग
छिन्न – भिन्न भारत अनुशासन, शान्ति क पर्व न शेष
क्रान्ति हेतु श्रीकृष्ण पाञ्चजन्य क ध्वनि फूकल देश
नाश नियत छल निर्माण क हित पूर्ण रूप अवतीर्ण
एकतन्त्रमय कयल महाभारत जे कीर्ण—विकीर्ण

९. बुद्ध—

यज्ञ – वेदिका पर सर्वस्व समर्पण होम विधान
बलि देव'क थिक स्वार्थ–भोग केर श्रौत मर्म संधान
निगम मंत्र अछि आगम तंत्र क रूप बिसरि गेल लोक
बोध देल पुनि बुद्ध आबि, सहजहिँ हिंसा केर रोक
जा धरि जातक सत्त्व न बोधेँ परम बुद्ध बनि जाय
ता धरि बुद्धि बोध देबा लय बुद्धक चलत निकाय

१०. कल्कि—

नव-नव अवतरणहु नहि देखल, भेल म्लेच्छ-पथ रुद्ध
दिश–दिश लुबधल लुब्धक दल, धरती धरि नहि परिशुद्ध

तखन दिव्य करवाल गहल कर, करबा लय संहार
कलि क कलुष - कल्मष मेटबा लय दशम कल्कि अवतार
नहि अनाथ क्यो जगन्नाथ युग - देवता क अवतार
जगत कलेश क लेश न शेष अशेष शक्ति संचार

दश महा विद्या

१. काली श्यामा (आद्या)—

शव आसन समसान वास जनि रूप भयाने
विकट दन्तुरित लहलह रसना तीनि नयाने
खड्ग मुण्ड वर अभय चारु चारू कर ध्याने
श्यामा नगना, मुख सस्मित, शिर शोभित चाने
ग्रीवा मुण्डक मालिका, रूप मनोज्ञ - करालिका
आद्या भगवति कालिका भक्त - जनक परिपालिका

२. तारा (द्वतीया)—

बीज मन्त्र हुंकार मुखर शिव हृदय आसना
प्रत्यालीढ अरुण - चरणा, जनि रूप वामना
नील वरनि फणि लसित लम्ब पिंगल कच कुञ्चित
खड्ग नील नीरज काता खप्पर कर मण्डित
सजग जगत जड़ताक जे चूल - मूल संहारिणी
उग्र द्वितीया शक्ति से तारथु तारा तारिणी

३. षोडशी—

बाल अरुन वरनी, त्रिलोचनी, विपति मोचनी
नाम वयस षोडशी, षोडशी कला रोचिनी
भुज युग धय धनु बान, पाश - अंकुश कर आने
जयतु शिवा भगवती षोडशी शिशु शिर चाने
षड् रिपु दश इन्द्रियक जय, कला षोडशक यदि उदय
चहइत जे जन मन अभय, षोडशीक गहु पद सदय

४. भुवनेश्वरी –

उगइत दिनकर किरण समाने कान्ति निधाने
चन्द्र किरीटिनि तुंग पयोधर गिरि उपमाने
अधर मधुर स्मिति रेखें लेखें नयन तीन तनि
वर आंकुश पुनि पाश अभय कर चारि चारु जनि
परमेश्वरि भुवनेश्वरी विदित जगत शरणेश्वरी
प्रणति पुष्प तति विनति युत तनिक चरण अर्पण करी

५. छिन्नमस्ता—

टप - टप रक्त तुबैत काटि सिर अपनहि हाथें
काता खप्पर लय कर, रंगिनि योगिनि साथे
अपन कबन्ध क सिरा - सिरा सँ रक्त क धारा
फुटय, पिबय तकरा मिलि जुलि, कत विकट उदारा
सिरमणि फणि वेष्टित चरण त्रियनि नगना रंजना
विदित छिन्नमस्ता करथु छिन्न भवक भय बंधना

६. त्रिपुरभैरवी—

सहस - सहस सहसा सङ उगइत हो कदा च रवि
तखनहि तनिक तनक द्युति अरुन वरन बरनत कवि
रक्त माल सिर, रक्त वसन, उर चन्दन रक्ते
त्रिनयनि, चन्द्र जड़ित मुकुटे, हँसइत अनुरक्ते
जयमाला वर, अभय कर वेद, अविद्या दारिणी
त्रिपुरभैरवी भीरुता हरथु, दुर्मति क हारिणी

७. धूमावती—

छितरायल सिर केश रुच्छ; नहि स्वच्छ वसन तन
ऊँच नाक मुह फाँक अधिक वपु वलित केहन दन
लम्ब उदर उर, विरल दन्त मुख, तिख रुख नयने
प्रकृति विकृत चंचल कठोर झझकथि कटु वयने
कँपइत कर धय सूप पुनि, तकइत कटु कुटिलेक्षणा।
विधुरा रूपहु वर - प्रदा धूमावती अलक्षणा।

८. बगलामुखी—

सुधा सिन्धु बिच मणि मण्डप रचि रतन क वेदी
सिंहासन क उपर राजित रिपु रसना भेदी
पीत वरनि - आभरनि देवि पीताम्बर - धारिणि !
जिह्वा - स्तम्भिनि भक्त क हित रिपु जीभ विदारिणि
वाम हाथ जिह्वा पकड़ि दहिन हाथ मुद्‌गर गदा
शत्रुमर्दिनी करथु जग बगलामुखी सुखी सदा

९. मातङ्गी—

श्याम वरन, दृग अरून, तरुन शशि शीश विराजित
तीनि नयन, मधुवयन, रतन सिंहासन राजित
करथि चारि भुज असि - खेटक-पाशांऽकुश धारन
मातंगी पद भजिअ चहिअ यदि भय क निवारन
मन मतंग उत्तुंग अति अंकुश ज्ञान क विमल मति
उन्मद उद्‌गत प्रेम रति मातङ्गी पद - कमल गति

१०. कमला—

कनक कान्ति, कौशेय वसन भूषित, नितम्बिनी
कमल पानि वर - अभय दानि, सिर हिम किरीटिनी
युग्म - युगल करिवर - कर कनक - कलश जल धारा
स्नपित नित्य कमला वितरथि सम्पदा उदारा
कमलासनि कमलालया कमल न किछु जनि आलया
तनि पद - कमल क आश्रया उरसा शिरसा मालया

जतरा चारू धाम

आइ हमर पतरामे उचरल जतरा सगुन ललाम
बन्धु ! अपन भारत दर्शन हित चलबे चारू धाम ।१

उपक्रम—

जतरा करब जनकपुरसँ पुजि पशुपति हिम-तट जाय
कपिलेश्वरसँ सिंहेश्वर धरि फुल - बेलपात चढ़ाय ।२
मगध अवध वैशाली, टोल - पड़ोसक संग समाज
पूजा साजी साजि चलब, हिल-मिलि स्तुति गबइत आज ।३

पथ-चंक्रम—

हिमवत शीतल छाँह उत्तरे दक्षिण मलय - समीर
सागर सब तरि तुंग तरंगें बजबय गिरा गभीर ।४
गिरि - निर्झर कहइछ, झटकारि चलिअ, नहि लगबिअ देर
जीवनकें गतिमय बनबिअ, नहि करिअ अनर्थ अबेर ।५
गाछ-बिरिछ फल-दल लय कहइछ, नहि पाथे किछु काज
छाँह हमर बिसराम करिअ रुचिमत भोजन निर्व्याज ।६
निर्झर नदी हाथ झारी लय पानिक करय प्रबंध
पुरिबा पछबा बिअनि डोलाबय कहय, थमब नहि पंथ ।७
गाम-गाम मठ, नगर - नगर मन्दिर परिसर विस्तार
टोल-टोल मे पीठ गोसाञिक चर-चाँचरहु विहार ।८
वन-वन माइक थान, कुंज - पुंजहु वृन्दावन नाम
भारत देशक दरस-परस हित चलबे चारू धाम ।९

पूर्व धाम

प्रथम चलब हम पूब, जगन्नथियाक गीत - मधु कंठ
झारखड बिच वनवासिक परिचय करइत उत्कंठ।१०
धुनि महेशवानी तिरहुति पुनि गाबि नचारी गीत
बाबाकें चढाय गंगा - जल, पथ धय चलब अभीत।११

असम कामरूपक दूरहिसँ करइत प्रेम प्रणाम
वर्धमान नदियाक साधना प्रति श्रद्धा - सम्मान।१२
अंग लगाय वंगकें, उत्सुक उत्कल करब प्रवेश
मन पड़तै तखनहु कखनहु कय तिरहुति धनिक सनेस।१३

पाथे सठत न पथ, तीर्थक पथिकक सब तरि सम्मान
हमर देश ई अमर, सदावृत चलइछ घर-खरिहान।१४
रौदी - शीत, तृषा - वर्षा पथ - पाथर, काँकड़ - पाँक
विजन भयान वनक विच निच-उँच पथ कत सोझो-बाँक।१५

दूरहिसँ सागर गरजन धुनि सुनि उछलय मन-प्रान
आँखि जुड़ाइछ बाबाकेर मन्दिर फहराय निसान।१६
चूमि भूमि, नत चूल चढ़ायब मन्दिर—बाटक धूल
करु न विलम्ब आब बाबा ! दर्शन दय हरु उर शूल।१७

द्वारि पहुँचि झुकि, भक्त दर्शनी पद-रज तिलक लगैब
कत गोहराय जनम संचित पुन-बल पुनि दर्शन पैब।१८
दारु मुरुति श्रीनाथ जगन्नाथक देखब भरि नैन
झाँकी आँकब सघन मनक पट लिखित रूप विनु वैन।१९

अटका अटकि चढ़ाय, नहाय लहरि लय सागर-कूल
जनम-जनम केर अघ-मल मलिन छोड़ायब दाग दुकूल।२०
नीलाचल लग सिन्धुक तट पुरिबाक लहरि लहराय
एहन धाम बसि जगन्नाथ शंकर सब लेल बचाय।२१

दक्षिण धाम

समय संक्रमण, अतिक्रमण नहि करब, चलब अबिराम
उत्तर-दक्षिण सन्धि सगमी मठ-मन्दिर अभिराम ।२२
मांझ साँझ यदि पड़य, कदाचित विजयानगरम् जाय
विद्यारण्य बुक्क - हरिहर परिसर पर माथ झुकाय ।२३
द्रविड निविड, आतापी-तापी मुनि अगस्त्य जत व्यस्त
सिखब तामिलक अमिल कड़ी कड़गम सरिगम स्वर न्यस्त ।२४
तखन चलब पुनि सागर-तीरे दक्षिण मलय समीर
जतय ज्वलित आग्नेय त्रिलोचन-दृष्टि त्रिकोणी तीर ।२५
लका कंचन क्षार राशि क्षाराम्बुधि जतय विलीन
नल नीलक रचना वैभव जत सेतुक शेष अलीन ।२६
जलधि लंघनक, सेतु बन्धनक जनि' बल सहज उपाय
रामेश्वरम् महामन्दिर अछि सुन्दर भूधर राय ।२७
स्वयं प्रतिष्ठित कयलनि निष्ठा- सहित दाशरथि राम
शंकर पूजित, पूजिअ भरि - भरि गंगाजली ललाम ।२८

पश्चिम धाम

तदनु दच्छिनक ओर-छोर दय अब्धिक शब्द अकानि
केरल शृंगिमठक श्रुतिपाठक ध्वनि पावन सन्मानि ।२९
काञ्ची मीनाक्षी मदुराक प्रदक्षिण दक्षिण भाग
करइत दिग्-विभाग, पश्चिम दिस चलब कलित अनुराग ।३०
दूरहिसँ देखब उछलैत तरंग सिन्धु उत्तुङ्ग
मन्दिर मण्डित कनक-किरणसँ जनु सुमेरुहिक शृंग ।३१
द्वार सागरक पश्चिम लच्छित पुरी द्वारका धाम
जतय छोर पर आबि बसल रण-छोर कृष्ण बलराम ।३२
जरासन्धसँ सन्धि - बन्धि पुनि नीति पछाड़ल गेल
अरि क गर्व भेल खर्व, यदपि रन-बनहु गछारल भेल ।३३

महाभारतक निर्माणिक आधार - शिला अनुबन्ध
मथुरा-वृन्दा-गोकुलकेर रस-गली गलित, निर्बन्ध ।३४
पाश्चात्यक विचार वात्या न भविष्यहु सकय हिलाय
तें आचार्यवर्य गुरु शंकर थापल पीठ निकाय ।३५

उत्तर धाम

ततय पथिक ! किछु काल बिलमि वंकिम पथ विन्ध्य अखंड
उन्मुख चौदिस परिक्रमण कय चलब उत्तरा खंड ।३६
बिच बिच गुर्जर सिन्धु कच्छ सौवीर पचनद प्रान्त
राजस्थान प्रभृति जन जनपद पद - पद चलि अभ्रान्त ।३७
संग्रामी बलिदानी बीरक गढ़-गढ़ीक पढ़ि वृत्त
अपन देश - गौरव गुण-गाथा सुनि मन करब पवित्र ।३८
गुर्जर महाराष्ट्र सौराष्ट्र विदर्भ आन्ध्र सन्दर्भ
अवधक अवधि वत्स कौशल कनडेरियहु तकइत वर्ग ।३९
मण्डल - मण्डित देश अखण्ड भरत - खण्डक दिक्पाल
बदरी-केदारक यात्रा अहँ करब पथिक नतभाल ।४०
पूजि हिमाद्रि अवस्थित वैष्णव, कुंकुम रंजित वेश
गंगा डुब दय, मानस रस लय, प्रविशब नगपति देश ।४१
पुनि बदरी-केदारक दर्शन जनम न दोसर योनि
उत्तर आश्रम गमन-श्रमक अछि उचित मुक्तिहिक बोनि ।४२
श्रीबदरी - केदार पुजब हरि हर, पूरब मन काम
ज्योतिर्मय जोशीमठ दर्शन करइत ललित ललाम ।४३

× × × ×

समारोप—

मोक्षधाम चारू घुमि फिरि अहँ फेर फिरब निज गाम
जहि ठाँ चतुर्वर्ग फल निर्भर स्वर्ग न जकर उपाम ।४४
कमला वाग्मती जल सिंचित गाम - टोल लगिचाय
देश दर्शन क कथा सरुचि शुचि सबके देब सुनाय ।४५

भारतीय नागरिक निपुण अहँ, विदित मैथिले नाम
पतरा मे जतराक सगुन फल पायब अपनहि गाम ।४६
जीवन जतरा बनल सगुन गुनि लोक वेद अभिराम
भारत भूमिक दरस परस हित देखल चारू धाम ।४७

सप्तपुरी

१. अयोध्या—

अवध धाम जत परम पुरुष रामक अवतारे
जनिक सुयश - अवदात चरित धवलित संसारे
सरयु सलिल पावित, रघुकुल लालित शुचि धन्या
बौद्धिक जुझि नहि सकथि, अयोध्यापुरी अनन्या
रघु दिलीप अज दशरथक रथ-पथ शत गाथा लिखित
कुठित बैकुण्ठहुक रुचि दृग-पथ चित रहु अवतरित

२. मथुरा—

शूरशेन जनपद मुकुटक मणि मधुरा मथुरा धाम
जतय अवतरित परम ब्रह्म लीलाहित लीलाधाम
अधर मुरलि, कर चक्र चंक्रमण, हाथ राखि रथ रासि
गोपी-उर चन्दन, रिपु-कन्दन ज्ञान - पन्थ उद्भासि
कंस ध्रंसि, कुरु-वंश ध्वंसि, मुनि मानस-हस, अनन्त
तनि पद-पद्म सद्म जत अंकित बसिअ मुक्ति हित अन्त
मधु रिपु मथि, रिपूसूदन सदन बनाओल रुचिर ललाम
पुनि मधुसूदन मधुपुर रजलनि मधुरा मथुरा नाम

३. माया—

माया पुरी उत्तारा खंडक सुविदित गंगा - द्वार
यज्ञमयी सुरगवी अथ च धर्मद्रवीक संसार
पुनि जुमि कहवे मही महामायाक तिरहुतिक द्वार
जतय सिराउर सँ सीता भगवती लेल अवतार

४. काशी—

भूतल रहितहु जे त्रिलोकसँ अधिक बढ़ल छथि
रहितहु जगतक शूल, त्रिशूलक उपर चढ़लि छथि
वरुणा - असिक संगमहु वारुणि रस न परसइछ
गंगा भरहु नगर गगाधर गरल न गरइछ
शीतल वाहिनि गग पुनि अंगहु ज्योतिर्लिङ्गमय
विश्वनाथ बसबैछ बसि विश्व, बास काशीक जय

५. काञ्ची—

दक्षिण सतत प्रदक्षिण करवे काञ्ची काञ्चन धाम
सञ्चित करवे पुण्य राशि, वञ्चित नहि जीवन याम
एक बिम्ब प्रतिबिम्बित दुइ वैष्णव शैवक आदर्श
हरिहरात्मिका अद्वैतक साक्षात्कार उत्कर्ष
भुक्ति - मुक्तिदा पुरी वैष्णवी शैवी भारत भूमि
देखल संगरो नगरो-डगरो, अनत न, जगती घूमि

६. उज्जयिनी—

इत विजिते जत नगर-पुरी, उत जयिनी लोक ललाम
उज्जयिनी, धन-जन विशाल, तें उचित विशाला नाम
महाकाल छथि वासी, हुनक उपासी कोना उपास
पड़ते ? तें न अकाल-दुकालक पतो जतो जनवास
विक्रम विदित अनुक्रम एखनहु, मालव भूमि अनन्य
जन जनपदक अवन्ती, जन-धनवन्ती नगरी धन्य

७. पुरी—द्वारवती—

दूर सिन्धु सौवीर द्वार-पर द्वारकाक अछि सोर
जरासन्ध रोधित मथुरा तजि चुपहि बसल रन छोर
भारतवर्षक हर्ष-द्वार, जलपथ आक्रमणक पार
पीठ सांस्कृतिक संक्रमणक शंकर द्वारा उद्धार

सागर जल क्षालित दुआरि-घर प्लावित पुण्य प्रदेश
एखनहु माटि चढ़ायब माथे मुक्ति पुरी अवशेष
× × × ×
सप्त पुरी लाक्षणिक पुनि पुरी दारवी पूर्वतन
जगन्नाथ – पद माथ जे नवथि ने जनमथि जन भुवन

द्वादश ज्योतिर्लिंग

१. 'सौराष्ट्रे सोमनाथञ्च'—

भारत राष्ट्र अखंड, जकर भू - खंड एक सौराष्ट्र
सोम याग जत युग-युगसँ छल चलित, विदित पर राष्ट्र
शिशु शशि भासित शिव ज्योतिर्मय वसथि काठियाबाड़
क्षेत्र प्रभासक मन्दिर चन्दिर नहि कहिओ दृग आड़
कत लुंटाक क दल चढ़ि आयल लुटय देश अभिमान
सोमनाथ ओम् - नाद निनादित ज्योतिर्मय भगवान

२. 'श्री शैले मल्लिकार्जुनम्'—

द्रविड-सरित कृष्णाक पुलिन लग, अंबर, - चुंबी शृंग
विदित दक्षिणक जे कैलास अपर, श्रीशैल उतुंग
जतय दर्शनक हित बुध-वर्ग, विबुध स्वर्गहुसँ आबि
दुर्ग - दुर्गतिक तरण हेतु सुनबथि स्तुति गीतो गाबि
भक्ति-सूत्र मे गाँथि मल्लिका माला चढ़बिअ तात !
ज्योतिर्मय शिव - लिङ्ग मल्लिकार्जुन नामें विख्यात

३. 'उज्जयिन्यां महाकालम्'—

उज्जयिनी अथवा अवन्तिका नगरी मालब देश
कालमापिका अद्यावधि माध्यमी ज्योतिषक शेष
काल कलन, विकलन अकालहिक महाकाल सदिकाल
क्षिप्रा तट पर क्षिप्रहि हरइछ क्षुद्रताक जंजाल
जनिक दर्शनहिसँ अकाल - मृत्युक विभीषिका दूर
ज्योतिर्मय जय काललिङ्ग करु ! भुक्ति मुक्ति दुहु पूर

४. 'ओङ्कारम्-अमलेश्वरम्'—

मालव खण्डहिँ मध्य भारतक खण्ड खण्डवा अंग
ज्योतिर्लिङ्ग द्विशिख अमलेश्वर - ओंकारेश्वर संग
कर्म ज्ञान जनु संगत जत नर्मदा नदी कावेरि
मान्धाताक विदित नगरी तत बसथि युगल, युग ढेरि
ओंकारक संग बम्-बम् - हर-हर जयकारक जत सोर
भक्ति-भाव, श्रद्धा-आदर, नत - मस्तक लागिअ गोड़

५. 'परल्यां वैद्यनाथञ्च'—

भारत भूमिक पूब कने पुनि उत्तर गिरि वन प्रांत
झारखंड शुचि चिता-भूमि जत भूत-प्रेत एकांत
पुजइछ लंकापति - थापित कैलास-वासि गिरिजेश
आगमविद जनइछ जनिका कामद शिव नित्य परेश
देव-असुर दुहु दलसँ पूजित ज्योतिर्मय जनि रूप
बाबा विदित वैद्यनाथे भव-रोगक वैद्य अनूप

६. 'डाकिन्यां भीमशङ्करम्'—

सह्याद्रिक दुर्गम शिखर स्थिति निर्जन भूमि भयान
भीमशंकरक सदन,भूत - प्रेतादिक क्रीडा - स्थान
सेवित सतत डाकिनी शाकिनि संग समाज बसाय
भीम भयाकुल जनक अभयप्रद पदके पकड़िअ जाय
जतय चन्द्रशेखर निज किरणेँ हरथि ताप निःशेष
वरद वरदवाहनक करिअ श्रद्धा-अभिषेक विशेष

७. 'सेतुबन्धे तु रामेशम्'—

दूर दक्षिणक देश सागरक लोल लहरि कल्लोल
भारतवर्षक ओर - छोर किछु पुबाहुते उतरोल
सेतु बन्धु जत शेष चिह्न एखनहुँ पाषाणी शृंग
जतय स्वयं दशवदन - निधनकारी प्रभु थापल लिंग

भेल सफल अभियान राम - अभिधान भुवन अभिराम
दरस-परस रस सफल जीवने, पद-रज करिअ प्रणाम

८. 'नागेशं दारुकावने'—

दक्षिण दूर-दबंग सदंग नगरमे दारुक कानन माँझ
नाग-विभूषित, भोग-रागसँ पूजित नित्य भोर ओ साँझ
भोग दानमे, योग ध्यानमे मुक्ति प्रदानहुमे विख्यात
नागनाथ नागेश नटेश्वर रटिअ नाम शिव शशि अवदात
ज्योतिर्मय शिवलिङ्ग सविष रहितहुँ निर्विष विषयक आभोग
अंग अगना संगत रहनहु, करथि नित्य-नियमित शिव योग

९. 'वाराणस्यां तु विश्वेशम्'—

स्वयं अन्नपूर्णा भंडारे, जनि भैरव रखवारे
साक्षी स्वय विनायक, माधव मीत बसथि बगवारे
उत्तर वाहिनि हिमजा गंगा बहइछ शीतल धारे
काशी लोकोत्तर नगरी श्री विश्वनाथ दरबारे
मरण जतय भय हरण, बालु कण कनकहु अधिक अमोल
मुक्तिक मौक्तिक जत-तत भेटइछ बिनु ज्ञानहुँ बिनु मोल

१० 'त्र्यम्बकं गौतमी-तटे'—

गोदावरी दक्षिण क गंगा विदित गौतमी तटे पुरा
पञ्चवटी निकटे वट–छाया शीतल हीतल जाय जुड़ा
सह्याद्रि क शुचि शिखर ब्रह्मगिरि ततय बसँ छथि साप धरा
त्र्यम्बक ज्योर्तिलिङ्ग महेश्वर हरइत पाप ताप निकरा
झाँकी आँकब त्रिलोचनक तत पहुँचि निहुछि माया–ममता
भुक्ति मुक्ति बिनु युक्ति सँजोगब, पायब पद लहि सुर-समता

११ 'हिमालये तु केदारम्'—

धवल हिमाचल सजल शृंग उत्तुङ्ग विदित केदार
पच्छिम मन्दाकिनी सलिल सिंचित थल विशद उदार

स्वयं ज्योति रूपे लिङ्गायत श्री केदार महान
जनिक पूर्व दिस बदरीनाथ विराजित छथि भगवान
खण्ड उत्तराश्रित शिव जाग्रत जगत जीव कल्यान
तनिक दर्शने सफल करिअ सहजहिँ लोचन मन प्रान

१२ 'घुश्मेशं च शिवालये'—

विन्ध्य पर्वत क पार आन्ध्रदेशक सीमा जत धाम
नगर इलापुर पुरातनक, अधुनातन बेरुल गाम
अति उदग्र अर्चित समग्र पृथिवीक ज्योति उदयन्त
लिंग रूप परमेश शिवक घृष्णेश्वर विदित उदन्त
घुश्मेश्वर क्यो, घुसृणेश्वर क्यो,नाम जपथि शुचि भाव
विपदा हरथि संपदा बितरथि, अति उदार अनुभाव

स्नातक

ताप तपित तन, मनहु मलिन घन, राग–द्वेष मल-मूल
असोथकित जीवन मरु-पथ चलि, उधिआयल अघ-धूल ।१
चित जागल कहि रहल सहज स्वर, जनु निर्झर संगीत
चलिअ सतीर्थ्य ! तीर्थ जल प्रस्तुत अमृत मधुर हिम-शीत ।२

× × ×

गिरि कैलाश शिखर गंगाधर सुरसरि शीश चढ़ाय
स्नातक स्वयं, कहथि संकेतें अहुँ पहुँचू गिरिराय ।३
हिम-शीतल हीतल करु शुचि रुचि मानस प्रथम नहाय
द्रवित शैलजा सुरसरि सद्यः-स्नात, अमर करु काय ।४
कविगुरु जनि गिरिगुरु क अस्तिकें स्वस्ति देल विश्वस्त
उत्तर दिग् पति नगपतिकें देवात्मा कहल प्रशस्त ।५
तनिक अंग – संगिनी मानसी सरसी सरस सदैव
स्वर्ण सरोज सुरभि रस रंजित पयस्विनी वसुधैव ।६
ब्रह्मपुत्र जनि अंगज पूर्वज कय अपूर्व विस्तार

उत्तरोत्तरे त्रिवृत त्रिविष्टप प्रवहमान शुचिसार ।७
नाग भूमि दय, असम भूमि भय, बंकिम वंगक द्वार
पद्मा गंगा – संगत संगहि कयलनि सिन्धु विहार ।८
हुनि जल मार्जन – परिमार्जन कय पुनि पश्चिम दिस जाय
मानस – सुता सिन्धु सरिताकेर बिन्दु पुजब सरिआय ।९
जतहि आर्यजन बसल चिरन्तन सिन्धु हिन्दु अभिधान
एखनहु धरि सगर्व अभिनन्दित सुविदित हिन्दुस्थान ।१०
विदित पचनद सतलज झेलम राबी व्यास चनाव
डुब दय चुभकब हुलसि – फुलसि पुनि-पुन अर्जब पंजाब ।११
पुनि पुनि उत्तर खंड हिमाश्रित घुमब – घमब अक्लांत
सत – रंगा एकहु गंगा गति – भेद बहथि कत प्रांत ।१२
गिरि निर्झर प्रस्रवण स्रोत शत बिन्दु - बिन्दु जल संग
गोमुखी क मुख द्रवित अलकनन्दा गंगाक तरंग ।१३
हरद्वार दय खल-खल हँसइत कनखल करइत पार
ग्राम - नगर परिसर वन - पाँतर भरइत शुचि संस्कार ।१४
दृग विवर्त ब्रह्मावर्तक दिस, हटि मेरठ कनडेरि
बिच बिच ब्रह्मर्षि क ऋषिकेशक सरस्वती श्रुति टेरि ।१५

... ...

गंगोत्रीसँ सहटि कनें हटि यमुनोत्री पश्चात्
कृष्णा कृष्ण प्रेममे झामरि चलति डगरि एकात ।१६
यमुना जल कज्जल अवगाहब श्याम रंग रुचि बोरि
वृंदा कुंज गली गोकुल मथुरा नगरी मधु घोरि ।१७
इन्द्रप्रस्थ दिल्ली पूर्वापर युग - युग जत रजवास
लहरि - लहरि उत्थान - पतन पढ़ि बिंदु - बिंदु इतिहास ।१८
राजघाटपर — विजयवाट पर – श्रद्धांजलि चढ़बैत
नव — पुरान जत बुर्ज - दुर्ग कटु मधु कन कनक बिछैत ।१९
धवल महल ताजक प्रतिबिंबित जल मलिना यमुनाक
शाही प्रेम किलाबंदी पुनि बंदी शाहजहाँक ।२०

यमुना कज्जल, गंगा उज्ज्वल, संगम रंग प्रयाग
मकर कुम्भ डुब दैत छोड़ायब जनम - जनम केर दाग।२१
अक्षय वट तट जाय भरद्वाजक आश्रमहु घुमैत
जखन - तखन मन झूस यदि च झूसी पहुँचब सेबैत।२२
गोमतीक चक्रक चंक्रम, क्रम लघु - लघु ललकि मिलैत
बिच बिच शाखा सखी सहायक, गंग अंग लगबैत।२३
उत्तरवाहिनि काशी गंगा बिंदु - बिंदु मणि कर्ण
घाट - घाट पर अश्वमेध जत माटि - माटिमे स्वर्ण।२४
स्नान - ध्यान गुन - गान विश्वनाथक कय बनब सनाथ
अन्नपूर्णा चरण रेणु धय माथ, न रहब अनाथ।२५
मर्यादा पुरुषोत्तम रामक सरयु सलिल उछलैत
भागीरथी ! कृतज्ञ मिलिअ भगिरथ छथि ओतहि बसैत।२६
गंज - गंज झाड़ी - झुरमुट कत कुंज - कुंज अविराम !
नगर - डगर पुर - पथ कत गाम - गमइ क तटहु बिसराम।२७
एम्हर सदानीरा - शालिग्रामी - गंडकी, त्रिभुक्ति
ओम्हर मगध - तट सोन स्वर्णकण, पाटलिपुत्र प्रसक्ति।२८
नन्द - मौर्य ओ शुंग - गुप्त, विक्रमक पराक्रम रीति
चाणक्यक गुनि नीति, अशोकक धर्म - चक्र उर प्रीति।२९
लगहि शिला विक्रम, नालंदा शिक्षा - केन्द्र उदार
घर - घर एम्हर विकेन्द्रित मिथिला सुविदित विद्यागार।३०
विलमु कने नाविक ! तिरहुति ई, तीर - तीर अछि भुक्ति
उतरि एतय छन बिछय दियऽ बिखरल कन मुक्ता मुक्ति।३१
एतहि हमर वाग्वती बहै छथि शुचि - रुचि लघु - लघु स्रोत
वाग्बीज क उर्वरक जनिक जल कवि कल्पना इजोत।३२
कमला कलकल, जीबछ छलछल, बलबल बहय बलान
कोस कोस सँ कोसिक गरजन सुनबे यदि न अकान।३३

लखन - देवि तिलयुगा धेमुरा गंडक कुटिल कड़ेह
सीमा सदा सदानीरासँ सजल रहैछ विदेह ।३४
कूप कुंड सागर दिग्घी पोखरि चर-चाँचर जाय
चुभुकि चुभुकि मन भरब, हरब श्रम, जी भरि नदी नहाय ।३५
कुटिल कुशिक कन्या कोसी जे छली कुपित किछु पूर्व
आइ सुबन्ध बन्धुता सँ छथि भेलि प्रसन्न अपूर्व ।३६
मिलइछ स्वच्छ मने गंगा - बहिनिक सँग तुंग तरंग
कोसी पौषी अमा नहायब सिंहेश्वर पुजि संग ।३७
रौदी दागल देह, बाढ़ि बहिआयल सालक साल
अछि अभ्यास स्ववश वा विवशहु स्नातक काल अकाल ।३८
पूर्व - पूर्णिमा कमला जायब, सकराँतिहु त्रि-मुहान
जेठ - दसहरा वारुनि अर्धोदय गंगा असनान ।३९

बिचहि अजगबीनाथ गंग बिचे जनपद अंग न दूर
तनि जलधारा पुजि, अभाग दुरि भागब भागलपूर ।४०
मुद्गलपुर मुंगेर दुर्ग कर्णहुक, कष्ट - हरि घाट
बाद मुर्शिदा प्लासी रंग फिरंगिक उत्कट काट ।४१
पुर परिसर नव नव तटवर्ती हुगली हुलसि विशेष
कलकत्ता काली क परसि पद ललित, तरंगित देश ।४२
बिच-बिच मठ बेलूर दक्षिणेश्वर मा देवी घाट
राम - कृष्ण पद अंकित एखनहु मणि छितरायल बाट ।४३
माघ मकर सकराँति तुलायल सागर संगम तीर
कपिल जठर क्रोधानल दग्धल सगरक सुत अशरीर ।४४
अपराधहु उद्धार जतय पुनि दण्डहु मुक्ति अनन्त
डुबा दय पाप क राशि डुबायब सागर संगम अन्त !!४५

विन्ध्य–शृङ्खला—

मध्य विन्ध्य दक्षिण पूर्वापर पुरी - कच्छ विस्तार
कत नद-नदी खात - परिखा जल रेखा लेखा - पार ।४६

जत जे गिरि-प्रस्रवण नीर गिरिनार नहरि जलखात
मज्जन-मार्जन, स्नान-आचमन तर्पण अर्पण तात ।४७
चर्मण्वती तापती वैतणीहुक तरणी युक्त
दूर कर्मनासाहु प्रवाहित कय कलि-कलुषहु मुक्त ।४८
महानदी वा क्षुद्रहु क्षिप्रा रेवा रेखा धार
जलमय रसमय स्वादु-शीतला उपाहार उपहार ।४९
झील नीलजल कूप नहरि बल स्नातक नित्य अखेद
राजस्थानक सैकत पथहु पटायब श्रम-शुचि स्वेद ।५०

दक्षिणापथ—

चित्रकूट केर घाट-बाट बसि रामगिरिहु सिर टेकि
आश्रम जतय जनक-तनया स्नाने पवित्र अभिषेक ।५१
शीत-भीत कहुँ, थकित पथहु कहुँ सीता-कुण्ड नहाय
एखनहुँ व्यथा-कथा उच्छ्वासें धरनि नोर गरमाय ।५२
झंप लेब पंपा-पुष्कर अवगाहि ब्रह्म-पद टेक
नगर-डगर मल परस न निर्मल नर्मदाक जल सेक ।५३
कृष्णा काबेरी गोदावरि वारि बिन्दु कय पान
शंकर रामानुजा मधु बल्लभ आलवाड़ पद ध्यान ।५४
मन्दिर - मन्दिर चढ़य तीर्थ - जल कुंड-कुंड जत पूत
झुंड-झुंड जुमि तीर्थ पथिक जत दर्शन गति अनुभूत ।५५

सागर-स्नान—

चरम चरण हम क्षीर दुग्ध दधि उपमित सिन्धुक बिन्दु
लहरि लैत उबडुब चुभकब उत चमकत पूर्णिम इन्दु ।५६
वंग कलिंग क तट आन्ध्रक पुनि तमिल केरलक कूल
सह्य मलय पूर्वापर गिरि तट कच्छ सिन्ध उपकूल ।५७
लहरि-लहरि नीलाभ गगनसँ बतियाइछ किछु आन
उभय अनन्वय, उपमेयोपम सागर गगन समान ।५८

दूर-दूर धरि शून्य - न्यून नहि सागर जल विस्तार
बुझि पड़इत छथि एक रूप प्रभु निराकार साकार ।५९
अति उत्तुङ्ग तरंग शिखर पुनि गर्त-विवर्त घुरैछ
जीवन जनु उत्थान-पतन बिच अह-निस चक्र चलैछ ।६०
अति गंभीर, थाह नहि निस्तल परस न भूतल अत
लवणाकर रक्षाकर निन्दा - बन्दा परे दुरंत ।६१
मीन पीठ क्रत मगर मच्छ-कच्छप नहि अकछय जान
लघु विशाल जलपोत, गगन जनु उड़य विहग अनुमान ।६२
उदर समेटि रत्न रत्नाकर विभु वैभव भंडार
आँक-माप वा शब्द तर्कसँ स्वयं परात्पर पार ।६३
दक्षिण ओर-छोर पर दुहु दिस चचलता गाम्भीर्य
जनि संगत प्रसादमे उद्धत ओज, शान्ति माधुर्य ।६४
अतलान्तक गर्वी अर्वी पश्चिम दिश सिन्ध समीप
पूर्व हिन्द सागर प्रशान्त अंचल कुमारिका द्वीप ।६५
जतय गभीर विवेक कलित उच्छल आनन्द उदार
उमा-महेशक मिलन बिन्दु सर भारत दक्षिण द्वार ।६६
पच्छिम कच्छ स्वच्छ जल विदित पुरी द्वारका धाम
द्वार पश्चिमी सजल सुरक्षित सिंचित रस बसु याम ।६७
आ-समुद्र धरती परती नहि पड़ओ, सजल परिवेश
सुजला सुफला शस्य श्यामला भारत भूमि अशेष ।६८

जल-महिमा—

प्रथम सृष्टि जल, जीवन थिक जल, जलद–जलद जल योग
सजल सजीव जगत, पुनि निर्जल नहि जीवन उपभोग ।६९
मनु पहिनहु जल प्लावन बिच रचि मानव ज्ञान निसर्ग
मीन पीन बनि प्रलय-जलधिसँ कयलनि श्रुति अनुसर्ग ।७०
कमठ पीठ, मंदर मंथन, रजु शेष सुरासुर संग
विष-पीयूष, रमा-रंभा, गज तुरग, रतन कत गंग ।७१

रमा-रमण अपनहु करइत छथि, शयन जतय एकांत
शिव रामेश्वर उतरि शिखर कैलास, बसल तट प्रांत ७२
भारत त्रिवृत सिंधु जल उत्तर दिसहु द्रवित हिमवान
सजल मूर्ति, सर्वोपरि वर्षा शिव जलधारा स्नान।७३
स्वयं हिन्दु नामहुमे सिन्धुक सरस परस अभिधान
अधुनातन युगहुक शिक्षित जन स्नातक बनथि प्रमान।७४
प्रथम अतिथि पूजन मे जलहिक अर्हणाक व्यवहार
शासन-आसन राज्य ग्रहण शुचि अभिषेकेक प्रचार।७५
पितरहु हित तर्पण शब्दहि जल-अंजलिहिक विधि बोध
घन-रस उर्वी उर्वर, जल-बल हरित क्रान्ति अनुरोध।७६
शिव सद्यः स्नातक छथि सिर धय, गंगाजल अविराम
शयन सागरे, नार नीर–अयने नारायण नाम।७७
लय कर सहज कमंडलु ब्रह्मा कमलासन विख्यात
इन्द्र वृष्टि जल देव वरुण पूर्वापर दिक्पति ज्ञात।७८
छोड़ि 'सहस्रं स्नानमाचरेत्' नीति अपन अपनाय
स्नातक सार्थक बनबे चिन्मय भारत तीर्थ नहाय।७९

गाम-धरती

पीठिका

गाम नामसँ परिचय - पातहु ग्रामहि शाखा-मूल
व्यक्ति सुमन ग्रामटिका वल्लिक अभिव्यक्ति अनुकूल
भूमि भूमिका स्वयं, भूमि-पृष्ठक की पीठाधार
अपन गुरुत्वाकर्षण बल चुम्बित कय सार - असार
तदनुरूप ई भक्ति - बोधिका ग्राम - दर्शिका क्षुद्र
ज्ञान तृतीया दृष्टि - वृष्टि बल हरथु अशुभ शिव रुद्र
अहंकार कय क्षार शुद्ध संस्कार निरंजन ज्योति
सजओ आरती मनोभारती उज्ज्वल अक्षर मोति
उर - दीपिका सिनेह ढारि प्राणक बाती संयोगि
मृण्मयीक शुचि सहज अर्चना, कवि कविता अनुयोगि

... ...

आनल अछि हकारि हम मधुप किरण यात्री कविबंधु प्रसंग
मोहन अमर कलेश शेखरहु आरसीक रस सिन्धु तरंग
कृपा बिन्दु श्रीयुत गिरीन्द्र मोहनक चन्द्र नारायण भक्ति
श्री शशिनाथहु, श्रील रमानाथहुक सरस सौजन्य प्रसक्ति
कविवर सीताराम, वृद्ध जनसीदन, कवि शेखर पद छन्द
सहदेवहु त्रिलोकनाथहु प्राचार्य उपेन्द्र, जीव आनन्द
धर्मराज निरसन जटेश्वरहु दयानाथ कत बुध-मूर्धन्य
कर्म ज्ञान शुचि रामनन्दनक, प्रतिभा रामचन्द्र रुचि घन
जयकिशोर भुवनक रस संभृत, गंगानन्द कुमार अपन
दत्तबन्धु शिवपूजन जीक सहाय सतत दुर्लभ अनुबंध

महारथीक प्रेम-रथ चढ़इत रहलहुँ पहुँचि कला रस-बंध
श्रीनरेन्द्रनाथहु सनाथ, पुलकित सरोज कत धनुष अभंग
सहृद-सुहृद किछु छथिहे किछु गत, किंतु सतत स्मृति वनल तरंग
रुचि सम्बन्ध विश्वनाथहु श्रीकृष्णहु पाल-नवीनहु संग
श्री शैलेन्द्र गोविन्द माधवहु पुनि कत शिक्षक शिष्य प्रसंग
गुणी पंडितक, कवि कोविदक कला संगीतविदक बंधुत्व
मिथिला अंकहि, दरभंगे गहि सरस गाम-बिन्दुहु सिन्धुत्व
मातृक उदयन-अयन करियनक श्रीशशिकांत उगंत अनंत
चन्द्रकांत गणनाथ प्रभृति प्रिय जन वर्धित उपेन्द्र रुचिवंत
मिहिर स्वदेश मैथिली-मंदिर मिथिला-अंग संघ कत बन्धु
कयलनि तृप्त पहुँचि गामहु घर कय पवित्र दय स्नेहक बिन्दु
लीला रस रघुनाथ सुयश दश योगी नारायण रामहु
नाम अनामहु बिसरल सुमिरल सहचर परिचर अभिरामहु
आइ ग्राम-पूजनक पर्वमे प्रेम प्रसून सभक स्मृति रीति
संचित करइत रहब न वंचित रंजित सुरभित सुमनक प्रीति

गाम-धरती

चास-वास : भूमि-आकाश

तीरभुक्ति जनपद जत अभिमत सजल नदी तट वास
कोस - कोस कमलाबाहा चर - चाँचर कत रतरास
ततहु उर्वरा वसुन्धरा बाग्वती - कड़ेह दो - आब
भदइ अगहनी रबी फसिल समतुल धन-धान्य प्रभाव
द्रुम-वल्ली तृण - गुल्म सजल दल फल-फूलहु अभिराम
आकर्षक कर्षक-गण पूजित जय बल्लीपुर गाम

... ...

हरित खेत, खरिहान भरित, मठ- मन्दिर घंटा-ध्वान
गीत-नाद आङन अनुनादित श्रुति स्मृति कवित दलान
गोष्ठी गप - विनोद अनुमोदित घर - घर स्वागत - मान
जतय छनहु भरि बिलमि बैसि बिसरथि पथ पथिक थकान

गायक पहलवान क्रीडा-कौतुकी नाट्य-रस लीन
पण्डित-ज्योतिर्गणक साधु-संतक सत्कार प्रवीन
फगुआ रंग-अबीर, जूड़-शीतल जल-पाँक विनोद
दशमी दीपावली झूलनोत्सव जत विविध प्रमोद
दुर्गा–मेला, शरद कौमुदी, हनूमन्त-धूजाक
एखनहुँ स्मृति पट अटल दृश्य अछि धन्वतरि-पूजाक
कतहु नगर-कीर्तन जुलूसमे सुनबे हरि-हरि बोल
झरनी खेलइत झुण्ड-झुण्ड जगी दाहा कहुँ घोल
नाम चौधरिक गाम मिश्र झा पाठक राय बसैछ
कापड़ि यादव दास मरड़ सब जाति बंधु सँग दैछ
नौआ बाभन धोबि मालि जत गोंढ़ि कुम्हार कुमार
इर-जन हरिजन श्रम-व्यवसायक बन्धु सभक सत्कार
जीवन-पद्धति मिलल सरल सादा, सबमे भैआरी
व्यसन-उत्सवक समय देखवे अपनैती कत भारी
भार-दोरकेर साँठ-माँठ ओ भोज-भात भंडारा
कखनहु आड़ि–बान्हपर लाठा-लाठी कते सरारा
पर–पंचैती दंगल अंत तुरंत मंगले–मंगल
एम्हर क्रमहि कमि रहल, बढ़ल जाइछ किछु भेदक जंगल
कतहु तास सतरंज मनो-रंजन चौपड़ि चौपाड़ि
कहुँ मैदानी खेल कबड्डी फुटवॉलक परचारि
सान्ध्य–प्रभात किरण गैरिक ध्वज रंजित अंबर देश
मूल संस्कृतिक शाखा साखी स्वयं तरुण शुचि–वेश

सीमा-निवेश : घर-परिवेश

उत्तर दच्छिन ठाकुरबाड़ी रामायण नित गान
स्थल पश्चिम राधा कृष्णक पुनि सीताराम प्रमान
पोखरि-झाखरि मठ-मन्दिर ओ ग्राम देवता थान
बाध-बोन चर-चाँचर झुकि-झुकि करब आचमन पान

ग्राम मध्य पथ कातहि पथिकक पद धूलिए पवित्र
कुटी एक लंबित युगसँ जत व्यक्ति समाजक चित्र
जतय तात चरणक अनुशत वत्सर साधन केर द्वार
आसन बैसि लोक - वेदक अमृतक शुचि रुचि उपहार
संजीवन भेषज संगहि नित शास्त्र-पुराण उदेस
रघुपति राघव गीतक धुनि पुनि गीतामृत उपदेश
पल-पल श्रुति-पुट वयन, नयन अनुखन सत्संग प्रसंग
नाम रूप यश लीला सुरभित ग्रामांचल अनुषंग
वेद - पुराण महाभारत - रामायण गीता – सार
तुलसी–चंदा, विद्यापति रैदास-कबीर प्रचार
कथा बिन्दु हरिहर कृपालुहुक, मृण्मयीक शृंगार
पवहारी जमाति कत वैष्णव मत जनमत अनुसार
संत – महंथ यती – संन्यासी वैरागी कत पंथ
अवध वृज पुरी गढी धाम बदरी पंडा श्रुतिवंत
चिरकालहुसँ पोथी - पतरा पथ पद्धति आवेश
पत्र–पत्रिका खबरि कागजक पढ़बा केर रुचि वेस
जत जे गाम-गमइ लगपासक लघु गुरु अपने लोक
सभक शुभाशिष नमन - प्रणमनो कवि मानस आलोक
देश-कोस ओ टोल-पड़ोसहु चौदिस नेह नहाय
अपन अन्तरक श्रद्धा-सुमन चढ़ायब सुरभि भिजाय

× × × ×

टोल–पड़ोस : संग–समाज

उत्तर सहटि हथौड़ि खरारी मधुरापुर रहटोलि
भटोराक मठ श्रीपुर गाहर मन्दिर देहरि झोलि
दच्छिन उदयन - अयन करिअनहु, परशुराम उपगाम
हासोपुर गुदारघाटहु बंधार सादिपुर नाम

बरिआही घाटहु दिस पूबे, शिवाजीक पुर नव्य
अखत महिषवाड़हु बहादुरक ठनकें अरि हन्तव्य
नौआ पोखरि रन्ना चन्ना परती रानि रमोल
गंज गुंज अमरौती बगही छोटका नवका टोल
संग समाज बहेड़ी बोरज करिअन बलहा बंध
बंदा देकुली दसवत विड़हा पोखरामक अनुबंध
कोइलख मङरौनी सौराठ तरौनी रहिका राँटी
पिलखबार ककरौड़ सतलखा बिरसैरहु जत खाँटी
पाँजि कन्हौली मोहन शाखा पुनि भराम रजग्राम
भगिनवान कत भाग्यवान जनि' चूल तूल मुल-ग्राम
पंचाभेरँ भानुपुरो पुनि बल्लीपुर बधार
बारह गाम, भोजहु जयबाड़ी बढ़ले जाय पसार
ठाहर ठहरि, हसनपुर सहटि, जगन्नाथहुपुर जाय
करिअन-बलहा, बैजनाथपुर, गाहर, बाहर भाय
बाधोपुर-सेदुखा -सादीपुर संग समाज सजाय
योजन भरि सौजनियाँ परिजन सभकें संग लगाय
पान पतैलीसँ, रेवड़ासँ दूध – राबडिक भोग
करिअनसँ पुरहित, राजेष्टित थाना रोसड़ा योग
चक-महुली, मुसहरी - एरौत, अधेर - कामुपुर चास
डगर हथौड़ी दरभंगा शहरो धरि बढ़ले बास
रोसड़ा किसनपुरा मुक्तापुर स्टेशन पूर समस्त
पद गति स्वमत हथौड़ि बहेड़ि स्व-पथ पुजि पहुँचब मस्त
सहचर सचर बन्धु साहित पथ नीति धर्म रथ अंग
रुचि हो चलिअ, संग पूरिअ, हे सहृद सुहृद ! अनुषंग

घर-आँङन : मातृका गेसाउनि

करब प्रणाम गोसाउनि जननिक जनी जति जात देवि
जनिक कोर बसि वर्णमातृका पढ़ि बढ़ि अक्षर डेबि

पितृजननि माँ, बा-युग पद जत पूजित-चरणा धन्य
गंगा सन पवित्र, गौरी-सुचरित्र, मातृगण अन्य
शुचि भय रुचि दय सूनि गोसाञिक नाओं, नीपि चिनुआर
पूजि गोसाउनि, तुलसी चौड़ा संध्या दीप उदार
भानस - भात, शिशुक परिपालब, डेबब घर - परिवार
सिबिया – बुनिया, सीकी – मौनी, अइपन - धुरइन द्वार
कुशल रीति व्यवहार लूरि जत टकुरी चर्खा ताग
गीत - नाद पावनि - तिहार गबइत हकार अनुराग
लज्जा शील रूप गुन भूषन, पर - पाहुन सत्कार
पढ़ितहुँ लिखितहुँ नगर परिचितहुँ अमिट गाम संस्कार
भाइ - बहिनि, सुत-सुता मूल - शाखा सन्तति - सन्तान
सासु-वधू भाउजि-ननदिक मत प्रीति रीति परमान
जा धरि प्रतिभारत भारत जा धरि शिथिला मिथिला न
आर्य सनातन संस्कृत-संस्कृति विरत गाम - महिला न

संस्था-आस्था: प्रकृति-विकृति

विद्या तेज जतय छल विद्यालय वाणीक विलास
धर्मप्रबोधिनि सभा नाट्य संस्था संस्थान विकास
सेवा सदन असहयोगक युग — राष्ट्रधर्म उत्थान
एखनहुँ संघ बद्ध जीवन जत व्यक्ति समाजोत्थान
बनल उच्च विद्यालय आजहु गाँधी स्मारक नाम
रानी दाइक भूमि विदित भूमिका दामोदरहु क दाम
राधाकान्त नामसँ पूजित माध्यम विद्याधार
शिवमठ निकट भगीरथ माध्यमिके शिक्षा आगार
टोल-टोल शिशु हित नित प्रारंभिक शिक्षाक पसार
नवहु पुरानहु किछु चलइछ वाचन हित ग्रन्थागार
डाकक संचारहु, व्यापारहु, नहि भेषजहु अबच
भजन-कीर्तनक ग्राम्य गीत-नाचहुक विविध विध मंच

भारत गामक देश, ततहु तिरहुतिक देहाते प्रान
सिंचन-पथ-परिवहन समुन्नत पुनि उपजओ धन-धान
... ...

स्मरण पड़य ओ समय जखन दुर्दिन पाटा-नाटीक
व्यक्तिवाद केर वर्गवाद केर राग - द्वेष टाटीक
कोमल कला रुचिर रुचि रखितहुँ खन कठोर अभियोग
गोल गोलमे बढ़ल, जुटल नहि खान - पान अनुयोग
कत पुनि रौदी – दाही डहबय – दहबय उर्वर भूमि
पुल टुटले पथ दुर्गम दूरहु जतय सकी नहि घूमि
रोग-बसात अकाल - दुकाल सहल कत जन समुदाय
कटु-कषाय, हा हन्त ! प्लेग दुःस्वप्न न बिसरल जाय
असह-दुसह तिख-रुख बिनु सहने स्मृतिक भूख नहि जाय
सुख-दुख चक्र चलित जीवन-रथ ग्रामक पथ पहुँचाय
× × ×

अतिथि सतिथि अभ्यागत पाहुन मित्र बन्धु सम्बद्ध
पद अर्पल जत बुध कवि कोविद तनि प्रति नति करबद्ध
जे छल श्री-सम्पदा, सम्प्रतिहु जे, पुनि भावि विभूति
सभ हित श्रद्धा प्रेम शुभाशिष अर्पित मन - अनुभूति
कत परिचित शुभ –आशंसी नहिं जनिक बिसरबे रूप
पितृ - मातृकहु वर्ग वर्ण जत जनगण सुमिरि अनूप
पुनि पुनि पुजब वाग्वती तट सिकता कन कनक चिताक
भस्म जतय माता-पिता क, कत ग्राम बन्धु-जनताक
... ...

हमर अवध ई मथुरा बृन्दा काशी बदरीनाथ
जतय जनक-जननी गुरु बन्धु-समाजक संग सनाथ
अपन जन्म-धरतीक माटि स्वर्गहुक स्वर्णसँ बाढ़ि
तीर्थक जल लय तकरा पूजब संगी संग हकारि

संगी-अंगी : नाम-संबोधन

देव-रूप चालु, देवकिनन्दन ! कमल रतन लय संग
माधव - यादव हर्ष - कौशलहु अङ्नहु मङ्नहु गंग
मुक्ति तेज श्री राम श्याम दिन सूर्य चन्द्र अनुषंग
सती रती गिरि गुरु वटु पटुता गुण मणि गण कत रंग
देव भूप सुर उमा रमा श्री कृष्ण वीर पूर्वांक
इन्द्र चन्द्र नारायण कान्त सनाथ अन्त नामांक
महा अमर घन धन शंकर नागहु संख्या पद पूर्व
ईश - ईश्वरो शरण चारण आनन्द प्रसाद अपूर्व
काशी काञ्ची अवध - अयोध्या मथुरा वृन्दा वैद्य
गंगा यमुना कमला वेणी नाम तीर्थ नैवेद्य
नाम देव ऋषिमुनि पुरुषोत्तम, पौरुष पुरुष प्रकाश
सरिता लता फूल देवीक कला प्रतिभाक तलास
बौआ बाउ बाच बच्चा पुनि बच्चान वचान दुलार
नूनू लाला सोन रूप मनि संबोधनक प्रकार
बाबा काका बाबू भैया संबंध क अधिकार
गाम – गाम नामहु अटपट ठक बक किछु प्रेम विकार
रंग ढंग गुण दोष वृत्ति व्यवसाय सूचको अंक
कैलू करिया पढुआ बौकू ठकन भिखारी रंक
ठक्कन नामहु निश्चल चिक्कन, बौकू बचन क जोर
धनपति निर्धन, दीना धनिजन, कारी नामहु गोर
रवि सोमन मंगल बूधन वेरस्पति शूकन शनिया
फगुनी चैता मेघुआ रौदी दाहोर समय सगुनियाँ
कका भाइहुक पढुआ करिया लाल देश –पुर संग
दाइ - माइहुक फूल लवंग पान सखि संगिनि अंग

नाम-स्मरण : तर्पण-अर्पण

जागल अछि स्मृति-मन्दिरमे किछु प्रतिमा श्रद्धा-स्रोत
आ-शैशव जनि ममता स्नेहेँ जीवन दीप इजोत

वंश हंस मणि गुण पति राखल सोध अवध दरबार
रामगुलाम अयोध्या श्री केर विस्तृत कुल परिवार
दामोदर गुण गौरव राजित महावीर वड़ नाम
कृष्णचन्द्र पद राधाकान्त क कला सुरभि भरि-गान
काली चरण चारु धरि डेबल जयानन्द द्विज दार
रामेश्वर भुवनेश्वर तेजोनारायण अवतार
राम जानकी अनुग्रहे मुनि योगीन्द्रहुक प्रमोद
नामदेव आनन्द नृसिंह गोपाल वेणि अनुमोद
विजयि धीर सुर भूषण राघव विजय बन्धुता मूर्ति
हेमकान्त गोपीकान्तक नहि एखनहु स्थानक पूर्ति
युग पूर्तहु एखनहु अमोल भोलाबाबुक स्मृति मोल
लक्ष्मीकान्त बन्धु जन पूर्व निरेषण मिसरी बोल
अनतहु अपन बनल नित रहला मान्य हरीन्द्र विशेष
नंदी योगेश्वर रामेश्वर शिव - ईश्वरहु अशेष
आनहु जे वरिष्ठ जन स्नेहाशिष तनि सुमिरि अतंद्र
पुनि कनिष्ठ नारायण मदन उमेश शचीन्द्र भवेन्द्र

... ...

पूर्व अपूर्व प्रमुख परिवार समाजक पुरुष प्रकाम
महावीर युग रामरूप भगिरथ पथ शीतल गाम
विदित विहारी राम नेवाज देव बल शिवहु गुलाम
माथुर श्रीधर वल्लभ सुन्दर राम रूप अभिराम
रूप अनूप, बहादुर दुबरहु पीताम्बर यदुवंश
वर काली प्रसाद सुर - ईशहु शरण राम जनि अंश
कृष्णदत्त बुध अवधलाल पाठक यमुना कत विज्ञ
रामशरण बबुआ नारायण जनार्दनहु वेदज्ञ
भोनु उमेदि फतूरी फुच्ची योगि जनक दुहु मेल
संस्कृत प्राकृत नाम सुनल अछि कते मधुर बगमेल

सुन्दर सोनेलाल पुजारी अवध मनोहर पूर्व
कैलू दरबारी गोनौर बाबाजी स्थलक अपूर्व
रमता योगी गंगा राम अचार्यहु सचर सहाय
सिद्धो बुद्धो युद्ध प्रसिद्धो भिल्लो फत्तो राय
नाट्यकला पुनि तालबला बल महादेव वसुदेव
राम क लीला कला दक्ष कत व्यक्ति सतेज सुदेव
मङ्नीराम जनक लक्ष्मी बाबू प्रसाद पुनि भीम
चुन्नी वासुदेव मकसूदन पहलवान बल - सीम

बद्ध-सम्बद्ध : स्मृत-विस्मृत

ठाकुर बासुदेव झलकौलनि नवका टोल समस्त
संस्कृत-संस्कृति शिक्षा संस्थागत कत व्यक्ति प्रशस्त
दासे हरि अवधेश नरायन हरि पुनि कत जन शिष्य
भैया राजी हरि दुखमोचन करिअन कृती विशिष्य
सिया जानकी रामचरण शोभा हृदथक सम्बद्ध
नामदेव, नारायण बाबु अचोकहु अनत निबद्ध
मुक्ती बाबा ब्रजकिशोर केदार कुटुम्बी राय
गाम गामसँ संबंधी गण घर घर जुटल सहाय
ब्रज कुंजहु विहारि पोखराम, राय गण देकुली धाम
उमा रमा, नेहराक, बबा बिन्हीक अफीमी बाम
पाहुन भाइ कका फुच्ची बुच्ची श्रद्धा कत नाम
मोहनाकेर ज्योतिषी बबा त्रिभुवनहु कन्हौली गाम
देखल राम प्रताप क्षात्र बल सिंहासन परतच्छ
छात्र बलहु कत सत्य देव गिरि कमल दीप जग स्वच्छ
सुरति मखान देवान-खानहुक चित्रगुप्त पूजाक
पन्नालाल केदार कत्थकी नृत्य नियत झूलाक
लाल बिहारि क गर्जन, जैन्तक नर्तन, काशिक भोज
सोमन गुरुक भृकुटि, लालिक खिस्सा, जुलुमक सुर ओज

झपालक ओ झंप, वृकोदर काशीनाथक वंक
अदरबदर बदरक, मूंगा – पंचुक मुरकट्टी अंक
लठिधर ठीठर, मौजि पितम्बर, शिक्षक दुनिया लाल
भुटकुन डोमी मकसूदन कत सुरति मुरति वश काल
गच्छ-गच्छ केर पच्छ-पच्छ केर जत जे कुल-परिवार
सभके मन-मन सुमिरि-स्मृति क छाया सँ कय सत्कार

छाया-प्रतिच्छाया : ध्वनि-प्रतिध्वनि

छाया – चित्र जकाँ स्मृति-पटपर एखनहुँ खनहुँ घुमैछ
नाम - रूप सुधि-बुधिक तंतु गामक धरतीक बुनैछ
दामोदर गौरव नहि बिसरब राजो बाबुक र्‌याज
तुलसी माला सुरड़ि हजारी बबा अयोध्या काज
बिसरि न सकी कला रुचि आगर राधाकान्त उदार
स्कुल फुल पशु पच्छी कुस्ती कीर्तन उत्सवक प्रकार
आनँद कका पूजनानन्दे, बड़का ककाक ठाठ
नरसिंह ककाक घुमि-फिरि फुदफुद सहसनाम केर पाठ
बौआ कका दीन दुनिया गप, कका योगीन्द्र क आन
प्रेम प्रमोद-मुनी काका बिच, खनहु रनहु मैदान
महावीर बाबाक कवित रामायन पद अभ्यस्त
पढुआ काका संग अंग कत गुनि गन पडित मस्त
सपन जकाँ बाबूकाका गुरु गाम विदित आचार्य
सन्ध्या वंदन साक्षर साक्षत अछत हुनक शुचि कार्य
छाप हुनक ओ तेजककाक प्रभा प्रतिभाक प्रसाद
ज्येष्ठ श्रेष्ठ जन गुणिगण पंडित प्रश्नोत्तर रुचि वाद
वेणी भाइक पूजा, भूषण भाइक गप अनमोल
बड़काबौआ भाइक स्वर - धुनि रंग विनोद अमोल
शौक बिजयबाबुक ओ धाक धीरेन्द्र ककाक विशेष
लाल ककाक सिनेह शेष, काली ककाक आवेश

भूषण राघव विजय संग लय धीर प्रकृति धीरेन्द्र
जमल चौकड़ी कड़ी कोमलक सुर स्वर्गिक विजयेन्द्र
मध्य दलान दबंग जमल दल भल सुरेन्द्र बाबूक
आवेशी लक्ष्मीबाबुक सुधि वश नहि मन काबूक
कत - कत चित्र चरित्र वर्ष दूरहु जनु क्षणहि व्यतीत
कते बटोरब, की पुनि छाँटब, आँटब शब्द अतीत

कण-कण बटोरि : क्षण-क्षण सङोरि

बान्ह किसुनि बाबाक, मठो - मन्दिर बाबू - भैयाक
लोक - वेद हित कते कूप पोखरि मैञा - दैयाक
बनही बड़ी पुबारि उतरबारी पोखरि वलुआहि
चभच्चाक चुभकब नहि बिसरी लगक गुड़ुकि गुड़ुकाहि
जोगिया मोनिक पानि अगम, पछबारि मोनि उछिलाहि
परती चन्ना - चनराहा चर - चाँचर सजल ओराहि
धरमगाछि नौलखा बाग - बगिचा लगिचा क घुमैत
कटि कटि उपटि ठुट्ठ सन रूपो एखनहु चुपो रूचैत
× × × ×
देखल सुनल कते मन लेखल अपन दलाने बैसि
बिन्दुक अनुभव सिन्धुक संभव कल्पनाक बल पैसि
कतहु कथा पौराणिक गाथा आल्हा रूदल रोल
खेल-कूद नट नृत्त, दसौन्ही बदी कवित किलोल
कीर्तन कथा व्यास पंडित केर प्रथा छात्र शास्त्रार्थ
खिस्सा नानी बाबी मुहसँ सुनलहुँ कते यथार्थ
राग सोहनी गति द्रुत हरमुनियम जानकी अमोल
बिसुनदेव मिरदंग, मदन - झंपाल क तबला बोल
मङनक गायन, तान नचारिक, झुम्मक नाचहु डेब
भिड़हा - बलहा नाट्य मंडली रस आबहु जयदेव
सारंगी संगत मनाफ, करिअन कीर्तनियाँ नाच
चोपहरा भालो मनचुभ्भी देशि विदेशियहु काछ

टोल टोलमे जमल अखाड़ा, कुश्ती दंगल द्वंद
घोड़दौड़हु, भिड़न्त भेड़क, दल यौद्धिक खेलहु बंद

सहचर-परिचर : पुरजन-परिजन

कते पसारी पन्सारी व्यापारी पुर सहयोग
खर-खबास जन-बनिहारक सेवा नहि बिसरय योग
चमरू प्यारे मूनर मिसरी बौलट गोविन साहु
सोनू गोनू राउत मरड़ डोमी ठाकुर वयसाहु
जित्तू बौनी बौना तुलसी गेना कैलू खास
गोपी कन्तू पचकौड़ी मेदन खेदनहु खबास
रामक टहल, खराम दीहलक, नथुनि मालि केर फूल
नेबि लहेरि'क गुआ-माल, डोमिक कतित कत चूल
मन पड़ैछ शबरी अमरौतिक कुटनी-पिसनी हारि
कते पसारी जन - बनिहारहु, टिपिकल कते भिखारि

विन्दु-पराग : रंग-अनुराग

सोदर-युगल विहारी गोपीकान्त, निरेषण हंत
अधिवक्ता हरीन्द्र अभिभावित नेह राखि स्मृतिवत
अंतरंग बहिरंग एकरँग बन्धुत्वक नहि अत
साक्षी देव - देवकीनन्दन एखनहु स्मृति जीवंत
वर्षा - मंगल, झूला फगुआ, दुर्गा - लक्ष्मी पर्व
सन्ध्या सुरभित, ललित कला कृति, संयत रंगत गर्व
पत्र - पत्रिका, खेल - धूप गप - सप कत गान-बजान
चाह - पान मंगल - विनोद नित - रोज भोज उद्यान
तालबला बदरी ओस्तादक वासुदेव संगीत
पत्ती - पत्ती रंग संग सतरज रजनी रीत
द्वारवंगली, बंगला, कोठी नीली गुंजित नित्य
मित्रमंडली मंडित खनहु न खडित उत्सव - नृत्य

× × × ×

गुरु - लघु सेवक -सेव्य छोट-बड़ जत जे भूति–विभूति
गत–आगत–अनागत क प्रति अर्पित सुमनस अनुभूति

चित्र-विचित्र : विखरल चित्र

ग्राम-नगर केर प्रकृति-विकृति सभ देखब अपने गाम
युग पुरान ओ नव उड़ान अछि कौतुकमय परिनाम

... ...

बाल कृष्ण पाठकक पाठ पारायण कथा पुरान
धनु पाठकक पुरोहित, सूर्युक सर्वोदयि विज्ञान
चुम्मा बाबुक नीति लक्ष ओ नूनूबाबुक पक्ष
रत्तनबाबुक अन्न-कक्ष, मुखियाजिक करतब दच्छ
नवल योजना भूपेन्द्रक, देवेन्द्रक चित्र प्रसंग
यादवेन्द्र बाबूक वचन - रचना किछु पूर्वक ढंग
गंग - मंगनू बाबूक चरफर खन कचहरि खरिहान
चंदर बाबुक शक्तिक संगहिँ काज-तिहार खटान
शील अनूप रूपनारायण जनिक दूर धरि डाक
पत्रकार विन्देश्वर ठाकुर पटनहु जनिकर हाक
बाबू - उदित - नरायण तेजो तेजोमय परिवार
रामचन्द्र बाबू पुनि आनहु मच्छ - मच्छ सरदार
मोहन व्योम उड़ान, सुर्यु बाबुक कचहरी कमान
जयवीरो बाबूक रगड़, श्यामो बाबूक जुटान
गप गिरिवरक, छड़ी भातुक, सोनेक हाक, गुरु चाह
रामायणो हृषिकेशहु – कौशल बाबुक उत्साह
युक्त समाजक उक्त राम रक्षा ओ राम बिलास
राधाकृष्णक अर्चा, चर्चा देवकान्त सुविकास
स्वर गिड़गिड़ी शत्रुहन बाबू खेलन मधुरे भोज
कपिलदेव मास्टरक चिकित्सामे आयल अछि ओज

भाइ रमाकान्तक आवेश दिनेशक ठाकुर - द्वार
वीरेन्द्रक वरीयता, बटुकक पटुता कृषि - आधार
चीनी चाह चुनी भाइक, चूमा बाबुक संघर्ष
पुनि पुनि नूनू बाबुक सबतरि जेठ - छोट संपर्क
धीर गभीर श्रील रणवीरक मौन मौन मुसुकान
गोष्ठी कौशल - यदुवीरक लाला बाबुक विज्ञान
लक्ष्मी, रामहु शरण, रतीशहु, शोभा मधुर स्वभाव
श्रमहु बड़ बाबुक, श्रीकृष्णक संघटनाक प्रभाव
रुचि लछमी, बौएलालक बल, विश्वनाथ मधु राग
नागेश्वर उपेन्द्र भोला कहु रहथु, गाम - अनुराग
बटुक जीक अभिनय थापी - टाँकी पटु तबला बोल
ठकनक कीर्तन राजकिशोरक स्वर सतीश अनमोल
जाथु पड़ाय पड़ाउ, गाम लेल दुनिया भूप बसाय
बहथि त्रिवेणी नारायण छवि उत्तम चित्र सजाय
कपिलेश्वर केर पूजन - अर्चन रामउदार विराग
जाय कुशेश्वर वैद्यनाथ, जगबधु नारायण भाग
सड़क किनार इनारे बच्चा बाबुक खर - खरिहान
रामजीक जीपक उड़ान, चौकहु हरिचरणक पान
मुखिया दीना रामजीक कत पाँती सजल दोकान
तहसिल फसिल सोंठि - मर्चाइक व्यापारीक जुटान
हाट-बजार गुड़ुकि क्यौ चरफर कय राशनक प्रबंध
गुड़ मर्चाइ मकइ अन - धन बिकिनय पेठिया लय कंध

अग्र-प्रत्यग्र : तरुण उदग्र

नगर शिवाजी वागीशहु, श्यामहु बल्लीपुर गाम
उच्च कक्ष शिक्षाक खरारी वैद्यनाथपुर धाम
छोटे - बड़े समाने बाबू - भैया शिक्षक - शिष्य
श्रमिक गृहस्थ जाति - जातिक ओ वर्गक वर्ग विशिष्य

सत्त्व सतीश गणेशक बढ़ओ, महत्त्व गिरीशक दून
कोमल नवल मुकुल नवतुरिया फूलओ - फरओ अलून
मोहन रेवति सुमन सोन हीरा गोविंद गुण पूर
विश्वम्भर मिथिलेश महेश लाल फूलहु नव तूर
नारायण कामहु नामहु नव नवलहु राज किशोर
रामदयाल प्रकाश प्रतापहु ललित कलित नव पोर
गुण सोनक मन सुमन, मुरलि धुनि, गुंजुक मंजुल ब्रात
कुमर कन्हैया रामकुमार विमल हीरा अवदात
सचर मुरारी पटु पुनि बिलटू जनि गुन लट्टू लोक
सीयाराम प्रकाश जय - श्री बिजल बिजलि आलोक
नव अंकुर दूर्वा दल तुल वर्धित नित लोक अशोक
युग जीवी सब तरुण किरण रेखा आशा आलोक
आनहु रूप अनूप नाम नहि मन किछु स्मृतिक अभाव
बाल किशोर तरुण गुणशाली बढ़बथु भव्य प्रभाव
भरओं समाजक संघटनामे नव उत्साह वितान
तखनहि युवक युगक अनुकूल सुयोग प्रयोग प्रमान
एखनहुँ खनहुँ विलमि देखइत छी प्रमुदित मन अतिधीर
गामक नामक प्रति रति रखइत उद्यत युव जन वीर

साक्षी : प्रत्यक्षी

मुख्य तार गुरु श्रीनारायण चन्द्रहु पूर्व समक्ष
माटि - पानि संस्कार एक रस आरसीक उर स्वच्छ
साक्षी बालकृष्ण यादव अग्रज कुश कुशल समक्ष
छथि मैथुर प्रसाद यामुन ओ रामस्वार्थ परतच्छ
रामशरण ठाकुर प्रसाद श्रीकीर्ति गोविन्दहु बाल
रामेश्वर शिव - राम - नन्दनहु छोटे - दुनिया-लाल
बदरी हरिवंशहु कुल - वंशक अनुभव वयस समृद्ध
रमाकांत पुनि रामचन्द्र रघुबंश प्रशंसित वृद्ध

बूढ़ सूढ़ खेलावन राम सफल आनँद दृग लाल
औरो प्रौढ़ अधेर वयस जे गामक जानथि हाल
गणपति जामुन जनकहु योगी मंडल मंडित रूप
जंगल मंगल महाबीर यदि रघुवर राम सरूप

× × × ×

'स्वर्गादपि गरियसी' गामक धरती पूजन पर्व
संग सवर्ग देव – देवकीनन्दन लेब सगर्व
पूजब कन-कन, मन दय छन-छन जननी अवनी जन्य
श्री समरेन्द्र भविष्णु भार उपहार अरपि मन धन्य
संघ संघटन दिस रुचि जाग्रत जागरूक जत लोक
राष्ट्रभक्ति गगा सागर संगम गामहु आलोक

स्वगत : जनान्तिक

संस्कृति गंगा, कालिन्दी हिन्दी, मासिक रस मूल
जतहि नहयलहुँ सरस्वती मैथिली 'त्रिवेणी' कूल
प्रतिसप्ताह 'ग्राम वार्ता' 'साधना' दैनिकहु खेल
पत्रकार - जीवनक भूमिका प्रस्तुत ताहिए भेल
विद्यापति चंदाक कनक नहि पद कन भुवन पिताक
ताजमहल रजघाटक फूल न धूल ग्राम जनताक
अणु खंडहिमे अछि अखंडहिक शक्ति विद्युद्द्योत
कवि उर–पट रवि छवि अंकित नित, निज पर किछु न इरोत
आङन अपनहि गंगा यमुना वृज रज अपन दलान
देव-भूप युत देव देवकीनन्दन हृदय न आन
कर्मक कान्ति प्रखर जय विन्दक राजकुमार रमेश
सूर्य दिनेश, भारती वीणा पूर्णिम राज निवेश
मैथिलीक बल गृह लक्ष्मी ऊषा आशाक जयन्ती
जय उद्दीप्त प्रदीप जीवनक साँझहु सुधा स्रवन्ती

सन्तति तति अनन्त अरविन्दहु सौरभ भरित प्रमाने
यादव-माधव अमर हरि गुणहु शैलहु अवनि समाने

× × × ×

कन - कन अपन भूमि-धरती के पुजइत मन सम्मान
आइ सपुन पुनि पूजि रहल छी देश अखड प्रमान

स्मरणिका

गाम नाम मन पड़ितहि पहिने तात चरणहिक ध्यान
तदनु हुनक अनुपम अनुसरणी मातुल-तनुज महान
भैया कहि कहि जनिक समैया जीवन रितल समस्त
जनि बिनु तातक अन्तिम चरण बितैछल सतत उदस्त
दिव्य रूप, चरितहु अनूप, स्वार्थहु परार्थहुक योग
बाबू विदित गोपालजीक आकृति नहि बिसरय योग
बौआकाका कहि जनि चरणक धूलि चढ़ाबी माथ
तनिकहि नामक स्मरण - पुण्यसँ निजके करी सनाथ

कथा-यूथिका

भूमिका

जाही - जूही कथा - यूथिका गाथा याथातथ्य
कतहु पढ़ल वा पड़ल कानमे किदहु लिखल वा कथ्य
सुरभित अंतरकेँ कय गेल तकर किछु गंध - निबंध
छंद मात्र परिधान देल नहि कल्पित कथा - प्रबंध
'कथा - यूथिका' मैथिलीक डालीमे संचित मात्र
करइत आशासित छी, होयत पूजित अन्तर पात्र

विश्वामित्रक दीक्षा

निशि निस्तब्ध चन्द्रिका धवलित तपोवनक शुचि देश
मुनि वसिष्ठ लग आबि ठाढ़ि छथि अरुन्धती सावेश
नहि छनि आश्रममे शाकक पाकक हित लवण प्रकार
कहलनि मुनि-'छथि लगहि राजऋषि विश्वामित्र उदार
तनिकहि घरसँ लय आनिय जत प्रयोजनक अनुकूल
गाधिराज छथि गुण-अगाध याचना योग्य समतूल।'
गुनि धुनि पुनि बजली-'कहइत छी वचन कोना ई नाथ!
मारि शतावधि पुत्र निठुर जे हमरा कयल अनाथ !!
तनिकहिसँ याचना करय कहइत नहि हो संकोच
अपनहुँके ब्रह्मर्षि शब्द कहबामे जनि प्रति रोच।'
'प्रिये! सत्य थिक कथा, किन्तु अहँ बुझि राखिअ ई भेद
विश्वामित्र महान पुरुष छथि अति प्रिय हमर अभेद

बीर धीर तेजस्वी अनुपम दृढ़ - संकल्पी शूर
नित्य करी कामना, होथु ओ ब्रह्म - तेजसँ पूर

... ...

वनक सुदूर भागमे सज्जित राज - कुटी परिवेश
तरुण तपस्वी गाधिराज जत तपथि उग्र मुनि-वेष
किन्तु आइ राजर्षिक मन उचटल तपसँ अनिमित्त
रोष बढ़ल छल ब्रह्मर्षिक प्रति, प्रतिहिंसामय चित्त
सोचथि हमर मान मर्दनमे बूढ़ वसिष्ठ वरिष्ठ
आइ अन्त कय देब खड्ग लय द्रुत-पद चलल बलिष्ठ
कुटी समीप जाय किछु गुन-गुन सुनल, अकानल वाद
जतय वसिष्ठ-अरुन्धतीक बिच चलइछ उक्त विवाद
गमल महर्षिक हृदय राग-द्वेषक न जतय छल लेश
हुनक विरोधहुमे प्रेमक अनुरोधहीक आवेश
फेकि खड्ग ब्रह्मर्षि-चरणपर खसला विश्वामित्र
लगा हृदय मुनि कहल-'उठू अहँ हे ! ब्रह्मर्षि पवित्र !'
'प्रभु ! लज्जित नहि करिअ कतय ब्रह्मर्षि कतय हम तुच्छ !'
कहल वसिष्ठ-'न मृषा कही-अहँ छी ब्राह्मण परतच्छ !
अहङ्कार केँ छोड़ि देल जखनहि अहँ धीर महान
अधिकारी अहँ ब्रह्मज्ञानक ब्राह्मण भेलहुँ निदान ।'-
अति विनीत कौशिक कहलनि-'मुनि ! दी दीक्षा ब्रह्मत्व ।'
कहल वसिष्ठ-'अनन्त देवसँ जाय सिखू सब तत्त्व ।'
शेष नाग लग गेला, जनिक मस्तकपर धरणी भार
सुनि कहलनि हम ज्ञान देब यदि ली सम्हारि भूभार
तप गौरव मन जागि उठल मुनिवर कयलनि स्वीकार
किन्तु भार पड़ितहि मस्तकपर विकल, न सकल सम्हारि
विश्वामित्र चिकरि उठला-जत कयल तपस्या भोग
सभक फलेँ सुस्थिर धरणी हो हमर शीश संयोग

खसल न अवनी किन्तु न सुस्थिर रहल तपक बल हंत
विश्वामित्र दुखी, पुनि बजला सहृदय शेष अनन्त
"नहि तप तते अहाँक जतेसँ धरणी हो थिति योग
किन्तु भेटल जीवनमे कहियो की सत्संग सुयोग ?"
कहलनि मन आश्वस्त कने मुनि विश्वामित्र सहर्ष
छन भरि सन्त वसिष्ठक संग पौलहुँ एखनहि उत्कर्ष
'करिअ तकर उत्सर्ग' 'अस्तु उत्सर्गल लव सत्संग।'
आश्चर्यित देखल! धरणी भेल थिर तत् छल निज अंग !
पुनि अनुनय कयलनि ऋषि, 'आवहु' देल जाय सत्कार।'
कहल शेष—'मूढ़ता छोड़ि पुनि जाउ वसिष्ठक द्वार।'
अपमानित नतमुख पुनि विश्वामित्र वसिष्ठ समीप
जाय कहल, "की हेतु करी दुर्गति घुमाय नव द्वीप ?'
अति गम्भीर धीर मुनि कहलनि, वचन सिनेह भिजाय
"तात! तखन करितहु यदि दीक्षित शास्त्रक वचन सुनाय
बिनु श्रद्धा - विश्वास भूमिके नहि थिर होइत उदेस
शिक्षा जकर प्रयोग रूपसँ देलनि सहजहिं शेष॥"

राज-धर्म

राजा सिंहासनपर बैसल करइत छला विचार
सहसा सोझाँ प्रगट भेल यमदूत घोर आकार
'राजन! अहँक राज्य सँ चहिअनि यमके एक जन हन्त !'
राजा कहलनि—'चलू, हमहिँ चलइत छी संग तुरन्त।'
'मृत्युलोक नहि जाउ अहाँ छथिहे कत प्रजा - समाज
ककरहु पठा देब थिक समुचित सुखे करिअ अहँ राज।'
राजा बजला—'सभ लोकक रक्षाक भार अछि माथ
प्राण अछैत न जाय देब ककरहु हम एना अनाथ।'

× × ×

राजा छला देव - मंदिरमे करइत पूजा - पाठ
देवदूत आगाँ आयल, छल दिव्य जनिक सब ठाठ
'धर्मराज बजबै छथि, सभ चलु राज्य भरिक समुदाय
केवल भावी सृष्टि हेतु क्यो एक व्यक्ति रहि जाय।'
अछि सुन्दर संवाद आइ सभ जान भोगथु सुख भव्य
हम टा रहइत छी करइत पालन सृष्टिक कर्त्तव्य।'
'अगणित प्रजा अहँक ककरहु पुनि राखि देव मुद चित्त
उचित किन्तु स्वर्गक सुख छोड़ब अनुचित अहिँक निमित्त।'
देवदूत ! सुनु, राज्यक प्राणी मात्रक सुख-कल्याण
अछि निर्भर हमरहिपर, छोड़ब कोना तकर हम ध्यान ?"

बोधक पात्र

गौतम बुद्ध जनिक बोधें हिंसा जगसँ उठि गेल
तनिका लग जिज्ञासु लोक जुटइत छल बोधक लेल
संगहि किछु उत्साही शिष्य प्रचारक बोधक दानि
कहि-सुनि अनुयायी बनबय लगला बुद्धक लग आनि
एक दिन एकटा आगन्तुकके श्रान्त-क्लान्त अति देखि
पुछलनि बुद्ध– भूख लागल की अछि अहँ के सविशेष ?"
कहलक–'दू दिन सँ अन्नक दाना नहि भेटल हाय !'
बुद्ध तुरत शिष्यके कहलनि–'खोआ-पिआबह जाय।'
सभ लगले आगत स्वागतसँ भोजन ओकरा देल
तखन पुनः आनल गेल शिष्यक द्वारा बोधक लेल
बुद्ध कहलथिन–'जाह आब तों', तोहर एतबे काज।'
शिष्य पुछलथिन- बोध कहाँ भेटैलै एकरा महाराज !!'
बुद्धक उत्तर छल एतबे – 'एकरा न तकर अनुरोध
तोहरे बुद्धि-बोध आवश्यक, भुखल'क अन्ने बोध।'

वास्तविक मित्र

कथा सरित्सागरक बिन्दु ई लघु घटना प्राचीन
चन्द्रापीड कनौज - नरेशक छल एक सेवक दीन
नाम धवलमुख, तनिक मित्र दुइ वीरबाहु, कल्याण
पत्नी पुछलनि-'के छथि अहूँक अधिक प्रिय? कहू प्रमाण।'
कहल धवलमुख-'कोना कहू चलि स्वयं जाँचि अहूँ लेब'
दुहु दंपति मिलि कल्याणक घर पहुँचल पहिने टेब
स्वागत - सत्कारक न छोर छल भेटल कत उपहार
भय कृतकृत्य तखन दम्पति पहुँचल सुवाहु केर द्वार
चौपड़ि खेलइत कुसल-छेम बुझि लागल फेर खेलाय
नमस्कार कय बिदा भेल पति–पत्नी मन झुझुआय
कहल-'केहन ई रुक्ख लोक अछि सरस सुहृद कल्याण !'
'प्रिये! किन्तु एकसरे जाय पुनि जाँच करिअ कहि आन
एतबा कथा कहब, राजा भेल छथिन कोधसँ हाउ
उचित बुझी से करू मदति दुहुसँ ई बुझि-सुझि आउ।'
राज-कोप सुनतहिँ कल्याण कहल–'हम छी व्यवसायि
कि करब? सुनल सुवाहु, खंग लय दौड़ल 'नृप अन्यायि !
मित्रहेतु हम लड़ब-मरब' कहि ओतय पहुँचि गेल संग
बिदा कयल कहि-सुनि राजा प्रति पुनि अनुकूल प्रसंग

... ...

'प्रिय! प्रमाण भेटल के वास्तवमित्र के अछि व्यवहारी ?
ने केवल आचरण बाहरी, हो अन्तर अधिकारी।'

स्वर्ण थारक उपहार

अति प्राचीन कालमे काशी – विश्वनाथ दरबार
प्रगट भेल मणि - मुक्ता जडित पवित्र स्वर्णकेर थार
लिखल वाक्य छल–'ई पाओत जे हो सर्वाधिक भक्त'
किन्तु सकल ने उठा-हिला जे क्यो छल जन आसक्त

भेल घोषणा काशीराजक भण्डारा खुजि गेल
देश - देशसँ शैव लोकनि जुटला ओहि थारक लेल
बड़ बड़ तापस, बैरागी, मुण्डी जटी विशेष
स्तुति कयलहु ने थार घुसकले कखनहुँ कनियहु रेख
ताहि समय सहजहिँ दर्शन हित पहुँचल एक गृहस्थ
जकरा किछुओ पता छलै नहि की उपहार प्रशस्त
दय डुबकी गंगामे, लय जल बेल-पत्र ओ फूल
मन्दिर द्वार पहुँचि रुकले सहसा किछु देखि अतूल
गलित अंग एक पंगु कोढ़ि, छल फाटक लग कुहरैत
पूति गंध सँ जकर फेरि मुख चलय सबहिँ झटकैत
द्रवित-हृदय ओ फिरल छोड़ि पूजा-पाठक व्यवहार
व्यथित स्वरेँ ममतासँ बाजल, करइत दुख उपचार
भैया ! दुखी होउ जनु, चलु, बासा पर करु विश्राम।'
कान्हक भरसा दय पुनि टेकल, हुँफइत लय शिव नाम
लेप लगाय, खोआय - पिआय, सुताय, मन्दिरक द्वार
पुनि पहुँचल पूजन हित, काशी - विश्वनाथ दरबार
मन्दिरमे प्रवेश करितहिँ सहसा ओ सोनक थार
अपनहि ओकर हाथ दिस ससरल!जय जय भक्त उदार !!

भीखक बाती

महाराष्ट्र भेल धन्य पाबि जनिका, से संत महान
विदित समर्थ रामदासक अछि जपइत नाम जहान
शिवाजीक प्रेरणा – स्रोत हिन्दुत्वक जे अभिमान
भिक्षा हेतु छला से घुमइत एक दिवस अमलान
गृहिणी एक तखन घर निपइत छल, तत पहुँचल जाय
भिक्षा माङल रामदास, 'जय राम समर्थ' सुनाय
छलि तमसाहि बताहि जकाँ, गृह-स्वामिनि अति खिसिआय
फेकल हाथक गोबड़ौरक चेथड़ा मुह तका ठेकाय

भीख मानि ओकरे 'समर्थ' दय धन्यवाद घुरि गेल
धोय – पखारि नदीमे चेथड़ेसँ बाती रचि लेल
पुनि आरती सजाय, देव–मन्दिर आलोक पसारि
माङल भीख देवतासँ, करुणामय वचन उचारि
'हे हरि ! जकर देल थिक बाती, आरतीक हित आइ
अन्धकारभय तकर हृदय – गृह, आलोकेँ भरि जाइ'

... ...

सहसा ओही काल ओहि गृहिणिक उर जागल ज्ञान
दौड़लि रामदास – पद टेकय माथ, रहित अभिमान

पण्डित ओ गोआरि

पण्डित एक महानैष्ठिक पढ़ने सभ शास्त्र पुरान
जप-तप मे नित रहथि निरत, दिन भरि पूजथि भगवान
गोदुग्धक आहार करथि, व्रत कत छथि नियत करैत
हुनक हेतु पहुँचाबय दूध, गोआरिन दूर वसैत
नित्य नियम वेलापर पहुँचा दैछ उठौना ग्वारि
किन्तु एम्हर पहुँचय विलम्बसँ नदी भरल भदवारि
'नाव – बेढ़ सँ पार कयल तेँ, अतिशय भेल अबेर
कथा बचैत छला पण्डित जी शास्त्र वचन पढ़ि ढेर
'भवसागर धरि पार करय जन, लय लय भगवन्नाम'
सोचल ग्वारि, भने करबे हम पार नदी कहि 'राम'
पण्डितजीक कथा मिथ्या नहि, सोचल ग्वारि अबोध
पहुँचाबय नित नियत समयपर नहि विलम्ब अवरोध
पुछलनि, की सुखि गेल नदी, वा नाव चलैछ निरंत ?
कहल, तकर नहि काज, 'राम' कहि उतरी पार तुरंत
आब न नाव क खेबा हमरा अपने कृपेँ लगैछ
चकित-चित्त पण्डित गोआरि दिस तकलनि, हँसी करैछ !

कहलनि, हमहू चलब तोरा सङ पार गाम किछु काज
मन मे छलनि किन्तु की करइछ, देखी कोनहु व्याज
हुलसलि-फुलसलि चललि ग्वारि,पण्डितजी कें अगुआय
नदी कात जा' आगु चललि, चरफर जनु भूपथ जाय !
पार जाय ताकलि, पण्डित जी छला एहीं तट ठाढ़ !
कहलक, राम नाम लय उतरू पार, जलो यदि गाढ़
की करताह सहस्र – नाम केर करइत गुन - गुन पाठ
धँसला जल मे,क्रमहि गहिर लखि थाहल लय कर काठ
बाजि उठलि ओ ग्वारि,काज की छड़िक,हरिक यदि नाम
अपनहि कहल बुझल थिक हमरा, कहब कि अपने ठाम
किन्तु असंभव आगाँ बढ़ब बुझल तें घुरला अन्त
दुहु तट पर दुहु चकित सोचि किछु,अन्तर दुहुक दुरन्त !

'सबहिँ बलेल'

चर–चाँचर छल भरल-पुरल, सगरो बाढ़िक छल जोर
जतहु शस्य - श्यामला बाध छल चानी पिटल उजोर
किछु जन नाव उपर चढ़ि,'पिकनिक'हेतु झिल्हेरक खेल
चलइछ गपसप रंग-विरंगक, रचइत रुचि कत मेल
कखनहु शिक्षा कला समीक्षा, कखनहु रस संगीत
शिल्प ज्ञान विज्ञान, खने, फिल्मी चर्चा कत रीत
कखनहु खेल विविध मेलक, खन राजनीति केर वाद
चलइत छल नाव क गति संगहि कत नागरिक विवाद
सभ छल मगन तरुन शिक्षित–दीक्षित जीवन रस पूर
केवल मूढ़ मलाह न बुझइत गूढ़ बात, छल दूर
खेपइत लय करुआरि धार दिस कखनहु गगन निहार
ध्यान एक टा छलै, कोना लय जायब नौका पार
सहसा नजरि पड़ल ओकरा पर, टोकल संगीतज्ञ
गबय जनै छह ? नहि उत्तर सुनि कहल, केहन तों अज्ञ

पूछल कवि,कविता बुझइत छह ? ओ मुह रहल निहारि
राष्ट्रसंघ केर अध्यक्षक नामक कयो कयल पुछारि
औरो कते प्रश्न सभ पूछल, उत्तर एक नकार
सभ कहि उठल, व्यर्थ तोहर जीवन निष्फल संसार
बकबक तकइत मुँह सबहक मलाह चुप खेबइछ नाव
पुनि सभ अपन रंग रस मातल, गप करइत भरि ताव
सहसा गपसप रोकि कयल हल्ला मल्लाह अधीर
औ बाबू ? हेलय जनइत छी की ? थिति अछि गंभीर
'नहि नहि,की थिक बात ?' कहल ओ,'नाव डुबल मझधार
गीत न कवित, हिसाब-किताब न एतय लगाओत पार
सुनतहिँ सभक दिमागी गुन कपूर बनि उड़ि कत गेल
गोहराओल, तों पार लगाबह मुइलहुँ सबहिँ बलेल

भाग्यवादी

राजा महामात्यसँ पूछल—'भाग्यवाद की साँच' ?
मन्त्री कहल—'भाग्य फलदायक होइछ, एतय न आँच'
'कोना ?' प्रश्न सुनि मंत्री बजला, देव,कर'क थिक जाँच
मिलि जुलि दुहु योजना बनौलनि, भाग्य साँच वा काँच ?
ओही राति भवनमे पोटरी गेल एक लटकौल
दुइ भूखल जन केँ अन्हारमे पुनि ओहि घरहि ढुकौल
भाग्यक विश्वासी भुखलहु पुनि पड़ल कोनमे जाय
टोइया-टापर दय पुरुषार्थी झोड़ी लेल उठाय
छल चिनिया बादाम, बीछि पुनि फोड़ि-फोड़ि मुह देल
आँकड़ जे भेटय तकरा संगी दिस फेकइत गेल
भोरे आबि देखै छथि राजा - मन्त्री, दुहु छल निन्न
किन्तु एक लग छिलका, दोसर लग मणि-रत्न अछिन्न

अहङ्कार

कागज बाजल 'काज जगतमे हमरहि बल चलइत अछि
जते हिसाब-किताब खबरि, सबतरि हमरे पढ़इत अछि'

सुनि हँसि मसि टिपलक,'जौँ हम नहि रङि सङ पूरिअ तोहर
तँ कोरा कागज ठोङा हित, कङला तोँ, नहि मोहर'
कलम कहि उठल कलबल,'अलबल की बजइछ अज्ञान ?
हमहि अपन बलदय दुहुकेँ कयलहुँ कत योग्य महान।'
हाथक कथा भेल, 'रे कलम ! अलम, कर बाजब बंद
हमहि तोरा गतिशील बनाओल यदपि क्षुद्र तोँ मंद'
माथ हाथकेँ हँसल, 'प्रेरणा देलक के से जान
अपन अपन तजि अहङ्कार सभ मिलित यशस्वी मान।।"

पंचतत्त्व

एक समय जड़ जगत बीच जे पंच तत्त्व विख्यात
क्षिति जल पावक पवन गगनमे उठल कलह केर बात
बाजलि पृथ्वी 'हम पृथुला, चल अचल हमर दुहु नाम
धन-धान्य क जननी हम, हमरहिँसँ भौतिक सुखधाम
पालन करी जगत केँ जनम—मरन हमरहि सुख-अंक
सर्वंसहा हमहिँ ककरा नहि क्षमा करी निःशंक'
गरजल जलद-पटल,—'यदि नहि जल दी की किछु उपजैत ?
रुख-सुख जगती बनइत, सरस न कखनहु रसा रहैत'
सनसन बहइत दौड़ल कहइत पवन गरजि गंभीर
हमहि वहन कय उमड़बइत छी नभ बिच जत घन नीर
तपन तपित-मन किरन पसारि कहल,सभ हमर प्रभाव
आलोकित जग, उष्णताक बल प्राणी जीवन पाव'
नील गगन चुप रहल न, बाजल करइत शब्द उचार !
'आकाश न अवकाश दितय तँ होइत न रवि संचार
नहि मेघ क प्रचार, नहि धरती धरइत जीव अशेष
पवनहु धरि नहि गति पबइत पुनि रहइत कत के शेष'
.. ..
चेता गेल चेतना चित्तगत पञ्च तत्त्व परिभूत
यदि चैतन्य न रहत जगत जड़ व्यर्थ अर्थ अनुभूत

जैन लोक-कथा

१ अद्वैत

तक्षशिला नगरी मे 'नग्गज' राजा कहिऔ
ज्वरपीड़ित उर दाह उठल, सकला नहि सहि ओ
हृदय लेप हित चानन घसबा लय सब ललना
जुटलि, सङहि आङन भरि झनकल कञ्चन– कङना
सहि न सकथि नृप शब्द, सोचि सभ बलया भाङल
केवल सधबा चिह्न एक चूड़ी टा बाँचल
छनहिं शब्द पुनि शान्त, स्वस्थ नृप मन मे जानल
द्वन्द्व रहित चित रहय शान्त, मत अद्वय मानल

२ काम

पांचालक राजा 'दुर्मुख' छल बैसल महल – अटारी
देखल पथपर चलइत चंचल गाय–साँढ़ केर धारी
एक साँढ छल काम - विवश कोनहु धेनुक दिस लागल
सहसा आन दिसासँ दोसरो, उद्धत दौड़ल आयल
मचल द्वन्द्व स्वच्छन्द, प्रतिद्वंद्वी भोंटो पुनि फाड़ल
तकरहुपर झट दौड़ि तेसरो, ओकरहु उदर विदारल
काम प्रवृत्ति क्रोध-मूलक थिक, क्रोधे स्व-पर-विनाशी
जे न बुझथि से जाथि नाशपथ, कहथि भूप संन्यासी

३ भोग

मिथिलामे 'निमि' नामक राजा छला विनित मतिमान
सचिव संग किछु गप करइत देखल नभ उपर वितान
एक चिल्होड़ि लोल लय मांसक लोथ, उड़ल आकाश
झपटि-लपटि चहु दिससँ लोभेँ उड़ल चड़इ कत रास
मारि लोल लोहू लोहान कय देलक ओकरा हंत !
फेंकि देलक मांसक टुकड़ा, निज प्राण बचौलक अन्त

पुनि दोसर टेकल, तकरहु पर टुटल विहंग जतेक
ओहो छोड़ौलक जान जखन निर्मोह मांस देल फेक
निमि प्रत्यक्ष देखाय कहल एकसर जे भोगथि भोग
बिनु बँटने हो तनिक एहन गति मिलि-जुलि भोग न मोग

४ नायक

छला 'करंडु' कलिंगक राजा करइत बनक बिहार
आम गाछ फल लदल देखि तोड़ल फल ढेप प्रहार
बढ़ला आगाँ दिस हाथी चढ़ि तावत जत छल लोक
एक एक फल तोड़ि सून कय देल गाछ बिनु रोक
ने फल केवल, ढेप—चेपसँ पातो धरि झरि गेल
फिरितहिँ देखल भूप दशा, तँ मन बिचार भरि गेल
नायक यदि अपने करइत छथि उच्छृंखल व्यवहार
अनुयायी उद्धत भय जगतक कय दै अछि संहार

राजपूती त्याग

राजा 'राजसिंह' मेवाड़क अधिपति छला महान
'भीमसिंह' 'जयसिंह' पुत्र दुइ' बल-पौरुषेँ समान
जेठि महारानीक जेठ सन्तान 'भीम' युवराज
सहजहिँ ओ राज्यक अधिकारी उचित हुनक सिर-ताज
किन्तु छोट सन्तान 'अजय' छोटकी रानीक महत्त्व
स्नेह-पात्र राणाक परम, तेँ चाहथि राज्यक स्वत्व
राज - पुरुषकेँ मिला-जुला कय अजय करय षड्यन्त्र
रहितहुँ छोट मोट हम भाग्यक हमरहि शासन-तन्त्र
राजनीति ओ कुल-परम्परेँ जेठ होथि अभिषिक्त
बहुतो प्रजा भीमहिक पक्षेँ बाजथि कथा नियुक्त
राजकुलक द्वेषाग्नि धधकि उठले, दुहु दल जरि जैत
नगर-गाम धरि अगड़ाही पसरल, से कोना मिझैत

सोचथि राजसिंह की दुर्गति, लिखल बुढ़ारी काल
मचल यादवी आँखिक सोझाँ कुलक नाश तत्काल
हमरहि पाप आइ अछि कारण अजयक मन बढ़ि गेल
भीमसिंहके उचित स्वत्वसँ हटबय सत्ता लेल
सोचि-विचारि अजयके बजबौलनि राणा एकान्त
कहलनि, जेठ भायके राजा अहीं बनाउ नितान्त
हम भीमहुसँ बढ़िकय मानल अहिंक माय महरानी
आइ कुलक रक्षाक उदेसें स्वयं बनिअ अहं दानी
तमकि उठल अति उदय, जेठ भेनहि की भेटय सत्ता ?
हमर पक्षमे राजपुरुष सभ हमरहि राज्य महत्ता
मौन महाराणा न बाजि सकला पुनि एको बात
अजय तमकि चलि देल पुनः बजबौल भीमके तात
सोचथि भीम, महाराणा की कहता आइ बजाय ?
सदा कुपित हमरा पर, अजयक रहला सदा सहाय
किन्तु अजय केर जय न देब होअय बल रहौ असीम
पिता पक्ष बरु गहथु न मानव हुनक कथा हम भीम
किन्तु जाय देखइत छथि तँ राणाक दोसरे रंग
आँखि सजल, करुणा छलछल गद्गद स्वर, नेह प्रसंग
"तात! राज्य पर संकट विकट, सम्हारिअ आगाँ आबि
भ्रातृद्रोह - जर्जर राज्यक नहि जानी, की अछि भावि
वत्स! कही जे करिअ, न सोचिअ यद्यपि कतबहु हानि
एक मात्र ई वचन पिता केर लेब अहाँ ध्रुव मानि
हमर खड्ग' लिअ हाथ, न करबे मन कनिओ संकोच
राज्यक हितके सोचि न पुनि विचलित मन करबे रोच
यदपि अजय अछि प्राणहुसँ प्रिय किन्तु आइ कर्तव्य
प्रेरित करइछ नव्य साहसक हित बरु क्रिया अभव्य
अहाँ जेठ पुनि श्रेष्ठ गुणहुँसँ अहिंक राज्य अधिकार
किन्तु अजय मानल न नीति ई जीवन भरि अविचार

तें ई लय तरुआरि हमर वचनें अहँ सहसा जाय
लिअ उतारि गर्दनि अजयक निष्टंक राज्य भय जाय।"
भीमसिंह राणाक वचन सुनि चकित चरण धय लेल
"राज्यक हित, प्रिय अहँक हमर कर्तव्य अन्यथे भेल
करथु अजय शासन राज्यासनसँ हमरे छथि भाइ।
हुनक हेतु हम जन्मभूमिकें छोड़ि दूर चलि जाइ।"
राणा केर दुहु नयन नोर-धारें बहइत सुनि बात
तावत त्यागी भीमसिंह चलि देल कतहु अज्ञात।।

प्रत्युपकार

कलकल छलछल नदी बहैं छल चुट्टी एक पियासलि
आयलि पीबय पानि लहरिमे पड़ि सहसा भसियाइलि
परबा एक तीर-तरुपर बैसल छल सदय सुजान
पात खसाओल, लटकि जाहिपर कहुना पौलक त्रान
किछु दिन बीतल, तरुपर रीतल परबा छल निश्चिन्त
आबि व्याध क्यो तीर उठाकय बेधय चाहल हन्त!
देखि दृश्य ई अति कृतज्ञ चुट्टी चट कटकल जाय
पटकल पैर व्याध, बाधित भय छुटल तीर कतिआय
ताबत उड़ि परबा तरुवरसँ जीवन अपन बचौल
उपकारक फल पाबि प्रेमसँ परम प्रभुक यश गौल

सहयोगिता

ब्रह्मा बाबा सभक पितामह देव दनुज सभ नीति
समदर्शी वेदज्ञ विदित क्यो ने हित, ने आराति
किन्तु आइ दानव - दल जुटिकय आयल लगबय दोष
'अहँ नित करी देवताहिक हित, दानवपर कत रोष!'
कहल पितामह, 'वत्स! दुहु जन छी सन्तान समान
पक्ष विपक्ष न करी, अपन व्यवहारे फलक निदान।'

राक्षस गनक मनक संतोष न भेल, देखि विधि विज्ञ
देल नोत भोजक किछु कहि सुनि मूर्ख-विरोध-अभिज्ञ
आयल हुलसल-फुलसल पहिने जत राक्षस-समुदाय
कहलनि, 'मोदक खाउ किन्तु केहुनि नहि मोड़ल जाय।'
मोदक मधुर हाथ बिनु मोड़ने न पुनि खैब उजिआय
एम्हर ओम्हर छिड़िआय किन्तु नहि दाना मुँहमे जाय
तावत पहुँचि गेला आमंत्रित सुर गण विगत-विकार
सुनि आज्ञा ब्रह्माक परस्पर मिलि-जुलि कय सहकार
एक खोआबथि दोसरकें नहि कर मोड़बाक प्रसंग
सचा-मंच भोजन कैलनि नहि अनुशासनक उलंघ
असुरक फुटकर भोग अहितकर सुरक सुखद सहयोग
स्वयं प्रमाणित भेल, विधाता पर व्यर्थें अभियोग

पशु पशुपति

उत्तर हिम-अंचल दिस चंचल कल-कल गंगा धार
सेतुबंध रामेश्वर दक्षिण सागर कूल किनार
योजन सहस दूर अन्तर प्रांतर कत वन-कांतार
कोना चढ़ायब गंगाधरकें गंगा-जल शुचि सार
हमर जन्म हित कयलनि कबुला-पाती बाबू-माय
गंगाजली कान्ह लय बौआ स्वयं चढ़ाओत जाय
यदपि दिवंगत तात-मात, बिसरल नहि कथा तथापि
किन्तु आइ धरि हंत! चढ़ौलहुँ नहि जल शिव शिर थापि
उचटल चित्त 'एकनाथ'क अछि द्रुत-पद चलल तरंत
अटकल नहि बाटहु घाटहु नहि बिरमल, दूर-दुरंत
अति दुर्गम हिमाद्रि हिम-दुर्वह गंगोत्री गिरि-खंड
भरि शुचि कलश सलिल निर्मल, जनु द्रवित धर्महिक पिंड
सत् संकल्प, विकल्प न अल्पहु, अह निश गति अविराम
शिव-लिंगक हित गंगोदक लय चलला दक्षिण धाम

हिम-उपत्यका टपइत, कत जनपद पुर मरु पथ भीम
गिरि गह्वर वन सघन बिजन पाँतर कत अकथ असीम
दिन सप्ताह मास पुनि ऋतु कत वर्षा - अंधड़ झेलि
जाड़ - ठाढ़ हिम - गाढ़ गमाओल पुनि गर्मीक झमेल
आपत - तापित मरुथल शापित कंठ पिपासित घोर
नीर बिन्दु बिनु पथिकक जीवन संकट पड़ल अथोर
किन्तु कलश गत हिमजल कनहु न पिबय-चाह' मति-धीर
वृती एकनाथ क मन कखनहु छनहु न श्रान्त अधीर
तंद्रो-नहि, निद्राक कथा की ! भूख-प्यास नहि लेश
मनमे ध्यान, नाम मुखमे पदमे गति तीर्थ उदेश
कत ऋतु बिता, ग्राम पुर वन पर्वत पथ दुर्गम दूर
कत शत योजन चलि पैदल जल कलश कान्ह श्रम झूर
पहुँचल निकट सेतुबंधक सिन्धुक ध्वनि सुनि गंभीर
बुझल सफल श्रम एकनाथ मन उछलल दरस अधीर
जय कन्या कुमारि दाक्षायणि तपी सेतु वृष-केतु
दक्षिण उत्तर तीर्थ भारती आ - हिमगिरि आ-सेतु
दूर दूर मन्दिरक शिखर, दूरागत सिन्धु तरंग
भक्तक उर आंदोलित, तावत घटित विचित्र प्रसंग
निकटहि एक विकल गदहा छल हँफइत चटइत भूमि
प्रान पानि बिनु ततछन तजइत नहि जल कन सक जूमि
निरखि निरीह पशुक दुर्गति उर द्रवित पथिक रुकि गेल
सहसा गंगाजली उझकि, किछु खसा बिन्दु शुचि देल
जनु फिरि आयल प्राण पशुक करुणासँ छलछल आँखि
मुह बबइत चातक घन याचक पिबय पसारल पाँखि
क्रमहि कलशसँ बिन्दु-बिन्दु जल सदय पिओलनि हंत
भाव-विभोर पशुपतिक पूजाक पशुकेँ पूजल अन्त !

... ...

सहसा मन्दिर-घण्टा बाजल जय धुनि जलधि गँभीर
पशु बनि पशुपति स्वयं ग्रहण कयलनि जे गंगा-नीर

बुद्ध-बोध

अवतरण—

"सिद्धानां कपिलः—" गीतोक्त कपिल नामहि विन्यस्त
कपिलवस्तु बस्ती बसइत छल हिमालयक निकटस्थ
विक्रम - पूर्व पञ्चशत वत्सर इतिहासक छल काल
सूर्यवंश शाखाक राजधानी ओ विभव विशाल ।१

शुद्धोदन राजाक प्रशासन ईति – भीतिसँ दूर
रानी माया देवी अन्तःपुर ममतासँ पूर
यज्ञ जाप चलइत छल श्रुति - मत, स्मृति - मत शासननीति
कला - कौशलक सन्धानी माया रानी शुचि रीति ।२

वयस वसन्त बितल जाइछ नहि कोर रसाल फुलाय
सन्तति कोकिल कूक न सुनलनि, हूक हृदय अधिकाय
पंडित – पुरहित साधु - संत कबुला - मनताक उपाय
कयलनि कत व्रत तीर्थ अन्त सपनामे देल देखाय ।३

पद्मासनासीन क्यो ज्योति - पुरुष छथि ध्यानहि लीन
निकसि प्रभा रेखा रानी – मुख प्रविश उदर कय पीन
चौंकि उठलि माया कंपितकाया पतिदेव हकारि
कहल स्वप्न सुनि विस्मित सस्मित भूपति हृदय विचारि ।४

समय पाबि पुनि गर्भ – खानिसँ सन्तत्ति - रत्न अमोल
प्रकट, निकट ओ दूर सभक मन जगमग हर्ष हिलोल
दम्पतीक पूरल मनोरथहु अर्थ सिद्ध जे भेल
नाम पड़ल सिद्धार्थ गोतमहु न्याय प्रसिद्धिक लेल ।५

प्रवृत्ति-निवृत्तिः

टीपनि टिपि, विचारि ज्योतिषफल कहलनि गणक विचारि
शिशु ई धर्मचक्र संचालक होयता जगत प्रचारि
राजयोगसँ त्यागयोग अछि हिनक बढ़ल से बूझि
रोग जरा ओ मरणदृश्य नहि हिनका जाइनि सूझि ।६
सावधान रहबे राजन् ! ई छथि करुणा - आगार
संसारी बनि रहथु तेना राखब कय यत्न हजार
सुनि शुद्धोदन पुत्रप्रेम वश किछु चिन्तित उद्धिग्न
भय सतर्क लालन - पालनमे लागल रहथि सयत्न ।७
राजोचित परिवेश सखा सुहृदक सङ कौतुक - केलि
पुनि शिक्षा - दीक्षा हित कयलनि राजभवन बिच मेलि
काव्य - कलासँ अधिक हिनक रुचि - शुचि दर्शन दिस जाय
भोग - रागसँ योग विरागक कथा तथा रुचिदाय ।८
सावधान शुद्धोदन यत्नें राजस जीवन योग्य
सुलभ करथि, जहिसँ मन हिनकर करय विषयरस भोग्य
तें सजाय उपवन - गृह, सुख - सामग्री ढेर लगाय
दिव्य सुन्दरी यशोधरा सङ देल विवाह रचाय ।९
विधि विधान छल आन प्रकारहि तें तेहन संयोग
मन उद्विग्न कुमार गौतमक बहरयबाक सुयोग
बन्धनमे पड़ि गज औनाइछ जंगल कहुना जाइ
विहग बंद पिजड़ामे छटपट करइछ नभ बहराइ ।१०
घर - आङनमे घेरल - बेढ़ल गौतम छला उदस्त
विस्तृत जगतक हालचाल बुझबाक लालसा न्यस्त
भेल व्यवस्था तकरहु नगरक हाट - बाट सजि गेल
सिंचित पथ तोरण पताक ध्वज भ्रमण रमणहिक लेल ।११

राग विराग :

हाट - बजारक चाहल - पहल देखल कत दृश्य ललाम
क्रीडा - कौतुक कला - कलापक नव - नव रस अभिराम

लोकारण्यक कोलाहल बिच पिक - मयूरकेर बोल
संगहि सुनल करुण कुररीदल व्यथा - वलित रव घोल ।१२
जतय नृत्य - संगीतक रुनझुन, क्रन्दन ततहि अमन्द
जतहि यौवनक बहय तरंगिनि ततहि जरा निष्पन्द
सुख तरंगकेर राग - बहारहु, समदाउनिहु उदास
सुखक ज्योतिरिंगण चमकी छन, दुख तम सघन अकास ।१३
राजकुमरकेर कान पड़ल रोगी सहसा कुहरैत
देखल पुनि थरथर कँपइत जर्जर क्यौ वृद्ध कँपैत
बढ़ला किछु आगाँ तँ दृष्टि पड़ला, शव कान्ह उठाय
गंगा - नारायण कहइत समसानक दिस कत जाय ।१४
जरा, रोग ओ मृत्यु ग्रस्त ई जगत दुःखमय अंत
सहसा बोध पाबि घुरि चलला कुमर सचिन्त तुरंत
दिनभरि किछु सोचाइत उन्मन पुनि उचाटि गेल छल चित्त
पुर-जनपद वन-उपवन सगरो श्रव्य - दृश्य ध्वनि - चित्र ।१५
सबतरि व्यापित लौकिक सुख - जत दुःख विषय संयोग
नित उद्भव होइछ विनाश हित, क्षणिक जगत उपभोग
'सर्वं दुःखं सर्वं क्षणिकं' एतबे सत्य सुझाय
राग - भोग आपातमधुर, पुनि परिणत तिक्त - कषाय ।१६
गाम - नगर वन - उपबन हाट - बाट गत चित उचाटैछ
गुनिधुनि करइत कुमर गौतमक मन नहि कतहु रमैछ
पतिक गति - विधिक चिन्तन करइत सती पतिव्रत लीन
यत्नवती पत्नी यशोधरा सेवा कला प्रवीण ।१७

बन्धन-मोचन : अभिनिष्क्रमण

रूपवती युवती कल्याणी पति - सेवामे लीन
षोडश कला - कलाप षोडशी अहनिश प्रणय- प्रवीण
नभ उड़ंत जे मुक्त विहंगम से पुनि स्वर्णिम डोर
घर-पिंजड़ामे रमथु राति - दिन एहने करथि डोर ।१८

अन्तर्वर्तनी पत्नी गोपा यशोधरा अभिधान
दोहदवती जन्म देलनि शिशु राहुल नाम निदान
निशा-दिवसकेर संयोमहिँ समुदित सन्तति जनि भोर
फल सन्तान विवाहक सहजहिँ यशोधराकेर कोर ।११९
वात्सल्यक बन्धन पड़ि सहजहिँ बसबथु नव संसार
सभ निश्चिन्त छला चिन्तित पुनि केवल राजकुमार
सोचि-सोचि तनि मन औनाइत रहल, गहल रुचि-रंग
वात्सल्यक बन्धनकेँ तोड़ब सहज न रहत प्रसंग ।१२०
बन्धन - अनुबन्धन नित बढ़इछ गृह–परिवार उलंग
उबडुब जीवन - तरी खेवि के सँकय भवाब्धि तरंग
नभ उड़ंत ई दिव्य विहंगम प्रेमक पिंजड़ा बन्द
कलधुनि गुनि पुनि बन्धनमे नहि पड़य कदाचित फंद ।१२१
सोचि - सोचि से राजकुमार गोतमक मन अकुलाय
उड़ि चलि जाइ मुक्त वन-परिसर, नहि किछु बंधनदाय
सुतलि मुक्तकेशी यशोधरा शिशुकेँ हृदय लगाय
छोड़ि-छाड़ि सुत - वित-पत्नी सुख बुझि संसार बलाय ।१२२
चलि देलनि सिद्धार्थ परम तत्त्वक अन्वेषण लेल
सांसारिक बंधन कोनहु नें बान्हि सकल बगमेल
अता - पता नहि हंस मानसक उड़ला दूर दुरत
हंसी कनइत, कमल मुकुल कुम्हलाइत झरइत हंत ! ।१२३
जननी-जनक बन्धु-बान्धव जन-परिजन व्याकुल चित्त
कतबहु खोज कयल सब निष्फल, वन-रोदन अनिमित्त
गाम-गमइ जनपद पुर-परिसर सबतरि तकइत लोक
थाकि गेल कत दिन धरि कतहु न भेटल,व्यापित शोक ।१२४

सन्धान-साधना —

ओम्हर तरुण गोतम बौआइत छला शान्तिहिक खोज
कत पंडित दार्शनिक साधु संबोधक लग नहि ओज

अमृत तत्त्व की ? परम सत्य की ? करइत तकर तलास
जप तप कत पुनि क्रिया-साधना व्रत-उपवास पचास ।२५
घुमइत फिरइत वन - जंगलमे वैरागीकेर टोल
शास्त्र - पुराण पढ़ल पंडित लग सुनल दर्शनक घोल
यम - नियमक पालन नित करइत साधल कत हठयोग
किन्तु न बाधल चंचल चित्तक भ्रान्ति, न शान्ति सुयोग ।२६
विधि - निषेधमय कर्मयोग, सर्वं मिथ्याहुक बोध
कोनहु इष्टके बुझि विशिष्ट भजनहु कय हृदय न शोध
तत्त्व पिआस मेटा नहि सकले, सिद्ध अर्थ नहि भेल
मानस अवसादक अवसान न, नहि प्रसाद उर मेल ।२७
अन्त थाकि थुकि श्रान्त-क्लान्त चित उरुबिल्वक वन जाय
आजुक बुद्धगया जे कहबय, आसन देल लगाय
चाल दल पीपर तरुतर सहसा चित्त अचल थिर भेल
विनु उपाधि लागल समाधि सभ आधि-व्याधि बिति गेल ।२८
थिर मन भय दृग मूनि कदाचित् किंचित संचित ध्यान
अनायास निःश्वास रुद्ध, मन शून्य अनन्य विधान
केहन समाहित बोधिसत्वकेर जन्मान्तरक वितान
दिवस गणित नहि,मास विदित नहि, वर्षहु बितल न भान ।२९
आतप तपा सकल नहि, वर्षा भिजा न सकले रंच
पौषक पाला गला न प्रकृति-विकृतिहुक चलल प्रपंच
कत बाधा साधना - क्षेत्रमे कत मारक उत्पात
किन्तु न डिगा सकल, पर्वत पर नहि विड़रो आघात ।३०
कते विघ्न-बाधना पार कय राजस तामस रोध
वर्ष-वर्ष साधना सिद्ध कय पाओल सात्त्विक बोध
जगतक दुःख-यातना जातबा तकरा करइत शोध
शान्ति अहिंसा दया क्षमा समता निर्वाण प्रबोध ।३१

बोधोदय : बुद्धत्व

सहसा साधक मनमे बोधक ज्योति उगल दिनमान
अंधकार छटि गेल स्वयं, रवि लग कहु तिमिर वितान
पाओल ज्ञान क्षणिक संसारक दुख - सागर उतरोल
निर्वाणक पथ रथ चलइछ मध्यम गति शान्तिक टोल।३२

सांसारिक संस्कारक गतिविधि निरखि-परखि कय शोध
बुद्ध-शुद्ध नवजीवन पौलनि जन्म - मरण अवरोध
सुजाताक पायस स्वीकारल, सहल हिंस्र आघात
स्वर्ण जते तापित होइछ तत बढ़य चमक अवदात।३३

हिनक दृष्टिमे सृष्टि नवीने वचनहु कलना भव्य
दुरित गलित दुख सुख परिणामी देलनि दर्शन भव्य
आत्म-अनात्म विचार व्यर्थ थिक, संस्कारक सब खेल
जीव स्वयं संजीवन पबइछ शुद्ध जीवनक मेल।३४

सत्य अहिंसा साधनिका थिक माध्यम अन्तर्बोध
क्षण-क्षण परिवर्तित जीवनसँ निर्वाणक पथ शोध
शरण लेथु आश्रमी श्रावकहु श्रमणक जीवन शुद्ध
धर्म शोध हित, कर्म मर्म हित बुद्ध-बोध अविरुद्ध।३५

जय गोतम सिद्धार्थ बुद्ध जय ज्ञान-प्रबुद्ध महान
जनिक अवतरण दुःख सन्तरण हित जीवन अवदान
जय हे ! नव अवतार नवम हरि हिंसा यज्ञ-विधान
धर्म देशना कयल श्रमण कय श्रमण विहार निदान।३६

ज्योति-उत्कर्ष

बहुजन सुख हित, व्यक्ति समाजनिष्ठ भय जीवन अर्पि
तर्पित करइत जीवमात्र हित, जीवन स्वयं समर्पि
त्याज्य ग्राह्य करइत विवेचना सत्य विवेचित तत्त्व
शीलवन्त अष्टांग मार्ग चलि धम्म संघ बुद्धत्व।३७

दिव्यदर्शनी देल अनात्महु संस्कारहि निर्वाण
द्वादश स्कन्ध निवेशित बुद्ध भागवत तर्क विधान
प्रत्यक्षहु अनुमान प्रमाणहु आगम वैदिक वाक्य
खंडित कय, पुनि मंडित आगम तन्त्र अर्हंक मुनि शाक्य।३८
धर्मचक्रकेर प्रवर्तनक हित मृगदावक वन जाय
प्रथम कयल उपदेश तत्त्वमत सात्त्विक बौद्ध निकाय
तदनु जैतवन गिरिवृज श्रावस्ती बस्ती कत जाय
भिक्खु सिक्ख सँग संघाराम विहारक रचल निकाय।३९
आकर्षित कत शिष्य विशिष्य प्रवर्तित हुनि उद्देश्य
क्लेश कलुषमय हिंस्र विश्वमे अहिंसाक उपदेश
पर्णकुटीसँ राजभवन धरि देश - विदेश अशेष
पसरि गेल गौतम मत माध्यम अमृत शान्ति सन्देश।४०
कत आनन्द बहुला राहुल अम्बापालिहु उद्बुद्ध
श्रमण श्रावकहु सेट्ठि-वरिट्ठहु भूप रक रुचिशुद्ध
बुद्ध - बोध प्रवचन - मंजूषा त्रिपिटक रत्न जोगाय
विश्वक कोन - कोनमे सहजहिँ देलनि दल पहुँचाय।४१
मगध राजगिरि कुसुमपुरहु राजाश्रित शासन तंत्र
बज्जि लिच्छिवी वैशाली जत विकसित नित गणतंत्र
अटक - कटक धरि कांची - गांधारहु व्यापित मत भेल
पुनि सीमा टपि कतय : न बौद्धविचार प्रचारल गेल।४२
लंका वंका वर्मा : नववर्मा हिन्देशिहु पूर
तिब्बत प्राचीनहु चीनहु जयपान मंगोलहु दूर
क्रमहि श्रमण गण भ्रमण निरत रहि बुद्धबोध रुचिदाय
विश्वक कोन - कोनमे सहजहिँ अंत देल पहुँचाय।४०

जय-ध्वनि :

ज्योतिर्मयक ज्योतिसँ जगमग जय जय भारतवर्ष
जनिक वचन-किरणें आलोकित मनुजताक उत्कर्ष

जय हे बुद्ध ! शुद्ध शोधित जातक जन्मान्तर योग
शत–शत बान चढ़ैछ कनक चमकैछ विशेष प्रयोग ।४४
जन्मस्थली लुम्बिनी, बोधस्थली गया अभिधान
सारनाथ जत प्रथम चक्र संचालित धर्म महान
जीवनधारा अन्त कुशीनारा पुनि पावन धाम
बौद्ध तीर्थ अछि विदित विश्वमे पुनि-पुनि करी प्रणाम ।४५
धन्य समय ओ देश अनन्यहु भेल अवतरण पाबि
भारतभूमिक महिमा - गरिमा पूजित युग - युग भावि
कोटि - कोटि मानवता विश्वक धर्मभूमि हित आबि
हिन्दक वसुन्धराकेँ पूजथि विश्वगुरुक यश गाबि ।४६
धन्य मास वैशाख पूर्णिमा तिथि इतिहास - प्रसिद्ध
जनम मरण साधना प्रथम उपदेश समय जे सिद्ध
कपिलवस्तु ओ मगध - गया गिरिव्रज वैशाली धन्य
सारनाथ श्रावस्ती बस्ती बज्जि विहार अनन्य ।४७
बुद्धं धम्मं संघं शरणं यामि मन्त्र सुव्यक्त
पञ्चशील पुनि अर्हँक व्याप्त एखनहुँ नवयुगहु प्रसक्त
मार्ग अर्हँक अष्टांग प्रमाणित, रत्नचतुष्टय सिद्ध
कोना चेतना ? त्याज्य-ग्राह्य की? की नहि अँहक प्रसिद्ध ।४८

मन्त्र त्रिपदा

१ बुद्धक शरण गहब हम जाय :–'बुद्धं शरणं गच्छामि'
२ संघक शरण गहब हम जाय :–'संघं शरणं गच्छामि'
३ धर्मक शरण हम गहब हम जाय :–'धम्मं शरणं गच्छामि'
मूलमन्त्र ई बौद्ध निकाय–मध्यममार्गी बुद्धक दाय

वचन-प्रवचन

प्रथम धर्मचक्रप्रवर्तन (सारनाथ)

तथागतक सम्बोधन कोनहु नामेँ भय न सकैछ
मित्र-बन्धुता सम्बन्धो नहि कहले जाय सकैछ

बुद्ध बोधमय हुनक रूप, समदर्शी सबहि समान
शत्रु न क्यो तें सभक मित्र छथि शिष्यहु पुत्र प्रमान
पिता कही, गुरु पद संबोधित करी सेंह उपयुक्त
श्रद्धेयक प्रति श्रद्धा राखब श्रमणक धर्म प्रयुक्त
तथागतक मत मध्यम मार्गक ने कठोर ने नर्म
ने लघुतम ने महत्तमहु, जे साध्य मनुजकेर मर्म
धर्मक नामें ने पचाग्निक तप अनशन कटु कष्ट
ने विलासमय जीवन यापन अशन - शयनसँ नष्ट
भोग - योग उपयोगहिं सम्यक् जीवन हो सुखदाय
मध्यम मार्गक अनुसरणहि संबोधक करिअ उपाय
जतबासँ जीवनयात्रा - पथ सहज तते पाथेय
ने हो अधिक भार - संभार न रिक्ततहु सन्धेय

ध्यान-बोध—

पुछल शिष्य, प्रभु ! कहिअ योग ओ ध्यान ऋद्धिकेर कोन उपाय
मन निर्भीक कोना उन्मुख हो परम तत्त्व संबोध सदाय
कहलनि बुद्ध, प्रथम योगक सोपान प्रेम-पथ गहिअ निरन्त
सभ प्राणी पर, शत्रु उपर धरि समता ममता स्नेह अनन्त
तदुपरि दया-द्रवित भय प्राणी मात्र लखिअ दुर्गत दयनीय
मन पाषाण गलित भय करुणें हिम द्रव बनय सहज नमनीय
तखन वृत्ति मुदिता गहबे पर - सुखकें निरखि हृदय आनन्द
पुनि कालुष्य जगत व्यापित रहि दूर बनिअ अकलुष निर्वन्ध
पंचम थिति सुख-दुखक परे रहि राग - द्वेषसँ होइ वियुक्त
तखन शान्ति लहबे अक्षय, पुनि अभय भूमिका रहब नियुक्त

ऋद्धिपाद—

ऋद्धि-पादकेर पाठ पढ़ौलनि स्वयं शिष्यकें गौतम बुद्ध
चारू चरण चारु सुविदित अछि अभ्यासब तनि क्रमशः शुद्ध

दोष-दुरितकें मनमे नहि प्रवेश करवहुक अवसर फूर
पहिनहुसँ अभ्यासित व्यसनहुकें क्रमशः करबे पुनि दूर
पुण्य विचार भरिअ मनमे जे नहि पहिनेसँ रहय प्रवृत्त
सत्य नित्य की थिक तकरे रहि-रहि अन्वेषण करु चित वृत्त

तीन चेतना—

शारीरिक दुर्दशा वयोवृद्धक देखइत यौवन परिणाम
रोगी जनक दुर्गतिहुसँ बुझइत की पुनि शरीर आयास
मरइत देखि लोककें जीवन केहन अनित्य करिअ से ज्ञान
बुद्ध वृद्ध रोगी ओ शवकें देखि जेना पौलनि निर्वाण

चारि सत्य—

(१) दुःख नियत अछि, (२) तकर की मूल, (३) शमन पुनि तथ्य
(४) करिअ उपाय विचारि ई चारि बौद्ध मत सत्य

पञ्चशील—

(१) ककरहु हिंसा करिअ नहि, (२) चोरि न, (३) काम न भोग
(४) मिथ्या ओ (५) मद पान तजि पंचशील उपयोग

पंच स्कन्ध—

(१) रूप, (२) वेदना (३) संज्ञा ओ (४) संस्कार तथा (५) विज्ञान
पच स्कन्ध पर जगत जुड़ल अछि तथागतक अभिधान

अष्टाङ्ग मार्ग—

१ सम्यक् ज्ञान :—जतय नहि माया-मोहक हो परिवेश
२ सम्यक् पुनि विचार :—जेहि बल हो वचन-क्रियाक निवेश
६ सम्यक् वचन :—मधुर हितकर ओ सत्य तत्त्वसँ पूर
४ सम्यक् कर्म :—पवित्र अनुत्तेजक हिंसासँ दूर
५ सम्यक् आजीविका : जाहिमे धर्मक हो न अभाव
६ सम्यक् चेष्टा : जीहसँ शम दम आत्मसंयमक भाव
७ सम्यक् हो संकल्प :—विश्व-कल्याण भावना मूल
८ सम्यक् ध्यान :—जीवनक परम तत्त्व चिन्तनमे तूल

अष्ट त्याज्य :—

(१) हिंसा, (२) चोरी, (३) काम-सुख, (४)मिथ्या (५)वचन कठोर
(६) अलस (७) लोभ ओ (८) घृणा तजि सोचिय त्यागक जोर

दश ग्राह्य :—

(१) दान दीनकें, (२) ज्ञान हीनकें, (३) सेवा दुखी जनक कर्तव्य
(४) चलिअ धर्मपथ, (५) उच्च विचारक करिअ (६) विनय व्यवहारहु भव्य
(७) अपन दोष - त्रुटि सतत सुधारिअ, (८) जत भेटय गुण करिअ ग्रहण
(९) सिखिअ सिखाबिअ, (१०) चलिअ धर्मपथ, दश बुद्धक उपदेश - वचन

बोध कथा

नाम-जातक

तक्षशिलाक पाठशाला छल नामी, छात्र हजार
पढ़बैं छला जतय ज्ञानी गुरु बोधसत्व अवतार
भर्ती भेल नवीन सत्रमे 'पापक' नामक छात्र
सभ खिसिअबैं नाम लय ओकरा, उपहासक से पात्र
कानि-कलपि कहलक ओ गुरुसँ, हमर बदलि दी नाम
कहलनि सोचि कने, पहिने घुमि आबह जनपद - गाम
जे पसन्द हो देखि कहह, देबह से बदलि तुरंत
खुशी - खुशी से चलल नाम डेबक हित दूर - दुरंत
घुमइत - फिरइत पहुँचल नगरक कात नदी सुनसान
जीवक नामक मुइल व्यक्तिकें जरबैं छल समसान
नाम जीवकहु मुइल सोचि से चिन्तामे पड़ि गेल
नामक ई विपरीत कोना परिणाम देखना गेल ?
आगाँ बढ़ल, भिखारिनि भीख मङै छलि हाथ पसारि
पुछलक, के छह ? 'अनपुरना' हम, दाना दी दू-चारि
चलल बाट धय हाट - बचारक देखल ततय अनूप
सेठ नाम कौड़ीमल बैसल मोहर गनइत चूप

सस्मित - विस्मित पुनि मन्दिर पर देखल नागा नग्न
पुछलक, की थिक नाम ? पितम्बरदास, सूनि मन मग्न
फिरइत काल बूढ़ क्यौ टगइत चलइत छल समधान
जानल तकर 'नवीन कुमार' नाम पुनि सुनि मुसुकान
फिरल गुरुक लग कहल, नाम सन्धानक की छल तत्त्व
अपने देल सुझाय, बुझल हम अभिधानक न महत्त्व

बोधक पात्र

गौतम बुद्ध जनिक बोधें हिंसा जगसँ उठि गेल
तनिका लग जिज्ञासु लोक जुटइत छल बोधक लेल
संगहि किछु उत्साही शिष्य प्रचारक बोधक दानि
कहि-सुनि अनुयायी बनबय लगला, बुद्धक लग आनि
एक दिन कोनहु आगन्तुकके श्रान्त-क्लान्त अति देखि
पुछलनि बुद्ध–'भूख लागल की अछि अहँके सविशेष ?
कहलक–दू दिनसँ अन्नक दाना नहि भेटल हाय !
बुद्ध तुरंत शिष्यके कहलनि–खोआ-पिआवह जाय
सभ लगले आगत-स्वागतसँ भोजन ओकरा देल
आनल मेल तखन पुनि शिष्यक द्वारा बोधक लेल
बुद्ध कहलथिन–जाह आब तों, तोहर एतबे काज
शिष्य पुछलथिन–'बोध कहाँ भेटलै एकरा महराज ?
बुद्धक उत्तर छल एतबे –'एकरा न तकर अनुरोध
तोहरे बुद्धि - बोध आवश्यक, भुखलक अन्ने बोध'

बोध-वचन

द्वेष-वैरसँ नहि तकर शमनक कोनहु उपाय
आगिक ताप न आगिसँ कतहु मिझाओल जाय
सैन्य सहस लय रिपु प्रबल जितथि न से जययुक्त
मनके जे जीतय सहज से जग विजयी उक्त

कष्ट शरीरक, मृत्युहुक डर, ककरा नहि ह्वैछ
से बुझि अपनहि अनुभवें, हिंसा सुजन तजैछ

वृद्धाकें माता बुझिअ, तरुणी बहिनि समान
बालाकें पुत्री गुनिअ, मत तथागतक जान

श्रमण रहथि जग पंकमे पंकज जेना रहैछ
नहि कादो कलुषित करय, ने जल भिजा सकैछ

माथ मुड़ौनहु, पहिरनहु पीत वसन परिधान
त्याग विना किन्नहु केओ श्रमण न होथि निदान

शुचि विचारहिक टोप सिर, कवच चरित्र पुनीत
सत्य अहिंसा ढाल-असि गहि रिपु विषयहु जीत

फूल - फूलसँ बिन्दु रस मधु रचि मधुप जुड़ैछ
कन - कन यती गृहस्थसँ लहि समाज सजबैछ

भोगी संगतिमे बिता जीवन किछु नहि लभ्य
क्षण भरि योगी संग लहि किछु नहि रहय अलभ्य

वन बसनहु, गिरि–कन्दरा गहनहुँ, तीर्थहु जाय
छाया जनु माया न पुनि छोड़य मनुजक काय

तिय सुत बित मित नित हमर जे दिन-राति गबैछ
अपनहु तन नहि पुनि अपन संग अंत बुझि लैछ

दिशा-काल अंतरहु रहि बोध-वचन सुख दैछ
दूरहु रहि रवि - शशि सभक घर - घर तिमिर हरैछ



सनेस

भिनसर

चुह-चुह करइत चुहचुहिआ रतिगरे कानमे किछु कहइत अछि
निन्न टूटने टुन्ना - मुन्नी फुद - फुद गप्प जेना करइत अछि।१
बाड़िक आमक डारि - डारिसँ कोइली कुहुकि रहल अछि ओहिना
मायक कोरा बैसि हुलसि कय छी बजैत रस - रस हम जहिना।२
पुरवा हवा दुलारू कतबा गाछ - वृच्छ चट माथ डोलाबथि
अपन कान्ह पर चढ़ा - चढ़ा कय बाबू हमरा जेना घुमाबथि।३
फूल - फूलसँ मधु बटोरि कय रने - वने भमरा उड़ैत अछि
लय जलखड़ी आम बीछँ' जनु छौंड़ा सभ गाछी घुमैत अछि।४
चट - चट कय फूलक कोंढी सभ फुला रहल अछि अपने फुरने
बिना जगौने आँखि मीड़ि हम उठि जाइत छी भोरे अपने।५
चुन - चुन करय चड़ै - चुनमुन्नी फुदुकि एम्हर ओम्हर हो तेहिना
घर - घरसँ जुटि कै हमरा सभ खेल - कूदमे लागी जेहिना।६
काका केर सूगा पिजड़ामे 'राम - राम' सुनबय लागल ई
गुरु कें पाठ सुनाबय पड़ते, की हमरो चेतबय लागल ई ?७

देश

देश हमर अछि भारत वर्ष, सभसँ बढ़ल चढ़ल उत्कर्ष
जनिक माथपर उज्जर केश, बनल हिमालय निर्मल वेश
हिलि-मिलि गंगा-यमुना नीर, उमड़ल, जेहिना मन आवेश
वृद्ध पितामह भारत वर्ष, जनिक कोर चढ़ि पाबी हर्ष।१

कुरु क्षेत्र केर कथा सुनाय, आखर रामायणक बुझाय
बोधथि गुन - गुन गीता गाबि, कानि उठी हम जखन चेहाय
नानी वृद्धा भारतवर्ष, कथा सुनावथु लाखो वर्ष।२

स्वदेश

तिरहुति हमरा सभक स्वदेश, जनम लेल हम जनिक उदेश
उठी न कखनहुँ प्यासेँ कानि, कूप-कूप भरि राखथि पानि
हमरा लै जोगबै छथि अन्न बाध-बोन आँचर मे बान्हि
माय हमर छथि तिरहुति देश, जकर कोर सपनहु न कलेश।१
जकर माटि माखन सँ मीठ, जकर पानि लग दूधो ढीठ
मलय वायु सँ सरस बसात पुष्ट भेल छी जनिकहि दीठ
सीखल भाषा, सीटल वेश, जतय हमर से जयतु स्वदेश।२

कोमल भाषा भूषा वेश
सभसँ सुन्दर मिथिला देश

भाषा— पूजा - पाठ संस्कृतक देल, हिन्दी काज चलावक लेल
बङ्ला उड़िया बुझि तँ जाइ, मन न भरय अङ्रेजी आइ
फर-फर मिथिला-भाषा बाजि, मनक भाव सभ लै छी साजि
बिनु सिखने शुद्धे परिभाषा, जय जय जय हे! मिथिला भाषा !!३
वेशभूषा—कुरता टोपी साफा वान्हि, अचकन-चपकन चादरि तानि
ई बहरैबा' काल पोसाक, हमर अपन अछि वस्त्र फराक
खुटिआ मिर्जै माथा पाग, घरक अङ्रखा सुन्दर लाग
साँची धोती, दोपटा कान्ह, अपन वेश मे खर्च न आन
सभ सँ सुन्दर, सभसँ सस्त, भूषा देशी अपन प्रशस्त।४
खैब-पीब—रोटी दालि सोहारी खाइ, कखनहुँ खोंटि मरिच-मरिचाइ
सभ तँ स्वदगर रुचिगर भात, आमिल मिलल दालि जँ पात
आलुक दम सँ चटगर झोर, हमर—दही, आनक अछि घोर
चूड़ा नवका सूगा रंग, छल्हिगर दही अपूर्वे संग
सरिसो सागक झँसिगर स्वाद, भोजन हमर सभक अपवाद।५

खेत पथार–नहर काटि जे सीचल भूमि, रेल उपरसँ देखल घूमि
हमर बाध अछि दोसरे रूप, ने पटबै ले' नल आ कूप
गंडक कमला धारक कात, जतय पानि हो भरि बरिसात
ने अछि ऊसर ने अछि रेत, सभसँ ससिगर हमरहि खेत।६
गाम-घर––घर-घर चर्खा टकुरी ताग, बाड़ी-बाड़ी पटुआ साग
चुभकै लेल चभच्चा पानि, लाबा लै अछि सजल मखान
लतरल बेढ़ भीड़ पर पान, मुहमे लाली, गरमे गान
सबतरि केरा आम लताम, सबसँ सुन्दर हमरे गाम।७

ऋतुक झगड़ा

गरम अङरखा, मफलर मौजा ऊनी साल-दोसाला
पहिरि ओढ़ि पहुँचला जाड़ बबुआन बनल, सङ पाला।१
छथि फटकैत बजैत–"हमर सन के दोसर सुखदाता ?
घाम न ऊषम, पाँक न दुर्दिन, हाथ न पंखा छाता।२
भरइछ सभक पेट हमरे ई धन अगहनक बखाड़ी
तिल-सरिसव स्नेहक जे साधन उपजय हमरहि बाड़ी।"३
छाहरि बैसि हौंकि पंखा विश्राम लैत छल गर्मी
आगाँ राखि आम - जामुन झट उत्तर देलक मर्मी।४
"छह कँपबैत गरीब लोकके जे अछि भूखल नाङट
धन्य हमहि!जकरा ऐनहि तोँ विवश समटलह भामट।"५
बझल दुहू मे–हमहि पँघ छी, हमरहि सब क्यौ मानय
अपन-अपन गुण - विभव बाजि दुहू दुहू पर फानय।६
मेघक साठा पाग माथ बिजुली दोपटा लय धीर
झटकि आबि दुहु जनके बरजल वर्षा घन गंभीर।७
"दूहूसँ कल्याण जगक अछि शीत ताप आवश्यक
गर्मी बल जाड़क आदर अछि, शिशिर-कम्पसँ तापक।८
सतत शीत जँ बनल रहय तँ नहि वसन्त जग आबथि
गर्मी जँ अचले रहितय तँ शरद हास कत पाबथि ?९

एकक दोसर पूरक बनि हे ! मित्र नित्य बनि जाउ
वर्ष-वर्ष हर्षित करबा लय मिलि जगतीमे आउ ।१०
हमहु ँ सदा दूहूक वीचमे हर्षित रस बरिसैबे
ग्रीष्मक श्रमसँ उमड़ि, बरसि रस अगहन अन्न सजैबे ।११

परिचय

हम ओहि माटिक मूर्ति
वर्ष पाँचम, धूलि–धूसर शंकरक सुनि बोल
'वर्णयामि जगत्त्रयम्' एखनहु जगतमे घोल
किन्तु होइछ नहि ओकर पुनि पूर्ति, हम ओहि माटिक मूर्ति ।।१
हम वैह व्यासक पूत
जनमितहिँ जे कैल व्याख्या आगमक परिपूत
पिता धरि नहि रोकि सकला अद्भुते अवधूत
किन्तु ओ शुक उड़ि चलल अजगूत ! हम वैह व्यासक पूत ।।२
हम सुमति–कोरक लाल
दूध मुहमे, कंठमे तोतर वचन, अति बाल
पीबि अपमानक हलाहल अमर ध्रुव सभ काल
नहि मुदा अछि प्रज्वलित ओ ज्वाल, हम सुमति-कोरक लाल ।।३
हमही भरतशिशु–वीर
सिंहकेर गनि दाँत सीखल अंकगणितक पाठ
जकर नामहिसँ एखन धरि भारतक अछि ठाठ
किन्तु भयसँ किएक हृदय अधीर ? हमही भरत-शिशु-वीर ।।४
हम राम अवध - किशोर
मुनिक मख रखबारि करइत हनल दनुज दुरंत
राज – सुख वनवास – दुख समतुल गनल प्रणवंत
फूल-कोमल अथच वज्र - कठोर, हम राम अवध–किशोर ।।५
हम नन्द – नन्दन कान्ह
गोकुलक रक्षा कयल वृन्दावनहुकेँ धन्य

कंस माथुर हनल सहजहि जनक जननी जन्य
बाँसुरी सुर संग गीता गान, हम नन्द–नन्दन कान्ह ॥६

शिष्य अनुशासित हमहि एकलव्य
गुरुक आशिष शिखा धय, निज श्रम बलहि बन घोर
धनुर्विद्या अर्जुनहुँसँ अधिक अर्जल जोर
अगुलिक गुरु-दक्षिणा नव द्रव्य, शिष्य अनुशासित हमहि एकलव्य ॥७

हम द्रविड शंकर बाल
शैशवहिमे घोर धारक बीच लैत झकोर
मायसँ हम लेल संन्यासक निदेश निहोर
धाम चारू संस्कृतिक दिग्पाल, हम द्रविड शंकर बाल ॥८

हम बाल बादल वीर
जखन चित्तौरक चिता जौहरक उगिलय आगि
तखन प्रानक समिध चढ़बी देश गौरव जागि
मरि अमर बनइछ कोना रनधीर, हम बाल बादल वीर ॥९

हम सिक्ख–शिशु सुकुमार
गुरुक मर्यादा गुनल, नहि गनल प्राणक मोल
आइ धरि बाँचल शिखा, नहि बचल बरु तनु लोल
आइ नहि ओ तेज अछि साकार, हम सिक्ख-शिशु सुकुमार ॥१०

हम जन्म–भूमिक दान
छी स्वतन्त्र परन्तु परतन्त्रे हमर विज्ञान
वैह बनबे कोना ? भाषा वेशहुक नहि मान
हन्त ! हम मिथिलाक शिशु सन्तान, हम जन्म-भूमिक दान ॥११

हम भावि युग निर्माण
यदपि लघु बंकुलहु अंकुर तनत तरु उद्यान
किरण कण अरुणोदयक पुनि भविष्यक दिनमान
हम अणु प्रयोग प्रमाण, हम भावि युग निर्माण ॥१२

जन्मभूमिक माटि माथ चढ़ाय, गढब पुनि इतिहास सोन मढ़ाय
जखन महिमा अपन माटिक जगत रहले गाबि
अन्नपूर्णा स्वर्ण - अंचल जतय उपजल आबि
दीप - दर्पण वृद्ध वाचस्पति, अयाचिक साग
उदयनक गर्वोक्ति, विद्यापतिक चपकन – पाग
अपन परिचय-पात देब जनाय, जन्मभूमिक माटि माथ चढ़ाय ।।१३

सनेस

ने असमानक चान, न चर चाँचरसँ सजल मखान
ने पूरी - पकवान जोगाओल, ने फल - फूल, न पान
किछु खर-खर आखर, किछु स्वर-व्यंजन, किछु छंद
जतने जत जीवने जोगाओल से सब साजि समान
भरल सिनेह अहींक उदेश, अनलहुँ अछि ई अपन सनेस ।।१
उठि भोरे बाबा सिनेहसँ श्लोक कठ करबौल
बाबू व्यस्तहुँ रहि, सिनेहसँ जे किछु नीति सिखौल
बाबी - नानी कथा - पिहानी कहि कत रीति रमौल
माय कते जतनेँ जे बानी रसमे बोरि पिऔल
लय तकरहि माधुरी असेस, अनलहुँ अछि ई अपन सनेस ।।२
जाहि माटिसँ गढ़ल गेल छी तकरहि लय किछु लेश
जाहि पानि केँ पिबि पनिगर छी तकरहि लय किछु शेष
जाहि वसन-भूषन मे सजि - धजि, धयलहुँ अनुपम वेश
जकर बसात लागि पुलकित छी, तकरहि परस विशेष
जे किछु देशक रस-आवेश, अनलहुँ अछि ई रतन सनेस ।।३

सनेस

हम न घुमब भूगोल - खगोल, सुनबे कलबल अहिँक किलोल
गुफा - तपोवन घुमि - घुमि दूर, तपसी - साधु परेखल पूर
गुनी - पडितक घुमलहुँ टोल सुनलहुँ कथा - पुरानक बोल
परी - देश केर रंगारंग देखलहुं, सुनलहुँ रंग - विरंग

अभियानीक घुमंत - फिरंत कत अजगुत नभ नखतक पंथ
कतहु भेटल नहि अमृत अमोल, जेहन अपन आङनमे घोल
शिशुक अहेतु हास उतरोल, हम न घुमब भूगोल - खगोल
गुनबे केवल अहिंक किलोल

बूढ़क सूनल कथा - उपदेश, युवकक देखल साहस - वेश
कौतुक - कला परेखल जाय चिंतित छल चेतनक निकाय
ज्ञान तथा विज्ञान अशेष कतहु न लसि, कतहु न रस लेश
घुमलहु कत पुर-परिसर टोल, चुनलहु कत कन रतन अमोल
कतहु न भेटल सुख बिनु मोल, जेहन अपन आँगन मे घोल
भेटल शिशुक मधुक अधबोल, हम न घुमब भूगोल - खगोल
चुमबे कलबल अहिंक किलोल

किछु कथा शेष—

कहबाक बहुत छल किछु नहि कहना गेल
गढ़बाक जते छल गढ़ल न गहना गेल
छन - छन बहइछ नेह - विन्दु उर देश
कथा कहक अछि, एखनहु बहुतो शेष



Scanned by CamScanner

प्रकृति-शतक

प्रकृति-स्तवन

मूल चूल धरि धरनि ई रूप जनीक अनूप
जयतु प्रकृति आकृति कलित दिशा-कला अनुरूप ।१
अव्यक्तहु छथि व्यक्त जे प्रकृतिहु विकृति बनैछ
द्वैत भाव भरि अगुनकेँ जग-पट सगुन बुनैछ ।२
काल - दिशा दुइ बिन्दुकेँ एक रेखमे लेख
स्वयं प्रकृति जड-जङ्गमा, विद्या-ऽविद्या देख ।३
बिन्दु-बीज,आकृति-विकृति, स्वर-व्यंजन,भू-स्वर्ग
मूल एक, व्याकृति प्रकृति अनुस्वार स-विसर्ग ।४
जननी, गृहिणी, स्वामिनी, दासी,सरसि उदासि
भुक्ति-मुक्तिदा प्रतिपदा प्रकृति नवनवा बासि ।५

ऋतु-प्रकरण

वर्षा—

श्याम-श्यामा—ओढ़ि तडित पीताम्बरी, नव निधि बसि, घन श्याम
जुड़बथि श्यामा अवनिकेँ, प्रेम वारि उद्दाम ।।१

वर्षा—वधू— घन नितम्ब, निर्झर वसन, स्मित विद्युत, नभ केश
उर कदम्ब, वर्षा वधू सजल सरस वय वेश ।।२

शर-शय्या—सुर-धनु लय, घन श्याम सङ के शिखण्डि अगुआय ?
ग्रीष्म भीष्मकेँ बिन्दुशर सेजहिँ देल सुताय ?३

दुर्दिन--पावस ज्योतिषमे सदा दुर्दिन, दिन भरि साँझ
कृष्ण पक्ष, पुनि यामिनी अमा, शेष तिथि बाँझ ।।४

ऋतु नारी—सुर-धनु नहि भृकुटी कुटिल, मेघ न केश सम्हारि
बिजुरी नहि अंग क छटा, सरस सजल ऋतु नारि ।।५

मधुशाला—पावस मधुशाला खुजल, नव जल मधु रस पान
मधु बाला चपला चमक, तृन तरु मुख अमलान ।।६

मादक — घन रस कन पिबितहिँ छनहिँ चातक शिखी चकोर
मीन भेक मातल सकल, जल मादक मद घोर ।।७

पवनरथी — सुर-धनु तडितक जोड़ि गुन, शर-धारा बरिसाय
पवन - रथी पावस बली तपकें देल सुताय ।।८

पावसी पत्रिका—सरस पावसी पत्रिका सजल विजुरि छवि अग
मुद्रित नव घन सघन पढ़ि रहल गगन ध्वनि संग ।।९

संगीत समारोह—दादुर भरथि अलाप सुर,झिंगुर झनकि सितार
जलद मृदंगक मंद्र ध्वनि, गीत स्रोत संचार ।।१०

शरद्—

लक्ष्मी साक्षात्--गोरि ओढ़ि नीलांबरी, कमल पानि, मुख चान
लक्ष्मी आयलि शरद बनि, भरि अचल धन धान ।।१

धवला — सरित भरित कैरव, विशद कास हास दिग् देश
गगन चान चकमक, धबल सब तरि शरद क देश ।।२

शरद शारदा–धवल कमल पद, बीन अलि, पुस्तक काम अशेष
हंस - वाहिनी, चान शुचि शरद शारदा वेष ।।३

काली नृत्य -- शस्य श्यामला, भाल शशि-कला, दिगंबरि नित्य
रुद्र रौद्र दिवसक उरस, महारात्रि पद नृत्य ।।४

रंगमयी — अंजन रंजन नील नभ, दिशि मधुरी दल लाल
पाकल धानें पीत थल, सरद रंगमय काल ।।५

हीरा-लाल—छल कन देबहुमे कृपन, किन्तु दैव अनुकूल
सिङरहार सजि शरद घर, हीरा लाल अमूल ।.६

हेमन्त—

बुढ़ारी — धुंध-अंध रवि-शशि नयन, कंपित तन, हिम केश
सेबथि अगियासी सतत, बूढ़ि हेमन्ती वेश ।१

विपति राति—विपति राति कत टा विकट कनक किरन कन छीन
थर-थर कँपइत कोंढ़ नित हेमन्तक चित खीन ।२
पाला मारल ठिठुर पुनि बातेँ कँपइत गात
यदि न अन्न रहितय उदर उबरि न करितय प्रात ॥३

शिशिर—

सासु-वधू – शिशिर सासु मधु वधूके पीत पतनि तन झाँपि
अधर कुसुम मुसुकी निरखि गेलि मनहि मन काँपि ॥१
साधु -- निशाँ सेवि, धूनी रमा, पातक करथि निपात
शिशिर साधु प्रातहि नहा शीत सलिल,शुचि- गात ॥२

वसन्त—

नव-परिधान—प्रकृति प्रिया तनसँ मलिन वसन पुरान हटाय
लय किसलय परिधान नव, ऋतुपति देल सजाय ।१
ऋतु-रमनी तन लतिका,सुम गुच्छ उर, किसलय अधर प्रमान
अंग चंपके, पिक वचन, मधु ऋतु रमनि निदान ।२
सन्त-वसन्त—पर्ण-कुटी वन - उपवनहि तृण तरु लता अनन्त
पिक बानी सुनबथि कथा, ज्ञानी संत वसन्त ।३
मद-नृत्य-- मधु उन्मद मधुकर निकर, परभृतिका रस - मत्त
मधु कानन – आङ्नक बिच मचा रहल मद — नृत्त ।४
पिकनिक—सजल कमल,तृण तरु सदल कल - कल मधु रस धार
पिक निक हित चलु अलि गली गीत प्रीत सहकार ।५
कवि वसन्त—सजि धजि उपवन भूमिका छंद बंध मकरंद
कुसुम कवित रचइछ सरस कवि ऋतुराज वसन्त ।६
वन-पत्रिका--कली टिप्पनी, किसलये लेख, कवित कत फूल
छथि वसंत संपादके वन—पत्रिका अतूल ॥७
महफिल—पिक गायक, वादक मधुप, टिकुली नटी समाज
वन - महफिल जनि' हित रचित आगत से ऋतुराज ।८
चित्रकार पल्लव राग, पराग पुनि कुसुम कली रस घोरि

रङलि चित्रकर मधु विपिन लता तूलिका बोरि ॥९

निकुंज — कुंज कुंज कलरव पिक क पुंज - पुंज अलि गुंज
मंजु मंजरित माधवी मधु मधु - ऋतु क निकुंज ।१०

प्रजातन्त्र — मन स्वतन्त्र कत वितत अछि ऋतु-तन्त्रक रसवंत
पुरिबा - पछबा दो - रसी बहय बसात वसन्त ।११

ग्रीष्म

शासन-दण्ड—मधु विलास रस मत्त जग विपथ न चलओ उदंड
तपी प्रतापी ग्रीष्म कर आतप शासन दंड ।१

रुक्षता — एम्हर विलासी मधुक कन ओम्हर पावसी धार
तदपि रुक्षता ग्रीष्म उर अहह !! नियति दुर्वार ।२

गाछी — अरुन वरुनि रस आभरनि, चौदिस गोपी आम
परिनत तरुनिक कुंजमे, जंबू श्याम ललाम ॥३

उदर-ताप—कूप चूप पोखरि झखरि चटा गेल चर चाँच
सर सरिपहु गेल ससरि कहु, पड़ि उदरक तप आँच ॥४

मास-प्रकरण

आसिन — कुश-कासक आसन उपर, आसिन जागर जोति
पितर पूजि देवी पुजल, कुमुद कौमुदी मोति ॥१

कातिक — दीप जराय, जगाय हरि, भाइ—बहिनिकें नोति
गाय पालि, कातिक खटथि, दिन सुख रातिक ज्योति ॥२

अगहन — धन-धन अगहन धान-धन भरल खेत — खरिहान
जन बनिहारहु धनिक जनु किनइछ पान-मखान ॥३

पूस — यदपि पड़ोसी अगहनक, गहन केहन खल पूस
निशिकर दिवा—उलूक पुनि सात तकारे घूस ॥४

माघ — लुकझुक दिवस क झोंझ बिच बिचरि,राति झट घाघ
झपटल बाघ प्रचंड ई जन — मन कम्पी माघ ॥५

फागुन — फागुन गुन कत गुन अधिक सगुन उचारथि बाल
दुरत पीतिमा, पतिक कर परसि, गुलाबी गाल ॥६

राति गुलाबी जाड़ पुनि, कमल प्रभाती जागु
सूर्यमुखी दिन रंगमय साँझ अबीरी फागु ॥७

चैत — चकचक चैतक चान नभ, कुहु-कुहु कोइली-बोल
मह-मह महुआ वन बनल, धह-धह विरहिनि टोल ॥८
राति पहाड़ी काटि कत समतल दिवस चलैत
चान संतुलित शीत-तप-तुलित ललित नित चैत
पद पल्लव, कर मंजरी, उर टिकुला, मुख चान
पिक धुनि चैत नचैत धनि, चोरा लेल चित – प्रान ॥१०

बैशाख — तृण कंदन, खंडन जलक रज मंडन, प्रिय चड
रासभ नन्दन, बंदना बैशाखक सुख – खंड ॥११

जेठ — अणु भट्ठी जेठे बनल जग जरि भाफ अखंड
अति प्रचंड मातण्डहिक बम विभ्राट प्रचंड ॥१२
दिनहु घमय, निशिहु न सुतय, अन्न-पानि नहि पेट
तपय कते वर्षान्नि हित जेठ-मास मे जेठ ॥१३

आषाढ़ — बुन्द - बुन्द खन - संपदा जमा, कमासुत गाढ़
समय पाबि बँटइछ सजग जग भरि धनी अषाढ़ ॥१४
प्रथम दिवस आषाढ़मे मेघ दूत नभ देश
प्रकृति बिरहिनी के सदय दैछ सरस संदेश ॥१५

साओन — वर नवीन घन ब्याहि धनि, सौदामिनि अति प्रीति।
परब पुजथि मधुश्रावणी, वर्षाभ्यंतर रीति ॥१६

भादव — भादव कादवमय निघिन अह - निश निपट घनांध !
गरजि - बरसि डुबबथि जगत जनु जड़ धनिक धनांध ॥१७
नभ सागर तट बादरक यादव उमड़ि लड़ैछ
जल कादव क्रीड़ा -समर, अन्त वज्र बजरैछ ॥१८

दिवा-रात्रि वर्णन

प्रभात — जननी रजनी कोर बसि, दिवस पिताक दुलार
पाबि, गाबि खग कल मुखर, उदित प्रभात कुमार ॥१

प्रतिभा प्रभा पसारि ई, जगमग जग कय देल
नैश तिमिर तति हति उदित, दिनपति संगति भेल ॥२

उषा— उषा कुमरि प्राची वनक नखत सुमन चुनि लेल
तरुन अरुन केर कर पकड़ि परिणीता बनि गेल ॥३

दिन— दिवा युवा दीपित विभा तप आतप कर योग
विधि नियोग वश हत बिवश निशा अन्त संयोग ॥४
कनक कोष दिनपतिक लय बनल धनी दिन दीन
किन्तु संपतिक गर्मिएँ अंत मलिन तम लीन ॥५

सन्ध्या—घन अरुना रसना, नखत मुण्ड माल उर माझ
नभ–वसना शशि–शेखरा काली श्यामा साँझ ॥६
वयस संधि संध्याक कत नवल इन्दु रुचि भास
नखत हार हीरक पहिरि, राति यमुन तट रास ॥७

दीप वेला—कारिख कुन्तल, मुख शिखा, स्नेह सदन घर माझ
शीशक - वसना दीपिका बैसलि भरली साँझ ॥८

रजनी— नित रजनी सजनी बितत नखत कुसुम सजि सेज
उत्कंठित चित सगुनि दिन-पति नहि तदपि अङेज ॥९
गगन - कुन्तला, तारके हार, मुखक छवि जान
नूपुर झिंगुर, यामिनी-कामिनि रसक निधान ॥१०
नखतक अगनित मनि रतन हार नवग्रह धारि
माथ चन्द्रिका पहिरि कत चललि निशा अभिसारि ॥११

अंधकार—दृग मूनल, पथ भ्रष्ट कय नष्ट तेज कय क्रुद्ध
सूझय नहि बूझय न किछु तिमिर सघन पथ रुद्ध ॥१२
तिमिर निबिड तम मोहमय असत जगत जत तत्त्व
लुप्त चेतना सुप्त मति गतिहु न ककरहु सत्त्व ॥१३

अन्हरिया—कारी तन, साड़ी अमा, बिथुड़ल नभ घन केश
उडु हाड़ी गर, अन्हरिया घिनबय निशि दिश-देश ॥१४

तिमिर—चानक चानी दिनपतिक किरन कनक कय चोरि
तिमिर चोर दिस-दिस घुमय घर-घर जुमय अँगोरि ॥१५

दिवसपतिक कन-कन किरन कनक लुटल जुटि आबि
चानक चानी छिनि तिमिर निशिक गर्त देल गाड़ि ॥१६

राका-रजनी—जा धरि शैशव शिशु कला टिम-टिम तारा पाँति
पूर्णिमाक छविसँ छपित भेल मलिन मुख काँति ॥१७

इजोरिया— गोरि नारि सुख चान छवि, नभ आङ्न बिच आइ
पहिरि आभरन नखत कत सजलि इजोरिया दाइ ॥१८

पूर्णिमा— किरन फेन, साबुन ससी घसि-घसि ओस भिजाय
पूनो धोबिनि दिशा-पट दप-दप देल सजाय ॥१९

पूर्णिमाक प्रात—कनक गोल ई पूब कर, पश्चिम चानिक चाक
केहन पूर्णिमा प्रात ई, पाओल सुकृति विपाक ॥२०

व्योम-प्रकरण

चान-सुरुज—चान - सुरुज दम्पति खटथि, नभ आङ्न दिन-रैन
साँझ-प्रात पलखति छनहि, मिलन न दर्शन नैन ॥१

सूर्य— ललकि-झलकि रवि केसरी उदय-मिरिक चढ़ि श्रृंग
तिमिर-करी हत कर-निकर जत तत रक्त प्रसंग ॥२

चद्र— शिव-शिर चढ़ि, बढ़ि घटि घटित, रति कति निशि निःशंक
वंक कलंकित गुरु-कुलहु, अंकित कलुष मयंक ॥३

ध्रुव सप्तर्षि—ध्रुव पद, उत्तर अंतरा पद, ऋषि सप्तक तान
गगन बीन तारक वितत सुर–तरंगिनी गान ॥४

तारा— विविध वर्ण अंकित नखत नभ पुस्तक प्रतिमान
रेफ–मकार विराममे बिन्दु - विसर्ग विधान ॥५

नक्षत्र-पथ—गगन महाबिलमे कुटिल, पुच्छल नखतक नाग
विधु मनि, ग्रह दन्ते, असह विष, विशि शीतें झाग ॥६

भूमि-प्रकरण

अवनी— गिरि उरोज, परिसर उदर, पुलिन जघन, वन केश
सिन्धु वसन, पुर-ग्राम मुख, अवनी रमनी वेश ॥१

खेत-पथार—सोनक अङुठीमे खचित, नीलम हाट विकाय
नीलम मे सोना मढ़ल सरिसव खेत लुटाय ॥२

रंग - रंग के रंगिनी काढ़ल बूटा - वेल ?
तिल तीसी मटरक छिमड़ि फुलल-फलल कत मेल ॥३

चर-चाँचर — वर्षा - बाढ़िक बेढ़ बढ़ि, चानी पीटल बाध
पन्ना बेढ़ल शरद पुनि, हेमत सोन अगाध ॥४

खरिहान— वर्षा घाम सहय, खटय खुरुपि कोदारि कतेक
खेत - मजूर क धान लय धनि खरिहान विवेक ॥५

मरुभूमि— तृण-तरु नहि, नद-नदी नहि, शस्य श्याम नहि खेत
तदपि झलक अह-निस कनक-राजत सिकता ढेर ॥६

वन देश— ऊँच - नीच घाटी - तटी तृण - तरु वर्ग विशेष
मृग-मृगपति रहितहुँ, प्रजा द्वंद्व रहित वन देश ॥७

गाछ— फल - फूले आधार पुनि नगन, गगन तर वास
रौद - शीत कत सहि रहल गहल गाछ संन्यास ॥८
मेघ पिआवय पानि पुनि, भूमि सुरस आहार
गगन सबद सुनबय, गमहि पवन बहारय द्वार ॥९

गाछी— गाय चरा, औषध जुरा' छाहरि दय भरि गाम
गाछ बाछ पालय सदय गाछी—माँ अविराम ॥१०
मेघ पिआबय पानि तरु, धरती रस आहार
अंबर अंबर लय, पवन परस स्वरक झंकार ॥११

लता— पल्लव कर पद रक्त रुचि, शुचि कपोल कलिकाक
कुसुम गुच्छ परतच्छ अछि परिणत वय लतिकाक ॥१२
आ-नखशिख कुसुमाभरण, पल्लव पट परिधान
लता युवति मन मत वरण तरुण तरुक सविधान ॥१३

पर्वत— माथ पाग जलधर सजल, चादरि निर्झर कान्ह
वन चपकन, तरु फराठी, पर्वत बूढ़ पुरान ॥१४

सागर— विभु व्यापक, तन नील रुचि, मणि राजित उर धाम
शंख पाणि, सुरसरि चरण, जयतु नीरनिधि श्याम ॥१५

निर्झरिणी – युग तट सुघटित जिल्द पट सैकत पत्र प्रशस्त
निर्झरिणी द्रुत लेखनी, प्रकृति लेखिका व्यस्त ॥१६

प्रकीर्ण शतक

देव-देवी

गणेश— दह-दह पीअर गंधकी, दप - दप पारद स्वच्छ
विधि योगें सिंदूर रस हरओ दुःख परतच्छ ॥१

वाणी— जनिक अंग रंगहिँ मलिन, कुन्द इन्दु हिम बिन्द
बानी सुनि धुनि पिकक पुनि, बीना वेनुक मन्द

ब्रह्मा-ब्रह्माणी—वसन वरन आभरन मन, भूषन वाहन अंग
अमल धवल शुचि नवल पुनि, रक्त पुरातन संग ॥३

हरि-हर— शयन वसन फणि, वदन सिर चान, गंग पद शीश
नील कलेवर कण्ठ वा जय हरि - हर जगदीश ॥४

रुद्र— विदित शत्रु स्वसुरक तदपि सासुर बसला रुद्र
अर्ध - चन्द्र विष भोजनो उचित कलापी क्षुद्र ॥५

हरि — लय लक्ष्मी पुनि शेष मणि रत्नाकरक अनन्त
क्षीरोदधि लोभें बसल घर जमाय हरि हन्त ॥६

श्यामा— शुभ्र दंत, रसना अरुण कृष्ण केश तन श्याम
पीत मदिर, हरितारि-शिर चित्र चालि, सत धाम ॥७

सूर्य— तिमिर निशाचर निकर हति, जडता करइत दूर
प्रमुदित जग करइत, उदित प्राची दिनपति सूर ॥८
सृष्टि आदि आदित्य नित तिथि थापक दिनमान
पुनि तिमिरान्तक अन्त छथि जगतक ज्योति निदान ॥९

दिक्पाल

इन्द्र— सहस नयन रहितहुँ नय न, अहि-रिपु अहिला-जार
इन्द्र इन्द्रियक कारणहि सुर रहि असुर सिकार ॥१

अग्नि— शशि रवि निशि वा दिन गगन, नियत उदित दुतिमंत
अनल चिरंतन जोति पुनि घर-घर ज्वलित निरंत ।।२

वरुण— वरुण सिंधु संस्थान रहि, गहि पश्चिमक विचार
पाशी बनि अधरहु मदिर वारुणीक परचार ।।३

कुवेर— निधि-अधिपति धनपति विदित, अलकापति शिव-मीत
उर्वशीक वश कुबेरक नाम कुनाम विगीत ।।४

यम— पिता दिवसपति, वास पुनि दक्षिण, धर्मक राज
किन्तु अंतके अंतमे महिसबाड़ यमराज ।।५

ईशान— पूर्व न उत्तर पक्ष दिस बिच-बिच कोन दबाय
ईशानक ई शान अछि दिक्पालके कहाय ।।६

वायु— वायु आयु छथि विश्वहिक दिक्पति देव उदार
अंधड़ झाँट बिहाड़ि पुनि यदि किंचितो विकार। ७

नैॠत— अशुचि विरुचि ॠतु रहित नित नैॠत निर्घृन चित्त
यम-पाशी बिच बसथि जे उचित वहिष्कृत नित्त ।।८

ब्रह्मा— चतुर न चतुरानन, कमल - आसन कमले आस
अड़चन अरचनमे चरम प्रथम सृष्टि रचि हास ।।९

अनन्त— अतल पताल निकायमे रहथु तुकायल अन्त
सहस्र शिखर बसि दिशि अधर विषधर नाग अनन्त ।।१०

नवग्रह

सूर्य— प्रखर प्रचण्ड मृतण्ड - सुत ग्रह प्रतिपद चढ़ि सूर
सौरगृहक गृहपति प्रथित जगत विदित ग्रह क्रूर ।।१

चन्द्र— सौम्य प्रकृति आकृति सदृश निशिचर अंक कलंक
अमा-पूर्णिमा दुख-सुखहि घटि बढ़ि जिबथि मयंक ।।२

मंगल— नाम मंगलहु दंग छी देखि प्रकृति अति क्रूर
रक्त विरक्तहु भूमि-सुत रहितहुँ वस नभ दूर ।।३

बुध— भोर भोरुकवा, भानु लग बसि बुध नामहु हन्त !
सहचर गत गुण दोष गहि फल परतन्त्रहि अन्त !!४

गुरु— वपु गुरुता, गुण गौरवहु शुद्धि विचार प्रधान
सुर-गुरु पूजित केन्द्र बसि बुद्धि - विवेक निधान ।।५

शुक्र— उज्ज्वल एकाकी सचर ओज - वीर्यमय नीति
प्रतिक्रिया वश सुर - गुरुक प्रतिपक्षी मत रीति ।।६

शनि— मन्द प्रकृति, निष्पन्द गति, क्रूर कुटिल अभिधान
कत चानक गति, सुत रविक शनि पुनि अशनि समान । ७

राहु— केवल मस्त न मस्तकक विज्ञानक बल पावि
कर-पद चालन अपटु कटु नाम राहु रहु गावि ।८

केतु— कतबहु कर्म निकाय ई भौतिक क्रिया कृतान्त
बिनु माथक दुर्गति लिखल केतुक ग्रह दृष्टान्त ।।९

काव्य-निर्देशिका

त्रि-शक्ति—अभिधा काली रूप, लक्ष्मी लक्षित लक्षणा
काव्य त्रिशक्ति अनूप, सरस्वती ध्वनि-व्यंजना। १

विभावादि—थिक विभाव मन्दाकिनी, कालिन्दी अनुभाव
सरस्वती संचारिणी तीर्थराज थिर भाव ।।२

काव्य-भेद—गद्यक गिरि, पद्यक जलधि, चंपू वन विस्तार
उर्वर परिसर रूपकक, काव्य नवे संसार ।।३

लक्ष्य-लक्षण–कहथि छन्द थिक बन्धने अलंकार पुनि भार
गुन रस रीति कुरीति पुनि कवित कोन आकार ?४

छन्द— 'मन भय तजि रस' गण गहिअ स्वच्छन्दहि सविराम
वर्ण मात्र गुरु लघु गनिअ छन्द कला अभिराम। ५

भाव-ध्वनि–उर वीणामे कविक नित तनले रहइछ तार
सरस भाव परसहिँ ध्वनित शत-शत स्वर झंकार ।।६

दोहा— कल्पनाक सुर - धेनु थन, प्रतिभा वत्स लगाय
कवि दुहाव दोहा दुहथि, पिबि जग सहज जुड़ाय ।।७

कवि— स्वच्छ पच्छ, पय नीर शुचि, रुचि मानसक विहार
वाहित रसवति सरसवति जय कवि हंस उदार ।।८

नभ चुंबी भावे शिखर रस निर्झर रुचि स्वच्छ
विपिन सूक्ति जत महाकवि हिमालये परतच्छ ।।९

रीति— हंसी गति वंशीक धुनि रूप अनूप रचैछ
वैदर्भी धनि रीति वश रसिक स्ववश कय लैछ ।।१०

गौर अंग पुनि गौरवित पद समस्त मस्तीक
ओज भरलि उद्दीपिका गौड़ी गिरा प्रतीक ।।११

सघन जघन पद गति तुलित ओज मधुर धुनि गीत
पुरुषायित समरहु स्मरहु पांचाली रस रीत ।।१२

वचन, रचन पटु चटुल पद कलित वेश विन्यास
रस परिपाटी कत अधिक लाटी रीति विकास ।।१३

वात्सल्य

दाख मधुर, मधु मधुर पुनि मधुर सिता रस घोल
ताहू सँ बढ़ि - चढ़ि मधुर लटपट तोतर बोल ।।१

अद्भुत शिशु - संसार ई जतय अबोधे बुद्ध
अक्षर अक्षर क्षरित जत अटपट भाषे शुद्ध ।।२

लुलित केश, तन नगन, मन मगन, धूसरित पूत
राग द्वेष लव लेश नहि शिशु अद्भुत अवधूत ।।३

पुछी आँखि तँ कानकें, नाक तँ देखबय दीठ
तदपि सत्य थिक शिशुक मुह झूठ साँच सँ मीठ ।।४

जाया मल - मलिना जनिक तनिक जनकता धन्य
वन्ध्य अंगना पट विमल रहितहुँ, मलिन जघन्य ।।५

रचथि, पुरथि, मेटबथि सहज कय क्रीडा संसार
खेलहि बुझि जग रमथि शिशु विधि हरिहर अवतार ।।६

खन कानथि चिचियाथि, विनु हेतु हँसथि शत बेर
शिशु बताह जनु कर - चरन पटकथि कर्मक फेर ।।७

झारि - पोछि गरदा यदि च तेल माय मलि दैछ
कत पसारि भाभट बटुक रज मलि पुनि चुप होइछ ।।८

चून लेपि, कारिख लगा' कखनहु करथि सिङ्गार
घर-घर घुमि, चुमि भूमि, शिशु अपराधिक व्यवहार !!९

तोतर बोल अमोल, मन सहजहिँ जाय बिकाय
माय - बाप जनु जौहरी, हीरा हँसी जोगाय ॥१०

कंठ न व्यंजन, मात्र स्वर अस्फुट वचन उचार
होथि ठाढ़ नहि, दाँत नहि, बूढ़क सभ व्यवहार ॥११

माँ माँ रटि चलि चतुष्पद करथि दूध आहार
झपटब लखि मुसरी ससर, सरिपहुँ बाल बिलाड़ ॥१२

कोरा पिजड़ा बैसि, बिनु बुझनहु रटइछ नाम
ठोर लाल तिलकोड़ फड़, शिशु सुगा अभिराम ॥१३

वीर

अछि उत्तुङ्ग हिमाचलक शृंग, सिन्धु गंभीर
पस्त एक, उत्थर अपर निरखि पुरुष मति धीर ॥१

पड़ओ पानि पाथर बहओ अन्हड़ झाँट बसात
बज्रपात होइतहुँ हिलय नहि गिरि गौरव गात ॥२

उमड़ि तड़ित तरुआरि लय तापक कय सिर छेद
हरित भरित जगती करय वारिद वीर अभेद ।३

ललकि झलकि रवि केसरी उदय गिरिक चढ़ि शृंग
तिमिर करी हत कर नखत जत तत रक्त प्रसंग ॥४

गलि पचि जाय हिमाचलो, सुखि रुखि सिन्धु चटाय
सेरा जाय रवि - मण्डलो वीर न पीठ देखाय ।।५

असह रौद उत्तापसँ नहि बचबाक उपाय
धीर पथिक कें यदि न हो रण तरु छाँह सहाय ।६

ने नूपुर रव रंजना, ने वीणा झंकार
युद्ध नगाड़ा सुनि युवक झुमल गीत हुंकार ॥७

... ...

वीर-शृंगार–प्रणय वचन सुनि प्रेयसी, बाम बाहु कसि लेल
रणक नगाड़ा सुनि तरुण दहिन हाथ असि लेल ॥८
समर जनिक सुख सेज थिक, नारि चटुल तरुआरि
रक्त रंग रंजित जयतु युवक विजय – रति कारि ॥९
समर स्मर अरि – नारिकें जीतल भुज बल चारि
उर विदारि, कच नोचि, पद चापल पुरुष प्रतारि ॥१०
वीर पत्नी—घायल आयल रथ लदल पति सेनानी घूरि
मलहम लेपल पीठ धनि, कर पहिराओल चूड़ि ॥११
आहत पहु मुह देखि बहु कसइत कोमल बाँहि
पीठ क क्षत छुबि चौंकि झुकि, हटलि चेहाय कराहि ॥१२

देश-स्वदेश

सृष्टि सिन्धु मथि अमृत ई दिव्य भारती भूमि
छल - छद्में छापय चहय राहु केतु दल जूमि ॥१
देशक सीमापर चढ़ल शत्रुक दल हुंकारि
सुनि न जकर फड़कल भुजा, पुरुषो से थिक नारि ॥२
मोम दीप गलि गलि जरय घर भरि भरय प्रकाश
वलिदानी निज प्रान दय देशक करय विकास ॥३
जाहि मातृ – वसुधा क शुचि माटि – पानि रस पान
शीश झुकाबय तनिक पद नित सपूत बनि धान ॥४

... ...

तिरहुति — नहि नन्दन-वन सुरभि घन ने अलका क निवास
लय चलु तिरहुति बाध वन तृन - तृन स्वर्ग सुपास ॥५
पट कोकटी, पटुआ तिमन, बाड़िक आम लताम
गीत–नाद घर घर मधुर, धनि धनि तिरहुति गाम ॥६
सींथ सोझ, कोंचा कुटिल, पैघ आँखि, मुह पानि
लुरिगरि, गितगाइनि,सहज लिअ तिरहुति तिय जानि ॥७

पनिगर, मुहगर तिरहुतक तरुन सरस आलाप
पुर परिसर परिचितहु पुनि कने गमैया छाप ॥८
धोती साँची पाग सिर ठोप डोपटा कान्ह
नोसि नाक थप-सप चफर तिरहुति बूढ़ पुरान ॥९
शीश छत्र, पद पादुका, दण्ड हस्त, अभिषिक्त
उपवीती वटु पटु चटुल अनुशासन विनियुक्त ॥१०
अलका उपवन हिम शिखर नन्दन - वन सुर-धाम
बाड़ी - झाड़ी हमर ई अमर रहओ एहि ठाम ॥११

हास-उपहास

मच्छड़ — सीता निद्रा हरि चुसल, निशिचर रक्त अलच्छ
रवइत दशमुख रावणो मच्छड़ ई परतच्छ ॥१
विजया यात्रा कय प्रथम, पावस सागर पार
मारुत सङ रघुपति शिशिर, मच्छड़ रावण भार ॥२
उड़िस — बैसय चुपहि पलंग, अंग - अंगमे सटि चिमटि
बिकुटि चूमि कर तंग, नटखट प्रिय सम उड़िस ई ॥३
कृपण प्रसंग — कृपन जनम सुनितहिँ कँपय सुर मुनि असुर तमाम
नामकरण जनिकहि सिरें नामहु भेल अनाम ॥४
प्रणम्य अवतारे स्वर्ण-गर्भ, अव्यय, उदर सभ समेटि, नहि गम्य
कृपण विष्णुहि क अवतरण ककर न बनल प्रणम्य ॥५
महान् — पर हित संचित संपदा, अशन - वसन नहि ध्यान
कनक अचल रचितहुँ, कनक छूति न, कृपन महान !!६
मात्रा भेद—सेबथि कोष निरंत, वद्धमुष्टि पर - शिर कतरि
कृपन कृपानि दुरंत, पानि टुटय पन नहि छुटय ॥७
सदर्थ — जगत शब्दमय उक्ति, अर्थमात्र अछि अर्थ टा
धर्म काम ओ मुक्ति कृपण शास्त्र मे व्यर्थ टा ॥८

असल-नकल — सुख दुख मान-अमान, जनिक हृदय नहि छुबि सकल
कनक जोति चित ध्यान, कृपण असल सभ जग नकल ॥९

चित्र-वैचित्र्य

भूगोल-खगोल—ग्लोबे थीक नितम्ब ई, पूर्व —पश्चिमी गोल
चन्द्रहार उडुगनि खचित धनि उर उपर खगोल ॥१

उद्योग-नगर — कपड़ा मिल मकड़ा बनल, धनकुट्टी कल मूस
चटकल चीनि क चुट्टिए, कीट नगर के दूस ?२

हाट-बजार—मधु - माछी बेचय मधुर, लुक्खी खट्टिक ठाट
मूसक अन्न गोदाम पुनि मकड़े सूत क हाट ॥३

टहल — मुसड़ी कुटनी – पीसनी, पनिभरनी जत बेङ
साही घर झारय - झुरय, घूनो चीरय ढेङ ॥४

बीभत्स(घाओ)—माछी मेहतर, मुसहरे मोस, पीलुए डोम
जोंक चमारे, घाओ अछि गाम अछूत क खोम ॥५

जन-मजूर—दिबड़ा मटिकट्टी करय, मूसो कोड़य खेत
कतरि-कुतरि कुट्टी करय कीट, घास बिन हेत ॥६

शल्य-शालाक्य—ब्लड बैंक क इनचार्ज छथि उड़िस मोस समुदाय
इंजक्शन मे अति चातुर डाक्टर सर्प सहाय ॥७

सुजन-दुर्जन

सुजन — लेथि सुजन परिमित स्व-हित, देथि अमित प्रतिदान
चरथि धेनु तृण घास नित दूधे करथि पन्हान ॥१

नारिकेल मुज - डोरि वा लोह क तार क बानि
शिथिल होय, नहि सज्जनक बानि कदापि उबानि ॥२

सुजन वचान-कटु तदपि पटु, अन्त सुखद परिनाम
कटु कषाय दल, काँट बरु तरु फल - फूल ललाम ॥३

दुर्जन — बधन पवन क करिअ यदि नभमे बिरचिअ रंध
सलिल भरिअ मरु मे तखन खलसँ निभ सम्बन्ध ॥४

लहरि गनिअ सिन्धु क, कुसुम तोड़िअ गगन क गाछ
उपजाबथि मरु — पाथरो धरिअ दुर्जन क पाछ ॥५

सुजन ओ दुर्जन–सुजन शरद दुहु दर्शने॑ नयन नलिन विकसैछ
खल हेमन्त दुरन्त जत हृदय सरोज गलैछ ॥६

खल मुख वंदन गंजने, सुजनक डाँटो मिष्ठ
अहि मुख चुम्बित अंग हित भगतक चाटो इष्ट ॥७

उपेक्षा-अपेक्षा

अरसिक लग कविताक रस, केतुक सिर जनु पाग
आन्हर लग लावन्य जनु, बहिर कान पुनु राग ॥१

ने तरु – फल, ने गुल्म - दल, ने लतिका केर फूल
जेहि वन-उपवन सुलभ नहि, वरु भरु से मरु – धूल ॥२

... ...

बिनु दृग रूप निरूपणे॑ बिनु रसना रस भोग
बिनु सहृदय आस्वादने॑ फलित न कवित प्रयोग ॥३

हमर भोज, विक्रम हमर सरवस रसिक – समाज
रजत कनक रज कन तुलित, कवित रतन सिर ताज ॥४



कवि-नवतिका

कवि-प्रशस्ति — स्वच्छ पच्छ, पय नीर शुचि - रुचि, मानस क विहार
बाहित रसवति सरस्वति, जय कवि हंस उदार ।।१
नभ - चुम्बी भावे शिखर, रस निर्झर रुचि स्वच्छ
विपिन सूक्ति जत महाकवि हिमालये परतच्छ ।।२

१ 'कवि उशना'—संजीवनि विद्या विदित नीति लोक - पथ लीक
ग्रह विग्रह, रुचि शुक्ल शुचि से यथार्थ पद थीक । ३

२ आदिकवि बाल्मीकि—आदिम रहितहु चरम कवि, बाल्मीकि अति वृद्ध
तमसा तट बसि तम निरसि, शोको श्लोके सिद्ध ।।४
लघुपद दुरंगम जनिक छन्द अनुष्टुप रूप
सारस्वत नगरक सुथिर कीर्ति - स्तूप अनूप ।।५

३ व्यास— भारत प्रतिभा - रत जनिक, अनुशासन धरि शान्त
जय पुराण मुनि, वेदहुक भेदक जे अभ्रान्त ।।६
महाभारतक विरचनें, गीता - गायक ज्ञात
नाम कृष्ण, बसि द्वीप अहुँ द्वैपायन विख्यात ।।७

४ गुणाढ्य— वृहत्कथा गुणसँ स्वयं प्रथित गुणाढ्य अजस्र
जकर सागरक बिन्दुसँ साहित सरित सहस्र ।।८

५ भरत— सूत्र बान्हि नट जकाँ जे कविता पुतरि नचौल
भरि भरि नाट्य क रस अमृत भरत नाम रुचि पौल ।।९

६ पाणिनि— पाणिनि अनुशासन कठिन, व्याकृति दण्डक लेल
'जाम्बवती - हरणे' स्वयं कवि बन्धन पड़ि गेल ।।१०

७ सातवाहन— गाथा अवितथ सात शत, सातवाहनक कृत्य
सहस सहस बरषहु न जे गलल विमल पद नित्य ।।११

८ पतञ्जलि— पतंजलिक अंजलि भरल सुरगवीक पय - सिंधु
तन-मन वचनक मल हरिअ अमर बनिअ पिबि बिंदु ॥१२

९ भास— भासित भासक प्रभासँ, उदयन - घरक इजोत
वासवदत्ता चरित नहि युगधरि रहल इरोत ॥१३

१० भर्तृहरि— कालिन्दी शृंगार शत सरस्वती वैराग
नीति जाह्नवी भर्तृहरि उचिते कवित प्रयाग ॥१४

११ अश्वघोष— अश्वघोष कृत घोष सुनि, के नहि अछि उद्‌बुद्ध
जनिक सरल शुचि काव्यसँ बुद्धो बनल प्रबुद्ध ॥१५

१२ कालिदास— मेघदूत जनिकर बनल, दण्ड हिमाद्रि अशेष
रघु कुमार अस्तित्वसँ कश्चिद् वाग विशेष ॥१६
वन - कन्या लावन्यसँ, रजधानिक धनि तुच्छ
कयल कला लालित्यसँ, रति - रसना - रस छुच्छ ॥१७
कालिदास रचना रुचिर, रुचओ चिरन्तन चीत
चाखि, दाख तिख-रुख लगय, आम नीम सन तीत ॥१८

१३ भारवि— प्रभा रविक भारविक लग किन्नहु नहि चमकैछ
प्रतिभा किरण किरातहुक राति प्रभात करैछ ॥१९
नारि-केलि रहितहुँ न रस - भाव पार्थ - चित लेश
मुग्ध किरातहु रूप - रुचि रसिकक भार विशेष ॥२०

१४ माघ— विचरथु वन तृन - मुख तृषित कवि मृग - झुंड निदाघ
जा धरि नहि गर्जल छला माघ काव्य - वन बाघ ॥२१
त्रिगुण रूप, नव सर्ग गत नहि नव शब्दक लेश
शिशु - पालहु वध निरत पुनि माघहि जीवन शेष ॥२२

१५ भामह— जनिक अलंकृत काव्य बन, विकसित प्रतिभा फूल
मह मह करइछ आइ धरि से भामह अनुकूल ॥२३

१६ वामन— वामन रहितहुँ लघु पदेँ, नापल रीति विचित्र
गौड़ी वैदर्भी रुचिर पांचाली गुण चित्र ॥२४

१७ दण्डी— ई दण्डी नहि दण्ड कर माप - दण्ड रसहीक
अलङ्कार दिश रुचि कोना दण्डी - वैरागीक ?२५

१८ आनन्दवर्धन जनिक पद - ध्वनि मात्र गुनि, आलोकित कवि - लोक
चित वर्धित आनन्द नित जय जय ध्वनि - आलोक ॥२६

१९ अभिनवगुप्त—जनिक अभिनवे भारती, भरथि भरत रस गुप्त
व्यजित ध्वनि सुनि बलित अति, लोचन ज्योति विलुप्त ॥२७

२० मम्मट— पद पदार्थ सभ सार्थ अछि, मम्मट स्वयं अनर्थ
मर्म अँटल कत, जत एतय प्राकृत नाम सदर्थ ।.२८

२१ शूद्रक— यथा नाम गुन फूसि थिक शूद्रक द्विज क विचार
माटिक गाड़ी सोन भरि, चारु वसन्त विहार ॥२९

२२ भवभूति— पूर्व वीर पुनि करुण अति उत्तर - चरित निचोर
कवि विभूति भवभूति जे सुम - मृदु बज्र - कठोर ॥३०
अवज्ञात रहितहुँ यदपि सब तरि ज्ञात प्रमान
नहि समानधर्मा भेला भवभूतिक क्यौ आन ॥३१

२३ विशाखदत्त—मुद्रा अंकित राक्षसहिँ स्वयं विशाख अलच्छ
रचना अद्भुत तदपि अछि, नाटक विकटहु स्वच्छ ॥३२

२४ सुबन्धु— कर-गत बदर प्रमाण अछि विश्व जनिक दृग लब्ध
गद्य - निबन्ध सुबन्धु कृत अक्षर श्लेष - निबद्ध ॥३३

२५ वाणभट्ट— रस उन्मद कादम्बरी हर्ष चरित भरि पात्र
हृदय - हरिणकेँ हनल जे वाण न वाणी मात्र ॥३४

२६ श्री हर्षवर्धन—गुण - ग्राहिणी परिषदक निपुण कृती श्रीहर्ष
जनिक ग्रथित रत्नावली बढ़बय उर ऊत्कर्ष ॥३५

२७ धावक— धावक हरइछ दोष - मल गुण - पट करइछ स्वच्छ
धन - कन हित, पुनि सधन जन चमकय जग परतच्छ ॥३६

२८ मुरारि— राघव बनथि अनर्घ पुनि स्वयं महार्घ मुरारि
कविता वनिता मृदु कठिन वैयाकरण निहारि ॥३७

२९ अमरुक — अमरुक मरु नहि जनिक उर भरि कविता रस राशि
श्लोक कूप मे भरल जनि शत शत कविता भासि ॥३८

३० शङ्कराचार्य — वेद विदित शंकर, उमा संग रूप रुचि द्वैत
वेदान्ती संन्यास लय की अरूप अद्वैत ?३९

३१ मण्डन — स्वतः तथा परतः जनिक आङ्गन कीर प्रमान
ज्ञान – काण्ड केर खण्डनहुँ मण्डन जनि अभिधान ॥४०

३२ वाचस्पति — अस्ति जनिक अछि स्वस्तिएँ नास्ति जनीक नकार
वाचस्पति युग विबुध गुरु दर्शन विविध प्रकार ॥४१

३३ उदयनाचार्य पथ वा विपथ क कथा की, पथ जे चलथि महान
प्राच्य ज्ञान गगन क जयतु उदयन भानु प्रमान ॥४२

३४ भट्टि कवि — अनध्याय स्वाध्याय जत व्याकृत प्रकृत प्रयोग
उद्भट भट्टि क काव्य गत पाण्डित्य क विनियोग ॥४३

३५ श्रीहर्ष — माँ मल्लि क जे मल्ल सुत हीरक खानिक हीर
ग्रन्थ – ग्रन्थि फोलब कठिन श्रीहर्षक गंभीर ॥४४
रति–रस सर मे नित नहा' आसन बसि, कय ध्यान
नृप अर्पित तांबूल मुख कवि श्रीहर्ष न आन ॥४५

३६ नारायण भट्ट — मुक्त - कुन्तला द्रोपदिक कय वेणी – संहार
पार्थ – पक्ष – रक्षक विदित नारायण संसार ॥४६

३७ राजशेखर — राजशेखरक कथा की संस्कृत कहथि अनारि
बागहि मजरि कपूर जे बरलनि प्राकृत नारि ॥४७

३८ कल्हण — स्वयंवरा कवि - रगिनी वीर वरणमे वृत्त
राजतरगिणि तरंगित कवि कल्हण इतिवृत्त ॥४८

३९ श्री जयदेव जनिक पदावलि उपवनहि रसमय मलय समीर
राधा - माधव केलि श्रम हरय तरणिजा- तीर ॥४९
दाख मधुर, धनि - अधर मधु रहो अमृत बढ़ि मीठ
कवि जयदेव क रुचिर रस चाखि सभ क रस सीठ ॥५०

४० गोवर्धनाचार्य—गोवर्धन गिरि नख चढ़ल गोवर्धन कवि टीक
आर्या सप्तशती जनिक भार्या सप्तपदीक ॥५१

४१ पक्षधर — तर्क - कर्कशहु पक्षधर रस - पीयूष प्रसन्न
अनलंकृत जे नहि कृती तनि पद के न प्रपन्न ॥५२

४२ महेशठक्कुर —'वदन भयान भवानि' पुनि रमा भारती संग
श्रुतिधर लक्ष्मीपति सकल सफल महेश प्रसंग ॥५३

४३ शंकरमिश्र — सरस्वती युवती कोना बालक शंकर संग ?
उत्तर देल स्वयं बरे गौरि - दिगंबर अंग ॥५४

४४ भानुनाथ — रस - तरंगिणीमे जनिक रस - मंजरी फुलाय
भानुनाथ निशिमे कोना अभिसारिका - सहाय ?५५

४५ पण्डितराज (जगन्नाथ ओ गोकुलनाथ)
गंगाधर गंगा लहरि विहरथु पंडितराज
मनोरमा मर्दथि विलसि भामिनि उचित कि काज ?५६
अमृतोदय कादम्बिनी बरिसथि गोकुल नाथ
श्रुति स्मृति दर्शन रस-वचन गोचर सकल सनाथ ॥ ७

४६ तुलसी — जगतक जे जत रतन मनि नहि से तुलसिक तोल
सुरसरि सम हितवह सभक मानस जनिक अमोल ॥५८

४७ सूर — सूर अंध रहितहुँ छला सूर क प्रतिभालोक
लक्ष गीत गत लक्ष्य हो जनिक दृष्टि नहि रोक ॥५९

४८ कबीर — घर जारत के उकाठी हाथ लुकाठी सग
कबिरा कवि क बजारमे हीरा अद्भुत रग ॥६०

४९ मीरा — मीरा मुरली गिरिधरक युग युग ध्वनित दिगन्त
भक्त रसिक उर - कुंज नित फुटइछ प्रेम वसंत ॥६१

५० विहारी — सरस बिहारी सतसई रचल रुचिर रस धार
डूबि जतय ऊगथि सुकवि शृंगार क मझधार ॥६२

५१ देव — व्रज चंद क मंगल पदक बुध कवि गुरु पद पावि
देव क्रमहि पद बल वनल नव उन्नत पद भावि ॥६३

५२ मतिराम — श्यामा श्यामक रति सुरति रस चित सुमिरि सकाम
धनि धनि पाओल सुकवि यश अंतहु पुनि मति राम ॥६४

५३ केशव — केशव सेवन कठिन अछि केश वेश रुचि रंग
नव - पुरान मृदु - कठिन पुनि तपन-चन्द्रिका संग ॥६५

५४ घनानन्द — यदि सुजान चित चढ़य तँ कविता वन आनन्द
कय प्रदान नित विरह रस सरिता बहय अनन्त ॥६६

५५ भूषण — रस रीति क मधु मद 'अलस हृत - चेतन म्रियमान
जगा देल रन भूख पुनि भूषन ओजस प्रान ॥६७

५६ पद्माकर — व्रजवानी सरसी सजल अलि धुनि छन्द मरन्द
सुवरन सुरभित रस बरस पद्माकर पद – बन्ध ॥६८

५७ अष्टछाप एवं अन्य कविगण —

वृंदावन रजकन बिछथि नन्ददास मनि मानि
अष्ट छाप कवि – गनक के छाप न उर धर आनि ॥६९

रस विन्दक कवि 'वृंद' छथि रहम 'रहीम'क काज
रहथु उदास न 'दास' हरि राखु 'भिखारि'क लाज ॥७०

दक्षिणक कवि

५८ आलवार — दच्छिन पवन प्रमान बहि आलवार कवि उक्ति
सेतु हिमाचल धरि रचल मधु ऋतु भक्ति क युक्ति ॥७१

५९ ज्ञानदेव — चंदन सन सुरभित हृदय ज्ञान देव कवि संत
सरस परस वस सुकवि तरु सुरभित, भरित दिगंत ॥७२

६० समर्थ राम — बोध दासकेँ दय सकथि स्वामी सँह समर्थ
सत शिव हित प्रिय साधना तनिकहि उक्ति सदर्थ ॥७३

६१ गुरु नानक — गुरु गभीर बानी विनय नानक देल सिखाय
जे सिखि सिक्ख क दल बनल सिंहक शक्ति निकाय ॥७४

६२ गालिब — इसखी गालिब जे गजल आतिश देल जराय
आगि इश्क केर मिझौनहुँ जे किन्नहु न मिझाय ॥७५

६३ इकबाल — के एकबाली प्रौढ़ कवि इकबालक सन भेल
बुलबुल हिन्द क बनि गुलिस्ता बुलन्द कय गेल ॥७६

बंगला

६४ चंडीदास — जनिक जीवन क पट मलिन रजकि प्रेम जल शुद्ध
राधा माधव रुचि रङ्गल टङ्गल चण्डि चित मुग्ध ॥७७

६५ चैतन्यदेव — तरु सम सहि तृण नम्र रहि गहि माधव पद – कंज
प्रेम मूर्ति गौरांग प्रभु आ – राधित पद – पुंज ॥७८

६६,६७ रूप-जीव गोस्वामी—
मणि नीलम उज्ज्वल कोना रसायनक की खेल
जीव रूप गोस्वामि पुनि गोकुल अनुचर भेल ॥७९

६८ ब्रजवुलिक कविगण—
मिथिले छल ब्रज धाम की ब्रज - बुलि मैथिलि वानि
राधा माधव केलि रस गौलहुँ मन अनुमानि ॥८०
बुललहुँ ब्रज, बजलहुँ न ब्रजवानी, पुनि ब्रज-गीत
गौलहुँ विद्यापतिक पद – धुनि सुनि मैथिलि रीत ॥८१
ब्रजबुली क कवि गन उदित रास गीत कत रास
शंकर रामानन्द जत घोष दत्त बसु दास ॥८२

६९ वंकिमचन्द्र — वंकिम चन्द्र क ज्योति शुचि द्योतित भारत भव्य
मठ बसि 'वन्दे मातरम्' मन्त्रक द्रष्टा नव्य ।।८३

७० रवीन्द्र — भानु विभा शशि माधुरो सत रंजित धनु इन्द्र
एकत प्रतिभा कला जत विश्वकवीन्द्र रवीन्द्र ॥८४
उदित रवि क प्रतिभा प्रभा साहित नभ झलकैछ
जनिक किरन कन परसि ससि ग्रहगन भासित ह्वैछ ॥८५

मैथिली

७१ सिद्ध-गण — सन्ध्या वाती, साधना राति विरति रति मादि
जनिक आगमालोकमे लोक – भाषित क आदि ॥८६
चुप्पा सिद्धप्पा गमहि लोक तन्त्र मत आनि
अपभ्रष्ट चर्या चटुल दोहा गान बखानि ॥८७

७२ डाक — डाकनि जनिक सुनैत जग भूत अकाल विलाय
काल परेखथि दैवविद् डाकक बचन सुनाय ॥८८

७३ ज्योतिरीश्वर—कविशेखर निज कृति – कलश रत्नाकर भरि देल
गद्य वर्णना पद्यसँ अद्यावधि बढ़ि गेल ॥८९
दधि चूड़ा परसथि जनिक काव्य किशोरी थार
संगीतागम – नागरक गद्य भोज विस्तार ॥९०

७४ विद्यापति — विद्यापति रूपेँ बरलि पुरुष परीक्षित जानि
कुहकथु कोकिल लोक - वन मैथिलीक मधु बानि । ९१
लखिमा लक्ष्मी कांचनी रूप नरायन श्याम
विद्यापति - पद भागवत मिथिला वृन्दा - धाम । ९२
नवँ धनि, नव धुनि नव बयस नव ऋतु, नवल किशोर
नव रसाल कोकिलक धुनि के नहि भाव - विभोर ? ९३

७५ अमृतकर— अमित पदावलि अमृत रस हरषि वरषि कत रास
मृतहु अमृतकर नित उदित मैथिलीक आकाश ॥९४

७६ विष्णुपुरी— विष्णुपुरी मणि उपजला यदपि तिरहुतिक माटि
गढ़ि रत्नावलि गौर - गर रहल बंग धरि बाँटि ॥९५

७७ कंसनारायण—कंस संग नारायणक यदपि सदैव विरोध
सम्बन्धक वल सन्धि पुनि मैथिलीक अनुरोध ॥९६

७८ गोविन्ददास—गीतामृत गोविन्द मुख श्रुति - सुख ककर न दैछ
द्वैत मिलित अद्वैत रस पद पद हृदय हरैछ ॥९७
गोविन्दक पद ध्यानसँ दास स्वयं गोविन्द
ध्याता ध्येय क भेद नहि यदि च समाधि अमन्द ॥९८

७९ रामदास— विजयानन्दहि मस्त जे नट बनि नाच देखाय
कृष्ण क कयलनि चाकरी रामक दास कहाय ॥९९

८० उमापति— यवन वनक छेदन चतुर हिन्दूपति बल देल
सुमति उमापति वचन बल पारिजात हरि लेल ॥१००

८१ लोचन— साहित ओ संगीत दुइ दृग भारतिक प्रसिद्ध
राग तरंगित छवि निरखि लोचन कयलनि सिद्ध ।।१०१

८२ मनबोध— मनबोधे मन बोध हो मिथिलहि कृष्णक जन्म
वृन्दावन तिरहुतहि मे रसक सद्म निश्छद्म ।।१०२

८३ रत्नपाणि — रत्न जनिक छल पाणि गत विद्या दश दिश ख्यात
तनिक पदक करइत स्मरण के नहि पुलकित गात ।।१०३

८४ संत साहेबराम ओ लक्ष्मीनाथ—
मैथिलीक मठ बसि पुजल पद अभिमत नत-माथ
साहेब राम सुनाम पुनि लक्ष्मीनाथ सनाथ ।।१०४

८५ अन्य कविगण—कमला वागवतीक तट विचरित शत शत गीत
परिणय - हरण स्वयंवरक कथा - बहुल रस - रीत ।।१०५
कते उषा गेली हरलि गौरी परिणय कानि
रुक्मिणि हरि बोधथि कतहु पारिजात हरि आनि ।।१०६
बादरि वरसथि रस, प्रभा भानुक सगर इजोर
निधि ल ग नी के लाल मणि रत्नक कयल सङोर ।।१०७

८६ चन्दा झा— कतबहु कवि खद्योत गण चमकथु भाषाकाश
किन्तु चन्द्र बिनु कतहु कहुँ होइछ दिसा प्रकाश ?।१०८

८७ हर्षनाथ झा—जे मयक बसि गगन धसि शशिकर जाल पसारि
बझबथि उडु - गन मीन नित हर्षनाथ अवधारि ।।१०९

८८ लालदास— रमा रहित रामक अयन नहि अशक्ति पुरुषत्व
लाल दास रचि 'रमेश्वर-चरित' बुझाओल तत्त्व ।।११०

८९ जीवन झा— संस्कृत प्राकृत अनुपदे मैथिलीक पद दोग
साम्ब नर्मदेश्वर पुजल जीवन सुन्दर योग ।।१११

९० परमेश्वर झा—तत्त्व विमर्श करैत नित परमेश्वर पद योग
व्याकरणक सीमान्तमे सीमन्तिनिक प्रयोग ।।११२

९१ मुरलीधर झा—मुरलीधर मुरलीक धुनि बजबथि मोद निमित्त
पक्षच्छेदी बज्रिहुक व्यंग्ये बेधल चित्त ।।११३

परिशिष्ट

(दिवंगत साहित्यिक एवं उन्नायकक स्मृति-अर्चा)

मिथिला - मैथिल - मैथिली, संस्कृत - संस्कृति देश
उद्योतित कय अस्त रवि 'कामेश्वर मिथिलेश' ॥१
आ-हिम आ-सागर जनिक सुकृति प्रवाह बहैछ
स्वर्गत 'गङ्गानाथ' पद माथ न के झुकबैछ ?२
मैथिलीक हरणें विकल 'रघुनन्दनो' बताह !
स्वयं सुभद्रा हरण कय बदला लय उठलाह !!३
दीना नहि भाषा जकर दीन बनथि दिन दोष
'दीनबन्धु' द्योतित कयल रत्न धातु भरि कोष ॥४
मिथिलाभाषामय स्वयं इतिहासज्ञ 'मुकुन्द'
'बालकृष्ण' दर्शन क हित के नहि श्रद्धावन्त ?।५
मरितहुँ 'अमर' क 'नाथ' जे छथि प्रत्यक्ष परोक्ष
भव - विभूति - भूषित जयतु मैथिल पुरुष - महोक्ष ॥६
जयतु जैत केर आभरण व्रज माथुर श्री 'चन्द्र'
'यदुवर' पदकें सुनि ककर धन्य न हो श्रुतिरंध्र ?।७
'कपिलेश्वर' दर्शन कयल पाओल 'योगानन्द'
'कन्त विष्णु' 'जगदीश' पद मिथिला मिहिर अनन्द ॥८
'त्रिलोचन' क लोचन अरुन मैथिलीक जत रोध
गौरीनाथक माथ भल गंगा दर्शन बोध ॥९
'जन सीदन' नामें स्वयं सीदित साहित लेल
'कुमर कुशेश्वर' अमर छथि मरि माँ मैथिलि लेल ॥१०
नित सुनीति सुकुमार मति करइत रीति अभिज्ञ
रचि रत्नाकर भूमिकें 'बबुआजी' दैवज्ञ ॥११
पद प्रफुल्ल 'श्रीवल्लभ'क 'वीर'क ओजस छन्द
'श्यामानन्द'क कवित रस-बन्ध मधुक निःस्यन्द ॥१२
साहित सर 'श्रीकर' कलित ललित 'सरोज' विकास
स्मृतिपथ 'पुलकित' ककर मन आजहु हो न उदास ॥१३

वैशाली - मठ मे रमल 'भुवन' विभूति लगाय
आषाढ़हु व्रज - विरहिणी तपैइछ नोर नहाय ॥१४

'दत्तबन्धु' की देल नहि आनन्दक उपहार
लघु रघु पुनि भारत महा अच्युत परम उदार ॥१५

मैथिल विद्वद्वृंद के करइत हत ! अनाथ
भेल दिवंगत विदित बुध - बन्द्य 'त्रिलोक क नाथ' ॥१६

पण्डित मण्डित जनिक बल, मिथिला वलित विशेष
सत्कृत संस्कृत 'मिश्र बल-देव' हन्त स्मृति-शेष ॥१७

कलित ललित संगीत रस रूपक रचि रसकूप
सरस 'ईश' कवि छथि अहह!स्मृति-पथ पथिक अनूप ॥१८

'उमानाथ' कृतकृत्य जग सेवल काशी अन्त
नवप्रतिभाधर नखत 'हरि - नाथ' अस्तमित हन्त ॥१९

वाचस्पति 'काली'क बनि 'दास' 'कुमार' अनंत
मैथिलीक रक्षण निरत 'धनुष धारि' 'गुनवंत' ॥२०

भाषा 'भेद'हुसँ विदित व्यवहारक विज्ञान
मृतहु अमृत पद तिरहुतहु 'काशी नाथ' प्रमान ॥२१

ऋतु वसंत बहु रूप धय प्रकटित जनिक प्रसाद
'रामनिरेषण' सुकवि कें सुमिरी सहित विषाद ॥२२

तुलसी दल, ठाकुर क पद भजइत भक्ति विधान
'राजेश्वर' सुरलोक कें कयल स्वदेश निदान ॥२३

चरित चान चाणक्य केर छापत के पुनि आब
'बन्धु' दिवंगत यदपि छथि छपल न रहत प्रभाव ॥२४

अवशिष्ट

(वर्तमानकालीन साहित्यसेवी एवं उन्नेताक प्रासङ्गिक नाम-चर्चा)

शान्ति संग अनुशासनें गङ्गानन्द कुमार
श्रीगिरीन्द्र मोहन सहित खोलथु मैथिलि-द्वार ॥१

न्याय तर्क सम्मत जनिक कृति संस्कृतिक नितान्त
असवथु काली दास के मिथिला लक्ष्मीकान्त ॥२

कला चन्द्रशेखर शिवक छापल विश्व उदार
आदित्यक उद्योतकर किरन गगन विस्तार ॥३

सत्यमेव जयते विदित भारत भव्य प्रतीक
वैदेही - प्रिय सत्य से नारायण न अलीक ॥४

नव स्वतन्त्रणा मन्त्रणा जन-- जागरण विधान
श्री हरिनाथक कल्पना पूरओ परिषद प्रान ॥५

चन्द्रधारि गौरव - मुकुट विद्या कला प्रसंग
साहित हित परिषद् विशद कृष्णनन्दनक संग ॥६

कांत कृष्ण जय विजय युत, सुधा प्रभामय रम्य
श्री उमेश नित मैथिलिक चिर-हित-निरत प्रणम्य ॥७

पद गंगा मिथिला मिलित लोकज्ञहु दैवज्ञ
सीतारामक पद-अमृत पिबि के कवि न कृतज्ञ ?८

ध्वनि-रस-रीति-अलंकृतिक करइत निपुण निवेश
मातृगिरा-गौरव जयतु कविशेखर सविशेष ॥९

गीतामृत पद-भागवत लोक - गीत अभिनन्द्य
शत शत हरि-यशकथा-रस भुवनेशक पद वन्द्य ॥१०

दुर्गा-लहरी उच्छलित रचि कत बंध - निबंध
दुखमोचन शशिगर सगर कयल वाग अनुबंध ॥११

मातृगिरा केर लाल छथि भोलालाल अमोल
शरण राम लोचन वचन मधुरस मानस घोल ॥१२

शिवशंकर नागेश्वरक शुचिरुचि हिमकर माथ
अनल सबल बलदेव श्रीकृष्ण संग शशिनाथ ॥१३

रक्षक मुद्रित राक्षसो चानक नीतिक जीति
कुसुम प्रेम पुर नगर भरि सुधाकरक यश गीति ॥१४

कन्या-दान द्विरागमन घर - घर देव प्रणम्य
गप तरंग जनि' बल चलल हरि मोहन रस रम्य ।१५

गद्य-बंध अनवद्य जनि' रमानाथ बुध धन्य
कोमल कांत पदावली जयदेवहि क अनन्य ।।१६

जतय किरण अरुनित दिशा, मधुप सुगुंजित देश
यात्री नव पथ पर चलथि निज भाषा निज वेश ।।१७

मैथिलीक पद सेवने बनइछ जीव सनाथ
जगन्नाथ रथ पथ गहथि जन जे भक्ति सनाथ । १८

लोक-तन्त्र आलोक मे कीचक नीचक अंत
हो सुभद्र आनन्दमय जीव जीबु जयमत ।।१९

नारायण लक्ष्मी सहित लक्ष्मण लक्षित प्रांत
करथु सदर्थ समर्थ बनि मिथिला परमाकांत ।।२०

लक्ष्मीपति रहितहु गहल सरस्वतिक सद्भाव
गंगापति भजि लोक कत लोकपति क पद पाव । २१

मल्लिक जय नारायणक पद - मल्लिका अमंद
छन्द बिन्दु मकरन्द पिबि परमानन्द मिलिन्द ।।२२

कर आकर जनिकर रमा प्रभा बुद्धि जय धारि
वीर भद्र विधु विधुर भव-नाथ लेख अवधारि ।।२३

छथि मोहन मोहन जगक ब्रजक किशोर कुमार
व्यास समासहु उक्त अछि बेचन वचन उदार ।।२४

भलमानुस छथि वैह जे धाबथि योगानन्द
जे केदारहु रस निरत से पुनि मायानन्द ।।२५

निरखि आरसी मे सरस कविता स्वमुख निहारि
लखि मानस अणिमा सरस दैछ प्रबोध पसारि ।२६

कला कलित कृति अमर नव चन्द्र नाथ मन मानि
विकसित कैरव विमल दल रस-मधुकर रुचि आनि ।।२७

साहित परिसर मे रमथु उन्नतशिर शैलेन्द्र
नित विपक्ष छेदी बनथु युग-युग युगल उपेन्द्र ।।२८

कान्त रमा रमणक रुचिर प्रतिभा प्रभा नवीन
तरुण अरुण दिनमणि विभा राजकमल रुचिलीन ।।२९

मानक गिरि शेखर चढ़थु आणु निर्माणक रेणु
मैथिलीक नन्दन विपिन विहरथु हरि लय वेणु ।।३०

राधाकृष्णक मधुर - पद श्रीश सरस गोविन्द
अरविन्दे स्वर-मुखर भम भ्रमर विनोदानन्द ।।३१

माथुर रहि गोकुलहु जे साकेतहु वैदेह
रामकृष्ण पद आत्मने हित नित करिअ सिनेह ।।३२

छथि हित नारायण जतय विदित उमेश अमद
रसा सहरसा प्रभावे प्रौढ़हु बाल गोविंद ।।३३

शशि प्रबोध रहितहु मिहिर करइछ नभ श्रीमंत
धरि ईश्वर पर धीर चित रामदेव पद अंत ।।३४

कंटक धरि जत सुमन सम निरंकुशहु सु विनीत
धूमकेतु धरि सौम्यमय देव, तिरहुतिक रीति ।।३५

इंदु विभाकर अछैतहु नहि दीपक छवि न्यून
तारा नित्य प्रकाशमय राकेशहु दिन दून ।।३६

करथि नृसिंह न उर दलित, प्रवासिहुक घर वास
राज हंसराजक ललित मधु गुंजनक विकास ।।३७

नरे नरेन्द्रक पद चढ़ल, गोपाले गोपेश
कले कलेशक नित हरय तम कुलेश कमलेश ।।३८

राघव नहि लाघव भजथि, विषपायी अमरेश
प्रलयकरहु शुभंकरे दीनहु पुनि परमेश ।।३९

अमर तेज फणि नाथ मणि नागेन्द्रक रचि हार
प्रेम सहित शंकर पहिरि लेल महेश उदार ।।४०

रामचन्द्र नारायणक रूप अनूप प्रशान्त
परमेश्वर अवतर मही लक्ष्मीकांत नितान्त ।।४१

कथा-कवित-स्वरगति त्रिगुण कुमर नगेन्द्रक योग
अनिल अनल बम भीम पुनि जल ईश्वर संयोग ।।४२
वेर कुबेरहु उमापति मित्र; बरस रस इन्द्र
नभ पट भूषण उदित रवि, रम्य प्रकाश रमेन्द्र ।।४३
मैथिलीक पद कन कनक गिरिजा हीरा नन्द
शंकर कृपा सनाथ भय लोक-वेद सानन्द ।।४४
जे जत छथि सभ नवल कवि कोमल कला कुमार
आइ अकिंचन जनिनि केर अंचल भरथु उदार ।।४५
शान्ति उषा आशा प्रभा लखिमा लक्ष्मी नारि
मैथिलि गौरी भारती जत जे कला कुमारि ।।४६
मातृगिरा उत्कर्ष हित श्रम नित करथु सहर्ष
मेटि अलस अपकर्ष पुनि थापथु नव उत्कर्ष ।।४७

× × × ×

द्रुम बल्ली पुर ग्राम वन भुवन सुमन निःस्यन्द
वागवती तट कर्ममय जय ब्रज रज स्वच्छन्द ।।१
पूजि मातृका गोसाउनि जननि, जनक भुवनेश
रामेश्वर गुरु तेज युत नारायण स्मृति शेष ।।२
जय गुरु बदरी देव सह करइत सुचित प्रनाम
दुखमोचन जपि नित कहिअ राघव यादव नाम ।।३
कान्त-बन्धु स्मृति गत विगत लक्ष्मी राम प्रसंग
अंग अंग छवि कवि सुहृद यदपि कतोक अनग ।।४
जय किशोर श्रीकृष्ण जय देव कान्त लक्ष्मीक
रामचन्द्र मोहन मधुप अमर समर निर्भीक ।।५
नित चित नाम स्वरूप गुण सुमिरि सुरेन्द्र अभिन्न
सहृद् सुहृद् गन मन सुमन कहिअत भिन्न न भिन्न ।।६
रामनन्दनक प्रीति रत, मत भोला अनिरुद्ध
मातृभूमि प्रति भक्ति हित भाव बढ़ओ अविरुद्ध ।।७
वृद्ध बुद्धि, युव वीरता, शिशु संस्कार प्रधान
अनुशासित नित संघटित करथु विश्व-कल्याण ।।८
देव - भूप अनुगत सतत देव - देवकी संग
नित अर्पित सुमनक सुरभि कवि पूजनक प्रसंग ।।९

अन्योक्तिका

अप्रस्तुत प्रस्तुत एतय, आनहु अपनहि रूप
निन्दा – बन्दा बिन्दुमत, अन्योक्तिका अनूप ।
कवित सुरभि दोहा दुहित, मथित सुमति नवनीत
सुमन सुचिर शुचिरुचि रुचओ, सहृदय रसना प्रीत ।

... ...

नभ-अन्तरिक्ष

सूर्य— चमकय नभ रवि उदित, जग बढ़बय तेज प्रताप
जग जागय, हत नखत, तम स्वयं पड़ाइछ पाप ।।१
लाख लाख तारा उगओ चमकओ चान पचास
कोटि कोटि दीपक बरओ, राति न दिन क प्रकाश ।।२
भक भक भगजोगनी उड़य, चाक चाक नखत इजोत
जगमग चंदा गगनमे जा धरि भानु इरोत ।।३
पद नभ चाढ़ितहिं कसि करें तबधोलनि संसार
विधि निष्कासित कयल झट रविकें क्षितिज क पार ।।४
तजि प्राची रक्ता प्रथम प्रिया प्रभाती अंग
रवि व्यसनी अन्तिम वयस प्रतीचीक व्यासंग ।।५
चन्द्र — रत्नाकर – कुलमे जनम, शिव शिर विदित निवास
शुचि रुचि तारापति यदपि हत ! कलंक उपहास ।।६
दोषाकरकेर राज्यमे प्रथमहि हत दिन – मान
ग्रह विग्रह समुदित, मुदित कुमुद, सरोज मलान ।।७
तारा — छह असंख्य तारक ! यदपि चमकह, तम न इजोर
किन्तु देखह, प्राची दिशा एके रवि कर भोर ।।८

ग्रह — जगमग वपु, जलदहु उपर, ग्रह नभ, फलद महान
नव ग्रह विग्रहमय विदित रवि शशि राहु प्रमान ॥९

उल्का — छन भरि दिग्दाही प्रखर गति वाही परतच्छ
अंत छीन अपनहु, परक उल्का परम अलच्छ ॥१०

धूमकेतु — कत वत्सर पर अतिथि ई नभ आङन पहुँचैत
देल चकचका, छनहि लय अन्तर अन्त जरैत ॥११

मेघ — रस–रस सर–सरिताक जल, सोखि रहल यदि सूर
बरसि सघन घन करत पुनि जग भरि रस भरि पूर ॥१२

सर-सागर

सागर — अबितहिं वर्षा सम्पदा, कलुषित उमड़ल धार
किन्तु महोदधि निर्मले भरितहुँ सरित हजार ॥१३
जलनिधि व्यर्थे नाम थिक, रत्नाकर पद फूसि
प्यासल कण्ठ न देल जल–बिन्दु, लवन धन हूसि ॥१४

नदी — गिरि गौरव नहि गुनल किछु, समतल नहि सम भाव
चंचल गति सरिता क मति क्षार वारि धरि धाव ॥१५

घटज(अगस्त्य)—कोटि कोटि संघटित घट सिन्धु बीचि भसिआय
किन्तु घटज मुनि सिन्धुकें चुलुक बिन्दु पिबि जाय ॥१६

जलाशय — मल धोअय, मीनहु हतय, पशुहु नहाय निधोक
पोखरि ! कमलालय तोँही कहओ जडा(ला)शय लोक ॥१७

कूप — झील झलक, झरना ललक सागर सगर हहाय
पथिक पात्र–गुन लहि लघुहु कूपहि प्यास मिझाय ॥१८

गिरि-मरु

पर्वत — पड़ओ पानि—पाथर, बहओ अन्हड़ झाँट बसात
वज्रपात होइतहुँ हिलय नहि गिरि गौरव गात ॥१९
अन्हड़ करय अन्हेर, गाछ–पात घर-टाट लय
किन्तु पर्वतक बेर, भिड़ितहिँ घुरइछ बाट धय । २०

मरु — सागर छल छलकैत जत, तत सिकताहिक ढेर
एहन मर्म इतिहास अछि मरुक कर्महि क फेर ॥२१

गाछ-वृक्ष

बड़ — फूल न फल चाखय - सुँघय, ने दल व्यंजन योग
छाया दानहि पँघ बड़, नामहु बड़ संयोग ॥२२

पाकड़ि — पाकड़ि ने फल-फूल केवल पँघ कलेवरे
किन्तु जेठ समतूल छाया सुख हुनकहि भरे ॥२३

पीपर — चंचल दल, बिनु फूल फल इंधनहुक न विधान
बनल महाजन बोधि तरु पीपर, भाग्य प्रमान ॥२४

आम — के नहि यौवन-मंजरित, तन-वन वयस-वसंत ?
किन्तु कोकिला काकली आमहि प्रेम-उदत ॥२५

जामुन — यम निबास जग भरि कहओ, कारी फड़ जनु झाम
सड़य न जड़(ल)योगहु,हरय उदर रोग; जय जाम !!२६

लीची — भरखरि भरि वर्षहु फड़थु कतबहु लकुच लताम
लीची लाली उपवनक अनत न कतहु उपाम ॥२७

कटहर — हँसओ लाल भुटका, विकट कटहर ! काँट कतेक !
फड़ि शत ओ असते, भरय सात पेट ई एक ॥२८

अमलतास—पहिरन स्वर्णाभिण तन, कतबहु गुच्छ क गुच्छ
मलिन अमत फल सँ बनह अमलतास ! तोँ तुच्छ ।२९

नीम — टेढ़ डाँड़, फल निमौरी, तीत अकत फुल-पात
तदपि नाम नीम क चलय, करय रोग जे कात ॥३०

बबूर — ने कुसुमित ने पल्लवित ने फल मधुर फड़ैछ
केवल काँटहि काँटसँ आँट बबूर करैछ ॥३१

साहर — घन गर्जन - भय लोक कत, साहर नाम जपैछ
रक्षा ककरहु की करत ? छाहरि धरि नहि दैछ ॥३२

चानन — लेपिअ घसिअ भिजाय, चानन महमह घर भरय
अथवा आगि जराय, धूपित करइछ सुरभि दय ॥३३

देवदारु — त्वच तजि तज, स्वेदहिँ धुमन, तेजि पात तेजपात
सारिल सरर शरीर तेँ देव - दारु विख्यात ॥३४

तरु सामान्य—दल - पल्लव फल - फूल रस, इंधन छाया - साज
प्राण - वायु पूरिअ अहीँ, तेँ पूजित तरु - राज !३५

लता-गुल्म

तुलसी — ने फल फूल क रुचि विशद श्यामा तुलसी - गाँज
कहुओ, तदपि तनिकहि पुजय दीप लेसि धनि साँझ ।।३६

पान — मह - मह फूल वितान, ने गमगम फल अछि लदल
केवल पाते पान, रसिक अधर रङि अछि सफल ।।३७

अमरलत्ती—ने जड़ि ने फल - फूल, पता न पात क, डाँट टा
किन्तु भाग्य समतूल, अमर-लती अछि वैह टा ।।३८

अमृता (गुड़ीच)—
डाँटे — पाते टा, परक सहयोगहिँ चतरैछ
दुखित क दुख हरइत गुड़िच अमृता जग कहबैछ ।।३९

चम्पा — कनक बरनि धनि चंपिका उद्यान क श्रृंगार
कारी खटखट षट्पद क उचित कयल परिहार ।।४०

वेल-वेली — बेल कतय, बेली कतय ? वन उद्यान सूदूर
फूल एक, फल दय अपर, शिव सङ संगति पूर ।।४१

आक-धथूर – महादेव औढर, चढ़ओ, हुनि सिर आक - धथूर
किन्तु न किन्नहु छुबि सकत विधि हरि चरण क धूर ।।४२

तमाकू — ने फल - फूल, ने स्वाद - रस, केबल तेजी प्राप्त
सुँघय, चुसय, फाँकय, पिबय, जगत तमाकू व्याप्त ।।४३

तृण-तृणराज

दूभि — छिलल कते, मरदल कते, गाय - महिसि चरि गेल
रौद - शीत दागल कते, दूभि न मारल गेल ।।४४

बाँस — ने फुलाय, ने फड़य, ने शाखा बाँसक एक
ने शरीर निस्सन तदपि त्वचा रखै अछि टेक ।।४५
वंश - वंश वंशी विदित, बाँसहि वश घर बास
अपने रगड़ेँ जरय पुनि करय पड़ोसिहु नाश ।।४६

ताड़ — ऊँच नाम लखि ताड़के करिअ न फल विश्वास
पथिक ! अधिक की ? नहि पुरत छाया धरिहु क आस ॥४७
पत्र छत्र पुनि सजल फल स्वागत हित मधुपर्क
किन्तु स्निग्ध छाया विना पथिकक नहि सम्पर्क ॥४८
अन्तर सड़ले, बाहरो तन मढ़ले गज — चर्म
तदपि मदें मातल रहय, ताड़ निघिन अपकर्म ॥४९
सोझ–साझ नमछर सुदृढ़ सफल सरस मधु भाव
छवि छाया नहि तारकेर गत व्यक्तित्व प्रभाव ॥५०
नहि छाया नहि पेय पय, भरि लवनी मधु गाढ़
बहकाबय कत बाट बिच तुरुक ताड़ तरु ठाढ़ ॥५१
घन छाया बरु नहि दिअओ, पंखो कत बितरैछ
तड़िपत लिपि विन्यासमें ताड़ सुपत कहबैछ ॥५२

पशु-पक्षी

सिंह — ने मन्त्री, ने सैन्य बल, ने गज, ने रथ साज
अपन पराक्रमसँ बनल सिंह स्वयं मृगराज ॥५३
चीता-बिलाड़–ओहिना चितकाबर चफर गुड़रनिहार बिलाड़
चीता–समता कय सकत ? यदि च मतंग शिकार ॥५४
गज तुरग—बड़द रुद्र, हरि गरुड़, विधि हंस, मयूर कुमार
करथु सबारी; किन्तु गज–तुरग इन्द्र दरबार ॥५५
साँढ़--बड़द—चरय उछिन, बिहरय विपिन साँढ़क बढ़ल महत्त्व
खेत खटय, गाड़ी बहय बड़द, न जें पुरुषत्व ॥५६
कूकुर — मित–भोजी, मृगया–कुशल, अनलस भरि–भरि राति
जागि बचाबय चोरसँ, कूकुर पोसय स्वाति ॥५७
गोजाति —दूध दही घी देथि जें उपजाबथि वन—बाध
बहथि शकट, तें मान्यता गो जाति क निर्बाध ॥५८
गाय-महिसि—धेनु छीन बिसुकाहि बरु जगमे पूज्य बनैछ
दुधगरि धोधगरि महिसि पुनि यम-वाहन कहबैछ ॥५९

गाय-बकड़ी— पुच्छ शृंग खुर सभ सदृश, बढ़ि बहुतो सन्तान
तदपि अजा डेङबय अदय, पूजय गाय पुरान ।।६०

हरिण — हरिण ! धन्य !! तृण चरि विचरि वन,तरु तर निशि बास
देखह न धनिक क मुख विमुख सहह न विरह-प्रवास ।।६१
तबधल जेठ क दिन पहर तुलित जगत श्रम जाल
दुख के सुख,लुह के सलिल बुझि मरइछ मृग ज्वाल ।।६२

घोड़ा जाति—गुड़ - लद्दी पशु जौं कहय, हमरहु घोड़े जाति
थिक तुरंग के उचित जे अपनहि बनय अजाति ।।६३

शिवा (गिदड़िनी) —
वन वासिनि शव - वाहिनी, नगना मगन मसान
वलि पाबह, कहबह शिवा केवल अशिव क ध्यान ।।६४

गधा-घोड़ा——ने सहीस, घसबाह ने, ने मुह हमर लगाम
भार उठाबी; तदपि हय पोसय ! अद्‌भुत गाम !!६५

वानर — कर पद नख मुख नर तुलित कल्प विकल्पित नाम
वानर ! नरता कतय पुनि जा नहि थिरता धाम ।।६६

कोल्हु-बड़द—कत सिनेह चुअबय तदपि पेरि रहल दिन - राति
तिल सरिसव सन कनहुके कोल्हु—बड़द बद जाति ।।६७

क्षुद्र जीव-जन्तु

खग — चढ़थि माथ, कटु मधु कहथि, नोचथि दल, फल खाथि
तरु - कोटर कत कीं न कय सुखितहिं खग उड़ि जाथि ।।६८

काक-कोकिल —
कोकिल मधु भरि काकली सुना सुताबय गाबि
काक रटय कटु किन्तु हठि निन्य जगाबय आबि । ६९

सुग्गा — हरित पाँखि पन्ना रतन, लालक लाली लोल
रहितहुँ पोसइत क्यों न शुक ! जौं न राम धुनि बोल ।।७०

मयूर — घन धुनि सुनितहिं शिखी शत शिखा मुक्त सत - रंग
नृत्य निरत सिर मुकुट पुनि पद लखि मन बदरंग ।।७१

बक — पच्छ स्वच्छ सर सरस बसि, मीन रूप धर ध्यान
नीर - छीर विनु हंस - गुन बक बुड़िबक अभिधान ॥७२

नीलकंठ — एक मात्र सुर, शिखर वसु, विजया-प्रिय, द्विज योग
नील कंठ शुभ लक्षणे, विष - शूल न दुर्योग ॥७३

काक — कहि पहु आगम शुभ सगुन पर संतानहु पालि
भोर जागि जगबय, तदपि कटु-रव काग क गालि ॥७४

बाज — वधिक हाथ पड़ि खर-नखर, स्वजन - विरोधी बाज
लोभ लेश वश बधह द्विज, आबहु आबह काज ॥७५

भ्रमर — उपवन आङन मालती लता रूप रस वास
चंचरीक चचल चलल करय कुटज - वन रास ॥७६

साग-गनगुआरि—
बिनु पद अहि ! अहँ पवन गति, केवल बल उर ओज
गनगुआरि शत पद चलय, गज भरि पुरय न रोज ॥७७

बरसाती जन्तु—
धन उमड़ल नभ देखि, मुदित कलापी नृत्य - पटु
चातक चाहक परेखि, लागल बेङो रटय कटु ॥७८

प्रकीर्ण जड़-वर्ग

ऋतु — जो वसन्त परदेश छथि दक्षिण जनिक समीर
एतय त पछबा हवासँ नयन बहाबय नीर ॥७९
मधु मातल ! नहि करह तोँ पात क पात निपात
फल रसाल फरते मजरि पुनः पुरनके पात ॥८०

दीप — दीप सिनेह जोगाय कत बाती गुन सजि देल
भेल जोति घर मे, तदपि कलि कारिख भरि गेल ॥८१
स्नेही दीपक धनि शिखा सतीक ज्वाला शाप
भस्म भेल उचिते शलभ विषयी कामुक पाप ॥८१

धान — जा धरि नहि ससियर सगर ता धरि उद्धत धान
फल गुन भरितहिँ गेल झुकि अपनहि नम्र महान ॥८३

पलंग — फूल सेज सजि, वसन शुचि सटलि कामिनी अंग
दोलित तन डोलल न मन सरिपहुँ यती पलंग ॥८४

महल-कुटीर - लखि कुटीर मनहूस, महल, ! तोहर मुह पर हँसी
करत मरम्मति फूस, बसि शिल्पी मुह मलि मसी ॥८५

डेंगी — एतय न बस बसहु क चलत ने ट्रेन क चत्कार
अघट नदी डेंगी हमहि पथिक ! लगायब पार ॥८६

छाता — रौद - ताप वर्षा - झरी छाता पीठ सहैछ
पुनि विपरीत बसात पड़ि अपनहु उनटि पड़ैछ ॥८७
वर्षा - बुन्नी रौद जत सह बिनु छातहु लोक
किन्तु बिना तनि अढ़ कोना बचाय चिन्हारय टोक ॥८८

जूता — काँट डाँट सहि, पाँक पड़ि, फाँकि धूलि, मल अंग
मलि मलि, पद आघात सहि जूता चरन प्रसंग !!८९

गुड्डी राकेट—गुड्डी - गुब्बारा उड़ओ, छनिक इजोत विनोद
रश्मिरथी राकेट बल अन्तरिक्ष धरि सोध ॥९०

कपास — नगन - आबरन, स्वच्छ शुभ अन्तर विशद अतूल
सूत पूत गुनमय तदपि मान - रहित लघु तूल ॥९१

व्यवसायी

गंधी — गतर - गतर मे अतर मलि पहुँचल मेहतर गाम
डाँटल गंधी कें, हटह ! केहन गन्हाइछ घाम !!९२
ई गुलाब, ई केबड़ा, आ' खस अतर अतूल
सुनि पूछल - पुनि कहाँ अछि तीरा तगर अढ़ूल ?९३

सोनार — की चानी नहि गढ़य ओ, की नहि पीटय ताम ?
सोन क गौरव देखिकें धरय सोनारे नाम !!९४

तमोली — ने सोना - चानी गढ़ी, मे मधु मधुर, न इत्र
तदपि मुँह क लाली अहिंक बलहि तमोली मित्र ॥९५

माधुरि नागरि ! घरे बसु रंग – मंच पर आबि
जुटलि भिल्लिनी काकमुखि, डफरा पर मुह बाबि ॥९६

वीणा वेणु मृदंग लय संगत पद – गति छन्द
बन्द करिअ, मादल बजल, नाचत भिल्लिनि मन्द ॥९७

हीरक हार उतारि उर हारी भील क गाम
पहिरल, माला करजनि क झाँपल लाल ललाम ॥९८

मन – टीका टेकल पदें, नूपुर माथ चढ़ौल
हार डाँर मे कसि जनी, डरकस गराँ बन्हौल ॥९९

कच कलाप, दृग भंगिमा, अधर हँसी संगीत
बिसरि जाह ! नागरि एतय आम मीठ, मधु तीत ॥१००

मूनब नैन सुनैनि ! कल - भाषिनि चुप साधबे
मूढ़ वधू ! कल - बैनि ! काव्य-कला नहि लाधबे ॥१०१



नीति पा

(अक्षर-मालिका)

अक्ष-मालिका नीति-मत, वर्ण-वर्ण विन्यस्त
अक्षर-पुरुषक पद चढ़ओ, सद्भावना प्रशस्त

स्वरवर्ण-वृज्या

अ— अन्न खेत-खरिहानसँ वनसँ फल दल कन्द
तदपि गमैया वनैया कहय नागरिक मन्द ॥१
अपन गुणेँ हो मान्यता, ने सम्बन्ध प्रताप
गाय माय छथि विदित जग, किन्तु बड़द नहि बाप ॥२
अभियानक पहिने कने घर-मुरचा पर ध्यान
गोल-कीपरक बल सफल अग्रेसर समधान ॥३
अमतो आमिल रस भरय, तीतो पटुआ प्रीत
आद-मरिच कड़ुओ रुचय, रस गुन डहकन गीत ॥४
अवगाहन शास्त्रक करिअ तखनहि विद्या स्नात
निशि निद्रा मुद्रित दृगहि जाग्रत उदित प्रभात ॥५
अहमक चस्मेँ पर अगुन दुन चौगुन बड़ ह्वैछ
अपन दोष गिरि सम कनहु नहि पुनि देखि पड़ैछ ॥६
अप्रिय सत्यहु सुनु सरुचि, प्रिय असत्य मुनु कान
माहुर मधुरहु तजि विहित तीतहु औषध पान ॥७
असतहु सत संगतिक बल पद उन्नत पहुँचैछ
कीट फूल-दल संग सटि प्रभुहुक शीश चढ़ैछ ॥८

अस्त्र - शस्त्र वाहन तुरग नर गति तीव्र प्रशस्त
मंदहि चलइछ कामिनी हंस पवन गज मस्त ॥९

आ— आगि उगिलि ज्वालामुखी स्वयं मिझाइछ अंत
कुपित दुर्मुखक उचित नहि रोक - टोक, कह संत ॥१०

इ— इतिआइछ धन - संपदा नहि क्यो जन रहि जाय
पिबि पिबि रस मधुकोषकें मधुमाछी उड़ि जाय ॥११

ई— ईति - भीति वश दुखी यदि देश प्रजा - परिवार
राजनीति अनरीत थिक, धिक् शासक शतवार ॥१२

उ— उर उर्वर तनिके विदित क्षमा वृक्ष उपजैछ
पत्र मित्रता, यश कुसुम, पुण्यक सुफल फड़ैछ ॥१३

ऊ— ऊसर बीज न जमि सकय, खल चित नहि उपदेश
बनय न वक शुक, काक पिक कयनहु यतन अशेष ॥१४

ऋ— ऋतु वसन्त बिनु नहि पिकक बोल श्रवण मधु घोल
कटु रव कोलाहल कलह नितप्रति काकक टोल ॥१५

ऋतंभरा प्रज्ञा जनिक, वसुन्धरा परिवार
स्वयंवरा श्री - शारदा उभय बसथि उर द्वार ॥१६

ऋषिक वचन, चिन्तन मुनिक, गुरुक सहज उपदेश
श्रुति स्मृति नीति न कय सकय खल उर रंध्र प्रदेश ॥१७

ए— एक सत्य, शत-शत असत गलइछ छनहि समस्त
उगितहि सूर्यक ज्योति जित नखत असंख्यहु अस्त ॥१८

ऐ— ऐल-फैल वासन-वसन घरहि बीच सजि आउ
भ्रमण करी तँ भ्रमहु वश अधिक न साज सजाउ ॥१९

ओ— ओषधि बल जे जन करथि हठि कुपथ्य उपभोग
पानि देखि से आगि मे कूदथि हठि दुर्योग ॥२०

औ— औषधि कतबहु तीत कटु, गुरुजन वचन कठोर
व्याधि शरीरक हरथ ओ, मनक आधि ई घोर ॥२१

अं— अंग - अंग गहना गुहल रंग - विरंग पटोर
पहिरि दंतुरा कांत चित चढ़ि न सकय दृग कोर ॥२२
अंश एक गुरुसँ पढ़थि दोसर स्वयं गुनाय
तेसर सहपाठीक सङ, चारिम छात्र पढ़ाय ।२३
अः— अः - उः करइत गुरुजनक वचन टारि जे दैछ
रत्न - हारकेँ भार बुझि बीच धार डुबबैछ ।।२४

स्पर्शवर्ण-वृज्या

क— कनकपुरी बसि कयल नहि दशाननहु कन दान
दन्त - बद्ध स्वर्णक कयल कर्ण रणहु बिच दान ॥२५
का— काम क्रोध आ लोभ मद मोह अहम् अभिमान
मन - वन घुमइछ हिंस्र - दल साधक गहु अवधान ॥२६
कारी कागो - कोकिलो, उज्जर बगुलो - हंस
कमल - पलासो लाल पुनि, गुण नहि वरनक अंस ॥२७
कि— किछु कय खल नहि बनय भल, छल नहि छनहु छुटैछ
की कहुँ लाबा - दूध पिबि सापक जहर कमैछ ?२८
की— की कय सक किछु शत्रु जँ मिलय न कुल बकटेंट
कुड़हरि कटितय काठ की जँ नहि लगितय बेंट ?२९
कु— कुपितहुँ साधुक मुख विरुख नहि दुर्वचन उचार
जरितहुँ चानन वितर शुभ सौरभ भरि संसार ॥३०
कू— कूटकपट - पटु साधुहिक ओट स्वार्थ सजबैछ
सूर्य - चन्द्रहिक बिम्ब गहि राहु - केतु पुजबैछ ।।३१
के— केलि - कथा कलि थिक कविक, द्वापर यौद्धिक वृत्ति
त्रेता धर्मकथा तथा कृत अध्यात्म प्रवृत्ति ॥३२
केसरि - केसर भुजग - मणि कृपणक धनक प्रयोग
सती रूप यौवन न पुनि मरनहु हो संयोग ॥३३
कैं— कैरव चानक मुख निरख, तकइछ कमलहु भानु
युगल जलज नभगत सहज, भेद रुचिक अनुमान ।।३४

को— कोटि - कोटि भगजोगिनी हरय न राति अन्हार
सूर एक उगितहि छनहि जग भरि जोति पसार ।।३५

कौ— कौरव शत रहितहु न पुनि पंच पांडवक तुल्य
संख्या बीसोबर चरुक गुण बल अतुल अमूल्य ।।३६

कं— कंचन जेना अकिंचनक, सिंचन बीजक प्रान
संतक संगति सुजन हित, जनु चकोर चित चान ।।३७

कः— कः कः पुछइछ काक खग के पुनि लोक निरोग
हितभुक् मितभुक् कालभुक् जे जन भोजन भोग ।।३८

ख— खलक कटूक्तिक ताप हित कि करब चानन लेप
सुजन वचन अछि तखन की करब चाननक लेप ?।।३९

खल बंदन चंदन विरुचि, सुजनक चाटो मिष्ट
अहि मुख चुम्बित अंग पर चाटो भगतक इष्ट ।।४०

ग— गौरवमय गुरुजन चुपहि लघुजन करइछ घोल
सोन मौन गहि रहथि पुनि काँसक टन - टन बोल ।।४१

गगन मगन उड़इछ सतत जत स्वच्छद विहग
शुक पंजर बन्धन पड़ल, स्फुट मधु वचन प्रसंग ।।४२

गति डगमग, दृग रक्त, तन कम्प, न रंच विवेक
अरदर कह नहि धैर्य, रह, क्रोध सुरा मद एक ।।४३

गात मलिन जलसँ विमल, बचन सत्यसँ शुद्ध
मन उपकारहु निष्कलुष, आत्मा ध्यान विशुद्ध ।।४४

ग्रंथ पंथ पढ़ि लिखि न किछु गुनइछ खल विषदंत
सूध दूध पिवितहुँ फणी उद्गिर गरल दुरंत ।।४५

गुणक मान नहि जतय तहँ गुणी न लोक बसैछ
नागा साधु दिगंबरक गाम न धोबि बसैछ ।।४६

घ— घुमि जग उपवन, सुजन-तरु भमि, शुचि रुचि गुन फूल
रस सौरभ संचय करिअ बनि भमरक समतूल ।।४७

च— चपलहुसँ बढ़ि चंचला, मृगतृष्णहु सँ तीख
लक्ष्मी मदिरहुसँ मदिर, अहि-जीहहु वढ़ि बीख ॥४८
चातक स्वाती मेघसँ माङल कन दू चारि
तावत भूतल देल भरि बरसि निरंतर वारि ॥४९
चान मलिन दिन, रजनि पुनि हरथि नयन मन दाहु
जीवन - संध्या सहचरी धनि विरूपि वयसाहु ॥५०
चित्त थीक भंडार - घर, कूड़ा - कर्कट टारि
शुद्ध करब पहिने तखन, गुन भरि लेब विचारि ॥५१
चित्र - विचित्रहु रंजितहु रूप अनूपहु बंध
अरसिकके रुचइछ न जनु भानु - चान दृग अंध ॥५२
चुट्टी सन लघु जन्तु लखि, माछी अछि गर्वेत
हाथी ऊँट अँटैत दृग, तखन स्वरूप सुझैत ॥५३

छ— छल विधिकेँ जे उचित विधि करितथि भाव अभाव
मरु प्रदेशमे शीतता, मेरु देशमे ताव ॥५४

ज— जननी - उदरहि जनमि जन ज्ञानी दाता वीर
खानि धातु मनि धन, वितर कीड़ दिवरा भीर ॥५५
जल कज्जल यमुना नहा' हंस न हो बदरग
गंगाजल डुबकी लगा' काग न उज्ज्वल रंग ॥५६
जा धरि नहि ससिगर सगर ता धरि उद्धत धान
गुन दाना भरितहिँ झुकय अपनहि नम्र महान ॥५७
जीवन जाड़ दुहूक बीच अछि समता बड़ि गोट
सुखक दिवस अति छोट पुनि दुखक राति अति मोट ॥५८
जीवन जनरुचि - मत यदि च चैन न उबरय प्रान
जलहु नुकौनहु शुभ सुरुचि मीनक जाल बझान ॥५९
जीवन संचित पुण्य धन जप तप दान समग्र
करय पलहि मे भस्म ई क्रोधक अनल उदग्र ॥६०

जुआरीक धन शरद घन, गनिका नेह अनेर
छाया मेघक छनहिमे जाय़ बिलाय न देर ॥६१
जेठ जते तबधय तते बरिसय सघन अषाढ़
तपि पूर्वज संचय करय, संतति खर्चय बाढ़ ॥६२
झ — झाँट - बसात बहैछ कत मघा - मेघ भरिआय
किन्तु न स्वातिक बिन्दु बिनु चातक प्यास मेटाय ॥६३
ट— टरटर करइत बेङ फुलि जलकन पिबइत मस्त
नहि देखय अहि लगहि मुह बओने, करते ग्रस्त ॥६४
ठ — ठका जाथि से टका हित, हित - अनहित नहि बूझ
भोज - भोजने जे भजथि तनिका भजन न सूझ ॥६५
ड— डाँट-डपटसँ आँट जे वटु से पटु नहि होय
काँटकूस पर सुति न क्यौ चर्म - मर्म संजोय ॥६६
ढ — ढोल - ढाक कतबहु पिटय, मचबय कतवहु घोल
बरिसय मधु - श्रुतिपटु न विनु बँसुरी सुर अनमोल ॥६७
त — तदनु क्रिया गुन तनिक हो यदनु स्वभाव जनीक
रंग जामु कारी, पिअर आम, लाल लीचीक ॥६८
तन भूषण थिक रूप, गुणहि रूप केर भव्यता
ज्ञानें गुनें अनूप, ज्ञान तत्त्व एकात्मता ॥६९
तीख तीर तरुआरि अति, तिख - रुख वचन विशेष
बचय कदाचित तनु तनुक, मन निस्सन नहि शेष ॥७०
थ— थिक द्विरुक्ति पुनरुक्ति पुनि गुन यदि संग महान
राम - कृष्ण दुइ नाम मिलि रामकृष्ण भगवान। ७१
द दसक बीच क्यौ धनिक हो, शतक बीच गुणवान
सहस बीच दानी, न पुनि त्यागी कोटिहु जान ॥७२
दरस, परस, गपसप त्रिविध बरजिअ तियक प्रसंग
तन मन वचनहु यदि धरिअ, ब्रह्मचर्य व्रत भंग। ७३

दिनहि ततेँ श्रम करिअ जे निशि करतब नहि शेष
रोप करिअ आषाढ़ यदि अगहन गहन विशेष ।।७४

दुग्गी - तिग्गी के गनय पंजा - छक्का फूसि
जँ एका जनमे रहय राजा - रानी झूसि ।।७५

दुर्गुण वृण दुर्गन्ध चित लुबधल माछी ओछ
दूषित दिस पहुँचय, मुदा मधुक मधुप कर खोज ।।७६

दूध - दही - घी देथि जे उपजाबथि बन - बाध
बहथि शकट तेँ मान्यता गो - जातिक निर्बाध ।।७७

दूर लगहु दृग - दोष लखि चश्मा दुरुख लगैछ
परदूषण दूरहु सुझय, निज गुन सघन सुझैछ ।। ७८

ध— धनक शुद्धि हो दानसँ, तन सेवासँ शुद्ध
वचन शुद्ध पुनि सत्यसँ, मन त्यागहि परिशुद्ध ।।७९

धातु रतन भल भरल यदि हिम न गिरीश कलंक
गुनगन बिच त्रुटि-कन न किछु जनु शशि श्यामल अंग ।।८०

न— नदी बाढ़ि, यौवन, दछिन पवन न चिर दिन थीर
लेथु पटाय, खटाय तन, हरसि परसि बुध धीर ।।८१

नव वयसहि रसमय सुतनु, गतवय अरुचि मलान
नव नीरा ताड़ी निषिध होइतहिँ बासि पुरान ।।८२

नाम उपाधि न करय किछु भाग अपन अपनाय
कौड़ीमल घरमे करथि पाक धनेसर राय ।।८३

नारिकेलि मुजडोरि वा लोहक तारक बानि
शिथिल होय, नहि सज्जनक वानि कदापि उबानि ।।८४

ने निदाघकेँ जलद जल, ने पावस केँ प्यास
ने शिशिरक दिनमान किछु, ने शशि उषा विलास ।।८५

ने मतिमानक मति खलक दुर्मतिएँ भसिआय
अन्हड़ बहितहुँ कहुँ कतहु मणिक इजोत मिझाय ? ८६

ने वसन्त उपवन बसय, ने ग्रीषम मरु भूमि
सुखित मनहि मधु - मलय बह, लूह दुखित उर जूमि ॥८७

ने सौजन्यक वन सघन, सरस न प्रेमक धार
क्रोध अनुर्वर मरु - धरा, उपज न शील उदार ॥८८

प— पर तिय प्रौढा मातृवत्, युवती बहिनि समान
बाला पुत्रीवत् बुझिअ मातृ जाति सम्मान ॥८९

पर नारी प्रति क्लीव जे पर-दोषक प्रति अंध
पर - निन्दा हित मूक जे मनुज देव अनुबंध ॥९०

परक हानि नहि होय तँ स्वारथ सुपथ विचार
अपन हानि होइतहुँ करथि सन्त परक उपकार ॥९१

पाबय भाग्यक रत्न, कर्म खानि केँ खुनय जे
सुख - पट बुनय सयत्न, श्रमक तन्तु केँ तनय जे । ९२

पिता धैर्य, माता क्षमा, शान्ति प्रिया सुखसार
सत्य सहोदर, अहिंसा बहिनि, साधु - परिवार ॥९३

पुरुषार्थी श्रम बल सफल करय न दैव भरोस
नहर काटि पटबय कृषक मेघक दिअय न दोष ॥९४

पोत तुरग गज सचिव, लय लड़थु शाह सतरंज
किन्तु पदातिक विना नहि किला सुरक्षा मंच ॥९५

प्रकृति विकृति आहार वश, लोक न रोक कथूक
मलभोजी रट काक कटु पिक रसाल - रस कूक ॥९६

प्रतिकूलोमे मेल पुनि अनुकूलो न मिलैछ
खटमिट्ठी सबतरि चलित, नोनमिट्ठी न रुचैछ ॥९७

प्रलयङ्कर शङ्कर विदित, बनला कृष्णो चन्द
श्यामहु व्रज मे लाल पुनि सूर लोक मे अन्ध ॥९८

प्रियगर बाजथि बात जे से छथि स्वयं अमोल
किनथि सुदुर्लभ मन सभक विनु खर्चहु मधु बोल ॥९९

फ— फड़कय वामहु दहिन पुनि तिय पुरुषक अनुसार
शुभे अशुभ अशुभहु शुभे फल हो वस्तु अधार ।।१००

ब— बौक वधिर आन्हर जनम वरु विधि लीखथु रेख
फूसि वचन, निन्दा श्रवन, पर-तिय छवि न परेख ।।१०१

बधन पवनक करिअ यदि नभमे विरचिअ रध
सलिल भरिअ मरु मे तखन खल सँ निभ संबध ।।१०२

भरल - पुरल उज्ज्वल शशी राका राहु ग्रसैछ
खीन मलिन तनु वंक विधु ईश शीश बसबैछ ।।१०३

भानु दिनावधि, चान पुनि निशि भरि करथि इजोत
गुरुजन अह - निश लघुजनक हित नहि हरथि इरोत ।।१०४

म— मणिहिक मोल घटैछ यदि जौहरीक नहि हाथ
पुनि यदि वानर कर पकड़ फुटइछ पाथर माथ ।।१०५

माथ साटि केसर कुकुर वरु केसरि तत्काल
मत्त करी क भिड़ंतमे अंत हुनक की हाल ।?१०६

मुह दूसय जे जन तकर पहिनहि हो मुख भंग
जरबय जे इन्धन स्वयं जरि जाइछ अनुषंग ।।१०७

अन्तःस्थ-वर्ण वृज्या

य— यदि उदारसँ हानि किछु सकिअ न तनिका टारि
घर जारय बरु आगि पुनि लगले तकर पुछारि ।।१०८

र— रवि मे ताप प्रकाश दुहु, शशि मे ज्योति कलंक
दीप जोति - कारिख दुरुख, अवगुन गुनहिक अंक ।।१०९

रहय भाव हृदयक जेहन, तेहने वचन उचार
प्रतिबिंबित अपनहि करय मुह छवि दर्पण द्वार ।।११०

रोटी टुकड़ी वश, छड़ी विवश, नाचि कत नाच
दाँत निपोड़थि तमासे बनि नर वानर साँच ।।१११

रौद घमाबय देहकें, आगि जराबय गेह
देह गेह ओ नेह कें छनहि कोह कर खेह ।।११२

ल — लहरि गनिअ सिन्धुक, कुसुम लोढ़िअ गगनक गाछ
उपजाबिअ मरु पाथरो धरिअ दुर्जनक पाछ ।।११३
लड़इछ भेड़ - बटेर कत शुक - सारिओ पढ़ैछ
पर - हित त्यागी व्यक्तिअहि पंडित वीर रहैछ ।।११४
लिखथि नित्य जे दैनिकी केहन बितल दिन - राति
जीवन ऋषि वा पशुक तुल से उन्नति - पथ जाथि ।।११५
लेथु सुजन परिमित स्व - हित, देथि अमित प्रतिदान
चरथि धेनु तृन - घास वन, घी दधि दूध पन्हान ।।११६
लोभी धनसँ, रूप सँ कामी, भयसँ दुष्ट
सुजन शील सँ, प्रेम सँ भगवानो धरि तुष्ट ।।११७

व — वकक ध्यान, सिंहक क्रमण, कुकुरक सेवा निम्न
चेष्टा कागक, गर्दभक भार—सिखिअ अविखिन्न ।।११८
वरु कुलजा कुबजा रहओ, कुलटा कलावती न
अमृता तीतो सेविअत, मीठो माहुर हीन ।।११९
विचलित दाँत समान जे पीडक अपनहु लोक
जड़ि उपाड़ि फेकिअ झटिति तखनहि मिटइछ शोक ।।१२०
व्यसनी संदेही अलस यदि चाहय धन - मान
पंगु लुल्ह हिम शृंग चढ़ि बान्हय अवस मचान ।।१२१
व्यक्तिक दुहु विधि रिपु विदित अंतरंग बहिरंग
प्रथम वर्ग जितनहि सहज अपर वर्गहुक भंग ।।१२२
व्यक्ति जाति हित, जाति पुनि तजिअ समाजक हेतु
हेय समाजहु देश - हित, देश समष्टिक केतु ।।१२३

उष्मवर्ण-वृज्या

श — शालग्राम शिला अगढ़ कारी कुछवि कठोर
दैवी गुण सँ पूजिअत, न पुनि मोम मृदु गोर ।।१२४
शिशु वसन्त चढ़ि शिशिर शिर द्रुम दल तोड़ल बेस

कान्ह चढ़ाबी बाल यदि नोचय निश्चय केश ।।१२५
शील स्वभावक आवरण यदि अकिंचनहु गेह
स्वर्ण आभरण भार थिक अत जे साजिअ देह ।।१२६
शुद्ध - विशुद्धहु मुनि - वचन बल नहि पशु पूजैत
दितय न यदि दधि - दूध - घृत धेनु न धन्य बनैत ।।१२७
शोचनीय धनहीन नहि, धनिक कृपन तनि सोच
चिन्तनीय नहि तिय सलज, रूपहि अलज अरोच ।।१२८
ष— षण्मुख गजमुख पंचमुख लम्बोदर परिवार
सती अन्नपूर्णा बलें भरइछ उदर उदार ।।१२९
स— सती नारि सजला नदी पुष्पवती - व्रततीक
अर्थवती वाणीक द्युति पुत्रवती युवतीक ।।१३०
समय बिताय करैछ किछु व्यर्थ तनिक कृति ह्वैछ
खेत पानि बहि जाय पुनि की लय आरि बन्हैछ ।।१३१
समय बितय पढ़ि - लिखि बुधक कला ज्ञान - विज्ञान
रगड़ि - झगड़ि दुर्व्यसन पड़ि मूर्खक असल सुतान ।।१३२
सार शरीरक स्वस्थता, शक्ति तकर थिक सत्त्व
कर्मठ जीवन फल तकर, यश जीवनहुक तत्त्व ।।१३३
सिंधु कृपन दुहु अंतरहि रतन संपदा झाँपि
तृन कंथा देखबथि प्रगट कुहरि - घहरि तन झाँपि ।।१३४
सुजनक घर दारिद उमड़, दुर्जन सम्पति वास
जनपथ जमय न श्याम तृन, निर्जन हरिअर घास । १३५
सुजन शरद दुहु दर्शनें नयन नलिन विकसैछ
खल हेमन्त दुरन्त जत मान सरोज गलैछ ।।१३६
सूत न जे रथ - पथ अबुझ, सूत न टुटय बुनैत
सुत की पितु - वचन न सुनय, सुतब कि नित सपनैत ।।१३७
स्थान समय साधन स्वबल अनुभव मन उत्साह
कर्म नित्य नियमित कृती ध्रुव संपदा प्रवाह ।।१३८

स्वाती घन जल दिव्य कन स्वादय चातक धीर
पिबय न किन्नहु भूतलक कूप पोखरिक नीर ॥१३९

स्वकुल तुच्छ रहितहु यदि च संग अंग छँटि जाय
छाँटल चाउर छिटि कतहु अन्न न क्यो उपजाय ॥१४०

ह— हरि हर एकहि कृति प्रकृति प्रत्यय वसहि अनेक
बदरंगहु हिम - अंगजा यमुन गंग मिलि एक ॥१४१

हानि हाय कतबहु सुजन, तजथि न शील - स्वभाव
कतबहु औंटल जाय जल, छुटय न शीतल भाव ॥१४२

क्ष - क्षमा कवच पहिरिअ सतत अन्तर शत्रु विरुद्ध
जय पाइअ बिनु आयुधहु दुर्जय जीवन - युद्ध ॥१४३

त्र – त्रयी त्रिगुण देवयत्री लोक काल सब तीन
अंत त्रिवेणी जल सकल आत्म - सिन्धु मे लीन ॥१४४

ज्ञ— ज्ञान विना नर वानरे स्वर विनु व्यंजन मूक
शक्ति रहित शिव शव, न पुनि बिनु वसन्त पिक कूक ॥१४५

× × × ×

अविनश्वर स्वर व्यंजनहि व्यंजित रंजित सृष्टि
अक्ष अक्षरहि नीतिका ग्रथित गहओ शुभ दृष्टि



ललना-लहरी

तट-प्रशस्ति

प्रकृति बिना पुरुष न कृती, आकृति बिनु नहि नाम
कला - हीन की काव्यकृति, रस बिनु ललित ललाम
विनु सुरभिक चन्दन जेना, विनु किरणे जनु इन्दु
ललना बिनु जीवन, जेना लहरि - बिन्दु बिनु सिन्धु
आकृति - प्रकृतिक मेलसँ विकृति न कृति कहबैछ
रूप-रसक शुचि शैलसँ, संस्कृति लहरि बहैछ

देश-प्रदेश

मैथिल ललना—सीँथ, सोझ, कोँचा कुटिल, पँच आँखि, मुह पानि
लुरिगरि गितगाइनि सहज लिअ तिरहुति तिय जानि ॥१
दृग चंचल अंचल भरल कुंचित कच मुख पान
तिरहुति पद गबइत चललि धनि जनि गंगा स्नान ॥२

वंग – अंगना — मधु भाषा, दृग चंचला चूल चारु घन श्याम
वंग–अंगना ककर मन हरय न रूप ललाम ॥३

असम-कामिनी — तरल नयन, लहु लहु वयन, चित्रित चारु पटोर
काम—रूप कामिनि असम, श्याम रहओ वा गोर ॥४

उत्कल-वधू (उड़िया)—कृश कटि उर तटि अकृश पुनि वरन न श्यामल गोर
चटुल – नयनि उत्कल-वधू रुचइछ प्रणय - विभोर ॥५

आंध्री पुरंध्री — कुंडल मंडित गण्ड थल कच रुचि घन, कुच कन्द
आंध्र – पुरंध्री रूप छवि सभ केँ बनबय अंध ॥६

द्राविडी — श्यामा कुवलय - कोमला नवला द्राविड नारि
कुंद - दतिका बिहुँसि, उर ककर न दैछ ओदारि ॥७

केरली — लघु शरीर, मुख गोल, शुचि कुंद दंति छविवंति
रुचिर चिबुक धनि केरली हेरइत हृदय हरंति ॥८

मराठी-महिला — वसन वचनमे पौरुषक रस ललित लावन्य
मिलित मराठी खटमधुर ककर न जीवन धन्य ॥९

गुजराती — उर उदार रस रास रुचि व्यंजन रंजन — दक्ष
गुर्जर सरस नितम्बिनी ककर न बस मन—कक्ष ॥१०

सिन्धी — वसनहु व्यंजित तनु सुछवि मनि नासिका अनन्य
वधू सैन्धवी रूप रति रजित रस लावन्य । ११

पजाबिनी — चपक - वरनी पंचनद - रमनी गठित - शरीर
मद गयंद गति गामिनी करइछ हृदय अधीर ॥१२

कश्मीरी — कनक गौर मुख रुचि ललित कुंकुम - रजित अंग
अगुरी छवि कश्मिरी बाला बलित अनंग ॥१३

राजस्थानी — प्रचुर - रुचिर—वसना धनी प्रिय—भूषणा प्रशस्त
राजस्थानी सुन्दरी लखि मन ककर न मस्त ॥१४

जन-जनपद

मागधी वधू — गठित कलेवर मागधी रंगिनि मांसल अंग
मुख प्रफुल्ल सुरभित अधर, भाग्यहिँ रसिक क संग ॥१५

भोजपुरी नागरी—कजरी धुनि कल कंठ मे काजर रंजित नैन
भरल कलेवर भोजपुरि नागरि मैन क ऐन ॥१६

व्रजबाला — यमुना जल पिबितहुँ सतत श्यामक धरितहुँ ध्यान
गोरि - नारि व्रज - नारि पुनि राधा प्रेम प्रमान ॥१७

कन्नौज-मेरठ — द्रुपदा संयुक्ता भगिनि जत मेरठ कन्नौज
पुरुषायित समरहु स्मरहु उर भरि माधुरि-ओज ॥१८

देहली — भाषा भूषा वेश पट देश विदेश प्रभाव
तदपि देहलि क गेहिनि क अमिट छटा छवि भाव ॥१९

काशिका — कनक - वरनि धनि कनक - पट पहिरि काशिका नारि
गंगा - तट चटपट चललि युव - जन चित - पट-कारि ॥२०

उज्जयिनी — युग - युग उज्जयिनी जनी रूप — विजयिनी ख्यात
अलक सघन विनु घन हनथि दृग — विद्युत सम्पात ।।२१

अभिजान

पारसी — गोर नाम मुख व्यक्त रुख पट परिधान अनन्य
नमछरि छोहरि पारसि क निरखि रसिक मन धन्य ।।२२

यवनी — अवनी तल नवनीत - मृदु सुविदित यवनी गोरि
पट – ओटहु दृग चोट कय दैछ रंग रस बोरि ।।२३

फिरंगिनी — विदित महाश्वेता रुधिर कपिश केश, दृग पिंग
मुक्त फिरंगिनि रंगिनी हेरइत करइछ दंग ।।२४

पार्वती (पहाड़ी)—सरल विलोकन, छल न कन ओज भरलि रस पूर
गंधक — वरनी पार्वती मृगमद — गंधा दूर ।।२५

वनवासिनी — कृष्णा मसृणा कच कुटिल कर्ण — फूल फूलेक
वनवासिनि हासिनि सरल देखिअ सुचित क ाक ।।२६

परिजान

नागरी — वंक अलक, रंजित अधर पट पटोर चटकारि
वेश—वचन रसना चतुरि रसवति नागरि नारि ।।२७

ग्रामीणा — पट मलिनहु, वचनहु अपटु, रखितहु रुख मुख - केश
शुचि रुचिवंती ग्राम - तिय हरइछ मन सविशेष ।।२८

छात्री — लुंलित अलक मुख झलक, चल पलक, चुस्त परिधान
कर पुस्तक, गति सुस्त, दृग तडित, अधर मुसुकान ।।२९

नेत्री — आज काज नहि लाजहुक, रहब न आङन ओट
सभा-समाज क बिच पहुँचि अरजब सहजहि वोट ।।३०

अभिनेत्री — सफल फिल्महि क इल्म, छवि क कवित, कवि कैमरे
धुनि पट - ओटहि तिग्म, पट - नटी क छवि मन हरे ।।३१

श्रमिक--वालिका मलिन वसन, भूषन न तन, रुच्छ केश, कृश गात
श्रमिक बालिका मन क श्रम हरय खरड़ि खढ़ - पात ।।३२

वन-पालिका — तन मलिनहु मन स्वच्छ, वस न अवसनहु कालिका
अबलहु सबल प्रतच्छ, धनि अधनहु, वन - पालिका ॥३३

रीति-कला

वैदर्भी — हंसी गति, वंशी क धुनि रूप अनूप रचैछ
वैदर्भी धनि रीति वश रसिक स्व - वश कय लैछ ॥३४

गौड़ी — गौर अंग, गुन गौरवित पद समस्त मस्तीक
ओज भरलि उद्दीपिका गौड़ी गिरा प्रतीक ॥३५

पांचाली = सघन जघन पद, गति तुलित, ओज मधुर धुनि गीत
कन्या कुब्जो धरि सुघड़ि पांचाली रस रीत ॥३६

लाटी — वचन रचान पटु, चाटुल दृग कलित केश विन्यास
रस परिपाटी कत अधिक लाटी रीति विलास ॥३७

रस-प्रकृति

स्वकीया — दरस - परस दूरहु यदि चा पर क संकुचित गात
लजवन्ती धनि वनस्पति रति वन - आङन कात ॥३८

परकीया — कमलिनि दिन पति रस हुलसि सौरभ-भरित दिगन्त
लखि दूरंगत, भ्रमर लय उरसि विलस निशि हन्त !!३९

वेशिनी — प्रात शिथिल, दिन मलिन, निशि विकसित, साँझहि ज्ञात
चान का चानी मन हुलस कुमुद वेशिनी स्यात । ४०

वेश - वयस

कुमारि— कुल पर्वत गृह वत्सला निर्झर नेह क बिन्दु
गंगा विमल कुमारिके अन्त मिलित वर सिन्धु ॥४१

नव-विवाहिता – उत्सुक मन, सहमलि कने जने अपरिचित आन
काम कामना क्रमहि गमि नवोढाक मन मान ॥४२

सधवा – बिन्दी - टिकुली कर बलय मान - मनाउनि राग
मन रति पति क सिनेह गुन धनि धनि जुड़ओ सोहाग ॥४३

विधवा— मधु माधव क वसन्त वन तरु - लतिका सह - वास
दुर्दिन अन्हड़ हत छनहि मुरुछलि लता हतास ॥४४

घर - परिवार

पत्नी— सखी सहचरी सचिव शुचि रति रुचि, गृह परिबंध
भुक्ति मुक्ति एकत विहित अर्धांगिनि अनुबंध ।।४५

माय— मायहि सँ ममता उपज वहय सिनेह क सोत
सर्ग स्वर्ग अपवर्ग सुख जनिकहि कोर इजोत ।।४६

बहिनि— सामा सतभामा पुरी भद्रा भाइक ब्योंत
नोतथि यम यमुना परब बहिनि सिनेह क सोत ।।४७

कन्या— घर - परिसर चुहू - चुहू करय चचल सहज सुभाव
पिता धन्य ! कन्या कुलक दीप – शिखा जे पाव ।।४८

कुलवधू— मंद हँसब बाजब चलब अँगनहु अंग पट झाँपि
लजवंती छविमति धनि दृगहु पड़य तन काँपि ।।४९

पितामही (बाबी)—मुख अंकित रेखा गणित बीज गणित उर नेह
कंपन अंकन अंग कत बाबी गणित सिनेह ।।५०

मातामही (नानी)—माय क ममता दीप मे जकरे देल सिनेह
बाती प्राण क बाँटि जे नानी नेह सदेह ।।५१

पीसी (दीदी)— एक - पिठिया बाबुक बहिनि नैहर नेह हकारि
जे सनेस पठबथि सदति जायब दीदि क द्वारि ।।५२

मौसी— लाड़ – दुलारो माय केर फटकारो कत जोर
मौसी बौंसथि झगड़ि हुनि पुनि बैसा' निज कोर ।।५३

प्रकीर्ण

सासुर रस – सासु न सासुर नाम टा, से बिनु सारि असार
बिना सरस सरहोजिए' रस सासुर निःसार ।।५४
तीन (३) अथच छओ (६) जौं बनय भाउजि ननदि क खीस
आँकब(६३) तिरसठि माय-धी, सासु-पुतोहु(३६) छतीस ।।५५



श्रृंगारहार

प्रशस्ति

मानस सर यौवन सलिल प्रेम - सुरभि रुचि ओज
रस श्रृंगारक सार शुचि जयतु मनोज सरोज ।१
शरद - चान मधु - यामिनी घन - बिजुरी रस रंग
जनि बल ऋतु रमनीक मन रति सह जयतु अनंग ।२
रंग - रूप, रस गंध, धुनि परस वयस रस सार
संसारक संचार जत, जीबथु युग युग मार ।३
विनु मनोज मन ओज नहि संतति दंपति प्रीति
गेह सिनेहक स्रोत नहि भव - संभवहुक रीति ।४
रमा रमण, गौरी वरण, वाणी ब्रह्मक योग
जगत जीव संजीविनी, रति कामहिक प्रयोग ।५
शब्द अर्थ गुण नीति मत, भाव विभाव उदार
सुमन समर्पित उर धरिअ, रस श्रृंगारक सार ।६

श्रृंगार

प्रकृति प्रेयसी, पुरुष प्रिय मिलित ललित संसार
भाव विभावित अनुभवित संचर रस श्रृंगार ।१
श्रृङ्गार ओ कविता—युव - युवती तट युगल पुनि अनुरागक जल जोर
श्रृङ्गारक सागरक दिस कविता सरिता सोर ।२
श्रृङ्गार तरु — भुज शाखा, दल श्याम कच, वक्ष मुकुल, मुख फूल
स्मित पराग मधु अधर, धनि तरु श्रृङ्गारक मूल ।३
सहृद भूमि, चिर वासना वीज सलिल कविताक
अंकुर दल पल्लव कुसुम फलित व्यक्त रस - पाक ।४

नारि-केलि— सुफल पयोधर पूर, नारि-केलि रस रसिक उर
करिअ आवरण दूर, कठिन प्रथम पुनि मृदु मधुर ।५

प्रेम

प्रेम-हेम— अपनहि उपजय प्रेम, उपजा सक नहि यतन बहु
स्वयं खानि विच हेम, न पुनि खेत उपजय कतहु ।१

प्रेम ओ हेम— प्रेम तुलित नहि हेम, हाट बाट मोलें विकय
विनु मोलहिँ शुचि प्रेम, ककरहु कहुँ भाग्यें भेटय ।२

प्रेमासव— वचन-चषकमे नहि अटय प्रेमासव कन बिन्दु
उर भाजनहि जोगाय नित राखिअ रसमय सिन्धु ।३

प्रेम-रवि— दृग रूपक घन घर्षनें रति-विद्युत् चमकैछ
किन्तु प्रेम-रवि उदय बिनु मन-नभ दिन न हँसैछ ।४

प्रेम ओ वासना—प्रेम-अनलमे वासना–सलिल न उझकिअ लेस
अमित तेज छनमे शमित भसम कलुष अवसेस ।५

प्रेम-पुष्प— रजनीगन्धा नहि कमल, कुमुद न दिवस विकास
प्रेम-पुष्प रस दिश-विदिश अह-निश भरय सुवास ।६

प्रेमी— प्रेमक परिभाषा कहल पंडित पढ़ि गढ़ि छन्द
प्रेम नाम सुनतहिँ पथिक दृग दह-बह जल-बिन्द ।७

प्रेमी साधु— एकतान भय, ध्यान नित करइत रूप अनूप
जमत भ्रम न मन मोह नहि प्रेमी साधु सरूप ।८

प्रेमी भूप— करक ग्रहन कय प्र-नय रत, पालय प्रकृति अनूप
विग्रह-सन्धिक साधके नर वर प्रेमी भूप ।९

वेदना— हँसी खुशी मधु-माधुरी हाट-बजार बिकैछ
वेदनाक बूटी न पुनि बिनु वन गहन भेटैछ ॥१०

हास नोर— हँसी घोल भेटय कतहु कीनव जें शुचि रंग
नोर अमिय भाग्यें भेटय, बिकय तें विषक प्रसंग ।११

नारी-सौन्दर्य

वाटिका— तन चंपक, मुख कमल, दृग नलिन, अधर मधुरीक
कुंद दंति, जूही हँसी, धनि वाटिका प्रतीक।१

लतिका— अरुन अधर लीची, अलक जामु कपोल रसाल
उर बड़हर श्री फल फड़ल लतिका एके बाल।२

धनि धनिक – अधर अरुन विद्रुम, विशद मुक्ता दन्त प्रमान
शुचि कपोल कंचन रुचिर, छथि धनि धनिक महान।३

धनि ऋतुमयी— पिक वयनी, शिखि केशिनी, उर फलिनी, मुख चंद
कुंद दति, निशि लबिनी धनि ऋतुमयी अमंद।४

नख-शिख

चिकुर— चिकुर - निकर छुटि लटकि लट गोर कपोल छुबैछ
जनु तमाल तरु उतरि हरि राधा - अंग लगैछ।१

सीमन्त— सघन श्याम कच निकर बिच सिन्दूरी सीमन्त
जनु गिरि – घाटी तट निकट वन, वन गैरिक पन्थ।२

मुख छवि – मेघ घटा उमड़ल गगन अर्ध - चंद्र चमकैछ
तनल धनुष तर खंजनो पाँखि पसारि उड़ैछ।३

सिकार— काम खेलाड़ी, अधर सर, नाकेक सुघड़ मोहार
भृकुटिक वंसी तूल अछि लोचन मीन सिकार।४

नेत्र-वर्णन

निशा नीलिमा नयनमे दिवस उज्ज्वले अंश
साँझ - परातक लालिमा दृग - क्षितिजक अवतंस।५

अभियंता— अभियंता कंदर्प ई भृकुटिक बंध बनाय
नयन योजनासँ तरल विद्युत देल जगाय॥६

व्यतिक्रम— दृग - युग कीदृग् मृग युगल चंचल चौंकि चलैछ
रसिक केसरी पर करय उनटे चोट अड़ैत।७

वैचित्र्य — विधिक सृष्टिमे नील नभ तारा उज्ज्वल रूप
रमणि दृष्टिमे नभ विमल तारा असित सरूप !!८

दृग-गयंद— वयस मदें मातल मदिर दृग - युग मत्त गयंद
तोड़ि लाज साँकड़ चलल मदन गहन स्वच्छंद।६

भृकुटि धनु— मृग दृग चचल द्रुत-गतिक दौड़ि रहल श्रुति - कुंज
कुटिल भृकुटि धनु तनल पुनि हनल जाय युव - पुंज।१०

कंठ-हार— रमणि कठ सँ लटकि उर हीरक हार झुलैछ
कंब दुग्ध धारा धवल गज मुख उपर चढ़ैछ।।११

उर-कंचुकी— नील कंचुकी कसि उरस पहिरलि मुक्ता - दाम
मेरु - शिखर पर तारकित उतरलि यामिनि श्याम।१२

उर-नितम्ब— चन्द्रहार उडु मनि खचित उर अंबरे खगोल
ग्लोबे थीक नितम्ब ई पूर्व पश्चिमी गोल।१३

तटस्थ राज्य— उपनिवेश - वादी उभय नृप नितम्ब - वक्षोज
'बफर' राज राजित उदर कटि तटस्थ कृश - ओज।।१४

सीमा रेखा— तनल उरज राजा, बढ़ल रिपु नितम्ब खीमाक
विधि सन्धिक हित देल खिचि कटि रेखा सीमाक।।१५

कटि— कटि तट शोभा कूट छल काटि काटि निधि चारु
उर नितम्ब परिपुष्टि - हित सठा देल विधि कारु।१६

जघन— स्फटिक स्वच्छ मृदु मसृणतम कदली गर्भ प्रमान
करि कर अनुलंबित जघन एकत सभ उपमान।१७

त्रिवली— तीनि चरण चलि त्रिविक्रम जीतल वलि छलि लेख
त्रिवलि जीति त्रिवली बलित एक एक बलि - रेख।१८

श्रोणीरथ— सघन जघन मनहुक अगम मदन - सदन अति दूर
रति पथ अतिवाहित करिअ श्रोणी रथ समतूल।१६

पद— कनक वेलि धनि, पल्लवे पद, सभ सहज प्रसंग
उपर भ्रमर नख समुचिते अनुचित उज्ज्वल रंग।२०

वयःसन्धि

गति - विनिमय पद दृग कयल उर कटि बढ़ि - घटि रूप
शैशव यौवन सन्धिनी धनि रस वयस अनूप ।१

शिशुता शशि, रवि यौवनो बिंबित दुहु दिग छोर
उज्जल, तरुनि राका क्षितिज वयस - सन्धिहिक भोर ।२

तृप्ति बाधा— उषा किशोरी सखि सलजि अन्हरोषहिँ उठि गेल
अरुण तरुण तवितहिँ रहल छवि, ता रवि उगि गेल ।३

अङ्ग-भङ्गी— लावण्यक किछु आन छवि माधुर्यक किछु आन
दृग - भंगीमे वंकिमा अधर सरल मुसुकान ।४

उपसर्ग— बुझिअ न प्रिय रति अमृत की वा बिषहिक थिक अंग
जौँबि उठी रस सुरति वश विरति विवस चित भंग ।५

उक्ति-वैचित्र्य— स्नेह - लेश नहि, कोना निशि लेसब दीप निवास
सुमुखि ! नेह सँ हँसि कने भरवे मधुर प्रकाश ।६

धनि-धन— सुबरनि, मन मनि, गृह रतनि, कचन तन मन भावि
यदपि अकिंचन धरनि बिच धनि-धनि धनि धन पाबि ।७

पथ्य— दाख अधर, अंगूर अंग, नारंगी उर तथ्य
दाडिम - दशना अंगना मदन - दाह हित पथ्य ।८

प्रथम दर्शन

सात्त्विक-भाव— कनडेरियहिँ ताकल कने दृग - विष श्याम भुजंग
कंप स्वेद जड श्यामता विष ज्वर व्यापल अंग ।१

गणित-वैचित्र्य— दुइ - दुइ चारि प्रसिद्ध अछि गणित शास्त्र सिद्धान्त
युगल नयन युग योगसँ एकी भाव नितान्त ।२

वैषम्य— नलिन भ्रमहि हेरल नयन चुभ चुभ उर गड़ि गेल !
जलद जाल बुझि कच विकच लखितहिँ मन तपि गेल !!३

साज-सज्जा

सहज-सौन्दर्य— लट छिटकल दु - चारि, सिंदूरी बिंदी भने
हँसि जगबय नव नारि, मनक भूख बिनु भूषने ।४

भूषण— पर शोभा उपकारसँ जे अरजल तप योग
भूषित भूषन तकर फल तरुनी तन संयोग ।५

अंगुठी-नग— गोर-गोर आङुर उपर नग नीलम चमकैछ
अद्भुत ! चंपा कली पर भ्रमर श्याम मड़रैछ !!६

स्नान-वर्णन

धार— मुख सरोज, आवर्त पुनि नाभी केस सेमार
पुलिन नितम्बवती सजल स्वय नहाइछ धार ।१

स्नानछवि— अधर रंगिमा, मुख तिलक, दृग अंजन नहि रंच
अलक बंध खुजले तदपि नहेनिहारि छवि-मंच ।२

जड़ता— जल ! तोँ जड़ साँचे थिकह, पबितहुँ युवतिक संग
अंग-अंग रति रंग पुनि नहि उष्णता प्रसंग !!३

समस्या— सरिता छथि वनिता स्वय सिन्धु मिलन हित व्यग्र
जलो जड़ पुनि ककर सङ सलिल विहार समग्र ४।।

नल नहान— नल जलधार नहाय शुचि रुचि धनि तन झलकैछ
मदन पटाओल जनु कनक—लता ललित बिकसैछ ।।५

वस्त्र-परिवर्तन— सटल वसन हठि हटय नहि फेरनिहारिक संग
अंग-अंग रति रंग पुनि नहि उष्णता प्रसंग ।।६

पुनरुक्ति— कनक-कलशिनी कलश लय जल हित नल दिस जाय
पुनरुक्तिहु नव उक्ति वश अलंकार बनि जाय ।।७

शृंगार-उद्दीपन

कुंज-कुंज कलरव पिकक पुंज पुंज अलि गुंज
मंजु मंजरित माधवी मधु मधुऋतुक निकुंज ।।१

उद्दीपन— लता कृशोदरि पहिरि उर कुसुम हार अविलम्ब
झुकल झपटि झट लपकि तन तरुन तरुक अवलम्ब ।।२

संयोग— गर्मायल गर्मी घमथु, वर्षथु वर्षा वारि
जाड़ गड़थु परवाहि नहि संग रंगिनी नारि ।।१

अधर - अधर मधु, नासिका श्वास - श्वास मधु गन्धि
अंग - अंग संगत सरुचि दंपति विग्रह - सन्धि ॥२
जते अवधि यौवनक जल रूप कूप भरि पूर
तरुण पथिक प्यासल अधिक पिबथि तते उर झूर ॥३
कुसुम चषक भाजन भरित सुरभित मधु रस पान
रस - लंपट झुमि अलिनि सङ रमइछ मधुप जवान ॥४

विरह — गाम गाम अलका बसल विरहिनि गृहिनी कक्ष
वृत्ति हेतु अभिशाप वश वस विदेश युवयक्ष ॥१
अहिँक छविक छाया सुमुखि, चान कमल नित भावि
कने सुखी मन, पुनि सेहो छीनल पावस आबि ॥२
घन घमंड नभ घोर गर्जन तर्जन सब सहब
बिजुली जलदक जोड़ मिलन निरखि नहि रहि सकब ॥३
घन घनसार निहार मनि—हार चंदनो चंद
जत शीतल रसमय विदित तनि विनु तपत अमंद ॥४
चंदन जल घसि - घसि अली तपित अंग लगवैछ
ससना शुष्क मलयजक रज अश्रु पंक बनबैछ ॥५
चातक पिउ - पिउ रटय कत मिटय न कंठ पिआस
हमहु रटिय पिय नाम नित पुरय न कंतक आस ॥६

विरह-उद्दीपन — पथिक व्यथित पथ लखि सघन मजरल आम ललाम
दृग मौड़ल, पुट नासिका मूनल बुझि परिनाम ॥१
सजि कानन नव मंजरी रंजित रक्ताशोक
विरहवंत जनके कयल हंत! वसंत सशोक ॥२
कुल - ललना मधु मास गुनि, मुनि घर, बैसल थीर
मजर सुरभि सुँघि, धुनि पिकक सुनि, भय उठलि अधीर ॥३
कोकिल कलरव, मधुप धुनि, मजरल आम सुरम्य
सुरभि कुसुम शर कर मदन करथि न ककरा नम्य ॥४

पवनक प्रेरित नव जलद तानि इन्द्र - धनु हंत
आबि तुलायल कुलिश - उर करइत विरहिनि अंत ॥५

स्फुट प्रसंग

प्रवासोन्मुख नायक— मीन युगल पुनि कलश दुइ भरल पुरल अवलोकि
शुभ शकुनहु देलक तदपि पथिक क जतरा रोकि ।१

शब्दचित्र— पान अधर नहि, स्याह पड़ बिरहिनि मन बदरंग
चोखुट चहकय चड़इ, मधु पत्ती - पत्ती रंग ।२

दूती— विरहक अगम प्रवाह अछि, प्रिया बसय ओहि पार
दूती तरणी बल तरुण चाहय उतरय पार ।३

नायिका-भेद

वासकसज्जा— जहिना लेसल दीप ई क्रमहि स्नेहसँ हीन
मिझा रहल, तहिना प्रियक प्रेम शेष रसहीन ।१

खंडिता— क्षितिज अरुन, नयनो अरुन तिमिर विरह हटि गेल
निशि बिताय दिन पति हमर उदित प्रभातहि भेल ।२

प्रोषितपतिका— कहुँ बिलमय पहु दिवस, घन छितरायल नभ देश
बिनु सनेस कहु बन्हाबय कोना सुकेशी केश ।३

प्रवत्स्यत्पतिका— गमकत सरस वसंत वन, चमकत शरदक चान
झमकत पावस सघन घन हम पिय रहब मलान ।४

आगतपतिका— प्रेमक पतरामे विरह हरि - वासर व्रत योग
पारन आगमन क खबरि पुनि दरसन रस भोग ।५

अभिसारिका— अछि अभिसार सोनार ई प्रेम हेम रुचिमान
जाँचत कसि रजनी सघन तिमिर निकष पाषान ।६
नीरव निशि अभिसर यदपि नहि नूपुर कटि - बंध
किन्तु भृंग गुंजन विकल पदुमिनि गति प्रतिबंध ।७
पावस घन अति सघन वन, निशि निशीथ पथ कुंज
तन उजोर धनि पद धरय रूप जोतिहि क पुंज ।८

शुक्लाभिसारिका— नखत हार हीरक विशद दप - दप अंबर धारि
मुख शशि हँसि राका रजनि अभिसर बुझय न पारि ।९

दिवाभिसारिका— पहिरि पीत पट गोर तन कुंकुम राग अगोरि
दिव आतप मिलि आतपित अभिसर कामिनि गोरि।१०

पुरुषवेशाभिसारिका—मृगमद रंजित तन सुमुखि पीताम्बर परिधान
कर वंसी, सिर पख, तदपि कंपित उर व्यवधान।११

नायिका—वर्णन

स्वकीया— युव तप योगहिँ अंगनहि मंगल जंगल पाल
चामर, मृग, शुक, पिक, करी, केहरि, शिखी, मराल।१

नवोढा— सुमुखि विमुखि, नत नयन, तन झाँपि, काँपि नहि भाखि
विरत रतहु कत देथि सुख नबल वधू मधु माखि।२

प्रौढ़ा(प्रेमगर्विता)—उत्कट मधुरो माहुरे सखि ? कहबी से साँच
प्रिय क प्रेम तत गाढ़ जे सहि न सकी हम आँच।३

सौन्दर्यगर्विता— मुहेँ निहारथि, विधु न पुनि, कुहू न सूनथि बोल
हमर प्रेयसी श्रेयसी प्रिय घुमि – घुमि कर घोल।४

पदुमिनी आदि— ने वन, ने मलय क पवन, ने मधु माधव मास
बुझल कोनहु नव पदुमिनिक अंगक सुरभि सुवास।५
मन्द – मन्द गति हस्तिनी, चित्रिणि पहिरि पटोर
कंबुकंठि, सुरभित वयस पदुमिनि रूप सङोर।६

परकीया— राधा कृष्णक कथा कहि वाचक भेला विभोर
एम्हर श्राविका हृदयमे प्रयणक उठल हिलोर।७

वचनविदग्धा— दूर गाम जंगल सघन पथ निर्जन घन घोर
एकसरि छी, दोसर अहीँ पहुँचायब वर जोर।८

सामान्या— पुर जनपद सरिता बहय, सुरभित लता दिगंत
गण – वनिता जन – गणक मन भरइछ रूप अनंत।९
वार वधू कल नादिनी उच्छल वयस तरंग
सजल कुटिल गति कल–मुखर करय कूल तरु भंग।१०

प्रकीर्ण

पडुआक वधू— ओढ़ि आवरन आभरन सुवरन कति छवि मंति
हरलि हमर रसिक क हृदय रंगिनि के रसवंति ?१
कर बसि, भुज धरि, संग बसि, गुप चुप नित बतियाथि
केहन रंगिनी संग लय प्रिय न समक्ष लजाथि।२

मुक्तावली

तन्तु

करुना कन रस घन बरसि स्वाती संत प्रमान
उक्ति शुक्ति मुक्ताक कन करथु सदा अनुदान।
निरस विसद गुन संत मुख वचन अतूलहु तूल
कलपित अलपित तंतु मत गाँथल रुचि अनुकूल।
परा प्रेम मीराक लय याज्ञबल्क्य केर बोध
कर्म विवेकानन्द गत त्रिगुन तत्त्व मत सोध।

... ...

घर अनन्त वसुधा जनिक प्राणि मात्र परिवार
हरिक चाकरी करथि जे, से स्वतंत्र संसार

मुक्तावली

प्रकृति-विकृति गुन-अगुन जड़-चेतन, रूप - अरूप
आदि - अन्त सित - असित जय रंग - विरंग - अनूप।

मानस हंस— द्विज वंसक अवतंस ई मानस - वासी हंस
तेजि नीर निर्गुन पिबओ सगुन छीरहिक अंश।१

आस्वादन— रस अरूप आस्वाद्य द्रव द्रव्य रूपहिक सत्त्व
रूप अरूप अभेद थिक आस्वादनक महत्त्व।२

भाव— रूप पुजब की भाव बिनु भाब न होय अभाव
बिनु संकल्प विकल्प की निर्विकल्प धरि धाव।३

मन सदन— विषय शुल्क दय मदन! तों कयलह कत दिन बास
रिक्त करह मन सदन कें किनल मदनरिपु खास।४

पतंग—	अंग अंग केर रंग रुचि कयल जगत बदरंग आइ त्रिशूलिक शूल पर जरओ अनग पतंग।५
श्याम रंग —	कनक कामिनी चित पट ताबहिँ चमकय जोर जा धरि घ्यानक कुची लय श्याम रंग नहि बोर।६
चन्द्रचकोर —	उदित नखत कत गगनमे रुचय न चित्त चकोर नित सतृष्ण दृग पुट पिवय कृष्णचन्द्र चितचोर।७
वृज रज —	कालिन्दी रविनन्दिनी, वन्द्या वृन्दा – धाम राधा माधव प्रीति रुचि, वृज – रज कोटि प्रमान।८
मुरलिका —	सद् वंशा वृजवासिनी कलभाषिनि श्रुति - जन्य हरि – अधरामृत स्वादिनी धनि धनि मुरलि अनन्य।६
वृज–वन —	जय करीर ! जनि काँट पर कल्पवल्लि वलि जाथि जय वृज वन ! पशु वन'क हित जत सुरमुनि ललचाथि।१०
भक्तिचन्द्रिका—	ध्यान भक्त उर मे बसय श्याम रूप छवि - मूल भक्ति - चन्द्रिका दिवस - भव उमस हरय प्रतिकूल।११
माधुरी —	मानस सर सरसिज सरस भक्तिभाव रुचिमंत हरिक रूप मधु माधुरी सुरभि मुगुध अलि संत।१२
छवि—	ध्यान धारणा यम नियम आसन प्राणायाम सकल विधल बिंबित न यदि चित पट छवि घनश्याम।१३
रूप-छवि —	पलहुँ पलक भरि रूप घन छवि जँ देथि देखाय रवि शशि नखत समेत जग जाइत छनहिँ बिलाय।१४
चित्र-लोप —	श्याम श्यामहिक छवि छटा छनहु छलक दृग कोर चित पट चित्रित जगत जत मेटत पलटि विभोर।१५
अमर—	श्रुति पुट गीता गान सुनि तुलसी दल मुख आनि भागवतक रस पान कय मरितहु अमरक मानि।१६
भक्ति—	ज्ञान तत्त्व श्रुति स्मृति विदित कर्म मर्म जत तत्त्व किन्तु भागवत भक्ति सँ तुलित न रहय महत्त्व।१७

भागवत— व्यास रसालक डारि फल भागवते रस मूल
शुक मुख आस्वादित बुझल परिछित मधुर अतूल ।१८

भाग्य-तरु — कर्मं बीज सँ भाग्य तरु फूलय फड़य अवश्य
यदि च हरिक करुणा सलिल पटबय भक्तिक वश्य ।१९

विषय नियोग— श्याम रूप शुचि, नाम यश, श्वास, सुरभि, पद धूल
दृग, रसना, श्रुति, नासिका, परस अंग रुचि मूल ।२०

क्रिया-प्रेरणा— यदि न अहाँ छी पंगु पुनि मूक बधिर ओ अंध
धाम नाम यश रूप हित चलु रटु सुनु लखु बंध ।२१

रसायन — काम लोभ ओ क्रोध, वात पित्त कफ दोष त्रय
करय स्वस्थता रोध भक्ति रसायन बल छुटय ।२२

शुचि-रुचि— पद पंकज जल बिंदु रुचि अक्षत रुचिर प्रसाद
मन्दिर देहरि शयन शुचि श्रवन नाम धुनि नाद ।२३

रवि-रश्मि— पंकज पंकक नहि असरि, जलजहु नहि जल योग
कमल न जल शैबाल मल, जे रवि - रश्मि नियोग।२४

ज्योति संचार— केन्द्रित शक्तिक योग लहि सुघटित अंतर तार
तड़ित तुरित जीवन सदन करत ज्योति संचार।२५

परम भाव— जानि लेब भव भाव ई थिक अभावहिक नाम
पुनि अभाव जनितहि स्फुरित परम भाव अभिराम ।२६

वैचित्र्य— पद रति अविरत विरति हित, नति उन्नति पद मूल
निगमागम दुर्गहु सुगम शूलिहु हरइछ शूल ।२७

पहु मिलन— पहिरि मलिन परिधान नहि पहु सँ मिलन प्रसंग
अंग अंग निर्मल करह, जगबह प्रेम उमंग ।।२८

प्रेम-मिलन— नहि घंटा नहि शंख धुनि, ने तुरही धुधुआय
प्रेम मिलन हित चलय कहु प्रेमिक भीड़ जुटाय ।२९

प्रेम दृष्टि— गहने वा पट पहिरने ने पुनि लय मधु मीठ
प्रेमी चित कर्षित करय प्रिया प्रेमहिक दीठ ।३०

प्रेम— चाही नहि मधु माधुरी, अथवा कुसुम सुवास
मधुप न ई पहु हृदय पुनि किनिअ प्रेम विश्वास।३१

रिझान— धनसँ मिलितथि मिलहि मे, रूपहु रूपसि - टोल
हृदय - देव स्वर रीझितथि तँ कुंजहि पिक बोल।३२

चिन्तन— कनक रजत जड धातु ई रक्त मांस निस्तत्त्व
चित चिन्तन कयं चेतबे चित् जीवनक परत्व।३३

क्रंदन— बिनु कनने नहि माय धरि पिअबय शिशुकें दुग्ध
माँ श्यामा क्रंदन करह पिबह अमृत चित मुग्ध।३४

नाम— कतहु रहय संतान यदि सुनय 'मा ओ' स्वर छीन
दौड़ि बिलाड़ि पिआब पय, नाम रटह तहुँ दीन।३५

सात्विक— तपह ज्वरें, चुअबह श्रमें घाम, कँपह पड़ि जाड़
नाम ध्यान धय सात्त्विकक भाव, तरह संसार।३६

मुमुक्षु— बद्ध न रह मोक्षार्थि भय, बनह मुक्त तों नित्य
एतबे जीवन चातुरी एतबे मनुजतु कृत्य।३७

भक्ति सन्ध्या— कर्म ज्ञाननिश दिवस थिक सन्ध्या भक्ति प्रमान
भेद अभेदक असित सित मिलित हरित परिमान।३८

तार— त्रयी ऋचा सन्ध्या मिलित, सन्ध्या त्रिपदालीन
त्रिपदा व्याहृति गत नियत व्याहृति प्रणव विलीन।३९
प्रणव त्रिमात्रिक त्रिगुणमय एकाक्षर विनियुक्त
अक्षर मात्रा अर्थगत से पुनि बिन्दु प्रयुक्त।४०

अनेर— मन उपवन बेढ़िय लगा, यम नियमक दृढ़ बेढ़
नहि जहि सँ चरि सकय बढ़ि इन्द्रिय अजा अनेर।४१

मरुथल सिंचन— कंचन धन, धनि कांचनी, कांछित यदि मन बीच
मुक्ति युक्ति नहि पल्लवित व्यर्थ मरुक थल सीच।४२

विलीनी भाव— लक्ष्य वेध करइत न पुनि शर धनु दिस अभराय
ब्रह्म रूप के कहि सकत जनितहि गेल समाय।४३

परमहंस--	परम हंस अनुभूति वश जीव ब्रह्म दुइ अंश जड तजि पय रस एकचित गह मानस अवतंस ।।४४
सत इजोत--	अलस तमस गृह आवरण तजि राजस पद रूढ़ सत इजोत लय मगन-मन चलह पहुक घर गूढ़ ।४५
जीवन--	जीवन-घन सुख-दुख तडित तुरित चमकि छपि जाय आयु वायु बहि कहि उठल कत छल घन समुदाय ?४६
आयु बिन्दु--	काल सिन्धु मे आयु ई बुदबुद बिन्दु नवीन उठत खसत छन मे बनत पुनि अस्तित्व - विहीन ।४७
कुम्भकार--	नियति चाक पर तन क ई माटि पानि मन सानि कुम्भकार के रचि रहल घट शत भेद प्रमानि ।४८
गुरु-करुणा--	तन पट ई अघ मल मलिन बोड़ल नेहक लेश विनु गुरु - करुणा क्षार नहि क्षालित होय अशेष ।४९
पंचत्व--	गर्भ गुफा शैशव कुटी, यौवन वन तपि हंत जरा जीर्ण घर बसि गहल पंचत्वे पुनि अन्त ।५०
अहंकार--	तन विपिनक मन कुन्ज मे भरि हुंकारी घाघ दैवी गुण भक्षण करय अहंकार पशु बाघ ।५१
रोग--	काय कुलाय बसैछ कत रोग बिहंगम पाति कतरि कुतरि धृति मति सकल फल दल दैछ निपाति ।५२
अविवेक--	अविवेकक पाषाण लिपि जोवन पत्र परेख चित जलपर नहि थिर रहय लिखित छनहु किछु रेख ।५३
भेदाभेद--	धातु सुवर्णक एक पुनि भूषन कत शत वर्ण कर्म एक ध्वनि–अधिकरण श्रवन अमित पद वर्ण ।५४ वर्ण पचीस पचास वा वाक्य अनन्त प्रमान विषय वस्तु एकहि विविध भाषा भेद विधान ।५५
एकत्व--	सहस नाम भानुक यदपि, शत विध माटिक रूप कनक क गुन उपयोग कत तत्त्वक एक स्वरूप ।५६

योगी ओ मूढ़—–	जिवितहु जडवत् जनिक थिति, जगितहुँ रहथि शयान दुखहु सुखक मति, गति अघट योगी मूढ़ समान ।५७
साधु—	पुत्र जखन नहि पौत्र कत ? बाबा भरि संसार अपना के चीन्हथि तदपि साधु न ककर चिन्हार ।५८
साधक—-	पूर्णकाम निष्काम पुनि कर्त्ता नित निष्कर्म सत कहि असतक सत्यके प्रगटथि साधक मर्म ।५९
बोध—	देखथि प्रकृतिक गुन क्रिया निज कर्तृत्व अबोध बुझथि बुद्धि सँ जे परे तनिकहि वास्तव बोध ।६०
मुक्त—	चित रहितहुँ जे शून्य चित, करितहु जँ न करैछ मद नहि मस्ती सतत से जिवितहु मुक्त रहैछ ६१
परत्व—	दृश्य न यदि दर्शक कतय, कर्त्ता की बिनु कर्म सत्ता मात्र प्रतीति रस प्रीति परत्वक मर्म ।६२
कार्य-कारण—	हिम शीतलता नहि पृथक तपन ताप नहि आन जगत कार्य कारण परम ब्रह्म न भेद प्रमान ।६३
शक्ति—	मांस पिंड ई स्थूलवपु मन अणुनय तनु अन्त टुटइछ कन परमाणु घन अन्तर शक्ति अनन्त ।६४
नाम रूप—	गगन शून्य नहि रूप गुन तदपि श्याम रुचि रंग शब्द गुणक, तहिना जगत नाम रूप दुइ अंग ।६५
मुक्त विहंग—	निशि बसि नीड शरीर मे तम गमाय घन निन्न उड़ल प्रभातहि मुक्त पुनि प्रान बिहंग अखिन्न ।६६
स्मृति—	देश कोश निज तजि पथिक थकित भ्रमित पथ फीर तृषित प्रिया स्मृति ज्वलित उर पुनि फिरि चलल अधीर ।६७
जीवन-खेत—	ज्ञानक हल, यम नियम जल, भक्ति भाव रस खाद उपजय जीवन खेत ई सुकृत बीज निर्बाध ।६८
मन हरिन—	बुझय न चरइत उछिन मन हरिन विषय वन भूमि रोग जाल लय वृद्धता व्याध चुपहि गेल जूमि ।६९

वंदी— पद चन्दन अभिनन्दनक बंदनवार सजैत
वंदी भववंदी बनल कत दिन रहब झखैत ।७०

ज्योति— कच कचकच, कुच-कुच कुचो, मुख रुख, जघन जघन्य
नर - अरि नारी सुझल ई उगितहिँ ज्योति अनन्य ।७१

कनक - कामिनि थिर आसन, कर सुमरनी, दृग युग मुनि बनि संत
तदपि झलक चित - पट खचित कनक कामिनी हंत ।७२

अवसाद— मुख आखर, कर अर्घ्य जल, ढारल शिला पवित्र
रस लंपट मन लबन केँ गला न सकलहुँ मित्र ।७३

मन बिहंग— आँखि पाँखि लय विहग मन रूप क विपिन उड़ैछ
विषय विषम शर बेधि बधि मदन व्याध खसबैछ ।७४

जीव पुरुष— सगुन प्रकृति जड जग, अगुन पुरुष परम चैतन्य
सगुन अगुन जड चित मिलित जीव पुरुष नहि अन्य ।७५

अद्वैत— सत्ता सत आकार चित निराकार चैतन्य
आनन्दक अनुभूति रस नित अद्वैत अनन्य ।७६

कृपा— माया रजनी, भ्रम तिमिर, पथ अगम दृग बन्द
पथिक न उबरय बिनु कृपा रजनीपतिक अमंद ।७७

कवच— समर भूमि भव केँ न जन राग द्वेष शर बिद्ध
शमक अमंद कवच पहिरि बाँचथि केवल सिद्ध ।७८

मरीचिका— भय आतप व्याकुल कतहु नहि छाया तरु तीर
मरु मरीचका मृग मनुज मरि पचि लहय न नीर ।७९

समतल— ने हर्षक गिरि शिखर ने शोक सिन्धु भसिआय
समता समतल बसि शमी सुख भूमिका समाय ।८०

रमता योगी— ने उल्लास तरंग मे ने हताश मरुभूमि
रमता योगी पवन बनि रहइछ सब तरि घूमि ।८१

भोग वा योग— युवति रूपसी रंग, भोग वासना भवनमे
दंड कमंडलु अंग, योग साधना विपिन मे ।८२

ग्रहमुक्ति— गृह ग्रह कूर महान, जीवन टीपनि मे जडित
त्याग याग जप दान करिअ, तखन छूटत तुरित ।८३

निदर्शन — दीप रूप ज्वाला ज्वलित भस्मीभूत पतंग
चेतबय सभकें विषम विष विषयक तजिअ प्रसंग ।८४

कवि काम — कच कुच अधर कपोल, बोल हँसी बिछुरन मिलन
बसि भूगोल खगोल कवि कामिक जीवन भ्रमन ।८५

संतोष— भवन गगन चूमओ, छूबओ क्षितिज छोर पुनि चास
कंचन धन गिरि गुरु तुलओ, विनु संतोष उदास ।८६

संत चरित— कमलक दल पर जल जेना सरिसव आरा धार
चढ़य न कखनहु काम चित संत चरित अविकार ।८७

पङ्कज — पंकिल जग जलमे जनमि जन पंकज समतूल
अम्बर अपंक अलिप्त रहि सुरभि भरथि अनुकूल ।८८

विधि - रेखा — बौक बहिर आन्हर जनम बरु विधि लीखथु रेख
फूसि वचन निन्दा श्रवन, पर तिय छवि न परेख ।८९

काल-सूची— घड़ी घड़ी देखी घड़ी सूची गतिक न अंत
काल सर्प ई ससरि सिर कखनहु धरत दुरत ।९०

समाधि — दृष्टि दृश्य दर्शक, श्रवण श्रोता श्रुतिक उपाधि
भक्ति भक्त भगवंत पुनि एकाकार समाधि ।९१

पहु मिलन — पट धूसर, तन मन मलिन विकल न अनुखन प्रान
नयन न छवि रस करुन घन, कहु कहु कोना मिलान ।९२

तन ओ मन— तन टुटितहुँ नहि टुटय मन, छुटितहिँ मन तन-बंध
छुटय, शून्य चित परम चित जुटय सहज अनुबंध ।९३
मान - विहग तन - नीड सँ उड़ि नभ शून्य विलीन
अंतरिक्ष प्रत्यक्ष पुनि ज्योति स्वमेव नवीन ।९४

ज्योति — चमकत उर नभ रवि उदित, पसरत ज्योति अनन्त
विषय नखत हत, जागरित मन तम हटत दुरंत ।९५

नाद— प्रणव वीण मे व्याहृतिक सप्तक स्वर ध्वनिवंत
त्रिपदा गायन श्रुति नियत अनहद नाद अनन्त।९६

प्रवाह-निर्वाह— वपु धरनी - धर प्राण गिरि, निर्झर मनक प्रवाह
सरल वक्र पथ घूरि - फिरि अंत सिंधु निर्वाह ९७

रवि रथ— इन्दु बिन्दु गत अमावस पाँतर तमस बितैछ
अथ नवतिथि-पथ रथ रविक क्रमिक पथिक दृग ह्वैछ।९८

स्वतन्त्र – घर अनन्त वसुधा जनिक प्राणि मात्र परिवार
हरिक चाकरी करथि जे से स्वतंत्र संसार।९९

शतदल— शतदल मुकुलित मानसक निशि तम अलिक निरोध
प्रिय प्रभात रविकर परसि मुकुत युकुत मधु बोध।१००



कृष्णावतरण

प्रबंधकाव्य

(१—अवतरण)

स्थान : कारागार (मथुरा) : समय : निशीथ (भाद्रकृ०८)

विषय : प्रकृति ओ कथावस्तु युग्म वर्णन

पावस ऋतु छल जमल, जलद – दल उमड़ल ओहिना
कंस क शासन पाबि असुर – गण धमकल जहिना
कादवमय छल मास भादव क कलुषित सब थल
जन-जीवन मथुरा क बीच छल जहिना दल – मल
कालिन्दी धारा उपटि व्रज मंडल पर व्याप्त छल
शूरसेन जनपद उपर असुर दबादबा व्याप्त छल
दुर्दिन सहजहिँ ताहू पर ई पक्ष अन्हरिया
प्रकृति उत्कटे कंस, दोसर वयसहुँ नवतुरिया
बाट – घाट नहि बूझि पथिक जक – थक छथि ठाढ़े
कंस – राज्य मे अन्धकार उचितें अछि गाढ़े

दृष्टि निरर्थक भेल अछि, ज्योति क दर्शन नहि कतहु
दुष्ट शासन क कारणेँ रहय न लोक - मत क पतहु
मथुरा नगरी नाम किन्तु नहि मधु रस बाँचल
शङ्कर नामहु की न रुद्र प्रलयङ्कर नाचल ?
रहितहुँ कंस नृपाल ध्वंस नृ - कपालक करइछ
नीर न यमुना - तीर नोर टा जोरेँ बहइछ
वन्दी विरुद क गान की करत ? बनल सभ वन्दिए
कारा के कर पहिरते सभ कारा - गृह अन्धिए

क्षितिज गर्भ - गृह मे छथि वन्दे चन्द्र - चन्द्रिका
घर अभ्यन्तर वन्दी जनि बसुदेव - देविका
अछि बहैत सन - सन कय पुरिबा हवा झोंक सँ
असुर क प्रहरी ठहकि रहलि जनि जरठ ठेंठ सँ
घर - घर दबकल दबदबे सूतल नगर क लोक अछि
अन्यायि क आतंक सँ भूतल व्यापल शोक अछि

टिम - टिम करइछ मेघ - फाँक दय तारा कखनहुँ
भीत - चित्त दम्पती क उर मे आशा एखनहु
मेघ - पटल उमड़ल छल, नहु - नहु उखड़ल जाइछ
कंस क अत्याचार क घट भरि उछलल जाइछ
मध्य निशीथक सूचना दैत पड़ल - डंका मने
कंस विनाशक संघटन होइछ 'ध्वनि शंका' कने

महल - कुटी पथ - गली सबहु थल सुन्नसान अछि
जेना नगरवासिक चित नहि हर्ष क निसान अछि
सज्जन जत गिरि गुफा बन्द, खाली मकान अछि
मुह अछि बन्द प्रजा क, रजायसु मात्र कान अछि
गान न ककरहु कण्ठ बम, कानब केवल कान पड़
झन - झन मात्रे शब्द खर टुटल तार नहि तान भर

क्षितिज मूल दिस सहसा आभा नूतन झलकल
दिव्य गर्भ केर ज्योति देवकी मुख पर पसरल
अंधकार हटइछ नहु - नहु किछु सुझा' पड़ै अछि
वसुदेव क उर मे उछाह किछु बुझा' पड़ै अछि
कृष्ण अष्टमी चन्द्र केर उदय पूब सम्भाविते
अष्टम सुत देवकि - उदर कृष्ण चन्द्र छथि आगते
गगन मध्य रोहिणी - अंक समुदित शशांक छथि
देवकी क कोरहि उपगत हरि व्रज - मृगांक छथि

नखत राशि सँ जेना गगन आरती उतारथि
स्तुति क ज्योति सँ वसुदेवो भावना सजाबथि
करे चतुर्दिश विमल कय शशि कयलनि जग केँ सुखी
कयल चतुर्भुज मुदित अति जनक - जननि केँ, जे दुखी
तिमिर निकर बिच जेना सुधाकर शुचि - रुचि उगइछ
कोमल रश्मि - राशि सँ कैरव विकसित करइछ
असुर क उत्पात क मध्यहि श्रीहरि अवतरइछ
विमल चरित सँ साधु - संत केँ प्रमुदित करइछ
गगन चान सकलंक छथि, रजनी मात्र क गात्र सजि
व्रज क चान अकलंक छथि,निश - दिन अग जग रुचि अरजि
नभ - गवाक्ष सँ हुलकी दै' अछि तारा जखनहिँ
चौंकि चमकि चकमक चान क किरनेँ छकि तखनहिँ
छपि जाइछ नभ नीलिमा क आवरण मोहमय
तहिना वन्दी - गृह प्रकाश सँ पहरु क विस्मय
थाह न पाबय की एतय ककर ज्योति वलयित बलित
मूढ निगूढ न बुझि सकय व्यामोहेँ व्यापित जडित
अन्तर जत जागरण, बाह्य तत निद्रा मुद्रण
वन्दी - गृह हलचल, पुनि कलबल सुप्त नगर जन
हलुकायल वेदना बाढ़ि दम्पति उर तीरे
निशा गभीरे, कालिन्दी क नीर गम्भीरे
जननि - जनक उर पट खुजल नूतन मूर्ति क कल्पना
कंस क दृग - पुट मुनल जत सपन भयानक जल्पना

(२--रक्षण-चिन्तन)

स्थान : कारा - गृह : समय : अपर रात्रि

विषय : दम्पती क चिन्तन : रसानुकूल प्रकृति—वर्णन

हास्य — अति अन्धकार घनघोर घटा
कखनहु छिटकय बिजुरी क छटा

गम्भीर अभिनय क दृश्य हटा
हँसबैछ हँसैछ जेना विपटा

करुण — मेघ क भरि आयल नयन - कोर
टप - टप अकास सँ खसय नोर
ठनका क ठनक हिचकी अथोर
कनबैछ कनैछ निशीथ घोर

रौद्र— सन - सन पुरिबा बहि रहल जोर
झाँट क डाँटब अछि विषम घोर
अपराध ककर ! कत दण्ड घोर
तमसायब तम - तम तम क जोर

भयानक— वन - वन तरु - तरु कम्पित अधीर
थर - थर काँपय यमुना क नीर
बेहोस खसय तट माटि भीड़
डेरबैछ प्रकृति डेरबुक अधीर

वीभत्स— पिच -पिच सब थल मन भिनकि रहल
चाली सह-सह पद पिचकि रहल
गलि पचि खढ़ - पातो गन्हा रहल
बरिसात राति - दिन घिना रहल

वीर— रन थल निशीथ, तम दल विपक्ष
तडित क इजोर लड़इछ समक्ष
खन तिमिर जोर, छन बढ़ इजोर
जय - पराजय क नहि ओर - छोर

अद्भुत— छल बन्दी खाना बन्द द्वार
फट — फट खूजल फाटक - केवाड़
तड़ - तड़ कैदी क निगड़ टुटल
घटना अजगुत ई झटिति घटल

पहरा जे दै' छल ठहकि - ठहकि
से ठरर पारि सूतल चितंग
जे ठाढ़ फटकिया फाटक पर
निन्ने मातल ओङठल उलंग

श्रृंगार — घन - गृह मे बसि की रति - रहस्य
चन्द्रिका चन्द्र सङ सोझरबैछ
प्रेम क पवन क झोकें नभ वन–
खिड़की खुजि झाँकी झलकबैछ

वात्सल्य — देवकी देखि शिशु मृदुल चटुल
बिसरल जत दुख, सुख भेटल अतुल
वसुदेव क विकसित मोद - मुकुल
जे छल मुरुझायल चिन्ताकुल

शान्त — विकसित होयत जखनहि प्रभात
सिहकय लागत मलय क वसात
तिमिर क परदा कें चीरि उगत
दिनकर किरणें अगजग चमकत

... ...

होयत परन्तु हमरा हेतु क
राहु क ग्रह, उत्पातो केतुक
जीवन मे सन्ध्या श्यामलिमा
विपति क रजनी पुनि मलिन अमा

... ...

छन भरि मे बदलल भाव हन्त !
पूर्णिमा अमा परिणत तुरन्त
जत छल विकसित सुषमा वसंत
तत दीरघ दाघ निदाघ अन्त
हा ! कंस सकल बिध्वंस करत
जे रतन जतन सँ अछि संचित
शिशु - घातक पातक मे न चुकत

यौतुक कत कौतुकसँ अर्पल हाय !
रथ - सारथि बनि स्वयं करैत बिदाय
किन्तु हन्त ! दिनमान साँझ पड़ि गेल
आशा - दीपक विनु पवनहि मिझि गेल
नभ-वाणी नहि सहजहिँ वज्राघात
आठम देवकि - गर्भज हाथेँ घात
सुनितहिँ तखनहि चित उद्दीपित भेल
जड़िअहिँ काटि करी निष्फल सभ खेल
देवकीक वध हित जहिँ खड्ग उठौल
भगिनीपति कत कहि हमरा समझौल
अरपब पुत्र जनमितहिँ अपनहिँ आबि
अहाँ अपन हाथेँ मारब गर दाबि
रहत न बाँस बाँसुरी बजत न टेरि
से सुनि सहमि गेलहुँ घातेँ मुह फेरि
कयल देवकी - वसुदेवहुके बन्द
वन्दी गृहमे कर - पद बान्हि सुबन्ध
बजला पिता उग्रसेनहु किछु मेलि
हुनकहु राज्यासनसँ देलहुँ ठेलि
जत जे कयलनि एहिमे किछु प्रतिवाद
बन्धु कुटुम्बी अथवा अपन दयाद
सबकेँ बन्धन देल छीनि अधिकार
असुर सबलकेँ सौंपल शासन - भार
शंकाकुल हम की नहि कयलहुँ कर्म
ऋषि - मुनि सन्त - दैवतक खोधल मर्म
दमन प्रचण्ड दण्ड शासनक झमेल
थुरा गेल मथुरा, ब्रज रज मिलि - गेल

छल दवाब तत रोब - दाब भरि देश
हुकुम देल, जे जनमय शिशु अवशेष
हाजिर करय हमर आगां झट आबि
जनम - मरण लेखा हमरहि कर भावि
वसुदेवहु जत सन्तति, सद्य:जात
आनि समर्पल, सबहुक कैलहुँ घात
आठम गर्भ प्रतीक्षित छलय विशेष
किन्तु विधान विधिक विपरीतहि शेष
गर्भ - प्रसव सभ कारागारहि युक्त
बन्धनमे रहि माय - बाप अभियुक्त
जाथि पड़ाय न, लेथि न पुत्र नुकाय
पहरापर झट अठपहरा बैसाय
जागरूक हम सतत, हृदयमे हूक
कोना करब शिशुकें निज कर शत टूक
कान पाथने छन - छन छल सन्धान
कोना मेटायब हम दैवी अवदान
हन्त ! किन्तु जनमलि कन्या विपरीत
मिथ्या गगन-गिरा छल वा अभिनीत
शिला पटकितहिं शैल-सुता बनि गेल
मायामयि नभ चढ़ि किछु गढ़ि कहि गेलि-
'सुनह, अंत छह निकट दनुज महराज !
दुष्ट दमन ओ शिष्ट रक्षणक काज
जनमि कतहु व्रज बीचहि शक्ति-महान
वधकर्त्ता अवतरल स्वयं भगवान'
भयाक्रांत कंसक मानस छल भ्रान्त
समय-असमयहु बूझ न मूढ़ अशान्त

दौवारिकके दौड़ाओल तत्काल
आबथु झट उद्भट भट कर-करवाल
आज्ञा पाबि उपस्थित सचिव समस्त
असुर निठुर मायावी हिंसाभ्यस्त
कहल सकल शंकाकुल घटना - चक्र
कोना पार पायब संकट ई बक्र
कहल पूतना, जत जनमल वृज भूमि
मारब दुधमूहाँ पिहुआके घूमि
जहर भरल हम दूध पिआयब जाय
चिन्ता करिअ न, हम छी जखन सहाय
जते विकट भट असुर शकट तृणवर्त
अघ वक केशी लंब प्रलम्ब समर्थ
बाजि उठल सब हो-हो करइत क्रूर
हतब अहँक रिपु छनहि, न मन हो झूर
सब अछि सुतल अहँक अनुगत सामन्त
बचय न पाओत केहनो दिव्य दुरन्त
अस्तु आब देखक अछि की भवितव्य
कोना बाँचि सकते बच्चू हन्तव्य
मथुरा राजमहल अछि चिन्ता-मग्न
भयंकरहुके भय पैसल अछि नग्न
चलु गोकुल दिस जतय उगल छथि चान
राहु-केतु ग्रसवा लय लैछ उड़ान

(४—शिशु महान्)

स्थान—गोकुल-नन्दग्राम, यशोदाक आङन-परिसर।

(पुत्र जन्मोत्सवक उल्लास)

गोकुल जन - संकुल छल जन्मोत्सवक हर्ष कल्लोल
मंगल-शंख वेणु वीणा तुरही पिपही धुनि घोल
सजि धजि गितगाइनि सोहागिनी गबइछ सोहर गीत
नन्द यशोदा घर-परिसर बिच बँटइत छथि भरि चीत
जन्म लेल शिशु शशिक समाने झकझक झलकय अंग
जन-जन नयन निहारि न थकइछ, चान-चकोर प्रसंग
देखय अबइछ बाललाल ललना कत टोल-पड़ोस
परिचित-अपरिचितहु बिकछवइछ के जनि मुद मदहोस

(पूतना-वध)

सहसा देखल लोक, आबि पहुँचलि केओ जनि अपरूप
बनि-ठनि धनिजनि बीच एक क्यो ललना अनुपम रूप
केश खोंसि जूहीक माल कृश कटि पुनि उन्नत वक्ष
कुटिल कटाक्ष एम्हर-ओम्हर देखइत के बाल समक्ष
मायारूपिनि कंस पठाओलि विष थन लेपि दुरंत
पहुँचलि अछि पूतना पापिनी करबे शिशुकेर अंत
हुलसि उठाय दुलारि बोल दय बालक हृदय लगाय
पिअबय लागलि दूध सूध - मुख बुझि शिशुकें हर्षाय
देखल सबहि बाल कलबल धय दुहु कर कसि कय वक्ष
पिबइछ थन, छनमे इह-उह कग रहलि धाय प्रत्यक्ष
लगले चिचिआयलि ओ घबड़ाइलि मायाविनि हंत!
कतबहु छोड़बय छुटय न शिशुमुख खसलि चेहाइत अंत
प्रकृत रूप पुनि पूतनाक अति विकृत भयानक भेल
दूध पिबैत प्राण पिबि लेलनि जखन कृष्ण शिशु खेल

दौड़ल धनि-जनि, बौड़ल जननी-जनक यशोदा-नन्द
कोर उठाय बालकें चूमथि चुमबथि उर आनन्द

(नामकरण संस्कार)

दिन बारह बीतल छल नामकरणकेर प्राप्त मुहूर्त
वासुदेव कहलनि, यदुकुलगुरु गर्ग करथु जा' पूर्त
गोकुल पहुँचि नन्दसँ कहलनि शिशु संस्कारित नाम
बलशाली अभिराम जेठ तनि नाम उचित बलराम
आकर्षण मन सभक करथि तेँ छोट कृष्ण अभिधान
पुजि कुलदैवत, दुहु कुमार केर संस्कारक सन्धान
कंस प्रभृति असुरक संहारक यदुकुल कमल निदान
नन्द ! बुझिअ अहँ, शेष- शेषशायी दुहु छथि भगवान
मन पड़लनि नन्दहुकेँ वसुदेवक ओ कथा पुनीत
पोष्य पुत्र बुझि नन्द - नन्दनहु दुहुक समाने प्रीत
वासुदेव ओ नन्द-नन्दनहु दुहु कहबथु निर्वेद
यादवेन्द्र गोपालहु संबोधन नहि रहतनि भेद

(शकट-तृणावर्त निपात)

मास तीनिए बितल उतान सुतल सुत लेल करोट
हुलसि यशोदा बाँटि रहलि छथि सबकें मंगल-रोट
मगन भेलि पार्श्वक परिवर्तन विधि पुरइत सब संग
सुनल न रोदन, बढ़ल छटपटी, बालक चंचल अंग
पद पटकल तँ टुटल पलंगड़ी, घट-पट टुटि-फुटि गेल
बुझल शक्तिशाली शिशुपद आघातक फल अछि भेल
शंकाकुल रोहिणी, बेआकुलि जसुमति कोर उठाय
शुभ-शुभ चुमबय चुमय चाहलनि, सहसा से अकुलाय
भार ततेक बुझल बोझिल नहि सकलि कोरमे राखि
कहुना पलङ्ग उपर दय सब मिलि अद्भुत शिशु ई भाखि

तावत् तृणावर्त मायावी कंसक दिससँ धाय
माया रचि अंधड़ उठाय शिशु सहित पलङ उड़िआय
बिड़रो तेहन उठल छल धूलिक तृण तरु घूर्णित भेल
पलङ सहित शिशु तृण आवर्तित भय नभ पथ उड़ि गेल
हाहाकार मचल व्रजमे जन-जन छल आकुल घोर
किन्तु पलहिमे शान्त प्रान्त जें थम्हल अंधड़क जोर
देखल चौंकि सबहि, विकराल असुर अछि खसल उलंग
उपर कन्हैया किलकि रहल छथि, जनु हो चढ़ल पलंग
अद्भुत दृश्य देखितहिं विस्मित हर्षितचित जत लोक
निबिड़ तिमिर भूगर्भहि जनु उगि जाय मगन-आलोक
देव-पितर मनबथि, चढ़बथि पूजा-पातरि शुभ मानि
रक्षा हित कत धान्य-धेनु-धन बितरथि द्विज नंदरानि
पढ़ि-पढ़ि मन्त्र कलश-जल सींचथि जड़ी यंत्र भुजबंध
द्विजगण स्वस्तिवचन कत बाँचथि नहि हो पुनि प्रतिबंध

(जननीकें विश्वदर्शन)

माय यशोदा कोर राखि सुत पिअबथि दूध स्व वक्ष
मूह बाबि किछु दृश्य देखाओल अद्भुत मातृ समक्ष
सूर्य-चन्द्र ग्रह-नखत घनाघन दृश्य समग्र खगोल
पुनि गिरि - वन नद-नदी ग्राम-पुर जनसंकुल भूगोल
जननी चकित कि सुत भय आयल छथि गोविन्द समक्ष
वदन गुफामे विश्व रूप दर्शन देलनि प्रत्यक्ष
लगले अरुण अधर संपुट कयलनि मुख दृश्य अदृश्य
समटि लेल मायामय माया मायक हित उद्दिश्य
की छल स्वप्न, जागलहु देखल अथवा जादू जाल
कहइत रहली महरि यशोदा बुझल कठिन छल हाल
पुनि छनमे रोदन करइत शिशु लीला ललित पसारि
देलि बिसारि, सिनेह भरलि दुलराबथि ग्वालरि नारि

(यमलार्जुन उद्धार)

एक दिवस पुनि बाल कृष्ण उठि दैत ठेहुनियाँ जाय
फोड़ल घट फाड़ल पट माखन मटुकी धरि उनटाय
किछु धयलनि मुह लेप लगौलनि नेनु खसौलनि भूमि
अटपट करइत चटपट आङनसँ दलान धरि घूमि
देखल माय यशोदा करतब, रोस भरल चित रोर
भारी भड़कम उखड़ि लगहि छल डोरिक कयल सङोर
कटि किंकिनि रुनझुन बजइत से बंद उखड़िकेर बंध
ससरि सकथि नहि, चंचलमतिया नटखट शिशु निर्द्वन्द
कने काल धरि संच - मंच छल, पुनि किछु शब्द कुढंग
खर-खर घर्घर गुड़कि रहल छल ऊखरि शिशुकेर संग
ध्यान न देल, गेल जननी कहुँ, बालक कहुँ गुड़कैत
यमलार्जुन गाछक दुइ फेड़क बिचहि पहुँचि अड़कैत
घिचल कनेक छनेक, खसल सहसा दुहु गाछ हहाय
क्यो देखल, क्यो शब्द सुनल, सब क्यो दौड़ल घबराय
दुइ क्यो ज्योति-पुरुष बहरायल यमलार्जुन अभिशप्त
शिशु मुकुन्दकेर चरण पकड़ि स्तुति कय अन्तर्हित भक्त
ओम्हर यशोदा छाती पिटइत दौड़लि करइत हाय
देखलि कृष्ण कन्हैया डोरी तोड़ल गाछ लगाय
कोर उठाय मनाय गोसाउनि रक्षा-कबच पढ़ाय
विप्र लोकनिकेँ देल दक्षिणा, चिरजीवथु दुहु भाय

(५ – बाल्य-वात्सल्य)

(गोकुल परिसर : बाल्यचापल्य ओ वात्सल्यक डाँट–दुलार)

बलरामक संङ श्याम क्रमहि बढ़ि शिशुलीला देखबैछ
घुसकुनियासँ दैत ठेहुनियाँ गमहि ठाढ़ नहु ह्वैछ
थाथा थैया जमुदा मैया कहइत हर्ष अमन्द
उठथि खसथि पुनि उठबथि डेगहु द्रुत बिलम्बितहु छन्द
आब क्रमहि गतिवंत कर-चरण मचबथि शिशु उत्पात
ढनमनाय वर्तन - भाजन नटखट अटपट कहि बात
खेड़ि खेलौना नित नव-नव लय हुलसि विलसि किछु काल
फेकि देथि, पुनि, तकइत जननी व्यस्त रहथि सदिकाल
पलना उपर बाल - गोपाल झुलथि किछु गीत सुनैत
सुतथि सेजपर 'आगे निनियाँ' जसुदा जखन गबैत
कथा - पुरान कहथि तँ हुंकारी भरि सुनथि अकानि
मत्स्य कमठ वामन वराह नरसिंहक स्मृति मन आनि
रामायण सीता - हरणक चर्चहिँ वेगेँ उठि फानि
'धनुष-धनुष कहँ लखन?' बाजि उठला हरि सहसा कानि
जननी-मुँह निहारि पुनि सहजहिँ शान्तचित्त हरि भेल
चुप-चुप जननी सुता देल देखइत ई अद्‌भुत खेल
माटि देथि मुँह, डाँट पड़नि तँ नहि-नहि कहि मुह बाबि
देखबथि विवर भुवनलीला जननी विस्मित दृग दाबि
सहसा देखि पड़य मुख-गुहा समायल अछि संसार
सूर्य-चन्द्र नभ, भूतल गिरि, सागर त्रिलोक विस्तार
आँखि लेथि मुनि गुनि मायामय अद्‌भुत रूप वितान
बिसरि सकल सुधिबुधि बिलुप्त चेतना न किछु अनुमान
लगले कानब सुनि पुनि जननी माया-ममता पागि
चुप करबामे लागि जाथि सब बिसरि छनहि अनुरागि

माखन हुनकहि हेतु जोगा राखथि जे जसुदा माय
गुपचुप जाय स्वयं अगुताय खाय किछु देथि खसाय
माखनचोर नाम धयलनि से पड़ोसियहु घर जाय
सत्यापित कय देल, उलहनहु सुनथि यशोदा माय
फुदुकि पड़ाय जाथि तँ जकड़ि-पकड़ि निज कोर उठाय
बोधि-प्रबोधि खोआबथि जननी कत विध व्योंत लगाय
बधवा-कोर और सर-सवधिक नामहुँ संबोधि
दूध-भात रोटी-फुलकी दहि-चूड़हु कत अनुरोधि

(सखा संग केलि)

एहिना खेल-धूपमे, गपसपमे लीलामय चित्र-विचित्र
करइत रहथि व्यक्त, अनुरक्त जनक हित स्वतः पवित्र चरित्र
कखनहुँ रूप अनूप बनाबथि, अभिनय करथि मगन मनमस्त
नाचथि काछथि लोक मनोरंजन हित गाबथि गीत प्रशस्त
नंदराय आनंद मगन मन सुत मुख निरखि अमन्द
श्लोक रटाबथि आखर-चित्र चिन्हाबथि पढ़बथि छन्द
राम-कृष्ण दुहु गौर-श्याम जनु भानु-चान ब्रजधाम
उगथि संग कत सखा नखत लय घुमथि नगर ओ गाम
टोल-पड़ोसक भवन-आङनहु जगमग करथि इजोत
कतय की कहाँ राखल मधु गोरस न रहैछ इरोत
माखन खाथि चोराय-नुकाय नाम हुनि माखनचोर
उलहन जाय देथि जनि-धनि जसुदाकेँ करइत सोर
डाँट पड़ल तँ कहल, कहाँ हम खयलहुँ जाँचल जाय
देल बाबि मुह देखल जे-किछु कहल-सुनल नहि जाय
गेलि पड़ाय पड़ोसिनि चौंकि-चिहुँकि जसुदहु दृग बंद
की कत देखल सगर भुवन मुख-विवर न बरनिय छंद
गुपचुप बजइछ कंस ध्वंस हित देवी जे कहि गेलि
से की एतहि एहि शिशु रूपेँ अवतरि करइछ खेलि

डाँट-दुलारक पुरिबा-पछवा दोरस बहय बसात
सहजहि व्रज-नभ आनन्दक धन उमड़ि सुखक बरिसात
जते बाल-गोपाल गाम-घर सबहु बटोरथि जाय
मीत प्रीत कत नाम परस्पर प्रीतिक रीति लगाय
वन भोजन, गोचर चारण, फल - फूल संचयन लग्न
संगी संग अंग-अंगी बनि क्रीडा-नर्तन मग्न
गपसप लड़बथि, पंजा भिड़बथि, खेलहु खेलथि संग
गावथि गबबथि बंसी टेरथि गीत राग धुनि रंग
लोढथि दल-फल-फूल गाम घर डोलथि सहित उमंग
आम-लताम-जाम झखबथि पुनि खाथि खोआबथि अंग
मधुरस पिबथि घुमथि खेतहु पथार निरखथि नित चास
चरबथि गाय बथान आनि पुनि बान्हि खोआबथि घास
कुञ्ज-कुञ्जमे घुमथि वनस्पति-पुञ्ज चिन्हथि दय ध्यान
मुरली लय बजवथि सरिगम साधथि दय तान-बितान

(कंसक ध्वंसकारी प्रवृत्ति)

एम्हर गोकुलक गाम बनल हरि शैशव लीला धाम
जतय दिव्य बालक दुहु विलसथि राम तथा घनश्याम
कंस नृशंस ओम्हर भविष्य प्रति अति आतंकित चित्त
वृज मंडलमे शिशु - निपात हित चिन्तारत कटुवृत्त
अध वक वत्स सुर मायावी जे छल पोसल पुष्ट
बली छली जत लंब - प्रलंब जुटाओल सबके दुष्ट
कहल, हमर सब दिनसँ रहलह शुभचिन्तक एकान्त
कहइत छिअह रहस्य अपन बुझि जहि ले' रही अशान्त
बुझले छह कहि गेल छलय देवी नभवाणी भावी
वधकर्त्ता तोहर क्यौ बृजहि जनमलह दिव्य प्रभावी
तकर खोजमे ओज करह जनु, वृजमण्डलकें घेरि
शिशु-निपात करबामे लागह, ने संकोच न देरि

आगि सुनगि नहि सकय मिझाबह पहिनहि पानि बहाय
अण्डहिकें खण्डित कय देह पौआ नहि कहुँ बहराय
बुझि न सकय क्यौ, तें तेहन किछु रूप धरह अज्ञात
बचि न सकय क्यौ बाल हालमे जनमल जे नवजात

(गोकुलक उत्पीडन)

पाबि प्रभुक आदेश स्वय हिंसामय जकर प्रवृत्ति
चलि पड़ले तत्काल करय उत्फाल पाशवी वृत्ति
असुर आततायी जत-तत घुमइत बढ़वय आतङ्क
मारय–पिटय धेनु–धन छीनय उपद्रवी निःशङ्क
आजिज आबि गोकुलक जनता नन्द महर लग आबि
कहल, एतय नितप्रति उपद्रवहि बुझि न पड़य की भावि
शिशुक चोरि बढ़ि गेल, कतहु नहि ग्वाल-बाल बहराय
गाय चरायब एतय कठिन अछि, हम सब छी निरुपाय

(वृन्दावन बसबाक प्रस्ताव)

गोकुल बसब विपत्ति वरब थिक, मन हो जाइ पराय
कतहु चलिय अनतय, नत भय कहि रहल सबहु गोहराय
नन्दहु कहलनि, तथ्य कथ्य अछि, स्थिति अछि तेहन भेल
धिया-पुता ओ जनी-जाति पुनि धेनु-धनहुकेर लेल
कंसराजकेर गतिविधि तेहने, राजपुरुष दुर्दान्त
लूटि खसोटि प्रजाकें करइत रहइछ सतत अशान्त
सुनइत छी क्यौ कहि देने अछि ब्रजमे जनमि महान
क्यौ बलवान पुरुष वधकर्त्ता होयतह, बुझह प्रमान
तें मारय चाहय शिशु मात्रहिकें सैनिक उकसाय
गोकुल मुख्य बनल अछि लक्ष्य, उपद्रव तें अधिकाय
तें किछु दिन धरि तेजि गाम-घर गोकुलतें बहराय
जाय बसी कहुँ पासहि जतय सुपास वाम सोझराय

कहल सबहिं, अछि अनतिदूर वृन्दावन अतिसुखदाय
यमुना जल सिंचित संचित तरु-लता फूल-फलदाय
गोचर भूमि प्रशस्त ओतय अछि गोवर्धन गिरिराय
जल निर्मल, थल समतल, विस्तृत चारचाँचर जलदाय
बाड़ी झाड़ी फूलक क्यारी छाया-तरु बिसराम
एहन मनोरम वृन्दा धाम बसब रसमय बनगाम
हम गोपाल गाय पालब तत, शिशु गन घुमत निचिन्त
अन-धन व्यंजन शाक-पाक रंधन हित इंधनवंत
सभ प्रसन्न मन उपटि बसब तन तृणपर्णक अछि ढेरि
कुटी बनायब, गाय चरायब, गायब वंशी टेरि
कयल समर्थन प्रस्तावक, नहि कोनहु धमर्थन भेल
अकट-विकट सभ शकट समेटि गोकुलक जन चलि देल

(६—वृन्दावन)

(उपद्रुत गोकुल छोड़ि वृन्दावनक नव वासा)

वृन्दावन नन्दन कानन जनु सुख – आनन्दक धाम
दिव्य देव गोकुल ग्रामक वासीक बास अभिराम
कालिन्दी कलकल बहइत मन्दाकिनीक शुचि धार
तरु कदम्ब मन्दार महीरुह छाया सघन उदार
कामधेनु सन गोधन; संवर्धन हित गोचर भूमि
शुचि शाद्वल रुचिमत चरइछ पशु दुधगरि सगरहु घूमि
गोवर्धन गिरि निर्झर झरइत, हरित-भरित रुचिदाय
वन-वनस्पतिक सम्पत्तिक प्रकृतिक सुषमाक निकाय
मुखिया नन्द सहित उपनन्दहु ग्राम-घोष जत लोक
वन-परिसर रहि पुर-ग्रामक सुख पबइछ, रोक न टोक
जनी जाति जत प्रमुदितचित अछि, गृहप्रबन्ध हित लभ्य
रंधन-इंधन शाक - व्यंजनहु सस्त-प्रशस्त सुलभ्य

जल भरइत शुचि कलश घाट,नहि कतहु बाट बटमारि
नहि नेनाक खेल हित जगहक कमी कतहु चितहारि
ऋतु वसन्त फुलहर भरि दै अछि सुरभित फूल फुलाय
कोकिल कलकूजनक मधुर संगीत निरंत सुनाय
ग्रीष्म मधुर फल परसि करय हर्षित रसना रुचिदाय
वर्षाऋतु घन सघन बजाबय बाजा सूर मिलाय
सतरंगा परिधान सजाय मयूरहु दैछ नचाय
कमल हस्त लय हंसक पद धुनि शरद स्वच्छ शुचि धाय
चान किरनसँ दैछ चुनैट कुटीर सहज सहकारि
कुमुद कौमुदी मुदित महोत्सव रस-रासक सहचारि
हेमंतहु धनवंत नवान्न जुमबइछ दधि - चिपटान्न
शिशिर शीत अति प्रीत जुटबइछ इंधन अनल तपान
अन-धन लक्ष्मी भरल खेत-खरिहान फूल-फल-मूल
गोवर्धन गिरि शोभावर्धन धातु रत्न मणि तूल
बाड़ी-झाड़ी तर - तरकारी हित जत चहिअ, अलेल
जगह अगहसँ विग्रह पड़ल परती–पराँत कत भेल

(क्रीड़ा-कौतुक)

ग्वाल-बाल दल-बल सहेजि नित नव-नव खेल रचैछ
श्याम चटुल बलराम बहुल-बल मेट सभक कहबैछ
प्राती सुनि भोरे उठि जेठ-श्रेष्ठकें करथि प्रणाम
शुचि भय नहा देथि जननी तँ पहिरथि वसन ललाम
पीताम्बर छल श्यामक प्रिय, नीलाम्बर पहिरथि राम
वंशी हाथ अनुजकें, अग्रजकें लागल अभिराम
मिलिजुलि संगी संग जगली फल खटमधुरहु खाथि
गाय चराबथि मुरली टेरथि नव–नव खेल खेलाथि
पेलथि दण्ड, बैसकी करथि, दूर धरि दौड़थि जाय
मुद्‌गर भाँजथि, पंजा लड़बथि, सरोँ खेलाथि सदाय

दृढतर कय सब अंग, प्रसंगहि दाव-पेंच सिखि लेल
कुश्ती चुस्तीसँ लड़इत दृढ़तर शरीर कय लेल
गुल्ली डंडा, चिक्का दरबरि कवड्डिअहु केर खेल
करिया-झुम्मरि, चोरानुकिया गोटी ओ बगमेल
तरुपर चढ़थि,गिरि शिखर ऊपर बढ़थि सबहु ललकारि
कूदब-फानब भार उठायब सबकेँ देथि पछारि
हेलब - खेबब नाव-नदी भरलहुमे उतरब पार
ने केओ सकथि, श्याम-बलरामक जोड़ी जोर अपार
गाम-घरक जत्त खेल मेल मत्त संगी संग उमंग
मुरली टेरथि ताल-तालपर गीतक तान तरंग
किछु दिन बितल शान्ति-शीतल थल वृन्दाबनकेर प्रान्त
व्रजक बाल-लीलामे नहि किछु खलल पड़ल एकान्त

(कंसक दौरात्म्य)

किन्तु जतय भय ईर्ष्या-द्रोहक दावानल पुरजोर
मथुरापति कंसक मन-वनमे चिन्ता-ज्वाला घोर
सुनल जखन गोकुलक लोक कहुँ उपटि बसल अछि जाय
चर-निश्चरकेँ डाँटि पठौलक, पता करह फरिछाय
नन्द मन्दमति जेठरैयति भय विनु हुकुमहि घर छोड़ि
संग-समाज साजि कहुँ जाय फरार भेल मुह मोड़ि
कोन पुर-नगर-गली बसल वा कतहु गाम नव टोल
अथवा वनगामक भय वासी रचय विरोधी गोल
रासक सहजहि नोतल अखनहि अततताई बदजाति
चालल गोकुलक गली सुङ्घानी लैत दंत मदमाति
नहि क्यौ एकहु प्राणी देखि पड़ल, ने पशु संचार
खाली घर-आङन, कोठी ढनढन, ने पथ संचार
ने दलान खरिहान बथानहु ने पनिघटपर लोक
सुन्नसान समसान बनल, नहि कतहु लोक-आलोक

पिंजड़ा खाली पड़ल कतहु पंछी उड़ि गेल अजान
जीवन-धारा चटा गेल, छल सैकत खात वितान
पुनि लगपासक लोक बजै छल नंद उपटि जत गेल
से सब पता लेल, कंसहुके दौड़ि सूचना देल
वृन्दावन जे सरकारी शिकार हित हेतुक भिन्न
ततहि बसल आ' कय गोकुलसँ नंदमहर उच्छिन्न
संग-समाज साजि कय रुचितम नवे बसल वनगाम
ने कोनहु लय सनद राजसँ, ने कोनहु दय दाम
अपनहि मने काटि वन-जंगल, मंगल मनवय लोक
खेत-पथार दखल कय उपजा, प्रजा बसल निर्धोख
कर चुकबय नहि, सरोसलामी राजहुके चुकबैछ
नंद स्वयं राजा उपनंद सचिव बनि राज करैछ
सुनितहि बजा लेल मायावी असुरक दल उद्दण्ड
कहल, जाह झट, उद्भट भटगण चलबह शासन-दण्ड
पुनि किछु सोचि कहल,पहिने बिनु कहने, जाँचह जाय
की कोनहु नवका तूरक क्यो बालक बल उमताय
जोर देखाबय सोर मचाबय विद्रोहक अधिकाय
अवतारी सन गगन-वचन मत बली छली अतिकाय
मचबह जाय उपद्रव, ककरहु करह न किछुओ रोच
ततह जतय जे बालक किछुओ बुझा पड़य पकठोस
कतबहु कानय-बाजय माय-बाप नहि राखह मोह
मोचह गरदकि मरदि मिलाबह गर्दहि बनि निर्मोह
ऋण ओ शत्रु आगिके लघु नहि बुझह विदित अछि नीति
बढ़ि ओ सहजहि अंत नाश कय दैछ, शेष अनरीति
जड़िअहि काटि करह उत्पाटित, फुलय-फड़य नहि पाब
बुझह न चंदन नन्दक नन्दन, असुरक कंटक-दाव

(७—असुर-निकन्दन नन्दनन्दन)

(वृन्दावन परिसर : लीलावतारी रामकृष्ण द्वारा असुर-निकरक निपात)

किछु दिनसँ वृन्दावन घुमइत अछि किछु जन अज्ञात
की निहारइत रहइछ गतिविधि से नहि ककरहु ज्ञात
यमुना-तटमे पथ अवघटमे गुपचुप रहल निहारि
कत्तहु सुनि पड़इछ दुर्घटना हिंसा ओ बटमारि
एकसर दोकसर देखितहि शिशु बालककेँ लैछ उठाय
खनहु हेराइछ बाछा-बाछी, गोधन लैछ चोराय
काटि लैछ क्यौ राति-बिराति जजात,पथिक लुटि जाय
जनी-जातिपर बलात्कारहुक घटना पड़य सुनाय
चंचल भेल वनांचल, शङ्काकुल जन—मन आतंक
गाय चराबय जाय यदि च बालक दल, नहि निःशंक
कृष्णचंद्र बलभद्र दुहू मिलि करइत रहथि विचार
अत्याचार बढ़ल, प्रतिकारक सोचि रहल उपचार

... ...

एक दिवस हरि गाय चरबइत रहथि सखागण संग
वंसी टेरथि, ग्वाल-बाल सब ताल देथि अनुषंग
गाय चरय कहुँ बाछा बिचरय, चरबाहिक नहि काज
भरित गोचरक हरित घास दिस बढ़य धेनु निर्व्याज

(वत्सासुरवध)

सहसा सुनि पड़ले हुँकड़ै छल धेनु—वत्स भय खाय
बाछा कोनहुँ अनेर जेरमे पैसल अछि गुर्राय
चोख सींघ चलबय खुर नखर लथारहु कत घर्राय
बुझि गेला हरि क्यौ कपटी असुरहि आयल वर्राय
थमह बन्धु-गण ! थिक वत्सासुर कपट वेश धय गूढ़
पाप बुद्धिसँ घुसिआयल अछि बुधगण बिच जनु मूढ़
ई लहि दौड़ि पशुक दुहु टाङ पकड़ि फेकल हरि दूर

तरु कपित्थपर खसल छह्रोछित वत्सासुर भय चूर
मरइत काल रूप निज असुरक सहजहिँ गेल चिन्हाय
वत्सासुर छल पूतनाक अनुजन्मा सोदर भाय
लगले पसरि गेल ई घटना बालकृष्णकेर सत्त्व
नहि साधारण ग्वाल-बाल ई कोनहु दिव्य परत्व

(वकासुरवध)

किछु दिन बितल रितल जत गोपकुमार सबहु लय संग
यमुना तटपर खेल खेलाइत रहथि सबहु कत रंग
थकिथुनि जखन जाथि तँ घरसँ आनथि जे आहार
मिलिजुलि खाथि सभक आनल सब स्वादथि भिन्न प्रकार
आइ अधिक किछु इष्टमित्र मिष्टान्न विविध पकवान
खाय अघाय पिआस बढ़ल तँ चाहिअनि जलाक निपान
यमुन धारसँ पानि पिबाक हित उतरि कछेड़-किनार
पहुँचथि जखनहि देखल तखनहि बगुला एक विशाल
लोल चलबइत छल तत जोर डरेँ सब गेल पराय
कृष्ण देखि से झपटि पहुँचला, देलक लोल चलाय
किन्तु ताप तत बढ़ल, कंठ अटकल नहि, उगिलल अत
चन्दन बिन्दु नन्दनन्दन बनि इंधन ज्वाल अनंत
वक विशाल मुह गोल खोह जनि गिड़ि लेलक खिसिआय
किन्तु पचाय सकल नहि लगले उगिल देल मुह बाय
पचा सकल नहि, बचा सकल नहि स्वाहा जीवन भेल
वकासुरक संहारक लीला कृष्ण सहज कय देल
कोलाहल मचि गेल भेल की कोना! न बुझना गेल
अद्भुत लीला बालकृष्णकेर, छथि अवतारी भेल

(धेनुक-वध)

एक दिवस, श्रीराम-कृष्णसँ कहल सुबल-दामा दुहु मीत
वृन्दावनक छोरमे तालक वन अछि अतिघन फल परिवीत

नीर भरल अति तरल जकर कोआ-तरकुन लागय बड़ मीठ
चलिअ तोड़ि कय चखिअ ढीठ भय ओतय न ककरहु पड़इछ दीठ
सब हो-हो कय उठल, चलिअ झट आइ ओतहि होयत वनभोज
घुमब-फिरब तालक नमछड़ गाछहुपर चढ़ब, करत के खोज
चलि देलनि झट, अटपट बजइत, लटपट करइत बाल गिरोह
ढेपचेप कत फेकि तालफल तोड़य लगला सबहु निछोह
कतहु धपाय नुकायल छल क्यो असुर नाम धेनुक खर-रूप
देल चलाय लथाड़, चाहलक चापय सबके यम अनुरूप
भीत-भीत भय छहोछीत बालक-दल चहुदिस गेल पड़ाय
हाहाकार मचल छन भरिमे, रेकय लागल असुर ठठाय
किन्तु बली बलराम-श्याम छथि अड़ल, असुर बढ़ि चलल रिसाय
दौड़ि दाउ पाछहिसँ टाङ डाङ सन पकड़ि-जकड़ि जुगताय
फेकल ताड़ उपर, रेकय लागल खर मरइत बेर अलेल
गधा रूप छुटि गेल, असुर निज रूप प्रगट अंतिम छन भेल

(अघासुर-वध)

कोनहु एक दिन अरुण उषा लाली छटि शुभ्र प्रभात
उदय लेल रवि, बहइत छल शीतल शुचि मंद बसात
उठि भोरे लय संग सखा हरि वन-बाधक दिस जाय
गाय चरबइत खेलइत-धुपइत वन दिस बढ़ले जाय
खेल करथि मिलिजुलि कत मेल अलेल बाल बहुरंग
बसी बजबथि कृष्ण ताल दय नाचथि-काछथि संग
ग्वालबाल क्यो कू-कू करइछ कोकिल कलरब सूनि
क्यो फल-फूल लोढ़ि,क्यो कबल ओढ़ि नुका किछु गूनि
एही मध्य अजगरक रूप धय दुष्ट अघासुर आबि
छेकल पथ, अथ मायामय ओ गुफा जकाँ मुह बाबि
गिरिक गुहा बुझि कौतुकवश कत धेनु-वत्सके हाँकि
पैसल जाय, सहज अघ लेलक मुहके दाँतहु टाँकि

उदर-दरीमे बंद सबहु निष्पंद भेल औनाय
नन्दनन्दनहु ततय अवस्थित बुझि मृदु मुसुकाय
लघुतम रूप महत्तम कयलनि अकसक असुर अघाय
फटल पेट नहि अटल विराट पुरुष तानल तत काय
बहरायल जत छलय समायल सहसा शिशु-समुदाय
देखल मुइल पड़ल अजगर गर फटल अघासुर हाय

(अरिष्टासुर-वध)

एहिना दुष्ट अरिष्ट असुर बल पुष्ट वलीवर्दक आकार
पैसल व्रजमे सींग चलबइत करइत खुरहुक वज्र प्रहार
पशु-गण हुँकड़ि छान-पगहा सब तोड़ि छहोछित गेल पड़ाय
बालक सब थर्राय नुकायल, बूढ़-बुढ़ानुस मन अकुलाय
बहरयला गोविन्द गोठसँ ओठ हँसी छल मन निःशक
झपटि पकड़लनि सींग, डींग असुरक सब घोसड़ि गेल मुख वंक
ठेलि दूर धरि, रगड़ि मूड़ धरि, फेकल दूर, चूर अतिकाय
अंतकाल ओ अपनहि सहजहिँ रूप विरूप प्रकट अधिकाय

(केशी-वध)

केशी अश्वरूप धय आयल टाप - दाप छल जकर प्रचंड
हिनहिनाय केसरि हिलाय चलबय दोलत्ती झारि अबंड
ने लागल लगाम, ने छान-पघा दौड़य दरबरि उद्दाम
दाँत चोख, मुख रोष, नाक भाङय, थाङय टाङहि अविराम
क्यौ नहि जाय निकट, अतिविकट, शकट-रथमे ने लगा सकैछ
डरसँ सभ घर नुका रहल, केशी वेसी ऊधम मचबैछ
देखि मुरारि निहारि बुझल, ई केशी कामुक दैत्य दुरैत
कंसक अनुचर व्रजमे संचर, हमर हाथ लिखले जनि अंत
केशी ! वेसी जनि उमतह, हम सकब सबारी तोहर उपर
व्रज वन केहन सघन अछि से सब बुझि पड़तहु एही अवसर
नहि रुकले बढ़ले हरि उपर विकट रव करइत दुष्ट असुर
खुर चलबय, दाँतहु कटकटबय, छली बली ओ दुष्ट—विधुर

झपटि श्याम दुहु टाँङ पकड़ि झकझोड़ि फेकलनि दूर घुमाय
दाँत निपोड़ि, टाङ छितराय खसल केसी घों-घों घिघिआय

(व्योमासुर-वध)

ग्वाल-बाल सब अंग संग गोपाल कृष्ण वन पहुँचल जाय
वृन्दावनकेर सघन कुञ्जमे पुञ्जित भय नव खेल रचाय
देखल श्याम नाम—चाकर क्यो अनट पहुँचि किछु करय झमेल
दौड़ – धूपमे उठा—पटकमे नवे ढंगसँ रचइछ खेल
एक-एकके फुटा कुठामहि उठा लैछ कहु कान्ह चढ़ाय
गुहा-खोहमे राखि अबैछ घुमैछ एकसर दौड़ लगाय
चिन्हि लेलनि व्योमासुर मायावी थिक, लगले पहुँचि निकट
कान्ह कोन्हायल जाय कान्हपर चढ़ि हुमुचल तत जोर विकट
चिचिआयल-किकिआयल व्योमासुर भोंभाँ करइत भय त्रस्त
अपन रूपमे मृत्यु-समय सहजहि प्रकटल मायावी ध्वस्त

(प्रलंब-वध)

कान्ह चढ़ाय एकके दोसर दौड़ लगाबथु दूर दुरंत
हुड़बा छुवि घूरत जे पहिने से जीतत बाजी बलवंत
बढ़ि कय लंब प्रलंब जवान कहल, बलदाउ चढ़थु मम कान्ह
देखिअ सबहु कोना हम लगले फीरि अबैछी छुवि ओ बान्ह
हुलसि प्रलंब कान्ह पर कय बलराम दौड़ि पड़ दूर-दुरंत
चाहल ओतय पटकि चटपट कय दी एकांतहि प्राणक अंत
किन्तु स्वयं शेषावतार पृथ्वीक भार जे माथ धयल
तनिक भारसँ सहजहि पस्तमपस्त प्रलंब लंब भूतल

... ...

एहिना विविध रूप धय जत जे कंसक अनुचर असुर छलय
से सब गलल-पचल हिमकण जनु रविक किरणसँ गलय-पचय
ब्रजलीला कत देखि असुर-निकरक नहि हिम्मति हो बहराय
क्रमहि कमल, कमलक दलके हिम हेमन्तक ऋतु दैछ गलाय
वृषभासुर पुनि व्रजक धेनु वृष वत्सक पीडक उद्धत वेष
तकरहु देल पछाड़ि धर्मवृष रक्षक बनि कय रिपु निःशेष

दुष्ट अरिष्टहुके विनष्ट कय व्योमासुरके व्योम पठाय
असुर निकन्दन नन्दक नन्दन अभिनन्दित छथि जन समुदाय
गो-गोपक अपकारी शिशु नारी पर अत्याचारी भेल
कते गनाओल जाय असुर मायावी तत से मारल गेल
कंस ओम्हर किछु सोचि रहल अछि,की पुनि करथि,विपत्ति समक्ष
नव उद्योगक हो प्रयोग अछि कृष्ण भविष्णु काल प्रत्यक्ष

(८—देवगणक मोह-भंग)

(स्थान : वृजमंडल, गोवर्धन वनपरिसर)

एमहर सुर बिच एखनहु मन संदेह - रेह नहि मेटा सकल
करिअ परीक्षा, विष्णु स्वयं की कृष्ण रूप अवतर भूतल
अथवा गोपकुमार नन्द-नन्दन छथि सहजहि मनुज समक्ष
विधिहुक भ्रम जमले नहि छूटले, जा धरि नहि प्रमाण प्रत्यक्ष
किछु तनिकहु सन्देह हरल हरि मायामय लीला विस्तारि
सुरपति इन्द्रहुधरि मोहक अछि पसरल जाल विशाल विचारि
अग्नि-कुबेर-वरुणहुक परिजनमे किछु-किछु छापल सन्देह
किन्तु दिनपतिक ताप-तेज की छापि सकत घन कन वा खेह

(वत्स—हरण)

यमुना - तट पर श्याम सखा सङ जाय
वन-भोजन आयोजन अतिसुखदाय
कयल समापन, मुख प्रक्षालन लेल
उतरि छहरिसँ धार किनारहि गेल

कयलनि शुचि आचमन स्वयं गोविन्द
पाछाँ, देखल, नहि छल, बालक-वृन्द
ने पुनि धेनु चरैछ न वेनु बजैछ
कतय छनहि चलि देल, न क्यो अभरैछ

कने छनेक मौन भय धयलनि ध्यान
बुझलनि, ई थिक विधिक अवैध विधान
लेल चोराय सबहुकेँ कतहु नुकाय
जाँचय चाहथि, रचइछ कोन उपाय

यदि छथि सम्पिहुँ अवतारी गोपाल
स्वयं अपन महिमा देखबथु तत्काल
ई मन सोचि गोप-शिशु बाछा-गाय
हरण कयल गिरि दुर्ग नुकाओल जाय

मायामय हरि लगले धयलनि ध्यान
योगेश्वरकेँ छनहि सफल सन्धान
प्रगट भेल जत जे छल सखा प्रमान
धेनु वत्स तत्सम तद्रूप निदान

ओहिना लागल चलय पूर्ववत् खेल
आङन घर-परिवार न कतहु झमेल
चरइछ वन बिच बाछा-बाछी धेनु
खेलि रहल गोपाल बजबइत बेनु

माय-बाप नहि बुझलनि की छल भेद
आङन-घरमे ओहिना शिशु निर्वेद
ने छला धेनु - वत्समे रंचहु भेद
चलाइछ सब व्यवहार सुचारु अखेद

देखि वृजक बिच ओहिना सब व्यवहार
विधि पुनि जाय गुहाक निहारल द्वार
ओहिना ग्वाल-बाल सङ बाछा गाय
एनमेन पुनि कोना ओतहु समुदाय

मायामय प्रभु माया अपन पसारि
नवे सृष्टि कयलनि अछि!सोचि-विचारि

बुझलनि ब्रह्म पूर्ण ब्रह्म अवतार
हरि करता सुरहित असुरक संहार
ओ पुनि चरण-प्रणत भय कय स्तुति गान
पाबि क्षमा निज धाम कयल प्रस्थान
आनहु देवक मनमे किछु सन्देह
तकरहु दूर कयल प्रभु निःसन्देह

(इन्द्र दर्प हरण : गोवर्धन धारण)

सुरपतिहुक मनमे संशय किछु, परिचय पयबा लेल बिचार
वृजमे किछु दिन करी अवर्षण, वृजपति कोन रचैछ प्रकार
यदि प्रभु स्वतः, प्रभुत्व देखौता, अथवा पुजता हमरहि मूर्त्ति
तखन हमहि उमड़ाय सघन घन कय देबनि हुनि इच्छा पूर्ति
वर्षा ऋतु भादव कादवमय सघन समय कहबैछ
किन्तु बिन्दु मात्रो नहि बरिसल रौदी तेहन पड़ैछ
सिकता-रेत खेतमे देखिअ, पड़ले विकट दरारि
कृषक समाज अकाश निहारय ने घन, विन्दु न वारि
इन्द्र कुपित की भेल वृज उपर पूजल नहि एहि बेर
करिअ प्रबंध फूल-फल जुटबिअ प्रतिमा बनय सबेर
ऐरावत पर चढ़ल इन्द्र प्रतिमा पूजथु वृजराय
करिअ जोगारय झटिति कुम्हार बजाबिअ ठाठ सजाय
सामाजिक जत बूढ़-सूढ़ बुझनुक आस्तिक कहु, अस्तु
प्रस्तुत नंदमहर पूजा हित, लगले प्रस्तुत वस्तु
नाच - गान वाद्यक विधान पुनि अनुष्ठान-विधि ह्वैछ
पुरहित - बाभन कते कहाँ की मन्त्र पाठ सुनबैछ
वर्षा नहि होइछ तें इन्द्रक पूजा होन्हु विधान
अछि करबाक, कृपाबल अन-धन उपजा सकथि किसान
कृष्ण देखि कहलनि, की होइछ ? कथि लय एते विधान !
मूर्ति ककर बनइछ ? कथि लय पकइछ पूरी-पकवान !

कहलनि कृष्ण कने गभीर भय, रोगक बुझिअ निदान
देव-दैव की करी अहाँ राव, प्रकृतिक छी सन्तान
नदीमातृका देश अपन अछि यमुना बहवथि नीर
नहरि-छहरि निज श्रमसँ विरचिअ, रचिअ खात गंभीर
छथि परोक्ष देवता, समक्ष प्रकृति भंडार भरैछ
गोवर्धन गिरि कत निर्झर बहि पानि पटाय सकैछ
हिनकहिसँ कत खनिज बनिज हित वस्तु प्रशस्त सजैछ
वन-वनस्पतिहु गोचर चरिहु वृजक हित वस्तु जुटैछ
पूज्य हमर छथि गोवर्धन गिरि दैवत सहज समक्ष
की चढ़बिअ ई द्रव्य हव्य जे छथि स्वर्गस्थ परोक्ष
बालक प्रबल युक्तिसँ सबकें बुझा - सुझा मति फेरि
इन्द्रक पूजन बन्द कराओल, गिरि-पूजन हित बेरि
गोवर्धन पूजन आयोजन, इन्द्रक पूजन बंद
लेसि देल सुरपतिक चित्तमे क्रोधानल निर्बन्ध
उमड़ि छनहिमे घन घमंड छापल नभ क्षितिजक छोर
डुबबय पर तुलि गेल खमंडल वृजमडल घनघोर
छनहि छपित आकाश, प्रकाश न चान-सुरुज नहि भान
अन्धकार व्यापल नभ - भूतल सन-सन बह पवमान
झाँट-बिहाड़ि, पानि-पाथर मूसलाधार घन वृष्टि
बुझि पड़ प्रलय जलाभय होइत अंत विलय जत सृष्टि
गर्जन-तर्जन घनक, विद्युतक तर्जन वज्र कठोर
छनहु न विरम राति-दिन वर्षण पानि-पाथरक जोर
खेत-पथार बथान-गोठ खरिहानहु उबडुब भेल
मयदानहुक कतहु संधान न, पुहमी सागर भेल
भिजल-तितल थरथर कँपइत टपकय नख-शिख धरि विन्दु
गोवर्धन गिरि दिस टकटक तकइत नटखट गोविन्द

इन्द्र कृत्य बुझि सुधि गो-गोपक करइत नन्दकुमार
कहलनि, सब जन सहटि एतहि चलि आउ न कष्ट–विकार
कर अंगुलि पर लेल उठाय सहज गोर्धवन छत्र
जय गिरिधर गोबर्धन–धारी ! घोल मचल सर्वत्र
दिन सातहु वर्षा–वातहु नहि ककरहु कतहु कलेश
देखि लजयला इन्द्रदेव–बुझि मायामय अखिलेश
छटल मेघ दल, नभ निर्मल नहि कतहु बुन्द लव लेश
चरण गहल गिरिधरक क्षमा हित स्तुति करइत अमरेश

(दावानल पान)

एहिना बुझि पड़ अग्निदेवहुक मनमे अछि किछु राजस मोह
वनमाली की कय सकइत छथि, दावानल ज्वाला संदोह
जंगल-झाड़ी घास-पात जत बहुल चरी, नित अभ्यासी
माल जाल लय चरबय जाइछ ग्वाल-बाल जत वृजवासी
दैछ उछन्नर असुर–निकर कंसक सह पाबि अनेक प्रकार
काँट ओछाबय, डाँट छोड़ि झाड़य फल दल फूलहुक अमार
ताहूसँ मन भरल न जरलाहा हीही करइत उमतल
आगि लगा देलक, दावानल पुनि हू-हू करइत पसरल
हाहाकार मचल ज्वालावलि वनसँ बढ़ि आनन-फानन
बुझि पड़ आइ भस्म कय देते बाड़ी–झारी घर–आङन
आशंकित मन आतंकित जन देखि नन्दनन्दन अगुताय
सुरुकि लेल धहधह ज्वालामाला, दावानल गेल मिझाय
जेना पान कयलनि अगस्त्य मुनि सागरकेँ चट चुडुक चढ़ाय
तहिना पीबि लेलनि मनमोहन झट दावानल घोंट बनाय
चौंकि चकित अपनामे बजइछ वृजवासी जन अद्भुत खेल
नंदक छौना जादू-टोना कतय सिखल, देखल नहि गेल
कोर उठा क्यौ, कान्ह चढ़ा क्यौ, माथ सुङ्घय क्यौ बाहु पुजय
कहय सबहु ई मानय पड़ते मानव नहि क्यौ देवतनय

लीलामय श्रीनंदनदनक अद्भुत चरित देखि सब लोक
कहइछ, वृजमे दुखक तिमिर कहुँ रहय जतय वृजमणि आलोक
नितप्रति कोनहु अद्भुत लीला देखा रहल छथि लीलाधाम
वृज-रजनीक चान भय उगला नंदक नंदन रूप ललाम

× × × × ×

वरुण-कुबेरहुकेर मनमे सन्देह-रेह तकरहु प्रतिफल
देलनि स्वयं सुझाय–बुझाय अपन लीला देखाय अनुपल
नन्दराय एकादशी–वृती अन्हरोपहि उठि बुझल न भेल
चलि देलनि यमुना तट सहजहिँ, राति अछैतहिँ स्नानक लेल
वरुणदेव - अनुचर संचरइत निशा - स्यानकेँ बुझल निषिद्ध
पकड़ि नन्दकेँ पहुचौलनि, स्वामी लग पाश बान्हि त्रुटि सिद्ध
यावत् किछु आदेश करथि ता' श्याम-राम दुहु आगाँ देखि
हंत ! बुझल नहि किछु चर अनुचर, छमिअ दोष अनजान परेखि
क्षमादान-पूर्वक हरि लय चललाह पिताकेँ वृन्दाधाम
आनंदित छथि नंद, मनुज नहि तनुज युगल ई देव निकाम
एहिना यक्ष कुबेर-भृत्य क्यौ शंङ्खचूड़ छल-वल उद्दण्ड
वृज मंडलमे मचा गेल उत्पात पातकी मूर्ख अबण्ड
तकरहु मान मरदि मणि माथक देल उतारि स्वयं बलराम
देव–गणक भ्रमजालहु टूटल, लूटल सुख वृज-जन अभिराम

(कालिय दमन)

ग्रीष्म समय छल प्रातहि माखन-मिसरी मिलजुलि खाय अघाय
चरबय चलला गाय दूर कहुँ पाँतर चरी देखि हर्षाय
क्रमहि घमायल दिवस, तपन किरणहु प्रचड धरती संतप्त
प्यासलि धेनु बाबि मुह हाँफय, तृष्णातुर मृग आतप-तप्त
ग्वाल-बाल तबधल छल पानि पिबय चाहय सब जतय-ततय
किछु दूरहि पर कालिय ह्रद छल किन्तु ओकर छल जल विषमय

रोकल क्यौ, नहि एतय जाह, अछि कालिय नागक भय–संत्रास
जकर जहरसँ कलुषित कारी पानि, न पिबइछ कतबहु प्यास
किन्तु रुकला नहि तबधला पशु वा लोकहु छटपट प्यासक हेतु
पिवितहि छनमे मूर्छित भय जत–तत खसले रहले नहि चेत
रहला न गेल कृष्णके कतबहु रोकल–टोकला लोक तटस्थ
कूदि पड़ला कालिय–दह, सहसह करइछ जतय नागगण मस्त
आयल कालिय नाग रोषायल काढ़ल फन रोषे रिसिआय
दंश दन्तविष हालाहाल तिष हबकल अंग-अंग खिसिआय
असर न कोनहु पड़ल हरि उपर, कहल, कसरि नहि राखह रंच
जते जहर छल संचित तोहर जत बल छल जत दश प्रपंच
फन उठाय नाङरि चलाय दुर्वह विषदतहु देल गड़ाय
क्रोधे लहलह दुर्वह धहधह रसना लपलप दुहु उतराय
नहि पुनि कृष्णक उपर असरि कनिओ जहरक किछु देखि, दुरंत
के ई व्यक्ति शक्तिसाधक गरुड़हुसँ बढ़ि कय अछि बलवंत
फटफट फन फहराय पुच्छ धरि लब भोग सहजहिँ लेपटाय
कसि कय अकसक करय चाहलक, नख-सिख धरि बान्हल ब्रजराय
हँसइत दामोदर उर-उदरहु प्राणायामी संयत भाव
झिकझोड़ल, मोड़ल फण, नाङरि रगड़ि कालियक प्राण अभाव
चढ़ि फण नाचय लगला मोहन वंशीधर किछु गुनगुन गाबि
सभ छल चकित भीत-चित भीषण दृश्य देखि लेलक जी दाबि
तट पर थहाथही परिजन, छाती पिटइछ हा हन्त ! कनैत
धैर्य धरिअ कहलनि संकेते देखिअ कालिय कोना फनैत
काल-रात्रि सन कालिन्दी-ह्रदमे छल कंपित करइत लोक
गरुड़क डरसँ, गरुड़गामि सङ भिड़ल केहन ई बुद्धिक फोंक
कालिय विवश न किछु चलइछ वश नन्दनन्दनक चरण चुमैछ
पति-गति देखि विकल नागिनि गन त्राहि-त्राहि कहि स्तुति सुनबैछ
कहलनि हरि झट यमुना ह्रद तजि जाह दूर तजि बकिम रीति
चरणचिह्न ई माथ चढ़ाबह रहइत नहि पुनि गरुड़क भीति

(९—लीलामयक कौतुक)

(स्थान : कालिन्दी तट ओ वंशीवट)

(चीर-हरण)

श्यामक रूप अनूप, चरित्र पवित्र, वचन मधु अद्‌भुत कृत्य
देखि देखि व्रजबाला मुग्धा व्रत कत करथि प्राप्ति हित नित्य
पूजथि कात्यायनी ध्यान धय अगहन बिच कय प्रातःस्नान
करथि उषःकालहि उठि व्रजयुवती मन मगन नगन भय स्नान
कालिन्दी-तट तरु कदम्ब तर घाट बनल अछि जतय प्रशस्त
राखि अपन परिधान उतारि मोहारहि पर जल पैसलि मस्त
क्यौ उछलथि, क्यौ हेलथि, क्यौ ककरो ठेलथि कत करथि विनोद
मनमोहनकेँ सुमिरथि मन-मन उन्मन होथि न किछु अवरोध
कखनहु गान करथि भय उन्मन कान्हक प्रति करइत अनुरोध
अभिधहु कहि, लक्षणो वृत्ति गहि, कखनहु व्यंजनाक संबोध
मनमे रूढ़ विदित छल व्रतकेर प्रयोजनहु प्रेमक उद्बोध
गीत हृदयगत भावनाक उद्‌गीत प्रीति-रस व्यक्त सुबोध
कलबल आबि कन्हैया एकसर लेल बटोरि सभक अंबर
चढ़ि कदम्ब झूलथि रहस्यमय लीला-रसिक किशोर कुमर
धनि जनि नदी नहाय निहुरि बहराय तकैछ सबहु निज वस्त्र
कि करथि अता-पता नहि चलल, तखन चिन्तित चित भेलि निवस्त्र
लाजेँ पुनि नदिअहिमे व्याजेँ ठिठुरि ठाढ़ व्रजवनिता हंत
हँसि भभाय केशव तरु ऊपर चढ़ल कहल, हे ! धनि पुनिमंत
नगन नहायब उचित न ककरहु पुनि युवती हित अति विपरीत
करिअ न पुनि 'भविष्यमि ते' हम चेता देल अनरीतहु रीत
कहल कृष्ण, सुनबे मन गुनबे व्रत नहि निष्फल, पाबि प्रसर
विरह-निकष कसि प्रेम-हेम चमकत पुनि रस रासक अवसर
व्रज-युवती जन गेलि लजायलि हरिक वचन मन गुनइत गेह
हृदय भरलि मोहनक मूर्ति दर्शनसँ पूरलि-भरलि सिनेह

(द्विज ओ द्विजपत्नीक यज्ञभेद)

वनमे सखा संग वृजमोहन धेनु चरबइत कयल अबेर
छटपटाय भूखें सहचर-गण धोल मचौलक एके बेर
बिनुखयने नहि रहल जाय, चाही किछु अन्न, प्राण बचिजाय
कोनहु उपाय करिअ झट पाबि सकिअ किछु अन्न-कदन्नहु हाय
कहल कृष्ण, सब धैर्य धरिअ जे कहइत छी से करिअ उपाय
वनक कोनमे द्विज-गण यज्ञ रचाओल तनिकहि याचिअ जाय
दौड़ि पड़ल जत ब्राह्मण ऋत्विक हवन करथि तत माङल अन्न
कहल, एखन नहि यज्ञ पूर्ण, ता' नहि भेटतह कतबहु छह खिन्न
फिरि कय कहलनि अन्न न देलनि अग्रिम ब्राह्मण निष्ठावंत
कतबहु कयल गोहारि, हारि हम फिरि अयलहुँ, सुनि करुणावंत
कहल, दलान अड़ान यज्ञ हित तँ पुनि आङन जैतह जूमि
माया-ममतावती ब्राह्मणीसँ मङितह जा आबहुँ घूमि
जैतहि भूखक नाम सुनबितहिँ द्रवितहृदय द्विजपत्नी-गण
विविध मधुर मेवा पकवान खोआय तृप्त कयलनि शिशु मन
यज्ञकर्म कतबहु विधानसँ करथु विप्र नहि पौलनि ज्ञान
द्विजपत्नी जे दया-स्नेहसँ पौलनि फल भक्तिक सन्धान

(नटखट नागर)

एहिना खेल–धूपमे, गप–सपमे लीलामय चित्र–विचित्र
करइत रहथि व्यक्त, अनुरक्त जनक हित स्वतः पवित्रचरित्र
जनिक चरण गहि शरण भक्त-गण सहजहिँ हो भवसागर पार
केवट बनि खेवट किछु असुलथि झंझ-मंझ कत करथि उदार
दही-दूध माखन-मटुकी धय माथ चलथि बेचय वृज - बाल
तनिका नाव चढ़ाय पार कय खेवा चाहथि खेवनिहार
कने-मने नहि, विश्वंभर भरि उदर गव्य चाहथि नव-नव्य
नवनीतक छनि चाट पड़ल जे पुरुष-पुरातन भावुक-भव्य

मुगुधलि धनि-जनि दामोदरकेँ बिनु दामहिँ भरि पोष खोआय
फिरथि, मायकेँ कहथि नाव डोलल छल, खसल धार बोहिआय
झनझनाहि क्यो झनकि उठय, कय रिक्त पात्र दधि-दूध सठाय
यमुना-जल अंजलि भरि देथि कहथि, छह भरले, देखह जाय
ओहिना फेनिल गाढ़ बकैन दूध नहि पानिक असरि-कसरि
आँखि देखतिहुँ जादूगर ई कयलनि किछु टोना अनुसरि
कखनहु नाव डालाय डेराबथि डगमग बीच धार वृजवाल
अबला वृजवाला विह्वल भय गहय बाहु मोहनक बेहाल
मन भरि गो-रस यदि च जुमयबह तखनहि प्राण सभक समधानि
विपदहु हँसि पड़लीह व्यंग्य बुझि रंगमयी रसमयी सयानि
नटखट नव नागर किशोरकेर नव-नव लीला-कौतुक देखि
नव नागरि रस-गागरि मुगुधलि मन-मोहनकेर रूप परेखि

(वंशी-वादन)

सबसँ अधिक लगन छल हुनकर वंशी-वादनमे रुचिवंत
सप्तसुरी बाँसुरी बनाओल अपनहि हाथेँ रचि-रुचि अंत
बजबथि यमुना तट एकांतहि कहुँ वंसीवट छाया बैसि
तरु-शाखा किसलयक पुञ्जमे, लता-कुञ्जमे चुप्पहिँ पैसि
प्रकृति शान्त, निस्तब्ध पवन, निःशब्द गगन, तृण धरि नहि डोल
ने वनमे विहंग कूजन, ने अवनी-तल पशु धरि मुह खोल
जखन मयूर-पाँखि खोंसल लय माथ मुकुट-मुरलीधर आबि
बजबथि वेणु रेणुधरि पुलकित, सुरभित कण-कण उठइछ जागि
सब सन्नद्ध पिनद्ध माल जनु हृदय बीच, स्वर-सुरभि बिखेरि
करइछ तृप्त मगन मन विश्व-विमोहन मोहन मुरली टेरि
कखनहु तरु कदब शाखा चढ़ि बजबथि रस धुनि राग नवीन
तान-वितान ताल-लय सम्मत राग-रागिनी कला प्रवीण
नव रस संगत छबो राग छत्तिसो रागिनी जत जे उक्त
शुद्ध मिश्र शत शत प्रभेद जत गमक-यमक मूर्छना प्रयुक्त

कोमल तीव्र सप्त स्वर द्वादश स्थायी संचारी जत भेद
मार्गी देशी सभक समन्वय करइत ध्रुव-अंतरा प्रभेद
कखनहु तरुपर चढि उदात्त स्वर टेरथि गगन-विहारी कृष्ण
पैसि निकुञ्ज मंद अनुदात्तहि गुञ्जथि कुञ्ज-बिहारी कृष्ण
पुनि कालिन्दी-कूल धूलिपर स्वरित उचारथि स्वर रस-तृष्ण
चंद्र-चंद्रिका धवल महल धरि वृज भरि स्वर संचारी कृष्ण
दौड़ि पड़थि गृह-कारज तजि किछु ब्याजें वृजबाला संधानि
ठामहि बैसि जाथि पुनि कत धनि नयनमूनि धुनि रहलि अकानि
क्यो जल भरय कलश लय दौड़ि पड़थि यमुना-तट स्वर-सकेत
कृष्ण चन्द्रकें तकइत चन्द्रहिकें निहारि क्यो भेलि अचेत
ग्वाल-बाल लय कर-करताल चलथि हुलसल, संगति करबे
क्यो मंजीरहि झनझन करइत पहुँचथि, हमहु रंग भरबे
जनिका से नहि रिक्त-हस्त से कहथि हमहु थपड़ी थपबे
सखा सुकंठ मधुर धुनि गुन-गुन करइत कहथि संग पुरबे
आइ वृजक वातावरणहुमे स्वर-संगम विहंगमहु बीच
मोहन मुरली धुनि सुनि वन-रसाल बिच कोकिल कंठ उलीच
तृण चरइत मृग दौड़ि पड़ल, कुण्डलित फणी श्रुति-दृग विस्तारि
घास-पानि सब छोड़ि धेनु-धन समुख वेणु गोपाल निहारि
वंशी-बादन वंशीधरक, धड़कि रहले उर-उर रक्तोष्ण
शब्दवेध सभ विषय-भेदकें छेदि आइ अछि समशीतोष्ण
गंध-रूप-रस-परस चारु वर्गक ऊपर अछि सूक्ष्म विषय
भूमि पानि जल-पवन व्याप्य अछि व्यापक नभ, ई निःसंशय

(१०—कंसक षड्यन्त्र)

(स्थान : मथुरा नवीन षड्यंत्र-योजना)

कंसक कपट जाल सब टूटल किंकर्तव्यमूढ अछि भेल
जत चर निश्चर गेल पठाओल एकहु फिरल न, मारल गेल
सोचि रहल अछि, गगन-वचन किछु सत्य बुझाइछ, व्रजमंडल
नन्दक नन्दन बनि क्यौ आयल हमर काल बनि देव प्रबल
किन्तु देवकीकेर अष्टम गर्भक ई बात न मिलइछ एक
बालक नहि बालिका जनमले, रहस्येक ई विषय विवेक
तावत् नारद घुमइत-फिरइत देवलोकसँ उतरि समक्ष
हिनकहिसँ गुत्थी सोझरायत जनिका भूत-भव्य प्रत्यक्ष
कयल प्रणाम, कहल स्वागत हो, अपनेकेँ त्रैलोक्यक ज्ञान
कृपया हमर मनक संशयकेर गाँठ खोलि दी, मुने ! महान
कहलनि, मथुरापति ! सुनि लेबे नहि रहस्य ई प्रकट स्वयम्
वासुदेव-देवकी-पुत्र छथि नन्दनन्दनहु कृष्ण अयम्
देवी मायासँ अहाँक छलवा हित कपट यवनिकापात
उग्रसेन-देवक वसुदेव-देवकिहुकेँ अछि सब किछु ज्ञात
अष्टम गर्भ-अर्भकहि निर्गत मथुरासँ गोकुल पहुँचाय
नन्द-यशोदा पोषित-पालित बुझिअ वैह छथि अहँक बलाय

(योजना-रेखाक दुइ विन्दु : नारद ओ कंसक चिन्तन)

एतबा कहि चलि देलनि लगले नारद मुनि वीणा बजबैत
आब अधिक दिन नहि उत्पाती रहय जगत-जनकेँ तपबैत
मथुरा थुरा गेल अन्यायेँ, गोकुल आकुल सहजहिँ भेल
व्रज रजमे मिलि गेल, पड़ल वृन्दावन बीचहु द्वन्द्व झमेल
कंस ध्वंसमे लागल कपटी कालनेमिहिक थिक अवतार
आब वासुदेवक हाथेँ हो अविलंबहि लंबित संहार
पिता उग्रसेनक सिंहासन छीनि बनल जे स्वयं नरेश
भगिनी देवकीक संगहि वसुदेवहुकेँ वंदी परिवेश

जते दयादबाद परिवार कुटुम्ब सबहुके देलक बारि
केवल क्रूर कुटिल अन्यायी दलके राखल संग हकारि
मचबय शत उत्पात लोक बिच शोक-शंकु बनि पीड़ा दैछ
शिशु निपात करबाय प्रजा-संततिक भविष्यहु बिखड़ा दैछ
जे अछि बली छली संबधी जरासिंधु शिशुपाल नृपाल
तकरहु आब हकारि रहल अछि कालयवनहुक संग कराल
तें पहिनहि हो काल-कवल तकरहि हित लाधल अछि अभियोग
चटपट करओ उपाय अपायक हितहि अहित ई कस प्रयोग
करइत ई संधान महामति देवर्षिक प्रस्थान ओम्हर
कंपित उर कसहु ध्वंसक हित रचइछ किछु समधान एम्हर
छली रूपमाया-पटु जे छल पहिनहि से संहारल गेल
शेष आप्त जे षड्यंत्री मंत्री सैं सबहु हकारल गेल

(षड्यत्र-रचना)

बजा लेल चर अनुचर सहचर भट उद्भट कटु हिंसक क्रूर
संगहि किछु विचारकहु मध्यस्थहु जे विदित व्यक्ति अक्रूर
कस मृत्युभय कंपित, सुरगण वंचित, कुपित चित्त सविशेष
सोचय लागल, आब करी की, वध्य-अवध्य कोना निःशेष
नभ-वाणी छल भेल,तकर नारदहु पुष्टि कयलनि अछि आबि
नद-यशोद। पूत काल अछि बलि कृष्ण तकरहि अनुभाबि
कहलनि, अहाँ सबहुँ हित-मीत हमर सुख-दुखमें रहलहुँ संग
संकट-विकट निकट अछि,सभ मिलि करवे उचित विचार प्रसंग
पहिनहु वध हित कयल उपाय,तकर नहि कोनहु पड़ल प्रभाव
अघ वक वत्स पूतना केसी सबहु विफल, करतब की आब
कंसक सुनि प्रस्ताव ताव दय मोछ उपर, क्यो गरजि उठल
मिलि-जुलि सबहु एकधा व्रज पर वज्र समान चढ़ी दलबल
क्यो कहलनि,नहि क्षुद्र शत्रु हित अभियानक ई समुचित ढंग
पकड़ि एतहि लय आउ तखन जे उचित दण्ड से करिअ प्रसंग

क्यो बाजल, रैयत यदि नंदमहर तँ ओकरे पकड़ि मङाउ
बहसल छै बेटा बकटेंटा बापक सगहि ढंग सिखाउ
पुनि बहसा-बहसीमे बहुतो काल क्षपित, नहि हो निर्णय
तखन अमात्य प्रमुख कहलनि किछु सोचि-विचारि विहित नृपनय
राजनीतिमे साम-दामकेर प्रथम प्रयोग दंड पुनि अंत
ततहु साध्य नहि हो रिपु तँ पुनि भेदक ह्वैछ प्रयोग तुरंत
क्षुद्रहु शत्रुक करिअ न हे प्रभु ! एना अवज्ञा अविचारी
अनल - कणहुसँ देखल जाइछ दाव—दहन अतिसंहारी
हमर विचार ह्वैछ सामहिसँ नंदमहरके लिअ बजबाय
किछु आदर कय दान-द्रव्य दय दुहु बालकके ली अपनाय

खंडन-मंडन चलल कते विध,जत मुख छल तत भिन्न-विचार
अपन-अपन दय युक्ति उक्ति विस्तारल सबहु अनेक प्रकार
सुनइत छी जे व्रज रमणी-गण रसिक अधिक ओ श्याम किशोर
तकरा हित विषकन्या लय अनुलेपन करओ स्ववश दृग-कोर
असरि होयत सहजहिँ रसिया पर,यदि से नहि तँ अग्रिम जोर
अछि अपायकेर कत उपाय से सुनल जाय गनि आङुर पोर
अथवा क्रीडा-रुचिक सुनै छी राम-श्याम दुहु भाइ विशेष
खेल-खेलाड़ी मंच सजाय बजाय लेब उद्घोषि उदेश
धनुर्यज्ञ रचि वीरताक हित प्रतियोगिता रचाय उदार
घोषित करब विजेता ब्रजमंडलक शलाका-युवक प्रचार
आनहु विविध प्रकारक शारीरिक उत्कर्ष प्रदर्शन हेतु
नोतब सबहु किशोर-युवकके, भाग लेथु सब क्रीडा-केतु
दौड़ - धूपमे कूद-फानमे कुस्तीमे मस्ती देखबैत
वृषभ- तुरंग गयंदहुसँ लड़बामे बल-चुस्ती देखबैत
तरुणदलक क्रीडा-सघर्षक कय आयोजन रजधानी
घोषित करिअ देशमे के छथि युवक-शिरोमणि सेनानी

खेल-खेलमे मारि खसाबय भट-उद्‌भट किछु तेहन मङाउ
मुष्टिक चाणूरहु सन मल्लक संग दुष्टके ततय लड़ाउ
दाउ-कान्ह दुहु हत हो सहजहिँ, निष्कंटक अहं राज चलाउ
साप मरय दण्डहु नहि टुटय, एहने कूटनीति अपनाउ
यदि कदाच बचि जाय,पुरस्कृत कय पुनि सहजहिँ ली अपनाय
मान-दानसँ आनहु अपन बनैछ, रहैछ न शेष बलाय
विषहु सुसाधित अमृत रूपमे परिणत करइछ भिषक विशेष
नीति-रीति थिक साध्य सिद्धिहित साधन कोनहु करिअ विवेश

(कंसक अन्त-योजना)

सचिवगणक मत सुनल, गुनल मन कंस कैल किछु कुटिल उपाय
धनुष-यज्ञ रचि राम-कृष्णके नोतब, ब्योंतब वधक उपाय
अबितहिँ हुनक उपर मातल कुबलयापीड गजके उकसाय
छोड़ब, जहिसँ कुचलि दुहूके अंत करत अत्यन्त रुषाय
यदि ताहूसँ बचि कदाच जायत तँ मल्ल मुष्टि-चाणूर
कुश्ती लड़ि दुहूके सहजहिँ मरदि-मरदि कर चकना-चूर
ताहू पर जत योद्धा हमर समर हित रहत शस्त्र-सन्नद्ध
उत्पाती दुहु व्रजक बालकेर काल बनत सहजहि प्रतिबद्ध
एहि हेतु अक्रूर जाथु व्रज, छथि सहजहि जे सभक चिन्हार
बुझा-सुझा कय नन्दहुके हकारि आनथु सङ युगल कुमार
कंसक सुनि आदेश प्रथम अक्रूर क्रूर मन कंपित-काय
पुनि सोचल अरिबद्धल कंस अपन वध हित ई रचल उपाय
गर्ग-वचन अछि, व्यास कथन अछि, नभवाणी पुनि भेल विशेष
कंसक ध्वंस कर'क हित व्रजमे अवतरला हरि मनुजक वेश
दर्शन करब, कलुष कटि जायत, हटि जायत असुरक भय-ताप
भेटल अछि संयोग, योग विनु प्रभुपद दर्शन करब अपाप

... ...

मधुपुरमे विष घोरा रहल अछि भय वीभत्स रौद्र रस भाव
कंस ध्वंस हित बौरायल अछि, छली बली कपटीक प्रभाव
ओम्हर सरस वृन्दावन बिच रस-रास गीत-धुनि लय मधुमय
श्रेय-प्रेयसँ परे आत्म-रति परा प्रीति गोपीक प्रणय

(११—रस आकर्षण)

(शरद ऋतु, चन्द्र-चन्द्रिका, रसोदय)

गत वर्षा ऋतु भिजल-तितल, पंकिल जल मलिने
शरद स्वच्छ परतच्छ कतहु घन उज्ज्वल गगने
पुरिबा-पछवा झटक-झाँट नहि आँट करय मन
ठनका ठनक न, बादर दादुर काँट गड़य स्वन
मंद पवन बहइछ वन-उपवन गमगम करइछ
कास-हास चहुँ दिस विकास कमलक मन हरइछ
हंसक धुनि पर फुदुकि खंजनहु नाचि रहल अछि
शीत-ताप संतुलित समय ऋतु जाँचि रहल अछि
रहइछ स्वर्णक कण वितीर्ण करइत रवि दिन भरि
रजत-किरण करइछ विकीर्ण भरि राति चान धरि
सिङरहार झहराय प्रवाल - हीरकक भूषण
धनि-धनि शरदक दानक महिमा अछि निर्दूषण
सद्यःस्नाता प्रकृति नवांबर पहिरि रहल अछि
शस्यश्यामला आङी अंगहि लहरि रहल अछि
हीरा – मूङाहार पहिरि सेफाली झुलइछ
तीरा टिकुली रंग विरंगक साटि रहल अछि
शीत - विन्दुमे स्नात प्रभातक मुख पर लाली
कनकातप गौरांग दिवा वपु शोभाशाली
संध्या सीमन्तिनी सजय सिंदुरी रंजन
केश–वेशिनी निशा - सुन्दरिक वेणी -बंधन

प्रकृति-विकृति तजि संस्कृति अविकृत जगती जगबय
पंक रहित पथ जीवन-रथ सहजहिँ अछि गतिमय
नीलांबर तारकित ओढ़ि श्यामा प्रिय-दर्शिनि
चन्द्रमुखी अछि सम्मुखीन रजनी रसवर्धिनि

चान गगनमे चमकि चंद्रिका संग रंग शुचि
मना रहल छथि जगा रहल छथि जनमन रस रुचि
गगन-पत्र पर सुलिखित नखतक कविता कलना
कवयित्री प्रकृतिक बाँचय जग-दृग रस रचना

शरद शस्यमय समयक उल्लासी गृहस्थ - जन
घर - आङनमे रस विलासिनी मगन रमणि - गन
तखनहि कतहु कानमे अमृतक जनु हो वर्षण
वंशी धुनि सुनि पड़ल राग - अनुराग प्रहर्षण

(वेणु निनादक चुम्बकीय आकर्षण)

मनमोहन मुरली धुनि सहसा पड़ल कानमे
श्याम किशोरक रूप अनूपहु जगल ध्यानमे
रसक लालसा उद्वेलित सहसा उफानमे
व्रजबाला प्रेमक ज्वालासँ ज्वलित प्राणमे

ध्यान एक छल वंशी तानक स्वर - संधानक
श्यामसुन्दरक रूप - गुण - यशक कथा - वितानक
प्रेम - हेमकेर मूल्य अतुल्य बोध हो जनिका
लोक - लाज व्यवहार कपर्दक तुल्यहि तनिका

रहल होस नहि, जोस भरल अछि, उचकि चलीं झट
साड़ी बदलब छोड़ि दौड़ि चलि पड़लि गली चट
चंचल चित अंचल ककरहु कहुँ ससरि गेल अछि
टिकुली-चमकी पड़ल कतहु से बिसरि देल अछि

आङी ककरहु बंध-रहित नहि सम्हरि रहल अछि
क्यो ककरहु टोकें उन्मुख दृग गुम्हरि रहल अछि
नाकक भूषण कान चढ़ौने क्यो बौरायलि
पायल बाँहि चढ़ाय हार कटि कसि बहरायलि
डरकस गरदनि लगा हृदय बिच झूलइ ककरो
बाजू चूड़ी जकाँ हाथमे झलकइ ककरो
एक आँखिमे काजर दोसर सहज निरंजन
केश खुजल ककरहु, अधबान्हल ककरहु कच घन

सुनि वेणुक स्वर वृज-रमणी-गण भय उन्मादित
सुधि-बुधि बिसरि ससरि चलली धुनि जतय निनादित
लोक लाज नहि रहल समाजक रोच न रंचहु
किछु न बोध, अनुरोध न मानल संचहु — मंचहु
हाथ मथानी रहितहुँ नहि से माखन मथइछ
तबधल तव पर रोटी जरितहुँ नहि पुनि बुझइछ
डाबा हाथहु दूध दुहब क्यो बिसरि गेल अछि
केश पकड़ितहुँ ककबा हाथक ससरि गेल अछि

अटपट कय लटपट करइत चलि देलनि घरसँ
झगड़ि पड़लि क्यो रोक - टोक कयने निज वरसँ
क्यो कुमारि झझकारि उठल सहकारि सखी सङ
माय-बाप मुह ताकि रहल, ई चालि केहन रङ

जे जनि रोकलि गेलि अर्गला - भरल सदनमे
ध्यान मग्न से बैसि नयन - युग मूनि गहनमे
ककरहु जेना समाधिक स्थिति हो सहजहि गहने
प्राण - विहग उड़ि चलल काय - पिंजरसँ अपने
सभक देखि गति चकित न फुरइछ की कहि रोकी
बन्धु - बान्धवहु थकित, फुरय नहि की अनुरोधी

स्वयं बनल उन्मन छथि वंशी धुनि सुनि काने
मधुमातल अछि मनहु, जगक गति आनक आने
क्यो सजि - धजि छलि पहिनहिसँ उत्सुका प्रस्तुता
क्यो प्रसाधिकाकेर प्रसाधनेँ अर्ध भूषिता
जे जहिना छलि तहिना सहसा प्रस्तुत भेले
लोहक - कण चुम्बक दिस सहजहिँ कंपित भेले
सुतलि पड़लि अलसायलि अथवा काजुलि ललना
निकलि पड़लि घर-आङनसँ किछु करइत छलना
चलि नव नागरि रस-आगरि वृजचंदक खोजहि
वन-उपवन निकुञ्ज-वीथी कत घुमइछ ओजहि
उन्मादलि गोपीगन उन्मन हेरि रहल छथि
वनमाली वंशीधर वंशी टेरि रहल छथि
सहसा देखल कालिन्दी तट तरु वंशी वट
टेरि रहल छथि मुरली–सुर मुरलीधर नटखट
घेरि–बेढ़ि लेलनि सब एकहि बेरि पहुँचि कय
की थिक ? कथिक खोज अछि ? पुछलनि,अयलहुँ की लय
कहलनि, जकरहि लेल चोरि, से चोर बनाबथि
जकरहि जोरेँ जोर, कोना कमजोर बनाबथि
कूप पुछथि अछि प्यास कथिक ? हम रिक्त–रिक्त छी
मधु यदि कहथि बनाय बात हम तिक्त–तिक्त छी



श्री 'सुमन'-साहित्य

(ग्रन्थसूची)

मूल

२०. उत्तरा (खण्डकाव्य)— १९८०

२१. अलंकारमालिका— १९८०

२२. दत्ता-वती (महाकाव्य)— १९८७

२३. नीतिका— १९८८

२४. बुद्धबोध— १९८९

२५. उगनाक दयादवाद (उपन्यास)— १९८९

२६. कुमार गंगानन्दसिंह (जीवन ओ साहित्य)— १९९१

२७. कृष्णावतरण (प्रवन्धकाव्य)— १९९४

अनूदित

२८. श्रृंगारतिलक— १९४८

२९. चण्डीचर्या— १९६३

३०. पुत्रोहं पृथिव्याः — १९६४

३१. ऋतुश्रृंगार— १९६४

३२. शक्तिस्तवक— १९६९

३३. शिवमहिमा— १९६९

३४. आनन्दलहरी— १९६९

३५. अनुगीतांजलि — १९६९

३६. बड़कीदाइ (उपन्यास)— १९६९

३७. हरिस्मरणिका— १९७०

३८. ऋचालोक १९७०

३९. रघुवंश (द्वितीय सर्ग) १९७०

४०. पुरुष-परीक्षा— १९७०

४१. सौदर्यलहरी— १९७२

४२. हनुमानबाहुक १९७३

४३. हितोपदेशिका— १९७९

४४. हितोपदेश : मित्रलाभ— १९८४

४५. मेघदूत— १९८९

४६. कुमारसम्भव— १९९०

४७. रवीन्द्र-कथावली, भाग–१ १९९२

४८. रवीन्द्र-कथावली, भाग–२ १९९२

४९. रवीन्द्र-नाटकावली, भाग-१ १९९२

५०. रवीन्द्र-नाटकावली, भाग–२ १९९३

५१. रवीन्द्र-निबंधावली, भाग–१ १९९४

सम्पादित

५२. कृष्णजन्म— १९७०

५३. पारिजातहरण — १९७१

५४. आनदविजय— १९७१

५५. चन्दाझा रामायण (संक्षेपिका)— १९७२

५६. लालदास रामायण (संक्षेपिका)— १९७३

५७ वर्णरत्नाकर— १९७४

५८. मैथिली प्राचीन गीतावली (संगसंपादन)— १९७७

५९. एकांकी संग्रह (संगसंपादन)— १९७७

६०. गोविन्दगीतांजलि— १९८०

६१. कीर्त्तिलता— १९८६



इतिशम्

अर्थसहयोगीक नामावली

२,५००/-

१ श्री आशुतोष सिंह ठाकुर—आयकर आयुक्त, ई/२६, हैदराबाद इस्टेट, नेपियन सी रोड, बंबै–३६

२. श्री कर्मकान्त ठाकुर—प्रभु ठाकुर टोला, रोसड़ा (समस्तीपुर)

१,१०५/–

३. डॉ० श्री देवकान्त झा—'देवगगम्', हनुमाननगर, पोस्ट–शास्त्रीनगर, पुनाइचक, पटना–२३

१,१०१/–

४. दमनकान्त झा, एडवोकेट—जेड १४, आशियानानगर, पटना–१४

५. श्रीमती सुषमा झा—द्वारा श्री शिवशंकर झा, दूर संचार कालोनी, बेला, दरभंगा

१,१००/–

६. श्री कैलासपति मिश्र—बिहार भाजपा अध्यक्ष, ८ पटेल पथ, पटना–१

७. श्री नूनूकान्त चौधरी—बल्लीपुर, जिला–समस्तीपुर

८. चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय—दरभंगा

९. रामकृष्ण महाविद्यालय—मधुबनी

१०. बलिराम भगत महाविद्यालय—समस्तीपुर

११. डॉ० लोहिया कर्पूरी विश्वेश्वरदास महाविद्यालय—ताजपुर (समस्तीपुर)

१,००१/–

१२. श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'—आदित्य सदन, मिश्रटोला, दरभंगा

१३. डॉ० मोहन मिश्र—डाक्टर्स कालोनी, लहेरियासराय, दरभंगा

१४. श्री रघुनन्दन मिश्र, एडवोकेट—मधुबनी

१५. डॉ० वीणा ठाकुर/डॉ० दिलीप कुमार झा—राजकुमारगंज, दरभंगा

१६. इं० श्री सुरेश मिश्र—दिवानी तकिया, कटहरबाड़ी, दरभंगा

१७. महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालय—सरिसवपाही (मधुबनी)

१८. हर्षपति सिंह महाविद्यालय—मधेपुर (मधुबनी)

१,०००/—

१९. डॉ० श्री जयमन्त मिश्र—हनुमानगंज, मिश्रटोला, दरभंगा

२०. डॉ० श्री मदनेश्वर मिश्र—द्वारा डॉ० श्री रत्नेश्वर मिश्र, नरगोना, दरभंगा

२१. जगदीशनन्दन महाविद्यालय- मधुबनी

२२. अररिया महाविद्यालय—अररिया

७००/—

२३. विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय—राजनगर (मधुबनी)

५५१/—

२४. डॉ० एन० पी० मिश्र—बलभद्रपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

५०१/—

२५. श्री अमियकुमार झा—उगना एपार्टमेंट परिसर, आनन्दपुरी, पटना–१

२६. इं० श्री अशोक कुमार ठाकुर—इंजिनियर प्रेस गली, मिरजापुर, दरभंगा

२७. श्री आत्माराम पोद्दार—गुल्लोबाड़ा, दरभंगा

२८. डॉ० श्री कालीकान्त मिश्र—तुमौल, पो०—पुतइ (दरभंगा)

२९. डॉ० श्री गणपति मिश्र—लालबाग, दरभंगा

३०. डॉ० श्री धीरेन्द्र कुमार झा—बावनबीघा, लक्ष्मीसागर, दरभंगा

३१. डॉ० नीता झा/इं० श्री ए० के० झा—पंडासराय, लहेरियासराय, दरभंगा

३२. श्री भवनाथ मिश्र—बावनबीघा, लक्ष्मीसागर, दरभंगा

३३. डॉ० श्री भीमनाथ झा—ग्राम, पो०—कोइलख, भाया—रामपट्टी, जिला—मधुबनी

३४. डॉ० मंजुला मिश्र/इं० वेणी माधव मिश्र—दोनार, दरभंगा

३५. श्री रमेन्द्र नारायण चौधरी—ग्रन्थालय अधिष्ठता, चीनी गोदाम, लालबाग, दरभंगा

३६. प्रो० श्री राजेश्वर झा—स्टेशनरोड, दरभंगा

३७. डॉ० श्री रामनारायण झा—डाक्टर्स क्वार्टर, लहेरियासराय, दरभंगा

३८. डॉ० श्री रुद्रनाथ ठाकुर—बेला, दरभंगा

३९. डॉ० श्री वाचस्पति ठाकुर— बेला गार्डेन्स, दरभंगा

४०. डॉ० शान्ति पाठक – मैथिली विभागाध्यक्षा, एम० आर० एम० कालेज, दरभंगा

४१. डॉ० श्री सुरेश्वर झा—बी/२, राजकुमारगंज, दरभंगा

४२. मारवाड़ी महाविद्यालय—दरभंगा

५००/—

४३. डॉ० श्री दुर्गानन्द झा—डाक्टर्स कालोनी, अलपट्टी, दरभंगा

४४. इं० श्री यदुनाथ झा - 'बसेरा' बेला, दरभंगा

४५. श्री राजमोहन झा ३४, गाँधीनगर, बोरिंग रोड (पूर्व), पटना—१

४६. श्री शिवाकान्त झा- आयकर आयुक्त, कुर्सों (दरभंगा)

४७. डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा—बंगालीटोला, लहेरियासराय, दरभंगा

४८. डॉ० श्रीमोहन मिश्र—बलभद्रपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

२५१/—

४९. डॉ० श्री अमरनाथ झा—विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

५०. श्री अरविन्द कुमार सिंह झा—चनौर, भाया—मनीगाछी, जिला—दरभंगा

५१. श्री अरुण कुमार कर्ण—शोधप्रज्ञ, मैथिली विभाग, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

५२. श्री आदित्यनाथ झा—शोधप्रज्ञ, मैथिली विभाग, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

५३. डॉ० इन्दिरा झा—बिहार स्टोर्स, नारायण मार्केट, लंगरटोली, पटना–४

५४. इ० श्री उत्तमलाल सरदार—सहायक अभियन्ता, पी० एच० ई० डी०, दरभंगा

५५. श्री उदयकुमार झा—शोधप्रज्ञ, मैथिली विभाग, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

५६. श्री उमेशचन्द्र झा—चीनीगोदाम, लालबाग, दरभंगा

५७. डॉ० के० एन० झा—डेन्टिस्ट, बलभद्रपुर, दरभंगा

५८. श्री कृष्णकान्त झा, एडवोकेट—बलभद्रपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

५९. श्री कृष्णदेव मिश्र—ग्राम, पो०–तुमौल, जिला–दरभंगा

६०. इ० श्री गोपालजी झा—गिरीन्द्रमोहन रोड, दरभंगा

६१. श्री गौरीशंकर कुमर भारत एलेक्ट्रिक वर्क्स, बेंता रोड, लहेरियासराय, दरभंगा

६२. प्रो० श्री गंगाप्रसाद झा – राजकुमारगंज, दरभंगा

६३. डॉ० श्री चन्द्रकान्त मिश्र—गंगासागर, दरभंगा

६४. डॉ० श्री चन्द्रमोहन झा—गामी पोखरि, लहेरियासराय, दरभंगा

६५. श्री चन्द्रशेखर झा—पूर्व प्राचार्य, राज स्कूल, दरभंगा

६६. डॉ० श्री जगदीशमोहन मिश्र—बलभद्रपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

६७ इ० श्री जयशंकर ठाकुर—राजकुमारगंज, दरभंगा

६८. इ० श्री जयानन्द झा—बिहारी निवास, दोनार चौक, दरभंगा

६९. श्री तृप्तिनारायण झा, एडवोकेट—बलभद्रपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

७०. डॉ० श्री धीरेन्द्रनाथ मिश्र—धर्मपुर, लक्ष्मीसागर, दरभंगा

७१. श्री धीरेन्द्र नारायण मिश्र—खोजपुर, जिला – मधुबनी

७२. डॉ० श्री पशुपतिनाथ मिश्र—गंगासागर, दरभंगा

७३. प्रो० श्री पुरुषोत्तम झा—राजकैम्पस, लालबाग, दरभंगा

७४. श्री पूर्णेन्दु चौधरी—मिश्रटोला, दरभंगा

७५. डॉ० श्री बैकुण्ठनाथ मिश्र—बेंता, लहेरियासराय, दरभंगा

७६. डॉ० श्री भूपेन्द्र कुमार चौधरी— मैथिली विभाग, सी० एम० कालेज, दरभंगा

७७. इं० श्री भेषनाथ मिश्र —हनुमानगंज, मिश्रटोला, दरभंगा

७८. डॉ० श्री भैरवकान्त झा मनहरणलाल महल्ला, दरभंगा

७९. प्रो० श्री मदनमोहन मिश्र —अंग्रेजी विभाग, सी० एम० साइंस कालेज, दरभंगा

८०. डॉ० श्री मनमोहन झा—अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, सी० एम० कालेज, दरभंगा

८१. श्रीमती ममता कुमारी झा – द्वारा डॉ० रामदेव झा, कबिलपुर, लहेरिया-सराय, दरभंगा

८२. डॉ० श्री मुरलीधर झा—कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

८३. श्री मेघन प्रसाद—व्याख्याता, मैथिली, राजकीय उच्च विद्यालय, कंकड़बाग, पटना

८४. श्री मोहन भारद्वाज—५/२५, ए० जी० क्वार्टर्स, आर० ब्लॉक, पटना-१

८५. प्रो० मंजू सिंह–द्वारा डॉ० उपेन्द्रना० सिंह रमानन्द पथ, न्यू बलभद्रपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

८६. श्री यदुवीर झा—मुखिया, कलिगाँव (दरभंगा)

८७. डॉ० श्री योगानन्द झा—कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

८८. डॉ० श्री रघुवंश झा—मिश्रटोला, दरभंगा

८९. प्रो० श्री रणधीर झा—हनुमानगंज, मिश्रटोला, दरभंगा

९०. प्रो० श्री रमाकान्त मिश्र—ओल्ड राजक्वार्टर्स, श्यामाबाग, दरभंगा

९१. श्री रामकुमार झा—महामंत्री, दरभंगा जिला किसानसभा, दरभंगा

९२. डॉ० श्री रामचन्द्र झा—स्नातकोत्तर ज्योतिषविभागाध्यक्ष, का० सिं० द० संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा

९३. डॉ० श्री रामदेव झा—कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

९४. श्री रामाश्रय राय, एडवोकेट—बलभद्रपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

९५. डॉ० ललिता झा—द्वारा शिवकान्त झा एडवोकेट, बलभद्रपुर लहेरिया-सराय, दरभंगा

९६. डॉ० श्री लक्ष्मण चौधरी 'ललित'—मिश्रटोला, दरभंगा

९७. श्री लक्ष्मीकांत ठाकुर —ग्राम, पोस्ट-बलहा, जिला-मधुबनी

९८. डॉ० श्री लालन झा—मिश्रटोला, दरभंगा

९९. श्री वशिष्ठ नारायण झा—ग्राम, पो०-मोआही (मधुबनी)

१००. डॉ० श्री विद्यानाथ झा—इंजिनियर प्रेस गली, मिरजापुर, दरभंगा

१०१. श्री विवेकानन्द झा, एडवोकेट—गंगासागर, दरभंगा

१०२. प्रो० श्री विश्वनाथ झा—बाबनबीघा, लक्ष्मी सागर, दरभंगा

१०३. श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह—महासचिव, पूअर होम, दरभंगा

१०४. श्री व्रजेन्द्रनारायण झा 'प्रभाकर' (डी० डी० पी०)—ग्राम, पोस्ट—खोजपुर (मधुबनी)

१०५. डॉ० श्री शिवशंकर झा 'कान्त'—मैथिली विभागाध्यक्ष, सी० एम० कालेज, दरभंगा

१०६. डॉ० शेफालिका वर्मा—पश्चिमी आनन्दपुरी, बोरिंग केनाल रोड, पटना

१०७. डॉ० श्री सन्दीप मिश्र—बलभद्रपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

१०८. श्रीमती सावित्री झा—द्वारा श्री महेन्द्र झा, बलभद्रपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

१०९. डॉ० श्री सुवर्ण शेखर झा—राजकुमारगंज, दरभंगा

११०. डॉ० श्री हंसराज—सकमापुल, मिरजापुर (दक्षिण), दरभंगा

१११. साहित्यलोक—द्वारा श्री बुद्धिनाथ झा, १२ ए/१०३२, बोकारो स्टील सीटी

२५०/—

११२. इं० शिवशंकर मिश्र—धर्मपुर, लक्ष्मीसागर, दरभंगा

११३. श्री रामसेवक सिंह—व्याख्याता, मैथिली, राजकीय कन्या उच्चविद्यालय, शास्त्रीनगर, पटना—२३

११४. विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र विभाग—ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा



Scanned by CamScanner

गद्यकार श्रीसुमनजीक प्रसंग एक दोसर वृहद ग्रन्थक आवश्यकता अछि। एहिमे तकर संकेत मात्र भऽ सकल अछि। शताधिक पुस्तकक भूमिके लेखन मे जे हिनक मौलिक उद्भावना छनि से सब मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक। एक सम्पादकक रूप मे ई कर्मक्षेत्रमे प्रवेश कयलनि जाहि क्रममे सम्पादकीयमें अपन मूल्यवान विचार व्यक्त करैत रहलाह। निबंधकार तँ छथिहे, समय-समयपर कथा साहित्यकेँ सेहो समृद्ध करैत रहलाह अछि। समिति मनोरथ रखने अछि जे ताहि सभक संकलित रूप समाजक समक्ष उपस्थित करय ।